مُختصر صحيح مسلم

मुख़्तसर सहीह मुस्लिम 2

भाग
दूसरा

संपादक

इमाम अबुल् हुसैन मुस्लिम बिन अल्-हज्जाज
बिन मुस्लिम क़ुशैरी, नेशा पूरी रहिमहुल्लाह
(206 हि०-261 हि०)

M-9825696131

अनुवाद व तशरीह

ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी (फ़लाही)

प्रकाशक
अलहुदा पब्लिकेशन
दिल्ली-110006

नाम पुस्तक : मुख़्तसर सहीह मुस्लिम शरीफ़ (दूसरा भाग)
संपादक : इमाम अबुल हुसैन मुस्लिम बिन हज्जाज रह॰
हिन्दी अनुवाद व तशरीह : ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी (फ़लाही)
कुल पेज : 670
कुल अहादीस की संख्या :
प्रथम एडीशन : पहला एडीशन : 2009 + दूसरा एडीशन : 2014
मुद्रक : अलहुदा पब्लिकेशन 4158, उर्दू बाजार जामा मस्जिद, दिल्ली
कम्पोज़िंग : तय्यब अज़ीज़, सनम अज़ीज़, द बाइट पब्लिशिंग सिस्टम्स, दिल्ली
कीमत : 750/- (सेट)

मिलने का पता

अलहुदा पब्लिकेशन
4158, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
E-mail: info@alhudapublication.com
Website: www.alhudapublication.com

दारूल कतुबिल इस्लामिया
उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006

मकतबा तर्जुमान
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006

अल किताब इन्टरनेशनल
बटला हाऊस, जामिआ नगर, नई दिल्ली-110025

अफ़ाफ़ पब्लिशर्स
मंडावली, दिल्ली

★★★

© इस पुस्तक के सर्वाधिकार अनुवादक के नाम सुरक्षित हैं। किसी और को इस पुस्तक के किसी भी अंश के छापने की अनुमति नहीं है। ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने की सूरत में क़ानूनी कार्यवाही की जायेगी।

Published by : Khalid Haneef Siddiqi (Falahi)
for : **Al Huda Publications**
4158, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006
Printed & Bound in India, by : Salafi Book Services

मुख़्तसर

सहीह मुस्लिम शरीफ़

(दूसरा भाग)

किताब (शीर्षक) की सूची

न॰	शीर्षक (किताब) की सूची	पृष्ट न.
00	चोरी की हद का बयान..	32
00	शराब की हद का बयान..	35
32	गवाही के मसाइल का बयान..	39
33	गिरी-पड़ी चीज़ (लुक़्ता) का बयान..	45
34	मेहमानी करने का बयान..	48
35	जिहाद के मसाइल का बयान..	52
36	लश्कर कशी का बयान..	74
37	मग़ाज़ी का बयान..	111
38	हुकूमत (शासन) करने का बयान..	149
39	शिकार करने के मसाइल का बयान..	177
40	जानवर कुर्बान करने का बयान..	184
41	पीने की चीज़ों का बयान..	195
42	खाने की चीज़ों का बयान..	110
43	लिबास (वस्त्र) का बयान..	221
44	अदब (सभ्यता) का बयान..	243
45	झाड़-फूँक के मसाइल का बयान..	260
46	बीमारी और उपचार का बयान..	268
47	ताऊन (महामारी) का बयान..	275
48	अच्छे-बुरे फ़ाल का बयान..	278
49	कहानत का बयान..	282
50	साँपों के बारे में बयान..	285

51	कविता के बारे में बयान	290
52	ख़ाब (सपनों) का बयान	293
53	नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फ़ज़ीलत का बयान	300
54	नबियों की फ़ज़ीलत का बयान	335
55	सहाबा के फ़ज़ाइल का बयान	345
56	नेकी (सदव्यवहार) का बयान	414
57	ज़ुल्म (अत्याचार) का बयान	440
58	तक़्दीर (भाग्य) का बयान	444
59	अ़िल्म (ज्ञान) का बयान	454
60	दुआ़ करने का बयान	457
61	ज़िक्र-दुआ़ का बयान	465
62	तअ़व्वुज़ (पनाह पकड़ने) का बयान	475
63	तौबा के मसाइल का बयान	477
64	मुनाफ़िक़ों का बयान	493
65	क़ियामत का बयान	497
66	जन्नत का बयान	501
67	जहन्नम का बयान	507
68	फ़ित्नों का बयान	511
69	जुहद (प्रहेज़गारी) का बयान	547
70	क़ुरआन पाक की फ़ज़ीलत का बयान	557
71	क़ुरआन की सूरतों की तफ़सीर का बयान	566

❀ ❀ ❀

मुख़्तसर

सहीह मुस्लिम शरीफ़

(दूसरा भाग)

विषय सूची

न॰	विषय	पृष्ट न॰
	(चोरी की सज़ा का बयान)	
	किस वस्तु की चोरी में हाथ काटा जायेगा?..................................	32
	जिस वस्तु की क़ीमत तीन दिर्हम हो उसमें हाथ काटा जायेगा.................	32
	अन्डे की चोरी में हाथ काटा जायेगा..	32
	सज़ा के मामले में सिफ़ारिश करना मना है.......................................	33
	चोरी से संबन्धित चन्द और अहम मसाइल का बयान।.........................	34
	(शराब पर हद जारी करने का बयान)	
	शराब पीने के जुर्म में कितने कोड़े मारे जायें?................................	35
	सज़ा में कितने कोड़े मारे जायें?..	36
	क्या हद जारी करना उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।............................	37
	चन्द और अहम मसाइल का बयान।..	37
	(गवाही देने का बयान)	
	न्याय ज़ाहिरी बातों पर होता है।..	39
	चर्ब ज़बानी से काम लेना हराम है।...	39
	लड़ाकू व्यक्ति के बारे में बयान।..	40
	प्रतिवादी क़सम खा ले तो उसके हक़ में फैसला होगा........................	40
	एक क़सम और एक गवाही की बुनियाद पर फ़ैसला होना चाहिये।..........	40
	ग़ुस्सा की हालत में फैसला न किया जाये।....................................	41
	अच्छी तरह समझ–बूझ कर फ़ैसला करना चाहिये।............................	41
	अगर क़ाज़ी आपस में इख़्तिलाफ़ करने लगें, तो क्या हुक्म है।..............	42

काज़ी, सर्वप्रथम दोनों फ़रीक के दर्मियान सुलह कराने की कोशिश करे...... 43
सबसे बेहतरीन गवाह कौन है.. 44
गवाही से संबन्धित कुछ और मसाइल का बयान.................................. 44

(गिरी–पड़ी वस्तुओं का बयान)

गिरी–पड़ी वस्तु के बारे में क्या हुक्म है।.. 45
हज्ज के दौरान हाजी की गिरी–पड़ी वस्तु का क्या हुक्म है।.................... 46
गिरी–पड़ी चीज़ उठा कर रख लेना पाप है।.. 46
चर्वाहा मालिक के जानवर का दूध बिना अनुमति के न पिये।.................... 46
इस बाब से संबन्धित चन्द अहम मसाइल का बयान।.............................. 47

(मेहमानी करने का बयान)

जो मेहमानी नहीं करता उसके बारे में क्या हुक्म है।.............................. 48
मेहमानी करना अनिवार्य है।.. 49
अधिक माल है तो उससे गरीबों की सहायता करे।................................ 49
सफ़र में सभी लोग अपना खाना मिला लें और साथ बैठ कर खायें........... 50

(जिहाद के मसाइल का बयान)

सूरः आले अ़िम्रान की आयत 169 का बयान।.. 52
जन्नत के दर्वाज़े तल्वारों के साये के नीचे हैं।.. 53
जिहाद की फ़ज़ीलत का बयान।.. 53
जिहाद से बन्दा का दर्जा बुलन्द होता है।.. 54
सबसे अफ़ज़ल जिहाद अपने जान माल से अल्लाह की राह में करना है।..... 54
जो मर गया और जिहाद न किया और न ही उसकी निय्यत की।............... 54
जिहाद की राह में पहरा देने की फ़ज़ीलत का बयान।.............................. 56
अल्लाह की राह में सुब्ह–शाम चलने की फ़ज़ीलत का बयान।................... 57
सूरः तौबा की आयत 19 का बयान.. 57
अल्लाह की राह में शहीद होने की ख़्वाहिश करने का बयान।.................. 58
अल्लाह की राह में शहीद होने की फ़ज़ीलत का बयान।.......................... 59
अ़मल का दारोमदार निय्यत पर है।.. 59
अल्लाह पाक शहीदों से राज़ी है और वह अल्लाह से राज़ी हैं।.................. 60
शहीद पाँच प्रकार के हैं।... 61
ताऊन (प्लेग) की बीमारी में मरना शहादत की मौत है।........................ 61
शहीद के ज़िम्मा जो कर्ज़ है वह माफ़ नहीं होता है।.............................. 62

अपने माल की सुरक्षा में जान देना शहादत है।.. 63
सूरः अहज़ाब की आयत 23 की तफ़सीर।... 63
दिखाने के लिये जो लड़े उसका ठिकाना जहन्नम है।.. 64
अल्लाह की राह में क़त्ल किये जाने पर सबसे अधिक सवाब है।............ 65
जो व्यक्ति मुजाहिद के लिये जिहाद का समान मोहय्या करे।.......................... 66
जिसने जिहाद का सामान जमा किया, लेकिन बीमार हो गया।......................... 66
मुजाहिदों के पीछे उनकी महिलाओं का आदर-सम्मान करना।.......................... 67
मेरी उम्मत का एक गरोह हमेशा हक़ पर क़ायम रहेगा।.................................. 67
क़ातिल और मक़्तूल दोनों जहन्नमी हो सकते हैं।.. 68
अल्लाह की राह में सवारी देने की फ़ज़ीलत का बयान।....................................... 69
सूरः अन्फ़ाल की आयत 60 की तफ़सीर।.. 69
तीर चलाने के लिये उभारने का बयान।.. 70
क़ियामत तक के लिये घोड़ों की पेशानी पर ख़ैर-बर्कत है।.................................. 70
'अश्कल' घोड़ा मक्रूह है।... 71
घोड़ दौड़ कराने और उन्हें ट्रेन्ड करने का बयान।... 71
मजबूरी के कारण जिहाद में न शरीक होने का बयान।....................................... 72
जो बीमार होने के कारण जिहाद में न शामिल हो सका।...................................... 72
जिहाद के संबन्ध में चन्द और मसाइल का बयान।... 73

(जिहाद और सियर का बयान)

फ़ौज की छोटी टुकड़ी को हिदायत देने का बयान।.. 74
हाकिम को अपनी प्रजा के साथ नर्मी का बर्ताव करना चाहिये।.............................. 75
एल्ची और मुजाहिदों के घरों की निग्रानी करने का बयान।.................................. 76
दुश्मन के मुल्क में कुरआन लेकर सफ़र न किया जाये।...................................... 77
जिहाद में शामिल होने के लिये आयु सीमा का बयान।....................................... 78
सूखा काल के दिनों में किस प्रकार यात्रा की जाये।.. 79
सफ़र से वापसी में दिन रहते ही घर पहुंचे।.. 79
जन्ग छेड़ने से पहले इस्लाम की दावत पेश करो।... 80
नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पत्र जो बादशाहों के नाम लिखे गये.... 81
उस पत्र का बयान जो हेरक़्ल के नाम लिखा गया।... 81
आपके दावत देने और मुनाफ़िक़ों के सताने का बयान।....................................... 85
दग़ाबाज़ी और धोखाधड़ी हराम है।.. 86
वादा करने के बाद वादा ख़िलाफ़ी न करे।.. 87
दुश्मन के साथ जन्ग की इच्छा नहीं करनी चाहिये।.. 87

दुश्मन के लिये बद्दुआ करना दुरुस्त है।..	88
जन्ग, हीला और धोखा का नाम है।..	88
जिहाद में मुश्रिकों से सहायता लेना कैसा है?..	89
जिहाद में महिलाओं का जाना कैसा है?..	90
जिहाद में महिलाओं और बच्चों की हत्या हराम है।..	92
जन्ग में दुश्मन के पेड़ों को काटना और जलाना जाइज़ है।..	92
दुश्मन की ज़मीन से खाने-पीने की चीज़ को लेकर खाना जाइज़ है।..............	93
नबी की उम्मत के लिये माले-ग़नीमत हलाल है।..	95
जन्ग में हासिल होने वाले माले-ग़नीमत का बयान।..	95
फ़ौजियों को पुरस्कार देना जाइज़ है।..	95
माले-ग़नीमत के पाँचवें हिस्से का बयान।..	96
जिहाद में काफ़िर का सामान मारने वाले को मिलेगा।..	96
अगर क़त्ल में कई लोग शामिल हों तो किसे मिलेगा?..	97
काफ़िर का सारा माल क़त्ल करने वाले का हक़ है।..	99
बन्दियों के बदले मुसलमानों को आज़ाद करने का बयान।..	98
माले-ग़नीमत में पाँचवाँ हिस्सा नबी का है।..	99
बिना जिहाद किये जो माल हासिल हो उसे किस प्रकार बाँटा जाये।..............	99
माले-ग़नीमत में दो हिस्सा घोड़सवार को और एक हिस्सा पैदल को मिलेगा......	105
जिहाद में शरीक होने वाली महिलाओं को हिस्सा नहीं दिया जायेगा।..............	105
जिहाद के दौरान बन्दी बनाए लोगों को रिहा किया जा सकता है।..............	106
यहूदियों को मदीना से निकाल बाहर किया जाये।..	108
यहूद-नसारा को अ़रब महाद्वीप से निकाल दिया जाये।..	108

(हिजरत और मग़ाज़ी का बयान)

नबी की हिजरत और आपकी निशानियों का बयान।..	111
बद्र की लड़ाई का बयान।..	112
बद्र की लड़ाई में फ़रिश्तों की सहायता का बयान।..	114
बन्दियों को हर्जाना लेकर छोड़ने का बयान।..	115
माले-ग़नीमत हवाले होने का बयान।..	116
बद्र में मारे गये काफ़िरों से आप का बात-चीत करना।..	117
उहुद की लड़ाई का बयान।..	117
उहुद के दिन आपके घायल होने का बयान।..	118
उहुद की जन्ग में जिब्रील व मीकाईल के जिहाद करने का बयान।..............	119
आपकी क़ौम के आप पर अत्याचार का बयान।..	119

समस्त संदेष्टाओं ने यातना पर सब्र से काम लिया।..	121
अबू जेहल के क़त्ल का बयान।..	122
क-अ़ब बिन अशरफ़ के क़त्ल का बयान।..	122
"रिक़ाअ़" की जन्ग का बयान।..	124
अहज़ाब (खन्दक़) की लड़ाई का बयान।..	125
क़बीला बनी क़ुरैज़ा को मुल्क बदर करने का बयान।..	127
"ज़ीक़रद" की जन्ग का बयान।..	128
सुलह हुदैबिय्या की घटना का बयान।..	134
ख़ैबर की लड़ाई का बयान।..	136
मक्का के पराजित होने का बयान।..	137
माले-ग़नीमत मिलने के बाद अन्सार को उनका दिया हुआ लौटा दिया..........	137
काबा के अन्दर के बुतों को निकाल बाहर करने का बयान।........................	140
फ़तेह मक्का के बाद कोई क़ुरैशी बांध कर न क़त्ल किया जाये।................	140
फ़त्ह मक्का के बाद जिहाद पर बैअ़त लेने का बयान।........................	141
मक्का पराजित हो जाने के बाद हिजरत समाप्त।..	141
हिजरत के बाद जन्गल में रहने की अनुमति है।..	142
हुनैन की जन्ग का बयान।..	143
ताईफ़ की लड़ाई का बयान।..	146

(इस्लामी हुकूमत (Rule) का बयान)

ख़लीफ़ा क़ुरैश ख़ान्दान से होना चाहिये।..	149
किसी को ख़लीफ़ा नामज़द करने या न करने का बयान।........................	150
जिससे पहले बैअ़त कर ली उसका साथ निभाना अनिवार्य है।....................	152
जब एक साथ दो ख़लीफ़ों से बैअ़त की जाये?..	154
तुम में से हर एक हाकिम है और तुम से पूछ-ताछ होगी।........................	155
ख़िलाफ़त के लिये भाग-दौड़ करना दुरुस्त नहीं।..	156
जो हुकूमत की इच्छा करे उसे न दिया जाये।..	157
इमाम को अल्लाह से डरते रहने का हुक्म देते रहना चाहिये।......................	158
हाकिम ने न्याय से काम किया तो जन्नत मिलेगी।..	158
हाकिम बन जाने के बाद नर्मी से काम लेना चाहिये।..	159
दीन ख़ैर-ख़ाही का नाम है।..	160
जिसने जनता के साथ ख़ियानत की उस पर जन्नत हराम है।........................	160
हाकिम अगर माले-ग़नीमत में से चोरी करे तो यह महापाप है।......................	161
हाकिम अगर थोड़ा सा भी चोरी करके रख ले तो यह भी चोरी है।..................	162

हाकिम अगर उपहार कुबूल करें तो इसका क्या हुक्म है।........................ 163
नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बबूल के पेड़ तले पीठ फेर कर न भागने पर बैअ़त की।........................ 164
मौत पर बैअ़त लेने का बयान।........................ 165
सक भर आज्ञा पालन करने पर बैअ़त लेने का बयान।........................ 165
हिजरत करके आने वाली महिलाओं की परीक्षा लेना।........................ 167
हाकिम की आज्ञा पालन करना अनिवार्य है।........................ 167
जो हाकिम दीन के अनुसार हुकूमत करे केवल उसी का आज्ञा पालन करो।.... 168
अगर किसी की आज्ञा में अल्लाह की अवज्ञा हो तो यह नाजाइज़ है।........... 169
ऐसे हाकिम की भी आज्ञा पालन करो जिसने तुम्हारा हक़ रोक रखा है।.......... 169
बुरे काम को बुरा कहो, लेकिन उसके ख़िलाफ़ महाज़ न खोलो।.......... 170
अगर हक़ न दे तो सब्र से काम लो।........................ 171
फ़ितना-फ़साद के समय में जमाअ़त से जुड़े रहो।........................ 171
जो जमाअत से अलग हुआ वह हराम मौत मरा।........................ 172
फूट डालने वाले की गर्दन मार दो।........................ 173
जो हमारे ऊपर हथियार उठाए वह हम में से नहीं।........................ 173
अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थामे रहो।........................ 174
दीन में जो नई चीज़ ईजाद की जाये उस पर अ़मल न करो।........................ 174
जो नेकी का काम करने का हुक्म दे, लेकिन स्वयं न करे।........................ 175

(शिकार के मसाइल का बयान)

तीर से शिकार करते समय "बिस्मिल्लाह" कह लिया करो।........................ 177
तीर-कमान और शिकारी कुत्तों से किस प्रकार शिकार किया जाये।............ 178
बिना धार वाले हथियार से शिकार करने का क्या हुक्म है।........................ 179
तीर चलाने के बाद शिकार भाग जाये और दूसरे दिन मुर्दा मिले।................ 179
खेती और जानवरों की सुरक्षा के लिये कुत्ता पालना दुरुस्त है।................ 180
कुत्तों को मार डालने का आदेश।........................ 180
कंकरी मार कर शिकार करना मना है।........................ 181
जानवर को बांध कर निशाना बनाना मना है।........................ 181
ठीक तरह से ज़ब्ह करना और छुरी तेज़ करना चाहिये।........................ 182
हर वह चीज़ जिससे ख़ून निकल जाये ज़ब्ह करो।........................ 182
शिकार से संबन्धित चन्द अहम मसाइल का बयान।........................ 183

(क़ुर्बानी का बयान)

क़ुर्बानी करने वाला बाल और नाख़ुन न काटे।................................	184
क़ुर्बानी करने के समय का बयान।..	184
जिसने नमाज़ से पहले ही क़ुर्बानी कर डाली।..	185
किस आयु के जानवर की क़ुर्बानी की जाये?..	185
एक वर्ष के जानवर (ज़ज़आ) की क़ुर्बानी का बयान।................................	186
चितले और लंबे सींग वाले मेंढे की क़ुर्बानी अफ़ज़ल है।............................	186
अपने और अपने घर वालों की तरफ़ से क़ुर्बानी का बयान।.........................	186
क़ुर्बानी का माँस कितने दिन रखा जाये।...	187
तीन दिन के बाद भी गोश्त खाना और ले जाना जाइज़ है।.........................	187
'फ़रा' और 'अ़तीरा' का बयान।..	188
जो जानवर अल्लाह के अ़लावा के नाम पर ज़ब्ह किया जाये?.......................	189
इस बात से संबन्धित कुछ अहम मसाइल का बयान।..................................	189

(पीने के मसाइल का बयान)

शराब हराम है।..	191
हर नशा लाने वाली चीज़ हराम है।...	192
हर पीने वाली चीज़ जो नशा लाये, वह हराम है।......................................	193
जिसने दुनिया में पी, उसे आख़िरत में पीने को नहीं मिलेगा।........................	193
अधपके और पक्के खजूर और छुवारे से शराब बनती है।.............................	194
शराब पाँच वस्तुओं से बनाई जाती है।...	194
अन्गूर और खजूर से नबीज़ बनाना मना है।..	194
'दुब्बा' और 'मि-ज़फ़्फ़त' में नबीज़ बनाना हराम है।..................................	195
पत्थर के बर्तन में नबीज़ बनाना जाइज़ है।...	195
हर प्रकार के घड़े को प्रयोग करने की अब अनुमति है।...............................	196
जिस घेड़े में नशा लाने वाला मसाला लगा हो उसका प्रयोग हराम है।............	196
नबीज़ कितने दिन तक रख कर पी जाये।...	196
शराब का सिर्का बनाने का क्या हुक्म है?...	197
शराब को दवा के तौर पर इस्तेमाल करना हराम है।..................................	197
खाने-पीने के बर्तनों को ढाँक कर रखना चाहिये।....................................	198
मश्क का मुंह बन्द करके रखना चाहिये।..	198
शहद, नबीज़, दूध और पानी पीने का बयान।..	199
प्याले में दूध पीने का बयान।...	199
मश्क को झुका कर उससे पीना मना है।..	200

सोने-चाँदी के बर्तन में खाना-पीना हराम है।.. 201
तुम्हारे बाद, तुम्हारे दायें वाले का हक़ है।.. 202
छोटे से अनुमति लेकर बड़े को दिया जा सकता है।.. 202
पीते समय बर्तन में सांस लेना मना है।.. 202
पानी एक सांस में पीना मना है।.. 203
खड़े-खड़े पानी पीना मना है।.. 203
ज़मज़म का पानी खड़े होकर पीना दुरुस्त है।.. 203
बाब से संबन्धित चन्द अहम मसाइल का बयान।.. 204

(खाने के मसाइल का बयान)

खाना खाते समय "बिस्मिल्लाह" पढ़ना चाहिये।.. 205
दायें हाथ से खाना खायें।.. 206
अपने सामने से खाना खायें।.. 206
तीन उंगलियों से खाना खायें।.. 206
उंगलियाँ और बर्तन चाटने का बयान।.. 207
लुक़्मा गिर जाये तो उसे साफ़ करके खा लो।.. 207
खाने के बाद "अल्हम्दु लिल्लाह" कहना चाहिये।.. 207
खाने-पीने की नेमतों के बारे में प्रश्न किया जायेगा।.. 208
पड़ोसी की दावत कुबूल करना अनिवार्य है।.. 209
खाने के लिये जिसे बुलाया जाये केवल वही जाये।.. 209
मेहमान के साथ हमदर्दी करनी चाहिये।.. 210
दो का खाना तीन के लिये काफ़ी होता है।.. 210
मोमिन एक आंत से खाता है और काफ़िर सात आंत से।.. 211
कद्दू (लौकी) खाना सुन्नत है।.. 212
सिर्का अच्छा सालन है।.. 212
खजूर खा कर उसकी गुठलियाँ फेंकने का बयान।.. 212
उकडू बैठ कर खजूर खाने का बयान।.. 213
जिस घर में खजूर न हो उस घर वाले भूखे हैं।.. 213
एक साथ दो-दो खजूरें खाना मना है।.. 213
ककड़ी को खजूर के साथ मिला कर खाना।.. 214
पके हुये काले पीलू का बयान।.. 214
खरगोश का मांस खाने का बयान।.. 214
साँडा (गोह) खाने का बयान।.. 215
टिड्डी खाने का बयान।.. 216

समुन्दरी जानवर खाने का बयान।.................................... 216
घोड़े का माँस खाने का बयान।.................................... 218
घरेलू गधे का मांस हराम है।.................................... 218
केचली का दांत रखने वाले जानवर का मांस हराम है।.................................... 219
पंजे से पकड़ कर खाने वाले परिन्दे का मांस खाना मना है।.................................... 219
लहसून खाना मक्रूह है।.................................... 219
खाने-पीने में ऐब नहीं निकालना चाहिये।.................................... 220

(बनाव सिंगार और पहनावा का बयान)

रेशम के कपड़े के बारे में बयान।.................................... 221
जिसने दुनिया में पहना वह आख़िरत में नहीं पहनेगा।.................................... 222
जो अल्लाह से डरता है उसके लिये रेशम हराम है।.................................... 222
रेशम केवल दो-चार उंगुल पहनना जाइज़ है।.................................... 222
रेशम का जुब्बा पहनना मना है।.................................... 223
बीमारी में रेशम पीना जाइज़ है।.................................... 224
कपड़े की किनारी रेशम का हो तो जाइज़ है।.................................... 224
रेशम फाड़ कर उसका दुपट्टा बनाना दुरुस्त है।.................................... 225
कुसुम और केसर से रंगा हुआ वस्त्र पहनना मना है।.................................... 226
सफ़ेद बालों को रंगना सुन्नत है।.................................... 226
ख़िज़ाब लगाओ और यहूद की मुख़ालिफ़त करो।.................................... 227
यमन की धारीदार चादर का बयान।.................................... 227
काले रंग का कंबल ओढ़ने का बयान।.................................... 228
क़ालीन बिछाने का बयान।.................................... 228
आवश्यकता के अनुसार ही बिछौना बनायें।.................................... 228
गोट मार कर बैठना मना है।.................................... 229
चित लेट कर एक पांव को दूसरे पांव पर रखना मना है।.................................... 229
चित लेट कर एक पांव को दूसरे पांव पर रखना दुरुस्त है।.................................... 229
तहबन्द को आधी पिंडली के ऊपर रखना चाहिये।.................................... 229
अभिमान से कपड़ा टख़ने के नीचे लटकाना हराम है।.................................... 230
जिसने तकब्बुर से कपड़ा लटकाया उस पर अल्लाह पाक रहमत की नज़र नहीं करेगा।.................................... 231
अकड़ कर चलने वाले को ज़मीन में धंसा दिया जायेगा।.................................... 231
जिस घर में कुत्ता और चित्र हों वहां रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते।.................................... 232
जिस पर्दे पर तस्वीरें हों उनका लटकाना नाजाइज़ है।.................................... 233

ऐसे कपड़े को काट कर तकिया बना लेना जाइज़ है।...........................	233
बिछौने के ऊपर की चादर का बयान।...	233
चित्र बनाने वालों को क़ियामत के दिन दन्ड दिया जायेगा।......................	234
चित्र बनाने वालों पर सख़्ती का बयान।..	234
सोने की अन्गूठी बनाना और सोने के बर्तन में खाना मना है।.....................	234
सोने की अन्गूठी फेंकने का बयान।..	235
चाँदी की अन्गूठी पहनने का बयान।...	235
चाँदी की अन्गूठी में हब्शी पत्थर लगाने का बयान।...............................	236
बीच की उंगली और उसके बग़ल वाली में अन्गूठी पहनना मना है।............	237
जूता अधिक से अधिक पहनने का बयान।...	237
जूता दायें तरफ़ से पहनने का बयान।..	237
केवल आधे सर का बाल मुंडाना मना है।..	238
बाल में बाल जोड़ना मना है।..	238
सर के बाल में दूसरे का बाल जोड़ना मना है।....................................	238
चेहरे के बाल उखाड़ना और दांतों के बीच जगह बनाना मना है।...............	239
जो कपड़ा पहन कर भी नन्गी हों, उन पर लानत का बयान।......................	240
जानवर के गले में तांत आदि लटकाना मना है।..................................	240
जानवर के गले में घन्टी आदि लटकाना मना है।................................	241
जानवर के मुंह को दाग़ना मना है।..	241
जानवर के कान और पीठ दाग़ने का बयान।..	241

(अदब का बयान)

मेरी कुन्नियत पर किसी और की कुन्नियत न रखो।..................................	243
"मुहम्मद" नाम रखने का बयान।...	243
अल्लाह के निकट सबसे अच्छे नामों का बयान।...................................	243
बच्चे का नाम "अ़ब्दुर्रहमान रखना।..	244
बच्चे का नाम "अ़ब्दुल्लाह" रखना।..	244
संदेष्टाओं के नाम पर नाम रखना।...	245
बच्चे का नाम इब्राहीम रखने का बयान।...	246
पहले नाम को बदल कर उससे अच्छा नाम रखने का बयान।.......................	246
"बर्रा" नाम बदल कर "ज़ैनब" रखने का बयान।....................................	247
अफ़लह, यसार, नाफ़े नाम रखना मना है।...	247
छोटे बच्चे की कुन्नियत रखने का बयान।..	249
कोई व्यक्ति किसी को "ऐ मेरे बेटे" कह सकता है।..................................	249

दूसरा भाग

अल्लाह पाक के निकट सबसे बुरा नाम "बादशाहों का बादशाह" है।............	249
एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर पाँच हक़ हैं।............................	250
राह में बैठो तो उसका हक़ भी अदा करो।...	250
सवार, पैदल को और छोटी जमाअ़त, बड़ी जमाअ़त को सलाम करे।..........	251
घर में दाख़िल होने के लिये अनुमति लेने का बयान।..............................	251
दर्वाज़े का पर्दा उठा देना भी इजाज़त है।..	252
इजाज़त लेते समय स्पष्ट रूप से अपना नाम बताना चाहिये।.....................	252
इजाज़त लेते समय घर में झांकना मना है।..	252
बिना इजाज़त किसी के घर में झांकना मना है।...	253
मज्लिस में आ कर सलाम करके बैठना चाहिये।..	253
किसी को उठा कर उसके स्थान पर बैठना मना है।.....................................	253
जहाँ तीन आदमी हों वहाँ दो अलग होकर काना फूसी न करें।....................	254
बच्चों को सलाम करने का बयान।..	254
यहूद-नसारा को पहले न सलाम करें।..	255
यहूद-नसारा को किस प्रकार जवाब दें।...	255
महिला के लिये पर्दे का हुक्म नाज़िल होना।..	255
महिला घर से बाहर ज़रूरत से निकल सकती है।.......................................	256
महरम महिला को अपनी सवारी के पीछे बैठाना जाइज़ है।........................	256
अपनी पत्नी के साथ जा रहा हो तो दूसरों को बता दे कि यह मेरी पत्नी है।.....	257
ग़ैर-महरम के साथ रात बिताना मना है।..	258
जिस महिला के पति घर में न हों उनके घर जाना मना है।...........................	258
महिलाओं के पास हिजड़ों का आना-जाना मना है।......................................	259
सोते समय घर की आग को बुझा देना चाहिये।..	259

(झाड़-फूंक के मसाइल का बयान)

जिब्रील का नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को दम करने का बयान।..	260
नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर जादू किये जाने का बयान।.........	261
सूरः फ़लक़ और नास पढ़ कर दम करने का बयान।..................................	261
अल्लाह का नाम पढ़ कर दम करना चाहिये।..	262
नमाज़ में शुब्हा डालने वाले शैतान से पनाह मांगने का बयान।.....................	262
बिच्छू के काटने के स्थान पर सूरः फ़ातिहा पढ़ कर दम करना।......................	263
हर प्रकार के ज़हर को दूर करने का बयान।..	263
नम्ला (एक प्रकार के फोड़ा) पर दम करने का बयान।..................................	263
बिच्छू के काटे पर दम करना जाइज़ है।..	264

बुरी नज़र का लगना हक़ है।.......... 264
बुरी नज़र लगने पर दम करना दुरुस्त है।.......... 265
घर के बीमार व्यक्ति पर दम करना जाइज़ है।.......... 266
जिसमें शिर्क न हो उसे पढ़ कर दम करने में कोई हरज नहीं।.......... 267

(बीमारी और उपचार)

मोमिन की बीमारी पर उसे सवाब मिलता है।.......... 268
बीमार की अ़यादत करना सवाब का काम है।.......... 268
यह न कहो कि "मेरी आत्मा नापाक है"।.......... 269
हर बीमारी के लिये दवा है।.......... 269
बुख़ार, जहन्नम के भाप से है, इसे पानी से ठन्डा करो।.......... 269
बुख़ार गुनाहों को मेट देता है।.......... 270
मिर्गी आने पर सवाब मिलता है।.......... 270
'तलबीना' (मलीदा) बीमार दिल को सुख पहुंचाता है।.......... 270
शहद पिला कर उपचार करने का बयान।.......... 271
अ़जवा खजूर खाने से जादू आदि से सुरक्षित रहता है।.......... 271
कुमात का पानी आंख के लिये शिफ़ा है।.......... 272
ऊद हिन्दी से उपचार करने का बयान।.......... 272
मुंह में दवा डाल कर उपचार करना।.......... 273
पोछना लगवाना और नाक में नास लेना।.......... 273
पोछना लगवाना और दाग़ कर उपचार करना।.......... 273
नस को काट कर और दाग़ कर उपचार करना।.......... 274
घाव का उपचार दाग़ कर करना।.......... 274
शराब से उपचार करना नाजाइज़ है।.......... 274

(ताऊन (Plegue) बीमारी का बयान)

ताऊन (महामारी) यह एक अ़ज़ाब है।.......... 275

(फ़ाल निकालने का बयान)

'अ़दवा' और 'हाम' की कोई हक़ीक़त नहीं।.......... 278
बीमार ऊँट को तन्दुरुस्त ऊँट के बीच में न रखा जाये।.......... 279
'नौआ' की कोई हक़ीक़त नहीं।.......... 280
'ग़ूल' की कोई हक़ीक़त नहीं।.......... 280
कोढ़ के मरीज़ से दूर रहना चाहिये।.......... 280

अच्छा शगून लेना, अच्छी बात बात है।.. 281
नहूसत, घर–महिला और घोड़े के अन्दर होती है।.. 281

(कहानत का बयान)

ग़ैब की बातें बताने वाले के पास जाना मना है।.. 282
शैतान, फ़रिश्तों की बातें आकाश में सुन लेते हैं।.. 283
नुजूमी के पास जो हाथ दिखाने गया उसकी नमाज़ नहीं क़ुबूल होगी।............ 284

(साँपों के मसाइल का बयान)

घर में रहने वाले साँपों को मारना मना है।.. 285
घर में रहने वाले सांपों को तीन बार चेतावनी दे दो।.. 285
सांपों को मार डालने का बयान।.. 287
गिरगिट को मार डालने का बयान।.. 287
चींटी को मारना मना है।.. 288
बिल्ली को मारना मना है।.. 288
चूहे के बारे में बयान।.. 288
जानवरों को पानी पिलाने की फ़ज़ीलत का बयान।.. 289

(कवि और कविता का बयान)

कवितायें पढ़ने के बारे में क्या हुक्म है?.. 290
सबसे सच्ची बात जो किसी कवि ने कहीं।.. 290
कविताओं से पेट भरना मक्रूह है।.. 291
मुँह पर तारीफ़ करने वाले के मुंह में धूल झोंक दो।.. 291
चौसर खेलना हराम है।.. 292
किसी को पाक–साफ़ क़रार देना मना है।.. 292

(सपनों का बयान)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सपने में देखने का बयान।.......... 293
आपका सपने में मुसैलमा कज़्ज़ाब को देखना।.. 294
जिसने आपको सपने में देखा उसने सच देखा।.. 295
अच्छा सपना अल्लाह पाक की तरफ़ से होता है।.. 295
अगर बुरा सपना देखा तो बयान न करे।.. 296
अगर बुरा सपना देखे तो अल्लाह की पनाह मांगे और करवट बदल ले।......... 296
मोमिन का सपना नबुव्वत का 70 वाँ हिस्सा होता है।.. 296

दूसरा भाग

क़ियामत के निकट मोमिन का सपना झूठा नहीं होता।............................	297
सपने की ताबीर का बयान।..	298
सपने में खेल करे तो किसी से बयान न करे।.....................................	298

(नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान)

"मैं आदम की औलाद का सर्दार हूँ" आपका फ़र्मान..................................	299
उस संदेष्टा की मिसाल जो हिदायत के साथ भेजा गया।................................	299
संदेष्टाओं के आने का सिलसिला समाप्त हो गया।..................................	300
पत्थर का आपको सलाम करना।...	300
आप की उंगलियों से पानी का चश्मा फूटना।....................................	301
आपके संदेष्टा होने की पहचान।..	302
आपकी वजह से घी में बर्कत होना।...	307
पेड़ का आपकी आज्ञा पालन करना।..	308
चाँद का फट कर दो टुक्ड़े हो जाना।..	313
आपका लोगों की बुराई से सुरक्षित रहना।..	313
आप क़त्ल करने वाले की बुराई से सुरक्षित रहे।..................................	314
ज़हर मिला हुआ बक्री का माँस खाने का बयान।..................................	315
आपका हर अनुमान दुरुस्त होता था।..	315
मैं तुम्हारी कमर पकड़ कर जहन्नम से रोकता हूँ।.................................	316
आप सबसे अधिक डरने वाले थे।...	316
आप सदा गुनाहों से दूर रहते थे।...	317
नमाज़ पढ़ते-पढ़ते आपके पाँव सूज जाते थे।......................................	317
होज़े-कौसर पर आप इन्तिज़ार करेंगे।..	317
होज़े-कौसर की ख़ूबियों का बयान।..	318
आपके हुलिया और आयु सीमा का बयान।......................................	320
मोहरे-नबुव्वत का बयान।..	321
आपके मुँह, आँखों और एड़ियों का बयान।.....................................	321
आपकी दाढ़ी का बयान।..	322
आपके बुढ़ापे का बयान।...	322
सर के बालों और माँग निकालने का बयान।....................................	322
आप किस प्रकार हँसते थे?..	323
आप बहुत अधिक शर्म करने वाले थे।...	323
आपका शरीर मुलायम और ख़ुश्बूदार था।......................................	323
वह्यि आती तो आप पसीने में डूब जाते।......................................	323

आपके पसीने की ख़ुश्बू का बयान।..	324
आपके पसीने से तबर्रुक हासिल करना।..	324
आपकी ज़ात से तबर्रुक हासिल करना।..	324
आप बाल-बच्चों पर सबसे अधिक रहम करने वाले थे।..	325
आप महिलाओं से अधिक रहम करने वाले थे।..	326
आप सबसे अधिक वीर थे।..	326
आप सबसे अधिक अच्छे अख़लाक़ वाले थे।..	326
आपके बात-चीत करने के ढन्ग का बयान।..	327
आप भलाई के कामों में सबसे अधिक सख़ी थे।..	328
आपसे जब भी माँगा गया, आपने दिया।..	328
आप सबसे अधिक ख़ैरात करने वाले थे।..	328
आप जो वादा करते उसे पूरा करते।..	329
आपके नामों की संख्या का बयान।..	329
आप मक्का और मदीना कितने समय तक रहे।..	330
आप की आयु देहान्त के समय कितनी थी?..	330
जब तक लोग आपकी हर बात न मान लें, मोमिन नहीं हो सकते।..............	331
आपकी हर हाल में पैरवी वाजिब है।..	332
नबी जिससे रोक दें उससे रुक जाओ।..	333
आपके दीन की बातों और राय में फ़र्क़ है।..	333
नबी को देखने की इच्छा प्रकट करना।..	334
आपको देखने की इच्छा करना चाहे माँ-बाप क़ुर्बान हो जायें।..................	334

(नबिय्यों की फ़ज़ीलत का बयान)

आदम अ़लै॰ की पैदाइश का बयान।..	325
इब्राहीम अ़लै॰ की फ़ज़ीलत का बयान।..	335
आपके ख़त्ना करने का बयान।..	335
आपका प्रश्न करना "तू किस प्रकार मुर्दों को ज़िन्दा करता है"।..................	336
इब्राहीम अ़लै॰ के तीन झूठ का बयान।..	336
मूसा अ़लै॰ का बयान।..	338
मूसा अ़लै॰ और ख़ज़िर का बयान।..	338
आपके देहान्त का बयान।..	342
नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब मूसा से मिले, वह नमाज़ पढ़ रहे थे।..	342
यूसुफ़ अ़लै॰ का बयान।..	342

दूसरा भाग

ज़करिया अ़लै॰ का बयान।..	343
यूनुस अ़लै॰ का बयान।..	343
अ़ीसा अ़लै॰ का बयान।..	343
बच्चे की पैदाइश के समय शैतान कचोके लगाता है।....................	344
अ़ीसा अ़लै॰ का कहना "मैं भी ईमान लाया।..........................	344

(सहाबा के फ़ज़ाइल का बयान)

अबू बक्र की फ़ज़ीलत का बयान।..	345
अबू बक्र ने आप पर सबसे अधिक एहसान किया।........................	345
आपके निकट सबसे प्यारे अबू बक्र थे।..................................	346
समस्त नेकियाँ अबू बक्र के अन्दर थीं।..................................	346
अबू बक्र व उमर आपके जानी दोस्त थे।..................................	346
अबू बक्र रज़ि॰ ख़लीफ़ा बनने के हक़दार थे।..............................	347
उस्मान रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।..................................	351
अ़ली रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।..................................	353
तल्हा बिन उबैदुल्लाह की फ़ज़ीलत का बयान।..............................	354
ज़ुबैर रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।..................................	354
तल्हा और ज़ुबैर की फ़ज़ीलत का बयान।..................................	355
स–अ़द बिन वक़्क़ास की फ़ज़ीलत।..	355
उबैदा बिन जर्राह की फ़ज़ीलत का बयान।..................................	358
हसन व हुसैन रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।..............................	358
फ़ातिमा रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।..................................	359
अह्ले–बैत की फ़ज़ीलत का बयान।..	361
आ़इशा रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।..................................	362
उम्मे ज़रा रज़ि॰ की घटना का बयान।..................................	366
ख़दीजा रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।..................................	369
ज़ैनब रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।..................................	370
उम्मे सलमा रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।..............................	371
उम्मे सुलैम रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।..............................	371
उम्मे ऐमन रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।..............................	372
ज़ैद बिन हारिसा रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।..............................	372
बिलाल बिन रिबाह की फ़ज़ीलत का बयान।..............................	373
सलमान फ़ार्सी, सुहैब और बिलाल की फ़ज़ीलत का बयान।..................	374
अनस बिन मालिक की फ़ज़ीलत का बयान।..............................	374

जाफ़र बिन अबू तालिब और अस्मा बिन्त उमैस की फ़ज़ीलत का बयान।....................	375
अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र और अबू तालिब का बयान।....................	376
अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।....................	376
अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की फ़ज़ीलत का बयान।....................	377
अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।....................	378
अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।....................	379
अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।....................	380
सअ़द बिन मआ़ज़ की फ़ज़ीलत का बयान।....................	381
अबू तल्हा और उम्मे सुलैम रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।....................	382
उबय्यि बिन क–अ़ब रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।....................	383
अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।....................	384
अबू मूसा अश्अ़री की फ़ज़ीलत का बयान।....................	388
आ़मिर और अबू मूसा रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।....................	389
अबू हुरैरा रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।....................	390
अबू दुजाना रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।....................	392
अबू सुफ़यान रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयन।....................	392
जुलैबीब रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।....................	393
हस्सान बिन साबित की फ़ज़ीलत का बयान।....................	394
जरीर बिन अब्दुल्लाह बोजली रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।....................	396
हुदैबिय्या के स्थान पर बैअ़त करने वालों की फ़ज़ीलत का बयान।....................	397
बद्री सहाबा की फ़ज़ीलत का बयान।....................	398
कुरैश और अन्सार की फ़ज़ीलत का बयान।....................	399
कुरैशी महिलाओं की फ़ज़ीलत का बयान।....................	399
अन्सार की फ़ज़ीलत का बयान।....................	399
अन्सार के ख़ान्दान वालों की फ़ज़ीलत का बयान।....................	400
अन्सार के साथ रहने की फ़ज़ीलत का बयान।....................	401
कबीला अश्–अ़र के लोगों की फ़ज़ीलत का बयान।....................	401
कबीला ग़िफ़ार और अस्लम के लिये रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुआ....................	402
कबीला मुज़ैना, जोहैना और ग़िफ़ार की फ़ज़ीलत का बयान।....................	403
कबीला बनी तै की फ़ज़ीलत का बयान।....................	403
कबीला दौस के बारे में बयान।....................	404
कबीला बनी तमीम की फ़ज़ीलत का बयान।....................	404

सहाबा के दर्मियान भाई-चारा का बयान।..	404
मैं अपने सहाबा के लिये ढाल हूँ और सहाबा मेरी उम्मत के लिये।............	405
बेहतरीन ज़माना सहाबा का, फिर उनके बाद का।......................................	407
लोगों की मिसाल कान (खान) की तरह है।...	407
हर साँस लेने वाला 100 वर्ष के बाद मर जायेगा।......................................	408
सहाबा को बुरा-भला कना मना है।..	409
उवैस क़र्नी की फ़ज़ीलत का बयान।..	409
मिस्र और वहाँ के रहने वालों के बारे में बयान।..	410
ओमान नगर और वहाँ के रहने वालों के बारे में बयान।.................................	411
फ़ारस (ईरान) मुल्क के बारे में बयान।..	411
लोगों की मिसाल ऊँट की सी है कि 100 में भी काम के नहीं।........................	412
क़बीला बनी सक़ीफ़ के झूठे का बयान।...	412

(नेकी और सद्भावना का बयान)

माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने का बयान।..................................	414
माता-पिता के साथ नेकी करने का बयान।..	415
माता-पिता की सेवा में जिहाद को छोड़ देना जाइज़ है।..................................	416
माता-पिता की नाफ़र्मानी हराम है।...	417
अपने पिता के मित्रों के साथ नेकी करनी भी नेकी है।...................................	417
बेटियों के साथ अच्छा बर्ताव करने का बयान।..	418
रिश्ता-नाता जोड़ने से आयु बढ़ती है।..	418
दूसरे तोड़ें, लेकिन तुम जोड़ने की कोशिश करो।..	418
ग़रीबों और विधुवाओं को कमा कर खिलाना सवाब का काम है।........................	420
अल्लाह के लिये मोहब्बत करने वालों की फ़ज़ीलत का बयान।.........................	420
जो जिससे प्रेम करता है उसका शुमार उसी के साथ होता है।..........................	420
जब अल्लाह पाक किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो अपने बन्दों के दिलों में भी उसके लिये मुहब्बत डाल देता है।..	421
रूहें झुन्ड की शक्ल में रहती हैं।..	421
एक मोमिन बन्दा अपने दूसरे बन्दे के लिये मकान की तरह है।.........................	422
मेहर्बानी और हमदर्दी में मोमिन एक शरीर के समान हैं।................................	422
एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है।..	422
एक मुसलमान को अपने दूसरे मुसलमान भाई के ऐबों को छुपाना चाहिये।........	423
साथ उठने-बैठने वालों की सिफ़ारिश करने का बयान।..................................	423
नेक साथी की मिसाल।...	423

पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करने की वसिय्यत।............................	423
नेकी और भलाई के कामों में पड़ोसी का विशेष ख़्याल रखना चाहिये।.........	424
नर्मी, हमदर्दी और मेहरबानी करने का बयान।..............................	424
अल्लाह पाक नर्मी को पसन्द करता है।.....................................	424
तकब्बुर करने वाले को दन्ड मिलता है।.....................................	424
अल्लाह पाक के नाम पर क़सम खाने वाले का बयान।........................	425
माफ़ (क्षमा) कर देने का बयान।...	426
जो व्यक्ति ग़ुस्सा के समय अपने आप पर क़ाबू रखे।..........................	426
ग़ुस्सा के समय "अऊज़ु बिल्लाहि...." पढ़ने का बयान।.........................	427
नेकी और गुनाह का बयान।...	427
राह में तक्लीफ़ देने वाली चीज़ को हटा देना नेकी है।..........................	428
मोमिन को कोई काँटा चुभता है तो उस पर भी उसे सवाब मिलता है।.........	428
मोमिन को कोई रन्ज पहुंचता है तो उस पर उसे सवाब मिलता है।..............	429
एक दूसरे के साथ हसद-कीना और दुश्मनी करना मना है।.....................	429
दोनों में बेहतर वह है जो पहले सलाम करे।....................................	430
कीना-हसद रखना और बात-चीत छोड़ देना हराम है।...........................	430
जासूसी करना और बदगुमानी रखना हराम है।................................	430
नमाज़ियों में शैतान लड़ाई भड़काने का काम करता है।..........................	431
हर इन्सान के साथ शैतान लगा हुआ है।....................................	431
ग़ीबत करना हराम है।...	431
चुग़ली खाना हराम है।...	432
चुग़ली खाने वाला जन्नत में नहीं जायेगा।......................................	432
दो मुंह वाले की बुराई का बयान।...	432
झूठ और सच का बयान।..	433
कब और कहाँ झूठ बोलना जाइज़ है?...	433
जाहिलिय्यत का दावा करना मना है।...	433
गाली-गुलूच देना मना है।..	434
ज़माना को बुरा-भला कहना मना है।...	434
मुसलमान, अपने भाई पर हथियार से इशारा न करे।...........................	434
तीर लेकर मस्जिद में आये तो उसकी नोक पकड़ कर आये।.....................	435
मुंह पर मारना मना है।...	435
जानवर को लानत भेजना और बुरा-भला कहना मना है।.......................	436
लानत भेजना गुनाह का काम है।..	436
"लोग हलाक हो गये" कहने वाला स्वयं बर्बाद है।.............................	436

बात को बढ़ा–चढ़ा कर पेश करना मना है।..	437
नबी की बद्दुआ भी उम्मती के लिये रहमत है।..	437

(अत्याचार के बयान में)

अत्याचार करना हराम है। और तौबा व माफ़ी मांगने का बयान।..............	440
तक़दीर का बयान।..	444
अ़िल्म का बयान।..	454

(दुआ़ के बारे में बयान)

अल्लाह के नामों का बयान।..	455
जिसने अल्लाह के नामों को याद किया।..	456
नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुआ़ का बयान।..................	457
हिदायत पाने और सीधी राह पर रहने के लिये दुआ़।............................	460
वह नेक काम जिसके वसीला से दुआ़ करनी चाहिये।............................	461
मुश्किल के समय की दुआ़ का बयान।..	462
दुआ़ के कुबूल होने के लिये जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिये।......................	462
दुआ़ करते समय पूरा भरोसा होना चाहिये।..	463
रात में एक समय ऐसा आता है जिसमें दुआ़ कुबूल होती है।....................	463
रात के अन्तिम पहर में अ़ल्लाह को याद करना चाहिये।........................	463
मुर्ग़े के बाँग देने के समय की दुआ़।..	463
गधे के चीख़ने के समय की दुआ़।..	463
मुसलमान भाई के लिये उसके पीठ पीछे दुआ़ करना चाहिये।..................	463
दुनिया ही में सज़ा मिल जाने की दुआ़ न करे।..	464
परेशानी में मौत की दुआ़ करनी नाजाइज़ है।..	464

(अल्लाह को याद करने का बयान)

अल्लाह को याद करके उसकी नज़दीकी हासिल करो।..............................	465
अल्लाह को बिना नाग़ा याद करना चाहिये।..	465
एकत्र होकर कुरआन की तिलावत करनी चाहिये।..................................	466
जो बैठ कर अल्लाह को याद करता है।..	467
अल्लाह को याद करने के लिये मज्लिसें आयोजित करना।..........................	467
अल्लाह को याद करने वाले मर्दों और महिलाओं का बयान।......................	468
"लाइला–ह इल्लल्लाह" की फ़ज़ीलत का बयान।..	468
ऊँची आवाज़ के साथ अल्लाह को याद करने का बयान।..........................	469

शाम के समय पढ़ने वाली दुआयें।....................................	469
नींद और बिस्तर पर पढ़ने वाली दुआयें।....................................	470
फ़ज्र की नमाज़ के बाद तस्बीह पढ़ने का बयान।....................................	471
तस्बीह पढ़ने की फ़ज़ीलत का बयान।....................................	473
तहलील, तहमीद और तक्बीर का बयन।....................................	473

(शैतान से पनाह माँगने का बयान)

बुराइयों से पनाह माँगने की दुआ।....................................	475
नेमत के ख़त्म होने से अल्लाह की पनाह माँगने का बयान।....................	476
छींकने वाला जब "अल्हम्दु लिल्लाह" कहे तो उसका उत्तर देना चाहिये।.......	476

(तौबा का बयान)

अल्लाह से तौबा करने का हुक्म।....................................	477
तौबा के लिये शौक़ दिलाने का बयान।....................................	477
सच्चे दिल से तौबा करने का बयान।....................................	477
जिसने एक हज़ार लोगों की हत्या की थी।....................................	484
पश्चिम से सूरज निकलने से पहले दुआ करने का बयान।....................	485
दिन-रात बुराइयाँ करने वाले की तौबा का बयान।....................................	485
गुनाहों के माफ़ करने का बयान।....................................	485
अल्लाह की रहमत बहुत कुशादा है।....................................	485
अल्लाह की रहमत उसके ग़ुस्से पर ग़ालिब है।....................................	485
अल्लाह की रहमत और उसकी सज़ा का बयान।....................................	486
एक माँ औलाद से जितनी मोहब्बत करती है, उससे कहीं अधिक अल्लाह मुहब्बत करता है।....................................	486
केवल नेकी ही किसी को नजात नहीं दिला सकती।....................................	487
तक्लीफ़ पर अल्लाह से अधिक सब्र करने वाला कोई नहीं।....................	487
अल्लाह पाक से अधिक कोई ग़ैरत मन्द नहीं।....................................	487
बन्दा का अपने गुनाहों का इक़रार करना।....................................	487
काफ़िर और मुनाफ़िक़ भी अल्लाह की नेमतों का इक़रार करेंगे।............	488
क़ियामत के दिन हाथ-पैर बन्दे के ख़िलाफ़ गवाही देंगे।....................	488
अल्लाह के अज़ाब से डरने का बयान।....................................	489
जिसने गुनाह करने के बाद अल्लाह से तौबा की।....................................	490
जिसने गुनाह किया फिर वज़ू करके फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ी।....................	490
मुसलमान के जहन्नम से नजात के लिये फ़िदया में काफ़िरों को दिया जायेगा...	491

दूसरा भाग

(मुनाफ़िक़ों का बयान)

अल्लाह ने फ़रमायाः "जब यह मुनाफ़िक़ तुम्हारे पास आते हैं।.................... 493
मुनाफ़िक़ों की पहचान का बयान।.. 494
घाटी वाली रात में मुनाफ़िक़ों की संख्या का बयान।................................ 494
मुनाफ़िक़ की मिसाल उस बकरी सी है जो दो रेवड़ के दर्मियान.................. 495
मुनाफ़िक़ के मरने पर तेज़ हवा चलती है।.. 495
क़ियामत के दिन इन्हें सख़्त अज़ाब होगा।.. 496
ज़मीन, मुनाफ़िक़ और मुर्तद की लाश को बाहर फेंक देती है।...................... 496

(क़ियामत का बयान)

अल्लाह पाक क़ियामत के दिन ज़मीन को मुट्ठी में ले लेगा।........................ 497
क़ियामत के दिन ज़मीन की हालत का बयान।.. 497
हर व्यक्ति उसी हाल में उठाया जायेगा जिस हाल में वह मरा था।................ 498
क़ियामत के दिन लोग अपने अच्छे-बुरे कामों के मुताबिक़ उठेंगे।............... 498
क़ियामत के दिन लोग नन्गे पैर, नन्गे बदन, बिना ख़तना के उठाये जायेंगे।..... 498
क़ियामत के दिन लोग तीन समूह में उठायें जायेंगे।.................................. 499
क़ियामत के दिन काफ़िर मुंह के बल उठाये जायेगे।.................................. 499
सूरज तमाम मख़्लूक़ के निकट आ जायेगा।.. 499
क़ियामत के दिन कितना पसीना छूटेगा?... 499
क़ियामत के दिन छुटकारा के लिये फ़िदया मांगा जायेगा?.......................... 500

(जन्नत का बयान)

उस गरोह का बयान जो सबसे पहले जन्नत में जायेगा।.............................. 501
जो भी जन्नत में जायेगा आदम की सूरत पर होगा।.................................. 502
कुछ लोगों के दिल परिन्दों के दिल जैसे होंगे।....................................... 502
जन्नती लोगों पर अल्लाह की रज़ामन्दी नाज़िल होगी।............................. 502
जन्नती लोग बाला ख़ाना में रहने वालों को देखेंगे।.................................. 503
जन्नती लोगों के खाने का बयान।... 503
जन्नती लोगों के लिये उपहार का बयान।... 503
जन्नती लोगों को मिलने वाली नेमतें हमेशा के लिये होंगी।........................ 504
जन्नत के एक पेड़ का बयान जिसका साया।.. 505
जन्नत में लगाए गये ख़ेमों का बयान।.. 505
जन्नत के बाज़ार का बयान।.. 505
जन्नत के नहरों की कुछ नहरें दुनिया में भी बह रही हैं।............................. 506

जन्नत को मकरूह कामों से घेर दिया गया है।	506
जन्नत में महिलाओं की संख्या कम होगी।	506
जन्नती और जहन्नमी लोगों का बयान और दुनिया में उनकी पहचान।	506
जन्नती–जहन्नमी जहाँ भी होंगे, वहीं सदा रहेंगे।	508
(जहन्नम का बयान)	
दन्ड पाने वालों को दन्ड कहाँ–कहाँ तक पहुंचेगे?	509
अल्लाह के अ़लावा के नाम पर जानवर छोड़ने वालों के दन्ड का बयान	510
जहन्नम के अन्दर काफ़िर की दाढ़ कितनी बड़ी होगी।	511
जो दुनिया में लोगों को सताते थे उनकी सजा का बयान।	511
(फ़ित्ना फ़साद का बयान)	
जब दुनिया में बुराई बढ़ जायेगी तो फ़ितने भी बढ़ जायेंगे।	513
क़ियामत के निकट फ़ितने ऐसे बरसेंगे जैसे वर्षा की बूंदें।	513
शैतान अपने लश्कर को भेज कर लोगों में फ़साद डालेगा।	514
फ़ितने और उनकी कैफ़ियत का बयान।	515
फ़ितने और उनसे सुरक्षित रहने का बयान।	516
फ़ितने पूरब की तरफ़ से उठेंगे।	516
क़ैसर और किसरा के ख़ज़ाने अल्लाह की राह में ख़र्च होंगे।	517
इस उम्मत की तबाही स्वयं एक–दूसरे के हाथों होगी।	518
मेरी उम्मत के लोग पहली उम्मतों के तरीक़े पर चलेंगे।	519
फ़ितना–फ़साद के समय बैठा रहने वाला, खड़ा रहने वाले से बेहतर होगा।	519
जब दो मुसलमान परस्पर तलवारें लेकर खड़े हो जायें तो दोनों ही जहन्नमी है...	520
अ़म्मार बिन यासिर रज़ि॰ को बाग़ी गरोह क़त्ल करेगा।	520
क़ियामत के निकट स्वयं क़ातिल ही नहीं जानेगा कि मैंने क्यों क़त्ल किया।	521
क़ियामत के निकट हिजाज के ज़मीन से एक आग निकलेगी।	521
क़ियामत उस समय तक न आयेगी जब तक लोग ज़िल् ख़ि–सा बुत की पूजा न करने लग जायें।	522
क़ियामत के निकट लात–उज़्ज़ा की पुनः पूजा की जायेगी।	522
क़ियामत उस समय तक न आयेगी जब लक उस नगर पर क़ब्ज़ा न हो जाये। जिसके एक तरफ़ समुन्दर है और दूसरी तरफ़ ख़ुशकी।	523
फ़ुरात नदी से क़ियामत के निकट सोने का पहाड़ निकलेगा।	523
क़ियामत के निकट क़बीला क़हतान से एक व्यक्ति प्रकट होगा।	524
क़ियामत के निकट यहूदियों से मुसलमानों की जन्ग होगी।	525

क़ियामत उस समय आयेगी जब ईसाइयों की संख्या सबसे अधिक होगी।......	525
दज्जाल के आने से पहले मुसलमानों की जीत होगी।..............................	527
कुस्तुन्तुनिया की फ़तह का बयान।..	527
जो लश्कर बैतुल्लाह को गिराने आयेगा वह धंसा दिया जायेगा।................	528
क़ियामत के निकट अमानत और ईमान दिलों से उठा लिया जायेगा।..........	529
वह निशानियाँ जो क़ियामत से पूर्व प्रकट होंगी।..................................	530
काले फ़ित्नों के आने से पहले नेकी में जल्दी करो।..............................	530
छः चीज़ों के आने से पहले नेक कामों में जल्दी करो।............................	531
फ़ित्ना के ज़माना में इबादत करने का बयान।.......................................	531
इब्ने सय्याद (साइद) के क़िस्सा का बयान।..	531
क़ियामत की पहली निशानी यह है कि सूरज पश्चिम से निकलेगा।............	539
अस्फ़हान नगर के सत्तर हज़ार यहूदी दज्जाल की पैरवी करेंगे।...............	543
ईसा अलै० आसमान से उतर कर सलीब को तोड़ेंगे और सुअर को मार डालेंगे।..	543
एक व्यक्ति दूध दूह रहा होगा और क़ियामत आ जायेगी।........................	545
सूर के दोनों फूँ के दर्मियान चालीस का फ़ासला होगा।..........................	545
मर्दों के लिये सबसे बड़ा फ़ित्ना महिलायें हैं।..	546

(दुनिया से दूर रहने का बयान)

जन्नत में ज़्यादातर ग़रीब लोग जायेंगे।..	548
दुनिया में दिल न लगाओ।..	549
यह अल्लाह के निकट ज़लील है।..	549
दुनिया की दौलत मिलने से हसद की बीमारी पैदा होती है।....................	550
दुनिया की हैसियत आख़िरत के मुक़ाबला में ऐसी है जैसे नदी के पानी में उंगली डुबो दी जाये।..	550
दुनिया की दौलत को देकर आज़माइश होती है।.....................................	550
दुनिया में दौलत कम मिले तो इस पर सब्र करना चाहिये।.......................	552
मुर्दा के पास से धन-माल, बीवी-बच्चे वापस आ जाते हैं।.....................	553
हमेशा अपने से ग़रीब और कमज़ोर लोगों को देखो।...............................	553
अल्लाह प्रहेज़गार बन्दे को पसन्द करता है।..	553
जो व्यक्ति देखावे और नाम पर लिये कोई काम करे।.............................	554
कुफ़्र का एक शब्द भी जहन्नम में दाख़िल होने का सबब बन जाता है।........	554
मोमिन का हर काम भलाई होता है।...	554
दीन के काम में सब्र करने का बयान।..	554
खाई (ख़न्दक़) वालों का बयान।..	554

दूसरा भाग

(कुरआन की फ़ज़ीलत का बयान)

सूरः फ़ातिहा की फ़ज़ीलत का बयान।................................	557
सूरः बक़रः और आले अ़िम्रान की फ़ज़ीलत का बयान।..................	557
आयतुल कुर्सी की फ़ज़ीलत का बयान।................................	557
सूरः बक़रः की अन्तिम आयतों का बयान।..............................	558
सूरः कहफ़ की फ़ज़ीलत का बयान।....................................	558
सूरः इख़्लास की फ़ज़ीलत का बयान।..................................	558
सूरः फ़लक़ और सूरः नास की फ़ज़ीलत का बयान।.......................	559
क़ुरआन की वजह से मर्तबा बुलन्द होता है।............................	559
क़ुरआन पाक सीखने की फ़ज़ीलत का बयान।............................	559
जो क़ुरआन को पढ़ता है उसकी मिसाल, और जो नहीं पढ़ता है उसकी मिसाल।..	560
जो क़ुरआन को अटक–अटक कर पढ़े, उसके बारे में बयान।............	560
क़ुरआन पढ़ने से सुकून नाज़िल होता है।................................	560
दो चीज़ों के अ़लावा और किसी चीज़ में हसद जाइज़ नहीं।...............	561
क़ुरआन को जितना ही पढ़ोगी उतना हीयाद रहेगा।......................	562
अच्छी आवाज़ से तिलावत करनी चाहिये।................................	562
तिलावत में लहजे में उतार–चढ़ाव लाना चाहिये।........................	562
क़ुरआन सात हर्फ़ों में नाज़िल किया गया है।............................	563
नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दूसरे को पढ़ कर सुनाते थे।.....	562
नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जिन्नों को पढ़ कर सुनाया है, या नहीं?..	564
नबी का दूसरे से पढ़वा कर स्वयं सुनने का बयान।........................	564
क़ुरआन को लेकर झगड़ना मना है।......................................	565

(क़ुर्आन की तफ़्सीर का बयान)

सूरः बक़रः आयत 58 की तफ़सीर।..	566
सूरः बक़रः आयत 189 की तफ़सीर।......................................	566
सूरः बक़रः आयत 260 की तफ़सीर।......................................	567
सूरः बक़रः आयत 284 की तफ़सीर।......................................	567
सूरः बक़रः आयत 58 की तफ़सीर।..	567
सूरः आले अ़िम्रान की आयत नं. 7 की तफ़सीर।..........................	567
सूरः आले अ़िम्रान की आयत नं. 188 की तफ़सीर।........................	567

सूरः निसा की आयत नं. 3 की तफ़सीर।	568
सूरः निसा की आयत नं. 127 की तफ़सीर।	569
सूरः निसा की आयत नं. 88 की तफ़सीर।	569
सूरः निसा की आयत नं. 93 की तफ़सीर।	569
सूरः निसा की आयत नं. 94 की तफ़सीर।	570
सूरः निसा की आयत नं. 128 की तफ़सीर।	571
सूरः माइदा की आयत नं. 3 की तफ़सीर।	571
सूरः अन्आ़म की आयत नं. 82 की तफ़सीर।	572
सूरः अन्आ़म की आयत नं. 158 की तफ़सीर।	572
सूरः आराफ़ की आयत नं. 31 की तफ़सीर।	573
सूरः आराफ़ की आयत नं. 43 की फ़सीर।	573
सूरः अन्फ़ाल की आयत नं. 33 की तफ़सीर।	574
सूरः तौबा की आयत नं. 84 की तफ़सीर।	574
सूरः हूद की आयत नं. 114 की तफ़सीर।	575
सूरः इस्रा की आयत नं. 85 की तफ़सीर।	575
सूरः इस्रा की आयत नं. 57 की तफ़सीर।	576
सूरः इस्रा की आयत नं. 110 की तफ़सीर।	576
सूरः कह्फ़ की आयत नं. 105 की तफ़सीर।	577
सूरः म्रयम की आयत नं. 39 की तफ़सीर।	577
सूरः म्रयम की आयत नं. 77 की तफ़सीर।	577
सूरः अम्बिया की आयत न॰ 104 की तफ़सीर।	578
सूरः हज्ज की आयत न॰ 19 की तफ़सीर।	579
सूरः नूर की आयत न॰ 11 की तफ़सीर।	579
सूरः नूर की आयत न॰ 33 की तफ़सीर।	579
सूरः फ़ुर्क़ान की आयत न॰ 68 की तफ़सीर।	586
अलिफ़ लाम्मीम सज्दा की आयत न॰ 17 की तफ़सीर।	586
अलिफ़ लाम्मीम सज्दा की आयत न॰ 21 की तफ़सीर।	586
सूरः अहज़ाब की आयत न॰ 10 की तफ़सीर।	587
सूरः यासीन की आयत न॰ 38 की तफ़सीर।	587
सूरः ज़ु–मर की आयत न॰ 67 की तफ़सीर।	587

दूसरा भाग

हामीम सज्दा की आयत न॰ 22 की तफ़सीर।	588
सूरः दुख़ान की आयत न॰ 10 की तफ़सीर।	589
सूरः फ़त्ह की आयत न॰ 24 की तफ़सीर।	590
सूरः हुजुरात की आयत न॰ 1 की तफ़सीर।	590
सूरः काफ़ की आयत न॰ 20 की तफ़सीर।	591
सूरः क़मर की आयत न॰ 18 की तफ़सीर।	592
सूरः रहमान की आयत न॰ 15 की तफ़सीर।	592
सूरः हदीद की आयत न॰ 16 की तफ़सीर।	592
सूरः हश्र की आयत न॰ 10 की तफ़सीर।	592
सूरः जिन्न की आयत न॰ 1 की तफ़सीर।	643
सूरः कियामा की आयत न॰ 16 की तफ़सीर।	644
सूरः मु–तफ़्फ़िफ़ीन की आयत न॰ 6 की तफ़सीर।	644
सूरः इन्शिक़ाक़ की आयत न॰ 8, 9 की तफ़सीर।	654
सूरः वल्लैलि की आयत न॰ 3 की तफ़सीर।	654
सूरः वज्जुहा की आयत न॰ 3 की तफ़सीर।	646
सूरः तकासुर की आयत न॰ 1 की तफ़सीर।	646
सूरः नस्र (फ़त्ह की आयत न॰ 1, 2 की तफ़सीर। की तफ़सीर।	647

★★★

किताबुस्सर्-क़ति
(चोरी की सज़ा का बयान)

नोटः— जो वस्तु सुरक्षित स्थान पर रखी हुयी हो उसे उठा लेने का नाम चोरी है। कुछ ऐसी वस्तुएँ भी होती हैं जिन का सुरक्षा के लिये विशेष प्रबन्ध नहीं होता है जेसे जानवर आदि, इन की भी चोरी करने पर हाथ काटा जायेगा। अल्लाह तआ़ला ने सूरः माइदा की आयत न॰ 38 में स्पष्ट शब्दों में आदेश दिया है।

बाब {किस वस्तु की चोरी में हाथ काटा जायेगा।}

1043:— आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः चौथाई दीनार या इस से अधिक की चोरी में हाथ काटा जायेगा।

बाब {जिस वस्तु की क़ीमत तीन दिंहम हो (उस की चोरी में) हाथ काटा जायेगा।}

1044:— इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक चोर का हाथ ढाल चुराने की वजह से काट लिया जिस की क़ीमत तीन दिंहम थी।

फ़ाइदाः— दिंहम, चाँदी और दीनार, सोने का होता है। चौथाई दीनार, तीन दिंहम के बराबर होता है। यानी तीन दिंहम, चौथाई दीनार के बराबर होता है। कम से कम कितनी क़ीमत की सामान की चोरी पर हाथ काटा जायेगा? हाफ़िज़ इब्ने हजर रह॰ ने 19 इख़्तिलाफ़ गिनाए हैं। इन में जमहूर उलमा का फ़तवा सब से दुरुस्त है कि चोरी की गयी वस्तु की क़ीमत कम से कम तीन दिंहम या चौथाई दीनार होनी चाहिये। इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ का फ़तवा दस दिंहम पर है और यह फ़तवा रद्द है।

मुस्नद अहमद की रिवायत तें स्पष्ट शब्दों में है "चौथाई दीनार के माल की चोरी में हाथ काट दो, कम से कम में न काटो। उस समय चौथाई दीनार, तीन दिंहम के बराबर था और एक दीनार 12 दिर्हम के बराबर था" (अहमद–6/80) आ़इशा रज़ि॰ ने बयान किया कि ढाल से कम क़ीमत के सामान की चोरी में हाथ नहीं काटा जायेगा और ढाल की क़ीमत चौथाई दीनार होती है। (नसई–4939)

बाब {अंडे की चोरी में हाथ काटा जायेगा।}

1045:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक की लानत हो ऐसे चोर पर जो अंडे चुराता है, फिर बदले में उस का हाथ काटा जाता है। और इसी प्रकार रस्सी चुराता है, फिर बदले में उस का हाथ काटा जाता है।

फ़ाइदाः– अंडे और रस्सी की चोरी पर हाथ नहीं काटा जायेगा, क्योंकि इस की क़ीमत चौथाई दीनार, या तीन दिंहम के बराबर नहीं पहुँचती है। यहाँ पर अंडे और रस्सी को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उदाहरण के तौर पर पेश कर के अफ़सोस किया है कि मामूली-मामूली वस्तुओं को भी लोग चुराते हैं और अल्लाह की लानत लेते हैं।

बाब {दंड के मामले में सिफ़ारिश करना मना है।}

1046:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना में फ़तह मक्का के मौक़े पर क़बीला क़ुरैश की एक महिला ने चोरी की तो लोगों को (उसे बचाने की) बड़ी फ़िक्र हुयी। चुनान्चे परस्पर राय-मश्वरा किया कि इस बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कौन सिफ़ारिश करे। तो यह तै पाया कि उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ के अ़लावा और कोई साहस नहीं कर सकता है, क्योंकि वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकट बड़े लोकप्रिय हैं। फिर जब वह महिला नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास लाई गयी तो उसामा बिन ज़ैद ने सिफ़ारिश कर दी। यह सुन कर आप के मुँह का रंग बदल गया और फ़रमायाः तुम अल्लाह के हद (को न लागू करने के विषय) में सिफ़ारिश करते हो। इतना सुनना था कि उसामा रज़ि॰ बोल पड़ेः अल्लाह के सन्देष्टा! मेरे लिये अल्लाह से क्षमा की दुआ़ कर दीजिये (मुझ से पाप हो गया है)

जब शाम हुयी तो आप ने मिंबर पर खड़े हो कर एक खुत्बा दिया, उस खुत्बे में अल्लाह पाक की शान के मुताबिक़ उस की प्रशंसा की, फिर फ़रमायाः "तुम से पहले के लोगों को इस बात ने तबाह कर दिया कि जब उन में का कोई प्रतिष्ठावान, आदरणीय (इज़्ज़तदार) व्यक्ति चोरी करता तो उसे छोड़ देते और जब कोई ग़रीब और कमज़ोर चोरी करता तो उस को दन्डित करते। अल्लाह की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है अगर मेरी पुत्री फ़ातिमा भी चोरी करेगी तो मैं उस के हाथ काट लूँगा।

आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ ने बयान किया कि (उस का हाथ काटने के बाद) वह ठीक-ठाक हो गयी और उस ने निकाह भी कर लिया। वह मेरे पास अपनी आवश्यक्ता लेकर आती तो मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में उसे पेश कर देती।

फ़ाइदाः– चोरी, ज़िना और हत्या आदि के जुर्म में अभियुक्त को बचाने के लिये सिफ़ारिश करना यह स्वँय ही एक पाप है। आज हमारा मुल्क जो तबाह-बर्बाद है, हर क्षेत्र में ऊपर उठने के स्थान पर नीचे ही जा रहा है, इस का कारण यही है कि धनवान लोगों,

उच्च गोत्र के लोगों, चोरों डकैतों, हत्यारों, और आतंकवादियों को दंड देने के बजाए उन्हें सरकारी मोहकमों में उच्च पदों पर विराजमान किया जाता हैं। आज 28 नवंबर 2005 की तिथि में आप देख लें बिहार में लालू, मुख्यमंत्री के उच्च पद पर विराजमान हैं। राष्ट्र की अगुवाई अटल बिहारी, अडवानी, सिघंल, तौगड़िया, उमा भारती, मायावती, राजा भय्या, मुख़्तार अ़ब्बास, बाल ठाकरे, शीबूसरेन जैसे भ्रष्ट और डकैत व आतंकवादी नेता कर रहे हैं। शरीअ़त का यह निर्देश है कि अभियुक्त कोई भी हो उस के साथ कोई रियायत नहीं होनी चाहिये, ताकि लोग नसीहत पकड़ें।

नोटः– चोरी के संबध में कुछ मस्अले और बयान किये जाते हैं। ★चोरी पर हाथ काटने के लिये सामान का सुरक्षित स्थान पर होना शर्त है। जैसे फल खलियान में हों, जानवर बाड़ें में हों, सामान घर के अन्दर हों, मस्जिद के सामान मस्जिद के कमरों में हों। अगर समान यूँ ही लार्पवाही से ग़लत स्थानों पर पड़ें हैं, उन की चौरी पर हाथ नहीं काटा जायेगा। ★नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ लिखते हैं: "पहली मर्तबा चोरी में दायाँ हाथ, दूसरी में बायाँ पावँ,तीसरी में बायाँ हाथ, चौथी मर्तबा चोरी में दायाँ पाँव काटा जायेगा। इस के बाद भी अगर चोरी करता है तो उसे बंद कर दिया जायेगा।" (अ़रौ–ज़तुन्नदिय्या–2/601) अ़ल्लामा शौकानी के निकट पहली मर्तबा चोरी में दायाँ हाथ काटा जायेगा। फिर दूसरी मर्तबा में न हाथ काटा जायेगा और न पाँव (सैलुल् जर्रार–4/264) ★काटने के बाद उस का उपचार भी सरकार ही करेगी और बैतुल् माल से ख़र्चा दिया जायेगा (इरवाउल् ग़लील–2431, नैलुल् औतार–4/589) ★हाथ काट कर उस की गर्दन में लटका दिया जायेगा ताकि लोग देख कर अपने अन्दर ख़ौफ़ पैदा करें (बैहक़ी–8/275, अबू दावूद–4411, इब्ने माजा–2587) ★माफ़ी–तलाफ़ी का काम मुक़दमा अ़दालत में पहुँचने से पहले होना चाहिये। अ़दालत में क़ाज़ी के पास पहुँचने के बाद सज़ा होगी (अबू दावूद–4376, इब्ने माजा–2595) ★कोई चीज़ उधार ले कर इन्कार कर दे तो इस पर भी हाथ काटा जायेगा। क़बीला मख़ज़ूम की एक महिला ऐसा ही किया करती थी तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस का हाथ कटवा दिया (मुस्लिम, अबू दावूद–4395, नसई–8/70) मालूम हुआ कि उधार का इन्कार भी चोरी में शामिल है। ★नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "जो व्यक्ति फ़ल आदि को उठा कर मुँह से खाने लगे और छुपा कर न ले जाये तो उस पर कोई दंड नहीं। अगर उठा कर ले जाये तो उस से दोगुनी क़ीमत वसूल की जाये और डराने के लिये सज़ा भी दी जाये। और अगर ग़ल्ले के ढेर से उठाया (तो इसे चोरी माना जायेगा) इस में हाथ काटा जायेगा, जबकि उस की क़ीमत ढाल की क़ीमत (तीन दिंहम, या चौथाई दीनार) के बराबर हो (अबू दावूद–4390, तिर्मिज़ी–1289, इब्ने माजा–2596, इरवाउल ग़लील–2413)

❀ ❀ ❀

किताबुल हुदूदि
(शराब पीने पर सज़ा का बयान)

नोटः– चोरी, ज़िना और शराब आदि पर दंड देना बहुत ही अनिवार्य है। इस में नर्मी और असावधानी नहीं करनी चाहिये। इन्ही सज़ाओं से लोग डरेंगे और भविष्य में न करने का वादा करेंगे, इस प्रकार समाज पवित्र होगा। अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ज़मीन पर जारी की जाने वाली एक सज़ा ज़मीन वालों के लिये तीस दिन की बारिश से बेहतर है (नसई–8/76, तर्ग़ीब–2350) एक दूसरी रिवायत में चालीस रातों की वर्षा से बेहतर है (तर्ग़ीब'2350) एक दूसरी रिवायत में आप ने फ़रमायाः "अल्लाह की सज़ाओं में से एक सज़ा को जारी कर देना, अल्लाह के नगरों में चालीस रात की वर्षा से बेहतर है।" (इब्ने माजा–2537–इब्ने उमर) अर्थात चालीस दिन की वर्षा से जितना लाभ खेती को होगा, एक हद जारी कर देने से उस से अधिक लाभ समाज को पहुँचेगा। इसीलिये हद को खुले मैदान में जारी करना चाहिये। इस से अभियुक्त तो तौबा करेगा ही, देखने वाले मारे डर और खौफ़ के न करने का संकल्प लेंगे और घर–समाज, नगर–राष्ट्र और दुनिया–संसार बुराइयों से मुक्त हो जायेगा–ख़ालिद।

बाब {शराब पीने के जुर्म में कितने कोड़े मारे जायें?}

1047:– हुज़ैन बिन मुन्ज़िर अबू सासान ने बयान किया कि मैं उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि॰ (तीसरे ख़लीफ़ा) के पास बैठा हुआ था कि इसी दर्मियान लोग वलीद बिन उक़्बा को लेकर आये। उन्होंने फ़ज्र की दो रक्अ़तें पढ़ाईं, फिर कहने लगे कि दो और पढ़ा दूँ। चुनान्चे इन के ख़िलाफ़ दो आदमियों ने गवाही दी। उन में से एक हुमरान थे जिन्होंने कहा कि इन्होंने शराब पी रखी है। दूसरे व्यक्ति ने गवाही दी कि इन्होंने मेरे सामने शराब की उल्टी की है। यह सुन कर उस्मान रज़ि॰ ने कहाः अगर इस ने शराब न पी होती तो शराब की उल्टी काहे को करता। फिर उस्मान रज़ि॰ ने अ़ली रज़ि॰ सेकहाः उठ कर इसे कोड़े लगाओ। लेकिन अ़ली रज़ि॰ ने (अपने पुत्र) हसन रज़ि॰ सेकहाः ऐ हसन! तुम उठ कर उसे कोड़े मारो। हसन ने कहाः उस्मान ग़नी ख़िलाफ़त का सर्द (ठन्डा) मज़ा ले रहे हैं

और गर्म मज़ा भी वही लें (और वही कोड़े मारें)। यह सुन कर अ़ली रज़ि॰ बहुत नाराज़ हुये और अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र को हुक्म दिया कि वह कोड़े लगाएँ। (चुनान्चे उन्होंने कोड़े मारे) और अ़ली गिनती करते जाते थे। चुनान्चे जब चालीस पूरे हो गये तो कहा कि अब ठहर जाओ (चालीस हो गये) फिर कहा कि मैंने चालीस कोड़े लगवाए, अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने भी चालीस लगवाए, लेकिन उमर फ़ारुक़ रज़ि॰ ने 80 कोड़े लगवाए, और हर एक सुन्नत के अनुसार है और मेरे निकट भी 40 ही सब से बेहतर है।

फ़ाइदाः— मालूम हुआ कि हद के लिये कोड़ों की कोई विशेष संख्या तै नहीं है। उमर फ़ारुक़ रज़ि॰ ने सहाबा के मश्वरा से 80 कोड़े लगाए (मुस्लिम–1706, अबू दावूद–4479, इब्ने माजा–2570, तिर्मिज़ी–1443) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास नोमान नामक एक शराबी को लाया गया तो आप ने उस के घर के तमाम लोगों को हुक्म दिया कि उसे मारें। रावी उक़्बा ने कहा कि मैं ने भी उसे जूतियों और छड़ियों से पिटाई की (बुख़ारी–6774, 6775) इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शराब पीने पर कोई हद नहीं मुक़र्रर की है (अबू दावूद–4476, अहमद–1/322) चुनान्चे अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम और नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ भोपाली लिखते हैं कि शराबी को हद लगाना अनिवार्य है, लेकिन संख्या तै नहीं है। यह इमाम और क़ाज़ी पर निर्भर करता है कि शराबी को देख कर उस के लिये उचित सज़ा तै करें। (नैलुल् औतार–4/597, रौ–ज़तुन्नदिय्या–2/612, सुबुलुस्सलाम–4/1724) हसन रज़ि॰ के कहने का यह अर्थ था कि उस्मान रज़ि॰ ख़िलाफ़त के मज़े ले रहे हैं तो वही कोड़े मार कर स्वँय दुश्मनी मोल लें, हम क्यों दुश्मन बनने जायें।

1048:— अ़ली रज़ि॰ ने बयान किया कि अगर मैं किसी पर हद जारी करुँ और वह मर जाये तो मुझे इस की कोई पर्वा नहीं। लेकिन अगर शराब की हद (80 कोड़े) में कोई मर जाये तो दियत (हर्जाना) दिलाऊँगा, क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत यह नहीं है।

फ़ाइदाः— मुस्लिम की रिवायत में अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शराब पीने के जुर्म में छड़ी और जूतों से सज़ा दी, अबू बक्र ने 40 कोड़े लगवाए। लेकिन जब उमर रज़ि॰ का ज़माना आया और (लोगों की संख्या बढ़ जाने से) लोग चरागाहों और नगरों के निकट हो गये तो उन्होंने सहाबा से शराब की हद के बारे में पूछा तो अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ि॰ ने कहाः मेरी राय में उन पर सब से हल्की हद जारी की जाये, चुनान्चे उमर रज़ि॰ ने 80 कोड़े लगाए (मुस्लिम–1706, अबू दावूद–4479) मालूम हुआ कि शराबी को वही दन्ड दिया जाये जो ऊपर के फ़ाइदे में बयान हुआ।

बाब {सज़ा में कितने कोड़े मारे जायें?}

1049:– अबू बुर्दा अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि किसी को भी दस कोड़ों से अधिक न मारा जाये, मगर अल्लाह की हदों में से किसी हद में।

फ़ाइदा:– शराब में कोड़ों की संख्या को लेकर बड़ा इख़्तिलाफ़ है। जितने इमाम हैं उतने ही फ़तवे हैं। सच्ची बात वही है जो इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने बयान की कि "नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शराबी की कोई हद नहीं तै की" (अबू दावूद–4476, अहमद–1/322) इसलिये मौक़े पर इमाम और क़ाज़ी शराबी की बुराई को देख कर जो उचित दन्ड तै कर दे उसी पर अ़मल होगा (नैलुल् औतार–4/597) अधिक जानकारी के लिये ऊपर हदीस न॰ 1047 का फ़ाइदा देखें।

बाब {किसी ने ऐसा पाप किया जिस पर हद जारी होना चाहिये और हद जारी भी हो गयी, तो यह हद उस के लिये कफ़्फ़ारा है।}

1050:– उबादा बिन सामित रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हम मर्दों से भी उसी प्रकार बैअ़त ली जिस प्रकार महिलाओं से ली। आप ने इन बातों पर बैअ़त ली कि हम अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं करेंगे, चोरी नहीं करेंगे, ज़िना नहीं करेंगे, अपनी औलाद की हत्या नहीं करेंगे, एक–दूसरे पर आरोप नहीं लगाएँगे। (इस के बाद आप ने फ़रमाया) जो इस मुआ़हिदे (अनुबन्ध, बैअ़त) को पूरा करेगा तो अल्लाह पाक इस पर नेक बदला देगा। और अगर किसी ने ऐसा कार्य किया जिस पर हद जारी हो, फिर उस पर हद जारी हो, तो वही हद उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाता है। और अगर अल्लाह पाक उस के गुनाहों को छुपा ले (लोगों को ज्ञान न हो और न ही हद जारी हो) तो उस का मामला अल्लाह पाक के इख़्तियार में है, वह चाहे तो (क़ियामत के दिन) दन्ड दे और चाहे तो माफ़ कर दे।

फ़ाइदा:– क़ियामत के दिन अल्लाह पाक समस्त पापों को माफ़ कर सकता है। शिर्क को छोड़ कर। क्योंकि उस के बारे में स्पष्ट शब्दों में फ़रमा दिया है: "अल्लाह शिर्क के गुनाहों को कदापि और कभी नहीं माफ़ करेगा। हाँ, इस के अतिरिक्त और पापों को चाहे गा तो माफ़ कर देगा" (सूरः निसा–48)

नोट:– इस बाब से संबन्धित चन्द और मस्अलों की जानकारी। ★शराब में ऐसा हद नही लगाया जायेगा कि वह मर जाये। क्योंकि आप ने फ़रमाया: किसी मुसलमान का ख़ून केवल तीन चीज़ों में हलाल है (1) जान के बदले जान (2) शादीशुदा ज़िना करने वाले की जान लेना (3) इस्लाम से फिर जाने वाले की जान लेना (तिर्मिज़ी–1444) ★शराबी स्वँय एक मर्तबा इक़रार कर ले, या दो व्यक्ति गवाही दे दें, तो उस पर हद जारी हो जायेगा। ★शराब से मुराद केवल वही शराब नहीं जो ज़माना में बदनाम है, बल्कि हर वह वस्तु है, चाहे

वह खाने की हो, या पीने की, या इन्जक्शन हो, इस्मेक हो या ड्रग, या लगाने वाली हो, सूखी हो यी गीली हो, कड़वी हो या मीठी हो, जिस वस्तु से भी नशा पैदा हो वह हराम है, और उस के पीने पर हद जारी होगा (फ़त्हुल् क़दीर-4/178) ★पीने के बाद जब तक नशा न पैदा हो हद नहीं लगेगा। हाँ, पीने पर आप जो चाहें दन्ड़ दें, वह हद नहीं कहलायेगा (अल्मोग़नी) ★एक रिवायत में है कि चौथी मर्तबा पीने पर क़त्ल कर दो। (अबू दावूद-4484, इब्ने माजा-2573) यह रिवायत मन्सूख़ है (देखें-हाकिम-4/373, बैहकी-8/314)

❀ ❀ ❀

किताबुश्शहादाति
(गवाही और न्याय दिलाने का बयान)

बाब {न्याय ज़ाहिरी बातों पर होगा। दलील देने में चर्ब ज़बानी से काम लेना महापाप है।

1051:– मुसलमानों की माता उम्मे सलमा रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने हुजरे के बाहर लड़ाई-झगड़े और चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ सुनी तो बाहर निकल कर फ़रमायाः मैं भी एक इन्सान ही हूँ, मेरे पास कोई मामला पेश होता है तो वादी-प्रतिवादी में से कोई भी (अपनी चर्ब ज़बानी से) बात को इस ढंग से पेश करता है कि मैं उसे हक़ पर समझता हूँ और उस के हक़ में फ़ैसला दे देता हूँ (तो याद रखो) इस प्रकार के किसी केस में अगर मैं उस कोकिसी मुसलमान का हक़ दिला दूँ तो यह समझो कि मैं उसे आग का एक टुक्ड़ा दे रहा हूँ, अब वह चाहे तो उसे ले ले, या छोड़ दे।

फ़ाइदा:– ऐसा अक्सर देखने में आता है कि एक ज़ालिम बातूनी और बात बनाने में माहिर होने के नाते अपनी ग़लत बात को इतने अच्छे ढंग से पेश करता है कि लोग उसे हक़ पर समझ कर उस के हक़ में फ़ैसला सुना देते हैं। यही कुछ हाल कोर्ट कचेहरियों में वकीलों का भी होता है कि एक दबंग, बातूनी और धाकड़ वकील ज़ालिम के केस में अपनी बनावटी बातों से फ़ैसले को अपने हक़ में करा लेता है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ऐसे लोगों को चेतावनी देते हुये फ़रमाया कि यह दुनिया में तो बच जायेंगे लेकिन आख़िरत में इन का ठिकाना आग है। इस हदीस से उन लोगों के ख़याल का भी रद्द होता है जो कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ग़ैब की बातें जानते थे। इस हदीस से सब से अहम मस्अला यह मालूम हुआ कि क़ाज़ी के ज़ाहिरी फ़ैसले से हराम चीज़ हलाल नहीं हो जाती, क्योंकि जिस के हक़ में फ़ैसला हुआ है वह भलीभाँत जानता है कि नाहक़ पर हूँ और उस वस्तु का हक़दार नहीं हूँ। आश्चर्य है कि इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ के निकट वह वस्तु हलाल हो जायेगी-इन्नालिल्लाह! इमाम साहब का फ़त्वा बिल्कुल ही ग़लत है। यही हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी आयी है देखें-(2458)

बाब {लड़ाकू और झगड़ालू व्यक्ति के बारे में बयान।}

1052:– आइशा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः आदमियों में अल्लाह के नज़दीक सब से बुरा वह व्यक्ति है जो सब से बड़ा लड़ाकू और झगड़ालू है।

फ़ाइदाः– इस से मुराद वह व्यक्ति है जो ख़ाह-मख़ाह राह चलते लोगों से पंगा लेता रहता है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि जब तक किसी से दो-दो हाथ न कर लें, गाली-गुलूच न दे लें, उन का खाना ही हज़्म नहीं होता, इस हदीस में ऐसे ही लोग मुराद हैं।

बाब {प्रतिवादी के क़सम खा लेने के बाद उस के हक़ में फ़ैसला होगा।}

1053:– इब्ने अब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अगर वादी के केवल दावे पर ही हक़ दिला दिया जाये तो कुछ वादी दूसरों के जान-माल को ले लेंगे, इसलिये प्रतिवादी से भी क़सम खिलवाया जाये।

फ़ाइदाः– शरीअ़त का यह हुक्म है कि दो व्यक्ति किसी एक वस्तु के बारे में दावा करें तो वादी से दो गवाह माँगगे जायेंगे, फिर उस के हक़ में फ़ैसला हो जायेगा। अगर उस के पास दो गवाह नहीं हैं तो प्रतिवादी से क़सम खिलाया जायेगा। अगर वह क़सम खा ले तो उस के हक़ में फ़ैसला हो जायेगा। शरीअ़त का यह नियम है कि मुद्दई (वादी) अपने दावे पर गवाह पेश करे और प्रतिवादी (मुद्दआ अलैहि) क़सम खाये। (बुख़ारी-2669, मुस्लिम-138)

दो व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास झगड़ा लेकर आये तो आप ने वादी से पूछाः तुम्हारे पास कोई सबूत है? कहा नहीं। आपने फ़रमायाः फिर तो तुम्हें प्रतिवादी के क़सम पर भरोसा करना पड़ेगा। उस ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! वह तो महापापी है उस की क़सम का क्या भरोसा (वह तो झूठी क़सम भी खा सकता है) आप ने फ़रमायाः उस की तरफ़ से अब क़सम ही बचा है (झूठी खाए या सच्ची) (अबू दावूद-3623)

अगर केवल वादी के दावे की बुनियाद पर फ़ैसला होने लगे तो दुनिया-संसार नष्ट हो जाये। वादी जिस वस्तु पर चाहें दावा ठोंक कर अपने क़ब्ज़े में ले लें।

बाब {फ़ैसला, एक क़सम और एक गवाही के आधार पर होना चाहिये।}

1054:– इब्ने अब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक क़सम और एक गवाह के आधार पर फ़ैसला फ़रमाया।

फ़ाइदाः– कभी ऐसा भी होता है कि वादी के पास एक ही गवाह होता है (जबकि दो गवाह चाहिये) तो इस सूरत में एक गवाह के स्थान पर वादी से क़सम लिया जायेगा।

उस की क़सम एक गवाह के स्थान पर होगी। जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने (वादी के) एक क़सम के आधार पर फ़ैसला किया और एक गवाह मौजूद था (इब्ने माजा–2369, तिर्मिज़ी–1344) अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने केवल एक क़सम के आधार पर फ़ैसला फ़रमाया जिस के साथ एक गवाह मौजूद था (अबू दावूद–3610) इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ के निकट एक गवाह और क़सम के साथ फ़ैसला जाइज़ नहीं। तो संभव है इमाम साहब तक यह हदीस न पहुँची हो।

बाब {फ़ैसला करने वाला गुस्सा की हालत में फ़ैसला न करे।}

1055:– अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मेरे पिता जी ने जब वह सजिस्तान के क़ाज़ी थे, मुझ से (एक संदेश) लिखवाया। चुनान्चे मैं ने लिखा कि दो आदमियों के दर्मियान गुस्सा की हालत में कोई फ़ैसला न सुनाओ, क्योंकि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि कोई भी व्यक्ति दो आदमियों के दर्मियान गुस्से की हालत में फ़ैसला न करे।

फ़ाइदा:– ज़ाहिर है कि गुस्सा की हालत में दिल–दिमाग़ और सोचने की बुद्धि बिगड़ जाती है। आदमी मानसिक तनाव में रहता है, चुनान्चे कुछ का कुछ कह जाता है। इमाम नौवी रह॰ मुस्लिम की शरह में लिखते हैं कि जब अधिक भूखा–प्यासा हो, या अधिक पेट भरा हो, या बहुत अधिक रन्ज या खुशी हो तो इन हालात में भी कोई फ़ैसला नहीं करना चाहिये, क्योंकि इन हालात में भी सोचने–समझने और ग़ौर–फ़िक्र करने की शक्ति कमज़ोर हो जाती है और दिल–दिमाग़ दूसरी तरफ़ लगा रहता है।

फिर भी इस हाल में क़ाज़ी और जज जो भी फ़ैसला सुना दे अगर वह हक़ है तो उस को स्वीकार करना होगा और वह लागू होगा। क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी हर्रा की नहर के पानी पर फ़ैसला गुस्सा की हालत में सुनाया था। इस घटना की तफ़सील का यहाँ मौक़ा नहीं। देखें आगे आ रही हदीस न॰ 1058 का फ़ाइदा।

बाब {क़ाज़ी भरसक सोच–समझ कर फ़ैसला करे, फिर वह फ़ैसला सही हो जाये अथवा गलत (दोनों सूरतों में उसे नेकी मिलेगी।)}

1056:– अ़म्र बिन आ़स रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना: हाकिम अपनी ओर से भरसक सोच–समझ कर फ़ैसला करे और वह फ़ैसला दुरुस्त हो तो इस पर दोहरा सवाब मिलता है। और अगर फ़ैसले में ग़लती कर जाये फिर भी एक नेकी मिलती है।

फ़ाइदा:– दोहरा सवाब इसलिये मिलेगा कि (1) उस ने भरसक सोच–समझ कर और मामला की तह तक पहुँचने की कोशिश की (2) और फिर सहीह और दुरुस्त फ़ैसले तक पहुँचा। और जो क़ाज़ी ग़लत फ़ैसले तक पहुँचा उसे भी एक नेकी मिलेगी, क्योंकि उस

ने भरसक ग़ौर-फ़िक्र किया।

इस हदीस से मालूम हुआ कि क़ाज़ी को अपनी सोच-समझ से फ़ैसला करने की छूट है, जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अबू सुफ़यान की पत्नी हिन्द के प्रश्न करने पर उत्तर दिया था कि तुम सोच समझ कर अपने पति के माल में से आवश्यक्तानुसार अपने और बाल-बच्चों के ख़र्च के लिये पति की अनुमति के बिना चुपके से ले सकती हो। (बुख़ारी-7161 का बाब)

बाब {जजों के दर्मियान फ़ैसले में अगर इख़्तिलाफ़ हो जाये (तो क्या किया जाये?)}

1057:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दो महिलाएँ अपने-अपने बच्चों को लिये जा रही थीं कि इस बीच एक भेड़िया आया और एक बच्चा को पकड़ कर ले भागा। एक महिला ने दूसरी महिला से कहा कि तेरा बच्चा ले गया है (दूसरी ने पहली से कहा कितेरा बच्चा ले गया है) अन्ततः दोनों महिलाएँ अपना मामला ले कर दावूद अ़लै॰ के पास पहुँचीं तो उन्होंने बच्चे को (जो बच गया था) उन में से बड़ी आयु की महिला को दिला दिया। फिर वह दोनों इसी मामले को लेकर सुलैमान अ़लै॰ के पास आयीं और उन से पूरा मामला बयान किया तो उन्होंने कहाः जा कर छुरी ले आओ ताकि बच्चे को काट कर (आधा-आधा) तुम दोनों को दे दें। इतना सुनना था कि उन में से छोटी आयु वाली महिला बोल पड़ीः अल्लाह आप पर रहम करे, इसे मत काटिये, यह बड़ी महिला का बेटा है। इस पर सुलैमान अ़लै॰ ने उसे छोटी महिला को दिला दिया (जबकि दावूद अ़लै॰ ने बड़ी महिला के हक़ में फ़ैसला सुनाया था)

अबू हुरैरा रज़ि॰ ने बयान किया कि इस हदीस में मैं ने पहली मर्तबा "सिक्कीन" का अर्थ "छुरी, चाकू" जाना, वर्ना हम छुरी-चाकू को "मुद्या" कहते थे।

फ़ाइदाः- सुलैमान अ़लै॰ दावूद के बेटे हैं। यहाँ बाप-बेटे का फ़ैसला एक-दूसरे के ख़िलाफ़ है। पिता ने बड़ी को दिलाया और पुत्र ने छोटी को। इस प्रकार के फ़ैसले में दोनों में से सब से सही फ़ैसले पर अ़मल तो होगा, लेकिन जिस क़ाज़ी के फ़ैसले पर अ़मल नहीं हुआ उसे गुनाहगार नहीं कहा जायेगा, क्योंकि उस ने अपनी ओर से खूब सोच-विचार के बाद सहीह फ़ैसला करने की चेष्टा की है। और क़ाज़ी चूंकि इन्सान है इसलिये 100 फ़ैसलों में दस फ़ैसले ग़लत कर सकता है, इस से इन्कार नहीं किया जा सकता। जो लोग क़ाज़ी के एक-आध ग़लत फ़ैसले पर लानत-मलामत करते हैं वह जाहिल और मूर्ख हैं, अल्लाह पाक क़ाज़ी के उस ग़लत फ़ैसले पर एक नेकी देता है, क्योंकि उस ने अपनी ओर से भरसक सोच-विचार और जाँच-पड़ताल की। देखें ऊपर की हदीस न॰ 1056। बच्चा वास्तव में छोटी महिला का था, इसीलिये टुकड़ें करने का नाम सुनते ही उस के दिल में माँ की मामता जाग उठी कि बच्चा मुझे भले ही न मिले लेकिन उस के टुकड़ें न हों। एक माँ अपने बच्चे को अपने ही सामने टुकड़े होना कैसे देख सकती हैं। हक़ीक़त तक

पहुँचने के लिये लोग अलग-अलग तरीक़े और उपाय प्रयोग में लाते हैं। अकबर बादशाह के महल में चोरी हो गयी तो अपने दरबारी बीरबल से मश्वरा किया। उन्होंने महल में काम करने वालों को बुलाया और कहा कि जिस ने चोरी की हो वह बता दे वर्ना मैं चोर की पहचान जानता हूँ। जब किसी ने नहीं स्वीकार किया तो उस ने कहाः जिस की दाढ़ी में तिनका है वही चोर है, इस पर चोर सब से पहले अपनी दाढ़ी को साफ़ करने लगा, इस प्रकार वह चोर साबित हुआ, बाद में उस ने चोरी कुबूल कर ली। इसी के बाद से "चोर की दाढ़ी में तिनका" मशहूर हो गया।

यहाँ भी सुलैमान अ़लै॰ की निय्यत बच्चे को काटने की हर्गिज़ नही थी, बल्कि इस हिक्मत को अपना कर अस्ल माँ को जानना चाहतेथे और कामियाब रहे।

'सिक्कीन' का अर्थ है "सुकून और शान्ति देने वाला" इस का अर्थ छुरी और चाकू है, देखें (सूरः यसुफ़-31) इस का नाम "सिक्कीन" इसलिये पड़ा कि गला काट कर जानवर को ठन्डा कर के हमेशा के लिये सुकून देता है।

बाब {क़ाज़ी और हाकिम की कोशिश यह होनी चाहिये कि (सर्वप्रथम) दोनों फ़रीक़ के दर्मियान सुलह-समझौता कराने की कोशिश करे।}

1058:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक व्यक्ति ने ज़मीन ख़रीदी तो उसे उस ज़मीन के अन्दर सोने का एक घड़ा मिल गया। तो जिस ने ज़मीन खरीदी थी उसने बेचने वाले से कहाः तुम अपना सोना वापस ले लो, इसलिये कि मैंने तुम से केवल भूमि ख़रीदी थी, न कि सोना भी। यह सुन कर बेचने वाले ने कहाः मैं ने तुम्हारे हाथ भूमि और जो उसके अन्दर है सब बेची है (जब किसी नतीजा पर नहीं पहुँचे तो) दोनों ने एक व्यक्ति से इस मामले में फ़ैसला चाहा। इस पर उस ने पूछाः तुम लोगों के पास बाल-बच्चे हैं? एक ने कहाः मेरे पास एक लड़की है, दूसरे ने कहाः मेरे पास एक लड़का है। उस ने कहाः तुम अपने लड़के का निकाह उस लड़की से कर दो और इस सोने को उन दोनों पर ख़र्च कर दो और अल्लाह की राह में ख़ैरात भी कर दो।

फ़ाइदाः- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी सदा सर्वप्रथम समझौता कराने की चेष्टा की है। केवल एक उदाहरण पेश है। क-अ़ब बिन मालिक रज़ि॰ ने अ़ब्दुल्लाह को क़र्ज़ दे दिया। अ़ब्दुल्लाह क़र्ज़ से बचने के लिये छुपे-फिरते थे। कअ़ब रज़ि॰ ने उन्हें मस्जिद-नबवी में पकड़ लिया और दोनों के दर्मियान कहा-सुनी होने लगी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के कान में आवाज़ पड़ी तो हुजरे से बाहर आ कर क-अ़ब से फ़रमायाः हो सके तो आधा क़र्ज़ माफ़ कर दो। उन्होंने तुरन्त माफ़ कर दिया तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अ़ब्दुल्लाह से कहाः अब जा कर आधा तो दे दो। (बुख़ारी-457-क-अ़ब बिन मालिक)

अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर और एक अन्सारी के दर्मियान पहले कौन खेत सींचे को लेकर झगड़ा हो गया। जुबैर का कहना था कि पहले मैं सींचाई कर लूँ। मामला नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तक पहुँचा तो आप ने फ़रमायाः ऐ जुबैर! पहले जल्दी-जल्दी

सींच कर पानी उन के खेत में जाने दो। इस पर अन्सारी नाराज़ होकर कहने लगेः जुबैर चूँकि आप की फूफी के लड़के हैं इसलिये। इस पर आप ने फ़रमायाः ऐ जुबैर! तुम अपने खेत में पानी भरो कि मुँडेर तक भर जाये तब इसे देना। (बुख़ारी-2359, 2360, 2361, 2362) पहले आप ने समझा-बुझा कर बीच की राह निकाली, जब अन्सारी नहीं माने तब हक़ीक़ी फ़ैसला सुनाया। सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।

बाब {सब से बेहतरीन गवाह कौन है?}

1059:- ज़ैद बिन ख़ालिद जोहनी रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं बताता हूँ कि सब से बेहतर गवाह कौन है, जो पूछने से पहले ही गवाही दे दे।

फ़ाइदाः- इस का अर्थ यह है कि किसी ने किसी का माल हड़प लिया, या किसी की हत्या कर दी और एक व्यक्ति ने अपनी आँखों से देखा, लेकिन किसी और को मालूम नहीं। अब गवाह न होने के नाते वादी अपना हक़ नहीं पा रहा है और हत्यारे को सज़ा नहीं दिला पा रहा था, या अपना माल वापस नहीं पा रहा है। इस सूरत में उसे बिन बुलाए दौड़ कर जा कर स्वँय ही गवाही देनी चाहिये, ताकि अपने मज़लूम भाई को उस का हक़ दिला सके। यह हदीस उस हदीस के ख़िलाफ़ नहीं है जिस में आया है कि क़ियामत के निकट जिन की गवाही की आवश्यक्ता न होगी वह स्वँय गवाही देने के लिये उतावले हो रहे होंगे। क्योंकि इस हदीस से वह गवाही मुराद है जो बिला ज़रुरत होगी, झूठी होगी, और झूठे लोग गवाही ही देने को तय्यार रहेंगे।

नोटः- ★जो स्वँय क़ाज़ी बनना चाहे उसे कदापि न बनाया जाये। (अबू दावूद-3571, तिर्मिज़ी-1325, इब्ने माजा-2308) ★क़ाज़ी का रिश्वत लेना, या ऐसा उपहार स्वीकार करना जो उसे क़ाज़ी होने के नाते दिया गया है, हराम है। (अबू दावूद-2943, 3541, बुख़ारी-7174) ★गुस्से की हालत में फ़ैसला करना जाइज़ नहीं। (बुख़ारी-7158, मुस्लिम-1717) ★फ़ैसला से पहले दोनों फ़रीक़ के तर्क को अच्छी तरह सुने। (अबू दावूद-3582, तिर्मिज़ी-1331) ★क़ाज़ी का फ़ैसला ज़ाहिरी तौर पर लागू होगा (बुख़ारी-2458, मुस्लिम-1713) उदाहरण के तौर पर एक व्यक्ति ने किसी का माल चुरा लिया। मामला अदालत में पहुँचा। वादी के पास गवाह नहीं है। क़ाज़ी ने प्रतिवादी से क़सम खिलाई तो उस ने क़सम खा लिया कि यह माल मेरा है, मैं ने चोरी नहीं की है। क़ाज़ी ने चोर को बरी कर दिया, तो क़ाज़ी के चोरी से बरी कर देने से वह माल चोर के लिये जाइज़ नहीं होगा। क्योंकि वह जानता है कि मैं ने चोरी कर के प्राप्त किया है। ★महिला (बुख़ारी-4425) बच्चा (अहमद-2/326, मजमा ज़वाइद-7/223) जाहिल (अबू दावूद-3573, इब्ने माजा- 2315) कमज़ोर (मुस्लिम-1825) को क़ाज़ी और अमीर नहीं बनाना चाहिये। ★क़ाज़ी का पदभार संभालने के बाद तन्ख़ाह (वेतन मान) ले सकता है। (बुख़ारी-7163 का बाब)

किताबुल्लुक़-तति
(गिरी-पड़ी वस्तुओं के मसाइल का बयान)

बाब {गिरी-पड़ी वस्तुओं के बारे में क्या हुक्म है?}

1060:- ज़ैद बिन ख़ालिद जोहनी रज़ि॰ जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा में से हैं ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से गिरे-पड़े सोने-चाँदी के बारे में मस्अला पूछा गया तो आप ने फ़रमायाः उस का बन्धन और थैली (जिस में रखा हुआ मिला है) पहचान कराओ, अगर कोई न पहचाने तो उसे ख़र्च कर डालो। फिर भी वह तुम्हारे पास अमानत ही की शक्ल में रहेगा, और जब भी उस का मालिक आयेगा तो तुम्हें उस को सौंपना पड़ेगा। फिर आप से राह भूले-भटके ऊँट के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमायाः तुम्हें उस से क्या लेना-देना? उस का जूता (पैर) उस के साथ है और उस का मश्क (पेट) भी उस के साथ है। वह पेड़ के पत्ते खा लेगा और (स्वँय) पानी पी लेगा, फिर उस का मालिक (उस को तलाश करते हुये) पा लेगा। फिर आप से खोई हुयी बक्री के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमायाः उसे पकड़ कर अपने पास रख लो, क्योंकि (अगर मालिक न मिला तो) वह तुम्हारी होगी, या (अगर मालिक मिल गया) तो उस की होगी, या (तुम ने नहीं पकड़ा और मालिक भी नहीं मिला) तो भेड़िया खा जायेगा।

फ़ाइदाः- इस से स्पष्ट रिवायत बुख़ारी शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ कअब! एक वर्ष तक एलान करो। चुनान्चे एक वर्ष तक एलान करने के बाद फिर पूछा तो आप ने फ़रमायाः एक वर्ष तक फिर एलान करो। फिर भी कोई नहीं मिला तो आप ने फ़रमायाः थैली, बन्धन और पैसों की संख्या गिन लो और उसे प्रयोग में लाओ, फिर भी अगर मालिक आ जाये तो उसे वापस कर दो। (बुख़ारी-2426, 2427, 2428 कअब बिन मालिक)

ऊँट के बारे में आप ने फ़रमाया कि वह शक्ति शाली होता है, अपना बवाच स्वँय कर लेंता है। चल-फिर कर खा लेगा और स्वँय पानी पी लेगा और कभी न कभी अपने मालिक के घर पहुँच जायेगा, इसलिये उसे पकड़ कर बाँधने की आवश्यक्ता नहीं। हाँ, बक्री कमज़ोर होती है, उसे पकड़कर नहीं बाँधोगे तो भेड़िया के चन्गुल में फंस जायेगी।

बुख़ारी की रिवायत में है कि वह माल अमानत है (2428) हालाँकि रावी को शक

है कि यह जुम्ला हदीस है या सहाबी का क़ौल है। इसी बिना पर उलमा का कहना है कि एलान के बाद मालिक न मिले तो बेहतर शक्ल यह है कि उस चीज़ को उसी के नाम सदक़ा कर दिया जाये। या अगर मालदार है और उसे इस्तेमाल कर लिया है तो जब भी मालिक आये अपने जेब से उसे वापस कर दे। ईमान और इस्लाम का तक़ाज़ा और तक़वा व बुर्ज़ुगी का हुक्म यही है। मालिक के नाम ख़ैरात कर देने के बाद भी वह माल वापसी का मुतालबा करे तो अपनी जेब से वापस कर दे और ख़ैरात का सवाब अपने नाम करा ले।

एक वर्ष, दो वर्ष, तक एलान के बाद बेशक वह आप के लिये जाइज़ है, लेकिन ईमान का तक़ाज़ा यही है कि उसे अमानत समझा जाये और जब भी मालिक आये वापस कर दिया जाये "अगर उस वस्तु का मालिक ज़िन्दगी में कभी भी माँगने आ जाये तो उसे वापस करना होगा" (बुख़ारी–2428) इस हदीस का खुलासा और निचोड़ यही है। मुझ अनुवादक ने तमाम हदीसों को सामने रख कर यही मतलब समझा है।

बाब {(हज्ज के दौरान) हाजी की गिरी–पड़ी वस्तु के बारे में क्या हुक्म है?}

1061:– अ़ब्दुर्रहमान बिन उस्मान तीमी रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हाजियों की गिरी–पड़ी चीज़ को उठाने सेमना फ़रमाया है।

फ़ाइदाः– बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में यह शब्द हैं "मक्का की गिरी–पड़ी चीज़ को उठाना केवल एलान करने वाले के लिये जाइज़ है (2434) मालूम हुआ कि ऊपर की रिवायत में मिनाही का हुक्म उन लोगों के लिये है जो एलान करने में सुस्ती और लार्पवाही से काम लेते हैं। और यह भी मालूम हुआ कि मक्का की चीज़ों की और स्थान की चीज़ों के मुक़ाबले में बहुत अधिक एलान होना चाहिये। (नैलुल् औतार–4/52) जमहूर उलमा ने यह हुक्म निकाला है कि ऊपर की हदीस का अर्थ यह है कि मक्का की गिरी–पड़ी वस्तुओं का हमेशा एलान किया जायेगा, और उसे कभी प्रयोग में नहीं लाया जायेगा।

बाब {जिस ने खोई हुयी वस्तु उठा कर रख ली (और एलान नहीं किया) वहगुनाहगार है।}

1062:– ज़ैद बिन ख़ालिद जोहनी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस ने गिरी–पड़ी वस्तु उठा कर रख ली और एलान नहीं किया वह गुनाहगार है।

फ़ाइदाः– अर्थात एलान की तमाम शर्तें पूरी कर लेने के बाद उस का प्रयोग में लाना जाइज़ है।

बाब {बिना चर्वाहे या मालिक कीअनुमति के लोगों के जानवर का दूध (चूपके से) दूह कर पीना मना है।}

1063:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

ने फ़रमायाः तुम में से कोई बिना मालिक की अनुमति के उस के जानवरों का दूध न दूहे। क्या तुम यह पसन्द करते हो कि तुम्हारे कमरे में कोई घुस कर ख़ज़ाने का ताला तोड़ कर खाने-पीने की वस्तु निकाल ले जाये? जानवरों के थन भी इसी प्रकार खाने के ख़ज़ाने हैं, इसलिये बिना उस जानवर के मालिक की अनुमति के दूध न निकाले।

फ़ाइदाः– इमाम बुख़ारी रह॰ ने एक बाब बाँधा है लेकिन बाब में कुछ नहीं लिखा है, फिर नीचे एक हदीस लाये हैं कि मदीना हिजरत के मौक़ा पर राह में चर्वाहा मिला, आप ने पूछाः तुम दूध दोगे? उस ने कहाः हाँ। चुनान्चे अबू बक्र और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दोनों ही ने पिया। (2439) अब चूँकि बाब में कुछ लिखा नहीं है इसलिये हदीस का अर्थ निकालना लोगों के लिये बड़ा कठिन हुआ है। कुछ लोगों ने यह अर्थ निकाला है कि खाने-पीने की चीज़ों की आवश्यक्ता हो, भूख लगी हो और निय्यत कमाई करने की न हो, और न ही मालिक को हानि पहुँचाना उद्देश्य हो, तो ऐसी नौबत आने पर मामूली मात्रा में खा-पी लेना जाइज़ है। इस प्रकार अगर कोई खा-पी लेता है तो जानवर के मालिक को सवाब भी मिलेगा।

लेकिन मौलाना दावूद रज़ि॰ रह॰ लिखते हैं "आज का माहौल ऐसा है कि बिना अनुमति के कुछ भी करना ठीक नहीं है। अगर कोई भूख-प्यास से मर रहा हो तो ऐसा कर सकता है, लेकिन घर पहुँच कर मालिक को सूचित कर के उसे क़ीमत देने की कोशिश करे (शरह बुख़ारी, उर्दू, एडिशन भाग 3, पृष्ठ 569)

नोटः– इस बाब से संबन्धित चन्द और मस्अले। ★गिरी-पड़ी चीज़ को उठा लेना बेहतर है। ताकि वह ख़राब न हो जाये, या कोई ग़लत आदमी न ले भागे और उसे उस के मालिक तक न पहुँचा कर स्वँय ही हड़प कर जाये (बुख़ारी-2437) ★नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने लक्ड़ी, डन्डा, रस्सी और इस प्रकार की मामूली वस्तुओं को उठा कर उन से फ़ाइदा उठाने की छूट दी है (अहमद, अबू दावूद) इस पर अ़ल्लामा शौकनी लिखते हैं कि मामूली चीजें अगर राह में गिरी-पड़ी मिल जायें (जिन की कोई वैलू (महत्व) न हो) तो उन्हें स्वँय प्रयोग में ले आने में कोई बाधा नहीं और न ही विशेष एलान करने की आवश्यक्ता है। ★कुछ लोगों का कहना है कि बैतुलमाल या थाने में, या हाकिम के पास जमा करा दे। इस का कोई सबूत नहीं है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास जितने सहाबा मस्अला पूछने आये तो आप ने किसी से नहीं कहा कि बैतुल माल आदि में जमा करा दो। ★खाने-पीने की मामूली चीजें, जैसे फल, खजूर आदि को बिना एलान के खा सकता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने राह में खजूर पड़ी हुयी देखी तो आप ने फ़रमायाः अगर मुझे इस बात का शुब्हा न होता कि यह सदक़ा की हो सकती है तो मैं उसे खा लेता। (बुख़ारी-2431-अनस बिन मालिक+मुस्लिम-1071)

बाबुज़्ज़ियाफ़ति
(मेहमानदारी के मसाइल का बयान)

बाब {जो मेहमानी नहीं करता उस के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का क्या हुक्म है?}

1064:– उक़्बा बिन आ़मिर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोगों ने (शिकायत करते हुये) कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप हमें किसी क़ौम के पास (तबलीग़ आदि के लिये) भेजते हैं, जब हम उन के पास पहुँचते हैं तो हमारी मेहमानी नहीं करते। आप ने फ़रमायाः अगर तुम किसी के दर्मियान ठहरो और वह तुम्हारे खाने-पीने का ऐसा सामान कर दें जो मेहमानी के लिये उचित हो तो तुम उसे कुबूल कर लो। और अगर वह न करें तो उन से मेहमानी का जितना हक़ बनता है उतना वसूल कर लो।

फ़ाइदा:– मालूम हुआ कि बाहर से आने वाला अपना इस्लामी भाई जिस का कोई धर-दर नहीं है, कोई जान-पहचान नहीं है, गाँव के ज़िम्मेदारों पर फ़र्ज़ बनता है कि उन्हें ठोर-ठिकाना दें और उन के खाने-पीने और रहने-सहने का इन्तिज़ाम करें। हर व्यक्ति मुसाफ़िर है, सभी को कहीं न कहीं आने-जाने की आवश्यक्ता पड़ती रहती है और सब के साथ ऐसे हालात पेश आ सकते हैं। मेहमानों और मुसाफ़िरों के साथ नेक सुलूक न करना गुनाह है। इसी प्रकार मेहमान और मुसाफ़िर के लिये भी अनिवार्य है कि अपनी आवश्यक्ता पूरी कर के जल्दी से जल्दी चला जाये और टिकान डाल कर, धरना दे कर ने बैठ जाये।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो व्यक्ति अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखता है उसे मेहमानों का आदर-सम्मान करना चाहिये, उस की ख़ातिरदारी बस एक दिन-रात है, और मेहमानी तीन दिन-रात। इस के बाद घर वाला जो भी खिलाए वह सदक़ा है। (बुख़ारी-6135)

ऊपर हदीस में आया है कि "मेहमान अपना हक़ वसूल कर लें" इसी से अनुमान लगा सक़ते हैं कि एक प्रकार का मेहमान का भी हक़ बनता है। अगर कोई मेहमान खाता हे तो वह अपना हक़ और हिस्सा खाता है।

बाब {मेहमानी करना अनिवार्य है।}

1065:– अबू शुरैह रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः किसी के लिये मेहमानी केवल तीन दिन तक है और उस कह भरपूर ख़ातिर दारी (आवभगत) केवल एक दिन-रात है। और किसी मुसलमान के लिये यह जाइज़ नहीं कि वह अपने किसी मुसलमान भाई के पास जा कर ठहर जाये और उसे गुनाह में डाल दे। सहाबा ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! उसे किस प्रकार गुनाह में डालेगा? आप ने फ़रमायाः उस के पास जा कर जम जाये और उस के पास खिलाने के लिये कुछ न हो (तो वह मजबूर हो कर कहीं से लायेगा, यही उस को गुनाह में डालना है)

फ़ाइदा:– एक दिन-रात उस की आवभगत करे, आ़म दिनों के मुक़ाबला में एक दिन उस को अच्छा से अच्छा खिलाए। और बाक़ी तीन दिन मेहमानी आ़म खानों के साथ करे जिन में तकल्लुफ़ कम हो। यह है पहले दिन और बाक़ी तीन दिनों की मेहमानी में फ़र्क़।कुछ लोग ऐसे होते हैं जो मेहमान बन कर दूसरे के घर पहुँच कर डेरा डाल देते है और जाने का नाम नहीं लेते। घर वाला बाध्य हो कर अगर ग़रीब है तो माँग-जाँच कर लाता हैऔर उस को खिलाने के लिये दुनिया भर के पापड़ बेलता है। यह एक प्रकार का गुनाह ही है। इसी ओर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इशारा फ़रमाया है। इसलिये जब कोई किसी के घर मेहमान बन कर जाये तो उस के घरेलू हालात पर भी नजर रखे।

बाब {अगर किसी के पास आवश्यक्ता से अधिक माल है तो उस के ज़रीआ़ हाजतमन्दों की सहायता करे।}

1066:– अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग किसी सफ़र में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ थे कि इसी बीच एक व्यक्ति ऊँटनी पर सवार होकर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और दायें-बायें देखने लगा। चुनान्चे उसे देख कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस के पास ज़रुरत से अधिक सवारी हो वह उस को दे दे जिस के पास सवारी नहीं है। इसी प्रकार जिस के पास रास्ता का ख़र्च अधिक हो तो वह उस में से उसे भी दे दे जिस के पास नहीं है। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने देने वाली बहुत सी वस्तुओं को नाम गिनाए, यहाँ तक कि हम यह सोचने लगे कि जो वस्तु भी हमारे पास आवश्यक्ता से अधिक है उस में हमारा कोई हक़ ही नहीं है।

फ़ाइदा:– इस हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुहताजों और ज़रुरतमन्दों की सहायता और सहयोग की शिक्षा दी है। अच्छा बर्ताव, भाईचारा, हमर्ददी, किसी के दुख-दर्द में शामिल होना यह भी दीन का तक़ाज़ा है और ईमान में दाख़िल है।

एक मुसलमान आराम से सवारी पर बैठ कर यात्रा करे और उसी के सामने दूसरा मुसलमान भाई पैदल चले, भला वह कैसे देख कर बर्दाशात कर सकता है। अल्लामा इक़बाल ने इस विषय पर बहुत अच्छा कहा है:

दर्द दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को
वर्ना ताअ़त के लिये कुछ कम न थीं कर्रुबियाँ

बाब {सफ़र में साथ अधिक लोग हों और सफ़र ख़र्च कम पड़ जाये तो सब लोग अपना खाना एक में मिला लें, फिर एक साथ बैठ कर खायें (इस में बर्कत होती है)}

1067:– अयास बिन सलमा अपने पिता के हवाले से रिवायत करते हैं कि मेरे पिता जी ने बयान किया हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ एक लड़ाई के लिये निकले। वहाँ हम लोगों को खाने-पीने की तक्लीफ़ हुयी तो अपनी सवारियों तक को ज़ब्ह करने की नौबत आ गयी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को जब मालूम हुआ तो आप के हुक्म के अनुसार हम लोगों ने अपना-अपना सफ़र ख़र्च एक चमड़ा बिछा कर उस पर जमा कर दिया। सलमा रज़ि० ने बयान किया कि जब मैं ने उस चमड़े को नापा तो वह इतना लंबा-चौड़ा था जितने पर एक बक्री बैठ सकती थी। हम लोगों की संख्या चौदह सौ थी फिर भी खूब पेट भर का खाया और अपने-अपने खानों (तौशा) के थैलों को भी भर लिया।

फिर आप ने पूछाः वज़ू के लिये पानी है? इस पर एक सहाबी एक डोल में थोड़ा सा पानी लेकर आये, तो आप ने उस पानी को एक गड्ढे में उँड़ेल दिया, फिर हम सब ने उस से वज़ू किया और हम 1400 लोगों ने खूब जम कर पानी का प्रयोग किया। इस के बाद आठ लोग और आ गये। उन्होंने पूछाः वुज़ू के लिये कुछ पानी बचा है? नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः समाप्त हो गया।

फ़ाइदा:– यह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चमत्कारों में से एक मामूली चमत्कार है कि एक लोटा पानी से चौदह सौ लोग अधिक से अधिक प्रयोग कर के वुज़ू करें। इस प्रकार के और बहुत से चमत्कार पुस्तकों में मिल जायेंगे। खाने में बर्कत (बुख़ारी-5450, 3578) खजूर के ढेर में बर्कत (बुख़ारी-5433) आप की उंग्लियों से पानी के सोते जारी होना (बुख़ारी-3576, 4153) एक साअ़ा जौ में बर्कत (बुख़ारी-4102)

इस हदीस से यह भी मालमू हुआ कि घर के तमाम परिवार एक साथ बैठ कर खायें, इस से थोड़े खाने में भी बर्तक होती है और सब का पेट भर जाता है। सफर में कई आदमी हों तो इस पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

नोट:– ★शफ़ीक़ बिन सलमा रज़ि० ने बयान किया कि मैं एक मर्तबा सलमान रज़ि० के पास गया तो उन्होंने पानी ला कर पिलाया और कहाः चूंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मेहमानी में तकल्लुफ़ से मना किया है वर्ना मैं तुम्हारे लिये अच्छा से अच्छा प्रबन्ध करता (अहमद-5/441) इसलिये अच्छे से अच्छा पकवान में लगना भी उचित नहीं

है। ★यह बात बहुत मशहूर है कि कोई मेहमानी न करे तो उसे अपना हक़ छीन लेना चाहिये। इस का कोई सबूत नहीं है। इसी प्रकार यह भी मशहूर है कि बदले में उस का सामान ही उठा ले, यह भी ग़तल है। हदीस में है "अपना हक़ वसूल कर लें" इस का यह अर्थ है कि उस को नसीहत कर के, उसे समझा-बुझा कर, कुरआन-हदीस के हवाले दे कर खिलाने पर राज़ी कर ले। (नैलुल् औतार-5/236) ★इसी प्रकार किसी मेहमान के लिये यह भी जाइज़ नहीं कि बिना अनुमति के उस के घर की कोई चीज़ खा ले, या उसके जानवर का दूध दूह कर पी ले। हदीस में है "तुम में से कोई भी बिना मालिक की अनुमति के उस के जानवर का दूध न दूहे" (2435 बुख़ारी) यह हदीस आम है और हुक्म सभी के लिये है। (1.12.2005 जुमेरात)

❀ ❀ ❀

किताबुल् जिहादि
(जिहाद के फ़ज़ाइल का बयान)

बाब {अल्लाह तआ़ला ने कुरआन पाक में फ़रमायाः "जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये उन्हें मुर्दा न कहो" (आले इ़म्रान 169) और शहीदों की रुहों के बारे में बयान।}

1068:— इमाम मस्रुक़ ने बयान किया कि हम ने अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से कुरआन पाक की आयत "जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह जीवित हैं और अल्लाह पाक के यहाँ खाना-पानी मिलता है" (सूरः आले इ़म्रान-169) के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि हम ने भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस आयत के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमायाः शहीदों की रुहें (जन्नत में) हरे रंग के परिन्दों की शक्ल में उन झाड़ फ़ानूसों में रहती हैं जो अ़र्श से लटक रहे हैं, और जहाँ चाहती हैं अपनी इच्छा से उड़ती-फिरती हैं, फिर आ कर उन झाड़ फ़ानूसों में आराम से बैठ जाती हैं। एक मर्तबा अल्लाह पाक ने उन्हें देखा तो उन से पूछाः तुम्हारी क्या इच्छा है? उन्होंने उत्तर दियाः अब हमारी कोई इच्छा नहीं, (इस से बढ़ कर और क्या होगा) हम जन्नत में जहाँ चाहती हैं उड़ती फिरती हैं। लेकिन अल्लाह पाक ने जब उन से फिर यही प्रश्न करते हुये तीन मर्तबा प्रश्न किया और उन्होंने देखा कि बिना कुछ माँगे चारा नहीं तो उन्होंने अपने पर्वरदिगार से यह इच्छा प्रकट की कि ऐ मेरे मौला! हमारी यह इच्छा है कि हमारी रुहों को हमारे (दुनिया के इन्सानी) शरीर में पुनः लौटा दे, ताकि पुनः तेरी राह में जिहाद करें और पुनः शहादत प्राप्त कर सकें। जब अल्लाह ने देखा कि उन की अब कोई और इच्छा नहीं है तो उन्हें उन की हालत पर छोड़ दिया।

फ़ाइदाः— शहीदों के बारे में एक स्थान पर यूँ हैः "उन्हें मुर्दा न समझो, वह जीवित है लेकिन तुम्हें उन के जीने की हक़ीक़त मालमू नहीं।" (सूरः बक़रः154) एक दूसरी रिवायत में है कि "कोई व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जो जन्नत में दाख़िल होने के बाद दुनिया में पुनः आना पसन्द करे सिवाए शहीद के कि वह चाहेगा कि दुनिया में दोबारा वापस जा कर दस मर्तबा शहीद हो, क्योंकि उस ने जन्नत में शहादत का दर्जा और मर्तबा देख लिया है। (बुख़ारी-2817) शहादत का दर्जा इतना ऊँचा है कि शहीद बार-बार जीवित हो कर शहीद होने की इच्छा प्रकट करेगा।

बाब {जन्नत के दर्वाज़े तल्वारों के साये तले हैं।}

1069:– अबू बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस अपने पिता से रिवायत करते हैं कि मैं ने अपने पिता जी को उस समय बयान करते सुना जब कि वह दुश्मन का सामना कर रहे थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जन्नत तल्वारों के साये के नीचे है। यह सुन कर एक निर्धन और मैले-कुचैले कपड़े पहने व्यक्ति उठ कर कहने लगाः ऐ अबू मूसा! क्या तुम ने स्वयँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इस प्रकार फ़रमाते सुना है? उन्होंने कहाः हाँ। यह सुन कर (कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है) वह अपने साथियों के पास गया और कहने लगाः मैं आप लोगों को सलाम करता हूँ, फिर अपनी तल्वार की मियान तोड़ कर फेंक दी और नन्गी तल्वार लेकर दुश्मन की सफ़ में घुस गया और जन्ग करते हुये शहीद हो गया।

फ़ाइदा:– अबू दावूद की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब तुम "औ़ना" का कारोबार आरंभ कर दोगे, गाय-बैलों की दुम थाम लोगे, खेती-बाड़ी में लग जाओगे और जिहाद को छोड़ दोगे तो अल्लाह पाक तुम्हें ज़लील कर डालेगा और ज़िल्लत को उस समय तक नहीं उठाएगा जब तक तुम दीन इस्लाम की तरफ़ लौट कर न आ जाओ (अबू दावूद-3462) दुनिया में आदमी को सब से अधिक प्यारी उस की जान होती है, लेकिन दीन इस्लाम की सरबुलन्दी और ग़लबा यह उस पर भी भारी है, इसलिये इस कार्य में अपनी जान कुर्बान कर देना हर मोमिन पर वाजिब है। अल्लाह पाक ने फ़रमायाः तुम पर जन्ग को फ़र्ज़ किया गया है, हालाँकि वह तुम्हें बहुत भारी गुज़रता है (लेकिन याद रखो) हो सकता है एक वस्तु को तुम बुरा जानो और वही तुम्हारे लिये बेहतर हो, और हो सकता है एक वस्तु तुम्हें पसन्द हो लेकिन वही तुम्हारे लिये बुरी हो" (सूरःबक़रः216) चुनान्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है। मेरी इच्छा है कि मैं अल्लाह की राह में शहीद किया जाऊँ, फिर जीवित किया जाऊँ, फिर शहीद किया जाऊँ, फिर जीवित किया जाऊँ, फिर शहीद किया जाऊँ, फिर जीवित किया जाऊँ, फिर शहीद किया जाऊँ (बुख़ारी-2797-अबू हुरैरा)

बाब {जिहाद की फ़ज़ीलत और उस की तरफ़ उभारने का बयान।}

1070:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक ऐसे व्यक्ति की सुरक्षा का ज़िम्मा लेता है जो केवल अल्लाह की राह में जिहाद की निय्यत से ही निकलता है, और अल्लाह और उस के सन्देष्टा को सच जानता है। अल्लाह पाक ने फ़रमायाः ऐसा व्यक्ति मेरी सुरक्षा में होता है, फिर या तो मैं (शहादत देकर) जन्नत में ले जाऊँगा या उस के घर की तरफ़ सवाब और माले ग़नीमत के साथ लौटाऊँगा। उस ज़ात कीक़सम! जिस के हाथ में मुहम्मद की जान है जो भी घाव

अल्लाह की राह में लगेगा क़ियामत के दिन वह घाव उस शक्ल* में (बिल्कुल ताज़ा) दिखाई देगा, उस का रंग खून का सा होगा लेकिन उस घाव की बू मुश्क की तरह महकेगी। क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मुहम्मद की जान है। अगर मुसलमानों को कठिनाई न होती तो जो भी लश्कर अल्लाह की राह में जिहाद के लिये निकलता है, मैं उस का साथ न छोड़ता (और हमेशा हर लश्कर में साथ रहता) लेकिन मेरे पास इतनी गुन्जाइश नहीं (कि सभी के लिये सवारी) का प्रबन्ध कर सकूँ। क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मुहम्मद की जान है, मेरी तो यही इच्छा है कि अल्लाह की राह में जिहाद करुँ और शहीद किया जाऊँ) फिर जिहाद करुँ और शहीद किया जाऊँ (फिर जीवित किया जाऊँ) और जिहाद करुँ और शहीद किया जाऊँ।

फ़ाइदा:– नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जो इच्छा प्रकट की है वही इच्छा जन्नत में शहीद लोग जो हरे रंग के पंछियों की शक्ल में होंगे, करेंगे (देखें बाब की प्रथम हदीस न॰ 1068) जिहाद से बढ़ कर कोई नेकी का कार्य नहीं और न ही इस से बढ़ कर किसी पर सवाब है।

बाब {जिहाद से बन्दे के दर्जे बुलन्द होते हैं।}

1071:– अबू सओ़द खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ अबू सओ़द! जो अल्लाह को अपना रब मान ले, दीन इस्लाम को अपना दीन मान ले और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपना सन्देष्टा स्वीकार कर ले तो उस के लिये जन्न्त वाजिब हो गयी। यह सुन कर अबू सओ़द खुदरी रज़ि॰ प्रसन्न हो उठे और अनुरोध करने लगे कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! और आगे फ़रमायें चुनान्चे आप ने फ़रमाया: एकऔर भी नेक कार्य है जिस के करने पर बन्दे को जन्नत में 100 दर्जे प्राप्त होंगे, और हर दर्जे के दर्मियान ज़मी और आकाश के दर्मियान की दूरी जितनी दूरी होगी। अबू सओ़द ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! वह कौन सा अ़मल है आप ने फ़रमाया: अल्लाह की राह में जिहाद करना,अल्लह की राह में जिहाद करना।

फ़ाइदा:– इस हदीस में जिहाद की फ़ज़ीलत और मर्तबे को बयान किया गया है।अल्लाह की राह में जिहाद का बदला जन्नत है और इतनी बड़ी जन्नत जिस के महले की लंबाई–चौड़ाई ज़मीन–आसमान की लंबाई–चौड़ाई के बराबर है। उस में अपनी इच्छानुसार खायें–पियेंगे, सोएँ–जागेंगे। वहाँ किसी प्रकार की चिन्ता और फ़िक्र नहीं होगी। (बुख़ारी–2790) अल्लह पाक सभी लोगों को अल्लाह की राह में जिहाद कर के शहादत की तौफ़ीक अ़ता फ़रमाये।

बाब {सब से अफ़ज़ल वह मुजाहिद है जो अल्लाह की राह में अपने जान–माल से जिहाद करे।}

1072:– अबू सओ़द खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति ने

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर पूछाः सब से अफ़्ज़ल व्यक्ति कौन सा है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः वह जो अल्लाह की राह में अपने जान-माल के ज़रीआ़ जिहाद करे। उस ने पूछाः फिर कौन? आप ने फ़रमायाः वह मोमिन जो पर्वत की किसी घाटी में चला जाये, वहीं अल्लाह की इबादत करे और लोगों की बुराइयों से सुरक्षित रहे।

फ़ाइदाः– बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि जो व्यक्ति अपने भेड़-बकरियों को लेकर पहाड़ की वादी में चला जाये...... (बुख़ारी) यह उस समय की बात है जब मुल्क में फ़ितना-फ़साद फैल जाये, बुराइयाँ चारों तरफ़ फैल जायें और अल्लाह की इबादत व इताअ़त असंभव हो जाये और गुमराही में पड़ जाने का ख़तरा दरपेश हो। ऐसे हालात में आबादी से निकल जाना ही बेहतर है। ज़ाहिर है यह हुक्म उन लोगों के लयिे है जो दबे-कुचले और कमज़ोर वर्ग के लोग हैं। वर्ना जिन की पहुँच है उन की ज़िम्मेदारी है कि मुल्क में रह कर उन बुराइयों का मुक़ाबला करें और उन के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द करें।

बाब {जो मर जाये और न जिहाद करे और न ही जिहाद की नियत करे।}

1073:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो व्यक्ति इस हाल में मरा कि उस ने न तो जिहाद किया और न ही जिहाद करने की नियत उस के दिल में थी तो वह निफ़ाक़ की हालत में मरा। अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने कहा कि हमारे ख़याल में यह हुक्म नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना के लिये था।

फ़ाइदाः– जिहाद से मुँह चुराना, जिहाद में शरीक होने से जान बचाना, यह मोमिन की शान के ख़िलाफ़ है। एक मुसलमान के जीवन का शेवा यह होना चाहिये कि अल्लाह का कलिमा बुलन्द हो, चाहे इस के लिये हज़ार बार जीना और हज़ार बार मरना पड़े। अगर जिहाद का मौक़ा नहीं मिलता है तो कम से कम उस की नियत दिल में हमेशा होनी चाहिये। जिहाद के बहुत सारे तरीक़े हैं, उन में माली जिहाद भी है। आप अल्लाह की राह में ख़र्च कर के माली जिहाद में हिस्सा लें।

बाब {जिहाद के लिये समुद्री यात्रा करना फ़ज़ीलत का कार्य है।}

1074:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मिलहान की पुत्री उम्मे हराम के घर अक्सर तशरीफ़ ले जाया करते थे, वह भी आप को खाना खिलाती थीं। यह उबादा बिन सामित रज़ि॰ की पत्नी थीं। एक मर्तबा आप उन के पास मिलने के लिये गये तो वह आप के सर में जूँ तलाश करने लगीं, देखा तो आप सो रहे हैं। फिर आप की आँख खुली तो उस समय हँस रहे थे। यह देख कर उम्मे हराम ने पूछाः ऐ अल्लह के सन्देष्टा! आप किस बात पर हँस रहे थे? आप ने

फ़रमायाः मेरी उम्मत के कुछ लोग मेरे सामने इस हाल में पेश किये गये कि वह अल्लाह की राह में जिहाद के वास्ते दरिया पार करने के लिये (कश्ती में) सवार हो रहे थे, जैसे बादशाह तख़्त पर चढ़ते हैं, या बादशाहों की तरह कश्ती में सवार हो रहे थे) मैं ने अनुरोध किया: ऐ अल्लाह के सन्देष्टा!आप मेरे लिये भी दुआ फ़रमा दें कि अल्लाह पाक मुझे भी उन्हीं में से कर दे। चुनान्चे आप ने उन के लिये दुआ की और फिर सो गये। फिर (दोबारा) आप हँसते हुये जागे तो मैं ने पूछाः आप क्यों हँस रहे हैं? आप ने फ़रमायाः (सपने में मैं ने देखा कि) मेरी उम्मत के कुछ लोग मेरे सामने इस हाल में पेश किये गये जो जिहाद में जाने के लिये (कश्ती में) इस प्रकार सवार हो रहे थे जैसे बादशाह तख़्त पर चढ़ता है। मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप मेरे लिये भी दुआ फ़रमा दें कि अल्लाह पाक मुझे भी उन्हीं लोगों में से कर दे। आप ने फ़रमायाः तुम सब से पहले वाले लश्कर के साथ होगी।

फिर उम्मे हराम रज़ि॰ ने मुआविया बिन अबू सुफ़यान रज़ि॰ के शासन काल में (क़बरस दीप को फ़तह करने के लिये) दरिया का सफ़र किया और दरिया पार कर के (जब अपनी सवारी पर सवार हो रही थीं) उस सवारी से गिर कर शहीद हो गयीं।

फ़ाइदा:— अमीर मुआविया रज़ि॰ उस समय मिस्र के गवर्नर थे। यह उस्मान ग़नी रज़ि॰ के ख़िलाफ़त का समय था। उस समय गवर्नर ने रुम राष्ट्र के ख़िलाफ़ जन्ग करने के लिये समुद्री बेड़ा तैयार करने की अनुमति माँगी थी। और प्रथम समुद्री बेड़ा तैयार कर के रुम के खिलाफ़ जन्ग कर के विजय प्राप्त की थी। यह जन्ग सन 28 हि॰ में हुयी थी।

दूसरा जिहाद अमीर मुआविया रज़ि॰ के शासन काल में सन 55 हि॰ में हुआ जिस में कुस्तुन्तुनिया पर आक्रमण हुआ था। लश्कर के कमान्डर यज़ीद बिन मुआविया थे। अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि॰ ने इसी जन्ग में शहादत पाई और वहीं दफ़न किये गये। पहला आक्रमण क़बरस दीप पर हुआ था और दूसरा सन 55 हि॰ में कुसतुततुनिया पर।

महिलाएँ जन्ग में क्या करती थीं? अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने उहुद की लड़ाई में देखा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी आ़इशा और मेरी माता जी उम्मे सुलैम (तेज़ी से चलने के लिये) अपने पाँइचे समेटे हुए थीं जिस से उन के पाँव की पायल दिखाई दे रही थी। पानी के मश्क को लेकर इधर से उधर दौड़-दौड़ कर सहाबा को पिलातीं थीं, मश्क का पानी ख़तम हो जाने पर फिर दौड़ कर भर लाती थीं। (बुख़ारी-2880) यही हाल उम्मे सुलैत रज़ि॰ का भी था (बुख़ारी-2881, 3882, 3883)

उम्मे हराम, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दूध की ख़ाला होती थीं, एक माँ के समान आप से मुहब्बत करती थीं, बड़ी नेक महिला थीं। अपने पति के साथ जिहाद में शरीक थीं, वापसी में दरिया पार करने के बाद अपने ऊँट पर सवार होते समय

गिर पड़ीं और इस प्रकार शहादत नसीब हुयी (बुख़ारी–2800) जो कोई अल्लह की राह में जिहाद पर निकले और राह में अपनी मौत मर जाये तो वह भी शहीद है।

बाब {अल्लाह की राह में पहरा देना बहुत बड़ी फ़ज़ीलत का कार्य है।}

1075:– सलमान फ़ारसी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना: अल्लाह की राह में एक दिन–रात पहरा देना (और चौकीदारी करना) एक माह के रोज़े रखने और इबादत करने से बेहतर है। और अगर उसी हाल में उस की मृत्यु हो जाये तो मरने के बाद भी उसे पहरा देने का सवाब मिलता रहेगा। और शहीदों की रोज़ी भी मिलती रहेगी, और क़ब्र के फ़ितनों से सुरक्षित रहेगा।

फ़ाइदा:– अल्लाह की राह में रात भर जाग कर पहरा देना बहुत बड़ी फ़ज़ीलत और मर्तबे का काम है और इस पर बहुत अज्र व सवाब है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: रुपये–पैसे का बन्दा तबाह–बर्बाद हो जाये, कंबल और रज़ाई का बन्दा हलाक हो जाये। अगर इसे कुछ दे दिया जाये तब तो प्रसन्न रहता है, वर्ना नाराज़ हो जाता है.........लेकिन मुबारक है वह बन्दा जिसे पहरा–चौकी पर लगा दिया जाये तो वह अपनेकाम में लगन से लगा रहता है (बुख़ारी–2887) लश्कर की सुरक्षा के लिये रात भर जाग कर पहरा देना यह भी जिहाद ही का हिस्सा है और इस पर जिहाद का सवाब है, और इस के आगे नफ़ली नमाज़–रोज़े फ़ेल है।

बाब {अल्लाह की राह में सुब्ह–शाम चलना, दुनिया और उस के अन्दर की समस्त वस्तुओं से बेहतर है।}

1076:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लह की राह में (जिहाद के लिये) सुब्ह–शाम चलना दुनिया और उस के अन्दर की समस्त वस्तुओं से बेहतर है।

फ़ाइदा:– क्यों न बेहतर हो। हर हर क़दम पर नेकियाँ मिलती हैं। और अगर उसी हालत में देहान्त कर जाये तो शहीदों में शुमार होता है। और शहादत का दर्जा हर चीज़ से अफ़ज़ल है। अल्लह की राह में सफ़र करते समय अगर काँटा भी चुभ जाये या घाव हो जाये तो उस पर भी नेकी है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है, जो अल्लाह की राह में घायल हुआ वह क़ियामत के दिन इस हाल में आयेगा कि उस के घाव से रक्त चाप जारी होगा (बुख़ारी–2793, 94, 2803)

बाब {"क्या तुम लोगों ने हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे–हराम की सेवा को ईमान और जिहाद के बराबर समझ लिया है?" (सूर: तौबा.........आयत न॰ 19) की तश्रीह का बयान।}

1077:– नोमान बिन बशीर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मिंबर के पास बैठा हुआ था कि एक व्यक्ति कहने लगाः इस्लाम लाने के बाद हाजियों को पानी पिला देने के पश्चात् किसी नेक अ़मल की आवश्यक्ता नहीं रह जाती। यह सुन कर दूसरा बोलाः इस्लाम लाने के बाद मुझे किसी अ़मल की चिन्ता नहीं, क्योंकि मैं बैतुल्लाह की देख-भाल करता हूँ। यह सुन कर तीसरे ने कहाः तुम लोगों की ख़िदमत से कहीं अफ़ज़ल जिहाद है। उन सब की बातों को सुन कर उमर रज़ि॰ ने उन्हें डाँट पिलाई और कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मिंबर के पास इस प्रकार की वाहियात बातें मत करो, आज जुम्अ़ः का दिन भी है इसलिये जिस मस्अले में तुम लोग लड़ रहे हो नमाज़ के बाद उस के बारे में मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछूगाँ। इस पर अल्लह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमायीः "क्या तुम लोगों ने हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे-हराम की आबादकारी (देख-रेख) को अल्लह और आख़िरत पर ईमान लाने और अल्लाह की राह में जिहाद करने के बराबर समझ लिया है? अल्लाह के निकट यह बराबर नहीं हो सकते हैं। और अल्लाह अन्याय करने वाली क़ौम को हिदायत नहीं दिया करता है" (सूरः तौबा-19)

फ़ाइदा:– क्यों बराबर सवाब में नही हो सकते? इसलिये कि अल्लाह पर ईमान लाने वालों, उस की राह में हिजरत करने वालों, अल्लाह की राह में जान-माल ख़र्च कर के जिहाद करने वालों का बहुत बड़ा दर्जा और मर्तबा है। इन लोगों के लिये ऐसे बाग़ हैं जिन में हमेशा का आराम है, उस में हमेशा रहेंगे (सूरः तौबा-20, 21) ईमान वालों के इन कामों के मुक़ाबले में हज्ज के मौसम में हाजियों को पानी पिला देने और बैतुल्लाह की सफ़ाई-सुथराई कर देने की कोई अहमिय्यत नहीं है। अल्लाह पर ईमान ला कर उस की राह में जिहाद करना, इस से बढ़ कर नेक काम दुनिया में कोई हो ही नहीं सकता।

बाब {अल्लाह की राह में शहीद होने की ख़ाहिश करने पर भी शहीदों का सा अज्र मिलेगा।}

1078:– सहल बिन हनीफ़ रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो व्यक्ति सच्चे दिल से अल्लाह की राह में शहीद होने की दुआ़ माँगेगा तो अल्लाह पाक उसे भी शहीदों का दर्जा देगा, अर्गचे वह अपने बिछौना पर जान दे।

फ़ाइदा:– एक दूसरी रिवायत में है कि बन्दा अगर कोई नेकी का काम करने की निय्यत करे तो उसे एक नेकी का सवाब मिलता है। और अगर बुराई का काम करने की निय्यत करे तो जब तक वह बुराई न कर ले उस के आमाल-नामें में बुराई नहीं लिखी जाती। यह अल्लाह की बन्दों पर मेहरबानी है कि केवल नेकी के काम की निय्यत पर ही नेकी का सवाब देता है। इमाम बुख़ारी रह॰ ने भी अपनी पुस्तक में ऊपर का बाब बाँधा है और नीचे यह हदीस लाये हैं कि सन 8 हि॰ में जन्गे मूता के लिये लश्कर रवाना करने के बाद एक दिन मस्जिदे-नबवी में खुत्बा दिया और फ़रमायाः "फ़ौज का झन्डा अब ज़ैद

ने ले लिया और वह शहीद कर दिये गये। अब उन के बाद जाफ़र ने ले लिया और वह भी शहीद कर दिये गये.......और अब किसी के आदेश का इन्तिज़ार किये बिना (शहादत की तमन्ना में) ख़ालिद बिन वलीद ने झन्ड़ा हाथ में ले लिया........ (बुख़ारी–2798–अनस बिन मालिक) इसी हदीस से यह साबित किया कि अपनी इच्छा से ख़ालिद ने शहादत की निय्यत से झन्डा हाथ में उठा लिया, लेकिन शहादत नहीं मिली, फिर भी शहादत का सवाब मिला।

बाब {अल्लाह की राह में शहादत की फ़ज़ीलत का बयान।}

1079:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक बार जो व्यक्ति जन्नत में चला गया वह दोबारा दुनिया में आने की इच्छा नहीं करेगा अर्गचे उस को दुनिया की तमाम नेमतें दे दी जायें, सिवाए शहीद के। क्योंकि शहीद (10 बार दुनिया में आ कर) 10 बार शहीद होने की इच्छा प्रकट करेगा, क्योंकि उस ने शहादत के मर्तबे को अपनी आँखों से देख लिया है।

फ़ाइदा:– जन्नत में अपने सब से ऊँचे दर्जे को देख कर बार–बार चाहेगा कि दुनिया में भेज दिया जाऊँ और फिर शहीद होकर यही दर्जा पाऊँ। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जन्नत में 100 दर्जे हैं जो स्पेशली अल्लाह की राह में जिहाद करने वालों के लिये सजा कर तैयार रखे हैं। उन के दो दर्जों के दर्मियान इतना फ़ासला है जितना आकाश और ज़मीन में है। उसी के ऊपर अल्लाह का अर्श है और वहीं से नहरें निकलती हैं। (बुख़ारी–2790–अबू हुरैरा)

बाब {किसी भी अमल (पर नेकी और बदी मिलने) का दारोमदार निय्यत पर है।}

1080:– उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः आमाल का दारोमदार निय्यत पर है। और आदमी को उसी हिसाब से (अच्छा, बुरा) बदला मिलता है जैसी उस ने निय्यत की होगी। तो जिस ने हिजरत अल्लाह और उस के सन्देष्टा के लिये की है उस की हिजरत अल्लाह और उस के संदेष्टा की ख़ातिर मानी जायेगी। और जिस की हिजरत दुनिया कमाने या किसी महिला से निकाह के उद्वेश्य से होगी तो उस की हिजरत उसी उद्वेश्य से मानी जायेगी।

फ़ाइदा:– इबादत में यह बहुत ही अहम हदीस है। चुनान्चे इमाम बुख़ारी रह॰ ने अपनी बुख़ारी पुस्तक का आरंभ ही इसी हदीस से किया है। इस हदीस में स्पष्ट तौर पर बता दिया गया है कि दुनिया के जितने भी अच्छे–बुरे कार्य इन्सान करता है, उन कामों पर उसे गुनाह या सवाब का काम करने से पूर्व की गयी निय्यत के अनुसार मिलता है। एक आदमी बज़ाहिर मुहाजिरों के साथ चला जा रहा, सभी लोग समझते हैं कि वह भी अल्लाह की राह में हिजरत कर रहा है इसलिये हिजरत के सवाब का हक़दार है। लेकिन उस की

निय्यत अगर बुरी है तो उस की निय्यत के अनुसार ही अल्लाह पाक बदला देगा। जिहाद के बाब में इस हदीस को लाकर यह बतलाना उद्देश्य है कि जिहाद में भी निय्यत की दुरुस्तगी अनिवार्य है।

बाब {अल्लाह पाक शहीदों से राज़ी है और वह अल्लाह से राज़ी हैं।}

1081:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि कुछ लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर अनुरोध किया कि हमारे पास कुछ आदमी भेज दें जो हमें कुरआन हदीस की शिक्षा दें। चुनान्चे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने (उन की इच्छा के मुताबिक़) सत्तर अन्सारी सहाबा को भेज दिया, उन्हें "कुर्रा" (अर्थात कुरआन व हदीस का ज्ञानी) कहा जाता था। अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि उन में मेरे मामूँ हराम भी थे। यह लोग स्वयँ कुरआन पढ़ते थे और रात को भी बैठ कर एक-दूसरे को पढ़ते-पढ़ाते थें। यह दिन को पानी ला कर मस्जिद में रख देते, जन्गल से लकड़ियाँ चुन कर लाते, उसे बेच कर अपने और सुफ़्फ़ा वालों के खाने का इन्तिज़ाम करते। इन्हीं लोगों को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन के साथ भेज दिया था। चुनान्चे उन लोगों ने उस क्षेत्र में पहुँचने से पूर्व ही (राह ही में) इन सब को शहीद कर दिया। उन सहाबा ने शहादत से पूर्व यह वाक्य पढ़ाः **अल्लाहुम्म बल्लिग़ अ़न्ना नबिय्यना अन्ना क़द् लक़ीना-क फ़-रज़ीना अ़न्-क व-रज़ी-त अ़न्न** (ऐ मेरे मौला! हम लोगों की ओर से हमारे सन्देष्टा को यह संदेश पहुँचा दे कि हम अल्लाह के पास पहुँच गये हैं, वहहम से राज़ी है और हम उस से राज़ी हैं)

अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि मेरे मामूँ हराम केपीछे एक काफ़िर ने आ कर इतने ज़ोर से नेज़ा मारा कि वह आर-पार हो गया। नेज़ा लगते ही उन की ज़बान पर यह जुम्ला आ गया "फुज़्तु बि-रब्बिल् का-बति (काबा के पर्वरदिगार की क़सम! में तो कामियाब हो गया) (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को जब वहिय द्वारा सूचना मिली) तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम्हारे कुर्रा भाई शहीद कर दिये गये हैं और उन्होंने यह सन्देश भेजा है कि "हम अल्लाह के पास पहुँच गये हैं, अल्लाह पाक हम से राज़ी हो गया है और हम उस से राज़ी हो गये हैं।"

फ़ाइदा:– अल्लाह पाक किसी से राज़ी हो जाये, दुनियाँ में इस से बड़ी ख़ाहिश और क्या हो सकती है। इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह की राह में दीन की तब्लीग़ भी जिहाद है और इस राह में मरने वाला शहीद है।

इन क़ारियों की संख्या 70 थीं। यह लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की स्थापित की हुयी यूनिर्वसिटी "सुफ़्फ़ा" के सब से अच्छे (टाप) छात्रों में से थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नज्द के क़बीला बनी आ़मिर में तब्लीग़ के लिये भेजा था। जब यह लोग "मऊना" नामक कुएँ के पास पहुँचे तो आ़मिर बिन तुफ़ैल नामक एक ग़द्दार और धोखे बाज़ ने क़बीला "र-अ़ल्" और क़बीला "ज़कवान" के शरपसन्दों को

लेकर उन पर आक्रमण कर के शहीद कर दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इस घटना से इतनी तक्लीफ़ पहुँची कि आप ने उन के हक़ में एक महीना तक नमाज़ में बद्दुआ फ़रमायी (बुख़ारी-1002, 1003) यह सन 4 हि॰ की घटना है। उन में से एक क़ारी कअ़ब बिन ज़ैद अन्सारी रज़ि॰ को मुर्दा समझ कर छोड़ दिया था, चुनान्चे यह किसी प्रकार बच गये, फिर खन्दक़ की जन्ग में शहादत पाई। रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मअ़ीन व-रज़ू अन्हु। (मिरआतुल् मफ़ातीह-2/222)

बाब {शहीद पाँच प्रकार के हैं।}

1082:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक व्यक्ति कहीं जा रहा था कि राह में काँटे की एक डाली पड़ी देखी तो उसे राह से हटा दिया, इस पर अल्लाह पाक ने (खुश हो कर) उसे नेक बदला दिया और उसे बख़्श दिया।

और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमायाः शहीद पाँच प्रकार के हैं ताऊन (हैज़ा-प्लेग) की बीमारी में मरने वाला, पेट की बीमारी में मरने वाला, पानी में डूब कर मरने वाला, किसी वस्तु से दब कर मरने वाला, और अल्लाह की राह में मारा जाने वाला, सब शहीद हैं।

बाब {ताऊन की माहमारी में मरने वाले मुसलमान के लिये शहादत की मौत है।}

1083:- इमाम सीरीन रह॰ की पुत्री हफ़्सा ने बयान किया कि अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने मुझ से पूछा कि यहया बिन अबू अ़म्रा का देहान्त किस बीमारी में हुआ था? उन्होंने बयान किया कि मैं ने कहाः ताऊन की बीमारी में। हफ़्सा ने बयान किया कि यह सुन कर अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने कहाः नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि ताऊन (प्लेग) की बीमारी हर मुसलमान के लिये शहादत है।

फ़ाइदाः- एक दूसरी रिवायत में है कि शहीद 7 प्रकार के हैं। इन में पाँच का बयान ऊपर की हदीस में हुआ दो और भी हैं (6) जो निमोनिया की बीमारी में, या जल कर मर जाये (7) वह महिला जो डिलीवरी (बच्चा पैदा होने की हालत) में मर जाये (मु-अत्ता-जाबिर बिन उतैक) 'ताऊन' हैज़ा और प्लेग की बीमारी को कहते हैं। 'मबतून' जो पेट की किसी भी बीमारी में मरे, जैसे दस्त, कालरा, सूखा आदि। 'साहिबुल् हदमि' जैसे किसी के ऊपर दीवार गिर पड़े, या कोई भारी वस्तु के नीचे दब कर मर जाये।

अल्लाह की राह में शहीद होने वाले के अतिरिक्त इन शहादतों से यह मुराद है कि आख़िरत में इन्हें शहीदों का सवाब मिलेगा। हालाँकि दुनियाँ में यह लोग शहीदों की तरह नहीं हैं, बल्कि और मरने वालों के समान इन्हें स्नान दिया जायेगा और इन पर जनाज़ा की नमाज़ पढ़ी जायेगी। इस प्रकार शहीद तीन प्रकार के हुये (1) दुनिया और आख़िरत दोनों जगह शहीद (2) दुनिया में नहीं, मगर आख़िरत में शहादत का सवाब और दर्जा

मिलेगा, जैसे जिन का ऊपर बयान हुआ (3) दुनिया की नज़र में शहीद हैं मगर आख़िरत में कोई दर्जा नहीं मिलेगा, जैसे माले ग़नीमत की चोरी करने वाले।

इन के अलावा भी शहीदों के नाम हैं जैसे, जो अपने माल की सुरक्षा में मारा जाये वह शहीद है, (इसी पुस्तक में हदीस न॰ 1086) सफ़र में मृत्यु हो जाये, या साँप-बिच्छू के काटने और जानवरों के फाड़ खाने से मर जाये उसे भी आख़िरत में शहादत का सवाब मिलेगा।

बाब {शहीद के ज़िम्मा जो क़र्ज़ है उसे छोड़ कर उस का हर गुनाह माफ़ हो जायेगा।}

1084:– अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक शहीद के समस्त गुनाहों को माफ़ कर देगा, लेकिन क़र्ज़ को नहीं माफ़ करेगा।

1085:– अबू क़तादा अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सहाबा के दर्मियान ख़ुत्बा देने के लिये खड़े हुये, चुनान्चे सहाबा को मुख़ातब कर के फ़रमायाः समस्त कर्मों में सब से अफ़ज़ल कर्म अल्लाह की राह में जिहाद और उस पर ईमान लाना है। यह सुन कर एक सहाबी ने खड़े होकर पूछाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! अगर मैं अल्लाह की राह में मार डाला जाऊँ तो मेरे समस्त पाप माफ़ हो जायेंगे? आप ने फ़रमायाः हाँ, मगर यह शर्त है कि अगर तुम ने डट कर मुक़ाबला किया और निय्यत में इख़्लास रही हो और दुश्मन को पीठ न दिखाई हो (तो फिर समस्त गुनाहों को माफ़ कर देगा) फिर आप ने उन से पूछाः तुम ने क्या पूछा था? उन्होंने कहाः अगर मैं अल्लाह की राह में मारा जाऊँ तो क्या मेरे तमाम गुनाह माफ़ हो जायेंगे? (इस के उत्तर में) आप ने फिर फ़रमायाः अगर तुम ने डट कर मुक़ाबला किया, निय्यत का इख़्लास था और दुश्मन को पीठ न दिखाई (तो तुम्हारे तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे) मगर क़र्ज़ नहीं माफ़ होगा, क्योंकि जिब्रील अ़लै॰ ने आ कर मुझे यह बात बताई है।

फ़ाइदा:– गुनाह माफ़ होने की पहली शर्त इख़्लास (नेक निय्यती) के साथ जिहाद करना है। अगर निय्यत दुरुस्त नहीं होगी तो उल्टा दन्ड मिलेगा। अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन एक शहीद लाया जायेगा तो वह कहेगा ऐ अल्लाह! में ने तेरी राह में जिहाद किया और शहीद हुआ। इस पर अल्लाह कहेगाः तू झूठा है, तू ने तो इसलिये लड़ाई लड़ी कि लोग कहें कि फ़लाँ तो बड़ा बहादुर है, तो तुझे लोगों ने बहादुरी का ख़िताब दे दिया, फिर उसे जहन्नम में औंधे मुँह ढकेल दिया जायेगा। इस हदीस से मालूम हुआ कि बन्दों के हुक़ूक़ को बड़ी से बड़ी नेकी भी नहीं समाप्त कर सकती, जब तक बन्दा स्वँय माफ़ न कर दें, वह क़र्ज़ होना और भी किसी प्रकार का हक़। चुनान्चे अल्लाह पाक क़ियामत के दिन अपने हुक़ूक़ को तो माफ़ कर सकता है लेकिन बन्दों के हुक़ूक़ नहीं।

आप ने दूसरी बार सहाबी से प्रश्न पूछा, क्योंकि उसी दर्मियान जिब्रील अ़लै॰ ने आ कर तुरन्त बता दिया था कि क़र्ज़ नहीं माफ़ होगा।

बाब {जो अपने माल की सुरक्षा करता हुआ मारा गया वह शहीद है।}

1086:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास एक व्यक्ति आ कर पूछने लगाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! आप इस बारे में क्या फ़रमाते हैं कि अगर कोई मेरा माल (नाहक़) लेता है? आप ने फ़रमायाः उसे मत दो। उस ने कहाः अगर वह मुझ से लड़ पड़े तो? आप ने फ़रमायाः तुम भी उस से भिड़ जाओ। उस ने पूछाः अगर वह मुझे मार डाले तो? आप ने फ़रमायाः तुम शहीद होंगे। उस ने पूछाः अगर मैं उसे मार डालूँ, आप ने फ़रमायाः वह जहन्नम में जायेगा।

फ़ाइदा:– वह शहीद होगा, यानी आख़िरत में उसे शहीदों का सवाब मिलेगा। विस्तार से जानकारी के लिये ऊपर हदीस न॰ 1083 का फ़ाइदा पढ़ें।

बाब {पारः 22, सूरः अहज़ाब की आयत न॰ 23 "रिजालुल् स–दक़ू......" की तफ़सीर।}

1087:– साबित से रिवायत है कि अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने मुझ से बयान किया कि मेरे एक चचा जिन के नाम पर मेरा नाम रखा गया नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ बद्र की लड़ाई में शरीक नहीं हो सके थे। चुनान्चे इस का उन्हें बड़ा रन्ज हुआ, इसलिये उन्होंने कहा कि पहली लड़ाई में तो मैं हाज़िर नहीं रहा, लेकिन (भविष्य में) अगर अल्लाह पाक ने मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ (किसी जन्ग) में कर दिया तो अल्लाह पाक भी देखेगा कि मैं क्या करता हूँ। इस के अ़लावा और कुछ कहने से डरे (यानी बहुत बढ़–चढ़ कर दावा नहीं किया) फिर वह उहुद की जन्ग में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ गये, तो रास्ते में सअ़द बिन मआ़ज़ से सामना हो गया। उन्होंने पूछाः ऐ अबू अ़म्र! कहाँ का इरादा है? उन्होंने कहाः परे हटो, यहाँ उहुद के मैदान की तरफ़ से जन्नत की हवा आ रही है (मुझे जल्दी पहुँचने दो) यह कह कर वह काफ़िरों पर टूट पड़े और शहीद हो गये। बाद में जब उन के शव को देखा गया तो उन के शरीर पर तल्वार, बर्छी और तीर के अस्सी से अधिक घाव थे। उन की बहन, यानी मेरी फूफी रबीअ़ बिन्त नज़्र ने कहा कि मैंने उन्हें (बड़ी मुश्किल से) उंगलियों के पोर को देख कर पहचाना (क्योंकि पूरा शरीर घायल था) उन्हीं की शान में (सूरःअहज़ाब की) यह आयत नाज़िल हुयीः "मुसलमानों में कुछ मर्द ऐसे भी हैं कि उन्होंने अल्लाह से जो वादा किया उस में खरे उतरे। उन में से कुछ तो अपना कार्य पूरा कर चुके और कुछ अभी इन्तिज़ार में हैं। उन लोगों नेअपने वादे को तनिक भर भी नहीं बदला।" (सूरःअहज़ाब–23)

फ़ाइदा:– अनस रज़ि॰ के चचा का नाम "अनस बिन नज़्र" था, इन की बहन का नाम

“रबीअ़ बिन्त नज़्र” था। इन महिला का बयान ऊपर हदीस न॰ 1030 में आ चुका है। यह दोनों भाई-बहन क़ौल-क़रार के बड़े पक्के और बड़े सच्चे मोमिनों में से थे। अल्लाह तआला से वादा किया कि अगर उस ने लड़ाई की तौफ़ीक़ दी तो हक़ अदा कर देंगे और उहुद की जन्ग में हक़ अदा कर दिया, अपनी जान अल्लाह की राह में निछावर कर दी।

बाब {जब व्यक्ति अल्लाह के दीन की सरबुलन्दी की ख़ातिर जिहाद करे।}

1088:- अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है कि एक दीहाती नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास कर कहने लगा: ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! एक व्यक्ति लूट-पाट के इरादे से लड़ता है, एक नाम कमाने के लिये और एक अपनी शान व शौकत दिखाने के लिये लड़ता है, तो इन में से कौन अल्लाह की राह में लड़ा? आप ने फ़रमाया: जो इसलिये लड़ा कि अल्लाह का दीन सरबुलन्द हो (वह अल्लाह की राह में लड़ा।)

फ़ाइदा:- अल्लाह के दीन को सर बुलन्द करने के लिये लड़ाई की कई शक्लें हैं। कोई तीर-तल्वार से लड़ता है, कोई धन-माल का सहयोग देकर, कोई तक़रीर और भाषण देकर, कोई पुस्तकें लिख कर, कोई राय-मश्वरा देकर, कोई सवारी देकर और कोई दुआ़एँ देकर। इन सब का उद्देश्य अल्लाह के दीन की सरबुलन्दी है, इसलिये इन सब की गिनती अल्लाह की राह में लड़ने वालों मे होगी।

बाब {जो लोगों को दिखाने के लिये लड़े, उस का ठिकाना जहन्नम है।}

1089:- सुलैमान बिन यसार रिवायत करते हैं कि लोग जब अबू हुरैरा रज़ि॰ के पास से चले गये तो नातिल नामक एक व्यक्ति ने उन से कहा कि ऐ शैख़! मुझे कोई एक हदीस सुना दीजिये जो आप ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़बान से सुनी हो। अबू हुरैरा रज़ि॰ ने उत्तर दिया: ठीक है (सुनिए) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़ियामत के दिन सर्वप्रथम एक शहीद के बारे में फ़ैसला होगा। जब उसे अल्लाह के सामने पेश किया जायेगा जो अल्लाह पाक उस पर अपनी नेमतों को गिनाएगा जिसे वह पहचान लेगा। फिर अल्लाह पाक उस से पूछेगा कि इन के बदले में तू ने क्या किया? वह कहेगा कि मैं ने तेरी राह में जन्ग की यहाँ तक की तेरी राह में जान दे दी। इस पर अल्लाह पाक कहेगा: तू झूठा है, तू ने तो इसलिये लड़ाई लड़ी ताकि लोग तुझे बहादुर कहें, चुनान्चे तुझे बहादुरी का प्रमाण मिल चुका, फिर उस के बारे में हुक्म होगा और वह जहन्नम में औंधे मुँह घसीट कर डाल दिया जायेगा।

फिर एक दूसरा व्यक्ति पेश होगा जिस ने दीन का ज्ञान प्राप्त किया और लोगों को उस की शिक्षा दी और क़ुरआन को पढ़ा-पढ़ाया, इसे अल्लाह के सामने पेश किया जायेगा। अल्लाह पाक उस को भी अपनी नेमतें गिनाएगा जिसे वह पहचान कर स्वीकार कर लेगा। फिर अल्लाह पूछेगा: तू ने बदले में क्या किया? वह उत्तर देगा कि मैं ने

दीन का ज्ञान प्राप्त किया फिर उस की लोगों को शिक्षा दी और कुरआन को पढ़ा-पढ़ाया। यह सुन कर अल्लाह पाक फ़रमायेगाः तू झूठा है। तू ने तो इसलिये ज्ञान प्राप्त किया था ताकि लोग तुझे ज्ञानी कहें, और इसलिये कुरआन पढ़ता था ताकि क़ारी कहें। चुनान्चे (दुनियाँ में) तुझे ज्ञानी और क़ारी का प्रमाण मिल चुका। फिर उस के बारे में हुक्म होगा कि उसे औंधे मुँह घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाये, चुनान्चे उसे जहन्नम में डाल दिया जायेगा।

फिर एक तीसरा व्यक्ति पेश किया जायेगा जिसे अल्लाह पाक ने (दुनिया में) हर प्रकार की दौलत से नवाज़ा था। उसे अल्लाह पाक के सामने पेश किया जायेगा तो वह उस के सामने अपने एहसानात को गिनाएगा जिसे वह स्वीकार करेगा, जब अल्लाह पूछेगा कि इस के बदले में तू ने क्या-क्या किया? इस पर उत्तर देगा कि जिस राह में भी तू ख़र्च करना पसन्द करता था उस राह में मैं ने ख़र्च किया। यह सुन कर अल्लाह फ़रमायेगाः तू झूठा है, तू ने इसलिये ख़र्च किया था ताकि लोग तुझे दानी (सख़ी) कहें, तो तुझे दुनिया में यह प्रमाण पत्र मिल गया, फिर हुक्म होगा कि इसे औंधे मुहँ घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाये, और वह जहन्नम में डाल दिया जायेगा।

फ़ाइदाः- अ़मल का दारोमदार निय्यत पर है। जैसी निय्यत होगी वैसी बर्कत होगी। निय्यत ही पर दीन इस्लाम की बुनियाद स्थापित है। इसी निय्यत ही पर हर कार्य पर अज़ाब और सवाब निर्भर है। यहाँ तक कि दुनिया के सब से बड़े नेक कार्य जिहाद में भी निय्यत ही को पैमाना बनाया गया है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यहाँ उदाहरण में केवल तीन व्यक्तियों के अ़मल को पेश किया है, लेकिन दुनिया के समस्त छोटे-बड़े हर अ़मल को निय्यत के आधार पर अल्लाह तआ़ला आख़िरत के दिन जाँचेगा और उसी के अनुसार फ़ैसला फ़रमायेगा। 'नातिल' यह व्यक्ति फ़लस्तीन का रहने वाला था, इस के पिता का नाम क़ैस ख़रीमी था जो सहाबी थे।

बाब {अल्लाह की राह में क़त्ल किये जाने पर सब से अधिक अज्र है।}

1090:- बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि (अन्सार के एक क़बीला) बनी नबीत का एक व्यक्ति आ कर कहने लगा कि मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त और कोई पूजे जाने योग्य नहीं, और आप अल्लाह के बन्दे और सन्देष्टा हैं। यह कह कर आगे बढ़ा और काफ़िरों से जिहाद किया और क़त्ल कर दिया गया। यह देख कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उस ने कार्य तो कम किया मगर सवाब अधिक मिला।

फ़ाइदाः- यह व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ पर कलिमा पढ़ कर ईमान लाया और जिहाद में शामिल होकर दुश्मनों से लड़ता हुआ शहीद हो गया। संभवतः उस को एक समय की नमाज़ पढ़ने का भी अवसर न मिला होगा। लेकिन सदा के लिये जीवन दान मिला और जन्नत में सब से ऊँचा दर्जा जन्नतुल् फ़िरदोस मिला। ऐसा

भी कुछ लोगों को सवभाग्य' प्राप्त होता है कि थोड़ी नेकी कर के अधिक सवाब के हक़दार बन जाते हैं।

बाब {जो अल्लाह की राह में जिहाद करेगा तो या तो घाटे में रहेगा, अथवा माले–ग़नीमत पाएगा।}

1091:– अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अ़ास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कोई भारी लश्कर या उस की टुक्ड़ी जिहाद कर के सही–सलामत बच जाये और माले ग़नीमत भी प्राप्त कर ले तो समझो कि उसे आख़िरत में मिलने वाले कुल सवाब का दो हिस्सा दुनिया ही में मिल गया। लेकिन लश्कर कशी के पश्चात् अगर (जानी–माली) नुक़्सान उठाया और ख़ाली हाथ रहा (माले ग़नीमत भी नहीं मिला) तो उस को आख़िरत में पूरा सवाब मिलेगा।

फ़ाइदाः– अगर नेकी का बदला दुनिया में मिल गया तो आख़िरत में नहीं पायेगा, हाँ अल्लाह पाक वहाँ भी दे दे तो उस की कृपा और मेहरबानी। लेकिन अगर दुनिया में नहीं मिला तो आख़िरत में मिलना यक़ीनी है।

बाब {जो व्यक्ति मुजाहिद के लिये जिहाद का सामान मुहय्या करेगा तो उसे भी जहिाद करने का सवाब मिलेगा।}

1092:– ज़ैद बिन ख़ालिद जोहनी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस ने मुजाहिद के लिये सामान तय्यार कर दिया तो उस ने भी अल्लाह की राह में जिहाद किया। और जिस ने मुजाहिद के (जिहाद पर चले जाने के बाद उस के) घर की रखवाली की तो उस ने भी जिहाद किया।

फ़ाइदाः– दुश्मन के साथ जिहाद करना और चीज़ है और जिहाद के लिये सामान दे देना, या उस के घर की निग्रानी कर देना और चीज़ है। हदीस का अर्थ यह है कि जिहाद में उस ने जितना हाथ बटाया उसी अनुपात में उस को सवाब भी मिलेगा।

बाब {जिस ने जिहाद के लिये सामान तय्यार किया लेकिन बीमार हो गया तो उसे चाहिये कि वह सामान उस व्यक्ति के हवाले कर दे जो जिहाद करना चाहता है।}

1093:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि क़बीला बनी अस्लम के एक व्यक्ति ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मेरी इच्छा जिहाद करने की तो है मगर लड़ाई का कोई हथियार नहीं है। आप ने फ़रमायाः फ़लाँ के पास जाओ (और उस से हथियार माँग लो) उस ने जिहाद की तय्यारी की थी मगर बीमार हो गया। चुनान्चे वह बीमार व्यक्ति के पास गया और कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आप को सलाम कहा है और फ़रमाया है कि जिहाद का सामान मुझे दे दें। उस ने (अपनी पत्नी से कहा) ऐ फ़लानी! सारा सामान इन्हें दे दो, कुछ भी बचा कर मत रखना। अल्लाह की क़सम! कुछ भी बचा कर मत रखना, क्योंकि (हमारे और) तुम्हारे लिये इस में बर्कत होगी।

फ़ाइदा:— ख़ैर-बर्कत यह होगी कि हम सब को भी जिहाद में सामान देने का सवाब मिलेगा, जैसा कि ऊपर की हदीस न॰ 1092 में बयान हुआ।

बाब {मुजाहिदों के पीछे उन की महिलाओं का आदर–सम्मान और सुरक्षा फ़र्ज़ है। जो व्यक्ति उन की देख–भाल करता है अगर उन के साथ बुराई करेगा वह जहन्नमी है।}

1094:— सुलैमान अपने पिता बुरैदा रज़ि॰ से रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिहाद पर जाने वालों के घर की महिलाओं का आदर–सम्मान और उन के घरों में रहने वालों पर ऐसे ही वाजिब है जैसे वह अपनी सगी माताओं की करते हैं। जो व्यक्ति जिहाद में न जा कर जिहाद पर जाने वालों के घर की निग्रानी करता है, फिर उन के साथ बुराई करता है, क़ियामत के दिन अल्लाह पाक ऐसे व्यक्ति को सामने खड़ा कर के मुजाहिद से कहेगा कि उस की नेकियों में से जितना चाहे ले ले।

फ़ाइदा:— एक व्यक्ति अल्लाह की राह में जिहाद के लिये घर–बार, बीवी–बच्चों को छोड़ कर निकला है, और दूसरा व्यक्ति सन्नाटा पा कर उस के साथ विश्वास घात कर के उस के धन–माल को हानि पहुँचाये और उसके घर वालों की इ़ज़्ज़त पर डाका डाले, इस से बढ़ कर महापाप और क्या होगा। क़ियामत के दिन वह अपनी नेकियाँ बदले में तो देगा ही, दुनिया में भी उसे जितना कठोर से कठोर दन्ड दिया जाये कम है।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मेरी उम्मत का एक गरोह हमेशा हक़ (सच्चे दीन इस्लाम) पर क़ाइम रहेगा......।}

1095:— सौबान रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरी उम्मत का एक गरोह सदा हक़ (यानी किताब व सुन्नत) पर अ़मल करता रहेगा, क़ियामत तक कोई उन को तनिक भर हानि नहीं पहुँचा सकेगा, वह हमेशा हक़ पर स्थिति रहेंगे।

1096:— अ़ब्दुर्रहमान बिन शमामा महरी ने बयान किया कि मैं मस्लमा बिन ख़लदून के पास बैठा हुआ था, उन के पास अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ि॰ भी बैठे हुये थे, इसी दर्मियान उन्होंने बयान किया कि क़ियामत नहीं क़ाइम होगी मगर अल्लाह की उन बदतरीन (सब से बुरे) मख़्लूक़ पर जो जाहिलिय्यत के ज़माना के लोगों से भी अधिक बुरे होंगे। यह लोग अल्लाह से जिस चीज़ के बारे में भी दुआ़ करेंगे अल्लाह पाक उसे कुबूल फ़रमाएगा और उन को देगा। लोग इन बातों को सुन ही रहे थे कि इसी दर्मियान उक़्बा बिन आ़मिर रज़ि॰ भी आ गये। उन्हें देख मस्लमा बिन ख़लूदन ने कहा: ऐ उक़्बा! आप ने सुना कि अ़ब्दुल्लाह क्या बयान कर रहे हैं? इस पर उक़्बा ने कहा: वह मुझ से अधिक जानकारी रखते हैं, लेकिन मैं ने भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि मेरी उम्मत की एक जमाअ़त अल्लाह के हुक्म से हक़ के लिये

लड़ती रहेगी और अपने दुश्मन पर ग़ालिब रहेगी, और क़ियामत तक उन के ख़िलाफ़ लड़ने वाले उन को कुछ भी हानि न पहुँचा सकेंगे, वह हमेशा अपनी हालत पर बाक़ी रहेगी।

यह सुन कर अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ि॰ ने कहा कि बेशक (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ऐसा ही फ़रमाया है), लेकिन (आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि) इस के बाद अल्लाह पाक एक हवा भेजेगा जिस में मुश्क की सी खुश्बू होगी जो शरीर पर रेशम की तरह लगेगी, जिस के दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा उन सब को वह हवा लगेगी। बाक़ी जो बुरे लोग बचेंगे उन्ही पर क़ियामत आयेगी।

फ़ाइदा:– वह गरोह कौन सा है इस समय? अल्लाह के सन्देष्टा ने किताब व सुन्नत का सन्देश दिया, चुनान्चे साहबा ने केवल इन्हीं दो चीज़ों पर अ़मल किया, ताबओ़ीन–तबा ताबओ़ी ने भी इन्ही दो चीज़ों पर अ़मल किया। यही लोग हिन्दुस्तान में आये और इन्ही दो चीज़ों पर अ़मल करने की शिक्षा दी। धीरे-धीरे चराग़ से चराग़ जलता रहा और हर समय में सदा एक जमाअ़त अहले हदीस उन्ही दो चीज़ों की प्रचारक है और उन पर अ़मल करने वाली है। और अल्लाह का शुक्र है कि समस्त गुमराह फ़िर्क़े इन्हें मिटाने के लिये एड़ी से चोटी का ज़ोर लगा रहे हैं, लेकिन वह है कि उपजाऊ भूमि के पौधों के समान बढ़ती जा रही है। इस हदीस में इसी जमाअ़त की ओर इशारा है।

1097:– सअ़द बिन अबू वक़्क़ास रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़ियामत तक पश्चिम के लोग (अ़रब राष्ट्र) हक़ पर ग़ालिब रहेंगे (और उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकता)

फ़ाइदा:– 'पश्चिम' से मुराद कुछ लोगों ने मुल्क शाम को लिया है और कुछ ने बैतुल मुक़द्दस को। लेकिन यहाँ पर उमूम में समस्त अ़रब राष्ट्र और खुसूस में राष्ट्र सऊदी अ़रब मुराद है, जहाँ इस्लामी सिद्वान्त लागू है और केवल किताब व सुन्नत की बाला दस्ती है।

बाब {ऐसा भी संभव है कि दो व्यक्ति परस्पर एक–दूसरे से लड़ाई लड़ें और (क़ाति–मक़्तूल) दोनों ही जन्नत में जायें।}

1098:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह पाक को उन दो व्यक्तियों पर हँसी आती है जिन्होंने एक–दूसरे को क़त्ल किया लेकिन फिर भी जन्नत में दाख़िल हुये। इस पर लोगों ने प्रश्न किया: ऐ अल्लाह के रसूल! यह कैसे संभव है? आप ने फ़रमाया: (इस प्रकार कि) एक व्यक्ति ने अल्लाह की राह में जिहाद किया और वह दुश्मन के हाथों शहीद हो गया (और जन्नत में गया) फिर वह दुश्मन ईमान ले आया और उस ने भी अल्लाह की राह में जिहाद कर के जान दे दी (इस प्रकार यह भी जन्नती हुआ)

फ़ाइदा:– हदीस का अर्थ स्पष्ट है, इस पर कुछ लिखने की आवश्यक्ता नहीं।

बाब {जिस ने किसी काफ़िर को क़त्ल किया और दीन इस्लाम पर क़ाइम रहा, वह जहन्नम में नहीं जायेगा।}

1099:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः लड़ाई-झगड़े के दर्मियान एक-दूसरे को हानि पहुँचाने वाले दोनों जहन्नम में इकट्ठा नहीं हो सकते। आप से पूछा गया कि वह कौन हैं ऐ अल्लाह के रसूल! आप ने फ़रमायाः वह मोमिन जो किसी काफ़िर को क़त्ल कर दे फिर नेकी पर क़ाइम रहे।

बाब {अल्लाह की राह में सवारी देने की फ़ज़ीलत का बयान।}

1100:– अबू मस्ऊद अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति नकील पकड़े हुये एक ऊँटनी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास लाया और कहने लगाः इसे मैं अल्लाह की राह में दे रहा हूँ। इस पर आप ने फ़रमायाः इस के बदले तुम्हें क़ियामत के दिन सौ नकील पड़ी हुयी ऊँटनियाँ मिलेंगी।

1101:– अबू मस्ऊद अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर कहने लगाः मेरे पास कोई जानवर नहीं है इसलिये सवारी के लिये मुझे जानवर दीजिये। आप ने फ़रमायाः मेरे पास तो सवारी नहीं है। इस परएक व्यक्ति बोलाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मैं इसे बतला दूँ कि इसे कौन सवारी देगा। आप ने फ़रमायाः जो कोई नेकी की राह में किसी की रहनुमाई करता है तो अल्लाह पाक उसे भी नेकी करने वाले के बराबर बदला देता है।

फ़ाइदाः– बिल्कुल स्पष्ट है कि अगर वह सवारी न देता तो यह जिहाद नहीं कर सकता था। चूँकि इस की सवारी की बदौलत जिहाद में शरीक हुआ इसलिये सवारी देने वाला या उस की तरफ़ रहनुमाई करने वाला भी उस के साथ सवाब और नेकी में शामिल होगा। चुनान्चे बहुत प्रसिद्व हदीस है कि जिस ने किसी रोज़ादार को इफ़्तार करा दिया तो उसे भी एक रोज़ा का सवाब मिलेगा और रोज़ादार के रोज़े में कमी नहीं की जायेगी।

बाब {अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः "काफ़िरों से मुक़ाबला के लिये जी तोड़ तय्यारी करो....." (सूरःअन्फ़ाल–60) की तशरीह।}

1102:– उक़्बा बिन आ़मिर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मिंबर पर फ़रमाते सुनाः अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है "काफ़िरों से मुक़ाबला के लिये भरपूर तय्यारी करो" याद रहे कि "भरपूर तय्यारी" से मुराद तीर चलाने का अभ्यास है। जान लो कि "भरपूर तय्यारी" से मुराद तीर चलाने का अभ्यास है। याद रहे कि "भरपूर तय्यारी" से मुराद तीर चलाने का अभ्यास है।

फ़ाइदाः– पूरी आयत का तर्जुमा इस प्रकार हैः "ऐ मुसलमानों! तुम काफ़िरों से मुक़ाबला के लिये जहाँ तक तुम से हो सके अपनी पूरी शक्ति तय्यार रखो और घोड़ें बाँध रखो।

इन सामानों से अल्लाह तआ़ला के दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन पर धाक रहेगी।" (पारः10, अनफ़ाल 60) उस ज़माना में तीर-तल्वार और घोड़ों से लड़ाई होती थी इसलिये इन सब की तय्यारी का हुक्म दिया। और आज कल घोड़े के स्थान पर लड़ाकू वायु विमान और तीर के स्थान पर बन्दूक़, गोला-बारुद, टैंक, मीज़ाइल और एटम बम मुराद है। आज जिस के पास यह सब जन्गी हथियार हैं वही सब पर भारी है। उदाहरण के तौर पर अमरीका की मिसाल हमारे सामने है। रुस, चीन, फ्रांस, इन्गलेंड, जर्मनी, जापान जैसे दिग्गज मुल्क उस के सामने पाने भर रहे हैं। अरब राष्ट्र के राजा-महाराजा "जला-लतुल् मलिक" और "ख़ादिमुल् हरमैन" तो अमरीका के सज्दे बजा ला रहे हैं।

बाब {तीर चलाने के अभ्यास के लिये उत्साहित करने का बयान।}

1103:- उक़्बा बिन आ़मिर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि कुछ समय पश्चात् ही कई मुल्क तुम्हारे हाथों पराजित होंगे, और अल्लाह पाक तुम्हारे (बचाव के) लिये काफ़ी है, फिर भी तुम में से कोई अपने तीरों का अभ्यास करना न छोड़े।

फ़ाइदाः- आज की भाषा में पिस्तौल, बन्दूक़, मिज़ाइल आदि आधुनिक हथियारों का अभ्यास जारी रखे, ताकि हर समय निशाना अचूक रहे और आवश्यक्ता पड़ने पर तुरन्त दुश्मन के दाँत खट्टे करने के लिये तय्यार रहे।

1104:- अ़ब्दुर्रहमान बिन शिमास ने बयान किया कि एक मर्तबा फुक़ैम लख़्मी उक़्बा बिन आ़मिर रज़ि॰ से कहने लगाः आप इन दोनों निशानों में आते-जाते हैं और इतने अधिक बूढ़े हो गये हैं, आप पर तो बड़ा भारी पड़ता होगा? इस पर उक़्बा बिन आ़मिर रज़ि॰ ने कहाः अगर मैं ने वह हदीस नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से न सुनी होती तो यह ज़हमत न उठाता। हारिस ने कहा कि मैं ने इब्ने शिमास से पूछाः वह कौन सी हदीस थी? उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है "जो तीर चलाना सीख कर उस का अभ्यास समाप्त कर दे वह हम में से नहीं है, या गुनहगार है।

फ़ाइदाः- ऊपर की हदीस का फ़ाइदा अवश्य पढ़ें।

बाब {क़ियामत तक के लिये घोड़ों की पेशानी में ख़ैर-बर्कत बाक़ी है।}

1105:- जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बुजली रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने देखा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक घोड़े के पेशानी के बालों को उंगली से मल रहे थे और फ़रमा रहे थे कि क़ियामत तक घोड़ों की पेशानी से ख़ैर-बर्कत (प्रतिष्ठा मान-मर्यादा) बँधी हुयी है।

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "जिस किसी ने अल्लाह की राह में जिहाद के लिये घोड़ा पाला तो उस का

खाना-पीना, हगना-मूतना सब क़ियामत के दिन उस के आमाल के तराजू में होगा और सब पर उस को सवाब मिलेगा।" (2853)

1106:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः घोड़े की पेशानी में ख़ैर-बर्कत है।

फ़ाइदा:– घोड़े की पेशानी में ख़ैर-बर्कत का यह अर्थ है कि मुसलमान जिहाद के लिये घोड़े पाले, उस पर बैठ कर जिहाद करे तो उसे जिहाद का सवाब मिलेगा और माले ग़नीमत भी हासिल होगा। इस प्रकार दीन-दुनियाँ दोनों की भलाई हुयी। घोड़े का ज़िक्र यहाँ हथियार के तौर पर हुआ है। आज घोड़े का स्थान मोटर गाड़ियों और दूसरे साधनों ने लिया है, इसलिये जिहाद की निय्यत से उन्हें ख़रीदना और उन की देख-भाल करना यह भी सवाब और प्रतिष्ठा का मुक़ाम है। (बुख़ारी-2849-इब्ने उमर+2851 अब्दुल्लाह बिन जअ़द)

आज वही मुल्क बलवान और प्रतिष्ठित माने जाते हैं और उन्हीं का आदर-उम्मान हैं जिन के पास घोड़ों के स्थान पर प्रयोग होने वाले साधन और सूत्र हैं। आज मुस्लिम राष्ट्र इसी कारणवश ज़लील हैं कि उन के पास न इन साधनों के बनाने के कारख़ाने हैं और न ही प्रयोग में लाने के लिये कुछ और है।

एक दूसरी रिवायत में है कि नहूसत घोड़ें में होती है तो इस से वह घोड़ा मुराद है जो जिहाद की निय्यत से न पाला जाये। या वह घोड़ा मुराद है जो अधिक खाने वाला हो और काहिल, बोदा और शरीर हो।

बाब {अश्कल घोड़ा मकरुह होता है।}

1107:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अश्कल घोड़े को मकरुह और बुरा जानते थे। एक दूसरी रिवायत के अनुसार अश्कल घोड़ा वह है जिस का पिछला दाहिना और अगला बायाँ पाँव, या अगला दाहिना और पिछला बायाँ पैर सफ़ेद हो।

फ़ाइदा:– इसलिये कि देखने में बड़ा अटपटा लगता है। कुछ उलमा का कहना है कि अश्कल वह घोड़ा है जिस की तीन टाँगे सफ़ेद हों और एक लाल, या तीन टाँगें लाल हों और एक सफ़ेद।

बाब {घोड़दौड़ कराने और घोड़ों को टरेन्ड करने का बयान।}

1108:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ट्रेन्ड और सिखाये हुये घोड़ों की "हफ़या" के स्थान से "सनिय्यतुल्-वदाअ़" तक दौड़ का मुक़ाबला कराया। और जो अभी अनट्रेन्ड और सिखाए हुये नहीं थे उन का मुक़ाबला सनिय्या के स्थान से क़बीला बनी जुरैक़ की मस्जिद तक कराया। उमर फ़ारुक़ रज़ि॰ भी उन सहाबा में थे जिन्होंने इस मुक़ाबला (प्रतियोगिता) में हिस्सा लिया था।

फ़ाइदाः– सिखाए हुये घोड़ों के मुक़ाबले की दूरी लग–भग 5 मील की थी। और जो अभी सिखाए नहीं गये थे उन के लिये दूरी एक मील थी। (बुख़ारी–2868, 2870) आज के समय काल में घोड़ों के स्थान पर जिन चीज़ों का प्रयोग हो रहा है, मुसलमानों को उन्हें ख़रीद कर उनकी प्रतियोगिता करानी चाहिये और हर समय जिहाद के लिये बिल्कुल फिट रहना चाहिये। इस मुक़ाबले से सब से बड़ा लाभ यह होता है कि यह मालूम हो जाता है कि किस के अन्दर कितनी तेज़ी है और जन्ग में उसे कहाँ भेजा जाये। ऊपर हदीस न॰ 1102 में भी इसी ओर तवज्जोह दिलाई गयी है। और इस प्रकार की तय्यारियाँ जिहाद के वह गुर हैं जिन्हें अपना कर बड़ी सरलता से दुश्मन को पराजित किया जा सकता है।

अभी अक्तूबर सन 2005 में हिन्दुस्तान और अमरीका के जन्गी विमानों ने परस्पर फ़ौजी अभ्यास किया है। चुनान्चे अमरीका ने बयान दिया है कि हिन्दुस्तान के पास कुछ जहाज़ ऐसे हैं जो अमरीका के एफ 16 से कहीं अच्छे हैं। बड़े दुःख की बात है कि कुछ अ़रब राष्ट्र जैसे यू.ए.ई के शासक और राजकुमार बाज़ पंछी को उड़ाने की प्रतियोगिता कराते हैं। ऊँटों के पेट के नीचे बच्चों को बाँध कर उन की दौड़ कराते हैं। इन्नालिल्लाह। यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना जरुरी है कि मुक़ाबले में जीत केबाद पुरस्कार देने में कोई हरज नहीं। लेकिन पहले से शर्त लगाना नाजाइज़ है।

बाब {किसी मजबूरी के कारण जिहाद से पीछे रह जाने वालों का बयान। और कुरआन पाक की आयतः "बैठे रहने वालों और लड़ने वालों का दर्जा बराबर नहीं होता" की तफ़सील।}

1109:– अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ ने सूरः निसा की आयत 95 के बारे में बताया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ज़ैद बिन साबित को हुक्म दिया कि एक हड्डी ले आओ और उस पर लिख लो। इसी दर्मियान अ़ब्दुल्लह बिन उम्मे मक्तूम रज़ि॰ ने आ कर अपने नेत्रहीन (नाबीना) होने की मजबूरी पेश की, उस समय यह आयत नाज़िल हुयी।

फ़ाइदाः– इस हदीस को समझने के लिये पारः5, सूरःनिसा की आयत 95 सामने रखें। पहले आयत यूँ नाज़िल हुयी थीं "घरों में बैठे रहने वाले और अल्लह की राह में अपने जान–माल से जिहाद करने वाले बराबर नहीं हो सकते।" इतने में इब्ने उम्मे मक्तूम जो नेत्रहीन थे आ गये और कहने लगे कि हम अन्धे हैं इसलिये मजबूरी में घरों में बैठे हैं, तब आयत का टुक्ड़ा "ग़ैरु उलिज़्ज़–ररि" (बिना मजबूरी के) दोबारा नाज़िल हुयी और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आयत में इसे बढ़ाने का हुक्म दिया।

मालूम हुआ कि किसी मजबूरी के कारण कोई जिहाद में नहीं शामिल हो रहा है, लेकिन उस की निय्यत में जिहाद करने का उमन्ग और शौक़ तड़प है, तो उसे भी सवाब मिलेगा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "कुछ लोग मदीना में हमारे पीछे रह गये हैं, लेकिन हम किसी भी घाटी में (जिहाद के लिये) चलते हैं तो वह भी

सवाब में हमारे साथ शरीक होते हैं, क्योंकि वह केवल मजबूरी की वजह से हमारे साथ शामिल न हो सके। (बुख़ारी-2839)

बाब {जिस को बीमारी ने जिहाद से रोक दिया (वह भी सवाब में बराबर का शामिल है)}

1110:- जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ एक लड़ाई (जन्ग तबूक) में शरीक थे, उसी सफ़र में आप ने फ़रमायाः मदीना में कुछ लोग ऐसे हैं कि जब तुम लोग किसी घाटी को पार करते हो, या रास्ता चलते हो तो वह भी तुम्हारे साथ होते हैं। वह केवल बीमारी की वजह से तुम्हारे साथ नहीं आ सके।

फ़ाइदाः- लेकिन चूँकि जिहाद की तमन्ना उन के दिलों में है इसलिये जितना सवाब तुम्हें मिलेगा उतना ही उन्हें भी मिलेगा। जन्ग तबूक में कुछ लोग बीमारी, या सवारी आदि न होने की म्जबूरी से जिहाद में शामिल न हो सके थे, इन्हीं के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह हदीस बयान फ़रमायी थी।

नोटः- जिहाद का बाब संपन्न हुआ। इस बाब से संबन्धित चन्द अहम मस्अलों की जानकारी ज़रुरी है। ★ जिहाद, हर उस कोशिश और दौड़-धूप व मेहनत का नाम है जो इस्लाम की सरबुलन्दी के लिये की जाये। इस में ज़बान से, तहरीर से, माल से, राय-मश्वरा से, सभी शक्लें शामिल हैं। लेकिन अस्ल जिहाद बहरहाल वही है जो दुश्मन के मुक़ाबिल लड़ा जाये। शिर्क, बिद्अ़त, बातिल ख़यालात, गुमराह जमाअ़तों और ग़ैर इस्लामी संस्थाओं के मनघड़त सिद्वान्तों के ख़िलाफ़ लिखना, पढ़ना, पुस्तकें प्रकाशित करना, सभाएँ और समारोह करना, वाज़-तब्लीग़ करना आज के दौर का जिहाद है। ★आवश्यक्ता पड़ने पर अल्लाह की राह में रात में चुपके और धोखे से दुश्मन पर आक्रमण करना, झूठ बोलना और धोखा देना सब जाइज़ है। क-अ़ब बिन अशरफ़ यहूदी की हत्या के लिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुहम्मद बिन मस्लमा को झूठ बोलने की अनुमति दी थी। (बुख़ारी-3032, मुस्लिम-1801, 2605) ★जन्ग की तमन्ना नहीं करनी चाहिये, लेकिन अगर जन्ग हो जाये तो पीछे भी नहीं हटना चाहिये (बुख़ारी-3025) ★जासूसी करना भी दुरुस्त है (बुख़ारी-2846, मुस्लिम-2415) ★तीन समय हर व्यक्ति पर जिहाद फ़र्ज़ है, जिसे "फ़र्ज़ अ़ैन" कहते हैं। (1) जब दुश्मन किसी नगर पर आक्रमण करें तो समस्त नगरवासियों पर नगर की रक्षा करना फ़र्ज़ है। (2) जब दुश्मन लश्कर पर धावा बोल दें तो उस समय मौजूद समस्त लोगों पर फ़र्ज़ हो जाता है कि डट कर मुक़ाबला करें। (3) जब हाकिम और क़ाज़ी सब को निकलने का आदेश दे तो सभी पर फ़र्ज़ हो जाता है। इस पर समस्त उलमा का इत्तिफ़ाक़ है।

ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी, अहले हदीस मन्ज़िल, दिल्ली 8.12.2005

किताबुल जिहादि वस्सि-यर
(जिहाद और जिहादी सरगर्मियों का बयान)

बाब {लश्कर और छोटी टुक्ड़ी के कमान्डरों को उन के पदानुसार हिदायत व निर्देश का बयान।}

1111:— बुरैदा अस्लमी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब लश्कर या फ़ौज की छोटी टुक्ड़ी का किसी को कमान्डर बनाते तो उस कमान्डर को विशेष रुप से अल्लाह से डरने और मुसलमानों के साथ भलाई करने का आदेश देते। फिर फ़रमाते कि अल्लाह का नाम लेकर अल्लाह की राह में धावा बोलना, और केवल उस से जन्ग करना जो अल्लाह का इन्कारी है। और माले ग़नीमत में चोरी न करना, मुआ़हिदा (अनुबन्ध) को भी न तोड़ना, किसी के शरीर को मूसला न करना (यानी क़त्ल के बाद उन के हाथ, पैर, नाक कान आदि न काटना) बच्चों की हत्या न करना।

जब अपने दुश्मन मुश्रिकों से मिलना तो पहले उन्हें तीन बातों की तरफ़ बुलाना। वह लोग उन तीनों में से जिस पर भी हामी भर लें तुम भी स्वीकार कर लेना, फिर उन की हत्या अथवा माल न लूटना। (1) उन को इस्लाम की तरफ़ दावत देना, अगर वह मान लें (और इस्लाम ले आयें) तो उन की हत्या मत करना। (2) उन्होंने अपने मुल्क से निकल कर मुहाजिर मुसलमानों के मुल्क में ट्रांस्फ़र हो जाने की दावत देना, और उन से कह देना कि अगर वह बात मान लेंगे तो जो मुहाज़िरों के साथ नियम लागू होगा वही उन के साथ भी लागू होगा। और जो मुहाजिरों को मिलेगा वही उन को भी मिलेगा (यानी हानि-लाभ में मुहाजिरों की तरह बराबर होंगे)

फिर अगर वह अपने मुल्क से निकलना स्वीकार न करें तो उन से कह देना कि उन की हैसिय्यत आ़म दीहाती मुसलमानों की सी होगी। अल्लाह का जो नियम उन पर लागू होता है, वही इन पर भी लागू होगा, लेकिन माले-ग़नीमत से उन्हें कुछ न मिलेगा। हाँ, अगर मुजाहिदों के साथ मिल कर काफ़िरों से जिहाद करेंगे तो उन को भी माले ग़नीमत से हिस्सा मिलेगा।

लेकिन अगर वह इस्लाम लाने से इन्कार करें तो उन से महसूल (टेक्स) देने के लिये कहना। अगर वह इस पर राज़ी हो जाते हैं तो उन से छेड़-छाड़ न करना। लेकिन अगर वह देने से इन्कार करें तो अल्लाह से सहायता माँगना और उन पर चढ़ दौड़ना।

और अगर तुम किसी क़िले को घेरना और वह तुम से, या अल्लाह से, या अल्लाह के सन्देष्टा की पनाह चाहें, तो उन्हें बिल्कुल पनाह न देना। हाँ, दोस्ती की आड़ लेकर अगर पनाह माँगें तो दे देना, इसलिये कि अल्लाह और उस के सन्देष्टा की पनाह टूट जाये इस से कहीं बेहतर है कि दोस्तों की पनाह टूट जाये।

अगर तुम किसी क़िला को घेरे में ले लो और वह यह चाहें कि अल्लाह के हुक्म से तुम उन्हें बाहर निकालो तो उन को अल्लाह के हुक्म से बाहर न निकालना, बल्कि अपने हुक्म से बाहर निकालना, क्योंकि पता नहीं तुम से अल्लाह का हुक्म अदा होता है या नहीं।

फ़ाइदा:– यह है इस्लाम का वह दिशा निर्देश जो उस ने जन्ग से पहले अपनाने का सख़्ती के साथ आदेश दिया हैं। है कोई धर्म, इस्लाम के मुकाबले में जो अपेन धर्म की पुस्तकों से इस प्रकार का नियम और सिद्वान्त पेश कर सके? अल्लाह और अल्लाह के सन्देष्टा के निकट किसी की जान कितनी बहुमूल्य है आप सरलता से अनुमान लगा सकते हैं। संसार का दादा और इस्लाम का कट्टर दुश्मन अमरीका जो जहाँ चाहता है और जब चाहता है बिना सूचना के बमबारी कर के सिंकडों में हज़ारों के प्राण ले लेता है और मिनटों में आबादियों को खंडर में परिवर्तित कर देता है, उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे, आज कुरआन से जिहाद की आयतों को निकाले जाने की मुहिम चला रहा है, पहले अपने गरीबान में मुँह डाल कर झाँके। जिस ने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर (डब्लयू.टी.सी.) को 11 सिंतबर को गिराने का आरोप लगा कर पूरे अफ़गानिस्तान को खंडर बना दिया, जिस ने इराक़ के पास ख़तरनाक हथियारों के होने का हव्वा खड़ा कर के पाँच लाख इराक़ी जनता को मौत के घाट उतार दिया, और इस समय ईरान और शाम उस के निशाना पर हैं। ऐसे उतपाती, उग्रवादी, फ़सादी, आतंकी और हत्यारे को इस्लाम के जन्गी सिद्वान्तों में कीड़े निकालने की कोई आवश्यक्ता नहीं।

हदीस के अन्दर का अर्थ स्पष्ट है इसलिये किसी तश्रीह की आवश्यक्ता नहीं है।

बाब {हाकिमों (गवर्नरों) को अपनी प्रजा के साथ नर्मी का व्यवहार करना चाहिये।}

1112:– अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे और मआ़ज़ बिन जबल को (गवर्नर बना कर) यमन भेजा तो यह निर्देश दिया कि तुम दोनों नर्मी सेकाम लेना, सख़्ती से मत पेश आना, लोगों को खुश रखने की कोशिश करना, उन्हें नफ़रत मत दिलाना, परस्पर मिल–जुल कर काम करना और फूट मत डालना।

फ़ाइदा:– यमन को दो प्रान्त में बाँट दिया गया था। उस के निचले क्षेत्र के अबू मूसा और ऊँचाइ वाले क्षेत्र के मआ़ज़ रज़ि॰ गवर्नर थे। लोगों के साथ नर्मी से पेश आना, सख़्ती न करना आदि से यह लाभ होगा कि लोग आप की तरफ़ झुकेंगे और दीन इस्लाम कुबूल करने में जल्दी करेंगे। यह आदेश केवल हाकिमों और पदाधिकारियों ही के लिये नहीं है,

बल्कि समाज और महल व घर के ज़िम्मेदारों के लिये भी यही हुक्म है। एक व्यक्ति जितनी जल्दी नर्मी और मीठी बातों को स्वीकार करता है, उतनी जल्दी सख़्ती करने से नहीं कुबूल करता।

बाब {क़ासिद (एल्ची) और मुजाहिद के जिहाद पर चले जाने के बाद उन के घरों की निग्रानी करने वालों के बारे में अहकाम।}

1113:- अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़बीला बनी लहयान की तरफ़ एक लश्कर भेजा तो यह आदेश दिया कि (हर घर से) दो मर्दों में से एक लश्कर के साथ निकले, फिर घर पर रहने वालों से कहा: जो घर-बार और धन-माल की देख-भाल और निग्रानी करने के लिये रुक गया है उस को भी मुजाहिद का आधा सवाब मिलेगा।

फ़ाइदा:- घर की देखभाल करने वाले को इसलिये सवाब मिलेगा कि जिस प्रकार जिहाद अनिवार्य है इसी प्रकार घर की निग्रानी और उस मुजाहिद के बाल-बच्चों की देखभाल और उन की आवश्यक्ताएँ भी पूरी करना आवश्यक काम है।

बाब {जिहाद में कौन शरीक हो और कौन न हो, इस के लिये आयु सीमा तै होनी चाहिये।}

1114:- इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने (जन्ग में शामिल होने केलिये) उहुद की जन्ग के मौक़ा पर हाजिर हुआ उस समय मेरी आयु 14 वर्ष की थी, लेकिन आप ने मुझे अनुमति नहीं दी। फिर दूसरी बार ख़न्दक़ की जन्ग के मौक़ा पर हाज़िर हुआ उस समय मैं 15 वर्ष का था तो आप ने (जन्ग में शामिल होने की) अनुमति दे दी।,

इमाम नाफ़े ने बयान किया कि जिन दिनों उमर बिन अ़ब्दुल् अ़ज़ीज़ ख़लीफ़ा थे यह हदीस मैं ने उन्हें बयान की तो कहने लगे: बालिग़ और नाबालिग़ के दर्मियान यही आयु सीमा है। फिर ख़लीफ़ा ने अपने पदअधिकारियों (हाकिमों) को यह आदेश लिख भेजा कि जिस की आयु 15 वर्ष की हो उस के लिये (माहाना) वज़ीफ़ा जारी कर दें और जो 15 वर्ष से कम आयु का है उसे बाल-बच्चों में शुमार करें।

फ़ाइदा:- इस हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बालिग़ और नाबालिग़ की आयु सीमा सुनिश्चित कर दी है। मालूम हुआ कि 15 वर्ष का बालक बालिग़ माना जायेगा और उस पर पुरुष के नियम लागू होंगे। उस पर नमाज़ रोज़ा फ़र्ज़ होगा, जिहाद में शामिल होगा, माले ग़नीमत में हिस्सा मिलेगा आदि। इमाम शाफ़अ़ी और दीगर इमामों का फ़तवा है कि अर्गचे उस को एहतलाम न होता हो फिर भी बालिगों में शुमार होगा।

आज के समय में तो बालक और जल्दी बालिग़ हो जाते हैं, लेकिन आवश्यक्ता पड़ने पर 15 वर्ष ही को सीमा माना जायेगा, न कि बालक से एहतलाम होने केबारे में पूछा जायेगा। हिन्दुस्तान के नियम में लड़के के लिये 20 वर्ष और लड़की के लिये 18

वर्ष की सीमा बनाई बयी है जो किसी प्रकार दुरुस्त नहीं है।

बाब {दुश्मन के मुल्क में कुरआन लेकर यात्रा न की जाये।}

1115:- इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुरआन पाक को साथ लेकर दुश्मन के मुल्क में यात्रा करने से मना फ़रमाया है।

फ़ाइदाः- इसलिये कि संभव है दुश्मन छीन कर उस का अपमान करने लगे, जला डाले, फाड़ कर फेंक दे, अथवा गन्दगी में डाल दे। लेकिन अगर यी भय नहीं है तो निःसंदेह ले जा सकता है। इस के अतिरिक्त दुश्मन से पत्र व्यवहार में कुरआन पाक की आयतें भी लिख कर तब्लीग़ कर सकता है, क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शासक हिरक़्ल के पत्र में कुरआन पाक की आयत को लिख कर भेजा था (बुख़ारी-7, किताबुल ईमान, नीचे की हदीस 1122)

बाब {सूखा काल के समय में किस प्रकार यात्रा की जाये और रात किस स्थान पर बिताई जाये?}

1116:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब तुम हरियाली के मौसम में सफ़र करो तो अपने सवारी के ऊँटों को भूमि से उन का हिस्सा लेने दो (यानी उन्हें चराते-पिलाते यात्रा करो) और जब सूखा काल के समयकाल में यात्रा करो तो यात्रा जल्दी करने की कोशिश करो (ताकि सूखा की वजह से राह में परेशानी न हो) और जब रात को कहीं डेरा डालो तो राह से हट कर डालो, क्योंकि रात में रास्ते कीड़े-मकोड़ों का ठिकाना होते हैं।

फ़ाइदाः- सूखा काल के दिनों में यात्रा सुस्ती से करने में रास्ता में यात्री और जानवर दोनों के लिये खाना-पानी की परेशानी होगी, इस प्रकार जान जाने की शंका है। इसलिये तेज़ी से तै करना चाहिये। रात को रास्ता में नहीं ठहरना चाहिये, क्योंकि कीड़े-मकोड़े बीच राह में चिकनी जगह पर आकर ठहरते हैं। रात में साँप अक्सर बीच राह ही में बैठे हुये दिखाई देते हैं।

बाब {सफ़र अ़ज़ाब का एक टुक्ड़ा है।}

1117:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सफ़र (यात्रा) अ़ज़ाब का एक टुक्ड़ा है जो तुम्हें खाने-पीने और सोने (आराम करने) से रोक देता है। इसलिये सफ़र में अपना काम पूरा कर के तुरन्त घर लौट जाना चाहिये।

फ़ाइदाः- सफ़र में परेशानी ही परेशानी होती हैं। न समय पर खाना-पीना मिलता है, न आराम करने का समय। सुब्ह-कहीं होती है और शाम कहीं। इसलिये अधिक दिन सफ़र में नहीं लगाना चाहिये।

बाब {सफ़र से वापसी में रात के समय घर न पहुँचे (बल्कि जब दिन रहे तभी आ जाये।}

1118:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने घर वालों की चोरी, हेरा-फेरी और लार्पवाही पकड़ने की निय्यत से रात में घर में आने से मना फ़रमाया है।

1119:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब सफ़र से वापस होते तो अपने घर में रात को न आते, बल्कि सुब्ह को या शाम को (यानी दिन ढले) आते।

फ़ाइदा:– दिन में आने का हुक्म देने में यह हिक्मत है कि पत्नी नहा धो ले और सर में चोटी-कंघी कर के तय्यारी कर ले, बालों की सफ़ाई कर ले, ताकि संभोग में कराहत न हो और पति-पत्नी के संबन्ध न बिगड़ें।

आजकल दूर संचार की व्यवस्था है, टेलीफ़ोन और मोबाइल हैं, सूचना देने के बहुत से साधन है, इसलिये अगर पहले से घर सूचना दे दी है तो किसी भी समय दाख़िल हो, इस में कोई हरज नहीं। शरीअ़त इस्लाम ने परस्पर प्यार-महोब्बत को बढ़ावा देने, मेल-मिलाप और भाईचारा को पर्वान चढ़ाने के लिये, घर की व्यवस्था को सुधारने के लिये कैसे-कैसे नियम और सिद्वान्त बताए हैं, कुर्बान जाइये इस मज़हब पर। यहछोटी-छोटी बातें भी परस्पर मनमोटाव और बिगाड़ का कारण बनती हैं। जाबिर रज़ि॰ ही से रिवायत है कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के समय जिहाद में शामिल थे, जब मदीना वापस हुये और अपने घरों को जाने लगे तो आप ने फ़रमाया: (मदीने के बाहर ही कुछ समय के लिये) ठहर जाओ ताकि जिन महिलाओं ने चोटी-कंघी नहीं की है वह अपने बाल संवारलें और जिन का पति गैर हाज़िर था वह नीचे के बालों की सफ़ाई कर ले। (बुख़ारी, मुस्लिम)

बाब {लड़ाई आरंभ करने और दुश्मन पर आक्रमण करने से पहले उन के सामने इस्लाम की दावत पेश करो।}

1120:– इब्ने औ़न ने बयान किया कि मैं ने इमाम नाफ़े को पत्र लिख कर यह मस्अला पूछा कि क्या जन्ग करने से पहले उन्हें दीन इस्लाम की दावत देना अनिवार्य है? उन्होंने पत्र के उत्तर में लिखा कि यह आदेश इस्लाम के आरंभ में था। चुनान्चे जब आपने बनी मुस्तलिक़ पर धावा बोला तो वह लोग उस समय ग़ाफ़िल थे और उन के जानवर उस समय पानी पी रहे थे। चुनान्चे जिन्होंने जन्ग की उन्हें क़त्ल कर दिया और बाक़ी लोगों को बन्दी बना लिया, उसी मौक़े पर हारिस की पुत्री जुवैरिया को भी बन्दी बनाया गया था (जो बाद में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी बनीं)

इमाम नाफ़े ने कहा कि यह हदीस मुझ से अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ ने बयान की जो इस लश्कर में शामिल थे।

फ़ाइदा:– अगर दुश्मन को पहले से इस्लाम की दावत नहीं पहुँची है तब तो जन्ग

से पहले उन्हें दावत देना अनिवार्य है। और अगर पहुँची है तो दोबारा दावत देना केवल मुस्तहब है (मोग़नी-13/29) लेकिन जैसा कि इस बाब की प्रथम हदीस न॰ 1111 से स्पष्ट है कि पहले से दावत पहुँची हो या न पहुँची हो, दावत देनी चाहिये। लेकिन कभी ऐसा मौक़ा आ जाये कि दोबारा दावत देने से पूर्व ही आक्रमण हो जाये तो भी जाइज़ है, जैसा कि इस हदीस से स्पष्ट है।

क़बीला बनी मस्तलिक़ (जिस का दूसरा नाम मुरैसीअ़ भी है) पर सन 5 हि॰ में आक्रमण किया गया था। साबित बिन क़ैस ने जुवैरिया को बन्दी बनाया था, फिर बाद में उन्हें मुक़ातब बना दिया। यह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास मुकातबत की क़ीमत माँगने आयीं तो आप ने उन्हें क़ीमत देकर आज़ाद करा लिया और फिर उन से निकाह कर लिया। सहाबा को जब सूचना मिली तो उन्होंने यह कह कर समस्त मुस्तलिक़ के बन्दियों को स्वतन्त्र कर दिया कि यह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सुसराली रिश्तेदार बन गये हैं। बाद में इन के पिता हारिस, भाई अ़ब्दुल्लाह और बहन अ़म्रा सभी इस्लाम में दाख़िल हो गये। इन का प्रथम निकाह मुसाफ़ेह बिन सफ़वान से हुआ था। सन 56 हि॰ में 70 वर्ष की आयु में देहान्त किया।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वह पत्र जो बादशाहों को लिखे गये थे जिन में उन को दीन इस्लाम की दावत दी गयी थी।}

1121:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने किसरा, क़ैसर, नज्जाशी और दूसरे शासकों को पत्र लिखा था जिस में उन्हें इस्लाम की दावत दी थी। और यह नज्जाशी वह नहीं है जिस की जनाज़ा की नमाज़ आप ने पढ़ी थी।

फ़ाइदा:- इमाम नौवी ने लिखा है कि उस समय "किसरा" ईरान के बादशाहों का ख़िताब (लक़ब) होता था। इसी प्रकार रुम के बादशाहों का "क़ैसर", हब्श के बादशाहों का "नज्जाशी", तुर्क बादशाहों का "ख़ाक़ान", मिस्र के बादशाहों का फ़िरऔ़न", और रुस के बादशाहों का "ज़ार", ख़िताब होता था। अस्ली नाम कुछ और होता था।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जिस नज्जाशी पर जनाज़ा की नमाज़ पढ़ी थी उस का नाम अस्हम् बिन अब्जज़ था, इस के पास उमय्या ज़मुरी रज़ि॰ पत्र लेकर गये थे। यह बादशाह अ़ीसाई धर्म का मामने वाला था। रजब सन 9 हि॰ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इन पर ग़ाइबाना नमाज़ जनाज़ा पढ़ी थी (नजामे नबवी, पृष्ठ 297) अनस बिन मालिक ने जब यह हदीस रावी क़तादा को सुनायी थी उस समय हब्श का बादशाह कोई और रहा होगा।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के उस पत्र का बयान जिसे हिरक़्ल को इस्लाम लाने के लिये लिखा था।}

1122:— इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अबू सुफ़यान रज़ि॰ ने स्वँय मुझ से मुख़ातब होकर इस घटना को बयान किया कि (हुदैबिय्या की सुलह की मुद्दत के दर्मियान) जो मेरे और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दर्मियान ठहरी थी मैं मुल्क शाम की यात्रा पर गया। इसी दर्मियान नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का पत्र भी रुम के बादशाह हेरक़्ल को पहुँच गया। वह पत्र दह्‌या कल्बी लेकर आये थे। उन्होंने वह पत्र बुस्रा के वज़ीर को दिया और उस ने बादशाह हेरक़्ल को पहुँचा दिया। (पत्र को पढ़ कर) हेरक़्ल ने पूछाः यह जिस ने अपने को सन्देष्टा होने का दावा किया है इस के गोत्र का कोई व्यक्ति है? (जिस से उस के बारे में मालूमात हासिल की जा सके) लोगों ने बताया कि हाँ। अबू सुफ़यान रज़ि॰ ने हदीस बयान करते हुये कहा कि चुनान्चे मुझे कुरैश की जमाअ़त के साथ बुलाया गया। हम लोग जब उस के पास पहुँचे तो अपने सामने बैठा कर पूछाः आप लोगों में किस का उस के साथ निकट संबन्ध है? अबू सुफ़यान ने कहाः मेरा। (स्पष्ट है कि निकट संबन्धी ही अधिक जानकर हो सकता है) चुनान्चे उस ने मुझे अपने आगे कर के मेरे दूसरे साथियों को मेरे पीछे बैठा दिया, फिर उस ने अपने अनुवादक को बुला कर कहाः उन लोगों से कहो कि मैं इस व्यक्ति (अर्थात अबू सुफ़यान) से उस नबी के बारे में पूछूँगा, अगर यह ग़लत बयानी से काम लेगा तो तुम लोग (तुरन्त) झुठला देना। अबू सुफ़यान ने कहाः अल्लाह की क़सम! अगर मुझे इस बात का डर न होता कि यह लोग झुठला देंगे, तो झूठ बोल जाता (क्योंकि हमारी उन की पुरानी दुश्मनी थी ही)

फिर हेरक़्ल ने अपने अनुवादक से कहाः इस से पूछो कि (जिस ने नबुव्वत का दावा किया है) उस का हसब–नसब कैसा है? अबू सुफ़यान ने बयान किया कि मैं ने कहाः उन का हसब–नसब बहुत अच्छा है। हेरक़्ल ने फिर पूछाः उस के बाप–दादों में कोई नबी हुआ है या नहीं? मैं ने उत्तर दियाः नहीं। उस ने पूछाः उस व्यक्ति को नबुव्वत का दावा करने से पूर्व कभी झूठ बोलते सुना है? मैं ने उत्तर दियाः नहीं। उस ने पूछाः उस के पीछे चलने वाले बड़े और मालदार लोग हैं या ग़रीब और दरिद्र लोग? मैं ने उत्तर दियाः ग़रीब लोग। उस ने पूछाः उन की संख्या घट रही है, या बढ़ रही है? मैं ने उत्तर दिया कि बढ़ रही है। उस ने फिर पूछाः क्या उस के मानने वालों में कुछ ऐसे भी हैं जो उस के दीन में दाख़िल होते हैं फिर उसे बुरा जान कर उस से फिर जाते हैं? मैं ने उत्तर दियाः नहीं। उस ने पूछाः तुम्हारी उन के दर्मियान लड़ाई कैसी रहती है? (यानी पल्ला किस का भारी रहता है?) मैं ने उत्तर दियाः मेरे और उस के दर्मियान लड़ाई डोल के समान है, कभी हमारा पल्ला भारी होता है और कभी उन का। उस ने पूछाः क्या वह अनुबन्ध तोड़ देते हैं? मैं ने उत्तर दियाः नहीं। लेकिन अभी हमारे और उन के दर्मियान एक समय तक के लिये मुआ़हिदा हुआ है, देखना है इस में वह क्या करते हैं। (यानी भविष्य में इसे तोड़ने की संभावना है) अबू सुफ़यान ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मुझे

इस के अतिरिक्त और कहीं भी कोई बात घुसेड़ने का मौक़ा नहीं मिला। हेरक़्ल ने पूछाः उन के गोत्र में किसी ने नबुव्वत का दावा किया है? मैं ने उत्तर दियाः नहीं।

(मेरे तमाम प्रश्नों के उत्तर सुन कर) हेरक़्ल ने अपने अनुवादक से कहा कि उस को समझाओ कि मैं ने तुम से उस के हसब–नसब के बारे में पूछा तो तुम ने बताया कि उस का हसब–नसब बड़ा ऊँचा है। तो यह बात जान लो कि सन्देष्टा हमेशा ऊँचे खान्दान में पैदा होते हैं। फिर मैं ने तुम से (दूसरा प्रश्न) पूछा था कि क्या उन के बाप–दादों में से कोई बादशाह भी हुआ है, तो तुम ने उत्तर दिया कि नहीं। यह प्रश्न मैं ने इसलिये किया था कि अगर उन के बाप–दादों में हुआ होता तो हम समझते कि उन की तरह बादशाहत चाहते हैं। फिर मैं ने तुम से जो यह (तीसरा प्रश्न) पूछा था कि क्या उन के पीछे चलने वाले धनवान लोग हैं या ग़रीब? तो तुम ने उत्तर दिया था कि ग़रीब लोग हैं। तो यह बात मालूम रहे कि सन्देष्टा की प्रथम पैरवी करने वाले ग़रीब लोग ही होते हैं। (क्योंकि ग़रीब किसी की पैरवी करने में शरमाते नहीं) फिर हम ने तुम से (चौथा प्रश्न) जो यह पूछा था कि उस के नबुव्वत का दावा करने से पहले भी उसे झूठा पाया है? तो तुम ने उत्तर दिया कि नहीं। तो मालूम रहे कि जब वह लोगों के लिये झूठ नहीं बोलता है तो फिर अल्लाह के लिये क्यों झूठ बोलेगा (और नबुव्वत का झूठा दावा क्यों करेगा) और मैं ने तुम से (पाचवाँ प्रश्न) जो यह पूछा था कि क्या उस के दीन में दाख़िल होने के बाद उस को बुरा जान कर कोई उस से निकल भी जाता है? तो तुम ने उत्तर दिया था कि नहीं। तो मालूम हो कि ईमान का यही हाल होता है कि जब वह किसी के दिल में घर कर लेता है तो फिर उस की खुशी का ठिकाना नहीं रहता है (छोड़ना तो दूर की बात) और मैं ने जो तुम से (छठा प्रश्न) यह पूछा था कि उन के मानने वालों की संख्या कम हो रही है या बढ़ रही है? तो तुम ने उत्तर दिया कि बराबर बढ़ रही है। तो मालूम हुआ कि ईमान का यही हाल होता है। फिर मैं ने तुम से (सातवाँ प्रश्न) जो यह पूछा था कि क्या तुम्हारे उन के दर्मियान लड़ाई होती रहती है? तो तुम ने उत्तर दिया कि हाँ, हम लड़ते हैं, और लड़ाई डोल की तरह होती है, कभी उन का पल्ला भारी होता है और कभी हमारा। तो मालूम हो कि सन्देष्टाओं की इसी प्रकार आज़माइश होती है, लेकिन अन्त में वही विजयी होते हैं। और मैंने तुम से (आठवाँ प्रश्न) जो यह पूछा था कि वह धोखा भी देते हैं? तो तुम ने कहा था कि नहीं। तो सन्देष्टाओं का यही हाल होता है कि वह धोखा–धड़ी नहीं करते हैं। और मैं ने जो तुम से (नौंवा प्रश्न) यह पूछा था कि उन से पूर्व भी किसी ने नबुव्वत का दावा किया है? तो तुम ने उत्तर दिया था कि नहीं। तो अगर उन में से किसी ने पहले दावा किया होता तो यह कहा जा सकता था कि इस ने भी उन्हीं की देखा–देखी दावा किया है।

फिर हेरक़्ल ने पूछाः वह तुम्हें किन कार्यों के करने का निर्देश देते हैं? मैं ने कहाः वह नमाज़ पढ़ने, ज़कात देने, संबन्धियों के साथ अच्छा व्यवहार करने और बुरी बातों से बचने का हुक्म देते हैं। यह सुन कर बादशाह ने कहाः अगर वह ऐसा ही कहते हैं जैसा

तुम ने बयान दिया है तो इस में दो राय नहीं कि वह वास्तव में सन्देष्टा हैं। और मुझे इस बात की जानकारी (पहले ही से) थी कि इस प्रकार का हुक्म देने वाला सन्देष्टा पैदा होगा, लेकिन यह नहीं मालूम था कि वह तुम लोगों में से होगा। और अगर मैं यह जानता कि उस तक पहुँच सकूँगा तो मैं उस से मुलाक़ात करना पसन्द करता, और उन के पास जा कर उन के पाँव धोता (और यह भी जान लो कि) उन की हुकूमत यहाँ तक पहुँचेगी जहाँ यह मेरे दोनों पैर हैं (यानी मुल्क शाम तक) इस के बाद उस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का पत्र मँगवा कर पढ़ाया। उस में यह लिखा था।

"मैं उस अल्लाह के नाम से (इस पत्र का) आरंभ करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है। (यह पत्र) अल्लाह के सन्देष्टा मुहम्मद की तरफ़ से रुम के बादशाह हेरक़्ल की तरफ़ (भेजा जा रहा है) जो हिदायत की पैरवी करे उस पर सलामती हो। इस भूमिका के बाद। मैं तुम्हें इस्लाम का यह सन्देश पहुँचा रहा हूँ कि इस्लाम को स्वीकार कर लो तो सलामती के साथ रहोगे (और तुम्हारा सब कुछ सुरक्षित रहेगा) तुम इस्लाम ले आओ तो अल्लाह पाक तुम्हें दोहरा अज्र व सवाब देगा (एक तो अपने दीन पर ईमान लाने का, दूसरे दीन इस्लाम कुबूल करने का) लेकिन अगर तुम अड़े रहोगे तो तुम्हारे ऊपर अ़रीसीन (के ईमान न लाने) का दन्ड होगा।

ऐ किताब वालो (यहूद-नसारा) (इधर-उधर की बातें छोड़ कर) एक बात की तरफ़ आ जाओ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान बराबर है (वह यह है) कि हम और तुम अल्लाह के अतिरिक्त और किसी की पूजा न करें और न ही उस के साथ किसी को शरीक ठहराएँ, और न ही हम में का कोई अल्लाह के अतिरिक्त किसी को अपना पालनहार समझे। अगर (यह लोग) मुँह फेरें तो कह दो कि तुम लोग इस बात के गवाह रहो कि हम तो अल्लाह के ताबेदार हैं। (सूरः आले अ़िम्रान, आयत 64, पारः3)

जब बादशाह हेरक़्ल इस पत्र को पढ़ चुको तो लोगों की आवाज़ें ऊँची हो गयीं (शौर मचाने लगे) और आपस में बक-बक करने लगे। इसी बीच हम लोगों को बाहर कर दिया गया। अबू सुफ़यान ने बयान किया कि मैं ने अपने साथियों से कहा कि अबू कब्शा के बेटे (मुहम्मद) का दर्जा इतना बुलन्द हो गया है कि उन से बनी अस्फ़र का बादशाह (हेरक़्ल) तक डरता है। अबू सुफ़यान रज़ि॰ ने बयान किया कि उसी दिन से ही मुझे पूरा विश्वास हो गया था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ही कामियाब और ग़ालिब होंगे, फिर अल्लाह पाक ने मुझे भी इस्लाम लाने की तौफ़ीक़ दे दी।

फ़ाइदाः- हदीस से संबन्धित चन्द बातों की तश्रीह आवश्यक है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने जिन दूतों के हाथ पत्र भेजवाया, वह वहाँ की भाषा जानते थे। हेरक़्ल के पास दह्या कल्बी रज़ि॰ पत्र ले गये थे। आप के पास चाँदी की मोहर थी जिस में तीन सतरें थीं। नीचे की सतर में "मुहम्मद" और बीच की सतर में "रसूल" और ऊपर की सतर में "अल्लाह" लिखा था। पत्र में वही लगा कर भेजते थे। यह मोहर जो अगूँठी

में थी। उस्मान ग़नी रज़ि॰ के समय तक उन के पास थी। एक दिन अरीस नामक कुँए में गिर गयी, बड़ी तलाश के बावजूद न मिली। इस प्रकार कुँए में अल्लाह जाने कहाँ छुप गयी।

अ़ल्लामा क़स्तलानी ने लिखा है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का पत्र बादशाह के ख़ान्दान में ग्यारहवीं शताब्दी हिजरी तक सुरक्षित रहा। उसे ख़ैर-बर्कत के लिये रखा हुआ था। आजकल केलन्डर आदि में उस का फ़ोटो लोग छाप रहे हैं जिसे किसी म्यूज़ियम से प्राप्त किया गया है। 'ईलिया' शब्द बैतुल् मुक़द्दस के लिये बोला जाता है। 'अबू कब्शा' एक व्यक्ति का नाम था जो एक विशेष नक्षत्र "शारा" की पूजा करता था। अबू सुफ़यान ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को "इब्ने अबू कब्शा" (अबू कब्शा का बेटा) ज़लील समझ कर कहा था। अबू सुफ़यान ने हुदैबिया के स्थान पर दस वर्ष के लिये मुसलमानों से अनुबन्ध किया था जो "सुलह हुदैबिया" के नाम से प्रसिद्व है। यह फ़त्ह मक्का के मौक़ा पर ईमान लाये थे और इन की पत्नी हिन्द भी। बुख़ारी की रिवायत में है कि जब मज्लिस में लोगों ने हंगामा कर दिया तो बादशाह ने उन को शान्त करने के लिये कहा कि मैं ने मुसलमानों की परीक्षा लेने के लिये उस सन्देष्टा की प्रशंसा की थीं। बादशाह अन्त तक ईमान नहीं लाया (बुख़ारी-7, किताबुल ईमान)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का दावत देना और मुनाफ़िक़ों के सताने पर सब्र करने का बयान।}

1123:- उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक गधे पर सवार हुये जिस पर पालान बँधा हुआ था और उस के ऊपर फ़िदक की बुनी हुयी मख़मली चादर बिछी हुयी थी। उसामा बिन ज़ैद को अपने पीछे बैठा लिया। आप उस समय बनी हारिस के मोहल्ला में सअ़द बिन उबादा का हाल-चाल मालूम करने जा रहे थे (उस समय वह बीमार थे) यह घटना बद्र की लड़ाई से पूर्व की है। जाते हुये रास्ता में एक सभा के पास से गुज़रे जिस में अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि (मुनाफ़िक़) बैठा हुआ था। साथ ही में कुछ मुश्रिक, यहूदी और मुसलमान भी उपस्थित थे। उसी सभा में अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ भी मौजूद थे। जब गधे के चलने से धूल उड़ कर मज्लिस में बैठे लोगों पर पड़ने लगी (यानी सवारी उन के निकट पहुँची) तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि ने अपनी नाक को चादर से ढकते हुये बोला! हमारे ऊपर धूल न उड़ाओ। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मज्लिस वालों को सलाम किया और गधे से उतर गये और उन को क़ुरआन की आयतें पढ़ कर सुनाने और अल्लाह की तरफ़ दावत देने लगे। अ़ब्दुल्लाह ने कहा: ओ जनाब! अर्गचे आप की बातें बड़ी अच्छी हैं, फिर भी हमारी सभाओं में इन्हें सुनाने की आवश्यक्ता नहीं है, आप अपने घर जाइये और वहाँ जो आप के पास आये उसे सुनायें।

यह सुन कर अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ बोले! ऐ अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु

अ़लैहि वसल्लम! आप हमारी सभाओं में प्रतिदिन पधारें, हमें आप की बातें बड़ी अच्छी लगती हैं। इस बात को लेकर मुसलमानों, मुश्रिकों और यहूदियों के दर्मियान तू तू-मैं-मैं होने लगीं और लड़ने-झगड़ने (हाथापाई) की नौबत आ गयी। यह स्थिति देख कर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बीच बचाव किया और अन्ततः सब शान्त हो गये। फिर आप गधे पर सवार हो कर सअ़द बिन उबादा के पास गये और उन से फ़रमायाः ऐ सअ़द! क्या तुम ने अबू हुबाब की बातें नहीं सुनी? उस ने इस-इस प्रकार की बातें की हैं। अबू हुबाब से मुराद अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि थी। यह बातें सुन कर सअ़द बिन उबादा ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! आप उसे माफ़ फ़रमा दीजिये, उस अल्लाह की क़सम! जिस ने आप पर कुरआन पाक को नाज़िल किया है, अल्लाह पाक ने जो कुछ आप पर उतारा है वह सत्य है (अस्ल मामला यह है कि) इस बस्ती के लोगों ने (आप के आने से पहले) यह तै किया था कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि को अपना सर्दार बनायेंगे और उसे सर्दारी का ताज पहनायेंगे। लेकिन अल्लाह ने इस बात को पसन्द न किया तो उस को आप का आना बहुत बुरा लगा, इसी कारण उस ने इस प्रकार का ओल-फ़ोल बका। चुनान्चे आप ने उस की गलती माफ़ फ़रमा दी।

फ़ाइदाः— अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि क़बीला बनी ख़ज़रज़ का सर्दार था। मदीना के लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के आने से पहले उसे अपना बादशाह बनाने के मूड में थे। लोगों ने आप को मश्वरा दिया था कि उस के पास जाने से उसे प्रसन्नता होगी और बहुत से लोग ईमान भी ले आयेंगे, इसीलिये आप तशरीफ़ ले गये थे। (बुख़ारी-2691) इमाम बुख़ारी रह० ने इस हदीस को बयान कर-कर यह साबित किया है कि सभा में काफ़िरों के साथ मुसलमान भी हों तो मुसलमानों की निय्यत कर के सलाम किया जाये। काफ़िरों को सलाम करना दुरुस्त नहीं है। आजकल आफ़िसों में अपने से बड़े काफ़िर पदअधिकारियों को "सलाम" करना, "नमश्कार" कहना, "आदाब" अर्ज़ है, कहना आदि इसे कहने वाला मुसलमान यह सोच कर कहे कि हम मजबूरी में कह रहे हैं। (हदीस न० 6254)

बाब {दग़ाबाज़ी और धोखाधड़ी हराम है।}

1124:— अबू सअ़ीद रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन हर धोखेबाज़ के पास एक झन्डा होगा, जो जितना बड़ा धोखेबाज़ होगा उस के सामने उतना ही बुलन्द होगा। और सब से बड़ा दग़ाबाज़ और धोखेबाज़ वह व्यक्ति है जो लोगों पर हाकिम हो कर भी धोखा-धड़ी करे।

फ़ाइदाः— धोखाधड़ी और दग़ाबाज़ी व अनुबन्ध तोड़ना बहुत बड़ा पाप है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः चार आदतें (आचरण) किसी के अन्दर पाई जायें तो वह पक्का मुनाफ़िक़ है (1) बात करे तो झूठ बोले (2) वादा करने तो उस के ख़िलाफ़ करे (3) अनुबन्ध करे तो पूरा न करे (4) लड़ाई करे तो गाली दे (बुख़ारी-3178) एक

मुसलमान के लिये धोखाधड़ी हराम है, चाहे वह काफ़िर के साथ ही क्यों न करे। और अगर कोई हाकिम और पदाधिकारी करेतो वह महापाप है। क़ियामत के दिन एक झन्डा पर लिखा होगा "महाधोखे बाज़" और वह झन्डा उस के साथ-साथ चलता रहेगा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इसे क़ियामत की छः निशानियों में बताया है (बुख़ारी-3176)

बाब {जो वादा करे उसे निभाए भी (वादा ख़िलाफ़ी कदापि न करे)}

1125:- हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं बद्र की लड़ाई में इस कारण शरीक न हो सका कि मैं अपने पिता जी के पास से (बद्र के लिये) निकला तो रास्ता में मक्का के काफ़िरों ने हम दोनों को पकड़ लिया और कहने लगे कि तुम (जन्ग में शामिल होने के लिये) मुहम्मद के पास जाना चाहते हो? हम दोनों ने उत्तर दिया कि नहीं, हम उन के पास (बद्र कि स्थान पर) नहीं जाना चाहते हैं, केवल मदीना जाना चाहते हैं। इस पर उन्होंने हम से अल्लाह के नाम पर वादा लिया कि हम मदीना ही जायेंगे और मुहम्मद के लश्कर में शामिल होकर जन्ग नहीं करेंगे। लेकिन फिर हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास पहुँच गये और आप से पूरी घटना सुनाई तो फ़रमायाः (जब तुम ने अल्लाह के नाम पर वादा किया है तो) मदीना लौट जाओ क्योंकि उन से वादा किया है, और हम लोग जन्ग में उन के ख़िलाफ़ अल्लाह से सहायता माँगेंगे।

फ़ाइदा:- वादा करने के पश्चात् उस के अ़नुसार पूरा करना शरीअ़त में इस की कितनी अहमिय्यत है आप सरलता से इस घटना से अनुमान लगा सकते हैं। जन्ग बद्र में मुजाहिदों की सख़्त ज़रुरत है, दीन इस्लाम के बाक़ी रहने या दुनिया से मिट जाने का मरहला दरपेश है, लेकिन फिर भी आप ने उन्हें जन्ग के मैदान से वापस भेज दिया। अल्लाहु अक्बर! हम मुसलमान रोज़ाना ही वादा के ख़िलाफ़ करते हैं। इक़रार और अनुबन्ध की धज्जियाँ उड़ाते हैं, इस में हमारे लिये बड़ी नसीहत है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक हदीस में फ़रमायाः मुनाफ़िक़ की चार निशानियाँ हैं उन में से एक यह है कि वादा करे तो वादा ख़िलाफ़ी करे (बुख़ारी-3178, 3276) ऐसा व्यक्ति दीन इस्लाम से इस हदीस की रोशनी में पक्का मुनाफ़िक़ है और मुनाफ़िक़ का ठिकाना जहन्नम का सब से निचला हिस्सा है (सूरः निसा-145) वादा पूरा करना अति आवश्यक है चाहे जितना हानि उठाना और कठिनाइयों का सामना करना पड़े। एक हदीस में है कि किसी ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि यहीं ठहरे रहें मैं अभी आप को सामान ला कर देता हूँ आप ने वादा कर लिया तो तीन दिन तक वहीं रुके रहे। बाद में उसे याद आया और आ कर देखा तो आप उसी स्थान पर खड़े हैं। इसे कहते हैं वादा को पूरा करना।

बाब {दुश्मन के साथ दो-दो हाथ करने की इच्छा नहीं करनी चाहिये, लेकिन अगर सामना हो जायेतो डट कर मुक़ाबला करना चाहिये।}

1126:– अ़म्र बिन उबैदुल्लाह के स्वतन्त्र किये हुये गुलाम सालिम अबू नज़्र से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब अ़म्र बिन उबैदुल्लाह "हरुरा" स्थान के रहने वाले ख़ारिजी लोगों से जिहाद करने के लिये निकले, तो उन के पास अ़ब्दुल्लाह बिन औफ़ा ने जो क़बीला बनी अस्लम के थे एक पत्र लिखा (चूँकि अबू नज़्र अ़म्र के मीर मुन्शी थे इसीलिये उन्होंने पढ़ा) उस में लिखा हुआ था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक मौक़ा पर दुश्मनों से लड़ाई लड़ने का इन्तिज़ार किया (लेकिन दुश्मन नहीं आये) यहाँ तक कि सूरज ढल गया तो आप ने लोगों के दर्मियान ख़ुत्बा देते हुये फ़रमायाः ऐ लोगों! दुश्मन से दो-दो हाथ करने की इच्छा न प्रकट करो, बल्कि अल्लाह पाक से जन्ग की नौबत न आने की दुआ़ करो। लेकिन जब दुश्मन से सामना हो ही जाये तो डट कर मुक़ाबला करो और जान लो कि जन्नत तल्वार के छाँव तले है। फिर आप (दोबारा) खड़े हुये और यह दुआ़ फ़रमायी

> **अल्लाहुम्म मुन्ज़ि-लल् किताबि वमुज्रि-यस्सहाबि वहाज़ि-मल् अह्ज़ाबि इह्ज़िम्हुम् वन्सुर्ना अ़लैहिम्**
> (ऐ अल्लाह! कुरआन पाक के उतारने वाले, बादलों को उड़ाने वाले, दुश्मनों को भगा देने वाले! हमारे दुश्मनों को भी भगा दे और उनके मुक़ाबला में मेरी सहायता फ़रमा)

बाब {दुश्मन के लिये बद्दुआ़ करना दुरुस्त है।}

1127:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उहुद की लड़ाई के मौक़ा पर फ़रमाया करते थेः "ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो ज़मीन पर कोई तेरी पूजा करने वाला नहीं रहेगा।"

फ़ाइदाः– बुख़ारी शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़बीला बनी आ़मिर पर एक महीना तक रुकूअ़ के बाद वित्र की नमाज़ में बद्दुआ़ फ़रमाई, क्योंकि उन्होंने आप के सत्तर क़ारियों को शहीद कर दिया था (1002-अनस बिन मालिक) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक महीना तक कुनूत की दुआ़ पढ़ी और उस में क़बीला र-अ़ल और ज़कवान पर बद्दुआ़ फ़रमायी (1003-अनस बिन मालिक) जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर मुश्रिकों ने सज्दा की हालत में ऊँट की ओझ डाल दी तो आप ने यह बद्दुआ़ फ़रमायी थीः "ऐ अल्लाह कुरैश पर अ़ज़ाब नाज़िल कर।ए अल्लाह! अ़म्र बिन हाशिम, उत्बा बिन रबीअ़ा, शैबा बिन रबीआ़, वलीद बिन उत्बा, उमय्या बिन ख़ल्फ़, उक़्बा बिन मुअ़ीत और अ़म्मारा बिन वलीद को हलाक कर दे।" (बुख़ारी-520-अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰) मालूम हुआ कि अगर पानी सर से ऊपर हो जाये तो दुश्मन के लिये बद्दुआ़ जाइज़ है।

बाब {जन्ग और लड़ाई, धोखा और हीला (जन्गी चाल) का नाम है।}

1128:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः लड़ाई धोखा और हीला का नाम है।

फ़ाइदाः– हदीस का यह अर्थ है कि जन्ग में हीला और चालबाज़ी चली जाती है, जिस से दुश्मन धोखा खा जाता है, तो ऐसा धोखा और मक्र व फ़रेब (या जन्गी चाल) चलना जिस से दुश्मन की हार हो जाये। यह बिला शुब्हा जाइज़ है। याद रहे कि इस का शुमार दग़ाबाज़ी में नहीं होता है। इसीलिये कि वादा कर के क़ौल-क़रार तोड़ देने का नाम दग़ा है, और यह हराम है।

एक जन्गी चाल का ज़िक्र कुरआन पाक की सूरः अनफ़ाल की आयत न॰ 16 में है " जो लड़ाई में (दुश्मन को धोखा देने के लिये) पीठ दिखाये, या अपने लश्कर में शामिल होने के लिये पीठ दिखाए।" इस की शक्ल यह होती है कि जन्ग के मैदान में दुश्मन से लड़ते-लड़ते एक तरफ़ कावा काटने के लिये पीठ फेर कर भागने लगे ताकि दुश्मन यह समझे कि यह तो अब पराजित हो कर भगा रहा है और वह ग़ाफ़िल हो जाये, लेकिन फिर अचानक यकदम पैंतरा बदल कर दुश्मन पर टूट पड़ें। यह एक जन्गी चाल है जो लड़ाई में चली जाती है। और इस प्रकार की चाल अपना कर दुश्मन को चकमा देना जाइज़ है। (सूरः अनफ़ाल, पारः10, आयत 16)

बाब {जिहाद में मुश्रिकों से सहायता लेना कैसा है?}

1129:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बद्र की जन्ग के लिये (मदीना शरीफ़ से) निकले और "हर्रतुल वबरा" के स्थान पर पहुँचे (जो मदीना से चार मील की दूरी पर है) तो वहाँ आप से एक ऐसे व्यक्ति ने मुलाक़ात की जिस की वीरता का बड़ा चर्चा था। उसे देख सहाबा प्रसन्न हो उठे। उस ने कहाः मैं इसलिये आया हूँ कि आप के साथ (जन्ग के लिये) चलूँ और जो कुछ माले ग़नीमत हाथ आये उस में से मुझे भी कुछ हिस्सा मिले। आप ने पूछाः क्या तुम्हारा अल्लाह और उस के सन्देष्टा पर ईमान है? उस ने कहाः नहीं। आप ने फ़रमायाः तो फिर लौट जाओ, मुझे मुश्रिक की सहायता की आवश्यक्ता नही है। यह कह कर आप आगे रवाना हो गये। जब "श-जरा" के स्थान पर पहुँचे तो वही व्यक्ति फिर आप से मिला और वही कहा जो पहले कह चुका था, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उत्तर में वहीं फ़रमाया जो पहले फ़रमाया था कि वापस लौट जाओ हमें मुश्रिक की सहायता की आवश्यक्ता नहीं। है। चुनान्चे वह दोबारा लौट गया और फिर "बैदा" के स्थान पर मिला तो आप ने फिर वही प्रश्न किया जो पहले किया था कि क्या तू अल्लाह और उस के सन्देष्टा पर ईमान रखता है? अब की बार उस ने उत्तर दिया कि हाँ, तो आप ने फ़रमायाः ठीक है, फिर साथ में चलो।

फ़ाइदाः– नसई की रिवायत में है कि आप ने फ़रमायाः "मुश्रिकों की आग से रोशनी

तक हासिल न करो (5212) लेकिन यह रिवायत ज़ओ़फ़ है। इस के विपरीत आप ने कई स्थानों पर मुश्रिकों से सहायता ली है। (1) क़ज़मान, मुश्रिक था, लेकिन उसी हालत में जन्ग उहुद में अब्दुद्दार के तीन लोगों को क़त्ल किया। (इसाबाह-535, फ़त्हुलबारी-8/248) (2) हुनैन की जन्ग के मौक़ा पर सफ़वान सहायता करते रहे। (4) ताइफ़ से वापसी पर मुतइम बिन अ़दी से सहायता ली। (5) हिजरत के समय अ़ब्दुल्लह बिन अरीक़त को राह बताने के लिये लिया।

लेकिन याद रहे कि इस प्रकार की चुट-पुट सहायता और इक्का-दुक्का से सहयोग लेना बिला शुब्हा दुरुस्त है। लेकिन दीन इस्लाम, अपना सर बुलन्द और ऊँचा करने के लिये अपने ही दुश्मन मुशिरिक की सहायता का मुहताज हो? यह दीन इस्लाम के लिये शर्म की बात है। हाँ, अगर कोई मुश्रिक स्वँय अपेन को पेश करता है तो एक हद तक दुरुस्त है। लेकिन उन की पूरी फ़ौज को बुला कर उन्हें किराया, भरा देना, खिलाना-पिलाना और अपने फ़ौजियों की तरह उन्हें सम्मान देना, यह हर्गिज़ जाइज़ नहीं है। यह तो रहा मुशरिक का मामला।

क्या यहूदयों से सहायता ली जा सकती है? हर्गिज़ नहीं। बल्कि इन्हें तो अ़रब की भूमि से निकाल बाहर करने का आदेश दिया गया है। (आगे की हदीस न॰ 1154)

आप यह कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मदीना पहुँच कर वहाँ के यहूदी क़बीलों से अनुबन्ध किया था कि अगर दुश्मन हम पर हमले करें तो मेरी सहायता करना, और तुम पर करें तो मैं तुम्हारी सहायता करुँगा। तो मालूम हो कि यह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की एक जन्गी चाल थी और उन्हें इस प्रकार बाँध दिया कि अगर आप दुश्मन पर हमला करें तो यह यहूदी (अनुबन्ध के नाते) आप के दुश्मन की सहायता न कर सकें। और आप को उन की सहायता की आवश्यक्ता ही नहीं थी और न ही कभी सहायता ली।

बहरहाल निचोड़ इस हदीस का यह है कि चुट-पुट सामान ले लेना, स्वँय कोई प्रस्ताव पेश करे तो एक आध से असैनकि सहायता जाइज़ है। लेकिन जन्ग में बुलाकर शामिल करना यह नाजाइज़ है।ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी, 11 दिसंबर 2005, रविवार सुब्ह 9 बजे, अहले हदीस मन्ज़िल, दिल्ली।

बाब {मुजाहिदों के साथ महिलाओं के जाने में कोई हरज नहीं।}

1130:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि (मेरी माता जी) उम्मे सुलैम हुनैन की जन्ग में एक खंजर लिये हुयी थीं। उन के पति अबू तल्हा ने उसे देख कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! यह उम्मे सुलैम तो ख़न्जर लिये हुये हैं। आप ने पूछाः यह खंजर किस लिये है? उन्होंने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा (यह इसलिये है कि) अगर किसी मुश्रिक ने मेरे पास आने का

साहस किया तो खंजर से उस का पेट फाड़ दूँगी। यह सुन कर आप हसँने लगे। फिर उम्मे सुलैम ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! जिन लोगों ने (मक्का फ़त्ह होने के बाद) हम लोगों से पराजित होकर मजबूरी में इस्लाम को स्वीकार किया है उन को क़त्ल कर डालिये। आप ने फ़रमायाः ऐ उम्मे सुलैम! काफ़िरों के मुक़ाबला में अल्लाह पाक ने हमारी सहायता की और हम पर एहसान किया है (इसलिये तुम्हें खंजर उठाने की आवश्यक्जता नहीं है)

फ़ाइदाः– बेशक जन्ग में महिलाए शामिल हो सकती हैं। उम्में ह़राम बिन्त मल्हान ने सन 28 हि॰ में अपने पति के साथ क़बरस पर चढ़ाई में शामिल थीं (इसी पुस्तक में हदीस न॰ 1074) उहुद की जन्ग में यही उम्मे सुलैम और आ़इशा रज़ि॰ शरीक थीं, पानी भर–भर कर लातीं और घायलों को पिलातीं (बुख़ारी–2880) उम्मे सुलैत भी उहुद की जन्ग में पानी पिलाती थीं (बुख़ारी–4071) फ़ातिमा रज़ि॰ भी उहुद में शरीक थीं। उत्बा बिन अबू वक़्क़ास ने पत्थर मार कर जब आप के दाँत शहीद किये तो फ़ातिमा ने चटाई जला कर उस की राख से उपचार किया था। (बुख़ारी–2903) उम्मे अ़तिय्या अन्सारी जन्ग में शरीक होती तो खाना पकातीं, घायलों का उपचार करतीं, बीमारों की देख–भाल करतीं (मुस्लिम) एक रिवायत में है कि "महिलाओं का जिहाद हज्ज है" (बुखारी–2875, 2876) इस का अर्थ यह है कि अगर ख़लीफ़ा उन का शामिल होना उचित समझता है तो शरीक हो सकती हैं। जिन लोगों ने नाजाइज़ कहा है उन का दावा रद्द है।

1131:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि उहुद की जन्ग में कुछ लोगों ने पराजित होकर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का साथ छोड़ दिया, लेकिन अबू तल्हा आप के सामने डटे रहे। वह बड़े अच्छे तीर बाज़ थे। उस दिन उन की दो या तीन कमानें टूटी थीं। जब कोई तीर के रखने का थैला लेकर निकलता तो आप उस से फ़रमाते कि इसे अबू तल्हा के लिये रख दो। आप गर्दन उठा कर काफ़िरों को देखते तो अबू तल्हा अनुरोध करतेः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मेरे माता–पिता आप पर कुर्बान! आप गर्दन न उठायें, कहीं ऐसा न हो कि काफ़िरों का कोई तीर आप को लग जाये। मेरा सीना आप के सीना की सुरक्षा के लिये हाज़िर है।

अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि मैंने अबू बक्र की पुत्री आ़इशा और (अपनी माता जी) उम्मे सुलैम को देखा कि वह अपने पाइँचे ऊपर किये हुये थीं और मैंने उन के पैर की पाज़ेग को भी देख रहा था। वह दोनों अपनी पीठ पर मश्क भर कर लातीं और लोगों को पिलातीं, फिर दोबारा भर कर लातीं, और लोगों को पिलातीं। उस दिन तल्हा रज़ि॰ के हाथ से नींद की वजह से तीन बार तल्वार छूट कर गिरी थी।

1132:– उम्मे अ़तिय्या अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ थी। मैं मुजाहिदों के ठहरने के स्थान पर ठहरती, उन के लिये खाना पकाती, घायलों का उपचार करती और बीमारों की सेवा करती थी।

फ़ाइदा:– इन हदीसों से मालूम हुआ कि महिला जिहाद में शामिल हो सकती है। लेकिन यह हालात और इमाम व ख़लीफ़ा के हुक्म पर निर्भर है। बिला ज़रुरत साथ नहीं ले जाना चाहिये। और अगर आवश्यक्ता है तो ले जाने में कोई हरज नहीं।

बाब {जिहाद में महिलाओं और बच्चों की हत्या करना मना है।}

1133:– अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि किसी लड़ाई में एक महिला मृत्यु पाई गयी तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने महिलाओं और बच्चों को क़त्ल करने से मना फ़रमा दिया।

बाब {रात में आक्रमण के समय दुश्मन के बीवी–बच्चे (अँधेरे में, अन्जाने में) मार दिये जायें तो इस में कोई गुनाह नहीं है।}

1134:– स–अ़ब बिन जस्सामा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि रात में छापा मारी के दर्मियान मुश्रिकों के बीवी–बच्चों के मारे जाने के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा गया तो आप ने फ़रमाया: वह भी उन्हीं में दाख़िल हैं।

फ़ाइदा:– ऊपर की हदीस में यह आदेश है कि जन्ग में महिलाओं, बूढ़ों और बच्चों की हत्या न की जाये, और नीचे की हदीस से यह साबित है कि रात के अँधेरे में अगर आक्रमण किया और अन्जाने में हत्या हो गयी तो इस में बहरहाल कोई गुनाह नहीं। क्योंकि उन की हत्या अन्जाने में हुयी है। लेकिन जानबूझ कर इरादा के साथ उन की हत्या नाजाइज़ है। लेकिन यह बात याद रहे कि अगर महिला ने किसी की हत्या की है या ज़िना किया है, तो क़िसास में उस की हत्या की जायेगी, इस मामले में शरीअ़त में कोई छूट नहीं है, चाहे वह महिला बूढ़ी हो या जवान।

बाब {जन्ग में दुश्मन के खजूर के पेड़ों को काटना और जलाना दुरुस्त है।}

1135:– अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कबीला बनी नज़ीर के बुवैरा के खजूर के बागों को कटवाया और जलवा दिया। इस्लामी कवि हस्सान बिन साबित रज़ि॰ ने एक कविता में यह बन्द कहा था:

> वहा–न अ़ला सिराति बनी लु–वय्यिन्
> हरीकुल बिल् बुवै–रति मुस्–ततीरन
> (बुवैरा के स्थल पर जो आग फैल रही थी, उसे बनी लुवय्यि
> (कुरैश) के सर्दारों ने खुशी से बर्दाशत कर लिया)

इसी मौक़े पर अल्लाह तआ़ला ने (सूरः हश्र की) यह आयत नाज़िल फ़रमायी: "जिन पेड़ों को तुम ने काट डाला, या जिन को उन की जड़ों समेत छोड़ दिया (नहीं काटा) यह अल्लाह के आदेश के अनुरुप था, ताकि इस प्रकार अल्लाह फ़ासिक़ों को रुस्वा करे।" (पार:8, सूरः हश्र, आयत 5)

फ़ाइदा:– क़बीला बनी नज़ीर, बनी कुरैज़ा और क़युनक़ाअ़-इन सब का नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ इक़रार था कि स्वँय आप से न तो जन्ग करेंगे और न ही आप के दुश्मनों की सहायता करेंगे। लेकिन यह लोग अन्दर ही अन्दर अनुबन्ध के विपरीत मक्का के काफ़िरों से साज़बाज़ करते रहे। एक मौक़ा पर जब आप बनी नज़ीर वालों के पास किसी काम से बैठे हुये थे तो आप के ऊपर भारी पत्थर गिरा कर मारने का पलान बनाया, लेकिन जिब्रील अ़लै॰ ने तुरन्त सूचित कर दिया और आप वहाँ से हट गये। इस प्रकार अनुबन्ध तोड़ने के जुर्म में आप ने उन पर चढ़ाई कर दी और इन्हें मुल्क बदर कर के ख़ैबर की तरफ़ भगा दिया (फिर उमर रज़ि॰ ने अपने शासन काल में ख़ैबर से शाम खदेड़ दिया)-(बुख़ारी-3125) और मदीना के निकट इन के बाग़ों को जला दिया और काट कर फेंक दिया और उन की ज़मीनों पर क़ब्ज़ा कर लिया। काटना और जलाना यह फ़ौजी चाल और दाँव है। इस से दुश्मन के छुपने के ठिकानों को नष्ट करना था और यह जतला देना था कि तुम हमारी मुट्ठी में आ गये हो और तुम्हारी जायदाद हमारे क़ाबू में है। खजूर के बाग़ मदीना से तीन मील की दूरी पर थे।

मालूम हुआ कि किसी ज़रुरत से, या दुश्मन को पराजित करने के लिये, उन की कमीन गाहों को नष्ट करने के लिये इस प्रकार के क़दम उठाये जा सकते हैं। इन यहूदी क़बीलों की शरारत के मुकम्मल बयान करने का यहाँ मौक़ा नहीं, वर्ना इस से भी कठिन और सख़्त दन्ड के वह हक़दार थे। (बुख़ारी-2326, 4884, 2719, 3021)

बाब {दुश्मन की ज़मीन से खाने-पीने की चीज़ें लेकर खा सकते हैं।}

1136:– अ़ब्दुलह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ि॰ नेबयान किया कि मैं ने ख़ैबर की लड़ाई के दर्मियान चर्बी से भरी कुप्पी देखी तो उसे लपक कर उठा लिया और दिल ही दिल में कहने लगा कि इस में से मैं किसी को नहीं दूँगा, फिर मैं ने घूम कर जो देखा तो मेरे सामने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम खड़े मुस्कुरा रहे हैं।

फ़ाइदा:– इमाम बुख़ारी रह॰ ने भी इस हदीस को ला कर यह साबित किया है कि खाने-पीने की चीज़ें जिन का कोई महत्व नहीं होता, जैसे दाल, दूध, सब्ज़ी आदि को तक़सीम से पहले खा सकता है, क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन के उठाने पर कुछ एतराज़ न किया (बुख़ारी-3153) फिर इसी हदीस को दूसरे बाब में ला कर यह साबित किया है कि अहले किताब (यहूद नसारा) के हाथ ज़ब्ह किया हुआ जानवर और उस की चर्बी हलाल है, क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चर्बी उठाने और खाने से मना नहीं किया। ख़ैबर के लोग सहूदी थे। हाँ, संभाल कर रखी जाने वाली और ख़राब न होने वाली वस्तुओं को माले ग़नीमत के माल में जमा करना अनिवार्य हैं, जैसे चादर और जानवर आदि। इब्ने उमर रज़ि॰ ने बयान किया कि हमें जन्ग में शहद, अन्गूर, आदि मिलते तो वहीं खा-पी लेते, लेकिन उठा कर न ले जाते। (बुख़ारी-3154)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्मत के लिये माले-ग़नीमत हलाल है।}

1137:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः संदेष्टाओं में से किसी सन्देश्टा ने जिहाद किया तो अपने लश्कर वालों से कहाः मेरे साथ जिहाद पर वह न जाये जिस ने निकाह करने के बाद अपनी पत्नी से संभोग न किया हो, और उस का दिल उसी में लगा हुआ हो। इसी प्रकार वह भी न जाये जिस ने गर्भवती बकरियाँ और ऊँटनियाँ ख़रीदी हों और उस का दिल उन में लगा हुआ हो। इसी प्रकार वह भी न जाये जिस ने मकान के निर्माण के लिये दीवारें खड़ी कर दीं, लेकिन छत का काम बाक़ी है। (क्योंकि इन लोगों का दिल उन्हीं कामों में लगा रहेगा और इत्मिनान से जिहाद न कर सकेंगे) फिर वह सन्देष्टा अपने लश्कर को लेकर अ़स्र के समय, या अ़स्र के निकट उस गाँव के पास पहुँचे (जहाँ जिहाद करना था) तो सूरज से कहने लगेः तू भी अल्लाह के आदेश का ताबेदार है और मैं भी ताबेदार हूँ। ऐ अल्लाह! इस सूरज को कुछ समय के लिये ज़रा ऊपर ही ठहरा दे। चुनान्चे सूरज रुक गया और अल्लाह पाक ने उन्हें विजय दिला दी और लश्कर वालों ने माले-ग़नीमत को इकट्ठा कर दिया, फिर उस को जलाने के लिये आकाश से आग आयी लेकिन माले ग़नीमत न जला। यह देख कर सन्देष्टा बोलेः तुम में से किसी ने चोरी की है (इसीलिये माले ग़नीमत नहीं जला और अल्लाह ने उसे क़ुबूल नहीं फ़रमाया) इसीलिये लश्कर के हर क़बीला का एक व्यक्ति मेरे हाथ पर बैअ़त करे। चुनान्चे हर क़बीला के एक-एक व्यक्ति ने बैअ़त की। उन में से एक व्यक्ति का हाथ जब सन्देष्टा के हाथ से लगा तो उन्होंने कहा, तुम लोगों में से एक चोर है, इसलिये तुम्हारे क़बीला के सभी लोग बैअ़त करें। जब उन्होंने बैअ़त की तो दो-तीन आदमियों का हाथ सन्देष्टा के हाथ में चिपक गया। उन्होंने कहा कि चोरी तुम लोगों ने की है। फिर उन्होंने बैल के सर के बराबर सोना दिया जिसे माले ग़नीमत में रख दिया गया, फिर आग ने आ कर सब को जला दिया।

हम से पहले किसी के भी लिये जन्ग के मौक़े पर लूट का माल हलाल नहीं था, यह केवल हमारे लिये हलाल हुआ है। जब अल्लाह पाक ने हमारे अन्दर कमज़ोरी और आजिज़ी देखी तो उसे हमारे लिये हलाल कर दिया।

फ़ाइदाः– दूसरी रिवायतों के अनुसार सन्देष्टा का नाम यूशा अ़लै॰ था और जिस आबादी पर आक्रमण किया था उस का नाम अरीहा था। अल्लाह से दुआ़ की और अल्लाह ने सूरज को रुक जाने का हुक्म दिया, इस में कौन सी अनोखी बात है। अल्लाह जिस को चाहे और जहाँ चाहे रोक दे। इस में सन्देष्टा का कोई हाथ नहीं है। उन्होंने जो सोना चुराया था वह बैल के सर की तरह था। गोया बैल का सर सोने का बना हुआ था, उसी को जमा कर दिया।

पहले की उम्मतों के लिये माले ग़नीमत हराम था। हुक्म यह था कि उन्हें जमा कर दो, फिर आग आ कर उसे जला देगी। अ़ब क़ियमात तक के लिये इस उम्मत के

लिये जाइज़ है। हदीस से मालूम हुआ कि माले ग़नीमत में से तक़्सीम से पहले कुछ चोरा लेना हराम है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का एक गुलाम मद-अ़म जब शहीद हुआ तो लोगों ने उस की बड़ी प्रशंसा की तो आप ने फ़रमायाः इस ने ख़ैबर की जन्ग में जो चादर चोराई थी उस पर आग बन कर उसे जला रही है (बुख़ारी-4234, मुस्लिम) एक सहाबी किर्किरा नामक नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के माल की निग्रानी करते थे। उन का देहान्त हुआ तो आप ने फ़रमायाः वह तो जहन्नम में गया। सहाबा उन्हें देखने गये तो उन के घर से एक चादर मिली जिसे माले ग़नीमत में से चुरा लिया था (बुख़ारी-3074) मालूम हुआ कि जिहाद में फ़ौजी को हर प्रकार से इतमिनान कर लेने के बाद जिहाद में शामिल होना चाहिये, ताकि यकसूई के साथ डट कर जिहद कर सके।

बाब {जन्ग में प्राप्त होने वाले माले-ग़नीमत का बयान।}

1138:- मुस्अ़ब से रिवायत है कि मेरे पिता जी सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ि॰ ने बयान किया कि मेरे बारे में कुरआन पाक की चार आयतें नाज़िल हुयी हैं। (पहली मर्तबा उस समय उतरी जब) एक मर्तबा एक तल्वार मुझे माले ग़नीमत में मिली, उसे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में पेश कर के मैं ने अनुरोध किया कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! इसे मुझे दे दीजिए। आप ने फ़रमायाः उसे रख दो। फिर जब में खड़ा हुआ तो आप ने फ़रमायाः उसे जहाँ से उठाई है वहीं रख दो। मैं ने पुनः कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! इसे मुझे दे दीजिए, क्या मैं उस व्यक्ति की तरह रहूँ जिस के पास कुछ नहीं है? फिर भी आप ने फ़रमायाः इस को जहाँ से लिया है वहीं रख दो। इस मौके पर यह आयत नाज़िल हुयीः "ऐ नबी! लोग आप से माले ग़नीमत के बारे में पूछते हैं? तो आप उन्हें बतला दें कि उस का मालिक अल्लाह के सन्देष्टा हैं" (पारः9, सूरःअनफ़ाल 1)

फ़ाइदा:- जन्ग जीत जाने के बाद लड़ाई के मैदान में जो भी माल पड़ा हुआ मिले उसे माले ग़नीमत कहा जाता है। उसे इकट्ठा कर के कमान्डर के पास जमा करना अनिवार्य है। बाद में मुजाहिदों के दर्मियान बराबर-बराबर तक़्सीम होगा। किस को कितना मिलेगा? इस का भी शरीअ़त ने एक सिद्वान्त बनाया है। अधिक जानकारी के लिये सूरः अनफ़ाल की आयत 41 की तफ़सीर पढ़ें।

दूसरी रिवायत में है कि बाद में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने वह तल्वार सअ़द को दे दी और फ़रमायाः अल्लाह ने मुझ को दी और मैं ने तुम्हें दे दी। ग़नीमत का माल थोड़ा हो या अधिक, उस में से चुपके से रख लेना हराम है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामान की किर्किरा नामक एक व्यक्ति रखवाली करता था, जब वह मर गया तो आप ने फ़रमायाः वह जहन्नम में है। सहाबा ने उस के घर जा कर देखा तो एक चादर मिली जो माले ग़नीमत से चुराई थी (बुख़ारी-3074)

बाब {फ़ौजी टुकड़ियों को माले ग़नीमत के हिस्सा के अतिरिक्त भी पुरस्कार और उपहार के तौर पर

देना दुरुस्त है।}

1139:– इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने नज्द की तरफ़ एक छोटी सी फ़ौजी टुकड़ी भेजी जिस में मैं भी शामिल था। वहाँ हमारे हाथ बहुत से ऊँट और बकरियाँ लगीं। चुनान्चे हम में से हर एक फ़ौजी को 12-12 ऊँट मिले और एक-एक ऊँट इनाम के तौर पर अलग से मिले।

फ़ाइदा:– इस प्रकार का पुरस्कार आजकल भी दिया जाता है। इस से फौजियों की हिम्मत बढ़ती है और आइन्दा पूरी ताक़त के साथ दुश्मन से मुक़ाबला करने से हिचकिचाता नहीं।

बाब {माले ग़नीमत के पाँचवें हिस्से (20 प्रतिशत) का बयान।}

1140:– इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कभी कुछ फ़ौजियों (मुजाहिदों) को और दीगर फ़ौजियों के मुक़ाबला में कुछ अधिक देते थे और माले ग़नीमत में से पाचवें हिस्सा (20 प्रतिशत) निकाला जाता था।

फ़ाइदा:– माले ग़नीमत का पाचवाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का हिस्सा था। और बाक़ी चार हिस्से मुजाहिदों में तक़्सीम होते थे। पाँचवाँ हिस्से से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने घर का ख़र्चा चलाते थे। उसी में से ग़रीबों और यतीमों को भी दे देते थे। उसी में से कुछ मुजाहिदों की हिम्मत बढ़ाने के लिये पुरस्कार के तौर पर दे देते थे। इस हदीस में इसी की तरफ़ इशारा है। फिर जो बच जाता वह फ़ौजी तय्यारी में हथियार आदि की ख़रीदारी पर ख़र्च कर देते थे। केवल नाम के लिये आप का था, वर्ना घूम फिर कर सब जनता के सुधार ही पर ख़र्च होता था।

बाब {जिहाद में मारे गये काफ़िर का सारा सामान क़त्ल करने वाले मुजाहिद को मिलेगा।}

1141:– अबू क़तादा अन्सारी रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग हुनैन की लड़ाई के मौक़ा पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ (जिहाद के लिये) निकले। हम ने उन से मुक़ाबला किया लेकिन (कुछ मुसलमानों के पीठ फेर कर भागने से) हम पराजित हो गये। इसी दर्मियान मैं ने देखा कि एक काफ़िर एक मुसलमान के सीने पर सवार है (और उस के क़तल पर आमादा है) चुनान्चे मैं कावा काट कर उस के पास आया और उस के मोंढे और गर्दन पर ज़ोर से मार लगाई, उस ने मुझे पकड़ कर इतने ज़ोर से दबाया कि मेरी जान के लाले पड़ गये, बाद में वह स्वँय ही मर गया और मुझे छोड़ दिया। फिर मैं उमर फ़ारुक़ रज़ि० से मिला तो कहने लगे: आज लोगों को क्या हो गया है (कि वह पीठ फेर कर भाग खड़े हुये) मैं ने कहा: अल्लाह का यही हुक्म है। फिर वह लोग वापस लौट कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास इकट्ठा हो गये, चुनान्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी बैठ गये और फ़रमाया:

जिस मुसलमान ने किसी काफ़िर को क़त्ल किया हो और उस के पास गवाह भी हों, तो उस काफ़िर का सामान उसे मिलेगा।

अबू क़तादा रज़ि॰ ने बयान किया कि यह सुन कर मैं खड़ा हो गया, लेकिन फिर ख़याल आया कि मेरे पास कोई गवाह ही नहीं है, इसलिये बैठ गया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दोबारा कहा तो मैं फिर खड़ा हो गया, लेकिन फिर सोचा कि मेरे बारे में कोई गवाह नहीं, इसलिये बैठ गया। फिर तीसरी मर्तबा भी आप ने वही फ़रमाया (कि जिस ने क़त्ल किया हो और उस के पास गवाह हों तो उस काफ़िर मक़्तूल का पूरा सामान उस को मिलेगा) तो फिर मैं तीसरी मर्तबा भी खड़ा हो गया। इस प्रकार मुझे खड़ा देख कर आप ने फ़रमायाः ऐ अबू क़तादा! क्या बात है? मैं ने पूरी घटना बयान कर दी तो एक व्यक्ति ने गवाही दी कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! अबू क़तादा सच कहते हैं। लेकिन उस काफ़िर का सामान मेरे क़ब्ज़े में है इसलिये आप अबू क़तादा से कह दें कि अपना हक़ मुझे दे दें (और काफ़िर का सामान मुझे मिल जाये) यह सुन कर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ बोल पड़ेः हर्गिज़ नहीं, अल्लाह की क़सम! ऐसा कभी न हीं हो सकता और न ही नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ऐसा करेंगे कि अल्लाह के शेरों में से एक शेर लड़े और उस का हक़ तुझे दिला दें। यह सुन कर आप ने फ़रमायाः अबू बक्र सच कहते हैं, तुम अबू क़तादा को उस मक़्तूल काफ़िर का सामान दे दो। अबू क़तादा रज़ि॰ ने बयान किया कि उस ने सामान मुझे दे दिया तो मैं ने (उस सामान में से) ज़िरह को बेच कर क़बीला बनी सलमा के मोहल्ले में खजूर का एक बाग़ ख़रीदा। यह पहला माल था जिस को मैं ने इस्लाम लाने के बाद कमाया।

फ़ाइदाः– इसी हदीस को इमाम बुख़ारी रह॰ ने भी नक़ल किया है (हदीस न॰–3142) साथ ही अबू जेहल के क़त्ल की घटना को भी नक़ल किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस के क़ातिल मआ़ज़ बिन अ़म्र बिन जमूह रज़ि॰ को अबू जेहल का सारा समान दिवाया (3141) यह हदीस नीचे भी आ रही है। मालूम हुआ कि जिस मुजाहिद ने जिस काफ़िर को क़त्ल किया है उस का समस्त सामान उसे मिलेगा। उस सामान को माले ग़नीमत में नहीं दाख़िल किया जायेगा।

बाब {अगर क़त्ल करने में कई मुजाहिद शामिल हों, तो इमाम छान–बीन कर के किसी एक को मक़्तूल काफ़िर का सामान दिलवा दे।}

1142:– अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं बद्र की लड़ाई के दिन सफ़ में खड़ा था। मैं ने अपने बाएँ और दाएँ तरफ़ देखा तो अन्सार के दो कम आयु के युवक खड़े है। यह देख कर मेरे दिल में ख़याल पैदा हुआ कि काश मैं जवान और शक्तिशाली लोगों के बीच में खड़ा होता (इन बच्चों के दर्मियान देख कर लोग क्या कहेंगे) इतने में उन दोनों बच्चों में से एक ने मेरी उंगली दबा कर पूछाः ऐ चचा! आप अबू जेहल को पहचानते हैं? मैं ने कहाः हाँ, लेकिन मेरे भाई के बेटे! आप

का अबू जेहल से क्या लेना है? उस ने कहाः सुना है वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बुरा-भला बकता है, क़सम है उस अल्लाह की! जिस के हाथ में मेरी जान है; अगर वह मिल जाये तो उस को नहीं छोड़ूगाँ चाहे हम दोनों में से एक की जान ही क्यों न चली जाये। इब्ने औफ़ रज़ि॰ ने कहा कि मुझे उस की बातों पर बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर दूसरे युवक ने भी मेरी उगँली दबा कर उसी प्रकार पूछा (जिस प्रकार पहले युवक ने पूछा था) इतने में मैं ने देखा कि अबू जेहल अपने लोगों के दर्मियान घूम रहा है। मैं ने उन दोनों युवकों से कहाः वह देखो अबू जेहल वही है जिस के बारे में तुम दोनों पूछ रहे थे। उसे देखते ही दोनों उस की तरफ़ लपके और अपनी तल्वारों से उस को जहन्नम रसीद कर दिया। फिर दोनों ने वापस आ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को पूरी घटना की जानकारी दी तो आप ने पूछाः तुम में से किस ने उसे मारा? दोनों में से हर-एक ने कहा कि मैं ने मारा है। आप ने पूछाः क्या तुम दोनों ने अपनी तल्वारें साफ़ कर लीं? उन्होंने कहाः अभी नहीं। जब आप ने उन दोनों की तल्वारें देखीं तो फ़रमायाः तुम दोनों ही ने उसे क़त्ल किया है, लेकिन उस का सामान मआ़ज़ बिन अ़म्र बिन जमूह को दिलाया। वह दोनों लड़के मआ़ज़ बिन अ़म्र बिन जमूह और मआ़ज़ बिन अ़फ़रा थे।

फ़ाइदाः- मआ़ज़ बिन अ़म्र बिन जमूह ने पहले वार कर के उस को बेदम कर दिया था तो उस्ल क़त्ल करने वाले वही हुये, इसीलिये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्ही ही को अबू जेहल का सामान दिलवाया, और मआ़ज़ बिन अ़फ़रा का दिल खुश करने के लिये आप ने यूँ फ़रमाया कि तुम दोनों ने मारा है। दूसरी रिवायतों में अबू जेहल के क़ातिल अ़फ़रा के दोनों बेटे मआ़ज़ और मुअव्वज़ को बताया गया है, और इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ को भी शामिल किया है। तो हो सकता है यह लोग भी बाद में शामिल हो गये हों। दोनों लड़के मदीना के थे इसीलिये अबू जेहल का नाम तो सुना था लेकिन चेहरा नहीं पहचानते थे।

बाब {छान-बीन करने के बाद क़ातिल से मक़्तूल काफ़िर का सामान वापस ले लेना चाहिये।}

1143:- औफ़ बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि क़बीला हिम-यर के एक मुसलमान व्यक्ति ने दुश्मनों में से एक को मार गिराया और उस का सामान लेना चाहा, लेकिन ख़ालिद बिन वलीद रज़ि॰ जो कमान्डर थे उन्होंने उसे न दिया। औफ़ बिन मालिक रज़ि॰ ने जब इस घटना की सूचना नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को दी तो आप ने ख़ालिद से पूछाः आप ने उस को सामान क्यों न दिया? उन्होंने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! चूँकि सामान बहुत अधिक था (इसलिये कुल सामान देना उचित न जाना) आप ने फ़रमाया कि समस्त सामान उस को दे दो। (चुनान्चे उन्होंने दे दिया) इस के बाद जब ख़ालिद रज़ि॰ की औफ़ से मुलाक़ात हुयी तो उन्होंने ख़ालिद रज़ि॰ की चादर पकड़ की कहाः मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बयान किया तो

वही हुआ ना (कि तुम्हें सामान देना पड़ा और बेइज़्ज़ती अलग हुयी) यह सुन कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत नाराज़ हुये और ख़ालिद से कहा: ऐ ख़ालिद! उस को सामान वापस मत करना, ऐ ख़ालिद! उस को सामान मत वापस करना। क्या तुम लोग मेरे इस कह देने के नाते मेरे सर्दारों को छोड़ दोगे (और उन का आदर-सम्मान नहीं करोगे) तुम्हारी और उन की मिसाल उस चरवाहे की तरह है कि उस ने चराने के लिये ऊँट और बकरियाँ लीं, उन्हें चराया, फिर उन्हें पानी पिलाने के लिये हौज़ के पास लाया, तो वह ऊपर का साफ़ पानी तो पी गयीं और बचा हुआ तल्छट छोड़ दिया। तो अच्छा-अच्छा तो तुम्हारे लिये और रद्दी व ख़राब तुम्हारे सर्दारों के लिये।

फ़ाइदा:– यह घटना सन 8 हि॰ में मूता की जन्ग के मौक़े पर घटी। जब ज़ैद, जाफ़र तय्यार और अब्दुल्लाह बिन रवाहा (यके बाद दीगरे तीन-तीन कमान्डर) शहीद हो गये तो ख़ालिद रज़ि॰ ने स्वँय इस्लामी झन्डा उठा कर कमान्डरी संभाल ली और लड़ते हुये 8 तल्वारें तोड़ीं। आप ने जो यह फ़रमाया कि "मत वापस करना, मत वापस करना" इस का यह अर्थ नहीं कि वास्तव में मत वापस करना, बल्कि यह कह कर औफ़ रज़ि॰ को झिड़कना था ताकि कमान्डर के तअल्लुक़ से आज्ञा और आदर-सम्मान की भावना बाक़ी रहे, और कभी एक-आध ग़लत निर्णय लेने पर उन का मज़ाक़ न उड़ाया जाये। इमाम नववी न यह लिखा है कि आप ने उन से सामान वापस ले लिया ताकि औफ़ इस से सबक़ लें, फिर बाद में उन को वापस कर दिया।

बाब {काफ़िर का समस्त माल क़त्ल करने वाले मुजाहिद का हक़ है।}

1144:– सलमा बिन अकवा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया हम लोगों ने (सन 8 हि॰ में) नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बनी हवाज़िन से जिहाद किया। एक दिन हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बैठे हुये नाश्ता कर रहे थे कि इसी दर्मियान एक व्यक्ति लाल ऊँट पर सवार हो कर आया। फिर उस ने ऊँट को बैठाया और अपनी कमर से एक रस्सी निकाल कर उस के पैर को बाँध दिया, फिर लोगों के साथ बैठ कर वह भी नाश्ता करने लगा। (वह खाता जाता) और इधर-उधर झाँकता भी जाता था (ऐसा मालूम होता था कि वह जासूसी कर रहा है) उन दिनों हम लोगों की स्थिति बड़ी ख़राब थी (सवारी के लिये जानवर नहीं थे इसलिये) कुछ लोग पैदल चल रहे थे। इतने में वह उठ कर भागा, अपने ऊँट के पास पहुँचा, उस का बन्धन खोला, उस को बैठा कर सवार हुआ, उसे खड़ा किया और उसे ले भागा। (ताकि काफ़िरों को फ़ौजी रिपोर्ट दे) चुनान्चे हम में से एक व्यक्ति ने मटियाले रंग की ऊँटनी पर सवार होकर उस का पीछा किया। सलमा रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने पैदल ही दौड़ कर उस का पीछा किया। आंरभ में तो ऊँटनी के पीछे था, लेकिन क़दम और तेज़ी से बढ़ा कर (उस जासूस के) ऊँट के पीछे पहुँच गया, फिर तेज़ी से आगे बढ़ कर उस के ऊँट की नकील पकड़ ली, फिर उसे बैठा दिया। जैसे ही ऊँट ने अपना आगे का

घुटना टेका मैं ने तल्वार निकाल कर उस के सर पर दे मारा, और वह गिर पड़ा। फिर उस के ऊँट और सामान को लेकर वापस आ गया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और दीगर सहाबा से (जो मेरे इन्तिज़ार में थे) मुलाक़ात की। आप ने पूछा कि उस जासूस को किस ने क़त्ल किया? लोगों ने बताया: अक्वा के पुत्र ने। आप ने फ़रमाया: उस का सारा सामान अक्वा के बेटे (सलमा) का है।

फ़ाइदा:– चूँकि जासूस ऐसी क़ौम से था जिस से मुसलमानों का कोई अनुबन्ध न था इसलिये उस का क़त्ल करना जाइज़ था। और हत्या करने वाले अक्वा के पुत्र सलमा थे, इसलिये उस का सारा सामान उन्हें मिला। सलमा रज़ि० दौड़ने और तीर चलाने में बड़े माहिर थे। दौड़ में ऊँट को पछाड़ देते थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ऊँटनियों को जब दुश्मन ले भागे तो अकेले ही तीरों की वर्षा कर के दुश्मनों से उन के ऊँट और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ऊँटनियाँ और तीस चादरें आदि छीन लीं थी। (बुख़ारी–4194)

बाब {फ़ौजियों को पुरस्कार और उपहार देना और बन्दियों के बदले में मुसलमानों को छोड़ने का बयान।}

1145:– अयास अपने पिता सलमा रज़ि० से रिवायत करते हैं कि मेरे पिता जी ने बयान किया कि एक मर्तबा हम लोगों ने क़बीला फ़ुज़ारा से जिहाद किया, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमारा कमान्डर अबू बक्र सिद्दीक रज़ि० को बनाया था। जब हमारे और पानी के दर्मियान (जहाँ क़बीला फ़ुज़ारा के लोग ठहरे हुये थे) थोड़ी सी दूरी रह गयी तो अबू बक्र ने हमें पड़ाव डाल देने का आदेश दिया, चुनान्चे हम लोगों ने पड़ाव डाल कर पिछले पहर चौमुखी आक्रमण कर दिया और पानी के स्थान तक पहुँच गये। वहाँ जो मारा गया सो मारा गया, बाक़ी शेष बन्दी बना लिये गये।

मेरी नज़र एक टुक्ड़ी पर थी जिस में क़बीला फ़ुज़ारा की महिलाएँ और बच्चे थे। मैं डरा कि कहीं ऐसा न हो यह लोग मुझ से पहले ही पहाड़ पर पहुँच कर सुरक्षित हो जायें, इसलिये दर्मियान ही में उन पर तीर चला दिया तो वह लोग ठहर गये और मैं उन सब को हाँक कर पड़ाव पर ले आया। उन में क़बीला फ़ुज़ारा की एक महिला भी थी जो चमड़े का कपड़ा पहने हुये थी और उस के साथ एक बड़ी सुन्दर युवती भी थी। उन सब को पकड़ कर कमान्डर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के पास लाया, तो उन्होंने उस युवती को मुझे पुरस्कार में दे दिया। हम लोग मदीना शरीफ़ पहुँचे और अभी मैं ने उस युवती का कपड़ा भी नहीं खोला था (अर्थात संभोग नहीं किया था) कि इसी दर्मियान एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुझे बाज़ार में मिल गये। आप ने फ़रमाया: ऐ सलमा! उस युवती को मुझे दे दो। मैं ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! (वह आप ही की है) वह मुझे बड़ी भली लग रही है और अभी मैं ने उस से हम बिस्तरी (संभोग) भी नहीं किया है। फिर आप दूसरे दिन भी बाज़ार में मिले और कहने लगे: ऐ सलमा! आप

के पिता (अकवा) बड़े भले मानुस हैं, उस युवती बाला को मुझे दे दो। मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! वह आप की है, और अल्लाह की क़सम! अभी मैं ने उस का कपड़ा तक नहीं खोला है। फिर आप ने उस लकड़ी को मक्का वालों को वापस कर दिया और उसके बदले में जो मुसलमान बन्दी थे उन्हें आज़ाद करा लिया।

फ़ाइदाः– इस हदीस से मालूम हुआ कि अमीर और ख़लीफ़ा अगर उचित समझें तो मुजाहिद को अलग से इनाम और पुरस्कार के तौर पर कुछ दे सकता है। जन्ग में जो महिला पकड़ी जाये वह लौंडी होजाती है और जिस को मिले वह उस से संभोग कर सकता है। अगर वह विवाहिता है तो एक हैज़ तक इन्तिज़ार कर ले। और अगर अविवाहिता है तो इन्तिज़ार की आवश्यक्ता नहीं। अल्लाह का शुक्र है कि दीन इस्लाम ने आ कर इस गुलामी (दासता) की लानत से छुटकारा दिला कर संसार को पाक कर दिया।

बाब {जो माले ग़नीमत जन्ग लड़ कर प्राप्त किया जाये उस में भी पाचवाँ हिस्सा (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का हक़) निकाला जायेगा और बाक़ी मुजाहिदों के दर्मिान वितरण होगा।}

1146:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस बस्ती में तुम आ कर ठहर गये (और बिना लड़ाई के उसे फ़त्ह करलिया) उस के माले ग़नीमत में भी तुम्हारा हिस्सा है। और जिन बस्ती वालों ने अल्लाह और उस के सन्देष्टा की अवज्ञा की (और जन्ग किया) तो उस माले ग़नीमत में भी अल्लाह और उस के रसूल का 20 प्रतिशत (पाँचवाँ) हिस्सा है और बाक़ी चार हिस्से (60 प्रतिशत) तुम्हारे हैं।

फ़ाइदाः– अर्थात जिस गाँव को काफ़िरों ने स्वैंय ही ख़ाली कर दिया, या सुलह्–समझौते में उसे मुसलमानों के हवाले कर दिया तो उस का सारा माल बैतुलमाल में जमा होगा (मुजाहिदों को कुछ नहीं मिलेगा) लेकिन अगर मुजाहिद वहाँ जा कर ठहरें तो थोड़ा–बहुत उपहार के तौर पर मिल जायेगा, क्योंकि बैतुलमाल में इन का भी हक़ है। लेकिन जो माले ग़नीमत जन्ग करने के बाद प्राप्त हुआ उस में 20 प्रतिशत रसूल का है, बाक़ी 60 प्रतिशत मुजाहिदों का।

बाब {जन्ग के बिना जो माल प्राप्त हुआ (जिसे "फ़ै" कहा जाता है) उसे किस प्रकार बाँटा जायेगा।}

1147:– मालिक बिन औस रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ ने एक बार मुझे बुलाया चुनान्चे मैं दिन चढ़े उन के पास हाज़िर हुआ, तो क्या देखा कि घर में चौकी पर बैठे हुये हैं और चमड़े के तकिया से टेक लगाए हुये हैं। मुझे देख कर वह बोलेः ऐ मालिक! तुम्हारे खान्दान के कुछ लोग भागे–भागे मेरे पास आये थे तो मैं ने उन्हें बैतुल माल से थोड़ा बहुत दिला दिया है, तुम जा कर उन के दर्मियान तक़सीम कर दो। इस पर मैं ने कहाः अगर वह काम किसी और को सौंप देते तो अच्छा होता। इस पर वह बोलेः ऐ मालिक! तुम्ही ले जाओ (और तक़सीम कर दो)

इसी बीच उन का गुलाम यरफ़ा आया और कहने लगा कि ऐ मुसलमानों के ख़लीफ़ा! उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान, अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़, जुबैर बिन अ़व्वाम और सअ़द बिन मआ़ज़ आप से मिलने के लिये आये हैं। उमर रज़ि॰ ने कहाः उन्हें आने की अनुमति दे दो। चुनान्चे वह लोग अन्दर आ गये। लेकिन थोड़ी देर के बाद ही फिर वह आया और कहने लगाः अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब और अ़ली बिन अबू तालिब भी आये हैं और आप से मिलना चाहते हैं। उमर रज़ि॰ ने उन्हें भी अन्दर आने की अनुमति दे दी।

अब अ़ब्बास रज़ि॰ ने कहाः ऐ ख़लीफ़ा! आप मेरे और इस धोखेबाज़ चोर के दर्मियान फ़ैसला फ़रमा दीजिये। इस पर वहाँ उपस्थित लोगों ने भी कहाः हाँ, हाँ, ऐ ख़लीफ़ा! आप उन के दर्मियान फ़ैसला फ़रमा दीजिये ताकि उन्हें इत्मिनान हो जाये। इस पर औ़स बिन मालिक बोल पड़े कि मुझे पता है कि अ़ली और अ़ब्बास ने उन चारों को इसलिये पहले ही भेज दिया था ताकि वह लोग भी ख़लीफ़ा के सामने मस्अला को रख कर फ़ैसला करा दें। यह सुन कर उमर रज़ि॰ ने कहाः सुनों! मैं तुम्हें उस अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ जिस के आदेश से ज़मीन और आकाश अपने स्थान पर टिके हैं, क्या आप लोगों को मालूम नहीं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमा चुके हैं कि हम सन्देष्टा के माल में से वारिसों को कुछ नहीं मिलता है, हम जो छोड़ जायें वह सब अल्लाह की राह में सदक़ा है। यह सुन कर सभी लोगों ने कहाः हाँ, हमें यह हदीस मालूम है। इस के बाद उमर रज़ि॰ अ़ब्बास और अ़ली रज़ि॰ से मुख़ातब हुये और कहाः मैं आप दोनों को उस अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ जिस के हुक्म से ज़मीन और आकाश अपने-अपने स्थान पर टिके हुये हैं, क्या आप दोनों को यह हदीस मालूम नहीं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया हैः "हम सन्देष्टाओं का कोई वारिस नहीं होता, हम जो कुछ छोड़ जायें वह सब अल्लाह की राह में सदक़ा है?" उन्होंने उत्तर दिया कि हमें मालूम है। इस पर उमर रज़ि॰ ने कहाः अल्लाह पाक ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ एक अलग ही तरह का मामला किया था और फिर यहआयत तिलावत फ़रमायीः "बस्ती वालों का जो माल अल्लाह पाक ने बिना जन्ग किये ही रसूल को दिला दिया वह माल अल्लाह और उस के रसूल का हक़ है" (पारः28, सरूः हश्र-7) फिर उमर रज़ि॰ ने कहाः अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस माल को आप लोगों के दर्मियान तक़सीम कर दिया, और अल्लाह की क़सम! ऐसा भी नहीं है कि आप ने पूरा माल स्वँय ही रख लिया हो और आप लोगों को कुछ न दिया हो। फिर आप लोगों को दे देने के बाद जो बचता था उस में से अपने और बीवी-बच्चों के लिये एक वर्ष का खाना-ख़र्चा निकाल कर रख लेते थे, फिर जो बचता उसे बैतुल माल में दाख़िल कर देते थे। यह बयान करने के बाद उमर रज़ि॰ ने कहाः मैं फिर उस अल्लाह की क़सम दे कर जिस के हुक्म से ज़मीन और आकाश अपने-अपेन स्थान पर स्थिर हैं, आप लोगों से पूछता हूँः क्या आप लोगों को इस बात की जानकारी नहीं है? वहाँ मौजूद

लोगों ने उत्तर दिया कि हम जानते हैं। इस के बाद अ़ब्बास और अ़ली रज़ि॰ की तरफ़ भी मुख़ातब होकर और उन्हें क़सम दिला कर पूछा तो उन दोनों ने भी कहा कि हम जानते हैं (कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने वैसा ही किया है जैसा आप ने बयान किया है)

उमर रज़ि॰ ने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के देहान्त कर जाने केबाद जब अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ख़लीफ़ा बने तो भी आप दोनों उन से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का तर्का माँगने आये थे, अ़ब्बास तो अपने भतीजे के नाम का तर्का माँगने आये थे (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अ़ब्बास के भतीजे थे) और अ़ली अपनी पत्नी फ़ातिमा का हिस्सा उन के पिता के माल से चाहते थे (क्योंकि फ़ातिमा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पुत्री थीं) तो उन्होंने भी यही कहा था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि नबी के माल का कोई वारिस नहीं होता है वह जो छोड़ जायें सब अल्लाह की राह में सदक़ा है। आप लोगों ने नाहक़ उन्हें चोर, झूठा और पापी बना दिया है, अल्लाह पाक अच्छी तरह जानता है कि वह नेक और सच्चे व सीधी राह पर थे।

अब जबकि अबू बक्र का देहान्त हो चुका है और उन के स्थान पर मैं ख़लीफ़ा हूँ (और अगर मैं भी न दूँ तो) आप दोनों हमें भी चोर, बेईमान और पापी समझेंगे। हालाँकि अल्लाह पाक अच्छी तरह जानता है कि मैं भी हक़ पर हूँ और हक़ ही कहता हूँ। मैं भी आज नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के उस तर्के का निग्राँ हूँ जिस के लिये आप दोनां मेरे पास आये हैं। अगर्चे आप दो फ़रीक़ हैं, लेकिन मामले की नौइयत के नाते एक ही हैं। आप लोग चाहते हैं कि नबी का तर्का आप के हवाले कर दें। तो ठीक है, मैं आप दोनों के हवाले कर दूँगा, मगर इस शर्त पर कि आप दोनों भी उस माल को वहीं ख़र्च करेंगे जहाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने किया था। मैं आप लोगों को यह माल इसी शर्त पर सौंप रहा हूँ। उमर रज़ि॰ ने उन से पूछाः ठीक है, मन्जूर है ना? उन्होंने कहाः हमें जन्जूर है। फिर उमर रज़ि॰ ने कहाः अगर आप लोग नबी के तर्का को तक़सीम कराना चाहते हैं तो अल्लाह की क़सम! जिस के हाथ से ज़मीन और आकाश क़ाइम हैं, मैं इस के अ़लावा और कोई फ़ैसला नहीं कर सकता। अगर आप लोगों को मन्जूर नहीं है तो फिर वह जायदाद मेरे हवाले कर दो, मैं उस की भी निग्रानी और देख-भाल करता रहूँगा (जिस प्रकार और दूसरे काम देख रहा हूँ)

फ़ाइदाः– इस लंबी हदीस का अनुवाद मैं ने तर्जुमा से हट कर कुछ शब्द अपनी और से बढ़ा कर किया है ताकि समझने में आसानी हो। इस हदीस का खुलासा यह है कि किसी के मर जाने के बाद उस के रिश्तेदार उस के तर्का के वारिस होते हैं। चुनान्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के देहान्त के बाद अ़ब्बास ने भतीजे का और फ़ातिमा ने पिता के तर्का का दावा कर दिया, लेकिन अबू बक्र ने हदीस की रोशनी में देने से इन्कार किया, तो इन्होंने उमर रज़ि॰ के ख़िलाफ़त के ज़मान में भी दावा किया। इन दोनों

ने इस के लिये पहले ही से चार आदमियों को मामला तैं करने के लिये ख़लीफ़ा के पास भेज दिया, बाद में खुद भी पहुँचे, तो उमर रज़ि॰ ने भी वही जवाब दिया जो अबू बक्र रज़ि॰ ने दिया। लेकिन उमर रज़ि॰ ने इतना और कहा कि जिस तरह हम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के तर्का की निग्रानी करते और उस को तक़्सीम करते हैं, अगर आप भी इसी प्रकार निग्रानी और तक़्सीम करें तो मैं आप दोनों के हवाले करने को तय्यार हूँ (मेरे ऊपर से एक बोझ ही हल्का होगा) लेकिन आप अगर इस को तर्का और ज़ाती मीरास व मिलकिय्यत समझ कर लेते हैं, तो मैं हर्गिज़ देने को तय्यार नहीं।

इसी मुद्दे को लेकर फ़ातिमा रज़ि॰ वर्षो तक अबू बक्र रज़ि॰ से नाराज़ रहीं, लेकिन बाद में जब मस्अले को समझ गयीं और ग़लतफ़हमी दूर हो गयी तो संबन्ध सुधर गये थे। याद रहे कि उमर रज़ि॰ ने भी इसी शर्त पर हवाले किया था कि वह उन का तर्का और ज़ाती मिलकिय्यत नहीं है, और वहीं ख़र्च करेंगे जहाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और अबू बक्र रज़ि॰ ने किया था। चुनान्चे अ़ली रज़ि॰ ने भी अपनी ख़िलाफ़त के ज़माना में मीरास समझ कर तक़्सीम नहीं किया-रज़ियल्लाहु अ़न्हुम।

बुख़ारी शरीफ़ में है कि अ़ली रज़ि॰ ने पूरे जीवन उस की निग्रानी की, और वहीं ख़र्च किया जहाँ अबू बक्र व उमर ने किया। उस के बाद हसन बिन अ़ली की निग्रानी में आ गया, फिर उन के बाद हुसैन की निग्रानी में आया। फिर अ़ली बिन हुसैन और हसन बिन हसन की निग्रानी में रहा। (बुख़ारी-4034)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास कितनी जायदाद थी? यह एक प्रश्न है जिस की जानकारी आवश्यक है। देहान्त के बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सफ़ेद ख़च्चार, हथियार और एक ज़मीन (जिसे जीते जी वक़्फ़ कर दिया था, न कोई दिंहम छोड़ा और न दीनार (बुख़ारी-2739, 2873) बनी कुरैज़ा और बनी नज़ीर के बाग़ (जो बिना लड़े-भिड़े फ़ै में प्राप्त हुये थे (बुख़ारी-3128, 2630, 3120) खजूर के कुछ और पेड़ जो अन्सारी सहाबा ने आप को खाने-पीने के लिये दे दिया था (बुख़ारी-2630, मुस्लिम-किताबुल् जिहाद) फ़िदक की थोड़ी सी ज़मीन।

यही माल हैं जो आप छोड़ कर मरे थे। इसे ख़लीफ़ा ने सरकरी निग्रानी और मिलकियत में ले लिया और आप की पत्नियों को इसी में से ख़र्चा देते रहे। इस तर्के के लिये अ़ब्बास और फ़ातिमा रज़ि॰ का दावा था।

1148:- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि फ़ातिमा ज़हरा रज़ि॰ (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पुत्री) ने किसी को अबू बक्र रज़ि॰ के पास नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के छोड़े हुये मालों का तर्का माँगने के लिये भेजा (तर्का यह था) मदीना, फ़िदक और ख़ैबर की जन्ग में मिला हुआ हिस्सा जिसे अल्लाह ने आप को दिया था। इस पर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने उत्तर दिया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है "हमारे माल का कोई वारिस नहीं होता है, हम सन्देष्टा जो कुछ छोड़ कर जाते हैं वह सदक़ा है" इसलिये

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बाल-बच्चों की आवश्यक्ता उसी से पूरी की जायेगी, और अल्लाह की क़सम! मैं तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सदक़ा के माल में कोई तबदीली नहीं कर सकता, जहाँ-जहाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ख़र्च करते थे मैं भी उन्हीं स्थानों ही पर ख़र्च करूँगा। मतलब यह कि सिद्दीक़ रज़ि॰ ने फ़ातिमा को देने से इन्कार कर दिया। इस पर फ़ातिमा को बड़ा गुस्सा आया और उन्होंने उन के पास आना-जाना और बात-चीत तक बन्द कर दी, यहाँ तक कि इसी हालत में उन का देहान्त भी हो गया। (याद रहे कि) फ़ातिमा रज़ि॰ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के देहान्त के बाद केवल छः महीना ही जीवित रहीं (और 3 रमज़ान सन॰ 11 हि॰ को देहान्त कर गयीं) उन के देहान्त के पश्चात अ़ली रज़ि॰ ने (चुपके से) उन्हें रात ही में दफ़न कर दिया और ख़लीफ़ा अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ को सूचना तक न दी, और स्वँय ही उन की नमाज़ जनाज़ा भी पढ़ी।

जब तक फ़ातिमा रज़ि॰ जीवित थीं तो लोग अ़ली रज़ि॰ का मान-सम्मान करते थे, लेकिन उन के देहान्त के बाद लोगों ने तवज्जोह कम कर दी तो उन्होंने अबू बक्र रज़ि॰ से सुलह-समझौता कर के उन के हाथ पर बैअ़त कर ली, क्योंकि उन के ख़लीफ़ा बनने के बाद से अभी तक (घरेलू झमेलों में उलझे रहने के कारण) बैअ़त करने का अवसर न मिला था। चुनान्चे उन्होंने ख़लीफ़ा को सन्देश भेजा कि आप मेरे घर आयें लेकिन अकेले आयें, आप के साथ और कोई न आये, क्योंकि उन्हें उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ का साथ में आना पसन्द न था। इस पर उमर ने उन से कहाः अल्लाह की क़सम! आप उन के पास अकेले न जायें। अबू बक्र ने कहाः (अकेले जाने में आख़िर क्या बुराई है?) अ़ली रज़ि॰ मेरे साथ कोई बुरा व्यवहार थोड़े करेंगे। अल्लाह की क़सम! मैं तो अकेला ही जाऊँगा। फिर वह अकेले ही गये (और उन से बात-चीत की। अबू बक्र रज़ि॰ ने बयान किया कि) अ़ली रज़ि॰ ने खुत्बा पढ़ा, फिर कहने लगेः ऐ अबू बक्र! हम आप की बड़ाई और बुर्जुगी को अच्छी तरह जानते हैं और अल्लाह ने आप को (ख़िलाफ़त का) मतर्बा दिया है उस पर हम नतिक भर हसद नहीं करते हैं, लेकिन (दुःख केवल इस बात को लेकर है कि) आप ने तन्हा ही यह सारा कार्य कर डाला, हालाँकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से हमारा रिश्ता-नाता होने के नाते हमारा भी हक़ बनता था (कि हम से भी राय-मश्वरा लिया जाये) फिर उन से बड़ी देर तक बातें करते रहें, यहाँ तक कि अबू बक्र रज़ि॰ रोने लगे। इस के बाद अबू बक्र रज़ि॰ ने गुफ़्तगू आरंभ की और कहा कि उस अल्लाह की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है मैं जानता हूँ कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जितना क़रीब था, आप मुझ से कहीं अधिक क़रीब थे। (क्योंकि आप भाई थे और दामाद भी थे) लेकिन हमारे और आप के दर्मियान (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के तर्का को लेकर) जो इख़्तिलाफ़ है, तो (सच्ची बात यह है कि) इस मस्अले में मैं ने हक़ का दामन नहीं छोड़ा है, मैं ने वही कुछ किया है जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को करते देखा है।

इस के बाद अ़ली रज़ि॰ बोलेः अच्छा ठीक है, मैं आज दोपहर को आप के हाथ पर बैअ़त करूँगा। फिर जब अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने ज़ोहर की नमाज़ पढ़ाई तो मिंबर पर खुत्बा दिया और उन से अपनी मुलाक़ात की पूरी रुदाद बताई, और उन के देरी से बैअ़त करने की वजह भी बयान की, फिर उन के लिये दुआ़ की। फिर अ़ली रज़ि॰ ने भी खुत्बा दिया और अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ की फ़ज़ीलत बयान करते हुये कहा कि इन से बैअ़त करने की वजह यह नहीं है कि मुझे उन की बुर्जुगी और बड़ाई से इन्कार है, या उन के ख़लीफ़ा बन जाने से मुझे उन पर हसद है, लेकिन बात यह है कि मेरे ख़याल से ख़िलाफ़त (के मामले) में हमारा भी हक़ था (इसलिये मुझ से भी राय-मश्वरा लेना चाहिये था) उन्होंने अकेले ही सब कुछ कर लिया, इसी बात को लेकर मुझे तक्लीफ़ और रन्ज था (इस के अतिरिक्त और कोई बात न थी)

यह सुन कर समस्त मुसलमान मारे खुशी के झूम उठे और सभी ने अ़ली रज़ि॰ की प्रशंसा की कि तुम ने ठीक कहा। फिर जब उन्होंने बैअ़त कर ली तो इस के बाद से लोग अ़ली रज़ि॰ का मान-सम्मान करने लगे, और उन से मिलने-जुलने लगे।

फ़ाइदाः- अ़ली रज़ि॰ ने बैअ़त करने में इसलिये देरी की कि उन से मश्वरा नहीं किया गया, और अबू बक्र ने इसलिये जल्दी की कि उस समय हालात बहुत ख़राब थे, देरी करने में बहुत बड़ा इख़्तिलाफ़ पैदा हो सकता था। दोनों की अपनी-अपनी सोच है और दोनों ही हक़ पर हैं। हज़रत उमर रज़ि॰ ज़रा तेज़ मिज़ाज थे इसलिये अ़ली रज़ि॰ उन से घबराते थे कि हक़ बात ही को अगर अपने ठेठ लहजे में बोल देंगे तो इस से मुझे रन्ज होगा, इसलिये साथ लाने से एहतियात के तौर पर मना कर दिया था।

फ़ातिमा रज़ि॰ जीवन भर नाराज़ रहीं तो इस में अबू बक्र रज़ि॰ का कोई दोष नहीं। महिला तो महिला है, चाहे नबी की बेटी ही क्यों न हो, है वह हव्वा की बेटी, जिस ने स्वँय खाया और पति आदम को खिलाया और जन्नत से निकलवाया (बुख़ारी-3330, 5184) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः महिला जाति की बुद्धि में कमी होती है और दीन में भी कमी होती है (बुख़ारी.....) चाहे वह नबी की पुत्री ही क्यों न हो। आप देखें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी होते हुये आ़इशा और हफ़्सा रज़ि॰ किस प्रकार कार्य किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शहद को अपने ऊपर हराम कर लिया (बुख़ारी 4914, 5216, 5267, मुस्लिम। पारः 28, सूरः तहरीम)

रिवायतों में आता है कि अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ फ़ातिमा रज़ि॰ के पास गये और उस वक़्त तक उन के पास से न टले जब तक राज़ी और खुशनहीं हो गयीं। उस समय एक दूसरे के मर्तबा, बुर्जुगी और बड़ाई का कितना पास-लिहाज़ था और कितनी इन्किसारी थी, आज के पद अधिकारियों और हाकिमों के लिये इस में नसीहत है (तफ़हीमुल् बुख़ारी)

1149:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

फ़रमायाः मैं जो तर्का छोड़ जाऊँ मेरे वारिस (परस्पर) कुछ भी नहीं ले सकते। मेरी पत्नियों को और उस की निग्रानी करने वालों को ख़र्चा देने के बाद जो कुछ बचे वह सब सदक़ा है।

फ़ाइदाः— इस हदीस से स्पष्ट है कि नबी के तर्का का कोई दावा नहीं कर कसता। यही वजह है कि अ़ब्बास और फ़ातिमा रज़ि॰ ने दावा किया तो ख़लीफ़ा अबू बक्र और उमर रज़ि॰ ने अस्वीकार कर दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बीवियों को पूरे साल का खर्चा देने और उस जायदाद की देखभाल करने वाले चौकीदारों को मज़दूरी देने के बाद जो कुछ बचता था उसे ग़रीबों में बाँट दिया जाता था। यही वजह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ढाल दो किलो जौ के बदले में रहने पर रखी हुयी थी।

बाब {माले ग़नीमत में दो हिस्सा घोड़सवार को और एक हिस्सा पैदल मुजाहिद को मिलेगा।}

1150:— अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने घोड़ सवार को दो हिस्से और पैदल सवार को एक हिस्सा दिया।

फ़ाइदाः— घोड़ सवार को दो हिस्सा, यानी एक हिस्सा घोड़े को और एक हिस्सा उस पर सवार मुजाहिद को दिया, इस प्रकार उसे दो हिस्से मिले। घोड़ा भी जिहाद में मुजाहिद की तरह जिहाद करता है इसलिये उस का भी हक़ है।

बाब {जिहाद में जो महिलायें शरीक हों उन्हें माले ग़नीमत से हिस्सा नहीं दिया जायेगा, हाँ, यूँही थोड़ा बहुत (उन को खुश करने के लिये) दे देना चाहिये। इसी प्रकार बच्चों को नहीं क़त्ल करना चाहिये।}

1151:— यज़ीद बिन हुर्मुज़ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि (हरुरा स्थान के रहने वाले ख़ारेजी लोगों के सर्दार) नजदा नामक ने इब्ने अ़ब्बास के पास पत्र लिख कर पाँच प्रश्न किये तो उन्होंने कहाः अगर ज्ञान छुपाने की अनुमति होती तो मैं उसे कभी उत्तर न देता (क्योंकि यह फ़िर्क़ा दीन इस्लाम से बाहर है) उस ने अपने पत्र में लिखा था "हम्द-सलाम के बाद। (1) आप यह बताएँ कि क्या नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जिहाद में महिलाओं को साथ ले जाते थे? (2) क्या उन को माले ग़नीमत में से हिस्सा देते थे? (3) क्या बच्चों को क़त्ल करते थे? (4) एक बच्चा कितना बड़ा होने के बाद यतीम (अनाथ) नहीं कहलाता? माले ग़नीमत में पाँचवा हिस्सा (20 प्रतिशत) यह किस का हक़ है?

इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने उस के उत्तर में यह कहा "तुम ने मुझ से पूछा है कि क्या नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जिहाद में महिलओं को साथ रखते थे? तो (इस का यह उत्तर है) आप साथ रखते थे, चुनान्चे वह घायलों का उपचार करती थीं। उन्हें उपहार और पुरस्कार के तौर पर थोड़ा बहुत दे दिया जाता था, लेकिन अलग से उन के

लिये हिस्सा नहीं लगाया जाता था। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने (काफ़िरो के) बच्चों को कभी भी क़त्ल करने की अनुमति नहीं दी, तुम भी बच्चों की हत्या मत करना। तुम ने यह भी प्रश्न किया है कि यतीम बच्चों का यतीमी का समय कब समाप्त होता है? तो इस का उत्तर यह है कि कुछ लोग ऐसे होते हैं कि उन के दाढ़ी निकल आती है लेकिन वह लेन-देन का मामला नहीं कर पाते (तो ऐसे लोग यतीम ही माने जायेंगे) लेकिन जब वह दूसरों से लेन-देन में हानि-लाभ को समझने लग जायें तो वह अनाथ नहीं कहलायेंगे। तुम ने मुझ से (माले ग़नीमत के) पाँचवा हिस्सा के बारे में पूछा है कि यह किस का हक़ है? तो हम तो यह कहते थे कि हम ही लोगों का हक़ है लेकिन हमारी क़ौम के लोगों ने न माना।

फ़ाइदा:- जिहाद में महिलायें जाती थीं। क्या करती थीं? देखें ऊपर हदीस न॰1130, 1131 और उन का फ़ाइदा। महिलओं और बच्चों की हत्या हराम है, देखें ऊपर 1133, 1134 और उन का फ़ाइदा। यतीमी से उबरने के लिये आयु के साथ बुद्धि का भी बढ़ना अनिवार्य है। यही कारण है कि कुरआन ने कहा है कि जो यतीम बच्चे बालिग हो जायें लेकिन "सफ़ीह" (बेअक़्ल) ही रहें तो उन का माल उन के हवाले न करो, उन की निग्रानी स्वँय करो (सूरः निसा-5) माले ग़नीमत का पाचवाँ हिस्सा कहने को तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और अल्लाह का है (सूरः अनफ़ाल-41) लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "यह हिस्सा मुसलमानों ही पर ख़र्च किया जाता है" (तफ़सीर अहसनुल बयान, सूरः अनफ़ाल आयत 41 की तफ़सीर) इसीलिये इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने कहा कि वह हम मुसलमानों का हिस्सा है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने जो यह कहाः "लेकिन हमारी क़ौम के लोग्रों ने न माना" इस में इशारा अ़ब्बास और फ़ातिमा रज़ि॰ के नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के तर्का के दावा की तरफ़ है, जैसा की ऊपर हदीस न॰ 1147, 1148 में बयान हुआ।

बाब {जिहाद के दौरान बन्दी बनाए गये काफ़िरों पर एहसान करते हुये उन्हें स्वतन्त्र भी किया जा सकता है (अगर हाकिम उचित समझे)}

1152:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने नज्द की तरफ़ कुछ सवारों को भेजा तो वह लोग क़बीला बनी हनीफ़ा के एक व्यक्ति सुमामा बिन उसाल को पकड़ कर लाये। यह व्यक्ति यमामा क़बीले का मुख्या (सर्दार) था। फिर उसे मस्जिदे नबवी के एक खंबे में बाँध दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस के पास जा कर पूछाः ऐ सुमामा! तुम्हारा क्या ख़याल है? उस ने कहाः मैं अच्छा ख़याल रखता हूँ। अगर आप मुझे क़त्ल कर देंगे तो जान के बदले में क़त्ल करेंगे (क्योंकि मैं ने जन्ग में बहुत से मुसलमानों को क़त्ल किया है) और अगर मुझ पर एहसान कर के स्वतन्त्र कर देंगे तो मैं आप का आभारी हूँगा (और आप का मुझ पर एहसान होगा) और अगर आज़ादी के बदले में माल चाहते हैं तो आप

जितना चाहें (हम देने को तय्यार हैं) उस का उत्तर सुन कर आप वापस चले गये। दूसरे दिन फिर आप ने पूछाः ऐ सुमामा! तुम्हारा क्या मेरे बारे में क्या ख़याल है? उस ने कहाः मेरा वही ख़याल है जो पहले दिन कह चुका हूँ। अगर आप एहसान कर के छोड़ देंगे तो मैं आप का आभारी रहूँगा, और अगर (रिहाई के बदले में) आप माल चाहते हैं तो आप जितना चाहेंगे उतना मिलेगा। आप ने उसे वैसे ही छोड़ दिया। फिर तीसरे दिन आ कर पूछाः ऐ सुमामा! अब तुम्हारा क्या ख़याल है (कुछ ख़याल बदला या नहीं) उस ने कहाः वही ख़याल है जो पहले था कि अगर आप मुझे स्वतन्त्र कर देते हैं तो यह आप की कृपा है और अगर क़त्ल कर देते हैं तो बदले में क़त्ल करेंगे (क्योंकि इस से पहले लड़ाई में बहुत से मुसलमानों को क़त्ल कर चुका हूँ) और अगर आप (रिहाई के बदले में) कुछ माल चाहते हैं तो आप जितना चाहेंगे दिया जायेगा। यह सुन कर आप ने फ़रमायाः सुमामा को छोड़ दो, चुनान्चे सहाबा ने उसे स्वतन्त्र कर दिया। इस के बाद सुमामा ने मस्जिद के पास के तालाब में जा कर स्नान किया और मस्जिद में वापस आ कर कहने लगेः मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह पाक के अ़लावा और कोई माबूद नहीं और आप अल्लाह के सन्देष्टा हैं। ऐ मुहम्मद! अल्लाह की क़सम! मुझे इस दुनियाँ में आप का मुँह देख कर सब से ज़्यादा गुस्सा आता था और आप के दीन से सब से अधिक नफ़रत थी। लेकिन अब हाल यह है कि आप का (चेहरा और) दीन मुझे सब से अच्छा मालूम होता है। इसी प्रकार आप के नगर से अधिक बुरा और कोई नगर मेरी नज़र में नही था, लेकिन अब आप का नगर मेरी नज़र में सब से अच्छा लगता है। आप के सवारों ने मुझे उस समय पकड़ा जब मैं उम्रा करने के लिये जा रहा था, तो आप क्या फ़रमाते हैं? यह सुन कर आप ने उन्हें मुबारक बाद दी और उन्हें उम्रा करने का हुक्म दिया। चुनान्चे जब वह मक्का को पहुँचे तो किसी ने कहाः तुम तो बेदीन हो गये हो। इस पर उन्होंने कहाः ऐसी बात नहीं अल्लाह की क़सम! मैंने मुहम्मद के हाथ पर इस्लाम कुबूल किया है, और अल्लाह की क़सम! (ऐ मक्का वालों!) अगर मुझे तन्ग करोगे तो) जब तक नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आदेश नहीं होगा, तुम्हारे पास यमामा से गेहूँ का एक दाना तक नहीं आने पायेगा।

फ़ाइदाः— यह घटना 10 मुर्हरम सन 6 हिजरी की है। मालूम हुआ कि बन्दी बनाना दुरुस्त है और उचित समझे तो छोड़ भी देना दुरुस्त है, और यह इमाम, ख़लीफ़ा और कमान्डर पर निर्भर करता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तीन दिन तक टालते रहे ताकि उन के दिल में इस्लाम घर कर जाये और उन्हें इस्लाम लाने के बारे में मज़ीद ग़ौर-फ़िक्र करने का अवसर प्राप्त हो जाये। इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि अगर काफ़िर ज़ाहिरी तौर पर पवित्र है तो मस्जिद में आवश्यकता पड़ने पर आ सकता है।

यह अपनी क़ौम के सर्दार और ग़ल्ला के बहुत बड़े व्यापारी थे। इन्होंने अपने क़बीला में जा कर लोगों को मक्का वालों से व्यापार करने से रोक दिया जिस से मक्का

वाले भूखों मरने लगे। अन्ततः मजबूर होकर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अनुरोध किया कि आप सुमामा को हुक्म दे दें, चुनान्चे आप के हुक्म से उन्होंने लेन-देन जारी कर दिया। (बुख़ारी-4373, किताबुल मग़ाज़ी)

बाब {यहूदियों को मदीना से निकाल बाहर कर देने का आदेश।}

1153:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग मस्जिदे-नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में बैठे हुये थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (अपने हुजरे से) बाहर आये और कहने लगेः यहूदियों के पास चलो। चुनान्चे हम लोग आप के साथ चले और उन के पास पहुँच गये। फिर आप ने रुक कर उन को आवाज़ लगायीः ऐ यहूदियों! इस्लाम ले आओ। उन्होंने उत्तर दियाः ऐ अबुल क़ासिम! आप ने अल्लाह का सन्देश पहुँचा दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं भी यही सन्देश पहुँचाने ही आया था। फिर (दोबारा) आप ने फ़रमायाः ऐ यहूदियों! इस्लाम ले आओ। उन्होंने फिर कहाः ऐ अबुल क़ासिम! आप ने सन्देश पहुँचा दिया। आप ने फ़रमायाः मैं भी सन्देश पहुँचाने ही आया हूँ। फिर आप ने तीसरी मर्तबा भी यही कहा, फिर आगे यह भी कहाः अच्छी तरह जान लो कि यह ज़मीन अल्लाह और उस के सन्देष्टा की है, इसलिये तुम लोग इस ज़मीन को ख़ाली कर दो, जो बेचना चाहे वह बेच डाले, वर्ना जान लो कि यह ज़मीन अल्लाह और उस के रसूल की है।

बाब {यहूद और नसारा (अहले किताब) को अ़रब दीप से निष्कासित कर देने का बयान।}

1154:- उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने स्वँय नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि मैं यहूद व नसारा को अ़रब महादीप से अवश्य ही खदेड़ कर बाहर कर दूँगा और केवल मुसलमान ही को रहने की अनुमति दूँगा।

फ़ाइदाः- यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी है (3167, 6944, 7348) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन को खदेड़ने की निय्यत कर ली थी, मगर देहान्त फ़रमा गये। लेकिन उमर रज़ि॰ ने अपने शासनकाल में उन को निकाल बाहर किया। कुरआन ने इन्ही के बारे में फ़रमायाः "यह यहूद और नसारा तुम से उस समय तक राज़ी नहीं हो सकते जब तक उन की आज्ञापालन न करो" (सूरः बक़रः120) इस आयत की रोशनी में आज अमरीका सऊदी अ़रब, कुवैत और पाकिस्तान जैसे इस्लामी मुल्कों से जो खुश है इस का यही अर्थ है कि वह उस के मिल्लत की पैरवी कर रहे हैं। और जो पैरवी नहीं कर रहे थे, जैसे अफ़गानिस्तान, इराक़ और जो नहीं कर रहे हैं जैसे ईरान, फ़लस्तीन और शाम, इसीलिये इन से नाराज़ है।

बाब {मुसलमानों से लड़ाई लड़ने वाले काफ़िर और क़ौल-क़रार व अनुबंध तोड़ने वाले के संबन्ध में आदेश।}

1155:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ ने बयान किया कि ख़न्दक़ की लड़ाई में क़ुरैश के एक व्यक्ति इब्ने अरफ़ा नामक ने सअ़द बिन मआ़ज़ को एक तीर मारा जो उन की एक नस में घुस गया। चुनान्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन की देख-भाल के लिये मस्जिदे नबवी में ख़ेमा लगवाया (और वहीं उन को ठहराया) और वहीं निकट ही से हाल-चाल पूछ लेते। जब आप ख़न्दक़ की लड़ाई से वापस लौटे और अभी हथियार उतार कर स्नान ही किया था कि इसी दर्मियान जिब्रील अ़लै॰. अपने सर के बालों को धूल-मिट्टी से झाड़ते हुये आये और कहने लगेः आप ने तो हथियार उतार दिये लेकिन अल्लाह की क़सम! अभी हम ने तो नहीं उतारे हैं, चलिये उन की तरफ़ आक्रमण करना है। आप ने पूछाः किधर? उन्होंने क़बीला बनी क़ुरैश की तरफ़ इशारा किया। चुनान्चे आप ने उन से जिहाद किया तो (उन्होंने हार मान ली और) आप के फ़ैसले पर राज़ी होकर क़िला से नीचे उतर आये। आप ने सअ़द बिन मआ़ज़ को उन के बारे में फ़ैसला सुनाने का इख़्तियार दे दिया तो उन्होंने यह फ़ैसला फ़रमाया कि उन में जो जन्ग करने योग्य हैं उहें तो क़त्ल कर दिया जाये, महिलाओं और बच्चों को बन्दी बना लिया जाये और उन के धन-माल व जायदाद को मुजाहिदों के दर्मियान तक़्सीम कर दिया जाये।

हदीस के रावी हिशाम ने बयान किया कि मेरे पिता जी उर्वा ने बताया कि बाद में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सअ़द से फ़रमाया कि तुम ने बनी क़ुरैज़ा के बारे में जो फ़ैसला सुनाया है क़ुरआन के मुताबिक़ फ़ैसला सुनाया। और एक मतर्बा इस प्रकार फ़रमायाः "तुम ने बादशाह के हुक्म पर फ़ैसला सुनाया।"

फ़ाइदा:– बनी क़ुरैज़ा का क़बीला औस से मुआ़हिदा था कि हम तुम्हारे दुश्मन की सहायता नहीं करेंगे। लेकिन इन्होंने ख़न्दक़ की लड़ाई में अनुबन्ध तौड़ कर मुश्रिकों की ओर से मुसलमानों से लड़े और अनुबन्ध की खुल्लम-खुल्ला धज्जी उड़ा दी तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन पर आक्रमण कर दिया और उन के क़िला को घेर लिया, जब उन का खाना-पानी बन्द हो गया तो उन्होंने हथियार डाल दिया और कहा कि क़बीला औस के सर्दार सअ़द बिन मआ़ज़ जो फ़ैसला कर दें वह हमें स्वीकार है। मआ़ज़ चूँकि घायल थे और मस्जिदे नबवी के ख़ेमे में थे वह बुलाए गये। चूँकि वह घायल थे एक नस में तीर लगा था इसलिये गधे पर सवार हो कर आये तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा से कहाः अपने सर्दार के आदर-सम्मान में खड़े हो जाओ। चुनान्चे सहाबा ने खड़े होकर उन का स्वागत किया और गधे से उतारा, फिर ऊपर हदीस में मज़कूर फ़ैसला सुनाया। (बुख़ारी-4122)

शरीअ़त में अनुबन्ध, क़ौल-क़रार और मुआ़हिदा तोड़ना बहुत बड़ा जुर्म है, इस पर जितना भी दन्ड दिया जाये कम है। ख़न्दक़ की लड़ाई ज़ीक़ादा सन 4 हि॰ में हुयी थी। इस का नाम "जन्ग अहज़ाब" भी है, जिस का विस्तार से बयान पारः21, सूरः अहज़ाब आयत 9,10,11 में है।

आइशा रज़ि॰ ने बयान किया कि सअ़्द का घाव भर गया था लेकिन उन्होंने शहादत की मौत का दुआ़ की और घाव पुनः पक गया और इतना ख़ून बहा कि उन के ख़ेमे से बह कर बनी ग़िफ़ार के ख़ेमे में जो उन के बग़ल ही में था पहुँचने लगा। उन्होंने पूछा कि यह किस का ख़ून मेरे ख़ेमे में आ रहा है तो बताया गया कि सअ़्द के घाव का ख़ून है। फिर इसी बीमारी में वह शहीद हुये। (मुस्लिम, बुख़ारी–4122, 4117)

❀ ❀ ❀

किताबुल् हिज्-रति वल् मग़ाज़ी
(हिजरत और जन्गों का बयान)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हिजरत और आप की निशानियों का बयान।}

1156:– बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ एक मर्तबा मेरे पिता जी आ़ज़िब के घर आये और उन से एक कजावा (हौदज) ख़रीदा, फिर उन से कहा कि अपने पुत्र बरा से कह दो कि इसे मेरे घर तक पहुँचा दे। चुनान्चे पिता जी मुझ से बोले कि इसे उठा कर ले चलो, मैं उसे ले कर चलने लगा, उधर पिता जी भी उस कजावा की क़ीमत लेने के लिये अबू बक्र के साथ हो गये। रास्ता में पिता ने अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ से पूछाः ऐ अबू बक्र! आप ने उस रात किस प्रकार यात्रा की जिस रात नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ मदीना हिजरत के लिये निकले थे। अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने बयान किया कि हम दोनों सारी रात चले यहाँ तक कि सुब्ह हो गयी, फिर दिन चढ़ा और दोपहर का भी समय हो गया। (और हम चलते ही रहे) राह में कोई मुसाफ़िर तक न मिला। इसी बीच हमें एक ऊँचा पत्थर दिखाई दिया जिस का साया (सूरज ढलने से) ज़मीन पर पड़ रहा था, चुनान्चे हम वहाँ ठहर गये। पहले मैं उस पत्थर के पास गया और वहाँ की ज़मीन को अपने हाथों से बराबर किया ताकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस स्थान पर आराम कर सकें, फिर वहाँ एक चादर बिछा दी, फिर आप से अनुरोध किया कि आप सो जायें और मैं दुश्मनों के बारे में पता लगाता हूँ (कि कोई हमारी खोज में आ रहा है या नहीं) इसी बीच मैं ने देखा कि एक बकरियाँ चराने वाला व्यक्ति उसी पत्थर की तरफ़ आ रहा है और वह भी उसी साया के नीचे आराम करना चाहता है। मैं आगे बढ़ कर उस से मिला और पूछाः तू किस के गुलाम हो? उस ने कहाः में मदीना वालों का गुलाम हूँ (यहाँ मदीना से मुराद मक्का है) मैं ने पूछाः तेरी बकरियों में किसी के थन में दूध है? वह बोलाः हाँ है, मैं ने पूछाः तुम दूध दे सकते हो? उस ने कहाः हाँ। फिर उस ने बकरी को पकड़ा। मैं ने कहाः पहले उस का थन बालों और धूल-मिट्टी से साफ़ कर लो ताकि दूध में न पड़ें (हदीस के रावी ने क़हा) कि मैं ने बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ को एक हाथ को दूसरे हाथ पर मारते देखा (कि इस प्रकार उस ने थन से धूल-मिट्टी को झाड़ा) फिर उस चरवाहे ने लक्ड़ी के एक प्याले में थोड़ा सा दूध दूहा। मेरे पास पानी का एक बर्तन था जिस

में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पीने और वज़ू करने के लिये पानी था।

अबू बक्र रज़ि० ने बयान किया कि फिर मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया (कि दूध पीने के लिये उठाऊँ) लेकिन जगाना अच्छा नहीं मालूम हुआ। फिर देखा कि आप स्वँय जाग गये हैं। चुनान्चे मैं ने उस दूध में थोड़ा सा पानी डाला जिस से वह ठन्डा हो गया। फिर आप को पीने के लिये दिया। चुनान्चे आप ने पिया तो मैं खुश हो गया। फिर आप ने फ़रमायाः क्या कूच का समय अभी नहीं हुआ? मैं ने कहा कि हो गया है। फिर हम सूरज ढलने के बाद चले। इसी बीच सुराक़ा बिन मालिक हमारा पीछा करता हुआ आया, उस समय हम पथरीली ज़मीन पर चल रहे थे। मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! हम तो पकड़ लिये गये। आप ने फ़रमायाः चिन्ता न करो अल्लाह हमारे साथ है। फिर आप ने सुराक़ा के लिये बद्दुआ फ़रमायी तो उस का घोड़ा पेट तक ज़मीन में धँस गया। इस पर उस ने कहाः मैं जानता हूँ कि तुम दोनों ने ही मेरे बारे में बद्दुआ की है। अब मैं अल्लाह की क़सम खा कर कहता हूँ कि आप दोनों की खोज में जो भी आयेगा उसे वापस लौटा दूँगा, इसीलिये मेरे लिये दुआ कर दें (कि मेरा घोड़ा ज़मीन से निकल आये) चुनान्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दुआ की और उस का घोड़ा आज़ाद हो गया और वह वापस लौट गया। रास्ता में जो कोई भी खोज में आता दिखाई देता वह उस से कह देता कि मैं इधर सब स्थान को देखकर आ रहा हूँ (मुझे कोई नहीं मिला) अर्थात यह कि जो कोई भी उसे मिलता उस को वापस लौटा देता। अबू बक्र सिद्दीक़ ने बयान किया कि सुराक़ा ने जो वादा किया उसे पूरा किया (और सब को वापस लौटा दिया)

फ़ाइदाः– यह लंबी हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी है (3905) इस मैं है कि आप ने राह बताने के लिये अ़ब्दुल्लाह बिन अरीक़त को किराया पर लिया था। सुराक़ा के बारे में आप ने कहा कि तुम्हारे हाथ में किसरा के सोने के कन्गन देख रहा हूँ। चुनान्चे उमर फ़ारुक़ रज़ि० के शासन काल में उन के हाथ में किस्रा का कंगन पहनाया गया। जब उस का घोड़ा ज़मीन से निकल आया तो उस ने अमान पत्र माँगा जिसे आ़मिर बिन फुहैरा ने चमड़े पर लिख कर दिया। यात्रा के दौरान दो ऊँटनियाँ भी थीं।

बाब {बद्र की लड़ाई का बयान।}

1157:– अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अबू सुफ़यान के आने की सूचना मिली (तो इस मौक़ा पर आप ने सहाबा से मश्वरा किया) तो अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने आप से बात-चीत की लेकिन आप ने कोई तवज्जोह न दी, उमर रज़ि० ने भी कुछ मश्वरा दिया लेकिन इस पर भी आप ने कुछ ध्यान न दिया। यह देख कर (क़बीला अन्सार के सर्दार) स-अ़द बिन उबादा रज़ि० उठे और कहने लगेः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप हमारी राय जानना चाहते हैं? उस अल्लाह की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान

है अगर आप केवल इशारा भी कर दें कि अपने घोड़ों को समुद्र में डाल दो तो हम तुरन्त आप के आदेश का पालन करने को तय्यार हैं। और अगर आप हुक्म दें कि हम अपने घोड़ों को "बर्कुल ग़िमाद" स्थान पक दौड़ा कर ले जायें तो हम इस आदेश पर अवश्य ही अ़मल करेंगे।

इस के बाद आप ने लोगों को जन्ग में शामिल होने का अहवान किया और सभी लोग आप के साथ रवाना होकर बद्र के स्थान पर ठहर गये। उस स्थान पर कुरैश के पानी पिलाने वाले लोग मिले जिन में हज्जाज का एक काला कलूटा गुलाम था, सहाबा ने उसे पकड़ कर उस से अबू सुफ़यान और उस के साथियों की गतिविधियों के बारे में पूछा तो उस ने बताया कि मैं अबू सुफ़यान के बारे में नहीं जानता, अल्बत्ता अबू जेहल, उत्बा, शैबा और उमय्या बिन ख़लफ़ (आदि) उपस्थिति हैं। इस पर सहाबा ने उसे मारना-पीटना आरंभ किया तो उस ने अबू सुफ़यान के बारे में जानकारी देने का वादा किया। लेकिन जब उसे मारना बंद किया और अबू सुफ़यान के बारे में जानकारी माँगी तो उस ने पुनः यही कहा कि मैं अबू सुफ़यान के बारे में तो नहीं जानता, अल्बत्ता अबू जेहल, उत्बा, शैबा, और उमय्या बिन ख़ल्फ़ वहाँ मौजूद है। इस पर सहाबा फिर उसे मारने लगे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस समय नमाज़ पढ़ रहे थे। जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो फ़रमाया कि उस अल्लाह की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है, जब वह तुम से सच बोलता है (कि मैं अबू सुफ़यान के बारे में नहीं जानता) तो उसे मारने लगते हो और जब वह झूठ बोलता है (कि मत मारो अभी मैं बताता हूँ) तो उसे छोड़ देते हो (यह आप ने वह्यि द्वारा मिली जानकारी के आधार पर कहा था।) हमें अबू सुफ़यान के बारे में जानकारी प्राप्त करने से क्या लेना देना है। फिर आप ने ज़मीन पर हाथ रख कर बताया कि इस स्थान पर फ़लाँ काफ़िर मरेगा और इस स्थान पर फ़लाँ मरेगा। हदीस के रावी अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि आप ने जिस-जिस स्थान पर हाथ रख कर बताया था उसी स्थान पर वह लोग मरे और तनिक भी फ़र्क़ नहीं हुआ।

फ़ाइदा:— जन्ग के बाद वह लोग वहीं पड़े हुये मिले जहाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उंगली से इशारा किया था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जन्ग की समाप्ति के पश्चात् इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ को अबू जेहल के शव की खोज के लिये भेजा तो क्या देखा कि अफ़रा के दोनों बेटों ने उसे मार कर गिरा दिया है। चुनान्चे उन्होंने उस की दाढ़ी पकड़ कर कहाः क्या तू ही अबू जेहल है? उस ने कहाः क्या मुझ से भी कोई बड़ा आदमी है जिस को क़ौम वालों ने मारा है (बुख़ारी-3963) एक रिवायत में है कि जब इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ ने उस का सर काटने के लिये उस की गर्दन पर पाँव रखा तो वह बोलाः ऐ ज़लील बकरियाँ चराने वाले! अरे तू ने कहाँ पैर रख दिया है, मेरी गर्दन लंबी काटना ताकि देखने वाले कहें कि यह किसी सर्दार का शव है। (देखें इसी पुस्तक की हदीस न॰ 1170)

1158:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बुसैरा नामक एक व्यक्ति को जासूस बना कर भेजा कि वह अबू सुफ़यान के क़ाफ़िला की गतिविधियों की सूचना लाये। चुनान्चे जब वह सूचना लेकर लौटा तो उस समय मेरे घर में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अतिरिक्त और कोई न था। हदीस के रावी ने बयान किया कि अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की जिस पत्नी का नाम लिया था मैं उन्हें भूल गया। फिर उन्होंने हदीस बयान की कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बाहर निकले और फ़रमायाः मैं एक आवश्यक कार्य से बाहर जा रहा हूँ इसीलिये जिस के पास सवारी हो वह भी मेरे साथ चले। इस पर चन्द लोगों ने कहा कि हमारी सवारियाँ मदीना की ऊँचायी वाले हिस्से पर हैं (इसलिये उन्हें जा कर ले आयें) आप ने फ़रमायाः नहीं (उन्हें लाने की आवश्यक्ता नहीं) जिन के पास मौक़े पर मौजूद हैं केवल वहीं चलें। फिर आप उन के साथ मदीना से रवाना हुये और मुश्रिकों से पहले ही बद्र के स्थान पर पहुँच गये। इतने में मुश्रिकों का क़ाफ़िला भी आ पहुँचा तो आप ने फ़रमायाः तुम में से कोई आगे न बढ़े जब तलक में आगे न बढ़ूँ। फिर जब मुश्रिक निकट पहुँच गये तो आप ने फ़रमायाः उठ कर उस जन्नत में जाने के लिये तय्यार हो जाओ, जिस की चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है। यह सुन कर उमैर बिन हम्माम अन्सारी रज़ि॰ ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! क्या जन्नत की चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है? आप ने फ़रमायाः हाँ। उन्होंने कहाः सुब्हानल्लाह। आप ने फ़रमायाः तुम्हारे इस कहने का क्या अर्थ है? उन्होंने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कोई बात नहीं। मैं ने ख़ुशी में कहा कि मैं भी जन्नत वालों में से हो जाऊँ। आप ने फ़रमायाः तुम जन्नत वालों में से हो। यह सुन कर उन्होंने अपने थैले से चन्द खजूरें निकालीं और खाने लगे। फिर उन्हें ख़याल आया कि इन खजूरों के खाने में काफ़ी समय बीत जायेगा, चुनान्चे जितनी खजूरें बची थीं उन्हें फेंक दीं और जन्ग करते हुये शहीद हो गये।।

बाब {बद्र की लड़ाई में फ़रिश्तों की सहायता करने, बन्दियों को हर्जाना देकर छोड़ने और माले–ग़नीमत के हलाल होने का बयान।}

1159:– इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ ने बयान किया बद्र की लड़ाई के दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुश्रिकों को देखा तो उन की संख्या एक हज़ार थी और सहाबा की 319। यह देख कर क़िब्ला की तरफ़ मुँह कर के हाथ फैला कर अल्लाह पाक से दुआ माँगने लगेः ऐ मेरे मौला! तू ने जो मुझ से वादा फ़रमाया है उसे पूरा फ़रमा। ऐ मेरे मौला! जिस का तू ने देने का वादा फ़रमाया था उस को मुझे दे दे। ऐ मेरे मौला! अगर मुसलमानों की यह छोटी सी जमाअ़त तबाह हो गयी तो फिर इस पृथ्वी पर तेरा नाम लेने वाला कोई न बाक़ी रहेगा। आप अपेन हाथों को फैलाए हुये बराबर इसी प्रकार दुआएँ करते रहे, यहाँ तक कि आप की चादर

आप के कंधों से सरक कर ज़मीन पर गिर गयी (और दुआ में लीन होने के नाते आप को ख़बर ही न हुयी) इतने में अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने पीछे से आ कर चादर को (दोबारा) आप के कन्धों पर डाल दिया और पीछे ही से आप से चिमट कर कहने लगे: ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! बस आप की इतनी दुआ बहुत काफ़ी है, अल्लह पाक ने आप से जो वादा किया है उसे पूरा करेगा, इस पर अल्लाह तआ़ला ने (सूरः अन्फ़ाल की) यह आयत नाज़िल फ़रमायीः

> "और उस समय को याद करो जब तुम अल्लाह से (सहायता के लिये) दुआएँ माँग रहे थे तो उस ने स्वीकार करते हुये फ़रमायाः कि मैं लगातार यके बाद दीगरे आ कर सहायता करने वाले फ़रिश्तों से तुम्हारी सहायता करुँगा।"
> (सूरः अनफ़ाल-9, पारः9)

चुनान्चे अल्लाह पाक ने (वादानुसार) आप की सहायता की।

अबू ज़मील से रिवायत है कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने बयान किया कि जन्ग के दिन एक मुसलमान अपने आगे वाले काफ़िर का पीछा करते हुये जा रहा था कि इसी दर्मियान ऊपर से किसी के कोड़ा मारने की आवाज़ सुनाई दी जो यह कह रहा था कि "ऐ हेज़दुम! आगे बढ़" फिर क्या देखा कि वह काफ़िर उस मुसलमान के सामने चित पड़ा हुआ है। उस मुसलमान ने उस काफ़िर के शव को देखा तो उस की नाक पर इस प्रकार का निशान था जैसे किसी ने उसे कोड़ा मारा हो। उस का मुँह फट गया था और उस के चोट का निशान भी हरा हो गया था। फिर जब उस अन्सारी मुसलमान ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर पूरी घटना बयान की तो आप ने फ़रमायाः तुम सत्य कह रहे हो, यह सहायता तीसरे आकाश से आयी थी। चुनान्चे उस दिन मुसलमान मुजाहिदों ने सत्तर काफ़िरों को मौत के घाट उतारा और उतने ही को बन्दी भी बनाया।

अबू ज़मील ने रिवायत किया कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने बयान किया कि जब बन्दियों को गिरफ्तार कर के नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास लाया गया तो आप ने अबू बक्र और उमर से उन के बारे में राय माँगी तो अबू बक्र ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! चूँकि यह अपने ही गोत्र और वंश के लोग हैं, इसीलिये मेरे ख़याल में इन से हर्जाना (फ़िदया) लेकर इन्हें छोड़ देना चाहिये, ऐसा करने से हमारी उन पर धाक बैठ जायेगी और अल्लाह ने चाहा तो भविष्य में उन्हें इस्लाम को स्वीकार करने की तौफ़ीक़ भी होगी। फिर आप ने पूछाः ऐ उमर बिन ख़त्ताब! तुम्हारी क्या राय है? उन्होंने कहाः अल्लाह की क़सम! मेरी वह राय हर्गिज़ नहीं जो अबू बक्र की है। मेरी राय तो यह है कि आप उन्हें मेरे हवाले कर दें ताकि मैं उन की गर्दनें मार दूँ। अ़क़ील को (उन के सगे भाई) अ़ली के हवाले कीजिये ताकि वह उन की गर्दनें मारें, और मेरे फ़लाँ संबन्धी को मेरे हवाले कीजिये ताकि मैं उस का सर उस के धड़ से अलग कर दूँ, क्योंकि यह लोग काफ़िरों के सर्दार हैं। लेकिन आप ने मेरी राय पर अबू बक्र की राय को तर्जीह दी।

फिर जब मैं दूसरे दिन आप के पास उपस्थित हुआ तो उस समय अबू बक्र और आप दोनों ही रो रहे थे। मैं ने पूछाः आप मुझे बतायें कि क्यों रो रहे हैं? अगर मैं भी रो सका तो रोने लगूँगा, वर्ना आप दोनों को रोता देख कर रोने की सूरत ही बना लूँगा। आप ने फ़रमायाः रोने का यह कारण है कि उन बन्दियों सेहर्जाना वसूल करेन की वजह से मुझे अ़ज़ाब दिखाया गया, वह अ़ज़ाब उस पेड़ से भी अधिक निकट दिखाया गया जो पेड़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकट था। इस के पश्चात् अल्लाह पाक ने (सूरः अनफ़ाल की) यह आयत उतारी

> "सन्देष्टा के लिये तो यह कदापि उचित नहीं कि उस के पास बन्दी रहें जब तक मुल्क में काफ़िरों को अच्छी तरह क़त्ल न कर दिया जाये। तुम दुनिया का माल चाहते हो, हालाँकि अल्लाह तुम को आख़िरत का सवाब देना चाहता है। और अल्लाह पाक ज़र्बदस्त और हिक्मत वाला है। अगर अल्लाह पहले हीसे एक बात न लिख चुका होता (कि तुम्हें दन्ड नहीं दिया जायेगा) तो तुम ने बन्दियों से हर्जाना (फ़िदया) के तौर पर जो लिया है उस जुर्म पर तुम पर दुःखदाई दन्ड उतरता। (जो हुआ सो हुआ) अब जो तुम ने हर्जाना का माल प्राप्त किया है उसे खाओ-पियो, वह हलाल और पाक है, और अल्लाह से डरते रहो, क्यों कि अल्लह पाक बड़ा माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।" (सूरः अनफ़ाल-67, 68, 69)

फ़ाइदाः— मक्का के लोग इस्लाम और मुसलमानों के खुल्लम-खुल्ला दुश्मन थे, वह हर समय उन्हें मिटा देने की सोचते थे, इसलिये मुसलमानों को भी हक़ था कि जब चाहें और जहाँ चाहें उन पर आक्रमण कर दें। अनुबन्ध और मुआ़हिदा न होने के नाते दोनों फ़रीक़ को खुली छूट थी।

इसी दर्मियान अबू सुफ़यान की सर्दारी में एक क़ाफ़िला मुल्क शाम व्यापार करने गया था, और वहाँ से खाने-पीने का सामान और हथियार आदि ला रहा था (ताकि भविष्य में मुसलमानों के ख़िलाफ़ उन्हें प्रयोग किया जाये) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक जासूस भेजा तो उस ने आ कर बताया, आप भी उस क़ाफ़िला को पकड़ने के लिये 313 सहाबा के साथ रवाना हुये! उधर अबू सुफ़यान को अपने पकड़े जाने की भनक लग गयी, इसीलिये उस ने आ़म रास्ता छोड़ कर दूसरे रास्ता पर चल पड़ा और मक्का सूचना भेज दी कि मुझे मुसलमानों से बचाया जाये। सूचना मिलते ही अबू जेहल और मक्का के बड़े-बड़े सर्दार जिन का माल अबू सुफ़यान ला रहा था, बचाने के लिये निकल पड़े। अल्लह की शान कि सुफ़यान का काफ़िला तो कन्नी काट कर बच निकला, लेकिन अबू जेहल का लश्कर मुसलमानों के आमने-सामने आ गया। दोनों के दर्मियान जन्ग हुयी,

फ़रिश्तों ने मुसलमानों को सहायता की। दुश्मन के 70 बन्दी बनाए गये, फिर अबू बक्र के मश्वरा से हर्जाना लेकर छोड़ दिये गये।

लेकिन यह मौक़ा हर्जाना लेकर छोड़ने का नहीं था, बल्कि उन का एक तरफ़ से सफ़ाया कर देना चाहिये था, ताकि उन की हमेशा के लिये कमर टूट जाती और उन के दिग्गज नेताओं का सफ़ाया हो जाता, इस प्रकार हमेशा के लिये उन पर मुसलमानों की धाक बैठ जाती, भविष्य में पुनः मुसलमानों से लड़ने की कोई क़बीला हिम्मत न करता। लेकिन मुसलमानों ने उन काफ़िरों से माल वसूली के चक्कर में हर्जाना लेकर उन्हें छोड़ दिया। इस पर अल्लाह पाक ने नाराज़ होकर अज़ाब भेजा जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बिल्कुल निकट आ गया, लेकिन आप की दुआ़ से वापस हो गया।

अगर पहले ही मरहले में उन की जम कर कुटाई हो जाती और उन का तिया पाँचा हो जाता, फ़ौजी और नफ़री शक्ति घट जाती, तो बाद में जन्ग उहुद आदि की नौबत न आती। इसी तफ़सील का इस हदीस में ज़िक्र है।

बाब {बद्र की लड़ाई में मारे जाने वाले काफ़िरों से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का बात–चीत करना।}

1160:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बद्र में मारे गये काफ़िरा के शवों को तीन दिन तक यूँही पड़ा रहने दिया, फिर चौथे दिन उन शवों के पास जा कर उन्हें आवाज़ लगाते हुये पुकाराः ऐ अबू जेहल, ऐ उमय्या बिन ख़ल्फ़, ऐ उत्बा बिन रबीआ़, ऐ शैंबा बिन रबीआ़! तुम्हारे रब ने जो तुम्हें देने का वादा किया था, उसे तुम ने सचमुच पा लिया ना? मेरे रब ने जो मुझे देने का वादा किया था उसे तो मैं ने सचमुच पा लिया। उमर फ़ारुक़ रज़ि॰ ने जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का उन काफ़िरों के शवों से बात करते सुना तो पूछाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! क्या यह सुनते हैं और उत्तर भी देते हैं? आप ने फ़रमायाः उस अल्लाह की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है, मैं उन से जो कुछ कह रहा वह तुम से कहीं अधिक सुन रहे हैं, लेकिन उत्तर नहीं दे सकते। फिर आप के हुक्म से उन के शवों के घसीट कर बद्र के कुएँ में डाल दिया गया।

फ़ाइदाः– काफ़िरों के शव मुर्दा और सड़े हुये थे और उन से बातें कर रहे थे, तो क्या वह सुन रहे थे?

बाब {उहुद की लड़ाई का बयान।}

1161:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि उहुद की लड़ाई के दिन (जब इस्लामी लश्कर बिखर गया तो) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अकेले पड़ गये, और केवल सात अन्सारी और दो क़ुरैशी ही आप के पास रह गये। चुनान्चे जब काफ़िरों ने आप पर आक्रमण बोल दिया तो आप ने फ़रमायाः इन्हें कौन पीछे ढकेलता है? (जो कोई इन्हें मुझ से ढकेल देगा) वह सीधे जन्नत में जायेगा, या वह

जन्नत में मेरे साथ होगा। यह सुन कर एक अन्सारी सहाबी ने आगे बढ़ कर उन काफ़िरों से मूर्चा लिया यहाँ तक कि शहीद हो गये।फिर काफ़िरों ने आक्रमण कर दिया तो आप ने पुनः फ़रमायाः जो कोई इन्हें मुझ से परे ढकेल देगा वह सीधे जन्नत में जायेगा, या वह मेरे साथ जन्नत में होगा। चुनान्चे फिर एक अन्सारी सहाबी आगे बढ़े और वह भी मूर्चा लेते हुये शहीद हो गये। इसी प्रकार सातों सहाबी शहीद हो गये।

फ़ाइदाः– 'मेरे सहाबा ने मेरे साथ न्याय नहीं किया' यानी सातों अन्सारी सहाबा ने हमारे लिये प्राण त्याग दिये और दोनों कुरैशी टस से मस न हुये। या यह भी अर्थ हो सकता है कि इन नौ को छोड़ कर बाक़ी पीठ फेर कर भाग खड़े हुये।

इस घटना की तफ़सील यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तीर चलाने वालों के एक दस्ता को अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि॰ की कमान्डरी में पहाड़ी के एक दर्रे पर मुक़र्रर कर दिया और फ़रमाया कि हमारी जीत हो या हार इस दर्रे को कदापि न छोड़ना। लेकिन जब मुसलमानों ने मैदान जीत लिया और माले ग़नीमत लूटने लगे तो यह लोग भी उनके साथ शामिल हो गये और दर्रा ख़ाली छोड़ दिया। ख़ालिद बिन वलीद ने ख़ाली देख उसी ओर से पीछे से आक्रमण कर दिया। मुसलमान इस अचानक हम्ला से घबरा गये और सब पीठ फेर का भाग खड़े हुये। उस मौक़े पर यही चन्द सहाबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास बचे थे। (बुख़ारी–4043, 4064)

बाब {उहुद के दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम घायल हुये थे, इस घटना का बयान।}

1162:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब उहुद की जन्ग में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दाँत टूटे और सर में घाव लगा, तो आप ख़ून को साफ़ करते जातेऔर फ़रमाते जातेः उस क़ौम का कैसे उद्धार (नजात) होगा जिस ने अपने सन्देष्टा को घायल किया और उस के दाँत तोड़े, हालाँकि वह उन्हें अल्लह की तरफ़ बुलाता था। उस मौक़े पर यह आयत नाज़िल हुयीः "ऐ सन्देष्टा! आप का इस काम में कोई दख़ल नहीं कि अल्लाह उन को तौबा की तौफ़ीक़ दे (और वह मुसलमान हो जायें) या उन के अ़त्याचारी होने के नाते उन को दन्ड दे।" (पारः4, आले अ़िम्रान–128)

1163:– अबू हाज़िम से रिवायत है कि सहल बिन सअ़द साअ़दी रज़ि॰ ने बयान किया कि उहुद की लड़ाई में आप के सामने के दाँत टूट गये और खोद के टूटने के नाते सर घायल हो गया। उस समय आप की पुत्री फ़ातिमा आप के ख़ून को धो रही थीं और अ़ली रज़ि॰ पानी डाल रहे थे। लेकिन जब फ़ातिमा ने देखा कि पानी से घाव धोने से ख़ून और अधिक बह रहा है तो उन्होंने चटाई का एक टुकड़ा जला कर उस राख को घाव में भर दिया तब ख़ून का बहना बन्द हुआ।

फ़ाइदाः– आप के आगे के चार दाँत टूटे थे (बुख़ारी–4073) सर की सुरक्षा के लिये आप लोहे का खोद पहने हुये थे कि उस पर अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुम्या ने किसी हथियार

से वार कर दिया था जिस से खोद की कीलें आप के सर में धँस गयी थीं। (बुख़ारी-4074, 4075)

बाब {उहुद की जन्ग में जिब्रील और मीकाईल फ़रिश्तों ने भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ से जिहाद किया था।}

1164:- सअ़द बिन अबू वक़्क़ास रज़ि॰ सेरिवायत है उन्होंने बयान किया कि उहुद की लड़ाई में मैं ने देखा कि दो व्यक्ति उजला वस्त्र पहने हुये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ से जम कर लड़ाई लड़ रहे हैं, फिर बाद में उन को नहीं देखा गया। वह जिब्रील और मीकाईल फ़रिश्ते थे।

फ़ाइदा:- बद्र की लड़ाई में भी फ़रिश्तों ने सहायता की थी जिन की संख्या 1000 थी (सूरः अन्फ़ाल 9) और उस समय अल्लाह ने यह भी वादा किया था कि आवश्यक्ता पड़ने पर पाँच हज़ार और फ़रिश्तों की कुमक तैयार है (आले इ़म्रान-125) लेकिन इन के लड़ने की नौबत ही नहीं आयी और बद्र फ़त्ह हो गया। लेकिन उहुद की जन्ग में उन दो फ़रिश्तों के अतिरिक्त और किसी के लड़ने का ज़िक्र नहीं है।

1165:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक उन लोगों पर बहुत ही नाराज़ है जिन्होंने ऐसा किया, फिर आप ने अपने टूटे हुये दाँतों की तरफ़ इशारा किया (यानी जिन्होंने मेरे दाँत तोड़े) और उस व्यक्ति पर भी बहुत नाराज़ है जिसे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जिहाद में क़त्ल कर दें (क्योंकि उस से बड़ा मन्हूस कौन होगा जो सन्देष्टा के आमने-सामने जिहाद करे)

बाब {आप की क़ौम ने आप पर जो अत्याचार किये उन का बयान।}

1166:- आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक दिन मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछाः क्या उहुद की लड़ाई के दिन से भी अधिक कष्ट दिन आप पर कोई बीता है? आप ने उत्तर दिया कि मैं ने तुम्हारी क़ौम (क़ुरैश मक्का) से बड़ी कठिनाइयाँ झेली हैं। और सब से अधिक तक्लीफ़ मुझे अक़्बा (घाटी) वाले दिनों में पहुँची। मैं ने (ताइफ़ के सर्दार) यालील बिन अ़ब्द कलाल के सामने अपने आप को पेश किया (यानी उसे इस्लाम लाने की दावत दी) लेकिन उस ने मेरी बात न मानी। चुनान्चे मैं मायूस होकर वापस लौटा, उस समय मेरे चेहरे सेरन्ज व ग़म (निराशा) स्पष्ट रुप से झलक रहा था। मुझे उस समय कुछ होश न था (और बराबर चला जा रहा था) जब क़र्नुस्सआ़लिब के स्थान पर पहुँचा तो सर उठा कर ऊपर की तरफ़ देखा तो क्या देखा कि बादल का एक टुकड़ा मुझ पर साया किये हुये है और उस में जिब्रील मौजूद हैं। उन्होंने मुझे पुकार कर कहा कि आप की क़ौम वालों से जो आप की बात-चीत हुयी और उन्होंने आप को जो उत्तर दिया वह सब अल्लाह पाक ने सुन लिया।

आप के पास पहाड़ के फ़रिश्ते को भेजा है ताकि आप उसे जो हुक्म दें वह उस पर अ़मल करें चुनान्चे उस पहाड़ के फ़रिश्ते ने मुझे पुकारा और सलाम किया और कहा कि ऐ मुहम्मद! आप की क़ौम वालों ने आप की नसीहत के जवाब में जो कुछ कहा उसे उस ने सुन लिया। उस ने मुझे आप के पास इसलिये भेजा है कि मैं हुक्म को बजा लाऊँ। तो अगर आप हुक्म दें तो मैं इन्हें दो पहाड़ियों के दर्मियान दबा दूँ। यह सुन कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया (नहीं) मुझे आशा है कि उन की औलाद जो पैदा होगी वह अल्लाह ही की इबादत करेगी और उस के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराएगी।

फ़ाइदाः— दोनों पहाड़ियों से मुराद "अबू क़ैस" की पहाड़ी और उस के सामने मक्का की पहाड़ी "क़ओ़क़आ़न" है। यहाँ पर एक शब्द "अ़क़बा" आया है, यह ताइफ़ के रास्ते में एक घाटी का नाम है। दूसरी रिवायतों में है कि ताइफ़ वालों ने इन्कार किया और चन्द ओबाशों को आप के पीछे लगा दिया, जिन्होंने इतना पथर मारा कि आप की एड़ी घायल हो गयी और जूता खून से भर गया, अप बेहोश हो गये। किसी ने बाग़ में ला कर पानी छिड़का तब आप को होश आया। फिर वहाँ से वापस हुये तो रास्ता में पहाड़ के फ़रिश्ता से बात-चीत हुयी। (बुख़ारी-3231)

1167:— जुन्दुब बिन सुफ़यान रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक लड़ाई में आप की उंगली को मार लगी तो उस से खून बहने लगा तो आप ने फ़रमायाः तुम एक उंगली ही तो हो जिस से खून बहा और अल्लाह की राह में तक्लीफ़ उठाई।

फ़ाइदाः— यानी अल्लाह की राह में इतनी सी तक्लीफ़ की कोई अहमियत नहीं है।

1168:— इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ख़ान-ए-काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे थे, वहीं अबू जेहल भी अपने मित्रों के साथ बैठा हुआ था। एक दिन पहले एक ऊँटनी ज़ब्ह की गयी थी (जिस की बच्चादानी पड़ी हुयी थी) अबू जेहल नेकहाः तुम में से कौन उस बच्चादानी को ला कर जब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) सज्दा की हालत में हों, उन के कंधों के दर्मियान ला कर डाल देता है। यह सुन कर उन में का एक अभागा (अ़ब्दुल्लाह बिन अबू मुअ़ीत) उसे उठा लाया और जब आप सज्दे में गये तो उसे आप के दोनों मोंढों के दर्मियान डाल दिया, फिर ठट्ठा मार कर हँसने लगे, यहाँ तक कि मारे हँसी के एक दूसरे के ऊपर लोट पोट हो गये।

इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं खड़ा यह तमाशा देखता रहा, अगर हम भी ताक़तवर होते तो उसे उतार कर फ़ेंक देते (लेकिन मेरे साथ मेरा कोई सहयोगी और साथी न था) बहरहाल नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपना सर नहीं उठाया और उसी हालत में सज्दे ही में रहे। इसी दर्मियान किसी ने फ़ातिमा रज़ि॰ को सूचना दी तो उन्हेंाने आ कर उस बच्चा दानी को पीठ से उतारा। उस समय छोटी सी बच्ची थीं।

उन्होंने आ कर उन लोगों को बुरा-भला भी कहा।

फिर आप जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुये तो बड़ी ऊँची आवाज़ से उन लोगों के लिये बद्दुआ की और तीन-तीन बार बद्दुआ की। (आप का यह नियम था कि) जब अल्लाह पाक से कुछ माँगतेतो तीन बार माँगते। चुनान्चे आप ने फ़रमायाः ऐ अल्लाह! तू कुरैश वालों को इस जुर्म का दन्ड दे, और इसी वाक्य को तीन मतर्बा दोहराया। जब उन लोगों ने सुना तो मारे डर के हँसी भूल गये। आप ने फ़रमायाः ऐ अल्लाह! हिशाम के पुत्र अबू जेहल, रबीआ के पुत्र उत्बा और शैबा, उक़्बा के पुत्र वलीद, ख़ल्फ़ के पुत्र उमय्या और अबू मुअीत के पुत्र उक़्बला को तबाह-बर्बाद कर दे (इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ नेकहा) सात्वें व्यक्ति का नाम मुझे नहीं याद रहा। फिर उस अल्लाह की क़सम जिस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सच्चा सन्देष्टा बना कर भेजा, जिन लोगों के हक़ में आप ने बद्दुआ की थी, मैं ने उन्हें बद्र के मैदान में पड़े हुये देखा, और उन के शवों को बद्र के कुएँ में घसीट-घसीट कर डाला गया।

हदीस के रावी अबू इस्हाक़ ने कहा कि वलीद बिन उक़्बा का नाम इस हदीस में ग़लत है।

फ़ाइदाः- उस सात्वें अभागे का नाम अ़म्मारा बिन वलीद था। यह व्यक्ति मुल्क हबश में जा कर बेमौत मरा। और कोई भी आप की बद्दुआ के प्रभाव से न बच सका। (बुख़ारी-520) हदीस में 'सला' का शब्द आया है जिस का अर्थ है "बच्चादानी", लेकिन कुछ लोगों ने "ओझड़ी" भी तर्जुमा किया है। बुख़ारी में है कि अबू जेहल ने कहा " कौन ऊँट का गोबर, खून और ओझड़ी ला कर डाल देगा।" इमाम बुख़ारी रह॰ ने इस हदीस से बहुत से मस्अले बयान किये हैं (1) नमाज़ की हालत में इत्तिफ़ाक़ से पानाकी लग जाने से नमाज़ हो जाती है (हदीस न॰ 240) (2) नमाज़ की हालत में कोई महिला नमाज़ी को छू ले तो नमाज़ ख़राब नहीं होगी (520) ज़ालिम के लिये बद्दुआ करना जाइज़ है (2934) (3) ज़ालिमों के शवों की तौहीन जाइज़ है कि गटर और खड में डाल दिया जाये, आदि।

बाब {सन्देष्टाओं ने अपनी क़ौम के लोगों की यातना और कष्ट पर सब्र से काम लिया।}

1169:- अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि गोया कि आज भी मेरी आँखों के सामने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक सन्देष्टा का हाल बयान कर हैं, जब आप बयान कर रहे थे कि उन की क़ौम के लोगों ने उन्हें मारा पीटा तो वह सन्देष्टा अपने मुँह से खून पोंछते जाते थे और यह दुआ करते जातेथे कि ऐ मेरे मौला! मेरी क़ौम के लोगों को क्षमा दे दे, क्योंकि यह नादान लोग हैं।

फ़ाइदाः- अभी ऊपर हदीस में बयान हुआ कि पहाड़ की निग्रानी करने वाले फ़रिश्ते से आप ने कहा था कि इन्हें दन्ड न दो, मुझे आशा है कि इन की नस्ल आज नहीं तो कल ईमान ले आयेगी, और एक अल्लाह की इबादत व आज्ञा पालन करेगी।

बाब {अबू जेहल के क़त्ल का बयान।}

1170:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कहा: अबू जेहल किस हालत में है इस की सूचना कौन ला कर देगा? यह सुन कर इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ गये तो क्या देखा कि अ़फ़रा के बेटों ने उसे ऐसी मार लगाई है कि वह ठन्डा पड़ गया है (और प्राण त्यागने ही वाला है) चुनान्चे इब्ने मस्ऊद ने उस की दाढ़ी पकड़ कर पूछा: क्या तू ही अबू जेहल है? उस ने कहा: क्या तुम ने कभी मुझ से भी बड़े मर्तबे वाले किसी व्यक्ति को क़त्ल किया है? या यह कहा कि "क्या किसी क़ौम ने किसी ऐसे व्यक्ति को क़त्ल किया है जो मर्तबे में मुझ से बड़ा हो?" फिर उस ने कहा: काश, बकरियाँ चराने वाले के अ़लावा कोई दूसरा मुझे क़त्ल करता।

फ़ाइदा:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ आरंभ में बकरियाँ चराया करते थे, अबू जेहल का इशारा इसी तरफ़ था। दूसरी रिवायत में है कि उस ने कहा: "ओ चरवाहे! ज़रा मेरी गर्दन लंबी काटना ताकि कोई देखने वाला देखे तो कहे कि किसी क़ौम के सर्दार और मुखिया का शव है।" इस की हत्या करेन वाले बच्चे कौन थे? देखें पीछे की हदीस न॰ 1142 और उस का फ़ाइदा।

बाब {कअ़ब बिन अशरफ़ के क़त्ल किये जाने की घटना का बयान।}

1171:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कअ़ब बिन अशरफ़ की हत्या करने का ज़िम्मा कौन लेता है? उस अभागे ने अल्लाह और उस के सन्देष्टा को बड़ी यातनाएँ दी हैं। यह सुन कर मुहम्मद बिन मस्लमा ने कहा: ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! क्या आप को यह पसन्द है कि मैं उस की हत्या कर डालूँ? आप ने फ़रमाया: तुम ही यह कार्य कर डालो। उन्होंने कहा: फिर आप इस बात की मुझे अनुमति दें ताकि उस के सामने कुछ मनघड़त (और झूठी) बातें रखूँ (ताकि वह चकमा खाये) आप ने फ़रमाया: ठीक है। चुनान्चे मुहम्मद बिन मसलमा रज़ि॰ ने उस के पास जा कर कहा कि इस व्यक्ति ने हम लोगों से सदक़ा माँगा हैऔर नाक में दम कर रखा है, इसलिये में तुम्हारे पास क़र्ज़ माँगने आया हूँ। यह सुन कर मुसैलमा बोला: अभी क्या देखा है, अल्लाह की क़सम! आगे चल कर अभी और झेलोगे। मुहम्मद ने कहा: अब चूँकि उस का दामन थाम चुके हैं इसलिये यकदम उस से कनाराकशी इख़्तियार कर लेना भी उचित नहीं, फिर इस के परिणाम पर नज़र रखे हुये हैं, जो होगा देखा जायेगा। लेकिन मैं आप के पास एक या दो वसक़ अनाज़ क़र्ज़ के तौर पर माँगने आया हूँ (इसलिये आप दें) कअ़ब नेकहा: तुम्हें कोई वस्तु गिरवी रखनी पड़ेगी। उन्होंने पूछा: कौन सी वस्तु गिरवी रख दूँ। उस ने कहा: अपनी पत्नियों को रख दो। उन्होंने कहा: हम यह काम तो नहीं कर सकते, क्योंकि तुम अ़रब में बड़े

सुन्दर हो (इसलिये हमारी बीवियाँ तुम पर लट्टू हो जायेंगी) उस ने कहाः तो फिर अपने बेटों को रख दो। उन्होंने कहाः यह भी उचित नहीं, क्योंकि जो कोई उन से लड़ेगा वह यही कहेगा कि तुम एक या दो वसक़ अनाज के बदले गिरवी रखे हुये थे (तुम मुझ से क्या लड़ाई लड़ोगे) और यह हमारे लिये बड़े शर्म की बात है। हाँ, यह हो सकता है कि तुम्हारे पास हथियार रख दें।

यह कह कर उस से दोबारा मिलने का वादा किया (और घर लौट आये, दोबारा क़त्ल का प्रोग्राम बनाया) फिर रात में उस से मिलने के लिये गये और कअ़ब ही के दूध शरीक भाई नाइला को भी साथ ले लिया (ताकि उसे शुब्हा न हो) कअ़ब ने इन्हें क़िला के अन्दर बुला लिया और इन से मिलने के लिये स्वँय बाला ख़ाना से उतरने लगा तो पत्नी ने पूछाः इस समय रात में नीचे कहाँ जा रहे हो? उस ने कहाः मेरा भाई नाइला और मुहम्मद बिन मसलमा (मुझ से मिलने के लिये आये हैं और) नीचे बुला रहे हैं (घबराने की कोई बात नहीं) पत्नी ने कहाः उन की बातों से तो खून टपक रहा है। कअ़ब ने कहाः (तुम पागल हो) वह तो मुहम्मद बिन मसलमा और दूध शरीक भाई नाइला है। (यह दोनों तो मेरे मित्र हैं) लेकिन (मुझ जैसे) शरीफ़ और अ़िज़्ज़तदार को अगर कोई रात में नेज़ा मारने के लिये भी बुलाये तो भी जाना चाहिये (मुहम्मद बिन मसलमा दो साथियों को भी लाये थे) चुनान्चे उन्होंने कहाः जब वह मेरे पास आयेगा तो मैं उस के बाल सूघने के बहाने उस के बाल पकडूँगा, फिर जब तुम लोगों को पूरा विश्वास हो जाये कि मैं ने मज़बूती से पकड़ लिया है तो तुरन्त उस पर हमला कर देना। फिर वहबाला ख़ाना से चीने चादर लपेटे हुये आया। मुहम्मद बिन मस्लमा ने कहा कि तुम्हारे सर से खुश्बू की महक आ रही है। उस ने कहाः हाँ, मेरे निकाह में अ़रब की महिलाओं में सब से अधिक खुश्बू में रची बसी रहने वाली महिला है (इसलिये मेरा शरीर भी महकना ही है) मुहम्मद ने कहाः ज़रा मैं भी तुम्हारे बालों की खुश्बू सूँघ लूँ। उस ने कहाः कोई हरज नहीं, सूँघ लो। चुनान्चे उन्होंने सूँघा। फिर कहा कि एक बार और सूँघना चाहता हूँ। इस पर उस ने अपना सर झुका दिया तो उन्होंने खूब मज़बूती से पकड़ कर अपने साथियों से कहाः इसे अब मार दो, चुनान्चे उन्होंने उस की हत्या कर दी।

फ़ाइदाः– कअ़ब बिन अशरफ़ की हत्या करने वालों के सर्दार मुहम्मद बिन मसलमा थे। इन्होंने कअ़ब के दूध शरीक भाई अबू नाइला, अ़ब्बाद बिन बिश्र, हारिस बिन औस और अबू अब्स को भी शामिल कर लिया था। यह लोग जब रात को चले तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इन्हें बक़ीअ़ के क़ब्रस्तान तक भेजने आये थे। चाँदनी रात थी, आप ने फ़रमायाः जाओ, अल्लाह तुम्हारी सहायता करेगा।

कअ़ब, यह बड़ा कट्टर और इस्लाम का जानी दुश्मन यहूदी था। इस्लाम और मुसलमानों से इसे पैदाइशी दुश्मनी थी। बड़ा धनवान था इसीलिये सूदी कारोबार का जाल फैला रखा था। कुरैश मक्का को मुसलमानों के ख़िलाफ़ उभारता रहता था, लड़ाई में उन

की माली सहायता करता था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हत्या के जुगत और जुगाड़ में सदा लगा रहता था। इस ने आप की हत्या के लिये आप की दावत की लेकिन जिब्रील अ़लै॰ ने आकर आप को सूचित कर दिया। उस की इन बुराइयों को देख कर आप ने सहाबा को हुक्म दिया कि इस नापाक से धरती को पाक कर दिया जाये, चुनान्चे मुहम्मद बिनमसलमा रज़ि॰ की कमान्डरी में इसे जहन्नम में पहुँचाया गया। इब्ने सअ़द ने लिखा है कि यह घटना सन 3 हि॰ की है। (फत्हुल बारी)

बिदाया पुस्तक में है कि साथियों ने तल्वार से उस पर हम्ला किया, लेकिन वार ओछा लगा, इतने में वह ज़ोर से चीख़ा तो लोगों ने आग जला कर रोशनी कर दी और उसे बचाने के लिये दौड़े। लेकिन मुहम्मद ने खंजर से उस का पेट फाड़ दिया और सर काट कर हाथ में ले लिया। आपा-धापी में एक साथी हारिस बिन औस के पाँव में अपने सथियों में से किसी की तल्वार लग गयी, जिस से वह लंगड़ाने लगे। लेकिन साथियों की सहायता से आराम से निकल आये और "बक़ीअ़ ग़रक़द" के स्थान पर पहुँच कर "अल्लाहु अक्बर" का नारा लगाया तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी आवाज़ सुन कर नारा बुलन्द किया और दुआ़ दी। हारिस के घाव पर अपना थूक लगा दिया और वह चंगे हो गये। मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि॰ ने उस का सर आप के सामने ला कर रख दिया (पैंगबरे-आ़लम-मौलाना अ़ब्दुल मुबीन मन्ज़र, पृष्ठ242)

बाब {रिक़ाअ़ की जन्ग का बयान।}

1172:- अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ जन्ग लड़ने के लिये निकले। उस समय सवारी के लिये हम छः आदमियों के दर्मियान केवल एक ऊँट था, इसलिये हमें बारी-बारी सवार होने का ही अवसर मिलता था। चुनान्चे इस यात्रा में हमारे पाँव छलनी हो गये। और मेरे तो पाँव ही फट गये और नाखून भी झड़ गये, इसलिये हम लोगों को अपने -अपने पाँव में कपड़े की पट्टियाँ लपेटनी पड़ीं। इसी वजह से इस लड़ाई का नाम ही "ज़ातुर्रिक़ाअ" (पट्टियों वाली लड़ाई) पड़ गया।

हदीस के रावी अबू बुर्दा ने कहा कि इस हदीस को अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ ने केवल एक बार बयान किया, फिर (रियाकारी के डर से) रिवायत करना छोड़ दिया।

फ़ाइदाः- क़बीला बनू ग़ितफ़ान ने अपने साथी क़बीलों बनू महारिब, बनूसालबा और बनू अनमार को अपने साथ शामिल कर लिया था और मुसलमानों पर आक्रमण करना चाहते थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब सूचना मिली तो चार सौ सवारों के साथ उन पर धावा बोला, लेकिन जन्ग की नौबत नहीं आयी और दुश्मन मारे डर के इधर-उधर भाग खड़े हुये। यह घटना मुर्हरम सन 7 हि॰ को घटी। जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इसी जन्ग में ख़ौफ़ की नमाज़ पढ़ी थी (बुख़ारी-4125) यह लड़ाई ख़ैबर की जन्ग के बाद लड़ी गयी

थी। ऊँट की कमी से अधिकांश पैदल ही चलना पड़ा जिस के कारण पैर में छाले पड़ गये और नाखून झड़ गये थे। अबू मूसा रज़ि॰ ने बार-बार इस हदीस को बयान करना उचित न जाना कि कहीं रियाकारी में सवाब में कमी न आ जाये। (रहमतुल्लिल आ़लमीन)

बाब {अहज़ाब की लड़ाई का बयान। जो खन्दक़ की जंन्ग के नाम से भी प्रसिद्व है।}

1173:- इब्राहीम तैमी अपने पिता (यज़ीद बिन शुरैक तैमी) के वास्ते से रिवायत करते हैं कि मेरे पिता जी हुज़ैफ़ा बिन यमान के पास बैठे हुये थे कि एक व्यक्ति ने कहाः अगर मैं भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना में होता तो आप के साथ जिहाद में शामिल होता और जन्ग करता। हुज़ैफ़ा रज़ि॰ ने जब सुना तो कहा कि क्या तुम ऐसे ही करते? (यानी नहीं करते) तुम्हें मालूम होना चाहिये कि हम लोग अहज़ाब की लड़ाई में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ थे। उस समय सर्द हवा चल रही थी और ठन्डक अपनी जवानी पर थी। उस मौक़ा पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कोई है जो इस मौसम में काफ़िरों की गतिविधियों की सूचना ला सकता है? (जो भी सूचना लायेगा) अल्लाह पाक उसे क़ियामत के दिन मेरे साथ रखेगा। यह सुन कर सभी लोग चुपचाप रहे और किसी ने भी उत्तर न दिया (क्योंकि कड़ाके की ठन्ड थी और रात में दुश्मन का डर था) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फिर दोबारा फ़रमायाः कोई है जो दुश्मन की सूचना ला कर मुझे दे। जो जा कर सूचना लायेगा, क़ियामत के दिन अल्लाह पाक उसे मेरा साथी बनायेगा। इस पर भी किसी ने हामी न भरी और सब ख़ामोश रहे (जब कहीं से कोई उत्तर न मिला तो) अन्त में आप ने फ़रमायाः ऐ हुज़ैफ़ा! उठो, और तुम्ही जा कर सूचना लाओ। अब मेरे न जाने का कोई प्रश्न ही नहीं था, क्योंकि आप ने मेरा नाम लेकर जाने का हुक्म दिया था। आप ने यह भी फ़रमाया कि जा कर सूचना तो लाओ लेकिन कोई ऐसी हर्कत न करना जिस से दुश्मन भड़क जायें और तुम्हारी हत्या कर दें, या हम्ले की तय्यारी कर दें। चुनान्चे जब मैं आप के पास से जासूसी करने के लिये बाहर निकला तो ऐसा मालूम हुआ कि मैं हम्माम में चल रहा हूँ (यानी हमारे अन्दर ईमानी गर्मी पैदा हो गयी और सर्दी समाप्त हो गयी) जब मैं काफ़िरों के लश्कर में पहुँचा तो देखा कि अबू सुफ़यान अपनी कमर को आग से सेंक रहा है। उसे देखते ही मारने के लिये मैं ने तीर को कमान पर चढ़ा लिया, लेकिन तुरन्त ही नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आदेश याद आ गया कि "ख़र्बदार! कोई ऐसा काम न कर बैठना जिस से वह चिढ़ जायें" चुनान्चे अगर मैं तीर चला देता तो निःसंदेह अबू सुफ़यान को लगता। फिर जब वहाँ की जानकारी लेकर वापस हुआ तो भी ऐसा मालूम होता था कि (ईमान की गर्मी से) मैं हम्माम में चल रहा हूँ। फिर जब आप के पास पहुँच कर पूरी रिर्पोट दे दी तब मुझे ठन्डक का एहसास हुआ। यह देख कर आप ने अपना वह कंबल मेरे ऊपर डाल दिया जिसे ओढ़ कर आप नमाज़ पढ़ा करते थे। चुनान्चे उसे ओढ़ कर सोया तो सुब्ह तक सोता रहा। जब यकदम सवेरा

हो गया तो आप ने मेरे पास आ कर फ़रमायाः "अब तो उठ जाओ, ऐ बहुत सोने वाले।"

फ़ाइदाः– 'अहज़ाब' यह बहुवचन है, जिस का अर्थ है "गरोह, गुट, टकड़ियाँ"। अबू सुफ़यान अपनी सर्दारी में अ़रब के बहुत से क़बीलों और गुटों को मदीना आक्रमण के लिये बहका कर ले आया था, इसलिये इस जन्ग का नाम "अहज़ाब" पड़ा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सलमान फ़ारसी रज़ि॰ के मश्वरा से बचाव के लिये मदीना के तीन तरफ़ ख़न्दक़ (खाई) खोदने का हुक्म दिया इसलिये इस जन्ग का नाम "ख़न्दक़" भी पड़ गया। इस जन्ग में काफ़िरों की संख्या दस हज़ार और मुसलमानों की तीन हज़ार थी। काफ़िरों ने स्वँय चढ़ाई की। इस लड़ाई की घटना का बयान "तफ़सीर इब्ने कसीर" में इस प्रकार है कि सन 4 हि॰ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यहूदी क़बीला बनी नज़ीर को मुल्क बदर कर दिया था (तफ़सील पारः28, सूरःहश्र आयत न॰ 8 में देखें। और हदीस न॰ 1158 का फ़ाइदा) इस क़बीला के सर्दारों ने मक्का जा कर वहाँ के सर्दारों को मुसलमानों पर आक्रमण करने और इस मोहिम में उन का साथ देने का वादा किया। चुनाचे अबू सुफ़यान ने क़बीला ग़ितफ़ान, हुज़ैल और उन के सहयोगी गुटों की सहायता से आगे बढ़े और मदीना को दक्षिण पूरब से घेर लिया। उत्तर से यहूदी क़बीला बनी नज़ीर और बनी क़युन्क़ाअ़ ने आ घेरा। इन सब की टोटल संख्या दस हज़ार थी। मदीना के पश्चिम यहूदियों का क़बीला बनी क़ुरैज़ा बसा हुआ था जिस से मुसलमानों का अनुबन्ध और मुआहिदा था इसलिये पश्चिम की ओर से ख़तरा नहीं था। लेकिन क़बीला बनी नज़ीर के सर्दार हुय्यिबिन अख़तब ने उन के पास जा कर उन्हें भी मुख़ालिफ़त पर आमदा कर लिया, चुनान्चे यह भी लड़ने पर आमादा हो गये। इसीलिये मदीना की सुरक्षा के लिये खाई खोदने का हुक्म हुआ। उस समय कड़ाके की ठन्ड पड़ रही थी। काफ़िरों ने लगभग 20 दिनों तक मदीना को घेरे रखा। लेकिन अल्लाह पाक ने तेज़ आँधी और तूफ़ान भेजा जिस से उन के खेमे उखड़ गये, यहाँ तक कि उन के चूल्हों की हाँड़ियाँ उलट गयीं, उन के जानवर रस्सियाँ तोड़ कर भाग गये। उन्हें लेने के देने पड़ गये और सब कुछ छोड़-छाड़ कर भाग खड़े हुये। यह घटना सन 4 या 5 हि॰ में घटी। क़ुरआन पाक के पारः 21 में "अहज़ाब" नाम की एक सूरः भी है जिस में इस लड़ाई का विस्तार से बयान है।

1174:– बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हहज़ाब की लड़ाई के मौक़ा पर (जब ख़न्दक़ खोदी जा रही थी) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी हमारे साथ मिट्टी ढोते थे, जिस की वजह से आप के पेट का रन्ग मटियाला हो गया था। मिट्टी ढोते समय आप यह पढ़ते जाते थेः "ऐ अल्लाह! तेरी ज़ात की क़सम! अगर हिदायत न देता तो हम हिदायत न पाते, न सदक़ा-ख़ैरात करते और न ही नमाज़ पढ़ते। ऐ अल्लाह! तू हम पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमा दे। इन मक्का वालों ने ईमान लाने से इन्कार कर दिया (एक रिवायत के अनुसार आप यह भी फ़रमाते थे) मक्का वालों

ने हमारा कहा न माना। यह लोग जब लड़ाई झगड़े की बातें करते हैं तो इस में हम उन का साथ नहीं दते हैं" आप इन्हें ऊँचे स्वर में पढ़ते थे।

फ़ाइदा:– इस खाई की खोदाई के समय सब भूखे थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पेट पर पत्थर बाँधा हुआ था (बुख़ारी–4101) उसी हालत में अन्दर की एक चट्टान को जो कोई नहीं तोड़ पा रहा था आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक बार में तोड़ दिया था (बुख़ारी–4101)

1175:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबा जन्ग ख़न्दक़ के मौक़ा पर (अपनी सुरक्षा के लिये) खाई खोदते समय यह पढ़ते थे

> नह्नुल्लज़ी–न बा–यऊ मु–हम्मदा+अ़–लल् इसलामि मा बक़ीना अ–बदा
> (हम लोगों ने जीवन भर के लिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ पर इस्लाम पर जमे रहने और जिहाद के लिये बैअ़त की है)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (इस के उत्तर में) फ़रमाते थे: "ऐ अल्लाह! अस्ल नेकी और भलाई तो आख़िरत की है। ऐ अल्लाह! तू इन अन्सार और मुहाजिरों को बख़्श दे।"

फ़ाइदा:– ऊपर जिस कविता के छन्द पढ़ने का ज़िक्र है वह प्रसिद्व सहाबी अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ के हैं। इसी को सभी लोग झूम झूम कर पढ़ते और खन्दक़ से मिट्टी ढो–ढो कर बाहर निकालते थे। यह रिवयत बुख़ारी शरीफ़ में भी इन्हीं शब्दों के साथ है (हदीस न॰ 4104, 4106–अनस बिन मालिक)

बाब {क़बीला बनी क़ुरैज़ा के निष्कासन (जिला वतन किये जाने का बयान।}

1176:– अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अहज़ाब की लड़ाई से निबट चुके तो एक पुकारने वाले ने पुकारा: सभी लोगों को जुह् की नमाज़ क़बीला बनी क़ुरैज़ा में ही पहुँच कर पढ़नी है। इस पर (सब लोग रबाना हुये तो) कुछ लोगों ने क़ज़ा होने के डर से रास्ता ही में पढ़ ली, और कुछ ने कहा: चाहे क़ज़ा हो जाये हम तो वहीं पहुँच कर पढ़ेंगे जहाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पढ़ने का आदेश दिया है। (जब आप को मालूम हुआ) तो दोनों गर्राहों में से किसी पर नाराज़ नहीं हुये।

फ़ाइदा:– ख़न्दक़ की लड़ाई में इस क़बीला ने मुआ़हिदा और क़ौल–क़रार को तोड़ का काफ़िरों का साथ दिया था, इस प्रकार मुसलमानों के साथ बड़ी भंयकर ग़द्दारी की। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस जन्ग से निपट गये और घर पहुँच कर

नहा-धो रहे थे कि इतने में जिब्रील अलै० आ कर कहने लगेः आप ने हथियार रख दिये? हम फ़रिश्तों ने तो अभी नहीं रखे हैं, चलिये बनी कुरैज़ा वालों से भी अभी निमट लिया जाये। इस पर आप ने एलान कराया कि अस्र की नमाज़ चल कर वहीं पढ़ें- (बुख़ारी-4117) (इस से आप की मुराद यह थी कि तुरन्त पहुँचें, घर के झमेलों में अभी न फँसें और किसी तरफ़ मुतवज्जह न हों)

बनी कुरैज़ा की आबादी मदिना में पश्चिम की तरफ़ चन्द मील की दूरी पर थी। मुसलमानों को देख कर वह अपने क़िला में बन्द हो गये तो मुसलमानों ने उन्हें 20-25 दिनों तक बाहर नहीं निकलने दिया, इस कारण वह भूखों मरने लगे तो कहने लगे कि सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ि० हमारे दोस्त हैं वह जो न्याय कर देंगे हमें स्वीकार है। उस समय मआ़ज़ रज़ि० बीमार थे इसलिये गधे पर सवार होकर आये (बुख़ारी-4121) और यह फ़ैसला सुनाया कि इन के मर्दों को मौत के घाट उतार दिया जाये और महिलाओं को बन्दी लिया जाये और इन की जायदाद मुसलमानों में बाँट दी जाये। (बुख़ारी-4121, 3043) सूरः अहज़ाब की आयत न० 26 में इसी तरफ़ इशारा है।

बाब {"ज़ी क़र्द" की लड़ाई का बयान।}

1177:- अयास बिन सलमा से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मेरे पिता (सलमा बिन अकवा) ने मुझ से यह रिवायत बयान किया कि जब हम लोग (उम्रा की निय्यत से) हुदैबिय्या के स्थान पर पहुँचे, उस समय हम लोगों की संख्या 1400 थी। वहाँ के कुएँ में इतना कम पानी था कि वहाँ परमौजूद पचास बकरियों के लिये भी कम था। यह समस्या देख कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस कुएँ के मुँडेर पर जा कर बैठ गये और दुआ़ फ़रमायी, या उस में थूक दिया। चुनान्चे वह कुआँ उसी समय पानी से उबल पड़ा। उस से हम लोगों ने अपनी-अपनी सवारियों को पिलाया और स्वँय भी पिया (जब सब लोग पी-पिला कर फ़ारिग़ हो गये तो) हम लोगों को एक पेड़ के जड़ के पास बैअ़त के लिये बुलाया तो मैं उन लोगों में था जिन्होंने सर्वप्रथम बैअ़त की। इसी प्रकार बैअ़त का सिलसिला जारी रहा। जब आधे लोग बैअ़त कर चुके तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे मुख़ातब होकर फ़रमायाः ऐ अबू सलमा! तुम भी बैअ़त करो। मैं ने उत्तर दियाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! में तो सर्वप्रथम ही बैअ़त कर चुका। आप ने फ़रमायाः (कोई बात नहीं) दोबारा कर लो। उस समय आप ने मुझे निहत्था (बिना हथियार के) देखा तो एक बड़ी या छोटी ढाल भी दी, और बैअ़त लेने में मशग़ूल हो गये। फिर जब बैअ़त का सिलसिला समापन के निकट पहुँचा तो आप ने पुनः फ़रमायाः ऐ अबू सलमा! तुम बैअ़त नहीं करोगे? मैं ने अनुरोध किया कि मैं ने तो (पहली ही बार) सब से पहले किया फिर (दूसरी बार) बीच में किया है (यानी दोबारा कर चूका हूँ) आप ने फ़रमायाः एक बार और सही। चुनान्चे में ने तीसरी मर्तबा भी बैअ़त की। फिर आप ने फ़रमायाः अबू सलमा! मैं ने जो तुम्हें छोटी या बड़ी आकार वाली ढाल दी थी वह कहाँ गयी?

मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मेरे चचा अबू आ़मिर के पास कोई हथियार नहीं था इसलिये मैं ने उन्हें दे दिया। यह सुन कर आप हँसने लगे और फ़रमायाः तुम्हारी मिसाल तो उस पहले व्यक्ति की सी है जिस ने दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा मित्र और साथी दे जिसे मैं सब से अधिक पसन्द करुँ। फिर मुश्रिकों ने सुलह का संदेश भेजा, इस पर उधर के आदमी इधर और उधर के उधर आने-जाने लगे, अन्ततः हम लोगों ने उन मुश्रिकों से समझौता कर लिया।

सलमा बिन अकवा रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं तल्हा बिन उबैदुल्लाह के पास सेवक की हैसिय्यत से था, उन के घोड़े को दाना-पानी खिलाता-पिलाता और उस की पीठ को खुजाता और हर प्रकार से उन की देखभाल करता और उन्ही के साथ खाता-पीता भी था (क्योंकि रहने-सहने का ठिकाना नहीं था) मक्का का घर बार अल्लाह और उस के सन्देष्टा के नाम हिजरत कर के छोड़-छाड़ दिया था। इसी बीच जब हमारे और मक्का वालों के दर्मियान हुदैबिया का समझौता तै पा गया तो हम में से हर एक, एक-दूसरे से मिलने-जुलने लगा।

इसी बीच कि मैं एक पेड़ के काँटे काट-छाँट कर उस की जड़ के पास बैठा हुआ था कि मक्का के चार मुश्रिक भी उसी पेड़ के नीचे आ कर ठहर गये और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बुरा भला कहने लगे। जब मुझ से न रहा गया तो वहाँ से उठ कर दूसरे पेड़ के नीचे जा लेटा। उन चारों ने भी अपने हथियार पेड़ पर लटका कर लेट गये और आराम करने लगे। इतने में घाटी के निचले हिस्से से किसी ने पुकार लगाईः ऐ मुहाजिरों! दौड़ो, इब्ने ज़नीम सहाबी की हत्या कर दी गयी। यह सुनना था कि मैं ने अपनी तल्वार सौंत कर उन चारों पर चढ़ दौड़ा। चूँकि वह सब सो रहे थे इसलिये उन के हथियारों को समेट कर अपने हाथ में ले लिया, फिर कहाः उस अल्लाह की क़सम! जिस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मान-सम्मान दिया है, तुम में से अगर किसी ने अपना सर उठाया तो मैं उस के उसी स्थान पर मार लगाऊँ जहाँ उस की दोनों आँखें रही होंगी। फिर उन सब को पकड़ कर घसीटता हुआ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास लाया। इसी बीच मेरे चचा आ़मिर भी (कुरैश मक्का की शाख़) अ़बलात क़बीला के मिकरज़ नामी एक व्यक्ति को घसीटते हुये लाये, वह उस समय ऐसे घोड़े पर सवार थे जिस के ऊपर झोल पड़ा हुआ था और सत्तर आदमी मुश्रिकों के भी लाये। आप ने उन सब को देख कर फ़रमायाः इन सब को छोड़ दो और इन्हें अनुबन्ध और मुआ़हिदे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने दो। अन्ततः आप ने उन सब को छोड़ दिया। इसी मौक़े पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमायीः "वही अल्लाह तो है जिस ने (ऐ मुसलमानों!) ठीक मक्का की सरहद में तुम को काफ़िरों पर विजय देने के बाद काफ़िरों का हाथ तुम पर से रोक दिया और तुम्हारा हाथ उन पर से (यानी न तुम उन को मार सके और न वह तुम को मार सके और समझौता हो गया) (पारः26, सूरः फ़तह 24)

फिर हम लोग मदीना के लिये वापस हो गये, राह में एक ऐसे स्थान पर पड़ाव डाला गया जहाँ हमारे और क़बीला बनी लहयान के बीच में एक पहाड़ी थी। आप ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति इस पहाड़ी पर चढ़ कर हमारे लिये और सहाबा के लिये निग्रानी करेगा मैं उस के लिये माफ़ी की दुआ करुँगा। चुनान्चे मैं उस पहाड़ी पर दो या तीन बार चढ़ा (और पहरा देता रहा) इस प्रकार हम लोग सुरक्षित मदीना पहुँच गये तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी ऊँटनियों को चरागाह में ले जाने के लिये अपने गुलाम रिबाह के सिर्पुद कर दिया, और मैं भी अबू तल्हा रज़ि॰ का घोड़ा लेकर चरागाह में ले जने के लिये उन के साथ हो गया। सुब्ह होते ही अ़र्ब्दुरहमान फ़ज़ारी मुश्रिक ने हमला कर के आप की ऊँटनियों को लूट लिया और चरवाहे को भी मार डाला।

मैं ने जब यह माजरा देखा तो कहाः ऐ अबू रिबाह! मेरे इस घोड़े को ले जा कर अबू तल्हा के हवाले कर दो और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सूचित कर दो कि काफ़िरों ने आप की ऊँटनियों को लूट लिया है। इस के बाद मैं एक टीला पर चढ़ गया और मदीना की तरफ़ मुँह कर के आवाज़ लगाई "या सबाहाह, या सबाहाह (यानी दौड़ो मेरी सहायता के लिये) इस के बाद मैंने उन लुटेरों पर तीर चलाना आरंभ कर दिया, मैं यह कहता जाता "में अकवा को बेटा हूँ, आज तुम्हारे लिये बर्बादी का दिन है" यही पढ़ता और उन के निकट पहुँच कर उन की काठी में तीर मारता जो काठी को चीर कर उस के कन्धे को छेद डालता। यह देख कर मैं फिर कहता "लो मज़ा चखो" मैं सलमा का बेटा हूँ और आज तुम्हारी बर्बादी का दिन है।" अल्लाह की क़सम! इसी प्रकार मैं बराबर तीर चला कर उन्हें घायल करता रहा। अगर उन में का कोई सवार आंक्रमण करने के लिये मेरी तरफ़ आता तो मैं भाग कर किसी पेड़ की जड़ के पास छुप कर बैठ जाता, फिर वहाँ से भी तीर चला कर उसे घायल कर देता। इस प्रकार भागते-भागते वह लोग पहाड़ी दरे के एक तंग रास्ते में घुस गये तो मैं जल्दी से पहाड़ पर चढ़ गया और उन्हें पत्थरों से मारना शुरु कर दिया। यह देख कर उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ऊँटनियों को पीछे छोड़ दिया और भाग गये। लेकिन मैं बराबर उन का पीछा कर के उन्हें तीर मारता रहा, यहाँ तक कि तीस से अधिक चादरें और तीस से अधिक नेज़े छीन लिये। वह भागने के चक्कर में अपना सामान फेंक कर बोझ हल्का करते जाते थे, और मैं यह करता कि जो सामान फेंकते उस पर निशानी के तौर पर एक पत्थर रख देता ताकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आप के साथी (अगर पीछे आ रहे हों तो) पहचान लें (और उसे माले ग़नीमत में शामिल कर लें)

दुश्मन भागते-भागते एक तंग घाटी में घुस गये तो उन्हें राह में बद्र फ़ज़ारी का पुत्र मिल गया, चुनान्चे सब बैठ कर पेट की पूजा (नाश्ता) करने लगे। इधर में भी चुपके से एक टीले की चोटी पर बैठ गया। फ़ज़ारी के पुत्र ने पूछाः आख़िर वह कौन व्यक्ति है? (जिस ने अकेले ही तुम्हारी नाक में दम कर दिया) उन्होंने कहाः उस ने वास्तव में हमें परेशान कर के रख दिया है। अल्लाह की क़सम! रात ही से हम लोगों के पीछे लगा हुआ है और तीर पर तीर मारे जा रहा है, यहाँ तक कि हम लोगों के पास जो कुछ भी था सब छीन लिया (फिर भी पीछा नहीं छोड़ रहा है) फ़ज़ारी ने कहाः तुम में से

चार आदमी जायें और उसे मार गिरायें। इस पर उन में से चार आदमी मुझे पकड़ने के लिये टीले के ऊपर चढ़ें। जब वह मुझ से इतने निकट आ गये कि मेरी आवाज़ सुन सकें तो मैं ने कहा: जानते हो मैं कौन हूँ? उन्होंने कहा: नहीं। मैं ने कहा: मेरा नाम सलमा है यानी अकवा का बेटा! (सुनो) उस ज़ात की क़सम! जिस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चेहरे को बुर्ज़ुगी अ़ता की है, मैं तुम सब को मार गिराऊँगा और तुम मेरा कुछ भी न बिगाड़ सकोगे। यह सुन कर उन में से एक ने कहा: वह बिल्कुल सच कह रहा है, चुनान्चे वह सब (मारे डर के) वापस लौट गये। लेकिन मैं उस स्थान पर बैठा रह गया कि इसी बीच नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सवार मुजाहिद दिखाई पड़े जो झाड़ी के अन्दर घुस रहे थे। उन में सब से आगे-आगे अख़रम असदी, उन के पीछे अबू क़तादा और उन के पीछे मिक़्दाद बिन अस्वद कन्दी रज़ि॰ थे। मैंने आगे बढ़ कर अख़रम असदी रज़ि॰ के घोड़े की लगाम थाम ली। यह देख कर लुटेरे भाग खड़े हुये। मैं ने अख़रम से कहा: इन लुटेरों से बच के रहना, कहीं ऐसा न हो वह तुम्हारी हत्या कर दें, इसलिये जब तक नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आप के लश्करी न आ जायें, कोई कार्यवाही न करना। यह सुन कर अख़रम ने कहा: ऐ सलमा! तुम्हें अल्लाह और आख़िरत के दिन पर विश्वास है और तुम यह भी जानते हो कि जन्नत और जहन्नम हक़ है, इस लिये मुझे शहीद होने से मत रोको। यह सुन कर मैं ने उन के घोड़ की लगाम छोड़ दी। अब वह आगे बढ़े तो मुक़ाबला अब्दुर्रहमान फ़ुज़ारी से हो गया। अख़रम ने उस के घोड़े को घायल कर दिया तो उस ने नेज़ा मार कर इन्हें शहीद कर दिया और (अपने घायल घोड़े को छोड़ कर) उन के घोड़े पर सवार हो गया। इसी बीच अबू क़तादा अन्सारी पहुँच गये तो उन्होंने बर्छी मार कर उसे हलाक दिया।

सलमा रज़ि॰ ने बयान किया कि उस अल्लाह की क़सम! जिस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चेहरे को रोनक़ बख़्शी है, मैं उन लुटेरों के पीछे दौड़ा और इतनी तेज़ी से दौड़ा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सवार का कहीं अता-पता नहीं था (वह पीछे छूट गये) यहाँ तक कि मैं उन लुटेरों के पास पहुँच गया। उस समय वह लोग सूरज डूबने से कुछ पहले "ज़ीक़िरद" नामक एक घाटी में पहुँच कर पानी के चश्मे से पानी पीने जा रहे थे। उन्होंने जैसे ही मुझे देखा कि उन का पीछा करता आ रहा हूँ, तो एक बूँद भी पानी न पिया और एक घाटी में घुस गये। मैं भी उन का पीछा करते हुये दोड़ा और उन में से एक के शाने की हड्डी पर तीर मार कर कहा: ले मज़ा चख ले, तू जानता नहीं कि मैं सलमा बिन अक्वा हूँ, आज तुम्हारी बर्बादी का दिन है। यह सुन कर उन में से एक ने कहा: तेरी माँ तुझ पर रोए, क्या तू वही अकवा का बेटा है जो सुब्ह ही से मेरे पीछे लगा हुआ है? मैं ने उत्तर दिया: हाँ, हाँ! ऐ अपनी जान के दुश्मनों! मैं वही सलमा बिन अक्वा हूँ

सलमा रज़ि॰ ने बयान किया कि उन डाकुओं के दो घोड़े दौड़ते-दौड़ते थक कर चूर हो गये चुनान्चे डाकुओं ने उन्हें छोड़ दिया तो मैं उन्हें पकड़ कर नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास घाटी की तरफ़ ले कर चला, रास्ता में मुझे आ़मिर रज़ि॰ मौजूद थे, उन के पास एक बर्तन में दूध और एक में थोड़ा सा पानी था, मैं ने उस से वूज़ू किया और फिर दूध पिया। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास पहुँचा तो क्या देखा कि आप उस पानी के स्थान पर हैं जहाँ से मैं ने लुटेरों को खदेड़ा था। वहाँ आप के पास समस्त ऊँट मौजूद थे और जो भी सामान उन से छीना था वह सब चादरें, बर्छी आदि भी मौजूद थीं। बिलाल रज़ि॰ मेरे छीने हुये ऊँटों में से एक को ज़ब्ह कर के उस की कलेजी और कोहान भून रहे थे। मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सेअनुरोध किया कि आप अगर लश्कर में से केवल सौ आदमी मुझे दे दें तो उन लुटेरों में से कोई भी अपने घर न पहुँच सकेगा। यह सुन कर आप इतना हँसे कि आप के दाढ़ के दाँत आग की रोशनी में दिखाई देने लगे, और फ़रमायाः ऐ सलमा! क्या तुम्हारे अन्दर इतना साहस है? मैं ने कहाः उस ज़ात की क़सम! जिस ने आप का मतर्बा बुलन्द किया है मैं इतनी हिम्मत रखता हूँ। आप ने फ़रमायाः लुटेरे तो अब क़बीला ग़ितफ़ान की सीमा के अन्दर पहुँच चुके हैं और वहाँ उन की मेहमानी हो रही है। इसी बीच क़बीला ग़ितफ़ान का एक व्यक्ति मिला वह बताने लगा कि वहाँ के फ़लाँ व्यक्ति ने उन की मेहमानी के लिये एक ऊँट काटा और उस की खाल उतार ही रहे थे कि सामने धूल उड़ते देखा तो उन्होंने यह समझा कि लोग मेरा पीछा करते हुये आ रहे हैं इसलिये वहाँ से भी भाग खड़े हुये।

सुब्ह को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हमारे सवारों में आज का दिन अबू क़तादा के नाम रहा और पियादा में सलमा बिन अकवा के नाम। फिर आप ने माले ग़नीमत में से मुझे दो हिस्सा दिया, एक सवार का और एक पियादा का, और दोनों ही हिस्सा मुझे दे दिया। फिर जब मदीना के लिये रवाना हुये तो मुझे अपनी ऊँटनी अ़ज़बा नामक पर बैठाया। इसी बीच कि हम लोग मदीना के लिये जा रहे थे कि एक अन्सारी जो दौड़ने में बहुत तेज़ थे कहने लगेः कोई है जो दौड़ में मुझ से आगे निकल कर मुझ से पहले मदीना पहुँच जाये? वह बार-बार यही कहे जा रहे थे। जब मैं ने सुना तो उन से कहाः कुछ तो बुजुर्गों का आदर-सम्मान करो और उन से डरो। उन्होंने कहाः मैं तो केवल नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आदर-सम्मान करता और उन की बुज़ुर्गी का ख़याल करता हूँ। इस पर मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अनुरोध किया आप मुझे अपनी ऊँटनी से उतार दीजिये ताकि मैं इस से दौड़ में मुक़ाबला कर लूँ। आप ने फ़रमायाः तुम्हारी इच्छा है तो जाओ मुक़ाबला कर लो। चुनान्चे मैं अपना पाँव झुका कर ऊँटनी से कूद पड़ा और उस के पीछे दौड़ा, फिर दो मरहले में उस का साथ ले लिया और पहुँच कर उसके मोंढों के बीच में एक घूँसा दिया और कहाः अल्लाह की क़सम! मैं तुझ से आगे निकल कर रहूँगा, चुनान्चे मैं उस से पहले मदीना पहुँचा।

सलमा रज़ि॰ ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! अभी हम लोगों ने मदीना

पहुँच कर दो-तीन दिन ही आराम किया था कि ख़ैबर की जन्ग के लिये रवाना हो गये। रास्ता में मेरे चचा रज्ज़ पढ़ने लगे (जिस का हिन्दी अनुवाद यह है) "अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह पाक हमें हिदायत न देता तो हम राह न पाते, न सदक़ा करते और न ही नमाज़-रोज़ा करते। ऐ मेरे मौला! हम कभी भी तेरी मेहरबानी से बेनियाज़ नहीं हो सकते, मेरे मौला! तू लड़ाई में हमारे पैरों को जमा दे और जब काफ़िरों से भिड़न्त हो तो अपनी रहमत और सुकून हमारे ऊपर नाज़िल कर दे।" नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब सुना तो पूछा कि यह कौन पढ़ रहे हैं? लोगों ने बतायाः आ़मिर हैं। आप ने फ़रमायाः अल्लाह पाक उन्हें बख़्श दे। इस पर सलमा ने कहाः नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब किसी के लिये विशेष रुप से इस्तिग़फ़ार करते हैं तो शहादत पाता है। यह सुन कर उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ जो उस समय अपने ऊँट पर सवार थे कहने लगेः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! आप ने हमें आमिर से लाभ उठाने न दिया?

सलमा रज़ि॰ ने बयान किया कि जब हम लोग ख़ैबर पहुँचे तो वहाँ का सर्दार जिस का नाम मरहब था अपनी तल्वार भाँजता हुआ और यह छन्द पढ़ता हुआ निकला "ख़ैबर वालों को खूब मालूम है कि मैं मरहब हूँ, जब लड़ाई आग उगलती हुयी आती है तो मैं हथियार बन्द निडर बहादुर और मँझे हुये की तरह मैदान में उतरता हूँ।" यह सुन कर मेरे चचा अ़ामिर ने भी तुरन्त उत्तर दियाः "मैं भी अ़ामिर हूँ, हथियार बन्द होकर जन्ग के मैदान में कूद पड़ता हूँ।" फिर दोनों के दर्मियान मुक़ाबला छिड़ गया। मरहब ने वार किया तो उस की तल्वार चचा के ढाल पर पड़ी तो उन्होंने नीचे से वार किया, लेकिन उन की तल्वार उन्हीं ही को लग गयी जिस से उन की अस्ल नस ही कट गयी और शहीद हो गये।

सलमा रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने बाहर आ कर देखा तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबा आपस में बातें कर रहे हैं कि अ़ामिर की सारी मेहनत अकारत गयी, क्योंकि उन्होंने अपने को स्वँय ही हलाक कर लिया है। यह सुन कर मैं रोता हुआ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने पहुँचा और पूछा कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! क्या वास्तव में अ़ामिर रज़ि॰ की मेहनत अकारत गयी? आप ने पूछाः कौन कहता है? मैं ने कहाः कुछ सहाबा आपस में बातें कर रहे हैं। आप ने फ़रमायाः वह लोग झूठ कह रहे हैं, उन को तो दोहरा सवाब मिलेगा। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे अ़ली रज़ि॰ के पास भेजा, उस समय उन की आँखें दुख रही थीं, आप ने फ़रमायाः आज मैं झन्ड़ा ऐसे व्यक्ति के हाथ में दूँगा जो अल्लाह और उस के सन्देष्टा को दोस्त रखता है, या (यह फ़रमाया कि) अल्लाह और उस के सन्देष्टा उस को दोस्त रखते हैं। सलमा ने कहा कि फिर मैं अ़ली रज़ि॰ के पास जा कर उन्हें सहारा दे कर आप के पास लाया, उस समय उन की आँखें काफ़ी दुख रही थीं, जब मैं उन्हें आप के पास लाया तो आप ने उन की आँखों में अपना थूक लगा दिया चुनान्चे वह उसी समय चंगे हो गये, फिर आप ने इस्लाम का झन्ड़ा उन के हवाले कर दिया।

इसी दर्मियान मरहब ने लश्कर से निकल कर कहाः "ख़ैबर को अच्छी तरह मालूम है कि मैं मरहब हूँ, निडर और बेबाक हूँ, हर समय हथियार बन्द रहता हूँ, जब जन्ग की आग भड़कती है" यह सुन कर अ़ली रज़ि॰ ने उत्तर दियाः "मैं अ़ली हूँ, मेरी माँ ने मेरा नाम हैदर रखा है, मैं जन्गल के ख़ूँखार शेर के समान हूँ (जिसे देख कर लोग डर जाते हैं) मैं लोगों को साअ़ा के बदले सनदरह देता हूँ (यानी वह मामूली वार करते हैं तो मैं भरपूर वार करता हूँ) यह कह कर अ़ली रज़ि॰ ने इतनी तेज़ी से उस पर आर्कमण किया कि वह जहन्न्म में पहुँच गया और इस के पश्चात अल्लाह तआ़ला ने उन के हाथ फ़त्ह अ़ता की।

फ़ाइदाः— यह हदीस पूरी पुस्तक में सब से लंबी हदीसों में से है। इस में "क़रद की जन्ग" "ख़ैबर की जंग, सलमा रज़ि॰ की बहादुरी और उन के चचा आ़मिर रज़ि॰ की शहादत का ज़िक्र आ गया है। इस में कोई बात ऐसी नहीं है जिसे स्पष्ट करनेकी आवश्यक्ता हो। हदीस के अन्त में अ़ली रज़ि॰ का एक वाक्य आया है "लोग मुझे एक साअ़ा देते हैं तो मैं उन्हें सनदरह देता हूँ" 'सनदरह' एक माप का नाम है जो साअ़ा से बड़ा होता है। मतलब यह हुआ कि लोग मुझ पर मामूली वार करते हैं लेकिन मैं उन पर अधिक भरपूर वार करता हूँ और उन्हें जहन्न्म में भेज देता हूँ।

बाब {हुदैबिय्या की घटना और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का कुरैश वालों से सुलह–समझौता करने का बयान।}

1178:— बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ सेरिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (उम्रा करने के लिये) बैतुल्लाह शरीफ़ जाने से रोक दिये गये तो आप ने (हुदैबिय्या के स्थान पर) मक्का वालों से इस शर्त पर सुलह की कि (1) आइन्दा वर्ष आयेंगे (2) केवल तीन दिन तक मक्का में रहेंगे (3) हथियारों को मियान में रख कर आयेंगे (4) वापस जाते समय मक्का के किसी व्यक्ति को अपने साथ (भगा कर) नहीं ले जोयंगे (5) उन के साथी मुसलमानों में से जो (मुश्रिकों का साथ कुबूल कर के) मक्का ही में रहना चाहे उसे न रोकेंगे। फिर आप ने अ़ली रज़ि॰ से कहाः इन शर्तों को काग़ज़ पर लिख दो कि

> "अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है। यह वह शर्तें हैं जिन्हें अल्लाह के सन्देष्टा मुहम्मद ने स्वीकार किया है"

यह सुन कर मुश्रिकों ने कहाः अगर हम तुम्हें अल्लाह का सन्देष्टा ही मानते तो फिर तो तुम्हारी आज्ञा पालन कर लेते और तुम्हारे हाथ पर ईमान ही ले आते। इसे इस प्रकार लिखो "अ़ब्दुल्लाह के बेटे मुहम्मद ने स्वीकार किया है" चुनान्चे आप ने अ़ली रज़ि॰ को "अल्लाह का सन्देष्टा" शब्द मिटा देने का हुक्म दिया। उन्होंने कहाः अल्लाह की क़सम!मैं तो इसे हर्गिज़ नहीं मिटाने का। आप ने फ़रमायाः फिर मुझे तुम वह शब्द बता दो (ताकि

मैं मिटा दूँ) चुनान्चे अ़ली ने बता दिया तो आप ने मिटा दिया और (उस के स्थान पर) "अ़ब्दुल्लाह का बेटा" लिख दिया। (फिर आप मुआहिदे के अनुसार दूसरे वर्ष आये तो) फिर तीन दिन मक्का में रुके। तीसरे दिन मुश्रिकों ने अ़ली रज़ि॰ से कहा: आज का दिन तुम्हारे नेता और नाइक की शर्त के मुताबिक़ अन्तिम दिन है, इसलिये उन से कहो कि अब मक्का से वापसी की तय्यारी करें। आप ने फ़रमाया: ठीक है, फिर आप मक्का से रवाना हो गये।

फ़ाइदा:– यह हदीस संक्षिप्त में है, बुख़ारी में बड़ी तफ़सील से बयान है (हदीस न॰ 4180, 4181, 4185, किताबुल मग़ाज़ी) हज़रत उमर रज़ि॰ इस समझौते को मुश्रिकों के दबाव का परिणाम बताते थे। इसी मौक़े पर अबू जन्दल को वापस कर दिया गया। कोई व्यक्ति एहराम खोल कर जानवर कुर्बान करने को तय्यार न था। बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ मुसलमानों की संख्या चौदह सौ थी। जिन शर्तों पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने समझौता किया था उन्हें देखा जाये तो मालूम होता है कि वह यकतरफ़ा था, इसी लिये उमर बिन ख़त्ताब इसे मुसलमानों के लिये ज़िल्ल्त समझते थे। लेकिन जब सूरः फ़तह नाज़िल हुयी और इसे बहुत बड़ी जीत कहा तो समस्त सहाबा प्रसन्न हो गये। प्रश्न यह है कि जब आप पढ़े लिखे न थे तो फिर कैसे लिख दिया? इस का उत्तर कुछ उलमा ने यह दिया है कि वास्तव में आप लिखना नहीं जानते थे लेकिन आप क़लम चलाते जाते थे और अल्लाह ने जो चाहा क़लम ने लिख दिया, हालाँकि आप को मालूम ही न था कि क्या लिखा गया। कुछ उलमा का यह कहना है कि उस समय अल्लाह ने आप को लिखना सिखा दिया था और यह चमत्कार होगा। कुछ उलमा ने कहा कि यहाँ "लिखना" का अर्थ "लिखवाना" है। जैसे कहा जाता है कि शाहजहाँ बादशाह ने ताजमहल बनाया, यानी बनवाया। और यही दिल को लगती बात है। यह हदीस बुख़ारी में है (2698)

1179:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि सूरः फ़तह उस समय नाज़िल हुयी जब आप हुदैबिया से वापस लौट रहे थे और सहाबा बड़े निराश थे। आप ने हुदैबिया के स्थान पर ही उम्रा के कुर्बानी के जानवरों को ज़ब्ह कर दिया था (क्योंकि काफ़िरों ने जाने से रोक दिया था) इसी मौक़े पर आप ने फ़रमाया था: मेरे ऊपर एक आयत उतरी है जो मुझे सारी दुनिया की चीज़ों से अधिक पसन्द है।

फ़ाइदा:– आप ने उम्रा करने के बाद मिना में कुर्बानी करने के लिये जानवरों को भी साथ ले लिया था और उस समय एहराम की हालत में थे। लेकिन जब रोक दिये गये तो हुदैबिय्या के ही स्थान पर उन्हें कुर्बान कर दिया और वहीं सर के बालों को मुडवाया। कुछ को आप ने स्वँय अपने हाथों से ज़ब्ह किया और 40 के लगभग अ़ली रज़ि॰ ने ज़ब्ह किया। सहाबा को यह शर्त बहुत ज़िल्लत वाली लग रही थी कि "अगर कोई मुसलमान मुर्तद होकर हमारे पास रहना चाहे तो हम उसे नहीं लौटायेंगे, लेकिन अगर कोई मुश्रिक ईमान ला कर तुम्हारे पास चला जाये तो उसे लौटाना होगा" हालाँकि जो मुसलमान

हो गया वह लौट कर कभी जा ही नहीं सकता और न ही ऐसी कोई घटना घटी, इसलिये यह शर्त तो हमारे ही पक्ष में थी, और सहाबा ने इसे बाद में समझा।

आप जो सुलह नामा पर राज़ी हुये थे और मुर्ख मुश्रिक नहीं समझे थे वह यह था कि सुलह की वजह से मुस्लिम-काफ़िर परस्पर मेलजोल बढ़ोयंगे और इस प्रकार मुसलमानों को उन्हें समझाने और दावत देने का मौक़ा मिलेगा। चुनान्चे आपने देखा कि उस दर्मियान हज़ारों लोग ईमान ले आये और मुसलमानों की शक्ति इस सुलह से और बढ़ी अन्ततः मक्का ही फ़तह हो गया।

बाब {ख़ैबर की लड़ाई का बयान।}

1180:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम सहाबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ ख़ैबर की जन्ग के लिये निकले तो अल्लाह पाक ने हमें विजय दिलायी। उस जन्ग में हमें सोना-चाँदी तो नहीं मिला, अल्बत्ताा ग़ल्ला, सामान और कपड़े आदि माले ग़नीमत में हाथ आये। फिर जब हम लोग एक घाटी से होकर वापस हो रहे थे तो रास्ता में (मदग़म नामक) आप का गुलाम जिसेक़बीला बनी ज़बीब के रिफ़ाआ़ बिन ज़ैद ने आप को दिया था, वह आप का कजावा खोलने लगा। इसी बीच कहीं से एक तीर उसे आ कर लगा और उस की मृत्यु हो गयी। हम लोगों ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! उस का स्वभाग्य है कि शहादत की मौत पाई। आप ने फ़रमायाः नहीं तो, उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मुहम्मद की जान है, ख़ैबर के दिन माले ग़नीमत तक़सीम होने से पहले उस ने जो चादर चुरा कर रख ली थी वह आग बन कर उस के ऊपर भड़क रही है। यह सुन कर लोग डर गये। इतने में एक व्यक्ति, एक या दो रस्सी के बन्धन ले कर आया और कहने लगाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! इसे मैं ने जन्ग में पाया था। आप ने फ़रमायाः (अगर तू वापस न करता तो) यह बन्धन तुम्हारे लिये आग का काम करते।

फ़ाइदाः– मालूम हुआ कि माले ग़नीमत में से तक़सीम से पहले कुछ चुपके से रख लेना हराम है। बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामान की एक व्यक्ति करकरा नामक रखवाली करता था, जब उस की मृत्यु हो गयी तो आप ने फ़रमायाः वह जहन्नम में है। चुनान्चे लोगों ने उस के घर जा कर देखा तो पाया कि उस ने ग़नीमत के माल की एक चादर चुरा कर रख ली थी (बुख़ारी-3074) हाफ़िज़ इब्ने हजर लिखते हैं कि जन्ग के दौरान अगर दुश्मन की सवारी, हथियार आदि मिल जाये तो उसे प्रयोग में ला सकता है, लेकिन जन्ग की समाप्ति पर उसे माले ग़नीमत में जमा कर दिया जाये (फ़त्हुल बरी-6/388) हाँ, खाने-पीने और ख़राब होने वाली वस्तुओं का इस्तेमाल जाइज़ है। चुनान्चे इब्ने उमर रज़ि॰ ने बयान किया कि जन्ग में शहद, अन्गूर अगर मिल जाये तो उन्हें खा लेते थे, बैतुल माल में नहीं दाख़िल करते थे (बुख़ारी-3154) ख़ैबर की लड़ाई में कुछ खाने पीने की वस्तुएँ हाथ लगीं तो हर

सवार आता और उस में आवश्यक्तानुसार लेकर चला जाता था। (अबू दावूद-2704, बैहक़ी-9/60) इस विषय पर और अधिक जानकारी के लिये हदीस न॰ 1136, 1137 का फ़ाइदा देखें।

बाब {जब मुहाजिरों को जन्ग में माले-ग़नीमत मिलने लगा (और वह धनवान हो गये) तो हिजरत के समय अन्सार ने जो चीज़ें उन्हें दी थीं, उन्हें लौटा दिया।}

1181:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब मुहाजिर लोग मक्का से हिजरत कर के मदीना आये वह यकदम ख़ाली हाथ थे, अन्सारी लोगों के पास ज़मीन और बाग़ थे। चुनान्चे उन्होंने अपनी ज़मीनें मुहाजिरों को दे दीं कि वह उस में खेती-किसानी करें और आधी पैदावार हर वर्ष हमें दिया करें। अनस बिन मालिक रज़ि॰ की माता जी जो (अबू तल्हा से निकाह कर लेने के बाद) अ़ब्दुल्लाह बिन अबू तल्हा की भी माँ थी, जो अनस रज़ि॰ के माँ जाए भाई हुये। इन्होंने भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को खजूर के चन्द पेड़ दिये थे, जिसे आप ने अपनी आज़ाद की हुयी लौंडी उम्में ऐमन को दिया था, जो उसामा बिन ज़ैद की माता थीं।

हदीस के रावी इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझ से अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब ख़ैबर की लड़ाई सेमदीना शरीफ़ वापस लौटे तो मुहाजिर भाइयों ने अन्सार को उन की दी हुयी वस्तुएँ वापस लौटा दी। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी मेरी माँ को उन का बाग़ वापस कर दिया और उम्मे ऐमन को उस के स्थान पर दूसरा बाग़ दे दिया।

इब्ने शिहाब ने बयान किया कि उम्मे ऐमन उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ की माता थीं, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पिता अ़ब्दुल्लाह बिन मुत्तलिब की लौंडी थीं यह हब्शा की थीं, जब आमिना के पेट से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पैदा हुये तो यह आप की देख-भाल करती थीं, बाद मैं जब आप बड़े हुये तो इन्हें आज़ाद कर दिया और इन का निकाह ज़ैद बिन हारिसा से कर दिया। इन का देहान्त नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के देहान्त के पाँच माह के बाद हुआ।

फ़ाइदा:- यही हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी है देखें (2630, 4040) बुख़ारी ही की एक रिवायत है कि अनस बिन मालिक रज़ि॰ जब बाग़ लेने गये तो उम्मे ऐमन ने देने से इन्कार कर दिया। आप ने उन से कहा: तुम उस बाग़ के बदले इतना-इतना और ले लो, लेकिन उसे वापस कर दो, लेकिन उम्मे ऐमन उस बाग़ को देने पर राज़ी न हुयीं। यहाँ तक कि आप ने बदले में दस गुना अधिक दिया तब जा कर अनस को उन का बाग़ वापस किया (बुख़ारी-) ख़ैबर की लड़ाई में जब बनी नज़ीर और बनी क़ुरैज़ा के बाग़ात माले-ग़नीमत में मिले और मुहाजिर लोग मालामाल हो गये तो उन्होंने भी अन्सार की दी हुयी चीज़ें (ज़मीन, बाग़ आदि) लौटी दीं और एहसान मन्द होना पसन्द न किया।

बाब {मक्का के पराजित होने का बयान। मक्का में प्रवेश लड़ाई के बाद हुआ, लेकिन आप ने मक्का

वालों पर एहसान किया}

1182:— अ़ब्दुल्लाह बिन रिबाह से रिवायत है कि अबू हुरैरा रज़ि॰ ने बयान किया हम सहाबा की कई जमाअ़तें रमज़ान के महीना में यात्रा कर के अमीर मुआ़विया रज़ि॰ के पास गयीं। अ़ब्दुल्लाह बिन रिबाह ने बयान किया कि उस मौक़ा पर हम सहाबा एक-दूसरे की दावत लेकर उन्हें खिलाते-पिलाते। अबू हुरैरा रज़ि॰ तो अक्सर हम लोगों की दावत कर के अपने घर बुलाते। चुनान्चे एक दिन मैंने भी सोचा कि लाओ आज सब की दावत कर के उन्हें अपने घर बुलाऊँ। चुनान्चे मैं ने खाना तय्यार करेन का हुक्म दे दिया और शाम को अबू हुरैरा रज़ि॰ से मिल कर उन से कहा कि आज रात मेरे घर आप लोगों की दावत है। यह सुन कर उन्होंने कहा: आज आप मुझ से आगे हो गये (आज मैं भी दावत करने वाला था) मैं ने कहा: हाँ, आज मैं आगे हो गया। फिर मैं ने रात में सब को बुला कर दावत की। उस मौक़ा पर अबू हुरैरा रज़ि॰ ने कहा: ऐ अन्सारी भाइयो! आज मैं आप लोगों के सामने एक हदीस बयान करना चाहता हूँ, फिर उन्होंने फ़त्ह मक्का की घटना बयान करना आरंभ किया। उन्होंने बयान किया कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मक्का में प्रवेश करने का इरादा किया तो एक तरफ़ जुबैर रज़ि॰ को (कुछ सहाबा के साथ) भेज दिया और दूसरी तरफ़ ख़ालिद बिन वलीद रज़ि॰ को। और अबू उबैदा बिन जर्राह को सब का कमान्डर बना दिया, जिन के पास हथियार आदि नहीं थे। और इन लोगों ने घाटी के निचले हिस्से से प्रवेश किया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी एक गुट के साथ शमिल थे। इसी बीच आप ने मुझे देख लिया तो फ़रमाया: ऐ अबू हुरैरा! मैं ने कहा: ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मैं हाज़िर हूँ। आप ने फ़रमाया: मेरे पास केवल अन्सार ही के लोग आयें, और मेरे साथ शामिल होने के लिये अन्सार के लोगों को सूचना दे दो। चुनान्चे सभी अन्सार आप के पास आ कर एकत्र हो गये। यह देख कर कुरैश के लोगों ने भी अपने साथी-संघी लोगों को एकत्र कर लिया और कहा कि हम अपने इस गुट को मक्का में प्रवेश के लिये आगे भेजते हैं अगर कुछ मिलेगा तो हम भी उन के साथ हैं (और हमें भी मिलेगा) और अगर लेने के देने पड़ गये और किसी कठिनाई में फंस गये तो हम से जो भी माँगा जायेगा उसे हम देने को तय्यार हैं।

यह देख कर आप ने अन्सार से फ़रमाया: इस कुरैशी गुट को देखते हो। फिर आप ने एक हाथ को दूसरे हाथ पर रख कर बताया (कि यूँ, यानी मक्का के काफ़िरों को मार दो और उन में से एक को भी न छोड़ो) और फ़रमाया कि तुम लोग मुझ से सफ़ा पर्वत के पास मिलो। अबू हुरैरा रज़ि॰ ने बयान किया कि हम लोग रवाना हुये और जो कोई किसी काफ़िर की हत्या करना चाहता तो बेधड़क कर देता और कोई मुक़ाबला करने के लिये सामने तक न आता।

इतने में अबू सुफ़यान ने आ कर कहा: ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! कुरैश के लोग तबाह हो गये, आज के बाद से उन का नामोनिशान मिट जायेगा। यह सुन कर आप ने

फ़रमायाः "जो अबू सुफ़यान के घर में जा कर छुप जाये तो उस को अमान प्राप्त है। यह देख कर अन्सार के लोग परस्पर बातें करने लगे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपने वतन की मुहब्बत घर कर गयी, इसीलिये अपने ख़ान्दान वालों पर नर्म पड़ गये। अबू हुरैरा रज़ि॰ ने बयान किया कि इसी बीच आप पर वह्यि आने लगी। जब आप पर वह्यि आने का सिलसिला आरंभ होता हम लोगों को पता चल जाता था, और जब तक वह्यि के नाज़िल होने का सिलसिला जारी रहता तो उस की समाप्ति तक कोई आप की तरफ़ आँख भी न उठाता था। चुनान्चे जब वह्यि का सिलसिला थम गया तो आप ने फ़रमायाः ऐ अन्सार के लोगों! उन्होंने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! हम हाज़िर हैं। आप ने फ़रमायाः तुम लोगों ने यह क्या कहा है कि मेरे दिल में अपने नगर की मुहब्बत घर कर गयी है? उन्होंने कहाः जी हाँ, हम लोगों ने ऐसा कहा है। आप ने फ़रमायाः ग़लत बात है। मैं अल्लाह काबन्दा और उस का सन्देष्टा हूँ, मैं ने अल्लाह की तरफ़ और तुम्हारी तरफ़ हिजरत की है, अब मेरा जीना-मरना तुम्हारे ही साथ है। इतना सुनना था कि अन्सार के लोग रोते हुये आप की तरफ़ दौड़े और कहने लगेः अल्लाह की क़सम! हम लोगों ने जो कुछ कहा था केवल आप से मुहब्बत में कहा था (कि आप हमारा साथ न छोड़ें और हमारे नगर ही में रहें) आप ने फ़रमायाः ठीक है, अल्लाह और उस के सन्देष्टा तुम्हारी बात मान कर तुम्हारी मजबूरी को स्वीकार कर लेते हैं।

अबू हुरैरा रज़ि॰ ने बयान किया कि फिर लोग (छुपने के लिये) अबू सुफ़यान के घर की तरफ़ जाने लगे और लोगों ने अपने घरों के दर्वाज़े बन्द कर लिये फिर आप हजरे-अस्वद के पास गये और उसे चूमा और काबा का तवाफ़ किया। फिर एकबुत के पास पहुँचे जो काबा के एक कोने में रखा हुआ था और जिस की लोग पूजा करते थे। उस समय आप के हाथ में कमान थी जिस का कोना थामे हुये थे। उसी कमान को उस की आँख में गड़ाने लगे और फ़रमायाः "**जा-अल् हक्क़ु व-ज़-ह-क़ल् बातिलु** (हक़ आ गया और बातिल रफ़ूचक्कर हो गया) (यानी अब बुतों की पूजा का समय लद गया) फिर जब तवाफ़ कर चुके तो सफ़ा पर्वत पर चढ़ कर काबा की ओर देख कर हाथ उठा कर दुआ़ फ़रमाने लगे।

फ़ाइदाः– यह लोग मुआ़विया रज़ि॰ के ख़िलाफ़त के ज़माना में मुल्क शाम गये होंगे, क्योंकि उन्होंने शाम ही को राजधानी बनाया था और वहीं रहते थे। आप ने एक हाथ को दूसरे पर रख कर फ़रमाया कि इस प्रकार काफ़िरों की गर्दनें काट देना। इस से मालूम हुआ कि बहुत से काफ़िर मारे गये थे और यह भी मालूम हुआ कि मक्का को तल्वार के बल पर फ़त्ह किया गया। इस पर सभी का इत्तिफ़ाक़ है, केवल इमाम शाफ़ई का मानना है कि सुलह से फ़त्ह हुआ।

मुस्लिम ही की एक रिवायत में है कि काबा के अन्दर 360 बुत रखे हुये थे जिन्हें आप लक्ड़ी से ठोकर मार-मार कर गिराते जाते थे और यह पढ़ते जाते थे "हक़ का

ज़माना आ गया और बातिल का समय लद गया" जैसा कि नीचे हदीस आ रही है।

दिल में प्रश्न पैदा होता होगा कि मक्का पर मुसलमानों ने क्यों आक्रमण किया? जबकि हुदैबिया के स्थान पर समझौता हो गया था। इस का उत्तर यह है कि हुदैबिया की सुलह में एक शर्त यह भी थी कि दोनों फ़रीक़ (यानी मुसलमान और कुरैश मक्का) एक-दूसरे का साथ देने वाले क़बीले भी परस्पर जन्ग न करेंगे। उस समय क़बीला बनी बक्र कुरैश के साथ था और क़बीला बनी ख़ज़ाआ मुसलमानों के साथ। चुनान्चे बनी बिक्र ने क़बीला बनी ख़ज़ाआ पर आक्रमण बोल दिया और कुरैश मक्का ने भी उन का साथ दिया। उन बेचारों ने काबा में घुस कर जान बचाने की कोशिश की लेकिन वहाँ भी उन्हें न छोड़ा और हरम में उन्हें क़त्ल किया। बड़ी मुश्किल से 40 आदमियों ने जान बचा कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर होकर घटना की जानकारी दी। चूंकि क़बीला बनी ख़ज़ाआ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हलीफ़ थे और काफ़िरों ने खुल्लम-खुल्ला मुआ़हिदा को तोड़ा और गद्दारी की। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बनी ख़ज़ाआ से जो मुआ़हिदा किया था कि एक-दूसरे की सहायता करेंगे, इस नाते आप का फ़र्ज़ बनता था कि उन की सहायता करें और दुश्मन को सबक़ सिखाएँ। चुनान्चे सन 8 हि॰ में रमज़ान के महीना में मक्का पर आक्रमण बोल दिया। हुदैबिय्या का समझौता ज़िल् हिज्जा सन 6 हि॰ में हुआ था (बुख़ारी-4280, 4281, 86)

बाब {काबा के आस-पास से बुतों को निकाल फेंकने का बयान।}

1183:- अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का में दाख़िल हुये तो उस समय काबा के आस-पास 360 बुत रखे हुये थे (जिन की मुश्रिक लोग पूजा करते थे) चुनान्चे आप ने हर एक को उस छड़ी से जो आप के हाथ में थी ढकेल दिया (जिस से वह औंध मुँह गिर पड़े) और फ़रमायाः "हक़ आया और बातिल मिट गया और बातिल को तो कमटना ही था," "हक़ आ गया और झूठ न बनाता है न किसी को लौटाता है (बल्कि दोनों ही अल्लाह के काम हैं) इब्ने अबू उमर रज़ि॰ ने इतना और रिवायत किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़त्ह मक्का के दिन उन बुतों को ढकेला और कुरआन की आयत पढ़ी।

बाब {मक्का फ़त्ह हो जाने के बाद कोई भी कुरैश का व्यक्ति बाँध कर नहीं क़त्ल किया जायेगा।}

1184:- अ़ब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ अपने पिता (मुतीअ़) सेरिवायत करते हैं कि उन्होंने बयान कियाः मैं ने फ़त्ह मक्का केदिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः आज के बाद कोई भी कुरैश मक्का का व्यक्ति क़ियामत तक बाँध कर नहीं क़त्ल किया जायेगा।

फ़ाइदाः- इस का अर्थ यह है कि समस्त मक्का वाले ईमान ले आयेंगे और ईमान

लाने के बाद कोई मुतर्द न होगा कि उस को पकड़ कर बाँध कर क़त्ल करने क़ी नौबत आये। इस हदीस में केवल मुर्तद होने के जुर्म की बात है, वर्ना और दूसरे जुर्म जैसे चोरी, डाका और हत्या के जुर्म में बाँध कर क़त्ल किया जायेगा। चुनान्चे इब्ने ख़तल जों नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का सब से कट्टर दुश्मनं था, मुर्तद हो गया था, इस के पास लौडियाँ थीं जिन से यह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को गालियाँ दिलवाता था। फ़त्ह मक्का के दिन लोगों ने आप से कहा कि इब्ने ख़तल काबा के पर्दो में छुपा हुआ है। आप ने हुक्म दिया कि उसे पकड़ कर लाओ, चुनान्चे लोग उसे बाँध ा कर लाये और उसी हालत में उस की गर्दन मार दी गयी, (बुख़ारी-4286) इस के बाद आप ने यह हदीस बयान फ़रमायी। (शरह इमाम नववी)

बाब {फ़त्ह मक्का के बाद इस्लाम, जिहाद और भलाई के कामों पर बैअ़त लेने का बयान।}

1185:– मशाजे बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं अपने भाई अबू सअ़ीद को मक्का फ़त्ह हो जाने के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास लाया और अनुरोध किया: ऐ अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप इस से हिजरत पर बैअ़त ले लीजिये। आप ने फ़रमाया: हिजरत तो अब हिजरत करने वालों के साथ समाप्त हो चुकी। मैं ने पूछा: फिर आप किस चीज़ पर बैअ़त लेंगे? आप ने फ़रमाया: इस्लाम पर जमे रहने पर, आवश्यक्ता पड़ने पर जिहाद करने पर और नेकी के कार्य करने पर।

हदीस के रावी अबू उस्मान ने बयान किया कि बाद में मैं अबू सअ़ीद से मिला और उन से मशाजे का कहना बयान किया तो उन्होंने कहा कि मेरे भाई ने सच कहा है।

फ़ाइदा:– यानी वह मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास ले गये थे तो आप ने वही उत्तर दिया था जो उन्होंने तुम से बयान किया। जहाँ तक अस्ल हिजरत(मक्का से मदीना) करेन का है तो अब इस की आवश्यक्ता ही बाक़ी नहीं रही क्योंकि मक्का पराजित हो गया और पूरे मक्का के लोग ईमान ले आये।

बाब {मक्का फ़तह हो जाने के बाद अब (मक्का से मदीना) हिजरत करने की आवश्यक्ता बाक़ी नहीं रही, लेकिन (आवश्यक्ता पड़ने पर) जिहाद करने और जिहाद की नियत दिल में रखने का हुक्म बाक़ी है।}

1186:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से (मक्का से मदीना) हिजरत करेन के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमाया: मक्का फ़त्ह हो जाने के बाद हिजरत की आवश्यक्ता बाक़ी नहीं रही। हाँ, जिहाद करने और जिहाद करने की नियत (हर समय) दिल में रखने का हुक्म बाक़ी है, इसलिये जब तुम से जिहाद के लिये निकलने को कहा जाये तो तुरन्त निकल पड़ो।

बाब {जिस पर हिजरत करनी भारी महसूस हो उसे नेकी के कार्य करने का हुक्म है।}

1187:– अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है कि एक दीहाती ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से हिजरत के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमायाः हिजरत करना बड़ा कठिन कार्य है (इसलिये इस के बारे में तो सोचो ही नहीं) यह बताओ कि क्या तुम्हारे पास ऊँट हैं? उस ने कहाः हाँ, हैं। आप ने फ़रमायाः उस की ज़कात निकालते हो? उस ने कहाः हाँ। आप ने फ़रमायाः तुम समुन्दरों के उस पार से कार्य करते रहो, अल्लाह पाक तुम्हारे काम को बर्बाद नहीं करेगा।

फ़ाइदाः– हिजरत दो प्रकार की है। प्रथम मक्का से मदीना हिजरत करना। तो इस का हुक्म मक्का के फ़त्ह हो जाने और पूरे मक्का के दीन इस्लाम में दाख़िल हो जाने के बाद अब सदा के लिये समाप्त हो गया। लेकिन अ़ाम हिज़रत का हुक्म आज भी बाक़ी है। जैसे कोई मुसलमान ऐसे स्थान पर है जहाँ काफ़िर उसे नमाज़ रोज़ा करने की अनुमति नहीं देते हैं तो उस पर फ़र्ज़ है कि उस स्थान को छोड़ की ऐसी जगह जा कर बसे जहाँ मुसलमानों की आबादी हो। चुनान्चे सूरः निसा की आयत 97 में है कि "जब फ़रिश्ते जान निकालते समय प्रश्न करेंगेः तुम किस हाल में थे? तो वह कहेगा कि हम दबे कुचले हुये थे (इसलिये अल्लाह की इबादत नहीं कर सकते थे) इस पर फ़रिश्ते कहेंगेः क्या अल्लाह की ज़मीन फैली हुयी नहीं थी कि हिजरत कर के तुम वहाँ चले जाते?" (सूरः निसा 97) यहाँ पर हिजरत से वही अ़ाम हिजरत मुराद है और यह हुक्म क़ियामत तक के लिये बाक़ी है। एक गाँव छोड़ कर दूसरे गाँव, या एक जन्पद छोड़ कर दूसरे जन्पद, या एक राज्य छोड़ कर दूसरे राज्य में, या संभव हो तो एक राष्ट्र को छोड़ कर दूसरे राष्ट्र में जा कर आबाद हो जाना, जहाँ अल्लाह की इबादत कर सके, यह फ़र्ज़ है। आज भी हमारे जन्पद सिद्वार्थ नगर में बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ ठाकुर और बृहमण लोगों की धाक है, वह लोग अल्पमत में रहने वाले मुसलमानों पर अत्याचार करते हैं, और मस्जिदें नहीं बनाने देते हैं, यहाँ तक कि अज़ान नहीं कहने देते हैं, ऐसे लोगों के बारे में हुक्म है कि अपनी जायदाद बेच कर वहाँ से हिजरत कर जायें और ऐसे गाँव में जा बसें जहाँ मुसलमान अल्पमत में न हों।

बाब {हिजरत के बाद जन्गल में रहने की इजाज़त है।}

1188:– सलमा बिन अक्वा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं एक मतबर्ा हज्जाज बिन यूसुफ़ के पास गया तो कहने लगाः ऐ अकवा के बेटे! तू ने जन्गल में रहना शुरु कर दिया है इसलिये मुर्तद हो गया है। इस पर उन्होंने उत्तर दियाः ऐसी बात नहीं है, बल्कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे जन्गल में रहने कीअनुमति दी है।

फ़ाइदाः– उलमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि जिस घर को अल्लाह की राह में छोड़ा

फिर दोबारा वहाँ लौटना हराम है। यही कारण है कि मक्का फ़त्ह हो जाने के बाद जब पूरा मक्का मुसलमानों के अधीन हो गया फिर भी किसी ने मक्का वाले घर पर दावा नहीं किया और न ही कोई उसे देखने तक गया, बल्कि तीन दिन के बाद मदीना वापस आ गये। सलमा रज़ि॰ मक्का वापस नहीं गये थे, बल्कि जन्गल में रहने लगे थे। वही ऊँट-बकरियाँ चराते और अल्लाह की इबादत करते थे, इसलिये हिजरत के ख़िलाफ़ कहाँ हुआ और वह भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के आदेश से। हज्जाज बिन यूसुफ़ पागल और मूर्ख था। सलमा रज़ि॰ कितने पक्के-सच्चे मुसलमान थे-देखें ऊपर हदीस न॰ 1177।

बाब {हुनैन की जन्ग का बयान।}

1189:- अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब के बेटे कसीर ने बयान किया कि मेरे पिता जी ने बयान किया: मैं हुनैन की जन्ग में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ ही था। मैं और अबू सुफ़यान बिन हारिस दोनों ही आप से चिमेट रहे (और आप की तरफ़ से बचाव करते रहे) उस समय आप उस सफ़ेद रन्ग के ख़च्चर पर सवार थे जिसे फ़र्वा बिन नुफ़ासा जुज़ामी ने आप को उपहार में भेंट किया था (जिसे "शहबा" और "दुल्दुल" भी कहा जाता था) जब मुसलमानों और काफ़िरों के दर्मियान जन्ग छिड़ गयी और मुसलमान पीठ फेर कर भागने लगे उस समय आप का यह हाल था कि काफ़िरों से मुक़ाबला करनेके लिये अपने ख़च्चर को एड़ लगा कर आगे बढ़ रहे थे। उस समय मैं आप के ख़च्चर की लगाम थामे हुये था और तेज़ चलने से रोक रहा था और अबू सुफ़यान आप की रकाब थामे हुये थे। इसी दर्मियान आप ने मुझ से फ़रमाया: ऐ अ़ब्बास! समुरा वालों को ज़रा आवाज़ दो। उस समय मेरी आवाज़ बहुत ऊँची थी (मैं रात में अपने गुलामों को पुकारता तो आठ मील तक सुनाई देती थी) चुनान्चे मैं ने ऊँची आवाज़ से उन्हें पुकारा: ओ समुरा वालों! तुम लोग कहाँ हो? (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बुला रहे हैं) इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने बयान किया कि मेरी आवाज़ सुनते ही वह लोग ऐसे पलट पड़े जैसे गाय अपने बच्चे को देख कर चली आती है, फिर वह कहने लगे: हम लोग हाजिर हैं, हम लोग हाज़िर हैं। फिर वह काफ़िरों पर पिल पड़े और काफ़िरों से घमासान की जन्ग लड़ने लगे। उधर लड़ते जाते थे और अन्सार को पुकारते भी जाते थे: ऐ अन्सार के लोगो! ऐ अन्सार के लोगों! ऐ बनी हारिस बिन ख़ज़रज के लोगों! ऐ बनी हारिस बिन ख़ज़रज के लोगों! फिर इन्हें आवाज़ दे कर ख़ामोश हो गये। उस समय आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी गर्दन को ऊँची किये हुये ख़च्चर पर बैठे रहेऔर उन लोगों की लड़ाई को देख कर फ़रमाया: इस समय जन्ग अपने पूरे उफान (शबाब) पर है। फिर आप ने कुछ कंकरियों को हाथ में लेकर काफ़िरों की तरफ़ फेंक कर फ़रमाया: काबा के रब की क़सम! काफ़िर लोग पराजित होंगे।

अ़ब्बास रज़ि॰ ने बयान किया कि लड़ाई ज़ोरों पर थी लेकिन अल्लाह की क़सम!

जैसे ही आप ने कंकरियाँ उन काफ़िरों की ओर फेंकी तो क्या देखता हूँ कि कोई काफ़िर नहीं बचा जिस की आँख में कंकरी न घुस गयी हो। इस के बाद ही काफ़िर ठन्डे पड़ गये और वह पराजित हो गये।

फ़ाइदा:– 'हुनैन' मक्का और ताइफ़ के दौरान 30, 40 मील की दूरी पर औतास पर्वत की एक घाटी का नाम है। आप को सूचना मिली थी कि मालिक बिन अ़ौफ़ कई क़बीलों को एकत्र कर के मुसलमानों पर आक्रमण करने वाला हैं, इसलिये आपने फ़त्ह मक्का के तुरन्त पश्चात् 6 शव्वाल सन 8 हि॰ को 12 हज़ार मुसलमानों का लश्कर लेकर रवाना हुये। काफ़िरों की कुल संख्या केवल चार हज़ार थी, इसलिये मुसलमानों ने अपनी अधिक संख्या और अधिक हथियार होने के नाते लार्पवाही से काम लिया, जिस का परिणाम यह भुगतना पड़ा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तन्हा छोड़ पीठ फेर कर भाग खड़े हुये। लेकिन फिर वापस लौट कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ मुक़ाबला किया और विजय प्राप्त की। क़बीला बनी हवाज़िन तीर चलाने में बड़ा माहिर था। इस के निशाना बाज़ी की चर्चा दूर–दूर तक थी। क़बीला बनी सक़ीफ़ ने इस का साथ देकर इस की जन्गी शक्ति को और बढ़ा दिया था। अहमद और हाकिम की रिवायत के अनुसार केवल 80 सहाबा आप के साथ रह गये थे और बाक़ी सब ने पीठ दिखाई। मुस्लिम की एक और रिवायत में है कि आप ने जो मुट्ठी भर कंकरी फेंकी थी वह समस्त काफ़िरों की आँखों में जा कर लगी, यह आप के चमत्कार में से है। मुसलमान हथियार रख कर माले–ग़नीमत लूटने में लग गये थे, चुनान्चे दुश्मनों ने ग़ाफ़िल और निहत्था देख कर तीरों की बोछार कर दी (बुख़ारी–4317) अबू सुफ़यान ने मक्का फ़त्ह होने से पहले ही रास्ता में आ कर इस्लाम कुबूल कर लिया था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का फ़त्ह होने के बाद वहीं से हुनैन चले गये थे। दस हज़ार सहाबा तो वह थे तो मक्का फ़त्ह करने वाले थे। दो हज़ार मक्का के नौमस्लिम थे। इस प्रकार फ़ौज की कुल संख्या बारह हज़ार थी। बद्र के बाद यह दूसरी लड़ाई है जिस का नाम लेकर कुरआन ने ज़िक्र किया है और मुसलमानों की हार–जीत का बड़ा प्यारा चित्र खींचा है। देखें पार:10, सूर: तौबा, आयत न॰ 25, 26, 27।

1190:– अबू इस्हाक़ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति ने बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ के पास आ कर कहा: ऐ अबू अ़म्मारा! हुनैन की जन्ग के मौक़ा पर तुम लोग भाग खड़े हुये थे? यह सुन कर उन्होंने कहा: मैं गवाही देता हूँ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पीठ नहीं दिखाई थी। हाँ, चन्द जल्दबाज़ और बेहथियार लोग क़बीला हवाज़िन की तरफ़ चले गये तो वह लोग तीर चलाने में माहिर थे ही, इसलिये उन्होंने तीरों की बौछार कर दी तो इन्हें वहाँ से हटना पड़ा। फिर बाद में लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ गये, उस समय अबू सुफ़यान बिन हारिस रज़ि॰ आप के ख़च्चर को चला रहे थे, फिर आप उस से उतर पड़े और सहायता के लिये

दुआ़ माँगने लगे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस समय फ़रमाते जाते थेः

अ-नन्नबिय्यु ला कज़िब् अना इब्नु अ़ब्दिल् मुत्तलिब्

(मैं नबी हूँ, यह झूठ नहीं है और मैं अ़ब्दुल् मुत्तलिब का बेटा हूँ)

ऐ मेरे मौला! तू अपनी सहायता भेज दे। बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! जब भी जन्ग ज़ोर पकड़ती तो हम अपने आप को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आड़ में बचाते, और हम में सब से बहादुर वह थे जो लड़ाई में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ बराबर खड़े रहते थे।,

फ़ाइदाः— यह वही मौक़ा है जब आप ने ख़च्चर से उतर कर मुट्ठी भर कंकरी लेकर दुश्मनों की ओर फेंकी थी जो समस्त काफ़िरों की आँखों में लगी थी और सब अंधे होकर भाग खड़े हुये थे। हू बहू ऊपर की रिवायत बुख़ारी शरीफ़ में भी है (4315, 4316)

1191:— सलमा बिन अक्वा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम ने भी हुनैन की लड़ाई में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ जिहाद किया था। जब दुश्मनों से मुक़ाबला हुआ तो मैं एक घाटी के ऊपर चढ़ गया, इतने में एक व्यक्मि्त मेरे सामने आया तो मैं ने उस पर तीर चला दिया, चुनान्चे वह ग़ाइब हो गया, उस का क्या हुआ मुझे न मालूम हो सका। फिर मैं ने देखा कि दुश्मन दूसरी घाटी के ऊपर चढ़ गये हैं, उन की जन्ग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबा के दर्मियान हुयी जिस में सहाबा पराजित हो गये और मैं भी हार गया। उस समय मैं दो चादरों में था, एक को बाँधे हुये था और दूसरे को ओढ़े हुये था। इसी बीच मेरी चादर खुल गयी तो दोनों ही को एक साथ समेट लिया और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के समाने से गुज़रा, उस समय आप अपने खच्चर "शहबा" पर सवार थे। आप ने मुझे देख कर फ़रमाथाः ऐ अक्वा के बेटे! चुनान्चे मैं आप की आवाज़ सुन कर घबरा कर पलट पड़ा। इसी बीच आप को दुश्मनों ने घेर लिया तो आप ने खच्चर से उतर कर ज़मीन से एक मुट्ठी मिट्टी उठाई और उन के मुँह पर दे मारा और फ़रमायाः इन के मुँह बिगड़ गये। चुनान्चे उन दुश्मनों में से कोई भी ऐसा न बचा जिस की आँख में वह कंकरी जा कर न लगी हो। बस इसी के बाद उन्होंने पीठ फेर कर भागना शुरु कर दिया। अन्ततः हार उन्ही की हुयी, फिर जो माले-ग़नीमत हाथ लगा उसे आप ने मुजाहिदों के दर्मियान तक़सीम कर दिया।

फ़ाइदाः— मौलाना क़ाज़ी मन्सूर पूरी रह॰ अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि इस जन्ग में छः सहाबा शहीद हुये, छः सौ दुश्मन बन्दी बनाए गये और 71 मारे गये। बाद में आप ने उन सब क़ैदियों को छोड़ दिया (रहमतुल्लिल् आ़लमीन)

बुख़ारी की रिवायत के अनुसार बनी हवाज़िन के लोगों ने ईमान ला कर आप से कहा कि जिन्हें आप ने बन्दी बनाया है उन में आप की कई मायें और ख़ालायें और

दूध शरीक बहनें हैं इसलिये आप दया करें और उन्हें छोड़ दें, इसलिये आप ने उन्हें आज़ाद कर दिया (बुख़ारी–4318, 4319, 2307)

मालूम रहे कि दाई हलीमा क़बीला हवाज़िन ही से थीं और आप ने अपने बचपन के दो तीन साल इसी क़बीला में बिताये थे। कितनी महिलाओं ने आप को गोद में लिया होगा और दूध पीने के नाते कितने रिश्ते बन्ध गये, कितनी ख़ालायें और दूध शरीक भाई बहन हो गये। रिवायत में आता है कि दाई हलीमी की बेटी शैमा भी पकड़ी गयीं तो उन्होंने बताया कि मैं हलीमा की लड़की हूँ, आप को पाला–पोसा है, फिर उन्होंने दाँत काटने के निशान दिखाए जो आप ने बचपन में उन के साथ खेलते हुये काट लिया था। फिर आप ने उन्हें कुछ सामान दे कर आज़ाद कर दिया। सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।

बाब {ताइफ़ की लड़ाई का बयान।}

1192:– अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अ़ास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ताइफ़ वालों को घेर लिया, लेकिन उन्हें कुछ भी नुक़सान नहीं पहुँचाया और फ़रमाया (इतना सबक़ सिखाने के लिये बहुत हो गया) अब कल वापस लौट चलेंगे। इस पर सहाबा ने कहा: हम बिना फ़त्ह किये लौट जायेंगे? आप ने फ़रमाया: ठीक है कल सुब्ह मैदान में जन्ग के लिये आ जाओ। चुनान्चे सहाबा सुबह–सवेरे ही पहुँच गये लेकिन बड़ी संख्या में घायल हुये। अब आप ने फ़रमाया: कल अल्लाह ने चाहा तो वापस लौट चलेंगे, इसे सहाबा ने पसन्द किया तो आप हँस पड़े।

फ़ाइदा:– मक्का से तीस मील की दूरी पर बस्ती का नाम "ताइफ़" है। आप ने हुनैन को फ़तह करने के बाद सीधा ताइफ़ रुख़ किया कि लगे हाथों उन्हें भी सबक़ सिखा दें, इसलिये कि यह लोग भी हुनैन की जन्ग में हवाज़िन के साथ थे। लेकिन इस में उल्टा मुसलमानों ही का नुक़सान हुआ। ताइफ़ वाले एक वर्ष का खाना–पानी जमा कर के क़िला के अन्दर सुरक्षित हो गये थे। आप ने 20, 25 दिन तक उन्हें अपने घेरे में रखा लेकिन उन्हें पराजित न कर सके। वह अन्दर ही से तीर मारते और लोहे के गर्म टुकड़े फेंकते रहे जिस से 13 मुसलमान शहीद हो गये। आप ने नौफ़ल बिन मुआ़विया रज़ि॰ से मश्वरा किया तो उन्होंने कहा: यह लोमड़ी की तरह अपने बिल में घुस गये हैं, इसलिये लंबे समय तक इन का घेराव करना पड़ेगा तब यह क़ाबू में आयेंगे। चुनान्चे आप ने इरादा तर्क कर दिया। बाद में पूरा क़बीला बनू सक़ीफ़ ईमान ले आया। (वहीदी) यह लड़ाई भी शव्वाल सन 8 हि॰ में हुयी थी (बुख़ारी–4324, 4325)

1193:– अबू इस्हाक़ से रिवायत है कि अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद रज़ि॰ इस्तिस्क़ा (पानी की दुआ़ माँगने) के लिये लोगों के साथ मैदान के लिये निकले, फिर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ा कर पानी के लिये दुआ़ माँगी। उस मौक़े पर मेरी मुलाक़ात ज़ैद बिन अक़र्म रज़ि॰ से हो गयी, उस समय मेरे और उन के दर्मियान कोई नहीं था, या केवल एक व्यक्ति था। मैं ने उन से पूछा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नेकितने जिहाद किये हैं?

उन्होंने कहाः 19। मैं ने पूछाः आप कितने में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ शरीक रहे? उन्होंने कहाः 17 में। मैं ने पूछाः पहली लड़ाई कौन सी लड़ी? उन्होंने कहाः "ज़ातुल् उशैर" या "ज़ातुल् उसैर" की।

फ़ाइदाः– बुख़ारी में इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सर्वप्रथम "अबवा" की जन्ग के लिये गये, फिर "बुवात" के लिये, फिर "उशैरा" के लिये। 'अबवा' मदीना से चन्द मील की दूरी पर एक गाँव का नाम है। 'बवात' यह एक पहाड़ी का नाम है तो यंबूअ़ के निकट है। 'उशैरा' मक्का और मदीना के दर्मियान बन्दर यन्बूअ़ नामक स्थान के पास एक आबादी का नाम है। अबवा में मुसलमान लश्कर की संख्या 70, बवात में 200 और उशैरा में 300 थी। कहा जाता है कि अबवा में काफ़िरों और मुसलमानों के दर्मियान झड़प हुयी थी। अल्लाह की राह में सर्वप्रथम तीर इसी जन्ग में सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ि॰ ने चलाया था। यह तीनों लड़ाई तर्तीबवार सफ़र, रबीउल अव्वल और जुमादल आख़िर में लड़ी गयी। दोनों ही तरफ़ से कोई जानी हानि नहीं हुआ।

इस हदीस में ज़ैद बिन अर्क़म पहली लड़ाई "उशैरा" को बताते हैं। बुख़ारी में इब्ने इस्हाक़ "अबवा" को बताते हैं (हदीस न॰ 3949 का बाब) क़ाज़ी मन्सूर पूरी भी अबवा को बताते हैं (रहमतुल्लि आ़लमीन) संभव है कि ज़ैद बिन अर्क़म से यहाँ चूक हुयी हैं। वर्ना अबवा की जन्ग उशैरा से तीन माह पहले लड़ी गयी है।

अबवा की जन्ग का दूसरा नाम "जन्ग वुद्दान" भी है। क़ाज़ी मन्सूर पूरी ने अपनी पुस्तक "रहमतुल्लि आ़लमीन" में तमाम लड़ाइयों का ज़िक्र नबंरवार, सन, माह और कमान्डर की तफ़सील के साथ किया है। बुरैदा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने 19 जिहाद किये उन में से आठ में जन्ग हुयी।

फ़ाइदाः– 'गज़वा' उस जन्ग को कहते हैं जिस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम शामिल रहे हों, उस में जन्ग हुयी हो या न हुयी हो। 'सरिय्या' उस जन्ग को कहते हैं जिस में आप न शरीक रहे हों। इस रिवायत में 19 का ज़िक्र है, अबू याला की रिवायत में 21, एक और रिवायत में 27 का ज़िक्र है। इन की संख्या में बड़ा इख़्तिलाफ़ है। संभव है जिन्होंने 19 बताया है छोटी-छोटी लड़ाइयों को न शामिल किया हो।

इब्ने इस्हाक़ ने ग़ज़वात (जिस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम शरीक थे) की संख्या 27 और सरिय्या (जिस में आप नहीं शामिल थे) की 56 अथार्त कुल योग 83 बताया है। क़ाज़ी मन्सूर पूरी ने "रहमतुल्लि आ़लमीन" में 82 लिखा है जिन में ग़ज़वात की संख्या 26 लिखा है। क़ाज़ी साहब ने इन 82, 83 लड़ाइयों में हताहतों, मृत्कों, घायलों और बन्दियों का पूरा ख़ाका पेश किया है। इन में घायलों की संख्या को छोड़ कर शेष बाक़ी को दुरुस्त बताया हैः

मुसलमानः 1 बन्दी-127 घायल-359 शहीद

काफ़िरः 6564 बन्दी-759 हत्या, घायल-नामालूम

दोनों तरफ़ से मरने वालों की कुल संख्या 1018 (एक हज़ार अठारह)
आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम 19 या 21 या 27 जन्गों में शरीक हुये, लेकिन उन में से केवल 8 में लड़ने की नौबत आयी। (1) बद्र (2) उहुद (3) मुरैसीअ़ (4) ख़न्दक़ (5) कुरेज़ा (6) ख़ैबर (7) फ़त्ह मक्का (8) हुनैन (9) ताइफ़। बुरैदा ने जो 8 माना है उस में फ़त्ह मक्का को नहीं शामिल किया है, क्योंकि इमाम शाफ़अ़ी के निकट बिना लड़े सुलह की बुनियाद पर मक्का फ़तह हुआ है। हालाँकि यह ख़याल दुरुस्त नहीं है। (वहीदी)

आज दिनांक 4 जनवरी 2006 बुधवार रात्रि 10 बजे ऊँची मस्जिद अहले हदीस मोरी गेट में इस अध्याय का अनुवाद और संक्षिप्त "फ़ाइदा" संपन्न हुआ–वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़–लमीन। ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी

❀ ❀ ❀

किताबुल् इमा–रति
(इस्लामी शासन का बयान)

बाब {ख़लीफ़ा कुरैशी होना चाहिये।}

1194:– अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यह काम, यानी ख़िलाफ़त हमेशा कुरैश ही में रहेगी चाहे दुनिया में केवल दो ही आदमी रह जायें।

1195:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हुकूमत में समस्त जनता कुरैश के अधीन है। मुसलमान, मुसलमान कुरैश के ताबे हैं और काफ़िर लोग, काफ़िर कुरैश के ताबे (अ़धीन, मातहत) हैं (अर्थात कुरैश, होकूमत और अगुवाई के हक़दार हैं)

फ़ाइदा:– अ़रबी का एक शब्द "खिलाफ़त" और "इमारत" है। इस का अर्थ "होकूमत करना, सर्दारी करना, अगुवाई करना, मुल्क की बागडोर संभालना, राष्ट्र में इस्लामी क़ानून जारी करना" हदीस से मालूम हुआ के अपना सर्दार और हाकिम बनाने में भी खान्दान का ध्यान में रखना अनिवार्य है। हदीस से मालूम हुआ कि इस्लामी राज्य में इमामत और ख़िलाफ़त के लिये कुरैशी होना शर्त है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के देहान्त के बाद ख़िलाफ़त का मुद्दा गरमाया तो अन्सारी लोगों ने दावाकिया कि एक ख़लीफ़ा कुरैश में से हो तो एक अन्सार में से भी हो। इस पर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने यही हदीस पेश कर के उन के दावे को रद्द किया था। यह सुन कर अन्सारी नेता ख़ामोश हो गये और अबू बक्र की ख़िलाफ़त को स्वीकार कर लिया।

इस मस्अले में उम्मत का इजमा और इत्तिफ़ाक़ है, किसी का भी इख़्तिलाफ़ नहीं है। अगर कोई इख़्तिलाफ़ करता है तो यह बिद्अ़ती और गुमराह है। विस्तार से जानकारी के लिये बुख़ारी में हदीस न॰ 7139, 350 देखें।

1196:– आ़मिर बिन सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने अपने गुलाम नाफ़े के हाथ जाबिर बिन समुरा को एक पत्र लिख कर भेजा कि आप मुझे वह बातें बयान कर दें जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुनी हैं।

इस पर उन्होंने उत्तर भेजा कि जिस दिन माअ़िज़ अस्लामी को (ज़िना के आरोप में) रज्म किया गया उस दिन जुमा की शाम को मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि यह दीन-क़ियामत आने तक बाक़ी रहेगा, या यह फ़रमाया कि तुम पर बारह ख़लीफ़ा शासन करेंगे और सब कुरैश ख़ान्दान के होंगे। और यह भी फ़रमाते सुना कि मुसलमानों का एक छोटा सा लश्कर (रुम के बादशाह) किस्रा के सफ़ेद महल को फ़त्ह करेगा। और यह भी फ़रमाते सुना कि क़ियामत के निकट झूठे लोग पैदा होंगे उन से बच के रहना। यह भी फ़रमाते सुनाः जब अल्लाह पाक तुम में से किसी को मालदार बना दे तो सर्वप्रथम अपने और अपने बाल बच्चों पर ख़र्च करे (फिर जो बचे उसे ग़रीबों को दे) और यह भी फ़रमाते सुना कि मैं हौज़े-कौसर पर तुम्हारा इन्तिज़ार करुँगा।

फ़ाइदाः— माअ़िज़ अस्लमी ने बलात्कार किया था और स्वँय ही जुर्म को स्वीकार किया था। चुनान्चे दन्ड में पत्थरों से मार कर हलाक कर दिये गये। (हदीस न॰ 1039, बुख़ारी-6824) क़ियामत के निकट दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग राष्ट्र में बारह ख़लीफ़ा होंगे जो सब के सब कुरैशी होंगे। इस हदीस में 12 से मुराद अनगिनत हैं। एक रिवायत में है कि ख़िलाफ़त मेरे बाद तीस वर्ष तक रहेगी। तो इस का उत्तर यह है कि यहाँ नबुव्वत की ख़िलाफ़त मुराद है और 12 ख़लीफ़ों से मुराद आ़म ख़िलाफ़त है। लेकिन मौलाना दावूद रज़ि॰ लिखते हैं कि अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ से लेकर उमर बिन अ़ब्दुल् अ़ज़ीज़ तक 14 ख़लीफ़ा हुये। इन में मुआ़विया बिन यज़ीद और मर्वान की ख़िलाफ़त का ज़माना बहुत कम रहा, इसलिये इन्हें निकाल कर कुल 12 हुये। मौलाना ने इमाम हसन और अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर के ख़िलाफ़त के दावे को भी जोड़ा है (बुख़ारी, हदीस न॰ 7222, 7223 की शरह) लेकिन इन की तफ़सीर बेसर पैर की है जो दुरुस्त नहीं। अबू दावूद की रिवायत में यूँ है "दीन बाक़ी रहेगा यहाँ तक कि तुम पर 12 ख़लीफ़ा होंगे जिन पर उम्मत का इत्तिफ़ाक़ होगा (अबू दावूद) और यह क़ियामत के निकट होगा (वहीदी)

हज़रत उमर फ़ारुक़ रज़ि॰ के शासन काल में ईरान फ़त्ह हुआ और वहाँ के शासक किस्रा बिन हुर्मुज़ का कंगन सुराक़ा रज़ि॰ को पहनाया गया। वह इतना बड़ा था कि उन के बाज़ू के ऊपर तक पहुँचता था (बैहक़ी) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हिजरत के मौक़ा पर जब सुराक़ा आप को पकड़ने गये थे तो उस मौक़ा पर आप ने सुराक़ा के लिये भविष्यवाणी की थी कि तुम्हारे हाथ में किस्रा का कंगन होगा (बैहक़ी-इब्ने उतबा)

अपने घर वालों पर ख़र्च करो। यही बात आप ने सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ि॰ से भी फ़रमायी थी कि तुम केवल एक तिहाई माल की वसिय्यत कर सकते हो और यह बहुत अधिक है, तुम अपने पीछे अपने वारिसों को मालदार छोड़ो तो यह उस से बेहतर है कि उन्हें मुहताज छोड़ो कि वह लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें (बुख़ारी-2742)

बाब {अपने बाद किसी को ख़लीफ़ा नामज़द करने और न करने का बयान।}

1197:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं एक दिन (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी और अपनी बहन) हफ़सा के पास गया तो वह मुझ से कहने लगीं: क्या तुम्हें कुछ जानकारी है कि तुम्हारे पिता (ख़लीफ़ा उमर) किसी को ख़लीफ़ा नामज़द करेंगे या नहीं? मैं ने कहा: वह किसी को नामज़द नहीं करेंगे। लेकिन हफ़सा ने कहा: वह अवश्य ही किसी को नामज़द करेंगे। चुनान्चे मैं ने क़सम खाई कि इस बारे में पिता जी से अवश्य पूछूगाँ लेकिन फिर ख़ामोश रहा। फिर दूसरे दिन सुब्ह को भी उन से कुछ नही कहा। लेकिन (क़सम खा लेने की वजह से) मेरा हाल ऐसा हो रहा था गोया मैं अपने हाथों में पहाड़ उठाए हुये हूँ। अन्ततः मैं पिता जी के पास चला ही गया, तो वह अ़ाम लोगों का हाल–चाल मालूम करने लगे और मैं बताता रहा। इसी बीच बोल पड़ा कि मैं ने लोगों से एक बात सुनी थी तो क़सम खा ली थी कि आप से उस को अवश्य ही बयान करुँगा (वह बात यह है) कि लोगों का कहना है: आप किसी को ख़लीफ़ा नामज़द नहीं करेंगे। (अगर यह सच है तो यह बिल्कुल ऐसे ही है) कि आप के ऊँटों और बकरियों को चराने वाला चरवाहा आप के जानवरों को (बिना सूचित किये चुपके से) आप के पास छोड़ कर चला जाये। (अगर वह ऐसा करे) तो आप यही कहेंगे कि उस ने तो जानवरों को बर्बाद कर दिया। ऐसी सूरत में तो आप पर जनता और प्रजा (की सुरक्षा) के लिये ज़रुरी हो जाता है (कि अपने जीवन ही में किसी को नामज़द कर दें) चुनान्चे मेरी इन बातों का उन पर प्रभाव हुआ और थोड़ी देर तक सर झुकाए रहे। फिर सर उठा कर कहने लगे: अल्लाह पाक स्वँय ही अपने दीन की सुरक्षा फ़रमायेगा। और अगर मैं किसी को ख़लीफ़ा न भी नामज़द करुँ तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी तो किसी को नामज़द नहीं किया था। और अगर नामज़द कर दूँ तो (भी कोई हरज नहीं, क्योंकि) अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने नामज़द किया था।

इब्ने उमर रज़ि॰ ने बयान किया कि जब उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और अबू बक्र का उदाहरण पेश किया तो मैं तुरन्त समझ गया कि वह आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ही की पैरवी करेंगे और किसी को ख़लीफ़ा नहीं नामज़द करेंगे।

फ़ाइदा:– इस बात पर पूरी उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है कि अगर ख़लीफ़ा अपनी मृत्यु से पूर्व किसी को नामज़द कर जाये तो यह दुरुस्त है, जैसा कि अबू बक्र ने किया। और अगर न भी नामज़द करे तो यह भी दुरुस्त है, जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने किया। और दोनों ही सूरतें हक़ हैं।

मुस्लिम ही की रिवायत में है कि जब उन से नामज़द करने के लिये कहा गया तो उत्तर दिया: क्या मैं तुम लोगों का बोझ जीते जी भी उठाऊँ और मरने के बाद भी? मरने के बाद बोझ उठाने का यह अर्थ है कि मैं नामज़द कर दूँ और मेरा अनुमान ग़लत ठहरा और वह ख़िलाफ़त के योग्य नहीं निकला तो उस का भी वबाल मेरे सर होगा। दूसरे यह कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पैरवी को अबू बक्र रज़ि॰ पर

मुक़द्दम समझा।

रिवायत से ऐसा मालूम होता है कि बहन हफ़्सा अपने भाई अ़ब्दुल्लाह के बारे में चाहती थीं कि पिता जी इन्ही को ख़लीफ़ा बना दें। लेकिन उमर रज़ि॰ ने कह दिया कि "ख़िलाफ़त के बदले में न सवाब मिले और न अ़ज़ाब (मामला बराबर-बराबर छूट जाये) तो मैं इसी में खुश हूँ" ऐसा ख़याल रखने वाला व्यक्ति भला अपने पुत्र को क्योंकर नामज़द कर सकता है।

बाब {जिस से पहले बैअ़त कर ली उसी की बैअ़त को निभाना अनिवार्य है (किसी दूसरे से क़रना ना जाइज़ है)}

1198:– अबू हाज़िम बयान करते हैं कि मैं पाँच वर्ष तक लगातार अबू हुरैरा रज़ि॰ के पास बैठा (और उन्होंने मुझे हदीसें सुनायीं) एक मतर्बा उन्होंने यह हदीस भी सुनाई कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बनी इस्राईल की होकूमत, सन्देष्टा स्वैंय किया करते थे। चुनान्चे जब कोई सन्देष्टा देहान्त कर जाता तो दूसरा सन्देष्टा उन का स्थान ले लेता, लेकिन मेरे बाद तो कोई सन्देष्टा पैदा नहीं होगा इसलिये (मेरे नाइब) ख़लीफ़ा होंगे और बहुत अधिक (दावेदार) होंगे। इस पर सहाबा ने पूछाः इन हालात में आप हमें क्या आदेश देते हैं? आप ने फ़रमायाः जिस से पहले-पहल बैअ़त कर ली है तो केवल उसी की बैअ़त पूरी करो।

फ़ाइदा:– यानी ऐसा न करो कि पहले एक से बैअ़त कर लो फिर उसे कैन्सिल कर के दूसरे से कर लो। यह तरीक़ा महापाप है और उम्मत में फ़ित्ना-फ़साद और उपद्रव है। इसी प्रकार जब एक ख़लीफ़ा के हाथ पर लोग बैअ़त कर रहे हों तो कोई दूसरा अपनी ख़िलाफ़त के लिये बैअ़त न लेने लगे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐसे ख़लीफ़ा को कत्ल कर दो, क्योंकि यह दूसरा ख़िलाफ़त पर बैअ़त लेकर इत्तिफ़ाक़ और इत्तिहाद को समाप्त करता और (इस्लामी) राष्ट्र की जड़ को कमज़ोर कर रहा है। जब एक व्यक्ति को ख़लीफ़ा बना लिया और उस के हाथ पर पहले बैअ़त कर ली, तो अल्लाह का नाम लेकर उस पर भरोसा कर के उस की आज्ञा पालन करो। अपने वस्त्र की तरह रोज़-रोज़ ख़लीफ़ा न बदलो।

1199:– अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दे रब्बे काबा से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मस्जिदे हराम में दाख़िल हुआ तो क्या देखा कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ि॰ काबा की दीवार के छाँव में बैठे हुये हैं और लोग उन्हें घेरे में लिये हुये हैं। चुनान्चे मैं भी जा कर बैठ गया तो उन्होंने एक घटना बयान करते हुये कहाः हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ किसी यात्रा में थे, रास्ता में एक स्थान पर पड़ाव डाल दिया, तो कोई अपने ख़ेमे दुरुस्त करने लगा, कोई तीर से निशाना साधने लगा और कोई अपनी सवारी की देख-भाल करने लगा। इसी दर्मियान नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पुकारने वाले ने आवाज़ लगायीः "अस्सलातु जामि-अ़तुन् (नमाज़ पढ़ने के लिये एकत्र हो

जाओ) चुनान्चे हम लोग एकत्र हो गये तो आप ने फ़रमायाः मुझ से पूर्व जितने सन्देष्टा आये, उन्होंने भी अपने उम्मतियों (अनुयायियों) को भलाई का रास्ता दिखाया और बुराइयों से डराया।

और रही तुम्हारी यह उम्मत, तो इस के पहले हिस्सा में सलामती है और अन्तिम हिस्सा में आज़माइश है, और ऐसे-ऐसे फ़ितने पैदा होंगे कि बाद का फ़ितना-फ़साद पहले वाले से अधिक होगा। एक फ़ितना सामने आयेगा तो मोमिन कहेगा कि इस में मेरी तबाही व बर्बादी है। फिर इस के समाप्त होते ही दूसरा आ जायेगा तो जो मोमिन बन्दा होगा वह चिल्ला उठेगा कि इस में तो पहले से भी अधिक बर्बादी है। इस हालत में जो बन्दा यह चाहता है कि जहन्नम की आग से नजात पा जाये और जन्नत में जाये, वह मरते दम तक अल्लाह और आख़िरत पर यक़ीन रखे, और लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार और सुलूक करे जैसा वह अपने बारे में दूसरों से उम्मीद रखता है। और अगर किसी इमाम से बैअ़त कर ली और उस की आज्ञा पालन करने की निय्यत से उसे अपना हाथ दे दिया तो फिर भरसक उस की आज्ञा पालन करे। और अगर कोई दूसरा इमामत का दावा पेश करे (तो उसे मना करो, अगर न माने) तो उस की गर्दन मार दो।

अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया कि यह बातें सुन कर मैं स्वँय उठ कर अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र रज़ि॰ के पास गया और उन से कहाः मैं आप को अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ कि (आप ने जो बातें अभी बयान की हैं) क्या आप ने स्वँय नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुनी हैं? इस पर उन्होंने अपने दोनों कानों और दिल की तरफ़ इशारा कर के कहा कि मेरे इन दोनों कानों ने सुना है और दिल ने याद रखा है। इस पर मैं ने उन से कहाः आप के चचा के पुत्र मुआ़विया तो हम लोगों को एक-दूसरे का माल नाहक़ खाने और एक-दूसरे की हत्या करने का हुक्म देते हैं, जब कि अल्लाह पाक ने (कुरआन पाक में) कह दिया हैः "ऐ ईमान वालों! तुम लोग अपना माल परस्पर नाहक़ न खाओ, मगर यह कि तुम्हारी आपस की रज़ामन्दी से ख़रीद-फ़रोख्त हो। और तुम एक-दूसरे की (नाहक़) हत्या न करो। और अल्लाह पाक तुम पर बड़ा रहम करने वाला है।" (सूरःनिसा-29) यह सुन कर अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अ़ास रज़ि॰ थोड़ी देर तक चुप रहे, फिर बोलेः तुम केवल मुआ़विया की उन्हीं बातों में उन की आज्ञा पालन करो जो अल्लाह के हुक्म के अनुसार हों, और उन की जो बातें अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ हों उन में उन की आज्ञा पालन न करो।

फ़ाइदाः- यह हदीस मौजूदा हालात में मुसलमानों के लिये बड़ी अहम है। एक ख़लीफ़ा के हाथ पर बैअ़त कर लेने के बाद दूसरे से भी बैअ़त करना बड़ा पाप है और हराम है। चाहे दूसरी बैअ़त जान बूझ कर की हो या अन्जाने में। एक ही नगर में की हो, या अलग-अलग नगरों में। उलमा का इस मुद्दे पर इत्तिफ़ाक़ है कि एक ही समय में दो ख़लीफ़ा नहीं हो सकते। अर्गचे मुल्क चाहे जितना बड़ा हो। क्योंकि इस से यकताई और

यकजुटता भंग होती है और इस्लाम की शक्ति समाप्त होती है। बल्कि होना तो यह चाहिये कि दूसरे मुद्दआ़ी ख़लीफ़ा को रोका जाये। अगर वह न माने तो उस से जन्ग की जाये, और फिर भी न माने तो उस की गर्दन मार दी जाये। दो ख़लीफ़ा चुनने का परिणाम इस्लामी साहित्य में जन्ग और तबाही की शक्ल में हमारे सामने हैं, चाहे वह अमीर मुआ़विया और अ़ली रज़ि॰ की जंग हो, चाहे वह यज़ीद और हुसैन रज़ि॰ की जंग हो, चाहे वह हज्जाज बिन यूसुफ़ और अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि॰ की जंग की शक्ल में हो। इन लोगों का झगड़ा केवल ख़िलाफ़त को लेकर था, और इस से लड़ाई, झगड़ा, फ़ित्ना, फ़साद, क़त्ल और बर्बादी के अतिरिक्त और कुछ हाथ नहीं आया। इस्लामी इतिहास के पन्ने आज भी गवाही दे रहे हैं।

और जिस को ख़लीफ़ा चुन लिया है तो इस का हर्गिज़ यह अर्थ नहीं कि उस की हर जाइज़ व नाजाइज़ बात को मान लो। बल्कि केवल जाइज़ बातों को मानों और उस में उस की आज्ञा पालन करो। लेकिन फिर भी ऐसे पापी ख़लीफ़ा के साथ बग़ावत जाइज़ नहीं। क्योंकि बग़ावत की शक्ल में तबाही-बर्बादी है। उलमा का इस मुद्दे पर इत्तिफ़ाक़ है कि बग़ावत केवल उसी शक्ल में जाइज़ है जबकि खुल्लम-खुल्ला कुफ़्र और शिर्क के कार्य करने लगे, या दीन इस्लाम से अलग हो जाये। चुनान्चे उबादा बिन सामित रज़ि॰ ने बयान किया कि हम लोगों से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस बात पर बैअ़त ली थी कि हम लोग खुशी-नाखुशी, परेशानी और हक़तल्फ़ी हर हाल में इताअ़त करेंगे और लड़ाई-झगड़ा नहीं करेंगे जब तक कि खुल्लम-खुल्ला कुफ़्र न होने लगे। (मुस्लिम)

इस हदीस का निचोड़ यह है कि जिस को ख़लीफ़ा बना लिया वह अच्छा हो या बुरा, बहरहाल उस की ख़िलाफ़त को मानो। और अगर उस ख़लीफ़ा से कुछ ग़लतियाँ हो जायें फिर भी उस के ख़िलाफ़ बग़ावत न करो। क्योंकि इस का परिणाम तबाही-बर्बादी और अपनी ताक़त को समाप्त करना है।

इस हदीस में अ़ब्दुर्रहमान ने शाम के गवर्नर मुआ़विया बिन अबू सुफ़यान की तरफ़ इशारा किया है। उन्होंने अ़ली रज़ि॰ की ख़िलाफ़त को चैलन्ज कर दिया था और शाम वालों की एक सेना तय्यार कर के जन्गे जुमल नाम की लड़ाई लड़ी थी जिस में आ़इशा रज़ि॰ ने भी मुआ़विया का साथ दिया था। ज़ाहिर है इस जन्ग में मुआ़विया और उन की सेना ज़ालिम कहलाएगी जिन्होंने ख़लीफ़ा के साथ बग़ावत की, उन के साथ जन्ग की और उन का माल लूटा आदि। इसी को अ़ब्दुर्रहमान ने कहा कि " मुआ़विया क़त्ल करने और माल को नाजाइज़ खाने का हुक्म देते हैं।" 'सिफ़्फ़ीन' और 'जुमल- की दो जन्गें मुआ़विया और अ़ली रज़ि॰ की परस्पर कश्मकश का परिणाम थीं।

बाब {जब एक साथ दो ख़लीफ़ों से बैअ़त की जाये (तो इस बारे में क्या हुक्म है?)}

1200:- अ़बू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब एक साथ दो ख़लीफ़ों से बैअ़त की जाये तो जिस से बाद में बैअ़त हुई है उसे मार डालो।

फ़ाइदाः– क्योंकि दूसरे ख़लीफ़ा की बैअ़त पहले ख़लीफ़ा के होते हुये बातिल है। और इस प्रकार की बैअ़त लड़ाई-झगड़ा और फ़साद और इस्लामी कुव्वत को कमज़ोर करने की जड़ बुनियाद है, जैसा कि ऊपर के फ़ाइदा में बयान हुआ।

बाब {तुम में से हर एक व्यक्ति (किसी न किसी प्रकार से) हाकिम है, और तुम में से हर एक से उस की प्रजा के बारे में पूछताछ की जायेगी।}

1201:– अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में से हर एक व्यक्ति हाकिम (अर्थात निग्राँ, देखभाल करने वाला, सुरक्षार्कमी) है और हर एक से उस की प्रजा के बारे में पूछताछ की जायेगी। तो जो ख़लीफ़ा बना है वह जनता का हाकिम है और उस से उस की प्रजा (जनता) के (मामलात के) बारे में प्रश्न किया जायेगा (किउस के जान-माल की कितनी सुरक्षा की) इसी प्रकार एक व्यक्ति अपने घर वालों का निग्राँ है, इसलिये उस से उस के घर वालों के बारे में प्रश्न किया जायेगा (कि उन का हक़ अदा किया या नहीं) इसी प्रकार एक महिला अपने पति के घर और उस के बाल-बच्चों की मालकिन है इसलिये उस से घर और बाल-बच्चों के बारे में प्रश्न किया जायेगा (कि घर की कितनी देखभाल की और बच्चों की कैसी तबियत की) इसी प्रकार एक गुलाम भी अपने मालिक के सामान का निग्राँ है इसलिये उस से भी उस के बारे में प्रश्न किया जायेगा (कि तुम ने अपने मालिक के धन-माल और सामान की कितनी देख-रेख और सुरक्षा की) बहरहाल तुम में का हर व्यक्ति (किसी न किसी तौर पर) निग्राँ और हाकिम की हैसिय्यत से है और तुम सब ही से (तुम्हारे ऊपर डाली गयी ज़िम्मेदारी के बारे में) पूछ-ताछ की जायेगी।

फ़ाइदाः– हदीय की रोशनी में दुनिया का बड़ा से लेकर छोटे से छोटा व्यक्ति भी अपने-अपने स्थान पर (अपने पद और हैसियत के एतबार से) मालिक, हाकिम, निग्राँ और देख-भाल करने वाला है, कुछ न कुछ चीज़ें ऐसी ज़रुर हैं जो उस के मातहत हैं और उन के बारे में क़ियामत के दिन अवश्य ही पूछा जायेगा कि उन ज़िम्मेदारियों को तुम ने कहाँ तक निभाया।

इस दुनिया में छोटे से छोटा से लेकर बड़े से बड़ा तक किसी न किसी चीज़ का मालिक अवश्य है। किसी के पास एक रुपया ही सही, उस से उस एक रुपये के बारे में सवाल होगा कि किस जाइज़ अथवा नाजाइज़ कार्य में ख़र्च किया। भेड़-बक्री, ज़मीन-जायदाद, घर-बार, रुपया-पैसा, आँख, कान, नाक, हाथ, पैर, गर्ज़ेकि इन सब के बारे में पूछा जायेगा। इस छोटी सी हदीस ने हर व्यक्ति को चारों तरफ़ से घेर लिया है कि कोई ज़िम्मेदारी से निकल कर भाग नहीं सकता और न ही कोई पूछताछ से बच सकता है। इस हदीस की रोशनी में अगर सब को अपनी अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास हो जाये

तो दुनिया अम्न-सुकून और शान्ति का गहवारा बन जाये।

बाब {ख़िलाफ़त और हुकूमत के लिये भाग-दौड़ करना और उस की इच्छा और ख़ाहिश करना मकरूह है।}

1202:– अ़ब्दुर्रहमान बिन समुरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मुझ से अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ अ़ब्दुर्रहमान! किसी पदभार और हुकूमत के लिये माँग मुतालबा मत करो, क्योंकि अगर माँगे से हुकूमत मिली तो अल्लाह पाक तुम्हें (बेसहारा) छोड़ देगा। और अगर बिना माँगे मिली तो इस पर अल्लाह पाक तुम्हारी सहायता करेगा।

1203:– अबू ज़र रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ अबू ज़र! मैं तुम्हें कमज़ोर पाता हूँ और इस लिये वही पसन्द करता हूँ जो अपने लिये करता हूँ (इसलिये मैं मश्वरा देता हूँ) कि दो आदमियों के दर्मियान फ़ैसला न करो और यतीम के माल की निग्रानी का ज़िम्मा न लो।

1204:– अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहाः आप मुझे कोई पदभार क्यों नहीं सौंपते? यह सुन कर आप ने अपना हाथ मेरे कन्धे पर मार कर फ़रमायाः ऐ अबू ज़र! तुम कमज़ोर आदमी हो और यह पदभार एक अमानत है (जो बड़ा भारी बोझ है) इसलिये (अगर मैं तुम्हें कोई पदभार सौंप दूँ तो तुम निभा नहीं पाओगे और) क़ियमात के दिन शर्मिन्दगी और ज़िल्लत के अतिरिक्त कुछ हासिल न होगा। हाँ (पद भार वह संभाले) जो उसे संभालने और उस का हक़ अदा करने की क्षमता रखता है।

फ़ाइदा:– यह पदभार प्राप्त करना और उसे संभालना, लोगों पर प्रशासन करना, हुकूमत की बागडोर अपने हाथ में लेकर दुनिया को हिदायत की राह पर चलाना यह इन्सान ही का काम है, इस के लिये फ़रिश्ते नहीं आयेंगे। लेकिन सभी इन्सान का काम नहीं है। हर काम के लिये अल्लाह पाक ने बन्दों के अन्दर अलग-अलग कुव्वत, ताक़त और क्षमता रखी है, इसलिये हर व्यक्ति वही काम करे जिस के करने की सलाहियत और हिम्मत व साहस उस के अन्दर मौजूद हो। वर्ना ज़ाहिर है अगर हर व्यक्ति पदभार संभालने से अलग हो जाये तो फिर दुनिया का निज़ाम कैसे चलेगा। हदीस में इशारा इसी तरफ़ है कि जिस के अन्दर जितना बोझ उठाने की ताक़त है उतना ही उठाये। चुनान्चे हदीस शरीफ़ में है कि अगर कोई बुराई को देखता है और उसे मिटाने की ताक़त और शक्ति उस के अन्दर है तो हाथ से पकड़ कर उस को मिटा दे। लेकिन अगर हाथ से पकड़ कर, यानी ताक़त इस्तेमाल कर के उसे मिटाने की क्षमता नहीं रखता है तो बिला वजह ताक़त का प्रयोग न करे बल्कि ज़बान से मना करे.... पूरी हदीस।

दूसरी हदीस से यहाँ तक साबित है कि अगर ताक़त और सलाहियत है तो तख़्ता

पलट कर होकूमत को अपने हाथ में ले ले, ताकि दुनिया को बुराइयों से नजात मिल जाये और ऐसा करना सवाब का कार्य होगा।

हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने स्वँय ही बता दिया कि सहाबी के अन्दर सियादत, क़ियादत, ख़िलाफ़त और इमामत की सलाहियत व क्षमता नहीं है, इस लिये इस ज़िम्मेदारी को लेना बुद्विमानी नहीं है।

बाब {जोकोई पदभार की इच्छा प्रकट करता है, हम उसे पद नहीं देते हैं (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आदेश)}

1205:– अबू बुर्दा रिवायत करते हैं कि अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया, उस समय मेरे साथ क़बीला अश्अ़र के दो व्यक्ति भी मेरे दायें और बायें थे। उन दोनों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से काम माँगा। उस समय आप दातून कर रहे थे। यह सुन आप ने मुझ से पूछाः ऐ अबू मूसा! (या ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस!) तुमहारा क्या विचार है इस बारे में? मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को सन्देष्टा बना कर भेजा है इन दोनों ने मुझ से कुछ नहीं बताया और न ही मुझे इस का अनुमान था कि यह लोग आप से कार्य (पद और सर्दारी) के लिये प्रार्थना करेंगे। अबू मूसा रज़ि॰ ने बयान किया कि (यह रिवायत बयान करते समय भी) गोया मैं आप के दातून को देख रहा हूँ कि वह आप के चिनले होंट पर टिकी हुयी है। बहरहाल आप ने उत्तर दिया कि मैं उस को कोई पद नहीं देता जो स्वँय ही उस की इच्छा प्रकट करे, लेकिन ऐ अबू मूसा (या ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस!) अल्बत्ता तुम जाओ (मैं तुम्हें यमन का गवर्नर बना कर भेजता हूँ) चुनान्चे मुझे यमन भेज दिया फिर मेरे पीछे ही मआ़ज़ बिन जबल को भी (मेरा सहायक बना कर) भेज दिया।

चुनान्चे जब वह मेरे पास पहुँचे तो मैं ने कहाः आप का स्वागत है, फिर एक गद्दा उन के बैठने के लिये बिछा दिया। इसी बीच एक व्यक्ति वहीं पर ज़ंजीर में जकड़ा हुआ था। उसे देख कर मआ़ज़ रज़ि॰ ने पूछाः यह क्या मामला है? मैं ने कहाः यह अपने यहूदी धर्म को छोड़ कर इस्लाम ले आया था, लेकिन फिर बाद में मुर्तद हो कर यहूदी धर्म को स्वीकार कर लिया। यह सुन कर मआ़ज़ बिन जबल रज़ि॰ ने कहाः मैं उस समय तक नहीं बैठूँगा जब तक अल्लाह और उस के सन्देष्टा के फ़ैसले के अनुसार इस की गर्दन न मार दी जाये। मैं ने कहाः आप बैठ तो जाइये। उन्हेंने कहाः मैं उस समय तक नहीं बैठ सकता जब अल्लाह और उसके सन्देश्टा के फ़ैसले के अनुसार उस की गर्दन नहीं मार दी जाती। उन्होंने तीन मर्तबा इसी वाक्य को दोहराया। चुनान्चे उसे क़त्ल कर दिया गया। इस के बाद हम दोनों रात की नमाज़ (तहज्जुद) के बारे में बातें करने लगे तो मआ़ज़ बिन जबल ने कहाः मैं तो रात को सोता भी हूँ और उठ कर इबादत भी कर लेता हूँ और आशा है कि मेरे सोने में भी मुझे वही सवाब मिलेगा जो किसी को

इबादत करने में मिलता है।

फ़ाइदाः– इस हदीस में यहूदी के क़त्ल का बयान भी आ गया है, लेकिन वास्तव में इस का संबन्ध पद माँगने वाले को पद न देने नहीं से है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यमन को दो भागों में बाँट कर निचले क्षेत्र का गवर्नर अबू मूसा को और ऊँचे क्षेत्र का मआ़ज़ बिन जबल को बनाया था। यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ (6923) में भी बयान हुयी है। मालूम हुआ कि जो कोई पद और सर्दारी का इच्छुक हो उसे हर्गिज़ नहीं देना चाहिये।

एक व्यक्ति ख़िलाफ़त और गवर्नरी का पदभार उठा कर पूरा दिन उसी में उलझा रहता है, न समय पर खाना नसीब होता है और न समय में सोना और विश्राम करना। ज़ाहिर है ऐसा व्यक्ति अगर रात को नहीं सोएगा तो दूसरे दिन ख़िदमत कैसे कर सकेगा, इसलिये रात में सोना भी इबादत में शुमार किया जायेगा। इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि अगर मुर्तद तौबा कर के दीन इस्लाम की तरफ़ लौट आये तो ठीक, वर्ना उस की सज़ा हत्या है।

बाब {ख़लीफ़ा और इमाम अगर अल्लाह से डरने और न्याय से काम लेने का हुक्म देता है तो उस के इस प्रकार हुक्म देने पर उसे नेकी मिलेगी।}

1206:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः इमाम की मिसाल ढाल की सी है जिस की आड़ लेकर मुसलमान काफ़िरों से जिहाद करता है और उस की आड़ लेकर हर प्रकार की कठिनाइयों और कष्ट से सुरक्षित रहता है। इसलिये अगर वह अल्लाह से डरने का हुक्म दे और लोगों के मामलात में न्याय से काम ले तो इस पर उसे नेकी मिलेगी। लेकिन अगर इस के विपरीत करने का हुक्म देता है तो उसे दन्ड मिलेगा।

फ़ाइदाः– जिस प्रकार ढाल दुश्मन से सुरक्षा प्रदान करता है इसी प्रकार एक ख़लीफ़ा और इमाम भी जनता को सुख–चैन प्रदान करता है और उसे ज़ालिमों और बुरे लोगों से बचता है, क्योंकि उस की उपस्थिति में लोग एक–दूसरे पर अत्याचार करनेसे डरते हैं और क़ानून–व्यवस्था को बाक़ी रखते हैं और हर समय दन्ड से डर कर अत्याचार करने से घबराते हैं।

बाब {जो व्यक्ति हाकिम बन गया और न्याय किया उस के लिये जन्नत में क्या कुछ मिलेगा? इस का बयान।}

1207:– अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो लोग न्याय करने वाले हैं वह (क़ियामत के दिन) अल्लाह पाक के दाहिनी तरफ़ नूर के बने हुये मिंबर पर विराजमान होंगे। और अल्लाह के दोनों हाथ ही दाँयें हैं (बायाँ हाथ नहीं है) और यह इन्साफ़ करने वाले वह लोग होंगे जो मामलात

में, बाल-बच्चों में और उन को जो ज़िम्मेदारी सौंपी गयी हैं उस में सदा न्याय से काम लेते रहे हैं।

फ़ाइदाः- एक व्यक्ति का हमेशा न्याय पर स्थित पर रहना यह बड़ा कठिन कार्य है। दुनिया के समस्त मामलात में कहीं न कहीं इस प्रकार के मोड़ आते हैं कि बड़े से बड़े महारथी भी भटक जाते हैं और किसी न किसी प्रकार थोड़ा बहुत पक्ष ले ही लेते हैं। लेकिन अगर कोई अल्लाह का बन्दा हर हाल में न्याय से काम लेता है तो यह बहुत बड़ी बात है और इस का बदला जन्नत में अल्लाह पाक के निकट नूर के मिंबर पर बैठेंगा।

अल्लाह पाक के बायाँ हाथ नहीं है इस का यह अर्थ है दायें और बाँये हाथ में बड़ा अन्तर होता है। बाँये हाथ में कुव्वत और ताक़त कम होती है। बाँये हाथ से काम ठीक से नहीं हो पाता, बायाँ हाथ वह समस्त काम नहीं कर पाता जो दायाँ हाथ कर लेता है। लेकिन अल्लाह पाक का बायाँ हाथ भी वह सब कुछ करता है जो दायाँ करता है। उस के दोनों हाथ में कोई अन्तर नहीं, इसलिये बायाँ भी दायाँ कहलाया।

बाब {जो व्यक्ति हाकिम बन जाने के बाद नर्मी या सख़्ती करे (उस का बयान)}

1208:- अ़ब्दुर्रहमान बिन शमासा ने बयान किया कि मैं आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ के पास कोई मस्अला पूछने के उद्देश्य से आया तो उन्होंने पूछाः तुमहारा किस से संबन्ध है? मैं ने कहाः मैं मिस्र का रहने वाला हूँ। उन्होंने पूछाः तुम्हारे गवर्नर (यानी मेरे भाई) का क्या हाल था? मैं ने कहाः मैं ने तो उन के अन्दर कोई ख़राबी नहीं देखी (बल्कि उन का तो यह हाल था कि) अगर हम में से किसी का ऊँट मर जाता तो वह ऊँट देते थे, गुलाम मर जाता तो गुलाम देते थे, किसी का ख़र्चा-पानी घट जाता तो उसे भी देते थे।

यह सुन कर आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ ने कहा कि मेरे भाई मुहम्मद बिन अबू बक्र का लड़ाई में जो हाल हुआ (कि उन की हत्या कर के उन का शव जला दिया गया) यह सारी बातें मुझे वह बात बताने से नहीं रोक सकतीं जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे इस कोठरी में बताई थी (आप ने फ़रमाया था) ऐ अल्लाह! जो कोई मेरी उम्मत का हाकिम बन कर लोगों पर सख़्ती करे तो तू भी उस पर सख़्ती फ़रमा, और कोई मेरी उम्मत का हाकिम बन कर लोगों के साथ नर्मी से पेश आये, तो तू भी उस के साथ नर्मी का मामला फ़रमा।

फ़ाइदाः- मुहम्मद बिन अबू बक्र रज़ि॰, यह अबू बक्र रज़ि॰ की चौथी पत्नी अस्मा बिन्त उमैस से पैदा हुये। अस्मा का निकाह अ़ली रज़ि॰ के भाई जाफ़र से हुआ था। उन के देहान्त के बाद अबू बक्र के निकाह में आयीं। आ़इशा रज़ि॰ की माता का नाम उम्मे रुमान है। इस प्रकार यह दोनों बाप जाये भाई-बहन हुये। इन का अ़ली से बड़ा निकट संबन्ध था, तो आ़इशा का मुआ़विया और उस्मान रज़ि॰ से। अ़ली रज़ि॰ ने मुहम्मद को मिस्र का गवर्नर बनाया था। चुनान्चे इन्होंने वहाँ की जनता पर बड़ा अत्याचार किया और

तल्वार की नोक पर वहाँ की जनता को अ़ली के हाथ पर बैअ़त करने पर मजबूर किया। उस्मान रज़ि॰ को शहीद करेन में यह आगे-आगे थे। इन्होंने उन की दाढ़ी नोची और सीना पर सवार हो गये और पीछे से कनाना बिन बशीर ने तल्वार से शहीद कर दिया। जमल और सिफ़्फ़ीन की जन्ग में अ़ली रज़ि॰ की ओर से थे। आ़इशा रज़ि॰ के ऊँट का पैर काटने में भी यह थे।

मुआ़विया रज़ि॰ ने अपनी ख़िलाफ़त का दावा कर के मिस्र पर आक्रमण किया तो यह मैदान से भाग कर किसी के घर में छुप गये। मुआ़विया बिन ख़दीज ने इन्हें पकड़ कर क़त्ल कर दिया और शव को मरे हुये घोड़े की खाल में भर कर कूड़ेदान में फेंकवा दिया, बाद में जलवा दिया। इस प्रकार इन का बड़ा दुःखदाई अन्त हुआ। (तारीख़े-इस्लाम, भाग 2)

हदीस से ऐसा मालूम होता है कि वह लोगों पर सख़्ती करते थे इसलिये अल्लाह पाक ने भी उन पर सख़्ती की और उन का अन्त बुरा हुआ। इसी नाते आ़इशा रज़ि॰ ने स्पष्ट कर दिया कि उन का बुरा परिणाम मुझे मालूम है फिर भी मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीस अवश्य ही बयान करुँगी, चाहे वह हदीस मेरे भाई ही पर क्यों न फ़िट होती हो। लेकिन उस व्यक्ति के बयान से मालूम होता है कि वह बड़े रहम दिल थे, लोगों की मुसीबत में सहायता करतेथे। अल्लाह बेहतर जाने।

बहरहाल यह हदीस उन लोगों के लिये बहुत ही बड़ी वार्निंग और धमकी भरी है जो हाकिम बन जाने के बाद लोगों पर खुल्लम-खुल्ला अत्याचार करते, बेजा सख़्ती करते, अन्याय करते और तन्गी पैदा करते हैं।

बाब {दीन ख़ैर ख़ाही का नाम है।}

1209:- तमीम दारी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दीन, ख़ैर-ख़ाही (भलाई चाहने) का नाम है। इस पर हम ने पूछाः किस की ख़ैर ख़ाही? आप ने फ़रमायाः अल्लाह की, उस के रसूल की, मुसलमानों के हाकिम की और समस्त मुसलमानों की।

फ़ाइदाः- अल्लाह की ख़ैर-खाही यह है कि उस की इबादत और इताअ़त करे, रसूल की यह है कि उस के हुक्म की फ़र्माबारदारी करे, हाकिम की यह है कि उस का साथ दे और उस की सहायता करे और समस्त मुसलमानों की यह है कि उन के साथ भाई बन कर रहे। शब्द "ख़ैरख़ाही" अपने अन्दर अर्थ का समुन्दर छुपाए हुये है।

1210:- जरीर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ पर नमाज़ पढ़ने, ज़कात देने और हर मुसलमान के साथ ख़ैर ख़ाही करने पर बैअ़त की।

बाब {जिस हाकिम ने अपनी प्रजा के साथ ख़ियानत की और उस के साथ ख़ैरख़ाही नहीं की (उस

पर जन्नत हराम है)}

1211:— हसन से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद माक़िल बिन यसार का हाल-चाल उन की मौत वाली बीमारी में मालूम करने आया तो उन्होंने अब्दुल्लाह से कहा: आज मैं तुम से एक ऐसी हदीस बयान करने जा रहा हूँ जिसे मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से स्वँय सुनी थी, और अगर मुझे आशा होती कि मैं अभी जीवित रहूँगा तो तुम से हर्गिज़ न बयान करता। मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बयान करते सुना कि जो कोई जनता का हाकिम हो और वह इस हाल में मरा कि जिस दिन मरा उस दिन भी अपनी प्रजा के हक़ में ख़ियानत की है तो ऐसे हाकिम पर अल्लाह पाक जन्नत को हराम कर देता है।

1212:— हसन से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबी आइज़ बिन अम्र रज़ि॰ एक मर्तबा उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद से मिलने गये तो उस से कहा: ऐ मेरे बेटे! मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि सब से बुरा चरवाहा (निग्राँ और हाकिम) ज़ालिम बादशाह है, इसलिये तुम ऐसा कार्य न करना कि तुम्हारी गिन्ती भी ज़ालिम हाकिमों में हो। यह सुन कर उबैदुल्लाह ने उन से कहा: (चुपचाप) बैठे रहो, तुम तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा की भूसी हो। इस पर आइज़ रज़ि॰ बोले: क्या नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा में भी भूसी होते हैं? भूसी तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा के बाद के लोगों और ग़ैर सहाबा लोगों में होते हैं।

फ़ाइदा:— गेहूँ का आटा छल्नी में छानने के बाद जो छिलका निकलता है उसे "भूसी, चौकर" कहते हैं। इसे फेंक दिया जाता है। यहाँ 'भूसी' से मुराद "नाकारा, ज़लील, मूर्ख, जाहिल और नाअहल है। उबैदुल्लाह ने एक बुर्जुग और नेक सहाबी को 'भूसी' कह कर स्वयँ भूसी, नाकारा, ज़लील और मर्दूद होने का सबूत दिया है। वह बेचारे इसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस सुना रहे हैं और वहमज़ाक़ उड़ा रहा है।

उबैदुल्लाह बिन यज़ीद बिन मुआविया बिन अबू सुफ़यान, इसे मुआविया रज़ि॰ ने बसरा का गवर्नर बनाया था। इमाम हुसैन रज़ि॰ की राह में इन्होंने बड़े रोड़े अटकाए। मुस्लिम बिन अक़ील और हानी बिन उर्वा की हत्या करने, कर्बला के मैदान में पानी न पीने देने और इमाम हुसैन को शहीद करने में इन्ही का हाथ था। लेकिन यज़ीद ने इन्हें पुरस्कार और शाबाशी देने के बजाए लानत-मलामत की, इस प्रकार इन की दुनिया और आख़िरत दोनों ख़राब हुयी। इन के देहान्त के बारे में नहीं मालूम हो सका।

बाब {हाकिम और अमीर ही अगर माले-ग़नीमत में चोरी करता है तो यह महापाप है।}

1213:— अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हम सहाबा के सामने ख़ुत्बा दिया तो उस में माले ग़नीमत में चोरी का ज़िक्र करते हुये उसे महापाप बताया और फ़रमाया कि मैं तुम लोगों को

क़ियामत के दिन इस हाल में न पाऊँ कि उस की गर्दन पर ऊँट सवार होकर बलबला रहा हो और वह मुझे पुकार कर कहे कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! इस संकट की घड़ी में मेरी सहायता कीजिये और मैं उत्तर में कहूँ कि इस समय मुझे कुछ इख़्तियार नहीं है। इसी प्रकार मैं तुम्हें इस हाल में भी न देखूँ कि क़ियामत के दिन तुम्हारी गर्दनों पर घोड़ा सवार हो और वह हिंहिना रहा हो, फिर वह मुझ से कहे कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! आप मेरी सहायता कीजिये और मैं कहूँ कि आज मुझे कोई इख़्तियार नहीं है, क्योंकि मैं दुनिया ही में तुझे बता चुका था (कि माले ग़नीमत में चोरी करना महापाप है) और मैं तुम्हें क़ियामत के दिन इस हाल में भी न देखूँ कि तुम अपनी गर्दन पर बक्री लादे हुये हो जो मोमिया रही हो, और तुम उस समय मुझ से कहो कि अल्लाह के सन्देष्टा! मेरी सहायता कीजिये और मैं कहूँ कि आज तुम्हारी संकट की घड़ी में तुम्हारी कुछ सहायता नहीं कर सकता, क्योंकि मैं ने दुनिया ही में अल्लाह का हुक्म तुम्हें बता दिया था (कि माले-ग़नीमत में चोरी करना महापाप है) और मैं तुम्हें क़ियामत के दिन इस हाल में न देखूँ कि अपनी गर्दन पर कोई शव उठाए हुये हो और वह चीख़ पुकार कर रहा हो (कि इसी ने मेरी हत्या की थी) फिर वह मुझ से कहे कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! आप मेरी सहायता फ़रमा दें तो में कहूँ कि आज मेरे इख़्तियार में कुछ नहीं है, क्योंकि मैं ने अल्लाह का सन्देश दुनिया में पहुँचा दिया था। और मैं तुम्हें क़ियामत के दिन इस हाल में भी न देखूँ कि कोई अपनी गर्दन पर कपड़ों का गटठर लादे हुये हो (जिसे माले-ग़नीमत से दुनिया में चोराया था) या काग़ज़ की प्रचियाँ जो उड़ रही हों (जिन पर उस की बुराइयाँ लिखी हों) या इसी प्रकार की और दूसरी वस्तुएँ जो हील-डोल रही हों (जिन्हें दुनिया में चोराया था) फिर वह मुझ से कहे कि आज के दिन में तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता, क्योंकि मैं तो दुनिया ही में तुम्हें बता चुका था। और मैं तुम्हें क़ियामत के दिन इस हाल में भी न पाऊँ कि वह अपनी गर्दन पर सोना-चाँदी लादे हुये हो और कहे कि अल्लाह के सन्देष्टा! आप मेरी सहायता कीजिये और मैं कहूँ कि आज मैं तुम्हारी कुछ सहायता नहीं कर सकता, क्योंकि मैं ने तुम्हें दुनिया ही में सूचित कर दिया था (कि माले ग़नीमत में चोरी करना महापाप है)

फ़ाइदा:– माले-ग़नीमत में चोरी करना, या प्रजा और जनता के माल को हड़पना महापाप है। माले-ग़नीमत में चोरी करना, मुजाहिदों के हक़ और हिस्से को छीनना है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क़ियामत के सिफ़ारिश करने वाले होंगे, लेकिन इस मामले में भी वह कुछ न कर सकेंगे, इसी से आप इस के पाप की गंभीरता का अनुमान लगा सकते हैं। यहाँ हदीस में आप ने चन्द उदाहरण दिये हैं, वर्ना जो भी वस्तु चोरायेगा वह पीठ पर सवार होगी। एक तो चोरी और वह भी अमीर और हाकिम हो कर करे-लाहोल वला कुव्वत। अधिक जानकारी के लिये देखें हदीस न॰ 1138 का फ़ाइदा।

बाब {अमीर और हाकिम माले-ग़नीमत में से अगर कुछ छुपा कर रख लें तो वह भी चोरी है।

1214:– अ़दी बिन उमैरा कन्दी रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना, आप ने फ़रमायाः तुम में से किसी को हम कई ओहदा (पद) दें, फिर वह (बैतुल माल, या माले-ग़नीमत में से) एक सूई या इस प्रकार की कोई मामूली चीज़ भी अगर छुपा कर रख ले तो यह भी चोरी है और इसे क़ियामत के दिन (अपनी पीठ पर लादे हुये) लेकर आयेगा। यह सुन कर एक साँवले रंग के अन्सारी सहाबी खड़े होकर कहने लगेः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! आप ने जो पदभार मुझे सौंपा है उसे वापस ले लीजिये। आप ने पूछाः क्या बात है? उन्होंने कहाः मैं ने आप को ऐसा-ऐसा फ़रमाते सुना है (यानी एक सूई पर भी पकड़ होगी) आप ने फ़रमायाः हाँ, और फिर इस समय भी यही कहता हूँ कि अगर मैं किसी को कोई ओहदा (पद) दूँ और वह (जिहाद कर के) छोटी-बड़ी जो भी वस्तु लेकर आए (उसे जमा कर दे) फिर जो हिस्सा मिले उसे ले ले और जो उसे न मिले उसे प्राप्त करने की कोशिश न करे।

फ़ाइदाः– अगर इस प्रकार करेगा तो उस की पकड़ नहीं होगी। आजकल के हाकिम, पदभारी, दीनी पाठशालाओं के सरंक्षक (नाज़िम) और मस्जिदों के मुतवल्ली जो मस्जिद, मदरसा, और अनाथालाय आदि के नाम से चन्दे करते और रसीदें काटते फिरते हैं और हिसाब-किताब नहीं रखते हैं, इन लोगों के लिये यह हदीस विशेष रुप से चेतावनी है।

बाब {हाकिम लोग जो उपहार (विदाई) आदि पाते हैं उस के बारे में क्या हुक्म है?}

1215:– अबू हुमैद साअ़दी रज़ि॰ ने बयान किया किनबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़बीला अज़्द के एक व्यक्ति उतबिय्या नामक को क़बीला बनी सुलैम के लोगों से ज़कात की वसूली के लिये भेजा। जब वह वापस आये तो आप ने उन से हिसाब माँगा तो उन्होंने कहाः यह-यह आप का माल है और यह उपहार है (जो लोगों ने मुझे दिया है) इस पर आप ने फ़रमायाः अगर तू सच्चा है तो जा कर अपने बाप या माँ के घर में बैठ जा, वहाँ (स्वँय) तेरा उपहार तेरे पास पहुँच जायेगा। फिर आप ने हमें संबोधित किया और हम्द-सना के बाद फ़रमायाः अल्लाह पाक ने जो ज़िम्मेदारी मुझ पर डाली है उस की अदायगी के लिये जब मैं किसी को मुक़र्रर करता हूँ तो वह वापस आ कर कहता हैः यह माल तो तुम्हारा है और यह मुझे उपहार में मिला है। (अगर ऐसी ही बात है) और वह अपने दावे में सच्चा है तो फिर वह अपने माँ-बाप के घर में जा कर क्यों नहीं बैठ रहा, उस का उपहार वहाँ भी जा कर उस के पास पहुँच जाता। अल्लाह की क़सम! अगर तुम में से किसी ने नाहक़ कुछ भी ले लिया तो क़ियामत के दिन अल्लाह से इस हाल में मिलेगा कि उसे पीठ पर लादे हुये होगा। और तुम में से उन लोगों को अच्छी तरह पहचान लूँगा जो अल्लाह के दरबार में इस हाल में हाज़िर होंगे कि उन की पीठ पर ऊँट सवार होगा जो बलबला रहा होगा, या गाय सवार होगी जो बाँ-बाँ कर रही होगी, या बकरी सवार होगी जो मैं-मैं कर रही होगी।, फिर आप ने अपने दोनों हाथों को इतना बुलन्द किया कि बग़ल की सफ़ेदी नज़र आने लगी फ़िर फ़रमायाः

ऐ अल्लाह! मैं ने तेरा संदेश पहुँचा दिया। हदीस के रावी अबू हुमैद रज़ि॰ ने बयान किया कि मेरी आँखों ने देखा और मेरे कानों ने सुना (जो कुछ आप ने कहा और जिस प्रकार कहा)

फ़ाइदाः— तहसीलदार, हाकिम, पदअधिकारी आदि के लिये उपहार स्वीकार करना हराम है। इस का कारण ओहदा और पद पर उस का होना है। अगर कोई पदधिकारी उपहार लेता है तो उस के दिल में देने वाले के लिये हमर्ददी की भावना पैदा होना आवश्यक है। और देने वाले की भी निय्यत यही होती हैं, इसलिये भविष्य में कहीं न कहीं, कभी न कभी उस का पक्ष ले लेगा और उसे हक़ से अधिक दे ही देगा, या उस के दन्ड में कमी कर ही देगा। चुनान्चे एक हद्दीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उपहार और तोहफ़ा, हाकिम के कान, आँख और दिल को छीन लेता है (तबरानी कबीर) एक दूसरी रिवायत में है कि उपहार, बुद्विमान व्यक्ति को भी अन्धा बना देते हैं (दैलमी) यानी उसे नाजाइज़ फ़ैसला करने पर बाध्य कर देते हैं। यही कारण है कि हाकिम का उपहार लेना हराम और क़ाज़ी का रिवश्त लेना कुफ़्र है। (अहमद)

और अगर उसे स्वीकार कर लेता है तो चूँकि पद पर होने के नाते उसे दिया गया है, इसलिये चाहे वह कम हो या अधिक वह बैतुल माल का हक़ है, उसे बैतुल माल में जमा करना या ख़लीफ़ा को सौंपना ज़रुरी है।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बबूल के पेड़ तले "पीठ फेर कर न भागने की बैअ़त ली थी।}

1216:— जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि सुलह हुदैबिया के मौक़ा पर जबकि हम ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ पर बैअ़त की थी, हमारी संख्या 1400 थी। उस समय उमर रज़ि॰ बबूल के एक पेड़ के नीचे आप का हाथ थामे हुये थे। जाबिर रज़ि॰ ने कहा कि उस समय हम लोगों ने इस बात पर बैअ़त की थी कि हम भागेंगे नहीं, लेकिन "हम जान दे देंगे" इस बात पर बैअ़त नहीं की थी।

फ़ाइदाः— बुख़ारी की रिवायत में है कि सलमा बिन अकवा ने कहा कि हम लोगों ने मौत पर बैअ़त की थी (2960) यही वजह है कि इमाम बुख़ारी रह॰ ने इस प्रकार बाबा बाँधा है "लड़ाई से न भागने पर और कुछ लोगों ने कहा कि मर जाने पर बैअ़त करने का बयान" (देखें हदीस न॰ 2958 का बाब) इमाम नववी रह॰ लिखते है कि हदीसों में कोई टकराव नहीं हैं, क्योंकि मुजाहिद नहीं भागेगा, बल्कि डटा रहेगा तभी शहादत की मौत प्राप्त होगी। अर्थात न भागना, शहादत की मौत को दावत देना हुआ। और मौत पर बैअ़त करना, इस का अर्थ न भागने पर बैअ़त करना हुआ। क्योंकि शहादत की मौत उसी समय पायेगा जब डटा रहेगा और न भागेगा। इस प्रकार चाहे यूँ कहे कि "मैं न भागूँगा" या यूँ कहे "मैं मौत को गले लगाऊँगा" दोनों का अर्थ एक ही हुआ। मौत पर बैअ़त की

हदीस नीचे आ रही है (देखें-1219)

1217:- सालिम बिन अबू जअ़द से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ से बबूल के पेड़ तले बैअ़त करने वालों के बारे में पूछा कि उन की कितनी संख्या थी? उन्होंने कहा: हमारी संख्या 1500 थी, लेकिन अगर हम एक लाख की संख्या में भी होते फिर भी वहाँ के कुआँ का पानी हम सब के लिया काफ़ी हो जाता।

फ़ाइदा:- 'हुदैबिया' एक कुएँ का नाम था, इसलिये उस स्थान का नाम ही "हुदैबिय्या" पड़ गया। चूँकि मुशिरकों से समझौता भी उसी स्थान पर हुआ था इसीलिये उस का नाम भी "सुलह हुदैबिय्या" पड़ गया। सहाबा ने शिकायत की कि कुएँ में कुछ भी पानी नहीं है। आप के पास वुज़ू के लिये जो थोड़ा पानी है बस वही है। आप ने उस कुएँ के मुडैंर पर बैठ कर उस में कुल्ली कर दी जिसके बाद पानी के सोते उबलने लगे (बुख़ारी 4150, 4151, 4152) इमाम अहमद की रिवायत में है कि पानी मुँडेर के ऊपर से बहने लगा तो एक व्यक्ति अपनी चादर समेट कर भागा कि कहीं डूब न जाये। ज़ाहिर है इस मौक़े पर एक लाख क्या दो-चार लाख के लिये भी पानी काफ़ी था। यह घटना ज़ीक़ादा 6 हि॰ की है। यह स्थान मक्का से सात कोस की दूरी पर स्थित है।

1218:- अ़ब्दुल्लाह बिन औफ़ा रज़ि॰ से रिवायत है उहोंने बयान किय ाकि बबूल के पेड़ तले (बैअ़त करने वाले) हम सहाबा की संख्या 1300 थी। और क़बीला अस्लम के लोग मुहाजिर सहाबा के अनुपात में आठवाँ थे।

फ़ाइदा:- सहाबा की संख्या में इख़्तिलाफ़ है। एक रिवायत में 1500 है (बुख़ारी-4152) एक रिवायत में 1400 (बुख़ारी-4153, 53) एक रिवायत में 1300 है (बुख़ारी-4155) इमाम नववी रह॰ ने लिखा है कि इस में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है। 1400 से ऊपर की संख्या को किसी सहाबी ने 1500 माना, और किसी ने 1400 से ऊपर की संख्या को नहीं जोड़ा तो उन्होंने केवल 1400 बताया और किसी ने मुहतात अटकल लगा कर 1300 बताया। अधिकांश रिवायतों में 1400 ही आया है।

बाब {मौत पर बैअ़त लेने का बयान।}

1219:- यज़ीद बिन अबू उबैद से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने सलमा बिन अकवा रज़ि॰ से पूछा कि आप ने हुदैबिय्या के स्थान पर किस चीज़ पर बैअ़त की थी तो उन्होंने कहा: मर जाने पर बैअ़त की थी।

फ़ाइदा:- जानकारी के लिये ऊपर हदीस न॰ 1216 का फ़ाइदा देखें।

बाब {भरसक "सुनने और आज्ञा पालन करने" पर बैअ़त करने का बयान।}

1220:- अ़बदुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ पर आप की हर बात सुनने और उस की आज्ञा

पालन करने पर बैअ़त करते थे। इस पर आप यह भी फ़रमाते थे कि यह भी कहा करो "जितना मुझ से हो सकेगा"

फ़ाइदा:– यानी जितनी हमारे अन्दर सुनने, मानने और आज्ञा पालन करने की ताक़त और क्षमता है। यह वाक्य बोलने से यह लाभ है कि सामने वाले को पूरा विश्वास और भरोसा हो जाता है और कहने वाले के अन्दर भी अ़मल करने के प्रति जागरुकता और एहसास पैदा हो जाता है। इस प्रकार के वाक्य आज कल भी मामलात में बोले जाते हैं।

बाब {इस बात पर बैअ़त करना कि स्पष्ट रुप से कुफ़्र के काम को छोड़ कर बाक़ी हर मामले में सुनने और मानने को तैय्यार हूँ।}

1221:– जनादा बिन अबू उमय्या ने बयान किया कि हम लोग उबादा बिन सामित रज़ि॰ के पास उस समय गये जबकि वह बीमार चल रहे थे। चुनान्चे हम ने कहा: अल्लाह पाक आप को स्वास्थ्य प्रदान करे, आप कोई ऐसी हदीस बयान करें जिसे आप ने स्वंय नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुनी हो (हमें आशा है कि) अल्लाह पाक उस से हमें फ़ाइदा पहुँचाएगा। इस पर उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमें (बैअ़त करने के लिये) बुलाया तो हम ने आप के हाथ पर बैअ़त की। उस समय आप ने जिस बात पर बैअ़त ली थी उस में यह भी था कि खुशी–नाखुशी, सख़्ती–नर्मी, न्याय–अन्याय हर हालत में हम सुनेंगे और आज्ञा पालन करेंगे। और इस बात पर भी कि जो ख़लीफ़ा और अमीर बनने का पात्र है उस से झगड़ा–लड़ाई नहीं करेंगे मगर यह कि ऐसा खुला कुफ़्र के काम करने लगे जो अल्लाह के पास हुज्जत हो।

फ़ाइदा:– यानी अमीर के अन्दर अगर छोटी–मोटी कमियाँ पाई जायें तो इन्सान होने के नाते यह स्वभाविक हैं, इन्हें मुद्दा बना कर उस के ख़िलाफ़ बग़ावत नहीं करना चाहिये। अमीर भी बहरहाल इन्सान ही है, लेन–देन में कमी–बेशी कर सकता है, मामलात में अधिक सख़्ती और नर्मी कर सकता है, इसलिये इन सब को मुद्दा बना कर उस की अवज्ञा करने से इस्लामी राष्ट्र में उपद्रव, दंगा–फ़साद और अफ़रा–तफ़री का माहौल पैदा हो जायेगा और इस्लामी राष्ट्र की चौलें हिल जायेंगी, इस्लामी कार्य रुक जायेंगे, अम्न–शन्ति भंग हो जायेगी। यही कारण है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "हर अच्छे और बुरे इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ो" अलग डेढ़ ईंट की मस्जिद बनाने, एकता व यकजुटता को समाप्त करने से यह कहीं बेहतर है कि बुरे के पीछे नमाज़ पढ़ों। इस्लाम ने इस पहलू को सब से अधिक गंभीरता से लिया है, यही कारण है कि नमाज़ ज़माअ़त से पढ़ने का हुक्म दिया, रोज़ा एक साथ रखने, और हज्ज एक साथ करने को हुक्म दिया, जबकि यह काम अकेले–अकेले भी किये जा सकते थे।

हाँ, अगर वह खुल्लम–खुल्ला महापाप करने लगे, जिसे देख कर समाज में बुरे तत्वों को साहस मिले और समाज ग़ैर इस्लामी ढर्रे पर चल पड़े तो इन परिस्थितियों में उस के

ख़िलाफ़ आवाज़ उठाना और उस की आज्ञापालन न करना निःसंदेह जायज़ है।

बाब {हिजरत कर के आने वाली मोमिन महिलाओं की परीक्षा लेना।}

1222:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब मोमिन महिलायें हिजरत कर के नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आतीं तो आप (सूरःमुम्–तहिना) की आयत के अनुसार उन की परीक्षा लेतेः

> "ऐ सन्देष्टा! अगर आप के पास मोमिन महिलायें इस बात पर आप से बैअ़त करने के लिये आयें कि (1) वह किसी को अल्लाह के साथ शरीक नहीं ठहरायेंगी (2) चोरी नहीं करेंगी (3) ज़िना नहीं करेंगी (4) अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करेंगी (5) किसी पर ज़िना का झूठा आरोप नहीं लगायेंगी (6) किसी भलाई के कार्य में वह आप की अवज्ञा नहीं करेंगी......." (आयत 12)

फिर जो महिलायें इन बातों का इक़रार करतीं तो गोया वह बैअ़त का इक़रार कर लेतीं। फिर जब ज़बान से भी इक़रार कर लेतीं तो आप फ़रमातेः जाओ, मैं तुम से बैअ़त ले चुका। और अल्लाह की क़सम! नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ ने कभी किसी महिला का हाथ (बैअ़त लेने के उद्देश्य से) कभी नहीं छुआ। आप केवल ज़बान ही से उन से बैअ़त लेते थे।

आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने महिलाओं से अपनी ओर से कोई वादा और इक़रार नहीं लिया, बल्कि उन्हीं बातों का इक़रार लिया जिन का अल्लाह पाक ने (ऊपर की आयत में) हुक्म दिया। और आप की हथेली किसी महिला की हथेली से कभी भी नहीं लगी, आप केवल ज़बान से पूछ लेते और जब वह इक़रार कर लेती तो फ़रमातेः जाओ, मैं ने तुम से बैअ़त ले ली।

फ़ाइदा:– आप ने महिला एवँ पुरुष दोनों से बैअ़त ली, लेकिन बैअ़त लेने की बातों और बैअ़त लेने के तरीक़ों में अन्तर है। महिलाओं से ऊपर की आयत में बयान 5 बातों पर बैअ़त ज़बानी ली, लेकिन पुरुषों से हाथ में हाथ मिला कर बैअ़त ली और मुख़्तलिफ़ समय में मुख़्तलिफ़ बातों पर बैअ़त ली, जिन का बयान ऊपर की हदीस न॰ 1221, 1220, 1219, 1216 में गुज़र चुका।

बाब {हाकिम (यानी अमीर और ख़लीफ़ा) की आज्ञा पालन करना अनिवार्य है।}

1223:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस ने मेरी आज्ञा की उस ने अल्लाह की आज्ञा की, और जिस ने मेरी अवज्ञा की उस ने अल्लाह की अवज्ञा की। और जिसने (मेरे नियुक्त किये हुये) हाकिम की आज्ञा की तो उस ने मेरी आज्ञा की, और जिस ने उस की अवज्ञा की

उस ने मेरी अवज्ञा की।

फ़ाइदाः– तर्जुमा में बरीकट के अन्दर जो शब्द हैं, वह मौलाना वहीदुज़्ज़माँ के बढ़ाए हुये हैं, इसीलिये मैं ने बढ़ा दिया है, हालाकि इस की हर्गिज़ ज़रुरत नहीं है। ख़लीफ़ा और अमीर कोई भी हो और किसी समय का हो, अगर उस का चुनाव शरीअ़त के अनुसार हुआ है और वह किताब व सुन्नत के आदेशनुसार शासन चला रहा है और आदेश व निर्देश जारी कर रहा है, तो उस की भी आज्ञा सन्देष्टा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आज्ञा है। क्योंकि आज्ञा करने वाला वास्तव में उस ख़लीफ़ा द्वारा जारी और लागू किया गया नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के आदेश का पालन कर रहा है। इस का उदाहरण ऐसे ही है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आज्ञा पालन नाम है आप के द्वारा लागू किये गये अल्लाह के आदेशों पर अ़मल करने का।

बाब {जो हाकिम किताब व सुन्नत के अनुसार प्रशासन चलाये, केवल उसी की आज्ञा पालन अनिवार्य है।}

1224:– यहया बिन हुसैन की दादी उम्मे हुसैन रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ अन्तिम हज्ज किया, तो उस मौक़े पर आप ने बहुत अधिक मस्अले बयान फ़रमाये। उन्हीं में एक मस्अला यह बयान फ़रमाते सुना कि अगर तुम्हारे ऊपर लूला-लंगड़ा, काला-कलूटा गुलाम भी अमीर हो और वह किताब व सुन्नत के अनुसार तुम्हें हुक्म देता हो तो तुम्हारे ऊपर लाज़िम है कि उस की आज्ञा पालन करो।

बाब {अगर किसी की आज्ञा पालन में अल्लाह की अवज्ञा हो रही हो तो ऐसी आज्ञा पालन जाइज़ नहीं, क्योंकि आज्ञा का पालन केवल नेकी के कामों में है (जैसा कि ऊपर की हदीस में बयान हुआ)}

1225:– अ़ली बिन अबू तालिब रज़ि० से रिवायत है कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक लश्कर (जिहाद के लिये भेजा) और एक सहाबी को उस का कमान्डर बनाया।, तो उन्होंने (किसी बात पर नाराज़ होकर) आग जलाई और फ़ौजियों को आदेश दिया कि इस आग में कूद पड़ो। चुनान्चे कुछ लोगों ने उस में कूदने का मन बना लिया और कुछ लोगों ने कहा कि इसी आग से ही तो भाग कर हम मुसलमान हुये हैं (इस लिये इस में नहीं कूदेंगे चाहे कमान्डर को अच्छा लगे या बुरा) फिर जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने इस घटना का ज़िक्र हुआ तो जिन्होंने उस में कूदने का मन बना लिया था उन से फ़रमायाः अगर तुम लोग उस आग में कूद जाते तो क़ियामत तक उसी में जलते। और जिन लोगों ने इन्कार किया था उन की प्रशंसा की और फ़रमायाः ऐसी आज्ञा जिस में अल्लाह पाक की अवज्ञा हो, इस प्रकार की आज्ञ जाइज़ नहीं। आज्ञा केवल नेकी के कामों में वाजिब है।

फ़ाइदाः— कमान्डर का नाम अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा था। क़बीला "हस्मा" के लोग समुद्री डाकू थे। यह लोग जद्दा के तट पर एकत्र होकर मक्का पर आक्रमण करने की तय्यारी कर रहे थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सूचना मिली तो 300 मुजाहिदों को अ़ब्दुल्लाह की कमान्डरी में भेजा तो वह लोग भाग गये (रहमतुल्लि आ़लमीन पृष्ठ 202) यह सहाबी किस्रा बादशाह के पास दूत भी बन कर गये थे, हब्शा की भी तरफ़ हिजरत की, सर्वप्रथम ईमान लाने वालों में से हैं। मज़ाक़ बहुत करते थे।

इन्होंने किसी बात पर नाराज़ होकर कूदने का हुक्म दिया था (बुख़ारी–4584) मालूम हुआ कि इस प्रकार के ग़लत कार्यों में, और जैसा कि ऊपर हदीस न॰ 1221 में बयान हुआ, उन कार्यों में अमीर की आज्ञा जाइज़ नहीं। इसी प्रकार जिन इमामों का फ़तवा कुरआ़न व हदीस के ख़िलाफ़ है उन पर अ़मल करना जाइज़ नहीं। अगर अ़मल करेंगे तो हदीस की रोशनी में जहन्नम में जलेंगे। बड़े आश्चर्य की बात है कि इतनी मोटी बात को मुक़ल्लिद लोग क्यों नहीं समझ पाते हैं।

बाब {अगर गुनाह का काम करने का हुक्म दिया जाये तो हर्गिज़ उस पर अ़मल न किया जाये।}

1226:— इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुसलमानों पर (अमीर और ख़लीफ़ा की जाइज़ बातों पर) अ़मल करना फ़र्ज़ है चाहे अच्छा लगे या बुरा। लेकिन अगर गुनाह का काम करने का हुक्म दिया जाये तो उस पर अ़मन न करे।

बाब {ऐसे अमीर की भी आज्ञा पालन करो जिस ने तुम्हारा हक़ रोक रखा है।}

1227:— वाइल हज़रमी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि सलमा बिन ज़ैद जोफ़ी रज़ि॰ ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! अगर हमारे ऊपर ऐसे अमीर और हाकिम मुक़र्रर हों जो हम से अपना हक़ तो माँगें लेकिन हमारा हक़ हमें न दें, तो ऐसे अमीर के बारे में आप हमें क्या हुक्म देते हैं? (उन की आज्ञा पालन करें या न करें?) इस का आप ने कोई उत्तर न दिया तो उन्होंने दोबारा पूछा। आप ने फिर भी उत्तर न दिया तो तीसरी मर्तबा पूछा तो एक सहाबी अश्अ़स बिन क़ैस ने उन को पकड़ कर घसीट लिया और कहा कि उस अमीर की (हर हाल में) आज्ञापालन करो, क्योंकि (क़ियामत के दिन) तुम से तुम्हारे अ़मल के बारे में पूछा जायेगा और उन से उन के अ़मल के बारे में।

एक दूसरी रिवायत में है कि अश्अ़स ने जब उन को पकड़ कर घसीटा तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उस अमीर की आज्ञा पालन करो, क्योंकि उन की करनी उन के साथ जायेगी और तुम्हारी करनी तुम्हारे साथ।

फ़ाइदाः— केवल बुरे काम जैसे कुफ़्र–शिर्क के काम करने का अगर हुक्म दे तो उस में उस की आज्ञा हर्गिज़ जाइज़ नहीं। लेकिन अगर वह केवल स्वैंय कुछ बुराइयाँ कर रहा

है और लोगों के हक़ नहीं दे रहा है तो यह उस का अपना ज़ाती अ़मल है, इस को मुद्दा बना कर उपद्रव मचाना, बग़ावत करना, शासन को तोड़ना और एकता व अखंडता को बर्बाद करना है और यह जाइज़ नहीं है, जैसा कि ऊपर हदीस न० 1221 के फ़ाइदा में बयान हुआ।

इस्लाम ने सबसे अधिक ज़ोर एकता, अखंडता और यकजुटता पर दिया है, चुनान्चे हुक्म दिया कि सफ़र में भी तीन आदमी साथ हों तो एक को अमीर बना लो। नमाज़ में दो हों तो एक को इमाम बना लो और इमाम की इतनी आज्ञा पालन करो कि उस के सर उठाने से पहले सर तक न उठाओ।

आज उम्मत की जो दुर्गत है इसी एकता को तोड़ने का परिणाम है। मामूली-मामूली बातों पर धड़ा-धड़ा नए-नए नाम की अलग अमाअतें बन रही है, अलग मस्जिदें और दीनी पाठशालायें बन रहें है। परिणाम बर्बादी है।

बाब {बुरे और अच्छे हाकिम की पहचान का बयान।}

1228:- औफ़ बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम्हारे अमीरों में सब से बेहतर और अच्छे वह अमीर हैं जिन को तुम पसन्द करो और वह तुम्हें पसन्द करें। वह तुम्हारे लिये दुआ करें और तुम उन के लिये करो। और तुम्हारे अमीरों में बुरे वह हाकिम हैं जिन से तुम नफ़रत करो और वह तुम से करें, तुम उन पर लानत भेजो और वह तुम पर लानत भेजें। इस पर सहाबा ने पूछाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! तो फिर हम ऐसे बुरे हाकिम का मुक़ाबला तल्वार से करें? आप ने फ़रमायाः नहीं, जब तक वह नमाज़ की पाबन्दी करते हैं (तुम्हारे लिये उन से बग़ावत करना जाइज़ नहीं) जब तुम हाकिमों के अन्दर किसी प्रकार की बुराई देखो तो बेशक दिल में उसे बुरा जानो लेकिन उस की इताअ़त से बाहर न हो।

बाब {अमीर जो कुछ कार्य करे उसे बेशक बुरा कहो, लेकिन जब तक वह नमाज़ की पाबन्दी करता रहे, उस के ख़िलाफ़ लड़ाई का महाज़ न खोलो।}

1229:- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी उम्मे सलमा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम्हारे ऊपर ऐसे हाकिम होकूमत करेंगे जिन के अन्दर तुम अच्छाइयाँ भी देखोगे और बुराइयाँ भी। फिर जिस ने उस की बुराइयों को बुरा जाना वह बच गया और जिस ने उसे बुरा जाना और उस पर अ़मल करने से इन्कार भी किया तो वह भी सुरक्षित हो रहा। लेकिन जिस ने (आँख मूँद कर) उस के बुरे कामों को स्वीकार कर लिया (वह गुमराह हो गया) इस पर सहाबा ने पूछाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! तो क्या फिर हम उन के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दें? आप ने फ़रमायाः जब तक वह नमाज़ की पाबन्दी करते हैं उन से लड़ाई न करो।

फ़ाइदाः- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ईमान के तीन दर्जे बताए हैं (1)

जो कोई बुराई देखे तो उसे हाथ से (यानी लड़ाई लड़ कर) समाप्त करे। अगर इस की शक्ति नहीं है तो ज़बान से उसे रोके। अगर इस की भी शक्ति और साहस नहीं है तो दिल में बुरा जाने।

बुरे हाकिमों के विरुद्ध अन्तिम दो तरीक़े अपनाने का हुक्म दिया है। पहला तरीक़ा अपनाने की हर्गिज़ अनुमति नहीं है, क्योंकि इस से इस्लामी राष्ट्र कमज़ोर होगा, यकजुटता और एकता भंग होगी, इस्लामी शक्ति कमज़ोर पड़ जायेगी और दुश्मन को आक्रमण करने का मौक़ा मिल जायेगा।

आजकल लोग बड़ी सरलता से मामूली-मामूली इख़्तिलाफ़ की बुनियाद पर जमाअ़त के अमीर पर हल्ला बोल कर अलग हो जाते है और तुरन्त एक दूसरी जमाअ़त बना लेते हैं। उलमा अपने नाज़िम और सदर (अध्यक्ष) से अलग हो कर अलग पाठशाला खोल लेते हैं, इस हदीस की रोशनी में ऐसा करना महापाप है। यह हदीस केवल मुल्क के शासन ही के लिये नहीं है बल्कि घर, समाज, मस्जिद, मदरसा, संस्था, खेलकूद, तिजारत, यात्रा आदि हर क्षेत्र के लिये है। देखें हदीस न॰ 1221 का फ़ाइदा।

बाब {अगर हाकिम जनता के हक़ की आदयगी न करेतो इस पर सब्र से काम लें।}

1230:- उसैद बिन हुज़ैर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक अन्सारी व्यक्ति ने एकान्त में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अनुरोध किया कि आप मुझे हाकिम बना दीजिये जिस प्रकार आप ने फ़लाँ को बनाया है। यह सुन कर आप ने फ़रमायाः मेरे बाद तुम्हारे हक़ रोक लिये जायेंगे, तो तुम इस पर सब्र-संतोष से काम लेना यहाँ तक कि हौज़े कौसर पर मुझ से मिलो।

बाब {फ़ितना-फ़साद और इख़्तिलाफ़ व अशान्ति के समय जमाअ़त से जुड़ा रहना अनिवार्य है।}

1231:- हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि दूसरे सहाबा नेकी के कामों के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मस्अले पूछते, लेकिन मैं बुरी बातों के बारे में पूछता, ताकि कहीं बुराई में न पड़ जाऊँ। चुनान्चे एक मर्तबा मैं ने पूछाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! हम (कुफ़्र के ज़माना में) बुराइयों में डूबे हुये थे, लेकिन अल्लाह पाक ने हमें भलाई (यानी दीन इस्लाम) के रास्ते की राहनुमाई की। तो क्या अब इस के बाद भी बुराई फैलेगी? आप ने फ़रमायाः हाँ, लेकिन उस में धब्बा होगा। मैं ने पूछाः किस प्रकार का धब्बा होगा? आप ने फ़रमायाः कुछ ऐसे लोग होंगे जो मेरे बताए हुये रास्ते को छोड़ कर दूसरे रास्ते पर चलेंगे, उन में कुछ अच्छाइयाँ भी होंगी और बुराइयाँ भी (जिसे तुम जल्दी समझ न सकोगे) मैं ने पूछाः क्या फिर इस के बाद बुराइयाँ फैलेंगी? आप ने फ़रमायाः हाँ, इस के बाद ऐसे लोग पैदा होंगे जो (खुल्लम-खुल्ला) लोगों को जहन्नम की तरफ़ बुलायेंगे, जो उन की बातों को मानेगा वह जहन्नम में जायेगा। इस पर मैं ने अनुरोध कियाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! उन लोगों के बारे में हमें कुछ बताइये (ताकि उन्हें हम पहचान सकें) आप ने फ़रमायाः उन का रंग रुप तो अपने जैसा ही होगा, वह

हमारी भाषा ही में बातचीत भी करेंगे। मैं ने पूछा: अगर उस समय मैं रहूँ तो क्या करूँ? आप ने फ़रमाया: मुसलमानों की जमाअ़त और उन के इमाम के साथ रहना। मैं ने पूछा: अगर जमाअ़त और इमाम कोई न हो फिर क्या करें? आप ने फ़रमाया: सब से अलग-थलग होकर रहना (सन्यास ले लेना) चाहे जंगल में पेड़-पोधों की जड़ खानी पड़ें, और मरते दम तक इसी हालत पर क़ाइम रहना।

फ़ाइदा:- यानी इन परिस्थितियों में उन का साथ हर्गिज़ न दे, बल्कि जंगल में जा कर वहाँ कुटिया बना कर रहे, वहाँ भूखा-प्यासा पड़ा रहे, जंगल की पत्तियाँ और लकड़ियाँ चबा कर पेट भरे लेकिन ऐसे बेदीनों और गुमराहों से अलग रहे। आप ने फ़रमाया कि उन के प्रशासन में धब्बा होगा, यानी उन के शासन काल में बुराइयाँ भी होंगी और यही बुराइयाँ धब्बा हैं। कुछ उलमा ने लिखा है कि इस से मुराद ख़लीफ़ा उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रह॰ का शासन काल मुराद है। इन की होकूमत में किताब व सुन्नत पर अ़मल होने लगा था, लेकिन फिर भी कुछ कमियाँ थीं जिन पर पकड़ नहीं थी और इसी को आप नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने धब्बा कहा। इस ख़लीफ़ा को छोड़ कर बनी उमय्या या बनी अ़ब्बास के किसी भी ख़लीफ़ा के शासन को इस्लामी ख़िलाफ़त नहीं कहा जा सकता।

बाब {जो जमाअ़त से अलग हुआ और इमाम की आज्ञा पालन से इन्कार किया और इसी हालत में मरा तो हराम मौत मरेगा।}

1232:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स ख़लीफ़ा की आज्ञा पालन न करे और जमाअ़त का साथ छोड़ दे और इसी हालत में मर जाये तो वह जाहिलिय्यत की मौत मरेगा। और जो व्यक्ति अन्धे झन्डे के नीचे लड़े (यानी ऐसी लड़ाई लड़े जिस का हक़-नाहक़ होना स्पष्ट न हो) वह जाति-पात और बिरादरी वाद का शिकार होकर अपनी बिरादरी की तरफ़ लोगों को बुलाता हो और बिरादरी की तरफ़ से लड़ाई लड़ता हो और इसी बिरादरी के चक्कर में क़ौम से नाराज़ भी हो, फिर इस लड़ाई में वह मार दिया जाये तो उस का मारा जाना कुफ़्र के समय का सा होगा। और मेरी उम्मत का अगर कोई व्यक्ति लड़ता है और अच्छे-बुरे लोगों के दर्मियान अन्तर किये बिना (अंधाधुन्ध) हत्तियायें करता है जिस में मोमिनों को भी नहीं छोड़ता है, और जिस से मुआ़हिदा किया है उस का भी लिहाज़ नहीं करता है, तो ऐसे व्यक्ति का मुझ से कोई संबन्ध है और न मेरा उस से कोई संबन्ध है (यानी वह मुसलमान नहीं है)

फ़ाइदा:- मुस्लिम ही की एक दूसरी रिवायत में जुन्दुब बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो व्यक्ति अन्धे झन्डे तले लड़ाई लड़ें, जाति-पात बिरादरी वाद की तरफ़ लोगों को बुलाएँ और बिरादरी वाद की बुनियाद पर सहायता करें और इसी हालत में मारा जाये तो जाहिलिय्यत की मौत मारा जायेगा।

आज नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्मत जाति-पात और

बिरादरीवाद के जाल में बुरी तरह फंसी हुयी है। सय्यद, सिद्दीक़ी, क़ुरैशी, अन्सारी, मन्सूरी आदि में बँटी हुयी है, कोई दूसरी बिरादरी में शादी-विवाह करने को तैयार नहीं। इसी विवाद में सब के अपने अलग-अलग मर्दसे और मस्जिदें हैं, सब के अपने अलग-अलग अमीर हैं। इसी को समाप्त करने के लिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आये थे और अन्तिम हज्ज के संबोधन में इसी का बयान था।

1233:- इमाम नाफ़े से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० अ़ब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ से मिलने के लिये गये। यह उस समय की बात है जब यज़ीद बिन मुआ़विया के शासन काल में हर्रा के स्थान पर जन्ग हुयी थी। अ़ब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ ने आदेश दिया कि इब्ने उमर रज़ि० के लिये तकिया या गद्दा बिछाओ। इब्ने उमर रज़ि० ने कहा कि मैं बैठने के लिये नहीं आया हूँ, बल्कि एक हदीस सुनाने आया हूँ जिसे मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना है। आप ने फ़रमाया था कि जो व्यक्ति (अमीर की) इताअ़त और मातहती को स्वीकार न करे वह अल्लाह से क़ियामत के दिन इस हाल में मिलेगा कि उस के पास (बचने के लिये) कोई दलील और सबूत न होगा, और जो बिना बैअ़त किये मर जाये तो वह जाहिलिय्यत की मौत मरेगा।

फ़ाइदा:- 'हर्रा' मदीना से थोड़ी दूरी पर एक स्थान का नाम है। मदीना के मुसलमानों ने यज़ीद के हाथ पर बैअ़त करने से इन्कार कर दिया था, चुनान्चे यज़ीद ने उन को क़ाबू में करने के लिये आक्रमण कर दिया था जिस में बहुत से सहाबा मारे गये थे।

इस हदीस से मालूम हुआ कि मुसलमान कहीं भी रहूँ और चाहे जितनी संख्या में हों, तुरन्त अपना एक अमीर चुन लें और उस की आज्ञा पालन करें। बिना इमाम और अमीर के जीवन बिताना हराम है। इस की गंभीरता का अनुमान आप उस हदीस से लगा सकते हैं जिस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तीन आदमी यात्रा कर रहे हों तो उन में से एक को अपना अमीर चुन लें और उस की रहनुमाई में यात्रा करें। अगर दो आदमी नमाज़ पढ़ रहें हों तो उन में का एक इमाम बन जाये। अकेले-अकेले नमाज़ हर्गिज़ न पढ़ें।

बाब {एकता, यकजुटता और इत्तिफ़ाक़ के साथ रहने वाली जमाअ़त के दर्मियान फूट डालने वाले की गर्दन मार दो।}

1234:- अ़रफ़जा रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना आप ने फ़रमायाः लड़ाई-झगड़े, दंगे-फ़साद बहुत निकट हैं। तो जो कोई मुत्तहिद उम्मत के दर्मियान फूट डालने की कोशिश करे, उस की गर्दन मार दो, वह चाहे जो भी हो।

बाब {जो हमारे ऊपर हथियार उठाए वह हम में से नहीं।}

1235:- अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जो हम (मुसलमान)

पर हथियार उठाए वह हम (मुसलमानों) में से नहीं, इसी प्रकार जो हमें धोखा दे वह भी हम में से नहीं।

फ़ाइदा:– हथियार उठाना चाहिए दीन इस्लाम की रक्षा व सुरक्षा की राह में काफ़िरों और मुश्रिकों पर। एक मुसलमान वह चाहे जितना पापी क्यों न हो उस पर हथियार से आक्रमण करना और एक मुसलमान होते हुये एक मुसलमान को धोखा देना, न यह इस्लामी कार्य है और न ही वह मुसलमान है।

बाब {अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थामे रहो (अर्थात मुत्तफ़िक़ और मुत्तहिद होकर रहो) और तफ़र्क़ा बाज़ी से दूर रहो (सन्देष्टा का आदेश)}

1236:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह पाक तुम्हारे तीन कार्यों से तुम से प्रसन्न होता है, इसी प्रकार तीन कार्यों को नपसन्द करता है। वह इस बात से प्रसन्न होता है कि उस की इबादत करो और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ। उस की रस्सी को (यानी किताब व सुन्नत को) मज़बूती से थामे रहो और तफ़र्क़ा बाज़ी से दूर रहो। इसी प्रकार अल्लाह पाक तुम्हारी बेफ़ाइदा बक-बक, झक-झक और (अकारण) अधिक प्रश्न करने को नापसन्द करता है और धन-माल बर्बाद करने को भी नापसन्द करता है।

फ़ाइदा:– अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थामे रहो। यानी अल्लाह और उसके सन्देष्टा (यानी किताब व सुन्नत) के आदेशों की पैरवी करो, क्योंकि यही दोनों चीज़ें ही केवल एकता और यकजुटता का सूत्र हैं। अधिक प्रश्न करने से आप ने और दूसरे स्थानों पर भी मना फ़रमाया है। जैसा कि आप ने फ़रमाया: धनवान लोग अल्लाह के घर का हज्ज करें। इस पर एक सहाबी ने पूछा: क्या हर वर्ष? आप ने उन को डाँटा और फ़रमाया: अगर मैं हाँ कह देता तो तुम पर हर वर्ष फ़र्ज़ हो जाता और तुम ऐसा कर नहीं पाते और ग़ुनाहगार होते। (बुख़ारी, मुस्लिम) आप ने नाजाइज़ स्थानों पर जैसे पतंग बाज़ी, आतिशबाज़ी, शादी विवाह के समारोहों आदि में मेहनत की कमाई को बर्बाद करने से मना फ़रमाया है।

बाब {दीन में जो भी नई चीज़ ईजाद की जाये उन पर अ़मल न किया जाये (उन्हें रद्द कर दिया जाये)}

1237:– सअ़द बिन इब्राहीम ने बयान किया कि मैंने क़ासिम बिन मुहम्मद से मस्अला पूछा कि किसी के पास तीन घर हैं और उस ने हर घर में एक तिहाई (ख़ैरात करने) की वसिय्यत की है (तो इस का क्या हुक्म है?) उन्होंने कहा कि तीनों वसिय्यतों को एक ही घर में इकट्ठाकर दिया जायेगा। फिर उन्होंने आगे बयान करते हुये कहा कि आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो व्यक्ति कोई ऐसा कार्य करे जिस के करने का हम ने निर्देश न दिया हो वह रद्द है

फ़ाइदाः– किसी ने वसिय्यत की कि मेरे तीन मकान हैं और मेरे मरने के बाद हर मकान में से एक तिहाई अल्लाह की राह में दे दिया जाये, तो हर मकान के एक तिहाई को जोड़ कर एक मकान में शामिल कर के उस पूरे एक मकान को सदक़ा में दे यिा जायेगा। यानी हर मकान में से एक-एक तिाहई नहीं निकाला जायेगा।

बाब {एक व्यक्ति नेकी के कार्य करने का हुक्म तो देता है, लेकिन स्वँय उस पर अ़मल नहीं करता (इस के बारे में क्या हुक्म है?)}

1238:– उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ ने बयान किया कि लोगों ने मुझ से शिकायत की कि तुम उसमान ग़नी रज़ि॰ के पास नहीं जाते और न ही उन से बात-चीत करते हो (ऐसा क्यों) इस पर मैं ने कहाः आप लोगों को कैसे मालूम कि मैं उन से बात-चीत नहीं करता में आप लोगों को बताऊँ? अल्लाह की क़सम! मुझे जो उन से बात-चीत करनी थी वह मैं कर चुका। अल्बत्ता मेरे और उन के दर्मियान जो बात हुयी मैं उसे आप लोगों कोबताना नहीं चाहता। और वह हमारे ऊपर हाकिम हैं। मैं यह नहीं कहता कि वह लोगों में सब से बेहतर हैं। मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना आप ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन एक व्यक्ति को लाकर जहन्नम में डाल दिया जायेगा तो उस की आँतें बाहर निकल आयेंगी, जिसे वह लिये-लिये चारों तरफ़ चक्कर काटेगा जिस प्रकार चक्की पीसने वाला गधा चक्की के चारों तरफ़ चक्कर लगाता है। यह देख कर समस्त जहन्नमी एकत्र होकर प्रश्न करेंगे कि ऐ फ़लाँ! तू तो (दुनिया में) लोगों को अच्छे कार्य करने का हुक्म देता और बुरे कामों से रोकता था (फिर यह दन्ड क्यों मिला?) वह उत्तर देगा कि मैं दूसरों को नेक कार्य करने का हुक्म तो देता था लेकिन स्वँय अ़मल न करता था। इसी प्रकार दूसरों को तो बुरी बातों से मना करता था, लेकिन स्वँय उस से दूर नहीं रहता था।

फ़ाइदाः– ख़िलाफ़त, इमारत, शासन व होकूमत करने का बाब समाप्त हुआ। पूरी दुनिया के मुसलमानों की मौजूदा परिस्थितियों में इस बाब की हदीसें रहनुमाई करती हैं और जब तक इन हदीसों के अनुसार उन पर अ़मल नहीं होगा उन के हालात नहीं सुधर सकते हैं। आजकल के मुसलमानों की सब से बड़ी विडंबना और दुर्भाग्य हर व्यक्ति के प्रशासन करने की इच्छा है, चाहे उस के अन्दर होकूमत करने की सलाहियत हो या न हो। दूसरी बीमारी यह है कि कोई किसी की मातहती को स्वीकार करने को तय्यार नहीं, चाहे वह दीनी मामला हो या दुनियावी। आजकल मस्जिदों और पाठशालाओं के निर्माण का सैलाब आया हुआ है, नए-नए नाम की जमाअ़तों का जगह-जगह बोर्ड नज़र आ रहा है, हर गली में एक दीनी संस्था खुली हुयी है। इस धोखे में न रहें कि यह दीन की तरक़्क़ी है। यह सब परस्पर इख़्तिलाफ़ और किसी की मातहती न स्वीकार करने का परिणाम है। हर किसी ने जमाअ़त से अलग होकर डेढ़ ईटँ की मस्जिद और मदरसा खोल कर उस पर शासन कर रहा है। यही हाल इस्लामी मुल्कों का है। कोवियत, क़तर, दोबई, बहरैन, चाड और

दीगर अफ़रीकी राष्ट्र, इन का क्षेत्रफल हमारे मुल्क के एक सूबे के भी बराबर नहीं है। न इन के अन्दर फ़ौज़ी कुव्वत और ताक़त है और न ही अपने पैरों पर खड़े रहने की शक्ति है, हमेशा से दूसरों की बैसाखी के सहारे चल रहे हैं और अपनी-अपनी होकूमत में मस्त हैं। अगर यही यकजुट हो जायें, समस्त मुल्क एक हो जायें और सर जोड़ कर किसी एक को ख़लीफ़ा चुन कर तमाम मुल्क उस के हवाले कर दें और सब मिल कर उस का सहयोग और उस की आज्ञा पालन करें तो पूरी दुनिया में इन्क़लाब आ जाये और अमेरीका जैसे दादा आ कर सज्दे करें।

कुरआन व हदीस ने जितना ही अमीर और हाकिम की आज्ञा पालन का हुक्म दिया है, आज हम उतना ही अधिक उस की मुख़ालिफ़त पर तुले हुये हैं। अमीर के ख़िलाफ़ गुटबाज़ी हम कर रहे हैं, एक अमीर की उपस्थिति में दूसरे व्यक्ति के हाथ पर हम बैअ़त कर रहे हैं, अमीर के ख़िलाफ़ आन्दोलन हम चलाते हैं, पोस्टर बाज़ी हम करते हैं, उस की नाहक़ बात तो छोड़िये, हक़ बात तक मानने को हम तैयार नहीं हैं, उस के ख़िलाफ़ बग़ावत का झन्डा हम हर समय उठाये फिर रहे हैं, उस को पद से हटाने के लिये हर समय षड़यन्त्र हम रच रहे हैं। जब तक हम अपने अन्दर सुधार नहीं करेंगे, यूँ ही जाहिलिय्यत की मौत मरते रहेंगे और जहन्नम के हक़दार बनते रहेंगे। अगर कोई यह कहे कि इन हदीसों का हुक्म इस्लामी राष्ट्र में लागू होगा, तो उस से बड़ा मूर्ख संभवतः संसार में कोई नहीं। इस से अधिक इस विषय पर लिखने की गुन्जाइश नहीं है। इस विषय पर विस्तार से जानकारी के लिये देखें पुस्तक "मस्अलए-ख़िलाफ़त" संपादक मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह०।

आज दिनांक 22 जनवरी 2006 रविवार शाम 5 बजे इस बाब का अनुवाद और संक्षिप्त फ़ाइदा संपन्न हुआ। अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ-लमीन+ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी, मस्जिद अहले हदीस मोरीगेट दिल्ली 6

❀ ❀ ❀

किताबुस्सैदि
(शिकार के मसाइल का बयान)

नोटः– जानवर दो प्रकार के होते हैं (1) पालतू जानवर, जिन्हें अपने घर ही में ज़ब्ह कर के खाते हैं (2) जंगली जानवर, जिन्हें केवल शिकार कर के ही पकड़ा जा सकता है। आज कल उन के शिकार के लिये बन्दूक और गुलैल आदि प्रयोग में लाया जाता है, लेकिन 1400 साल पूर्व इस के लिये तीर कमान और शिकारी कुत्ते प्रयोग में लाये जाते थे, इसीलिये शरीअ़त ने शिकार करने के नियमों और तरीक़ों को विस्तार से बयान किया है। सिखाए हुये कुत्तों द्वारा शिकार करने का ज़िक्र क़ुरआन पाक में सूरः माइदा की आयत न॰ 4 में भी हैः "ऐ सन्देष्टा! लोग आप से पूछते हैं कि उन के लिये क्या कुछ हलाल है? तो आप उन्हें बता दीजिये कि समस्त पवित्र वस्तुएँ तुम्हारे लिये हलाल हैं जिन शिकारी जानवरों को तुम ने शिकार के लिये सिधा रखा है, और उन्हें उसी प्रकार सिखाया है जिस प्रकार की शिक्षा तुम्हें अल्लाह ने दी है, तो जब तुम्हारा सिधाया हुआ कुत्ता शिकार को पकड़ कर तुम्हारे लिये रोक रखे तो अल्लाह का नाम लेकर उसे खाओ।" (सूरः माइदा, आयत 4) विस्तृत जानकारी नीचे की अहादीस में पढ़ें–ख़ालिद।

बाब {अगर तीर से शिकार कर रहे हो तो तीर मारते समय बिस्मिल्लाह पढ़ लेना चाहिये।}

1239:– अ़दी बिन हातिम रज़ि॰ से रिवायत है कि मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब तुम शिकार पर अपना कुत्ता छोड़ो तो बिस्मिल्लाह पढ़ कर छोड़ो। इस सूरत में अगर कुत्ते ने शिकार को पकड़ लिया और तुम्हें शिकार जीवित मिल गया तो उसे ज़ब्ह कर दो। और अगर तुम्हारे कुत्ते ने शिकार को मार डाला लेकिन उस का माँस नहीं खाया तो तुम उस को भी खाओ (क्योंकि बिस्मिल्लाह पढ़ कर कुत्ते को छोड़ा था) लेकिन अगर तुम्हारे कुत्ते के साथ और दूसरे कुत्ते भी शिकार में शामिल हो जायें और शिकार मुर्दा हालत में मिले तो फिर उसे न खाओ, क्योंकि मालूम नहीं किस कुत्ते ने उसे मारा है।

और अगर तुम अल्लाह के नाम के साथ शिकार पर तीर चलाओ और वह तुम्हारा तीर खा कर पूरा दिन गुम हो जाये (फिर मुर्दा हालत में तुम्हें मिले, तो अगर तुम्हारे तीर के निशान के अ़लावा और किसी के मार का निशान न मिले तो तुम चाहो तो उसे खा सकते हो (क्योंकि पता नहीं तुम्हारे तीर से मरा है या किसी और वजह से मरा है)

फ़ाइदा:– अगर शिकारी कुत्ता को, या तीर को बिस्मिल्लाह पढ़ का छोड़ा और कुत्ते ने या तुम्हारे तीर ने शिकार को जान से मार दिया और ज़ब्ह करने की नौबत नहीं आयी तो भी वह हलाल माना जायेगा, क्योंकि बिस्मिल्लाह पढ़ कर छोड़ने से उन दोनों ने उसे हलाल कर दिया।

और तुम्हारे शिकारी कुत्ते के साथ ग़ैर शिकारी कुत्ते शामिल थे, फिर शिकार जीवित मिला तब तो ज़ब्ह कर के खाने में शुब्हा ही नहीं है, लेकिन अगर मुर्दा मिले तो शुब्हे के नाते मत खाओ क्योंकि तुम ने केवल अपने कुत्ते के लिये बिस्मिल्लाह पढ़ी है।

इस प्रकार शिकार के हलाल होने के लिये दो अहम शर्तें हैं (1) कुत्ते का शिकारी होना, क्योंकि शिकारी कुत्ता अपने लिये नहीं, बल्कि मालिक के लिये शिकार करता है। इस की पहचान यह है कि उसे मार कर छोड़ देता है उस में से कुछ नहीं खाता है। (2) दूसरी शर्त यह है कि अल्लाह का नाम लेकर शिकारी कुत्ते या तीर को छोड़ा जाये।

सिधाए हुये शिकारी कुत्ते की पहचान यह है कि वह शिकार पर आक्रमण कर के मार गिराए, फिर उसे छोड़ कर अलग हो जाये और मालिक का इन्तिज़ार करे। मालिक जब शिकार की तरफ़ इशारा कर के दोड़े जभी शिकार पर झपटे और अगर बीच राह में वापस बुला लेतो वह वापस लौट आये।

बाब {तीर कमान और सिधाये व ग़ैर सिधाए हुये कुत्ते द्वारा शिकार के तरीक़े का बयान।}

1240:– अबू सालबा ख़ुशनी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और मस्अला पूछा कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! हम अहले किताब (यानी यहूद-नसारा) के मुल्क में रहते हैं इसलिये (कभी कभार) उन के बर्तनों में भी खा-पी लेते हैं। (दूसरे यह कि) हम शिकार के क्षेत्र में बसते हैं इसलिये तीर कमान और सिखाए हुये कुत्तों से शिकार करते हैं, और कभी बिन सिखाए हुये कुत्तों से भी शिकार कर लेते हैं, इसलिये आप मुझे शिकार करने का हलाल तरीक़ा बता दीजिए। आप ने फ़रमाया: तुम ने यह कहा है कि हम यहूद-नसारा के मुल्क में रहने के नाते उन के बर्तनों में भी खाना-पीना पड़ता है, तो (इस का यह उत्तर है कि) अगर तुम्हें और बर्तन मिल सकें तो उन के बर्तनों में न खाओ। लेकिन और बर्तन न मिल सकें तो फिर उन के बर्तनों को अच्छी तरह धो कर उन में खाओ।

और तुम्हारा यह कहना है कि हम शिकार के रहने वाले क्षेत्र में रहते हैं तो अल्लाह का नाम लेकर तीर चलाओ, फिर उसे खा लो। इसी प्रकार अल्लाह का नाम लेकर शिकारी कुत्ते कोछोड़ो, फिर उस के किये हुये शिकार को भी खा लो। और अगर बिना सिखाए हुये कुत्ते द्वारा शिकार करो और शिकार जीवित हालत में मिल जाये तो उसे ज़ब्ह करनेके बाद खा लो।

फ़ाइदा:– और अगर मरा हुआ मिले तो न खाओ, क्योंकि कुत्ते के हाथों मरा हुआ शिकार खाने के लिये यह शर्त है कि (1) यह सिखाया हुआ हो और (2) उसे शिकार

पर छोड़ते समय अल्लाह का नाम लेकर छोड़ा गया हो।

यहूद-नसारा या, किसी भी मज़हब के मानने वाले के बर्तन में खाना दुरुस्त है, मगर शर्त यह है कि उसे अच्छी तरह धो लो।

बाब {बिना धार और नोक वाले हथियार से शिकार करने का क्या हुक्म है? इसी प्रकार कुत्ते को छोड़ते समय अल्लाह का नाम लेने या न लेने के बारे में क्या हुक्म है?}

1241:- अ़दी बिन हातिम रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने चौकोर लकडी से शिकार के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमायाः अगर चौकोर लकड़ी में किसी नोक से शिकार मारे तो उस को खआो, लेकिन अगर चौकोर हिस्से के लगने से मरे तो उसे न खाओ (क्योंकि वह दब कर या चोट लगकर मरने के हुक्म में हुआ)

अ़दी बिन हातिम रज़ि॰ ने बयान किया कि मैंने कुत्तों द्वारा शिकार करने के बारे में मस्अला पूछा तो आप ने फ़रमायाः अगर तुम अपना शिकारी कुत्ता अल्लाह का नाम लेकर छोड़ो (और शिकार मर जाये) तो उसे खाओ। लेकिन अगर कुत्ता शिकार कर के उस में से थोड़ा-बहुत खा ले तो उसे मत खाओ, क्योंकि उस ने अपने लिये शिकार किया है।

फिर मैं ने पूछा कि अगर अपने कुत्ते के साथ दूसरे कुत्ते को भी पाऊँ और यह मालूम न हो सके कि किस ने शिकार किया है (तो इस का क्या हुक्म है?) इस के उत्तर में आप ने फ़रमायाः उसे (शुब्हे की बुनियाद पर) न खाओ, क्योंकि तुम ने तो केवल अपने कुत्ते के लिये बिस्मिल्लाह पढ़ा था, न कि उस दूसरे कुत्ते के लिये भी।

फ़ाइदा:- हदीस में शब्द 'मेराज़' आया है जिस का अर्थ है "चोकोर"। कुछ लोगों का कहना है कि एक प्रकार की चौकोर लकड़ी होती है लेकिन उस के दोनों कनारे नोकदार होते हैं। बहरहाल नोक से शिकार का मरना शर्त है। अगर चौकोर लगने से मरा तो यह लाठी-डन्डा से पीट-पीट कर मारने के हुक्म में हुआ, जिसे कुरआन में "मोकूज़ा (सूरः माइदा-3) कहा है और यह हराम है।

प्रश्न यह है कि बिस्मिल्लाह पढ़ कर बन्दूक़ की गोली से मारे गये शिकार के बारे में क्या हुक्म है? कुछ उलमा ने कहा कि गोली में अगर्चे नोक नहीं है लेकिन वह नोकदार चीज़ की तरह घुसती है, इसलिये वह नोकदार हथियार के समान है इसलिये जाइज़ है। कुछ उलमा का कहना है कि नोकदार वस्तु की तरह घुसना नहीं, बल्कि नोकदार होना शर्त है। और मुझ अनुवादक केनिकट यही सहीह है। बन्दूक़ की गोली शक्ति और ताक़त की वजह से घुसती है और यह "मौकूज़ा" के हुक्म हैं। गुलेल द्वारा किये गये शिकार के बारे में भी यही हुक्म है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जो पैमाना बता दिया है उसी पर समस्त हथियारों को जाँचा जायेगा।

बाब {तीर के लगने के बाद शिकार गुम हो जाये, फिर कुछ समय के बाद मुर्दा मिले (तो इस का क्या हुक्म है?)}

1242:– अबू सालबा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शिकारी अपने शिकार को तीन दिन के बाद पाए और उस में बदबू न आ रही हो तो उसे खा सकता है।

फ़ाइदाः– यानी बिस्मिल्लाह पढ़ कर तीर चलाया और उसे जा लगा लेकिन शिकार भाग गया, फिर तीन दिन के बाद मुर्दा मिला तो हदीस न॰1239 के अनुसार अ़मल करे यानी यह देखें कि मेरे ही तीर या हथियार से मरा है, या कोई दूसरे हथियार के घाव का भी निशान है। यह हदीस संक्षिप्त है और हदीस न॰ 1239 में विस्तार है।

बाब {शिकार के लिये और जानवरों की सुरक्षा हेतु पालतू कुत्ता रखना जाइज़ है।}

1243:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो व्यक्ति शिकार के लिये या जानवरों की सुरक्षा व निग्रानी के लिये क़ुत्ता न पाले (बल्कि शौक़ के नाते पाले) तो हर रोज़ उस की नेकियों में दो क़ीरात की कमी हो जाती है।

1244:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवातय है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो व्यक्ति शिकार के लिये, या जानवरों की सुरक्षा के लिये, या खेती की निग्रानी के लिये कुत्ता न पाले (बल्कि बिला ज़रुरत शौक़ के नाते पाले) तो हर रोज़ उस की नेकियों में एक क़ीरात की कमी आ जाती है।

हदीस के रावी इमाम ज़हरी ने कहा है कि जब इब्ने उमर रज़ि॰ से कहा गया कि अबू हुरैरा रज़ि॰ खेत की निग्रानी के लिये कुत्ता पालने को जाइज़ कहते हैं तो उन्होंने कहाः अल्लाह पाक अबू हुरैरा पर रहम फ़रमाए वह खेती-बाड़ी वाले थे।

फ़ाइदाः– ऊपर हदीस न॰ 1243 में इब्ने उमर रज़ि॰ वाली रिवायत में खेती-बाड़ी का ज़िक्र नहीं है और हदीस न॰ 1244 में अबू हुरैरा वाली रिवायत में शिकार करने और, जानवर की रखवाली करने के साथ खेती की निग्रानी का भी ज़िक्र है। यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी है (5480, 5481, 5482 अबू हुरैरा)

एक बात ध्यान रहे, जिस प्रकार अकारण कुत्ता पालना दुरुस्त नहीं, इसी प्रकार उस की तिजारत भी दुरुस्त नहीं (बुख़ारी-2237, 2238) चूँकि शिकारी कुत्ता ज़रुरत की चीज़ है इसलिये उस को बेचने की अनुमति है (नसई-जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह)

शरीअ़त ने ऊपर की हदीसों में बयान ज़रुरत के आधार पर अगर्चे कुत्ता पालने की अनुमति दी है, लेकिन इस शर्त पर कि उन्हें अपने से दूर रखा जाये, घर में घुसने न दिया जाये, उन को न छुआ जाये। जिस घर में कुत्ते जाते हैं उस में रहमत के फ़रिश्ते नहीं दाख़िल होते हैं।

बाब {कुत्तों को मार डालने से संबन्धित आदेश।}

1245:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी

करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमें कुत्तों को मार डालने के बारे में आदेश दिया। चुनान्चे जब कोई महिला दीहात से अपने साथ (मदीना में) कुत्ता भी लेकर आती तो उसे भी हम मार डालते। फिर बाद में आप ने इस से मना फ़रमा दिया, लेकिन फिर भी उस काले रंग के कुत्ते को जिस की दोनों आँखों के ऊपर सफ़ेद धब्बे (बिन्दु) हों, मारने की इजाज़त दे दी क्योंकि वह शैतान की शक्ल का लगता है।

फ़ाइदा:– इस हदीस की रोशनी में कुछ उलमा का कहना है कि काले रंग का कुत्ता जिस की आँखों के ऊपर बिन्दु हो उस का शिकार हराम है, अगर्चे वह शिकारी कुत्ता हो, क्योंकि वह शैतान है।

बाब {कंकरी फेंक कर शिकार करने का बयान।}

1246:– सओ़द बिन जुबैर रज़ि॰ ने बयान किया कि एक मर्तबा अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ि॰ ने किसी को कंकरी फेंक कर मारते देखा तो उसे मना कर दिया और कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कंकरी फेंकने से मना फ़रमाते थे और कहते थे कि कंकरी फेंक कर मारने से न तो शिकार होता है और न ही दुश्मन मरता है, हाँ इतना होता है कि दाँत टूट जाता है और आँख फूट जाती है।

सओ़द बिन जुबैर रज़ि॰ ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल ने जब देखा कि वह अब भी फेंके चला जा रहा है तो उन्होंने कहाः मैं तो तुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीस बयान कर रहा हूँ और तू है कि मान नहीं रहा है, मैं तुझ से बात तक न करूँगा।

फ़ाइदा:– यह हदीस इन्ही सहाबी से बुख़ारी में भी रिवायत है (5479, 4841 सओ़द बिन जुबैर)

बाब {जानवरों को बाँध कर निशाना बनाना मना है।}

1247:– हिशाम बिन ज़ैद बिन अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं अपने दादा अनस बिन मालिक के साथ हकम बिन अय्यूब के घर जा रहे थे। मुझे देख कर अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने कहाः नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जानवरों को बाँध कर मारने से मना फ़रमाया है।

1248:– सओ़द बिन जुबैर रज़ि॰ ने बयान किया कि एक मतर्बा इब्ने उमर रज़ि॰ कुरैश के कुछ नौजवानों के पास से गुज़रे जो एक चिड़िया को निशाना साधने के लिये रख कर उसे तीर मार रहे थे, और जिस की चिड़िया थी उस से यह तै कर लिया था कि जो तीर उस चिड़िया को न लगे उसे वह ले ले। जब उन्होंने इब्ने उमर को आते देख तो इधर उधर खिसक गये। इब्ने उमर रज़ि॰ ने उन से कहाः अल्लाह पाक ने इस प्रकार जानदार पर निशाना साधने वालों पर लानत भेजी है, और इस प्रकार खेल कौन खेल रहा

था? लानत हो इस प्रकार का खेल खेलने वालों पर।

फ़ाइदा:– बुख़ारी शरीफ़ में है कि इब्ने उमर यहया बिन सअ़ीद के घर गये थे (5514) और हकम बिन अय्यूब के भी घर गये थे (5513) फिर उस मुर्ग़ी को खोल दिया। इस प्रकार का निर्मम कार्य करना और उस की जान को तक्लीफ़ पहुँचाना किसी भी धर्म में जाइज़ नहीं है। ऐसा व्यक्ति महापापी है, इसीलिये आप ने लानत भेजी है।

बाब {अच्छे ढंग से ज़ब्ह करने और छुरी तेज़ कर लेने का बयान।}

1249:– शद्दाद बिन औस रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने जो दो बातें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुन कर याद रखीं। पहली बात तो यह कि आप ने फ़रमायाः अल्लाह पाक ने हर कार्य को अच्छे ढंग से करने का हुक्म दिया है, यहाँ तक कि अगर किसी की हत्या करो तो भी ठीक तरीके से करो और जब किसी जानवर को ज़ब्ह करो तो भी ठीक तरीके से ज़ब्ह करो और पहले छुरी ख़ूब तेज़ कर लो ताकि उस को आराम मिले (जान आसानी से निकल जाये)

फ़ाइदा:– अच्छे ढंग से ज़ब्ह करो में यह भी शामिल है कि जानवर के सामने छुरी तेज़ न करो, एक जानवर के सामने दूसरे को ज़ब्ह न करो, ज़ब्ह करने से पहले उसे न घसीटो और न ही मारो-पीटो।

बाब {ज़ब्ह हर उस चीज़ से कर सकते हो जिस से ख़ून निकल जाये, लेकिन नाख़ून और दाँत से न ज़ब्ह करो।}

1250:– राफ़े बिन ख़दीज रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! हम लोग कल दुश्मन से जिहाद करने वाले हैं और हमारे पास छुरी-चाकू हैं नहीं (कि जिस से जानवर ज़ब्ह करें) आप ने फ़रमायाः उस चीज़ को प्रयोग में लाओ जो ख़ून को बहा दे और उस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो उसे खाओ। लेकिन दाँत और नाख़ून (से न ज़ब्ह करो) और मैं तुम से इस का कारण भी बयान कर दूँ कि दाँत तो हड्डी है और नाख़ून, यह हब्शी लोगों की छुरी है।

हदीस के रावी ने बयान किया कि (जन्ग हुयी तो) माले ग़नीमत में बहुत से ऊँट और बकरिया मिलीं। चुनान्चे उन में से एक ऊँट बिगड़ गया (और भाग खड़ा हुआ) तो एक सहाबी ने उसे तीर मार दिया जिस से वह तुरन्त रुक गया। इस पर आप ने फ़रमायाः इन ऊँटों में से भी कुछ एक सरकश हो जाते हैं और भाग खड़े होते हैं, जैसे जन्गली जानवर। सो जब कोई जानवर इस प्रकार की हर्कत करने लगे तो उस के साथ यही करो (कि तीर से मार दो)

फ़ाइदा:– इस हदीस से तीन बातें मालूम हुयीं। पहली यह कि दाँत और नाख़ून को छोड़ कर हर वह वस्तु जिस से नसकट जाये और समस्त ख़ून निकल जाये, उस से ज़ब्ह करना जाइज़ है, जैसे धारदार लकड़ी, धारदार पत्थर या कोई भी वस्तु। एक बकरी मरने

लगी तो एक लड़की ने जल्दी से धारदार पत्थर से ज़ब्ह कर दिया तो आप ने उसे खाने का हुक्म दिया (बुख़ारी-2304) दूसरी बात यह मालूम हुयी कि दाँत और नाख़ून से ज़ब्ह करना दुरुस्त नहीं, इस का कारण हदीस में बयान है। तीसरी बात यह मालूम हुयी कि अगर पालतू जानवर भी जन्गली जानवरों की सी हर्कत करने लगे, काबू से बाहर होजाये और भागने लगे तो बिस्मिल्लाह पढ़ कर तीर से मार गिरा दो और उस का माँस खाओ, इमाम बुख़ारी रह॰ भी इसी हदीस को अपनी पुस्तक में लाये हैं, लेकिन उन्होंने यह बाब बाँधा है "पालतू जानवर अगर जन्गली जानवर की तरह बिदक जाये तो वह जन्गली जानवर के हुक्म में है" (देखें हदीस न॰ 5509 का बाब) इमाम रह॰ की बुद्विमानी की प्रशंसा करनी होगी।

नोटः– शिकार और शिकरी से संबन्धित चन्द अहम मस्अलों का बयान अनिवार्य है। ★जिस प्रकार शिकारी कुत्ते को शिकार के लिये प्रयोग में लाया जाता है, इसी प्रकार चीता, शेर, आदि जानवरों और बाज़ शिकरा आदि परिन्दों को भी प्रयोग में ला सकते हैं। शर्त यह है कि शिकार की शिक्षा को सीख लें (नैलुल औतार) ★बन्दूक़ की गोली से किया हुआ शिकार हलाल है, क्योंकि उस की गाली लाठी-डन्डे की तरह शरीर से नहीं टकराती है, बल्कि तीर, नेज़ा, भाला या धारदार हथियार की तरह शरीर को फाड़ का निकल जाती है। (सुबुलुस्सलाम, रौ-ज़तुन्नदिया नबाव भोपाली) जिन रिवायतों में मिनाही है उस से मुराद मिट्टी की बनी हुयी गोली है। ★बिस्मिल्लाह पढ़ना शर्त है इस के बग़ैर जानवर हलाल नहीं होगा, क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है "जिन पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो उसे न खाओ (सूरः अन्आम 122) लेकिन अगर भूल जाये तो? इस में इख़्तिलाफ़ है, लेकिन जमहूर उलमा के निकट जाइज़ है और भूल-चूक माफ़ है। ★क़िब्ला रुख़ लेटा कर ज़ब्ह करना कोई ज़रुरी नहीं, लेकिन बेहतर यही है कि क़िब्ला की तरफ़ रुख़ हो। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो मेंढ़ों की कुर्बानी की तो क़िब्ला की तरफ़ उन का मुँह था (अबू दावूद-लेकिन यह रिवायत ज़ओफ़ है। जओफ़ अबू दावूद-597) ★ मछली और टिड्डी दो ऐसे जीवधारी हैं जिन्हें शिकार करते समय न बिस्मिल्लाह पढ़ने की आवश्यक्ता है और न ज़ब्ह करने की ★ मादा जानवर को ज़ब्ह करने के बाद उस के पेट से बच्चा निकला तो वह भी माँ के साथ ज़ब्ह किया हुआ माना जायेगा (अबू दावूद 2828) (इब्ने माजा) इरवाउल ग़लील (2539) ज़ब्ह का क़ानून पैदा होने के बाद लागू होता है। पैदा होने से पूर्व वह माँ के शरीर का एक अंग ही माना जायेगा, चाहे वह पेट में जीवित हो, या मुर्दा।

ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी 23.1.2006

किताबुल् अज़ाही
(क़ुर्बानी के मसाइल का बयान)

नोटः– क़ुर्बानी, यह हज़रत इब्राहीम अ़लै॰ की सुन्नत है जिसे अल्लाह तआ़ला ने क़ियामत तक के लिये आने वाली नस्लों में जारी कर दिया। इस का ज़िक्र क़ुरआन पाक की सूरः साफ़्फ़ात 107 में भी आया है। अल्लाह तआ़ला ने इस के लिये 10, 11, 12, 13 ज़िलहिज्जा के 4 दिन मख़्सूस किये हैं। यह ताकीदी सुन्नत है। आप ने फ़रमायाः जो क़ुर्बानी करने की ताक़त रखने के बावजूद न करे वह मेरी ओ़दगाह के भी क़रीब (दोगाना पढ़ने के लिये) न आये (इब्ने माजा–2532) अगर क़ुबानी करने की ताक़त है तो हर घर वालों पर हर साल करना अनिवार्य है (इब्ने माजा–3125)

बाब {जब ज़िल् हिज्जा का पहला दहा आरंभ हो जाये और कोई क़ुबानी करने का इरादा रखता हो तो वह अपने बाल और नाखून न काटे।}

1251:– नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी उम्मे सलमा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस के पास क़ुर्बानी का ज़ानवर हो और ज़िलहिज्जा का चाँद नज़र आ जाये तो वह अपने बाल और नाखून न काटे।

फ़ाइदाः– इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ का फ़तवा है अगर कोई काट ले तो मक्रूह भी नहीं है। इस के विपरीत सऊदी अ़रब के सुप्रसिद्ध मुफ़्ती शैख़ इब्ने बाज़ का फ़तवा है कि "जो व्यक्ति क़ुर्बानी करने का इरादा रखता हो उस के लिये जाइज़ नहीं कि वह अपने बाल, नाखून और चमड़े (शरीर) में से कुछ भी काटे, जब तक कि वह क़ुर्बानी न कर ले (फ़तावा इस्लामिया–2/317) ज़ाहिर है कि हदीस की रोशनी में इमाम साहब का फ़तवा रद्द है।

बाब {क़ुबानी करने के समय का बयान।}

1252:– जुन्दुब बिन सुफ़यान रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास ओ़दुल् अज़्हा के दिन मौजूद था, अभी आप ने केवल नमाज़ पढ़ाई थी और सलाम फेरा था, कि क्या देखा कि एक बकरी नमाज़ से पहले ही ज़ब्ह की जा चुकी है। इस पर आप ने फ़रमायाः जिस ने ओ़द की नमाज़ पढ़ने से पहले ही क़ुर्बानी कर डाली वह उस के स्थान पर दूसरी क़ुर्बानी करे, और जिस ने

(नमाज़ के बाद) अभी कुर्बानी नहीं की है, वह जा कर अल्लाह का नाम लेकर कुर्बानी करे।

फ़ाइदाः– बुख़ारी शरीफ़ में बरा बिन आज़िब रज़ि॰ से रिवायत है कि मेरे मामूँ अबू बुर्दा ने नमाज़ से पहले ही कुर्बानी कर डाली तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दोबारा कुर्बानी करने का आदेश दिया और फ़रमायाः तुम्हारी बकरी केवल माँस की बकरी है (जिसे खाने के लिये आ़म दिनों में लोग ज़ब्ह करते है) (बुख़ारी–5556) नमाज़ से पहले कुर्बानी जाइज़ नहीं, इस मस्अले में सभी का इत्तिफ़ाक़ है। बरा वासली की रिवायत नीचे आ रही है

बाब {जिस ने नमाज़ पढ़ने से पहले ही जानवर ज़ब्ह कर दिया उस की कुर्बानी दुरुस्त नहीं हुयी।}

1253:– बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ओ़द के दिन जो सब से पहला काम करते हैं वह यह है कि हम सब से पहले नमाज़ पढ़ते हैं, फ़िर लौट कर कुर्बानी करते हैं। सो जिस ने इस प्रकार किया वह हमारे रास्ते पर चला। और जिस ने नमाज़ से पहले ही कुर्बानी कर डाली तो उस की हैसियत केवल उस माँस की सी है जो उस ने अपने घर वालों के खाने के लिये ज़बह की है, उसे कुर्बानी में शुमार नहीं किया जायेगा।

अबू बुर्दा बिन नियार ने नमाज़ पढ़ने से पहले ही कुर्बानी कर डाली थी, उन्होंने कहाः मेरे पास एक वर्ष से कम आयु का बक्री का एक बच्चा है, लेकिन देखने में दाँता जावनर से भी बेहतर है (यानी मोटा-ताज़ा है) आप ने फ़रमायाः (ठीक है) उसे ही कुर्बानी कर डालो, लेकिन (यह अनुमति केवल तुम्हारे ही लिये है) तुम्हारे अ़लावा और किसी के लिये जाइज़ नहीं।

फ़ाइदाः– इस हदीस से दो मस्अ़ले मालूम हुये (1) पहला यह कि नमाज़ से पहले कुर्बानी जाइज़ नहीं, दोबारा करनी पड़ेगी (2) दूसरा मस्अला यह मालूम हुआ कि एक वर्ष, या इस से कम आयु के बक्री के बच्चे की कुर्बानी जाइज़ नही। हाँ, भेड़ का बच्चा अगर एक वर्ष का हो तो उस की कुर्बानी दुरुस्त है। इस की तफ़सील नीचे आ रही है।

बाब {किस आयु के जानवर की कुर्बानी जाइज़ है?}

1254:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कुबानी में केवल दाँता (दोंदा) जानवर ज़ब्ह करो। अगर इस प्रकार का जानवर न मिले तो भेड़ का एक वर्ष का बच्चा ज़ब्ह करो।

फ़ाइदाः– 'मुसिन्ना' उस जानवर को कहते हैं जिस ने दूध का दाँत गिरा दिया हो। बक्री आ़म तौर पर 14, 15 माह की आयु में दूध के अगले दो दाँत गिराती है। 'जज़आ' भेड़ के एक वर्ष के बच्चा को कहते हैं। हनफ़ी उलमा के निकट एक वर्ष के बकरे की कुर्बानी

दुरुस्त है। उन के निकट "मुसिन्ना" का अर्थ है "एक वर्ष का" हालाँकि जानवर की ख़रीद-फ़रोख़्त के समय उस की आयु नहीं पूछी जाती, बल्कि उस के दाँत के बारे में पूछा जाता है। चुनान्चे बाज़ार में दो दाँत, चार दाँत, छः दाँत के बैल बिकते है, यानी जिस ने दो दाँत गिरा दिया, चार दाँत गिरा दिया, छः दाँत गिरा दिया। मुसिन्ना का तर्जुमा "एक वर्ष का" करना मूर्खता के अतिरिक्त और कुछ नहीं। हाँ, भेड़ का बच्चा एक वर्ष का हो तो उस की कुर्बानी दुरुस्त है।

बाब {जज़्आ की कुर्बानी का बयान।}

1255:- उक्बा बिन आमिर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे दर्मियान कुर्बानी के लिये बकरियाँ बाँटीं तो मेरे हिस्सा में जज़्आ (भेड़ का एक वर्ष का बच्चा) आया। इस पर मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मेरे हिस्सा में तो एक वर्ष का भेड़ का बच्चा आया है। आप ने फ़रमायाः तुम उसी की कुर्बानी कर डालो।

फ़ाइदा:- मालूम हुआ कि भेड़ के एक वर्ष के बच्चे की कुर्बानी जाइज़ है। ऊपर हदीस न॰ 1253 में बक्री के एक वर्ष के बच्चे की अनुमति अबू बुर्दा को जो दी है, यह अनुमति केवल उन्ही के लिये है, जैसा कि हदीस के अन्त में है "तुम्हारे अतिरिक्त और किसी के लिये जाइज़ नहीं।"

बाब {कुर्बानी दो मेंढ़ों की बेहतर है जो चितकबरे हों और लंबी सींग वाले हों। और अपने हाथ से "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर" कह कर ज़ब्ह करना बेहतर है।}

1256:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे दो मेंढ़ों की कुर्बानी की जो चितकबरे और लंबी सींग वाले थे। मैं ने स्वँय नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़ब्ह करते देखा। और यह भी देखा कि ज़ब्ह करते समय उन की गर्दन पर पैर रखे हुये थे, फिर ज़ब्ह करते समय "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर" पढ़ा।

फ़ाइदा:- सुन्नत इसी का नाम है कि जिस रंग का जो जानवर आप ने कुर्बान किया उसे ही कुर्बान किया जाये। लेकिन दूसरे रंग और दूसरे लिंग (जिन्स) को भी कुर्बान करने में कोई हरज नहीं, आप ने अनुमति दी है। इसी प्रकार सुन्नत यही है कि स्वँय दुआ पढ़ कर ज़ब्ह करे, वर्ना दूसरे से ज़ब्ह करवाने में भी कोई हरज नहीं है। आप ने कौन सी दुआ पढ़ी? इस का बयान अन्त में आयेगा।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुर्बानी अपनी, अपेन घर वालों और अपनी उम्मत की तरफ़ से की।}

1257:- आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने आदेश दिया कि ऐसा मेंढा लाया जाये जो काले में चलता हो, काले में बैठता हो और काले में देखता हो (यानी उस के पैर, पेट और आँख के चारों तरफ़ काला हो) चुनान्चे इस प्रकार का लाया गया तो आप ने फ़रमायाः ऐ आइशा! छुरी लाओ। फिर फ़रमायाः उसे पत्थर पर रगड़ कर तेज़ कर लो, चुनान्चे उन्होंने तेज़ कर दिया तो आप ने छुरी उन से ले ली, फिर उसे पकड़ कर पहलू के बल लिटा दिया फिर उस को ज़ब्ह किया और ज़ब्ह करते समय फ़रमायाः

> **बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक-बर+अल्लाहुम्म त-क़ब्बल् मिन् मु-हम्मदिन् वआलें मु-हम्मदिन् वमिन् उम्मति मु-हम्मदिन्**
> (सब से बड़े अल्लाह के नाम से ज़ब्ह करता हूँ+ ऐ मेरे मौला! मुहम्मद की तरफ़ से, मुहम्मद के बाल-बचों की तरफ़ से और मुहम्मद की उम्मत की तरफ़ से इस क़ुर्बानी को स्वीकार कर ले)

फ़ाइदाः– क्या "बाल-बच्चों" और "उम्मत" में मरे हुये बाल बच्चे और मरे हुये उम्मती भी शामिल हैं? या दूसरे शब्दों में, क्या मुर्दा की तरफ़ से क़ुर्बानी जाइज़ है? मेरे निकट, नहीं, हर्गिज़ नहीं। इस पर बाब के अन्त में रोशनी डाली जायेगी। वहाँ अवश्य ही पढ़ें।

बाब {क़ुर्बानी का माँस तीन दिन से अधिक रख कर खाना मना है।}

1258:– इब्ने अज़हर के आज़ाद किये हुये गुलाम अबू उबैद ने बयान किया कि मैं ने उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की इमामत में ईद की नमाज़ पढ़ी। चुनान्चे उन्होंने खुत्बा से पहले नमाज़ पढ़ाई, फिर खुत्बा दिया और फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुर्बानी का माँस तीन दिन से अधिक रख कर खाने से मना फ़रमाया है, इसलिये तीन दिन से अधिक न खाओ।

फ़ाइदाः– यह हुक्म बाद की हदीसों से मन्सूख़ हो चुका है। सल्मा बिन अक्वा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो कोई क़ुर्बानी करे तो तीन दिन के बाद उस के घर में कुछ माँस न बचे। चुनान्चे अगले वर्ष सहाबा ने पूछाः क्या इस वर्ष भी हम अगले वर्ष की तरह करें? आप ने फ़रमायाः अब तुम खाओ, खिलाओ और जमा भी करो। चूँकि बीते हुये वर्ष लोग (खाने-पीने की) परेशानी में थे इसलिये मैं ने चाहा कि तुम लोग माँस से उन की सहायता कर दो (बुख़ारी-5569, मुस्लिम-5109) आइशा रज़ि० ने बयान किया कि आप ने फ़रमायाः "खाओ भी, जमा भी करो और ख़ैरात भी करो" (मुस्लिम 1971) जमा करने से संबन्धित हदीस विस्तार से नीचे भी आ रही है।

बाब {तीन दिन के बाद क़ुर्बानी का माँस खाना, उसे जमा कर के रखना, लाद कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना और सदक़ा करना सब जाइज़ है।}

1259:– अ़ब्दुल्लाह बिन वाकि़द लैसी रज़ि॰ ने अ़दुल्लाह बिन अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ से बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुर्बानी का माँस तीन दिन से अधिक रख कर खाने से मना फ़रमाया है। अ़ब्दुल्लाह बिन अबू बक्र ने कहा कि मैं ने यह हदीस उम्रा रज़ि॰ से बयान की तो उन्होंने भी कहा कि उन्होंने सच कहा, क्योंकि मैं ने स्वँय आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ को बयान करते सुना है कि (एक मर्तबा) कुछ दीहाती अ़ीद के मौक़े पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना में (मदीना) आये (चूँकि वह परेशान हाल थे) तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तीन दिन तक खाने के बराबर माँस रख लो और बाक़ी (इन ग़रीबों में) बाँट दो। बाद में सहाबा ने आप से शिकायत की किं ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! इन्होंने कुर्बानी के (चमड़ों) को ले जाकर उन की मश्क बनाई और उन में चर्बी भर-भर कर रखा। आप ने फ़रमायाः फिर? सहाबा ने कहाः आप ने तो तीन दिन से अधिक रख कर खाने से मना फ़रमाया है। इस पर आप ने फ़रमायाः वह तो मैं ने उन ग़रीबों के नाते कहा था जो उस समय (मौक़े पर) आ गये थे (ऐसी कोई बात नहीं) अब खाओ भी, जमा भी करो और ख़ैरात भी करो।

फ़ाइदाः– आ़मतौर पर यह प्रसिद्व है कि माँस का तीन हिस्सा कर के एक हिस्सा खिला दें, एक हिस्सा बाँट दें और एक हिस्सा खाने के लिये रख लिया जाये। अ़ल्लामा नववी ने मुस्लिम की शरह में किसी हदीस का हवाला नहीं दिया है, केवल चन्द इमामों और उलमा का क़ौल नक़ल किया है। मौलाना सलाहुद्दीन यूसुफ़ ने तफ़सीर "अहसनुल बयान" में सूरः हज्ज की आयत न॰ 36 के हाशिया में लिखा हैः "किसी भी आयत या हदीस से दो या तीन हिस्सों के करने का हुक्म नहीं है, बल्कि केवल खाने और खिलाने का हुक्म है। इसलिये किसी तक़सीम का पाबन्द नहीं होना चाहिये" (पृष्ठ 800) मालूम हुआ कि अगर घर में अधिक परिवार हैं तो एक तिहाई से अधिक भी खाने के लिये रख सकते हैं।

एक बात और भी याद रहे कि कुरआन की आयतों और अहादीस से मालूम होता है कि कुर्बानी का माँस खाना अनिवार्य है। चूँकि जानवर कुर्बान कर के अल्लाह से मआ़हिदा, वादा, इक़रार और बनुबन्ध करता है इब्राहीम अ़लै॰ की सी जीवन बिताने का, इसलिये अनुबन्ध को और अधिक मज़बूत करने के लिये खाना निःसंदेह अनिवार्य है, मगर यह कि डाक्टर ने बीमारी के नाते मना कर दिया हो।

बाब में एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाद कर ले जाने का ज़िक्र है लेकिन हदीस में स्पष्ट नहीं है। हाँ, दूसरी हदीस में सौबान रज़ि॰ ने बयान किया कि अन्तिम हज्ज में आप ने कुर्बानी की फिर मुझ से कहा कि इस में से कुछ माँस बना कर रख लो। चुनान्चे मदीना वापसी तक राह में वही खाते रहे। इस से उठा कर ले जाना साबित है (मुस्लिम) मक्का से मदीना का सफ़र ऊँट से कई दिन का है।

बाब {"फ़रअ़" और "अ़तीरा" का बयान।}

1260:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः न "फ़रा" जाइज़ है और न ही "अ़तीरा" जाइज़ है। इब्ने राफ़े ने अपनी रिवायत में इतना और अधिक बयान किया है कि ऊँटनी जो पहली मर्तबा गाभिन हो कर जो पहला (पैलौठा) बच्चा जनती थी। उस को "फ़रा" कहा जाता था। इस बच्चा को मुश्रिक लोग (बुतों के नाम पर) ज़ब्ह किया करते थे।

फ़ाइदा:– 'अ़तीरा' रजब महीना के पहले दहे में जिस जानवर को ज़ब्ह करते थे। उस का दूसरा नाम "रजबी" भी था। कुछ उलमा ने कहा कि किसी मुश्रिक के पास सौ ऊँट हो जाते तो एक पैलौठे बच्चा को बुतों को प्रसन्न करने के लिये कुर्बान करता था, इस का नाम "फ़रा" है। इस्लाम लाने के बाद भी इस पर अ़मल करते थे लेकिन उसे अल्लाह के नाम पर ज़ब्ह करते थे। मगर इस हदीस के बयान होने के बाद यह तरीक़ा भी समाप्त कर दिया गा। आज भी जाहिल मुसलमान रजब के कूँडे भरते हैं। कुछ लोग इसे खड़े पीर बाबा की नियाज़ बताते हैं और खड़े-खड़े खाते हैं। यह सब शिर्क के कार्य हैं।

बाब {जो जानवर अल्लाह के अ़लावा (और दूसरे) के नाम पर ज़ब्ह किया जाये उस पर अल्लाह की लानत है।}

1261:– अबू तुफ़ैल आ़मिर बिन वासला ने बयान किया कि मैं अ़ली रज़ि॰ के पास बैठ हुआ था कि एक व्यक्ति आया और कहने लगाः यह बताइये कि अल्लाह के रसूल आप को चुपके से क्या बताते थे? यह सुन कर वह भड़क उठे और कहने लगेः अल्लाह के नबी ने मुझ से कोई चीज़ छुपा कर नहीं बताई है। आप ने मुझ से चार बातें बताई हैं (जो और लोगों को भी बताई हैं) वह बोला कि ऐ ख़लीफ़ा! वह क्या है? उन्होंने बताया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो अपने पिता पर लानत भेजता है अल्लाह भी उस पर लानत भेजता है। जो कोई अल्लाह को छोड़ कर किसी और के नाम पर ज़ब्ह करता है उस पर भी अल्लाह लानत भेजता है। और जो किसी बिद्अ़ती को ठहराता है उस पर भी अल्लाह लानत भेजता है। और उस पर भी लानत भेजता है जो ज़मीन के निशान को बदल देता है।

नोट:– ★एक बकरी की कुर्बानी तमाम घर वालों की ओर से काफ़ी हो जायेगी, चाहे उन की संख्या 100 से भी अधिक हो। अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना में अपनी तरफ़ से और अपने घर वालों की तरफ़ से केवल एक बकरी की कुर्बानी करता था (इब्ने माजा-3147, तिर्मिज़ी-1505) (ज़ादुल् मआ़द, नैलुल् औतार) ★घर का मालिक अपने और घर वालों के नाम से कुर्बानी करे। हर वर्ष बदल-बदल कर एक आदमी के नाम से कुर्बानी की जाती है, यह तरीका सुन्नत से साबित नहीं है। ★कुर्बानी के चार दिन हैं (10, 11, 12, 13 जिल् हिज्जा) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः गोश्त सुखाने के दिन कुर्बानी के दिन हैं। और इस पर सभी का इत्तिफ़ाक़ है कि अय्यामे तश्रीक़ 11, 12, 13 को कहते हैं। (नैलुल् औतार, ज़ादुल् मआ़द) ★ख़स्सी जानवर की कुर्बानी जाइज़ है (इब्ने माजा-3122)

★भैंस की क़ुबानी दुरुस्त नहीं, क्योंकि क़ुरआन ने चार जानवरों की क़ुबानी का हुक्म दिया है (1) भेड़ (2) बक्री, ऊँट, गाय (सूरः अन्आ़म 144) कुछ लोगों ने भैंस को भी गाय की जिन्स में शामिल कर लिया है, यह दुरुस्त नहीं। जिस प्रकार कोयल और कौआ एक नहीं हो सकते, इसी प्रकार भैंस और गाय एक नहीं मानी जा सकती। कुछ उलमा ने ज़बर्दस्ती गुन्जाइश निकाली है। ★मौलाना मुबारक पूरी ने लिखा है कि जिसकी इच्छा हो और इतमिनान हो वह करे, और जिसे इत्मिनान न हो वह न करे, और एक-दूसरे पर तन्क़ीद न करे। मौलाना का रुजहान भी एहतियात की तरफ़ है। केवल गाय की क़ुबानी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से साबित है इसलिये उसी की करनी चाहिये। ★महिला भी अपने हाथ से क़ुबानी कर सकती है अगर उसे क़ुबानी करने का तरीक़ा मालूम है तो इस में कोई हरज नहीं। इमाम बुख़ारी रह॰ ने बाब में ज़िक्र किया है कि अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ ने अपनी लड़कियों से कहा कि वह अपनी क़ुबानी स्वँय करें (5559 का बाब) ★क़ुबानी में दिन और रात का कोई फ़र्क़ नहीं। तबरानी में इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि आप ने रात में क़ुबानी करने से मना फ़रमाया है (तबरानी) लेकिन यह रिवायत मनघड़त और जाली है। ★ज़ब्ह करते समय बहुत सी दुआओं का पढ़ना आप से साबित है इसलिये जिसे चाहें पढ़ें। अस्ल में "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर" ही सब से अहम है बिना इस के पढ़े जानवर हलाल ही नहीं होगा। ★जिस प्रकार क़ुबानी का माँस खाना दुरुस्त है, इसी प्रकार उस की खाल को अपने प्रयोग में लाना भी दुरुस्त है। ★ऊँट को "नह्र" करना चाहिये। इस का तरीक़ा यह है कि ऊँट का अगला बायाँ घुटना बाँध कर उसे तीन टाँगों पर खड़ा कर देना चाहिये, फिर किसी नोकदार हथियार से उसके गले में मारना चाहिये। इस प्रकार ख़ून निकलने के साथ ऊँट एक तरफ़ गिर जायेगा, फिर चमड़ा उतार लिया जाये। (बुख़ारी-1713, मुस्लिम-1320) ★ऊँट में दस और गाय में सात आदमी शरीक हो सकते हैं। (इबने माजा-2536, तिर्मिज़ी-905, नसई-4404) एक रिवायत में है कि ऊँट में सात आदमी शरीक हो सकते हैं (अबू दावूद-2808-जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह) उलमा का कहना है कि यह हज्ज के मुतअ़ल्लिक़ हैं, यानी हज्ज के दौरान क़ुबानी करने वाले हाजी एक ऊँट में सात साझीदार हों। कुछ उलमा का कहना है कि दोनों की इजाज़त है। ★मुर्दा की तरफ़ से क़ुबानी जाइज़ नहीं। क़ुर्बानी, यह इब्राहीम का सा जीवन जीने का एक मुआ़हिदा औा इक़रार है। ज़ाहिर है यह ज़िन्दा करता है, मुर्दा नहीं। मुर्दों को सवाब पहुँचाने की और दूसरे दिन हैं। अल्लाह ने यह दिन मुआ़हिदा के लिये ख़ास कर दिया है। यह चार दिन बीत जाने के बाद मुआ़हिदा का समय समाप्त हो जाता है। इस के विपरीत मुर्दा को सवाब पहुँचाने के लिये समय की कोई क़ैद नहीं है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उम्मत की तरफ़ से क़ुर्बानी की है उस में उम्मत के जीवित लोग मुराद हैं। तफ़सील दूसरी पुस्तकों में देखें। स्वँय अहले हदीस उलमा के दर्मियान भी इस मस्अले में परस्पर इख़्तिलाफ़ है।

❀ ❀ ❀

किताबुल अश्‌रि-बति
(पीने-पिलाने के मसाइल का बयान)

बाब {शराब हराम है।}

1262:- इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हर नशा लाने वाली वस्तु शराब के हुक्म में है और शराब हराम है।

1263:- अ़ली बिन अबू तालिब रज़ि॰ ने बयान किया कि बद्र की लड़ाई में माले ग़नीमत में मुझे एक ऊँटनी मिली, और एक दूसरी ऊँटनी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने ख़ास (पाँचवे) हिस्से में से दी। जब मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पुत्री फ़ातिमा से विवाह करने का प्रोग्राम बनाया तो बनी क़युन्क़ाअ़ के एक सुनार से मिल कर प्रोग्राम बनाया कि हम दोनों मिल कर इज़ख़िर नामक घास ला कर सुनारों के हाथ बेच कर (उस की आय से) अपनी शादी का वलीमा कर सकूँ। मेरी दोनों ऊँटनियाँ एक अन्सारी के घर के पास बैठी हुयी थीं और इधर मैं उन का सामान यानी पालान, रिकाब और रस्सियाँ एकत्र कर रहा था। जब यह सब सामान एकत्र कर चुका (और ऊँटनियों के पास पहुँचा) तो क्या देखा कि उन के पेट चाक हैं और कोहान कटे हुये हैं। यह देख मुझ से (मारे ग़म और दुःख के) रहा न गया और बेतहाशा रोने लगा। फिर मैं ने लोगों से मालूम किया तो उन्होंने बताया कि हम्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब ने यह हर्कत की है जो उस अन्सारी के घर में एक गुरुप के साथ हैं और शराब पी रहे हैं। उन के सामने एक गाने वाली और उन के साथियों ने अपने गाने में कहाः "ऐ हम्ज़ा! उठो, और तुरन्त इन ऊटनियों का काम कर दो। चुनान्चे उन्होंने जा कर उन के कोहान काट लिये और उन का पेट फाड़ कर कलेजा निकाल लिया।

अ़ली रज़ि॰ ने बयान किया कि यह हाल मालूम होने के बाद मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास गया, उस समय आप के पास ज़ैद बिन हरसा रज़ि॰ भी बैठे हुये थे। आप ने चेहरा ही देख कर मेरी कष्ट को भाँप लिया और पूछाः तुम्हें क्या हो गया? मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह की क़सम, आज के दिन का सा बुरा दिन मैं ने नहीं देखा था, हम्ज़ा ने मेरी दोनों ऊँटनियों के साथ बड़ा दुराचार किया, उन के कोहान काट डाले और उन का पेट भी फाड़ डाला और वह फ़लाँ घर में चन्द शराबियों के साथ मौजूद हैं। यह सुन कर आप ने अपनी चादर लीऔर उसे ओढ़ कर

पैदल ही चल पड़े और मैं और ज़ैद बिन हारिसा भी पीछे-पीछे चल पड़े। जब आप उस दर्वाज़े पर पहुँचे जिस घर में हम्ज़ा थे तो आप ने अन्दर जानेकी अनुमति माँगी तो लोगों ने दे दी। आप ने जा कर देखा तो वह नशे में डूबे हुये थे। आप उन्हें लानत-मलामत करने लगे। उस समय उन की आँखें नशे में लाल हो रही थीं। उन्होंने आप को ऊपर से नीचे, फिर नीचे से ऊपर तक देख कर कहाः तुम तो मेरे बाप-दादों के गुलाम हो। यह सुन कर आप ने अनुमान लगा लिया कि यह नशे की हालत में हैं। (और इस समय इन से कुछ कहना ठीक नहीं है) चुनान्चे आप वापस बाहर चले आये और हम दोनों भी बाहर आ गये।

फ़ाइदा:– रजब सन 2 हि॰ में अ़ब्दुल्लाह बिन जहश की कमान्डरी में नख़्ला के स्थान पर एक लश्कर भेजा गया था उस मौक़े पर जो माले ग़नीमत में से ख़ास हिस्सा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मिला था (जिसे खुमुस कहते हैं) उसी में से एक ऊँटनी अ़ली रज़ि॰ को दी थी। इस घटना के समय तक शराब हराम नहीं हुयी थी। इब्ने अबू शैबा की रिवायत में है कि जब हम्ज़ा रज़ि॰ होश में आये तो उन्होंने अ़ली रज़ि॰ को तावान में दो ऊँटनियाँ वापस कीं। फ़ातिमा रज़ि॰ का निकाह बद्र की लड़ाई के बाद और उहुद से पहले हुआ।

शराब तीन क़िस्तों में हराम की गयी। पहली क़िस्त में इस की बुराई बयान की गयी (सूरःबक़रः219) दूसरी क़िस्त में पी कर नमाज़ पढ़ने से मना किया गया (सूरः निसा 43) अ़ली रज़ि॰ ने बयान किया कि अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ि॰ ने हम लोगों की दावत की तो हम सब ने डट कर शराब पी और मग़रिब की नमाज़ पढ़ाई तो उस में आयत को उलट-पलट दिया तब सूरः निसा का हुक्म नाज़िल हुआ। (तिर्मिज़ी अबू दावूद, नसई) फिर तीसरी क़िस्त में सूरः माइदा की आयत न॰ 90 नाज़िल कर के हमेशा के लिये हराम कर दिया। चुनान्चे एक व्यक्ति ने आप को शराब उपहार में भेंट किया तो फ़रमायाः सूरः माइदा के नाज़िल होने के बाद शराब (मदिरा) सदा के लिये हराम हो गयी (मुस्लिम, नसई)

बाब {हर नशा लाने वाली वस्तु हराम है।}

1264:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति यमन मुल्क के नगर जैशान से आया और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अपने मुल्क में मकई से बनाए जाने वाले शराब के बारे में पूछा, जिसे लोग "मिज़र" कहते थे। आप ने पूछाः उस में नशा भी होता है? उस ने कहाः हाँ। आप ने फ़रमायाः जो वस्तु नशा पैदा करे वह हराम है। और आप ने वादा किया है कि जो भी नशा वाली वस्तु प्रयोग में लायेगा मैं उसे (क़ियामत के दिन) "ती-नतुल ख़बाल" पिलाऊँगा। लोगों ने पूछाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! यह कौन सी वस्तु है? आप ने फ़रमायाः यह जहन्नमी लोगों के पसीना अथवा उन के शरीर से निकलने वाले रक्त और पीब व मवाद का नाम है।

फ़ाइदा:– इस हदीस से मालूम हुआ कि पान, बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, हुक़्क़ा, गुटका

सब हराम हैं, क्योंकि इन सब में भी नशा होता है, चाहे थोड़ा ही हो। फ़र्क़ केवल इतना है कि इन सब वस्तुओं के प्रयोग के बाद वह हालत नहीं होती है जो शराब पीने के बाद होती है। और ज़ाहिर है हर वस्तु का अलग-अलग नशा होता है और हर प्रकार का नशा हराम है। उलमा ने ऊपर गिनाई गयी वस्तुओं के बारे में बहुत कुछ लिखा है। किसी ने मक्रुह कहा है, किसी ने मक्रुह तन्ज़ीहा और किसी ने मक्रुह तहरीमा और किसी ने हराम। हक़ीक़त यह है कि शरीअ़त में दो ही चीज़ें हैं (1) हलाल (2) हराम। यह मक्रुह, मक्रुह तन्ज़ीही आदि की परिभाषा मनघड़त है, जिसे इन्होंने अपने प्रयोग के लिया गढ़ रखा है। और इन्ही परिभाषाओं को याद कर के लोग ढीठ हो गये हैं। यहाँ विस्तार से लिखने की गुन्जाइश नहीं।

बाब {हर वह पीने वाली वस्तु जो नशा लाये वह हराम है।}

1265:- आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वस़ल्लम से "बिता" के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमायाः (मैं केवल इतना जानता हूँ कि) हर वह पीने की वस्तु जो नशा पैदा करे वह हराम है।

फ़ाइदा:- 'बिता' यह एक प्रकार की शराब है जो शहद से बनाई जाती है। मआ़ज़ बिन जबल रज़ि॰ ने पूछाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! हमारे यहाँ यमन वाले शहद को पका कर शराब बनाते हैं जो बाद में जम जाता है जिसे "बिता" बोलते हैं, और एक शराब जौ और मकई से बनाते हैं जिसे "मिज़र" बोलते हैं (मुस्लिम) अंग्रेजी में इसे "बियर" बालते हैं। उस समय लोग कच्ची खजूर, पक्की खजूर, अन्गूर, जौ, मकई, शहद आदि से बनाते थे। आप ने सुन कर उत्तर दिया कि इस से कोई मतलब नहीं कि किस वस्तु से बनाई जाती है। बस इतना जान लो कि जो वस्तु पीने-खाने के बाद नशा लाये वह हराम है। यहाँ हदीस में पीना शब्द आया है, इसका यह अर्थ नहीं कि खाना जाइज़ है, बल्कि हर खाने-पीने, लगाने और सूँघने वाली वस्तु जिस से नशा पैदा हो वह हराम है।

बाब {जिस ने दुनिया में शराब पी, उसे आख़िरत में पीने को नहीं मिलेगा, मगर यह कि तौबा कर ले।}

1266:- इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि शराब इन दो पेड़ों, यानी अंगूर और खजूर के पेड़ के फलों से बनती है।

फ़ाइदा:- यहाँ इन दोनों पेड़ों का इस लिये विशेष रुप से ज़िक्र किया है कि ऊँची क्वालिटी की शराब इन्हीं दो (खजूर-अंगूर) से बनती थी

बाब {शराब, खजूर और अंगूर से भी बनती है।}

1267:- अबू हुरैरा रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि

वसल्लम को फ़रमाते सुनाः शराब इन दोनों पेड़ों से बनती है (1) खजूर से (2) अन्गूर से।

बाब {शराब, अधपके (गद्दर) खजूर और सूखे खजूर (छुवारे) से भी बनती है।}

1268:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं अबू तल्हा अन्सारी, अबू दुजाना और मआज़ बिन जबल आदि को शराब पिला रहा था कि इतने में एक व्यक्ति ने अन्दर आ कर कहाः एक नई ख़बर है, शराब हराम कर दी गयी है। यह सुनते ही हम ने उसी समय उसे फेंक दिया, वह शराब अधपकी (गद्दर) और सूखे खजूर से बनाई गयी थी। अबू क़तादा ने बयान किया कि अनस बिन मालिक ने बतायाः जब शराब हराम हुयी उस ज़माना में आमतौर पर शराब इन्ही से बनाई जाती थी। 'ख़लीत' उस शराब को कहते हैं जो अधपकी खजूर और सूखी खजूर से बनाई गयी हो।

फ़ाइदा:– मुस्लिम की एक रिवायत में है कि अनस बिन मालिक से "फ़ज़ीख़" के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि कच्ची-पक्की खजूरें पानी में डाल कर रख देते, फिर तीन-चार दिन के बाद उस में से झाग उठने लगता, फिर उसे मल कर छान कर पीते, इसी का नाम "फ़ज़ीख़" है। दूसरी रिवायत में है कि अबू तल्हा ने मुझ से कहाः ऐ अनस! यह शराब का घड़ा तोड़ दे। चुनान्चे मैं ने एक पत्थर उठा कर दे मारा और वह टूट गया। (मुस्लिम)

बाब {पाँच वस्तुओं से बनाई गयी शराब।}

1269:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि (पिता जी) उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मिंबर पर खुत्बा दिया और हम्द-सना के बाद फ़रमायाः अम्मा बाद! जिस समय शराब हराम की गयी उस समय वह पाँच वस्तुओं से बना करती थीं, अर्थात गेहूँ, जौ, खजूर, अन्गूर और शहद से। और शराब उस चीज़ को कहते हैं जो बुद्दि को गड़बड़ा दे (वह चाहे जिस वस्तु से बनाई गयी हो) और ऐ लोगों! मैं चाहता हूँ कि अगर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हम से (तीन चीज़ों के बारे में यानी) दादा के तर्का, कलाला के तर्का और सूद के चन्द बाबों के बारे में विस्तार से बयान करते थे।

यहाँ पाँच ही चीज़ों का ज़िक्र है, इसलिये कि आम तौर पर शराब इन्हीं पाँच चीज़ों से बनाई जाती थी। इस का अर्थ कोई यह ले कि इन पाँच के अतिरिक्त की शराब हलाल है। इसलिये स्वैंय आगे बता दिया कि हर वह वस्तु जिस के प्रयोग से नशा पैदा हो वह हराम है।

बाब {अन्गूर और खजूर से नबीज़ बनाना मना है।}

1270:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीमसल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने खजूर और अन्गूर को, या कच्ची-पक्की खजूरों को एक साथ भिगो कर (नबीज़ बनाने से) मना किया है।

1271:– अबू सओद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है कि अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में से अगर कोई नबीज़ पीना चाहे तो केवल अन्गूर की पिये, या पकी खजूर की पिये, या गद्दर (अधपकी) खजूर की पिये (इन सब को एक साथ मिला कर न पिये)

फ़ाइदा:– खजूर या अन्गूर आदि को पानी में भिगो दिया जाये, फ़िर सुब्ह को उस पानी को पिया जाये इसी का नाम नबीज़ है। अगर दो तीन चीज़ों को एक साथ भिगो कर बनाया जाये तो उस में तेज़ी आ जाती है और नशा पैदा हो जाता है। इसीलिये कई चीज़ों को एक साथ भिगोने से मना किया गया।

बाब {"दुब्बा" और "मिज़फ़्फ़त" में नबीज़ बनाना मना है।}

1272:– ज़ाज़ान ने बयान किया कि मैं ने इब्ने उमर से कहा कि आप मुझे अपनी भाषा में उन शराबों के बारे में बता दें, क्योंकि आप की और हमारी भाषा अलग-अलग है (इसलिये समझने में कठिनाई होती है) इस पर इब्ने उमर रज़ि॰ नेकहाः नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने "हन्तम" को प्रयोग में लाने से मना किया है (और यह एक घड़ा का नाम है) और "दूब्बा" से भी मना फ़रमाया है (यह लौकी को कहते हैं) और "मिज़फ़्फ़त" से भी मना फ़रमाया है (यह उस बर्तन को कहते है जिस में तारकूल आदि लगा हो) और "नक़ीर" से भी मना फ़रमाया है (यह खजूर में छेद की गयी लकड़ी होती है) इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मशक में भी नबीज़ बनाने से मना फ़रमाया है।

फ़ाइदा:–(1)कच्ची लौकी के अन्दर का गूदा निकाल कर उसे सुखा कर प्रयोग में लाते थे। जैसे आजकल हिन्दुओं में साधू-संत पानी पीने के लिये लौकी ही का लोटा लिये रहते हैं। इस का नाम "दुब्बा" है। (2) नक़ीर' खजूर आदि की लकड़ी में सूराख़ और छेद कर के उस में शराब बनातेथे। (3) 'मिज़फ़्फ़त' मिट्टी के घड़े में तारकूल आदि की पालिश कर देते थे जिस से शराब तेज़ हो जाती थी। (4) 'हन्तम' मिट्टी के घेड़े पर हरे रन्ग का एक मसाला लगा देते थे। इन बर्तनों में नबीज़ बनाने से इसलिये मना कर दिया कि इन में जल्दी नशा पैदा होता था और बहुत तेज़ होता था।

बाब {पत्थर के बर्तन में नबीज़ बनाना जाइज़ है।}

1273:– जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये नाबीज़ एक मशक में बनाया जाता था, और जब मशक न मिलली तो पत्थर के घड़े में बनाया जाता था।

फ़ाइदा:– चमड़े के बर्तन को मशक कहा जाता है।

बाब {हर प्रकार के बर्तन में नबीज़ बनाना जाइज़ है और हर नशा लाने वाली चीज़ का पीना हराम है।}

1274:- बुरैदा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं ने तुम्हें (शराब पीने वाले) बर्तनों को इस्तेमाल करने से मना किया था, लेकिन बर्तन हराम या हलाल नहीं होता। हाँ, हर नशा लाने वाली वस्तु हराम है।

बाब {हर प्रकार के घड़े को प्रयोग करने की अनुमति है, लेकिन जिस मटके में नशा लाने वाला मसाला लगा हो उस को प्रयोग करना नाजाइज़ है।}

1275:- अ़ब्दुल्लह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुछ बर्तनों में नबीज़ बनाने से मना फ़रमा दिया तो सहाबा ने कहा कि सभी लोगों के पास वह बर्तन नहीं हैं जिन के इस्तेमाल करेन की इजाज़त है। इस पर आप ने पालिश किये हुये बर्तन को छोड़ कर सभी बर्तनों में नबीज़ बनाने की इजाज़त दे दी।

फ़ाइदाः- शराब के हराम होने के बाद आप ने शराब के बर्तनों को भी इस्तेमाल करने से मना कर दिया था। इस में यह हिक्मत थी कि लोग जब उन बर्तनों को देखेंगे जिन में शराब पीते थे तो कुढ़ेंगे और शराब की याद सताएगी। फिर जब लोगों का अक़ीदा ठोस हो गया और शराब को भुला दिया और अब किसी प्रकार की शंका बाक़ी न रही, तो उन बर्तनों को भी प्रयोग करने की अनुमति दे दी। अ़ब्दुल क़ैस के मन्डल को भी इन्ही चार-पाँच प्रकार के बर्तनों को इस्तेमाल करने से मना किया था, इस का कारण भी यही था। हाँ, उन बर्तनों का इस्तेमाल हर हाल में हराम है जिन में नबीज़, शराब बन जाये।

बाब {नबीज़ बना कर कितने समय तक पी जा सकती है?}

1276:- इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रात को खजूर भिगो देते फिर सुब्ह को उस का पानी पीते थे, फिर दूसरी रात को भी, फिर दूसरी सुब्ह को भी, फिर तीसरी रात को भी, फिर तीसरे दिन अ़स्र तक उसी पानी को पीते।

फ़ाइदाः- इब्ने अ़ब्बास ही की रिवायत में है कि आप के लिये अन्गूर रात में भिगों दिया जाता फिर आप उसे दिन भर पीते, दूसरे दिन भी पीते और तीसरे दिन शाम तक पीते। (मुस्लिम) इन्ही से एक और रिवायत है कि सोमवार की रात को चमड़े के मशक में खजूर भिगो देते जिसे सोमवार को दिन भर और मंगल वार को अ़स्र तक पीते (मुस्लिम) इस से मालूम हुआ कि तीन दिन तक उस में नशा नहीं आता है, इसलिये आप पीते थे। यह भी मालूम हुआ कि जब तक नशा न पैदा हो उसे रख कर पी सकते हैं और अगर तीन दिन से कम समय में नशा पैदा हो जाये तो उसे फेंक देना चाहिये। चुनान्चे कुद्दू के बर्तन में नबीज़ बना कर आप को इफ़तारी के लिये दिया गया तो उस से झाग उठ रहा था चुनान्चे आप ने उसे फ़ेंकवा दिया (इब्ने माजा-3409, अबू दावूद-3716)

1277:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये चमड़े के मशक में नबीज़ भिगोते तो उस में गाँठ लगा देते थे, उस में एक छेद भी था। उस में सुब्ह को भिगोते तो रात को पीते, और रात को भिगोते तो सुब्ह को पीते।

फ़ाइदा:– इस से भी स्पष्ट रिवायत इब्ने हज़न क़ुरैशी की है उन्होंने आइशा रज़ि॰ से नबीज़ के बारे में पूछा तो उन्होंने एक हब्शी लौंडी को बुलाया और कहा कि इस से पूछिये। तो उस ने बताया कि मैं रात में आप के लिये नबीज़ मशक में बनाती तो डाट लगा देती थी (यानी मुँह बन्द कर देती) फिर उसे लटका देती, और सुब्ह को उसी में से पीते थे।

नबीज़ भिगोने के बाद मुँह बन्द करने या न करने, या बाँधने का उद्देश्य संभवतः यह है कि बन्द करने से तेज़ी आ जाती है और खजूर जल्दी पानी में गल जाता है और नबीज़ जल्दी तैयार हो जाता है। और हदीस की रोशनी में ऐसा करने में कोई हरज नहीं है।

बाब {शराब से सिरका बनाने से संबन्धित मसाइल का बयान।}

1278:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शराब को सिरका बना लेने के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमाया: हर्गिज़ नहीं।

फ़ाइदा:– इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम लैस आदि के निकट शराब से सिरका बनाना जाइज़ है, लेकिन इस सहीह हदीस की रोशनी में इनका फ़तवा रद्द है। और सिर्का बनाना हराम है। वैसे भी एक हराम चीज़ की हालत को बदल कर हलाल बनाने के बाद उसे खाने-पीने को तेबीअत कैसे गवारा करेगी?

बाब शराब से दवा बनाना (और उस से उपचार करना) हराम है।}}

1279:– वाइल हज़रमी ने तारिक़ बिन सुवैद जोफ़ी से रिवायत किया कि उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शराब बनाने के बारे में पूछा तो आप ने मना कर दिया, या नापसन्द किया। उन्होंने कहा कि मैं केवल दवा के लिये बनाता हूँ। आप ने फ़रमाया: वह दवा नहीं है, बीमारी है।

फ़ाइदा:– कुछ उलमा ने लिखा है कि दवा के तौर पर शराब का खाना-पीना हराम है, लेकिन ऊपर से शरीर आदि पर लेप करना जैसा कि दर्द आदि पर लोग मलते हैं जाइज़ है। लेकिन हदीस से स्पष्ट है कि खाना-पीना, ऊपर मलना हर प्रकार से हराम है। आज कल बाज़ारों में अंग्रेज़ी टानिक बिकते हैं जिस में अलकोहल का प्रयोग होता है। जहाँ तक संभव हो, आवश्यक है कि इन से भी बचा जाये।

बाब {खाने-पीने के बर्तन को ढँकना अनिवार्य है।}

1280:- अबू हुमैद साअ़दी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने कहा कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पीने के लिये "नक़ीअ़" के स्थान से एक प्याला दूध का लाया जो ढाँका हुआ नहीं था इस पर आप ने फ़रमायाः उसे तुम ने ढाँका क्यों नहीं (अगर कुछ ढाँकने के लिये नहीं था तो) आड़ी-तिर्छी एक लकड़ी ही रख देते।

बाब {बर्तन को ढक दिया करो और मशक का मुँह बन्द कर दिया करो।}

1281:- जाबिर बिन अ़ब्दुल्लह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब रात हो जाये, या (आप ने यह फ़रमाया) जब तुम रात में दाख़िल हो जाओ तो तुम अपने बच्चों को (घर से बाहर) न निकलने दो, क्योंकि रात होते ही शैतान (गली-कूचों में) फैल जाते हैं। और जब रात का कुछ हिस्सा बीत जाये तो बच्चों को छोड़ दो और दर्वाज़े को बिस्मिल्लाह पढ़ कर बन्द कर दो, क्योंकि शैतान बन्द दर्वाज़े नहीं खोलता, और अपने मशकीज़ों (पानी के बर्तनों) का मुँह अल्लाह का नाम लेकर बाँध दो, इसी प्रकार अपने (खाने-पीने) के बर्तनों को भी अल्लाह का नाम लेकर ढक दिया करो (और अगर ढकने के लिये कुछ न मिले) तो चाहे आड़ी-तिर्छी लकड़ी ही रख दो (लेकिन कुछ न कुछ अवश्य ही रख दो, और (सोते समय) अपने चराग़ों को बुझा दो।

फ़ाइदाः- कुछ लोगों ने शैतान से मुराद साँप लिया है कि वह रात के समय ठन्डी हवा खाने के लिये बिलों से निकल पड़ते हैं। हदीस के ज़ाहिर से शैतान ही मुराद हैं जो रात होते ही फैल कर छोटे बच्चों को नुक़सान पहुँचाते हैं, उन पर सवार हो जाते हैं, उन का रास्ता भुला देते हैं।

बर्तन ढकने और मशक का मुँह बन्द कर देने में यह हिक्मत है कि उस में कीड़े-मकोड़े और धूल-मिट्टी नहीं गिरेगी। उस ज़माना में चर्बी से चराग़ जलाते थे और चूहा चर्बी बहुत खाता है इसलिये चराग़ की बत्ती को घसीट कर गिरा दे जिस से आग लग जायेगी। (बुख़ारी, मुस्लिम) आप ने यह भी फ़रमायाः घर में जलती हुयी आग न छोड़ों जब सोने लगो तो बुझा दो, क्योंकि यह आग तुम्हारी दुश्मन है-(मुस्लिम)

1282:- जाबिर बिन अ़ब्दुल्लह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः (रात के समय) पानी के मशक का मुँह बन्द कर दिया करो, खाने-पीने के बर्तन का मुँह ढक दिया करो, इसलिये कि साल में एक रात ऐसी आती है जिस में बबा उतरती है फिर वह वबा जो बर्तन ढका नहीं होता है उस में घुस जाती है।

फ़ाइदाः- वह वबा और बीमारी कौन सी है, किस प्रकार की होती है? अल्लाह ही बेहतर जाने। हमें तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फ़र्मान के अनुसार अ़मल

करना चाहिये। वैसे भी ढक कर रखने में फ़ाइदा ही फ़ाइदा है, मक्खी और ज़हरीले कीड़े-मकोड़े नहीं बैठेंगे, गर्द-गुबार, धूल-मिट्टी से सुरक्षित रहेगा। घर में रहने वाले जानवर चूहा, बिल्ली; छिपकली साँप-बिच्छू आदि जानवर जूठा कर के ज़हरीला नहीं करें सकेंगे।

बाब {शहद, नबीज़, दूध और पानी पीने का बयान।}

1283:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने अपने प्याले से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को शहद, नबीज़, दूध और पानी पिलाया।

1284:- बरा बिन आज़िब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (जब हिजरत कर के) मक्का से मदीना आये तो सुराक़ा बिन मालिक ने (रास्ता में) आप का पीछा किया तो आप ने उस के लिये बद्दुआ की, चुनान्चे उस का घोड़ा ज़मीन में धँस गया। वह कहने लगाः आप मेरे लिये दुआ कर दीजिये, मैं आप को किसी प्रकार का हानि नहीं पहुँचाऊँगा। चुनान्चे आप ने दुआ की (और उस का घोड़ा ज़मीन से निकल आया) फिर आप को प्यास लगी और राह में बकरियाँ चराने वाला एक चरवाहा मिला। अबू बक्र रज़ि॰ ने कहा कि मैं ने प्याला लेकर एक बकरी का दूध दुहा और आप के पास लेकर आया जिसे आप ने पी लिया और मैं खुश हो गया।

फ़ाइदा:- यह हदीस बहुत संक्षिप्त है। बुख़ारी शरीफ़ में हिजरत की यात्रा विस्तार से बयान है। यहाँ इस हदीस को ला कर यह साबित किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को दूध बहुत पसन्द था।

1285:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जिस रात नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बैतुल मुकद्दस की सैर कराई गयी तो उस मौके पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में दो पियाले पेश किये गये, एक में दूध था और दूसरे में शराब। आप ने उन दोनों को देख कर दूध वाला प्याला ले लिया। इस पर जिब्रील अ़लै॰ ने कहाः अल्लाह का शुक्र है जिस ने आप को फ़ितरत (दीन इस्लाम) की हिदायत की। अगर आप शराब का प्याला ले लेते तो आप की उम्मत गुमराह हो जाती।

फ़ाइदा:- यह घटना मेराज की रात की है। आप बैतुल्लाह शरीफ़ से बुराक़ द्वारा बैतुल मुक़द्दस गये वहाँ तमाम नबिय्यों की इमामत की, फिर वहीं से आकाश पर गये। उसी मौके पर आप को पीने के लिये दो प्याले पेश किये गये।

बाब {प्याले में (दूध आदि) पीने का बयान।}

1286:- सहल बिन सअ़द रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने अ़रब की एक महिला का ज़िक्र हुआ तो आप ने अबू उसैद के ज़रीआ़ उसे शादी का सन्देश भेजा। चुनान्चे उन्होंने उस महिला को आप का सन्देश दिया तो आयी और बनी साअ़दा के क़िले में ठहरी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वहाँ गये

और उस से मिले तो क्या देखा कि वह सर झुकाए बैठी है। आप ने उस से बात की तो उस ने कहाः मैं तुम से अल्लाह की पनाह माँगती हूँ। यह सुन कर आप ने फ़रमायाः तू ने मुझ से अपने को बचा लिया (यानी मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूँगा) इस पर लोगों ने उस से कहाः तुम्हें मालूम भी है यह कौन हैं? उस ने कहाः मैं नहीं जानती। कहा गया कि वह अल्लाह के रसूल थे जो तुम से निकाह के बारे में बात-चीत करने के लिये आये थे। यह सुन कर उस ने कहाः मैं तो बड़ी बदकि़स्मत ठहरी (जो इन्कार कर दिया)

सहल रज़ि॰ ने बयान किया कि आप वहाँ से वापस लौट आये और बनी सअ़ादा के पंचायत घर में बैठ गये और मुझ से कहा कि पानी पिलाओ। उन्होंने कहा कि फिर मैं ने अपना प्याला निकाल कर आप को पानी पिलाया। हाज़िम ने कहा कि सहल ने जब वह प्याला निकाल कर दिखाया तो हम लोगों ने भी (बकर्त के लिये) उस में मुँह लगा कर पिया। फिर उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने वह प्याला सहल से माँग लिया तो उन्होंने दे दिया।

फ़ाइदाः- इस में कोई सन्देह नहीं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वस्त्रों, जूतों, प्यालों, बालों, आदि से तर्बरुक हासिल करना जाइज़ है, इस में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं। लेकिन शर्त यह है कि उन के अस्ली होने में शुब्हा न हो। आजकल दिल्ली की शाही जामा मस्जिद में हर जुमेरात को जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बाल दिखाए जाते हैं, इसी प्रकार कश्मीर के हज़रत बल की मस्जिद में भी दिखाए जाते हैं, इन के अस्ली होने में सन्देह है, इसलिये उन से तर्बरुक हासिल करनें से बचना चाहिये। लोग कमाई करने और चढ़ावा वसूल करने, पेट पालने के लिये दूसरे के बालों को आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का बाल बता रहे हैं। तबर्रुक प्राप्त करना एक सीमा के अन्दर ही होना चाहिये, वर्ना वह शिर्क के दर्जे तक पहुँच जाता है।

जिस अभागी महिला ने शादी करने से इन्कार कर दिया था उस के नाम का पता न चल सका। किसी ने उमैमा, तो किसी ने अमीना बिन्त नोमान, या फ़ातिमा बिन्त ज़ह्हाक, या मुलैका बताया है (पैंगबरे अ़ालम-मौलाना मन्ज़र, पृष्ठ 801)

बाब {मशक को टेढ़ा कर के उस से मुँह लगा कर पीना मना है।}

1287:- अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पानी का बर्तन उलट कर उस के मुँह से मुँह लगा कर पानी पीने से मना फ़रमाया है। एक दूसरी रिवायत में है कि उलटने का अर्थ यह है कि बर्तन का मुँह नीचे कर के उस के मुँह से मुँह लगा कर पानी पिया जाये।

फ़ाइदाः- इस प्रकार पीने से बड़ा हानि है (1) पानी आवश्यक्ता से अधिक मुँह में चला जायेगा। (2) पानी के मुँह में अटकने का डर है जिस से जान भी जा सकती है। (3) पानी बाहर भी गिरेगा। सब से बड़ा डर इसीबात का है कि पानी मुँह में अटक जायेगा और जान चली जायेगी। आजकल सफ़र में पानी की बोतल लोग मुँह में लगा कर उलट

लेते हैं, हदीस की रोशनी में यह तरीक़ा सुन्नत के ख़िलाफ़ है। अक्सर देखा गया है कि मुँह में पानी अधिक चला जाने से खाँसी आ जाती है और मुँह का सारा पानी कुल्ली कर दीनी पड़ती है।

इमाम बुख़ारी रह॰ ने एक बाब बाँधा है "मुँह लगा कर पानी पीना जाइज़ है" फिर हदीस लाये हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "....... वर्ना हम मशक में मुँह लगा कर पी लेंगे" (5621) हाफ़िज़ इब्ने हज़र रह॰ ने लिखा है कि यह हदीस मन्सूख़ है। इब्ने शैबा की रिवायत में है कि इस प्रकार पीते समय एक व्यक्ति के मुँह में साँप चला गया, इसीलिये आप ने सख़्ती से मना फ़रमा दिया। चुनान्चे बुख़ारी की भी बाद की रिवायतों में मना का हुक्म है (5627, 28, 29)

बाब {सोने-चाँदी के बर्तन में खाना-पीना हराम है।}

1288:- **अ़ब्दुल्लाह बिन उकैम ने बयान किया कि हम हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि॰ के साथ मदाइन नगर में थे। उन्होंने पीने के लिये पानी माँगा तो एक किसान चाँदी के बर्तन में लेकर आया। तो उन्होंने उसे उस के ऊपर फेंक मारा, और कहाः आप लोगों को मालूम होना चाहिये कि मैं ने इस से पहले ही बता दिया था कि इस बर्तन में पानी मत लाना, क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि सोने-चाँदी के बर्तन में पानी न पियो और दीबाज व रेशम के कपड़े न पहनो। यह सब दुनिया में उन (काफ़िरों) के लिये हैं और तुम्हारे लिये आख़िरत में।**

1289:- **नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी उम्मे सलमा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो चाँदी के बर्तन में पीता है वह अपने पेट में जहन्नम की आग भरता है। और एक दूसरी रिवायत में है कि जो सोने-चाँदी के बर्तन में खाता-पीता है (वह अपने पेट में जहन्नम की आग भरता है)**

फ़ाइदाः- उम्मे सलमा और हुज़ैफ़ा रज़ि॰ की रिवायत बुख़ारी शरीफ़ में भी है (5633, 5634, 5632) सोने-चाँदी के बर्तन में खाना-पीना हराम है। इस में खाने-पीने से अभिमान पैदा होता है और यह दुनिया में काफ़िरों के लिये है। मदाइन, दिजला नदी के तट पर एक नगर था। ईरान के बादशाहों का कैपिटल (राजधानी) था जिसे सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ि॰ ने उमर फ़ारुक़ के शासन काल में फ़त्ह किया।

खाने-पीने के अतिरिक्त और प्रकार का प्रयोग जाइज़ है? इमाम शैकानी लिखते हैं कि आपने खाने-पीने से मना किया है, इस से साबित हुआ कि खाने-पीने को छोड़ कर दूसरे इस्तेमाल जाइज़ हैं। (नैलुल् औतार 1/122) अ़ल्लामा सन्आ़नी का भी यही फ़तवा है (सुबुलुस्सलाम) मालूम रहे कि सोने-चाँदी के बर्तन में महिला-पुरुष का खाना-पीना और केवल पुरुष का पहनना हराम है। यह तो सहीह अहादीस से साबित है (बुख़ारी-1239, 5635) और इस पर सभी का इत्तिफ़ाक़ है-ख़ालिद।

बाब {तुम्हारे पी लेने के बाद तुम्हारे दाँयें तरफ़ वाले का हक़ बनता है।}

1290:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मेरे घर तशरीफ़ लाये और पीने के लिये पानी माँगा तो हम ने बक्री का दूध दूह कर उस में अपने घर के कुँए का पानी मिला कर आप को दिया। उस समय अबू बक्र आप के बाएँ, उमर सामने और एक दीहती दाहिनी तरफ़ बैठा हुआ था। जब आप पी चुके तो उमर ने कहाः यह अबू बक्र बैठे हुये हैं। उन के कहने का अर्थ था कि उन्हें दे दिया जाये। लेकिन आप ने उस दीहाती को दिया और अबू बक्र व उमर को नहीं दिया और फ़रमायाः पहले दाँयें तरफ़ वालों का हक़ है, पहले दाँये तरफ़ वालों का हक़ है। अनस रज़ि॰ नें रिवायत बयान करते हुये कहाः यही सुन्नत है, यही सुन्नत है, यही सुन्नत है।

फ़ाइदा:- यह इस्लाम धर्म का नियम है कि हक़ के मामले में किसी का लिहाज़ नहीं किया जायेगा, चाहे वह अपना कितना ही निकट संबन्धी-मित्र और कितना ही बुज़ुर्ग और बड़े मतर्बे का क्यों न हो। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अबू बक्र व उमर को नज़र अन्दाज़ कर के जिस का हक़ बनता था उसे दिया। न्याय का यही तक़ाज़ा है। बुख़ारी कीं रिवायत में है कि आप के दायँ एक बच्चा बैठा था और बड़े-बूढ़ें बाँयें तरफ़। आप ने उस बच्चे से पूछाः क्या तुम अनुमति देते हो कि मैं पहले बड़े-बूढ़ों को दूँ? उस ने कहाः मैं आप का झूठा पहले पियूँगा। चुनान्चे आप ने पहले बच्चे को दिया। (2351, 2366, 2451) वह बच्चा इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ थे। मालूम हुआ कि बचा हुआ दाँयें तरफ़ वाले को दिया जाये। यह भी मालूम हुआ कि कोई वस्तु बाँटी जाये तो दाँये तरफ़ से बाँटी जाये।

बाब {छोटे से इजाज़त लेकर उस का हक़ बड़े को दिया जा सकता है।}

1291:- सहल बिन सअ़द रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास पीने के लिये कोई चीज़ लाई गयी तो आप ने उसे पिया। उस समय आप के दाँये तरफ़ एक बच्चा बैठा हुआ था और बड़े-बूढ़े बाएँ तरफ़ थे। आप ने बच्चे से पूछाः क्या तुम मुझे बड़ों को पहले देने की अनुमति देते हो? उस ने कहाः नहीं, अल्लाह की क़सम! मैं अपना हिस्सा किसी और को नहीं देने का। यह सुन कर आप ने बचा हुआ पानी उस बच्चे को दिया।

फ़ाइदा:- मालूम हुआ कि हक़दार से पूछ लेने में कोई हरज नहीं। अगर वह अपनी खुशी से अनुमति दे दे तो उस का हक़ दूसरे को दिया जा सकता है। और यह भी मालूम हुआ कि अगर अनुमति न दे तो इस पर नाराज़ भी नहीं होना चाहिये।

बाब {पानी पीते समय बर्तन में साँस लेना मना है।}

1292:– अबू क़तादा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बर्तन के अन्दर ही (पानी पीते समय) साँस लेने से मना फ़रमाया है।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पानी एक साँस में नहीं पीते थे।}

1293:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तीन साँस में पानी पीते और फ़रमाते कि ऐसा करने से प्यास अच्छी तरह बुझ जाती है और तबीअ़त सैर हो जाती है। अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं भी तीन साँस में पानी पीता हूँ।

फ़ाइदाः– वेदों, हकीमों और डाक्टरों का भी यही कहना है कि एक साँस में पीना स्वास्थ के लिये बड़ा हानिकारक है। इस प्रकार केवल जानवर पीते हैं कि पीते जाते हैं और उसी में साँस भी लेते जाते हैं। तबरानी की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बिस्मिल्लाह पढ़ कर पीना आरंभ करते, दर्मियान में तीन मर्तबा साँस लेते और अन्त में अल्हम्दु लिल्लाह पढ़ते (तबरानी) अबू दावूद की रिवातय में है कि पानी में फूँकने से भी मना फ़रमाया है (3728) इब्ने माजा (3429)

बाब {खड़े–खड़े पानी पीना मना है।}

1294:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में से कोई भी खड़े–खड़े पानी न पिये, अगर भूले से पी भी ले तो क़ै कर दे।

फ़ाइदाः– बुख़ारी में इस के ख़िलाफ़ यह है कि अ़ली रज़ि॰ ने खड़े–खड़े पिया और कहा कि लोग खड़े–खड़े पीने को मक्रुह कहते हैं हालाँकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इसी तरह पाते देखा है (5615) बुख़ारी ही की दूसरी रिवायत में है कि अ़ली रज़ि॰ ने वुज़ू का बचा पानी खड़े होकर पिया और कहा कि लोग खड़े होकर पीना बुरा समझते हैं, हालाँकि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बचा हुआ पानी इसी प्रकार पीते देखा है (5616) हाफ़िज़ इब्ने हजर लिखते हैं कि जिन हदीसों से मिनाही साबित है उस से मुराद पीना मक्रुह है (न कि नाजाइज़) क्योंकि खड़े होकर पीने की भी हदीसें मौजूद हैं। बहरहाल किसी वजह से खड़े होकर पीना दुरुस्त है जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने किसी वजह से खड़े होकर पेशाब किया। मालूम हुआ कि बिला वजह खड़े होकर पेशाब करना बुरा है इसी प्रकार बिला वजह खड़े होकर पीना भी बुरा है। और खड़े होकर खाना–पीना शान और अभिमान की वजह से होतो यह नाजाइज़ है।

बाब {ज़मज़म का पानी खड़े होकर पीने की इजाज़त है।}

1295:– इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि आप ने काबा

के पास मुझ से पानी माँगा तो मैं ने पिलाया और आप ने खड़े होकर पिया।

फ़ाइदाः- आप खड़े थे तो खड़े होकर पिया। मालूम हुआ कि जो खड़ा है वह खड़े-खड़े ही पीले और जो बैठा है वह बैठे-बैठे ही पी ले। ज़मज़म पीते समय जो बैठे होते हैं, वह खड़े हो जाते हैं, और खड़े होकर पीते हैं और इस निय्यत से खड़े होकर पीते हैं कि खड़े होकर पीना ही सुन्नत है, यह तरीक़ा ग़लत है। जिस प्रकार कोई हमेशा खड़े होकर पेशाब करे और यह निय्यत हो कि खड़े ही होकर पेशाब करना सुन्नत है।

नोटः- हदीस 1288, 1289 में सोने-चाँदी के बर्तन में खाने-पीने और पुरुषों के पहनने से मना किया गया है, लेकिन ज़रुरत पड़ने पर इसे दूसरे कामों में इस्तेमाल करना जाइज़ है, जैसे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने लकड़ी के प्याला को जोड़ने के लिये चाँदी का तार इस्तेमाल किया (3109)उस प्याला की मुँडेर पर लोहे का बन्द जड़ा था ताकि उस का किनारा टूटने न पाए। अनस बिन मालिक ने कहा कि उस पियाले का कनारा सोने-चाँदी के बन्द से घेर दें, लेकिन अबू तल्हा ने कहाः नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जैसा बनाया था वैसे ही रहने दो, उस में तबदीली न करो (बुख़ारी-5638) सोने का प्रयोग इस प्रकार के कामों में जाइज़ है तभी तो अनस रज़ि॰ ने सोचा था।

नोटः- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने खाने-पीने के तअ़ल्लुक़ से और भी बहुत सारी बातों की शिक्षा दी है जिन पर हम मुसलमानों का अ़मल होना चाहिये। ★आप ने फ़रमायाः बाँयें हाथ से मत खाओ, क्योंकि शैतान बाँयें हाथ से खाता है। (मुस्लिम) ★नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नेफ़रमायाः जब आदमी अपने घर में दाख़िल होते समय अल्लाह का नाम लेकर नहीं दाख़िल होता तो शैतान कहता हैः इस घर में मेरे रहने का ठिकाना हो गया। और जब कोई अल्लाह का नाम लेकर नहीं खाता है तो शैतान कहता हैः लो, मेरे खाने का भी इन्तिज़ाम हो गया। (मुस्लिम) ★आप ने फ़रमायाः खाना बीच बर्तन से न खाओ, किनारे से खाओ क्योंकि बीच में बर्कत नाज़िल होती है, इसलिये किनारे से खाओ ताकि बर्कत नाज़िल होने वाला हिस्सा अन्त तक बाक़ी रहे। (बुख़ारी) ★नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने खाना खाने के बाद पलेट और उँगिलयाँ चाट लेने का हुक्म दिया और फ़रमायाः नहीं मालूम कि बर्कत किस में है। (मुस्लिम) ★आप ने फ़रमायाः अगर लुक़्मा ज़मीन पर गिर जाये तो उसे उठा कर खा लो और शैतान के लिये न छोड़ो (मुस्लिम) ★आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब कई लोग खा रहे हों तो खाना अपने सामने से खाओ (मुस्लिम)

ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी
28.1.06, शनिवार

❀ ❀ ❀

किताबुल अत्‌अि़-मति
(खाने के मसाइल का बयान)

बाब {खाने पर बिस्मिल्लाह पढ़ने का बयान।}

1296:– हुज़ैफ़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ खाना खाने बैठते तो जब तक आप खाना न शुरु करते हम लोग खाने के लिये हाथ न बढ़ाते। इसी बीच कि हम लोगों के सामने खाना रखा हुआ था कि इतने में एक लड़की दौड़ती हुयी आयी जैसे उसे कोई दौड़ा रहा हो, उस ने आ कर खाने में हाथ डालना चाहा, लेकिन आप ने उसे पकड़ लिया। फिर थोड़ी देर बाद एक दीहाती भी दौड़ा हुआ आया तो आप ने उस का भी हाथ पकड़ लिया, फिर फ़रमायाः शैतान का उसी खाने पर बस चलता है जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। इसीलिये वह एक लड़की को लाया चुनान्चे मैंने उस का हाथ पकड़ लिया, इसी प्रकार इस दीहाती को भी लाया तो मैं ने इसे भी रोक दिया। अल्लाह की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है इस समय शैतान का हाथ उस लड़की के हाथ के साथ मेरे हाथ में है।

एक दूसरी रिवायत में है कि आप ने बिस्मिल्लाह कह कर खाना आरंभ कर दिया।

1297:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः जब कोई व्यक्ति घर में दाख़िल होता है और घुसते समय और खाना खाते समय बिस्मिल्लाह कह लेता है तो शैतान (अपने चेलों से) कहता हैः इस घर में न रहने का ठिकाना है और न ही खाने का। और जब घर में दाख़िल होते समय अल्लाह का नाम नहीं लिया जाता तो वह कहता हैः इस घर में रहने का ठिकाना मिल गया। और जब खाना खाते समय अल्लाह का नाम नहीं लेता तो वह कहता हैः लो, खाने का भी इन्तिज़ाम हो गया।

फ़ाइदा:– मालूम हुआ कि घर में दाख़िल होते समय और खाना खाते समय अल्लाह का नाम लेना चाहिये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब घर में दाख़िल होते तो पढ़तेः **"बिस्मिल्लाहि व-लज्ना वबिस्मिल्लाहि-ख़-रज्ना व-अ़ला रब्बिना त-वक्कल्ना"** (अबू दावूद) और जब खाना आरंभ करते तो पढ़तेः **"बिस्मिल्लाहि"** (अबू दावूद, तिर्मिज़ी) अगर कोई भूल जाये और खाना खाने के दर्मियान याद आये तो यह पढ़ेः **"बिस्मिल्लाहि**

अव्वलिही व आख़िरिही" (अबू दावूद)

बाब {दाँयें हाथ से खाना खायें।}

1298:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब तुम में से कोई खाए तो दायें हाथ से खाए, और पिये तो भी दाँयें हाथ से पिये, क्योंकि शैतान बायें हाथ से खाता और बायें हाथ से पीता है।

1299:– अयास बिन सलमा ने बयान किया कि मेरे पिता जी (सलमा) ने बयान कियाः नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास एक व्यक्ति बायें हाथ से खा रहा था तो आप ने उस से फ़रमायाः अपने दाँयें हाथ से खा। उस ने कहाः मेरे से यह नहीं हो सकता (चूँकि उस ने अभिमान से कहा था इसलिये) आप ने फ़रमायाः अल्लाह करे तुझ से न हो सके। चुनान्चे वह अपने दायें हाथ को मुँह तक न ले जा सका।

फ़ाइदाः– केवल खाने ही के लिये दाँये हाथ के प्रयोग का आदेश नहीं है, बल्कि हर अच्छा कार्य करने के लिये है। आइशा रज़ि॰ ने बयान किया कि जहाँ तक संभव होता नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पवित्रता (पाकी) प्राप्त करने में, जूता पहनने और कंघी करने तक में दाहिनी तरफ़ से आरंभ करते (बुख़ारी–5380, 168) एक रिवायत में तो यहाँ तक है कि न बायें हाथ से किसी को दो और न बाँयें हाथ से किसी से लो (मुस्लिम शरीफ़–इब्ने उमर)

बाब {अपने सामने से खाना खाना चाहिये।}

1300:– उमर बिन अबू सलमा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पर्वरिश में था और खाते समय पूरे प्याले में हाथ घुमा कर खाता था तो आप ने फ़रमायाः बेटे! अल्लाह का नाम लेकर खाओ, दाहिने हाथ से खाओ और जो नज़दीक हो उसे खाओ।

फ़ाइदाः– नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मिलजुल कर खाते समय खाने–पीने का सलीक़ा सिखाया है। अगर अकेले हैं तो फिर हरज नहीं। एक दर्ज़ी ने आप की दावत की तो लौकी की सब्ज़ी पकवाई। चुनान्चे आप ने पूरे प्याले में ढूढँ–ढूँढ़ कर उसे खाया। (बुख़ारी–5379–अनस बिन मालिक)

इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "खाने के बीच वाले हिस्से में बर्कत नाज़िल होती है, इसलिये किनारे से खाओ, बीच से न खाओ" (तिर्मिज़ी–1805, इब्ने माजा–3277, इरवाउल् ग़लील–1980–रिवायत हसन है) "ऊपर वाले हिस्से से न खाओ, क्योंकि उस में बर्कत डाली जाती है" (अबू दावूद–3733, इब्ने माजा–3263)

बाब {तीन उंगलियों से खाना चाहिये।}

1301:– क–अ़ब बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तीन उंगलियों से खाते थे और हाथ पोछने से पहले उन्हें चाट लेते थे।

बाब {जब खाना खा लो तो अपना हाथ स्वँय चाटो, या दूसरे को चटाओ।}

1302:– इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब तुम खाना खा चुको तो उस समय तक हाथ न पोंछो जब तक स्वँय उसे चाट न लो, या किसी से चटा न लो।

बाब {उँगलियों और बर्तन को साफ़ करने (चाटने) का बयान।}

1303:– जाबिर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उँगलियों और बर्तन को चाट लेने का हुक्म दिया और फ़रमायाः तुम्हें नहीं मालूम कि बर्कत किस दाने में है।

फ़ाइदा:– रोज़ी के बेकार और बर्बाद न करने की कितनी ताकीद है आप अनुमान लगा सकते हैं। और हदीस के विपरीत मुसलमान शादी–विवाह में कितना बर्बाद करते हैं यह भी आप देख सकते हैं। उँगली चटाने की परंपरा आज भी दीहातों में है। नानी अपने नवासे को, दादी अपने पोते को बुला कर चटा देती हैं। इस से प्यार–मुहब्बत भी बढ़ती है।

बाब {लुक़्मा अगर गिर जाये तो उसे साफ़ कर के खा लेना चाहिये।}

1304:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः शैतान तुम में से हर एक के पास उस के हर काम के समय मौजूद रहता है, यहाँ तक कि खाने के समय भी मौजूद रहता है। इसलिये अगर किसी का लुक़्मा ज़मीन पर गिर जाये तो उस से मैल को साफ़ कर के खा लो और शैतान के लिये न छोड़ो। और जब खा चुको तो उगंलियाँ चाट लिया करो, क्योंकि नहीं मालूम कि ब्रर्कत किस दाने में है।

फ़ाइदा:– उँगली चाटने के संबन्ध में मुस्लिम में 14 रिवायतें आयी हैं। शैतान बग़ल में रहता है, धक्का लगा देता होगा कि गिर जाने के बाद मुझे खाने को मिलेगा। अल्लाह बेहतर जाने।

बाब {खाना खा लेने और पानी पी लेने के बाद "अल्हम्दु लिल्लाह" कहे।}

1305:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक बन्दे से राज़ी हो जाता है जब खाना खा कर या पानी पी कर **"अल्हम्दु लिल्लाहि"** पढ़ता है।

फ़ाइदा:– खाना ख़ाने के बाद यह दुआ़ भी पढ़नी चाहियेः

अल्-हम्द् लिल्लाहिल्लज़ी अत्-अ़-मनी हाज़ा व-र-ज़-क़नीहि मिन् ग़ैरि हौलिम्मिन्ह वला कुव्वतिन्
(अबू दावूद, तिर्मिज़ी)
अल्-हम्दु लिल्लाहि हम्-दन् कसी-रन् तय्यि-बन् मुबा-र-कलन् फ़ीहि ग़ै-र मुक्फ़िय्यिन् वला मु-वद्दअ़िन् वला मुस्-तग्-नन् अ़न्हु रब्बना

बाब {खाने-पीने की नेमतों के बारे में प्रश्न किया जायेगा।}

1306:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक रात, या दिन को बाहर निकले तो राह में अबू बक्र और उमर भी मिल गये। आप ने पूछाः इस समय तुम दोनों अपने घरों से क्यों निकले? उन्होंने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! भूख सता रही थी। आप ने फ़रमायाः उस अल्लाह की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है मुझे भी भूख सता रही थी इसीलिये निकल पड़ा (ख़ैर, कोई बात नहीं) चलो, चुनान्चे वह दोनों भी आप के साथ हो गये। आप एक अन्सारी के दर्वाज़े पर पहुँचे तो वह उस समय घर में नहीं थे। उन की पत्नी ने देखा तो उन्होंने आप का स्वागत किया। आप ने पूछाः तुम्हारे पति कहाँ गये? उन्होंने कहाः मीठा पानी लाने गये हैं। इतने में वह सहाबी भी आ गये। उन्होंने देख कर कहाः ऐ अल्लाह! तेरा शुक्र है, आज के दिन किसी के घर ऐसे महान मेहमान नहीं हैं जैसे मेरे घर पधारे हैं। फिर जा कर खजूर का एक गुच्छा तोड़ लाये जिसमें कच्ची-पक्की और सूखी सभी प्रकार की खजूरें थीं, उन्हें आप के सामने खाने के लिये पेश किया। फिर उन्होंने छुरी संभाली तो आप ने फ़रमायाः देखना, दुधारी बक्री मत ज़ब्ह करना। फिर उन्होंने एक बक्री ज़ब्ह की और सभी ने मिल कर खूब डट कर उस का माँस खाया, खजूर खाई और पानी पिया। जब सब लोग खा चुके तो आप ने अबू बक्र और उमर से फ़रमायाः उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है क़ियामत के दिन तुम से इस नेमत के बारे में सवाल होगा कि तुम भूख की हालत में (खाने के लिये) निकले थे और खा पी कर वापस लौट रहे हो।

फ़ाइदाः- 'नेमत' यानी रोज़ी (आजीविका) जो अल्लाह पाक ने दी है उस के बारे में प्रश्न होगा कि उसे खा कर उस रोज़ी देने वाले की इबादत भी की या नहीं, उस का शुक्र अदा किया या नहीं, उसे भूखों को खिलाया पिलाया या नहीं, ग़रीबों-मुहताजों की सहायता की या नहीं, जो दिया था उसे प्रयोग किया या कंजूसों की तरह एकत्र ही करते रहे। इन समस्त बातों के बारे में अल्लाह पाक क़ियामत के दिन अवश्य पूछेगा।

उन नेक सहाबी का नाम जिन्होंने मेहमानी की थी "अबुल हैसम बिन तैहान" था। पत्नी का नाम मालूम न हो सका। इस हदीस से कई मस्अले मालूम हुये। यह कि जो धनवान हो और खिलाने-पिलाने का शौक़ हो, उसके पास बिन बुलाए जाना चाहिये। अगर

पत्नी को भरोसा है तो बिना पति की अनुमति के भी मेहमान को ठेहरा सकती है। मेहमान को दर्वाज़े पर देख कर मुँह नहीं बनाना चाहिये, बल्कि प्रसन्नता प्रकट करनी चाहिये। और जो कुछ मौजूद हो उसे पेश करने में बख़ीली और कंजूसी नहीं करनी चाहिये।

बाब {पड़ोसी की दावत को कुबूल करना अनिवार्य है।}

1307:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का एक पड़ोसी जो मुल्क फ़ारस का रहने वाला था, बहुत अच्छा शूबा (सोप) बनाता था। चुनान्चे उस ने एक मर्तबा शूबा बनाया और आप को बुलाने के लिये आया तो आप ने पूछाः क्या आ़इशा की भी दावत है? उस ने कहाः नहीं। आप ने फ़रमायाः तो फिर मैं नहीं आऊँगा। वह फिर पुनः बुलाने आया तो आप ने फिर पूछाः क्या आ़इशा की भी दावत है? उस ने कहाः नहीं। आप ने फिर फ़रमायाः तो फिर मैं नहीं आता। चुनान्चे वह तीसरी मर्तबा बुलाने आया तो आप ने फिर पूछाः क्या आ़इशा की भी दावत है? वह बोलाः हाँ। फिर दोनों आगे-पीछे रवाना हुये और उस के घर गये (और दावत खाई)

फ़ाइदाः– उस ने पहले आप को दावत नहीं दी थी और न ही आप ने कुबूल की थी, इस लिये बुलाने पर आप को इख़्तियार था कि चाहे अकेले जायें, या दो की शर्त लगाएँ। चूँकि आ़इशा रज़ि॰ भी भूखी थीं इसलिये आप ने यह उचित न जाना कि मैं खा कर भूख मिटा लूँ और पत्नी भूखी रहे। इस हदीस से इमाम नववी रह॰ ने बहुत से मस्अले बयान किये हैं, यहाँ उन्हें बयान करने की गुन्जाइश नहीं।

बाब {अगर किसी एक को खाने के लिये बुलाया जाये और उस के साथ एक और भी हो ले (तो उसे कभी खाने की इजाज़त दे दे।}

1308:– अबू मस्ऊद अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक अन्सारी जिन का नाम अबू शुऐब था उन के पास एक गुलाम था जो माँस बेचता था। उन अन्सारी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा तो आप के चेहरे से मालूम हुआ कि भूखे हैं, चुनान्चे उन्होंने अपने गुलाम से कहा कि पाँच आदमियों का खाना तय्यार करो। मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को दावत देने जा रहा हूँ, आप भी उन पाँचों में एक होंगे। जब खाना तय्यार हो गया तो उन चारों के साथ आप को भी खाने के लिये बुलाया तो आप के साथ एक और भी सहाबी तय्यार हो गये। जब आप उन के घर पर पहुँचे तो फ़रमायाः यह भी मेरे पीछे-पीछे चले आयें हैं, अगर इन्हें भी शामिल कर लें तो ठीक, वर्ना लौट जोयं। उन्हेंाने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! ऐसी कोई बात नहीं, मैं उन्हें भी शामिल होने की इजाज़त देता हूँ।

फ़ाइदाः– इमाम बुख़ारी रह॰ ने इसी एक हदीस से यह साबित किया है (1) माँस का बेचना और यह पेशा अपनाना जाइज़ है (2081) (2) कोई वयक्ति अपनी चीज़ इस्तेमाल

करने की इजाज़त दे तो उस के लिये जाइज़ है (2456) (3) दावत में खाना अच्छा पकवाना चाहियें (5434) चुनान्चे सहाबी ने गोश्त पकवाया। (4) अगर कोई बिन बुलाए चला जाये तो घर वाले से अनुमति ले (5461) अगर इजाज़त दे तो ठीक, वर्ना वापस हो जाये। वह सहाबी निःसंदेह भूखे थे और आप को विश्वास भी था कि उन को बुरा नहीं लगेगा, इसीलिये आप साथ ले गये। आज भी अगर ऐसी नौबत आये तो दावत देने वाले की पोज़ीशन को अच्छी तरह जाँच लेना अनिवार्य है, वर्ना साथ ले जाना दुरुस्त नहीं।

बाब {मेहमान के साथ हमर्ददी करनी चाहिये।}

1309:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर कहने लगाः मैं बहुत परेशान हाल हूँ (खाने-पीने की बड़ी तक्लीफ़ है) चुनान्चे आप ने उसे अपनी किसी पत्नी के पास भेज दिया (ताकि वह उसे कुछ दे दें) लेकिन उन्होंने कहाः उस अल्लाह की क़सम! जिस ने आप को हक़ देकर भेजा है मेरे पास पानी छोड़ बाक़ी कुछ भी नहीं है। फिर आप ने दूसरी पत्नी के पास भेजा तो उन्होंने भी वही उत्तर दिया। यहाँ तक कि सभी पत्नियों ने यही उत्तर दिया कि उस अल्लाह की क़सम! जिस ने आप को हक़ के साथ भेजा है हमारे पास पानी के अ़लावा और कुछ भी नहीं है।

फिर आप ने फ़रमायाः जो भी आज रात इस व्यक्ति की मेहमानी करेगा, अल्लाह उस पर रहम फ़रमाएगा। यह सुन कर एक अन्सारी खड़े हुये और कहने लगेः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मैं उन की मेहमानी करूँगा। फिर उन्होंने अपने घर जा कर पत्नी से पूछाः कुछ खाने को हैं? उस ने कहाः कुछ नहीं, अल्बत्ता यह बच्चों का खाना (थोड़ा सा) है। इस पर अन्सारी ने कहाः बच्चों से कोई बहाना कर दो (कि कल खाना) और जब मेहमान अन्दर आ जाये तो दिया बुझा देना और मैं वहीं बैठा रहूँगा, इस प्रकार वह समझेगा कि मैं भी खा रहा हूँ (और अँधेरे में उसे कुछ पता न चल सकेगा) चुनान्चे वह बैठे रहे और उस ने खाना खाया। सुबह को जब सहाबी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास गये तो आप ने फ़रमायाः जो कुछ तुम ने रात में मेहमान की ख़ातिर किया उस पर अल्लाह पाक बहुत प्रसन्न हुआ।

फ़ाइदाः– अपने और अपने बच्चों पर मेहमान को तर्जीह देना यह बड़े बुज़ुर्गों का काम है ऐसे लोगों के बारे में कुरआन पाक की आयत नाज़िल हुयी है **"दूसरों को अपने ऊपर तर्जीह देते हैं अर्गचे स्वँय को उस की आवश्यक्ता हो"** (सूरः हर्श-9) यहाँ बच्चों पर मेहमान को उसी समय तर्जीह दिया जा सकता है जब बच्चों को भूख से कोई हानि न पहुँचे, वर्ना बच्चों को पहले खिलाना अनिवार्य है। मेहमान की सेवा में कोई कोर-कसर बाक़ी न छोड़ना, उन की ख़ातिर स्वँय हर प्रकार की कठिनाई को सहन करना यह बड़े ही सवाब का काम हैं, इस हदीस से यही स्पष्ट होता है।

बाब {दो आदमियों का खाना तीन के लिये काफ़ी होता है।}

1310:— अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दो का खाना तीन के लिये और तीन का चार के लिये, काफ़ी होता है।

1311:— जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि एक आदमी का खाना दो के लिये काफ़ी है, और दो का खाना चार के लिये, और चार का आठ के लिये काफ़ी है।

फ़ाइदाः— अगर आदमी के अन्दर लालच और हिंस व डाह मौजूद है तो चाहे जितना खा ले उस का मन भूखा ही रहता है। मन भरने से पेट भरता है चाहे थोड़ा खाए या अधिक। चूँकि एक मुसलमान के अन्दर अल्लाह पर भरोसा होता है वह मुहब्बत और हमर्ददी को अपनी भूख पर तर्जीह देता है और भूखे को अपने साथ ख़ाने पर बुला लेता है, इसलिये चाहे वह कम खाए या अधिक, उस का पेट भर जाता है और अल्लाह पाक उस की निय्यत के अनुसार उस में बर्कत भी देता है।

नबी क़रीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः इकट्ठे खाना खाया करो और अल्लाह का नाम लेकर खाया करो, इकट्ठा बैठ कर खाने से अल्लाह पाक उस खाने में बर्कत नाज़िल कर देता है (इब्ने माजा–3286, अबू दावूद–3764)

बाब {मोमिन एक आँत में खाता है और काफ़िर सात आँतों में।}

1312:— जाबिर और इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मोमिन एक आँत में खाता है और काफ़िर सात आँत में।

1313:— अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास एक काफ़िर मेहमान आया तो आप ने उस की मेहमानी की। आप ने उस के लिये एक बक्री का दूध दूहने का हुक्म दिया जिसे वह पी गया, फिर दूसरी बक्री को दूहा तो वह भी पी गया, फिर तीसरी बक्री का दूहा तो उसे भी पी गया, यहाँ तक कि सात बकरियों का दूध पी गया। फिर दूसरे दिन सुब्ह को मुसलमान हो गया तो आप ने फिर उसे एक बक्री का दूध पिलाया जिसे वह पी गया, फिर दूसरी बक्री का दूह कर दिया तो वह उसे पूरा न पी सका, तब आप ने फ़रमायाः मोमिन एक आँत में पीता है और काफ़िर सात आँतों में।

फ़ाइदाः— जैसा कि ऊपर के फ़ाइदा में इशारा किया कि पेट भरने और न भरने का संबन्ध हिंस, लालच व और मन से है। एक कुत्ता मुर्दार जानवर के पूरे शव को नहीं खा सकता, लेकिन लालच और हिर्स की वजह से वह दूसरे कुत्ते को नहीं खाने देता है। यही हाल काफ़िर का भी है। उस के अन्दर सात बीमारियाँ होती हैं (1) हिंस (2) लालच (3) हसद (4) मोटापा (5) शहवत (6) बुरी निय्यत (7) हर प्रकार की बुराई। और यही

बुराइयाँ उस का पेट नहीं भरने देतीं और वह ठूँसता चला जाता है। वह काफ़िर व्यक्ति कौन था? कुछ उलमा ने सुमामा बिन उसाल को बताया है और कुछ ने "जहजाह ग़िफ़ारी" या "नज़रा बिन अबू नज़रा ग़िफ़ारी" बताया है।

बाब {कद्दू (लौकी) खाना सुन्नत है।}

1314:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दावत की तो मैं भी आप के साथ हो गया। दावत में आप के सामने शूर्बा पेश किया गया जिस में कद्दू भी था, चुनान्चे आप ने मज़े ले लेकर उसे खाना शुरु किया। जब आप को इस प्रकार खाते देखा तो मैं भी कद्दू को निकाल कर आप को देने लगा, लेकिन मैं नहीं खाता था। अनस बिन मालिक ने कहा कि उसी दिन से मैं भी कद्दू खाना पसन्द करने लगा।

फ़ाइदा:– कुछ लोग कद्दू को नापसन्द करते हैं लेकिन इस हदीस की रोशनी में भले ही न खाएँ लेकिन सुन्नत जानना ईमान का तक़ाज़ा है।

बाब {सिर्का अच्छा सालन है।}

1315:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि (एक मर्तबा) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मेरा हाथ पकड़ कर अपने घर ले गये तो आप के सामने रोटी के चन्द टुकड़े पेश किये गये। आप ने पूछा: सालन नहीं है? लोगों ने कहा: सालन तो नहीं है, हाँ सिर्का है। आप ने फ़रमाया: सिर्का तो अच्छा सालन है। जाबिर रज़ि॰ ने बयान किया कि जिस दिन से मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है उस दिन से मुझे भी सिर्का बहुत भाने लगा। तल्हा रज़ि॰ ने भी बयाम किया कि जब से मैं ने यह हदीस जाबिर से सुनी है उस दिन से मुझे भी सिर्का बहुत भाने लगा।

फ़ाइदा:– 'सिर्का' बहुत प्रसिद्व सालन है जो अचार के स्थान पर प्रयोग होता है, इस से सभी लोग परिचित हैं और प्रयोग में लाते हैं इस का स्वाद खट्टा होता है।

मुस्लिम ही की एक दूसरी रिवायत में है कि आप मेरा हाथ पकड़ कर अपनी किसी पत्नी के घर में ले गये तो तीन रोटियाँ पेश की गयीं और छाल का दस्तर खान बिछाया गया। आप ने एक रोटी मुझे दे दी और एक स्वँय ले ली। तीसरी को तोड़ कर आधी मुझे दे दी और आधी आप ने ले ली, फिर पूछा: कुछ सालन है?.......... (मुस्लिम)

बाब {खजूर खाने और उस की गुठलियों को उँगलियों के दर्मियान रख कर फेंकने का बयान।}

1316:– अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मेरे घर तशरीफ़ लाये तो मैं ने आप के सामने खाना पेश किया और "वतबा" भी। चुनान्चे आप ने खाया। फिर छुंवारा पेश किया गया तो आप उसे खाते

जाते और उस की गुठलियाँ अपनी शहादत की उँगली और बीच वाली उँगली के दर्मियान रख कर फेकँते जाते। हदीस के रावी शोबा ने बयान किया कि अल्लाह ने चाहा तो मैं ने जो हदीस बयान की है कि आप गुठलियों को दो उँगलियों के बीच में रख कर फेंकते थे। फिर पीने के लिये पानी पेश किया और आप ने पिया, फिर बचा हुआ पानी अपने दायें तरफ़ बैठे व्यक्ति को दे दिया (फिर जब आप चलने कि लिये तय्यार हुये तो) मेरे पिता जी (बुस्र) ने आप की सवारी की लगाम थाम ली और अनुरोध किया कि हमारे लिये दुआ फ़रमा दीजिये तो आप ने फ़रमायाः

अल्लाहुम्म बारिक् लहुम् फ़ीमा र-ज़क्-तहुम् वग़्फ़िर् लहुम् वर्-हम्हुम्
(ऐ मेरे मौला! इन की रोज़ी में बर्कत दे, इन को बख़्श दे और इन पर रहम फ़रमा)

फ़ाइदा:– इस हदीस में "वतबा" का शब्द आया है। अ़रब में खजूर, पनीर और घी आदि मिला कर एक प्रकार का खाना तय्यार किया जाता था जिस का नाम "बतबा" था।

बाब {उकड़ू बैठ कर खजूर खाने का बयान।}

1317:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास कुछ खजूरें आयीं तो उसे बाँटने लगे और इस प्रकार बैठे हुये थे जैसे कोई उकड़ू बैठता है और आप उस में से जल्दी-जल्दी उठा कर खा भी रहे थे। एक दूसरी रिवायत में है कि आप 'इक्आ़' (उकड़ू) बैठ कर खजूर खा रहे थे।

फ़ाइदा:– 'इक्आ़' इस प्रकार बैठना कि चूतड़ ज़मीन से लग जाये और पैर की दोनों पिंडलियाँ खड़ी रखे। इस प्रकार के बैठने को क्या कहा जायेगा? उकड़ू में चूतड़ ज़मीन पर नहीं लगता है। बहरहाल, आप को किसी दूसरे काम की जल्दी थी इसलिये जल्दी-जल्दी खा रहे थे।

बाब {जिस घर में खजूर न हो उस घर वाले भूखे हैं।}

1318:– आ़इशा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस घर में खजूर न हो (तो यह समझो) उस घर वाले भूखे हैं। आप ने दो बार, अथवा तीन बार यही फ़रमाया।

बाब {एक साथ दो-दो खजूरें उठा कर खाना मना है।}

1319:– जबला बिन सुहैम ने बयान किया कि इब्ने जुबैर रज़ि॰ हमें खजूर खिलाते थे, यह उस समय की बात है जब खाने-पीने की कमी थी (और सूखा पड़ा हुआ था) चुनान्चे जब हम लोग खाने बैठते तो वह आ कर कहतेः एक साथ दो खजूरें लेकर मत ख़ाओ, क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने साथी से अनुमति लिये बिना इस

प्रकार खाने से मना किया है। हदीस के रावी इमाम शोबा ने कहा कि मेरे ख़याल से "अपने साथी से अनुमति ले लो" यह वाक्य इब्ने उमर का है। (हदीस नहीं है)

फ़ाइदाः– एक साथ दो आदमी बैठ कर खा रहे हैं, वह एक-एक खा रहा है और आप दो-दो खा रहे हैं। इस प्रकार वह दस खायेगा तो आप बीस खायेंगे। गोया आप ने उस का भी हक़ (पाँच खजूरें) अधिक खा लिया। दूसरे यह कि इस प्रकार लालची और पेटू खाता है और यह बुरी बात है। हाँ, अगर खजूर के ढेर के पास बैठे हैं और किसी प्रकार की कमी न हो तो कोई हरज नहीं।

बाब {ककड़ी को खजूर के साथ मिला कर खाने का बयान।}

1320:– अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को खजूर के साथ ककड़ी खाते हुये देखा है।

बाब {पके हुये काले पीलू का बयान।}

1321:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ मर्रज़्ज़हरान के स्थान पर थे और कबास चुन रहे थे। आप ने देखा तो फ़रमायाः काले रंग वाले तोड़ना। इस पर हम ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! ऐसा मालूम होता है कि आप ने जन्गल में बकरियाँ चराई हैं? आप ने फ़रमायाः हाँ, और कोई सन्देष्टा ऐसा नहीं हुआ है जिस ने बकरियाँ न चराई हों, या इसी प्रकार का कोई वाक्य आप ने फ़रमाया।

फ़ाइदाः– बुख़ारी की रिवात में है कि आप ने फ़रमायाः "जो खूब काला हो उसे तोड़ना क्योंकि वह अधिक मीठा होता है।" (बुख़ारी-5453) बकरी बड़ी कमज़ोर ज़ात होती है, उसे बड़ी समझदारी से चराना होता है, कहीं गुस्सा में कड़ा प्रहार कर दें तो वह मर भी सकती है इसलिये इन्हें चराते समय गुस्सा को थामना पड़ता है। इसीलिये जो बकरियाँ चराता है उस के अन्दर नर्मी और बुर्दबारी पैदा हो जाती है। हर नबी अपनी उम्मत का चरवाहा होता है, इसीलिये बकरियाँ चराने से उस के अन्दर उम्मत को चराने के लिये पहले ही से नर्मी, प्रेम, बुर्दबारी पैदा हो जाती है। पीलू का फल बड़ा स्वादिष्ट होता है और इस की जड़ दातून और मिस्वाक के काम आती है।

बाब {ख़रगोश का माँस खाने का बयान।}

1322:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ नेबयान किया कि हम लोग सफ़र में चले जा रहे थे कि "मर्रज़्ज़हरान" के स्थान पर एक ख़रगोश देखा तो सहाबा ने दौड़ कर उसका पीछा किया लेकिन थक कर बैठ गये तो मैं दौड़ा और उसे पकड़ लिया फिर अबू तल्हा के पास लाया तो उन्होंने उसे ज़बह किया और उस की पीठ और दोनों रानें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को दे दीं, मैं लेकर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास गया तो आप ने उसे ले लिया।

फ़ाइदाः— मालूम हुआ कि ख़रगोश का माँस खाना जाइज़ है। ख़रगोश दो प्रकार के होते हैं। खुर वाले और पंजे वाले। लोग पंजे वाले को नहीं खाते हैं, लेकिन इस के न खाने का कोई सबूत नहीं है। कुछ लोग इसलिये भी नहीं खाते हैं कि उस की मादा को महिलाओं की तरह मांसिक धर्म (माहवारी) आती है, इस कारण न खाना भी ग़लत है।

बाब {साँडा (गोह) खाने का बयान।}

1323:— अ़ब्दुल्लह बिन अ़ब्बास रज़ि॰ ने बयान किया कि ख़ालिद बिन वलीद रज़ि॰ जिन्हें "अल्लाह की तल्वार" भी कहा जाता है, उन्होंने बयताया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ आप की पत्नी मैमूना रज़ि॰ के पास गया। मैमूना रज़ि॰ इब्ने अ़ब्बास और ख़ालिद बिन वलीद की ख़ाला हैं। उन के पास गोह का भुना हुआ माँस था जिसे मैमूना की बहन हुफ़ैदा बिन्त हारिस नज्द से लायीं थीं। उसे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने पेश किया गया। ऐसा बहुत कम होता था कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने कोई खाना पेश किया जाये और उस का नाम न बताया जाये, या उसके बारे में तफ़सील न बयान की जाये (कि खाना कैसा है) जब आप ने गोह (को खाने के लिये उस) की तरफ़ हाथ बढ़ाया तो उस समय उपस्थिति महिलाओं में से एक महिला बोल पड़ी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उस खाने के बारे में भी बता दो जो आप के सामने रखा है। चुनान्चे उन्होंने बताया कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! यह गोह का माँस है। यह सुन कर आप ने अपना हाथ खींच लिया। इस पर ख़ालिद रज़ि॰ ने पूछाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! क्या गोह हराम है? आप ने फ़रमायाः नहीं, हराम नहीं है लेकिन चूँकि यह मेरे मुल्क में नहीं होता इसीलिये मुझे कराहत महसूस होती है। ख़ालिद रज़ि॰ ने कहा कि यह सुन कर मैं ने उसे अपने आगे कर लिया और खाया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुझे खाते हुये देख रहे थे लेकिन आप ने मना नहीं किया।

1324:— अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है उन्हेंाने बयान किया कि एक दीहाती नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगाः हम ऐसे क्षेत्र में रहते हैं जहाँ गोह अधिक संख्या में रहते हैं और मेरे घर वाले आ़मतौर पर उसे खाते भी हैं। यह सुन कर आप ने उसे कोई उत्तर न दिया तो मैं ने उस से कहा कि दोबारा पूछ लो। चुनान्चे उस ने दोबारा पूछा लेकिन आप ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। हम ने फिर उस सेकहा कि तीसरी मर्तबा पूछ लो। उस ने तीसरी मर्तबा भी पूछा लेकिन आप ने इस मर्तबा भी कोई उत्तर नहीं दिया। फिर थोड़ी देर के बाद आप ने उसे पुकार कर कहाः ऐ दीहाती! अल्लाह पाक ने बनी इस्राईल पर लानत भेजी, या उन पर नाराज़ हुआ तो उन को जानवर बना दिया और वह ज़मीन पर चलते थे। मुझे नहीं मालूम कि गोह (साँडा) उन्हीं जानवरों में से है, या क्या है? इसलिये मैं उसे नहीं खाता, लेकिन हराम भी नहीं क़रार देता।

फ़ाइदा:– गोह (साँडा) निःसंदेह हलाल है, सभी का इत्तिफ़ाक़ है। हाँ, इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ ने मक्रुह कहा है। गोह खाने से संबन्धित केवल मुस्लिम शरीफ़ ही में एक दर्जन से अधिक हदीसें हैं लेकिन किसी में हराम होने का ज़िक्र नहीं है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने बयान किया कि मेरी ख़ाला उम्मे हुफ़ैद ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिये घी, पनीर और गोह का माँस भेजा, तो आप ने घी और पनीर को तो खा लिया और गोह को कराहत के नाते छोड़ दिया, जिसे आप के दस्तरख़ान ही पर खाया गया। अगर वह हराम होता तो दस्तरख़ान पर न खाया जाता। (मुस्लिम) उमर रज़ि॰ ने कहाः अल्लाह पाक ने इस जानवर को अधिकांश लोगों के लिये रोज़ी बनाया है और यह जानवर चराने वालों में से अधिकांश का खाना है। अगर मेरे पास भी आये तो मैं उसे खाऊँगा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को कराहत महसूस हुयी इसीलिये आप ने नहीं खाया। (मुसिलम) ख़ालिद बिन वलीद के खाने वाली रिवायत बुख़ारी शरीफ़ में है (हदीस न॰. ....)

फ़ाइदा:– “बनी इस्राईल पर लानत भेज कर उन्हें गोह बना दिया गया, मुझे नहीं मालूम कि गोह की यह नस्ल उसी में से है या क्या है?” आप को यह शुब्हा वह्यि नाज़िल होने से पूर्व हुआ था। जब वह्यि नाज़िल हुयी तो मालूम हुआ कि जिन का चेहरा बिगाड़ दिया जाता है वह क़ौमें तबाह कर दी जाती हैं और उन की नस्ल समाप्त कर दी जाती है। चुनान्चे हदीस में है कि जब आप के सामने चेहरा बिगाड़ कर बन्दर और सुअर बना दिये लोगों का ज़िक्र हुआ तो आप ने फ़रमायाः अल्लाह पाक ने इन की नस्ल को बाक़ी नहीं रखा, इन से पहले भी यह जानवर पाये जाते थे” (मुस्लिम, अहमद) एक दूसरी रिवायत में है कि एक व्यक्ति ने पूछाः क्या यह सुअर और बन्दर वही हैं जिन क़ौमों का चेहरा बिगाड़ दिया गया था? आप ने फ़रमायाः अल्लाह पाक इन की नस्ल को समाप्त कर देता है” (अहमद, मुस्लिम, मुन्तक़ा–4587, 4588) मालूम हुआ कि गोह उन में से नहीं है।

बाब {टिड्डी खाने का बयान।}

1325:– अ़ब्दुल्लाह बिन अबू औफ़ा रजि॰ सेरिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम सहाबा ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ मिल कर सात लड़ाइयाँ लड़ीं और उस दर्मियान टिड्डी को खाते रहे।

फ़ाइदा:– इस के भी हलाल होने पर सभी का इत्तिफ़ाक़ है। इस को मुर्दा भी खाना जाइज़ है। आप ने फ़रमायाः हमारे लिये दो मरी हुयी चीज़ें हलाल की गयी हैं (1) टिड्डी (2) मछली (इब्ने माजा–3218, बैहक़ी–9/257) इब्ने अबू औफ़ा वाली रिवायत बुख़ारी शरीफ़ में भी है (5495)

बाब {समुन्दरी जानवर और जिन को समुन्दर ने फेंक दिया हो उन के खाने का बयान।}

1326:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अबू

उबैदा बिन जर्राह की कमान्डरी में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमें कुरैश के लश्कर का पीछा करने के लिये भेजा। राह में खानें के लिये एक थैला खजूर भर कर दिया। इस के अ़लावा और कुछ था भी नहीं जो आप हमें खाने के लिये देते। चुनान्चे (हमारे कमान्डर) अबू उबैदा उस में से हम लोगों को (रोज़ाना) एक-एक खजूर खाने को देते थे। हदीस के रावी अबू ज़ुबैर ने कहा कि मैंने जाबिर से पूछाः एक खजूर में आप लोगों का क्या होता था? उन्होंने कहा कि उसे बच्चों की तरह चूस लेते फिर ऊपर से पानी पी लेते, बस वह दिन-रात भर के लिये काफ़ी हो जाता। हम लक्ड़ी से पेड़ के पत्ते झाड़ लेते और उसे पानी में भिगो कर चबाते।

उन्होंने बयान किया कि (इसी प्रकार पत्ते खााते-पीते) हम लोग समुन्दर के कनारे पहुँच गये तो समुन्दर में एक लंबी और मोटी सी कोई वस्तु दिखाई पड़ी। जब उस के पास गये तो क्या देखा कि वह समुन्दरी जानवर है जिस को "अन्बर" कहा जाता है। उस के बारे में अबू उबैदा ने कहाः यह तो मरी हुयी है (इसलिये हराम है) लेकिन फिर स्वँय ही बोले कि नहीं, हम लोगों को अल्लाह के सन्देष्टा ने भेजा है और अल्लाह की राह में (जिहाद के लिये) निकले हैं और तुम लोग भूख से बेचैन भी हो, इसलिये इसे खाओ। जाबिर रज़ि० ने बयान किया कि हमारी संख्या तीन सौ थी और हम एक महीना तक वहाँ रहे और उस का माँस खाते रहे, यहाँ तक कि खूब मोटे हो गये।

जाबिर रज़ि० ने बयान किया कि आप लोगों को मालूम होना चाहिये कि हम लोग उस की आँख के गढ़े से चर्बी के घड़े के घड़े भरते थे और उस में से बैल के बराबर माँस के टुक्ड़े काट लिया करते थे। फिर अबू उबैदा ने हम में से तैरह आदमियों को उस की आँख के अन्दर बैठा दिया तो हम बैठ गये (यानी उस की आखों का गड्ढा इतना बड़ा था) फिर उस की एक पिसुली उठा कर खड़ा किया और हमारे पास भेजा तो जो सब से ऊँचा ऊँट था उस पर पालान बाँध कर उस के नीचे से निकाला गया तो वह निकल गया (यानी उस की पिसुलियाँ बड़ी लंबी थीं) फिर उस के माँस को उबाल कर सुखा लिया और सफ़र में ख़र्च के लिये रख लिया।

फिर मदीना लौट कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को पूरी घटना की जानकारी दी तो आप ने फ़रमायाः वह अल्लाह पाक की तरफ़ से भेजी हुयी रोज़ी थी जिसे उस ने तुम्हारे लिये समुन्दर से निकाली थी। अगर तुम्हारे पास उस का माँस कुछ बचा हुआ हो तो हमें भी खिलाओ। जाबिर रज़ि० ने कहा कि हम ने उस का माँस आप के पास भेजा तो आप ने भी उसे खाया।

फ़ाइदा:- इस जन्ग का नाम "सीफुल् बह्र" (समुन्द्र का तट) है। यह लश्कर रजब सन० 8 हि० में भेजा गया था। इस के भेजने का उद्देश्य यह था कि दुश्मन जो एकत्र हैं इध ार-उधर बिखर जायें। चुनान्चे यह लश्कर एक माह तक वहाँ ठहर कर वापस आ गया। (रहमतुल्लि आ़लमीन) सहाबी को मालूम नहीं था कि मुर्दा मछली हलाल है इसलिये खाने

से मना फ़रमाया। उन्हें मालूम था कि मजबूरी में मुर्दार खाना जाइज़ है (जैसा कि कुरआन में ज़िक्र है) इसलिये खाने की अनुमति दे दी। इस मछली की लंबाई-चौड़ाई पर आश्चर्य नहीं होना चाहिये। इस से भी बड़ी-बड़ी मछलियाँ अल्लाह पाक ने समुद्र में पैदा कर रखी हैं। इस हदीस सेमालूम हुआ कि मछली चाहे जीवित हालत में मिले या मरी हुयी हालत में, उस का खाना नि-संदेह जाइज़ है। इस मस्अले में समस्त उलमा का इत्तिफ़ाक़ है। इस मछली का ज़िक्र आगे आ रही हदीस न॰ 1537 में भी है, लेकिन उस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्ललम स्व्यं मौजूद थे।

बाब {घोड़ों का माँस खाने का बयान।}

1327:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ख़ैबर की लड़ाई के मौक़ा पर घरेलू (पालतू) गधों का माँस खाने से मना कर दिया, लेकिन घोड़े का माँस खाने की अनुमति दे दी।

1328:– अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ की पुत्री अस्मा रज़ि॰ ने बयान किया कि हम ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के समय में एक घोड़ा काटा और उस का माँस खाया।

फ़ाइदा:– घोड़ा चूँकि सवारी और माल ढोने के लिये प्रयोग में लाया जाता है इसलिये उसे खाने का रिवाज और परंपरा नहीं है, वर्ना इस का खाना निःसंदेह जाइज़ है। कुछ इमामों ने मक्रुह कहा है लेकिन सहीह हदीस की रोशनी में उन का फ़तवा रद्द माना जायेगा। बुख़ारी शरीफ़ में भी जाइज़ की कई हदीसें आयी है (5519, 5521, 5522) गधे का माँस हराम है इसमें सभी का इत्तिफ़ाक़ है। अबू दावूद की एक रिवायत में सूखा काल में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अनुमति दी है, लेकिन यह रिवायत सहीह नहीं है, हद दर्जा ज़ओ़फ़ है (नौवी) आप ने गधे के माँस के बारे में फ़रमाया: वह नापाक है, हद दर्जा गन्दा है, उस का खाना शैतान का काम है।

बाब {घरेलू गधों का माँस हराम है।}

1329:– अबू सालबा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन गधों का माँस खाने से मना फ़रमाया है जो आबादी में रहते हैं।

1330:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब ख़ैबर फ़त्ह हो गया तो उस समय जो गधे इधर-उधर चल रहे थे उन्हें पकड़ कर उन का माँस पकाया। इतने में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के एक एलान्ची ने पुकार लगायी: कान खोल कर सुन लो! अल्लाह और उस के संदेष्टा ने गधों का माँस खाने से मना कर दिया है, क्योंकि वह नापाक जानवर है और उस का खाना शैतान का कार्य है। चुनान्चे (यह सूचना मिलते ही) सभी हँडियाँ उलट दी गयीं, हालाँकि उस में माँस पक रहा था (और खाने के लिये तय्यार था)

फ़ाइदाः– इस हदीस को समझने के लिये ऊपर का फ़ाइदा पढ़ें। देखें बुख़ारी शरीफ़ 5520, 5521, 5522 5523, 5524, 5525, 5526, 4221, 4222, 3155, 5527, 8523) हाँ जन्गली गधे का माँस हलाल है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने पेश किया गया तो आप ने फ़रमायाः अगर हम एहराम की हालत में न होते तो इस का माँस खाते। (मुस्लिम) इस में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है। लेकिन गधी का दूध पीना जाइज़ है (बुख़ारी–5781, अबू सऔ़द इदरीस ख़ौलानी) जो हराम कहते हैं उन की दलील यह है कि दूध माँस से बनता है, जब माँस हराम हुआ तो दूध भी हराम हुआ। लेकिन यह तर्क सहीह नहीं, क्योंकि पुरुष का माँस खाना हराम है मगर उस का दूध पीना हलाल है (वहीदी)

बाब {केचली का दाँत रखने वाले दरिन्दे (यानी फाड़ खाने वाले) जानवर को खाना मना है।}

1331:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हर केचली वाले दरिन्दे का माँस खाना हराम है।

फ़ाइदाः– माँस खाने वाले, चीर-फाड़ करने वाले जानवरों के दाँयें-बाँयें दो नोकीले दाँत होते हैं उन्ही से वह माँस नोचते हैं। इन्हें अ़रबी में "नाब" और उर्दू में "केचली के दाँत" कहा जाता है, जैसे शेर, चीता, भेड़िया, कुत्ता, बिल्ली आदि। माँस न खाने वाले जानवरों के यह दाँत नहीं होते हैं। इस मस्अले में सभी का इत्तिफ़ाक़ है। इन का माँस खाने से मनुष्य का स्वभाव भी वैसे ही बन जायेगा और मनुष्य इन्सान से हैवान बन जायेगा। (बुख़ारी–5530)

बाब {वह चिड़िया (परिन्दा) जो पन्जे से पकड़ कर खाये, उस का माँस खाना मना है।}

1332:– इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने केचली का दाँत रखने वाले जानवर और चन्गुल व पंजे से पकड़ कर खाने वाले परिन्दे का माँस खाने से मना किया है।

फ़ाइदाः– कुछ परिन्दे ऐसे होते हैं जो शिकार को अपने पंजे से पकड़ कर दबा लेते हैं फिर उन्हें नोच कर खाते हैं जैसे चील, बाज़, शाहीन, शिक्रा आदि।

बाब {लहसुन खाना मकरुह है।}

1333:– अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (हिजरत कर के मदीना आये और) हमारे घर उतरे तो नीचे के हिस्सा में ठहरे और हम ऊपर के तल पर चले गये। एक रात हमारी आँख खुली तो ख़याल आया कि हम लोग तो आपके सर पर चलते हैं। चुनान्चे वह रात एक कोने में बैठ कर (जैसे-तैसे) बिताई। सुबह को मैं ने ऊपर वाले तल पर रहने का अनुरोध किया तो आप ने फ़रमाया कि नीचे के हिस्सा में रहने में ही आराम है। इस पर मैं ने कहा कि मैं उस छत पर तो नहीं रह सकता जिस के नीचे आप रहते हों। इस पर आप ऊपर चले गये और मैं

नीचे आ गया। उस समय मेरे ही घर आप का खाना पकता था। जब आप के पास खान लाया जाता (तो आप उसे खा लेते और अधिक होता तो वापस कर देते) तो मैं (वापस लाने वाले से) पूछता कि आप की उंगलियाँ खाने में कहाँ–कहाँ लगी हैं, फिर मैं भी (बर्कत के लिये) वहीं से खाता।

एक दिन खाना तय्यार किया तो उस में लहसुन डाल दिया। जब आप के पास से खाना वापस आया तो मैं ने पूछाः आप की उँगलियों के निशान कहाँ–कहाँ हैं? इस पर घर वालों ने बताया कि आज आप ने खाया ही नहीं। यह सुन कर मैं घबरा गया और ऊपर जा कर आप से पूछा कि क्या लहसुन हराम है? आप ने फ़रमायाः नहीं, लेकिन मुझे बुरा मालूम होता है। इस पर मैं ने कहाः जो चीज़ आप को पसन्द नहीं वह मुझे भी पसन्द नहीं। अबू अय़्यूब रज़ि॰ ने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास चूँकि फ़रिश्ते आते–जाते थे और उन को लहसुन की बू से तक्लीफ़ पहुँचती थी इसलिये आप न खाते थे।

फ़ाइदाः– बुख़ारी की रिवायत में है कि जो व्यक्ति इस पौधे को खाये वह हमारे निकट न आये और हमारे साथ नमाज़ न पढ़े। (856) कारण यह है कि इसे कच्चा खाने से मुँह में बदबू पैदा हो जाती है जिस से दूसरों को तक्लीफ़ पहुँचती है, इसलिये जो खाये वह कुछ ऐसी चीज़ खा ले जैसे सौंफ़, इलाइची आदि जिस से बदबू दूर हो जाये, तब मस्जिद अथवा महफ़िल में आये। बीड़ी, सिगरेट और हुक़्क़ा का भी यही आदेश है। लहसुन, प्याज़ पका कर उस की बदबू दूर कर ले तो इस प्रकार खाने में कोई हरज नहीं (बुख़ारी–5452, 7359)

बाब {खाने–पीने में ऐब नहीं निकालना चाहिये।}

1334:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को किसी खाने में ऐब निकालते नहीं देखा। (अगर कोई कमी होती तो) आप का जी चाहता तो खा लेते और अगर खाने का न जी चाहता तो चुप रहते।

फ़ाइदाः– खाना पकाने में किसी प्रकार की कमी रह जाये तो कुछ लोग चीख़–पुकार करने लगते हैं, या खाना ही फेंकने लगते हैं। यह बहुत बड़ी नाशुक्री है, इस से अल्लाह नाराज़ होता है।

❀ ❀ ❀

किताबुल्लिबासि वज़्ज़ीनति
(पहनावा और बनाव-सिंगार का बयान)

बाब {रेशम का वस्त्र दुनिया में वही पहनता है जिस के लिये आख़िरत में कुछ नहीं होता। और क्या रेशम से दूसरे तरीक़े से लाभ उठाना या बेचना जाइज़ है?}

1335:– इब्ने उमर रज़ि॰ ने बयान किया कि (मेरे पिता जी) उमर ने उतारिद तमीमी को देखा कि वह (बेचने के लिये) रेशमी कपड़ा रखे हुये हैं। यह महोदय बादशाहों के पास आते-जाते थे और उन (के हाथ बेच कर उन) से कमाई करते थे। उस कपड़े को देख कर उमर ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अनुरोध किया: ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मैं ने उतारिद के पास बाज़ार में रेशम का एक जोड़ा देखा है, आप उसे ख़रीद लें और अ़रब का वफ़्द (मन्डल) जब आप से मिलने आये उस समय पहनें तो बड़ा अच्छा हो। हदीस के रावी ने बयान किया कि उमर रज़ि॰ ने यह भी कहा था कि आप जुमा के दिन भी पहना करें।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: रेशमी वस्त्र दुनिया में वहीं पहनता है जिस के लिये आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होता है। फिर कुछ समय बीत जाने के पश्चात! आप के पास कहीं से रेशमी जोड़ा आया (जो किसी ने उपहार में दिया था) तो आप ने उस में से एक-एक जोड़ा उमर, उसामा बिन ज़ैद और अ़ली रज़ि॰ को दिया और फ़रमाया कि इन्हें फाड़ कर अपनी घर वालियों के दूपट्टे बना देना। उमर रज़ि॰ को जो जोड़ा मिला था उसे वह लेकर आप के पास आये और कहने लगे कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! आप ने यह रेशमी जोड़ा मेरे लिये भेजा है, हालाँकि कल आप ने उतारिद के रेशमी जोड़े के बारे में फ़रमाया था (कि इसे वह लोग पहनते हैं जिन के लिये आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होता) आप ने फ़रमाया: यह जोड़ा जो तुम्हें दिया है इसलिये नहीं दिया है कि इसे पहनो, बल्कि इसलिये दिया है कि उसे बेच कर फ़ाइदा हासिल करो।

उसामा बिन ज़ैद ने तो अपना जोड़ा पहन लिया और जाने लगे तो आप ने उन्हें बुरी नज़र से देखा तो उन्हें अन्दाज़ा हो गया कि आप नाराज़ हैं, चुनान्चे उन्होंने पूछा कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! आप नाराज़गी प्रकट कर रहे हैं, हालाँकि आप ही ने पहनने के लिये दिया भी है। आप ने फ़रमाया: मैं ने पहनने के लिये नहीं दिया है, बल्कि इसलिये

दिया है कि इसे टुकड़े कर के अपनी घर वालियों के लिये दूपट्टा बना दो।

फ़ाइदा:– यह हदीस बुख़ारी में है (886, 5841) रेशम का कपड़ा पुरुष के लिये पहनना हराम है, इसमें किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं। हाँ बीमारी में मजबूरी के नाते पहनने की अनुमति है, जैसा कि नीचे की हदीस न॰ 1341 में ज़िक्र है। अगर छोटे बच्चों को पहनाया जाये तो? वह बच्चे तो मासूम हैं, अल्बत्ता माता-पिता गुनहगार होंगे। रेशम का ऐसा कपड़ा जिस में सूती आदि धागा भी मिला है ऐसे कपड़े का भी पहनना हराम है, जमहूर उलमा का यही फ़तवा है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने दायें हाथ में रेशम और बायें हाथ में सोना लकर कहाः यह दोनों वस्तुयें मेरी उम्मत के पुरुषों पर हराम हैं (अबू दावूद-4057, नसई-5145)

बाब {जिस (मर्द) ने दुनिया में रेशमी कपड़ा पहना वह आख़िरत में नहीं पहनेगा।}

1336:– ख़लीफ़ा बिन कअ़ब अबू ज़िबयान से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने (मिंबर पर) अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि॰ को खुत्बा में यह फ़रमाते सुना कि ऐ लोगों! कान खोल कर सुन लो! अपनी महिलाओं को रेशमी वस्त्र मत पहनाओं, क्योंकि मैं ने उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ से सुना है वह फ़रमाते थेः मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना हैः आप ने फ़रमायाः हरीर (रेशमी कपड़ा) मत पहनो, क्योंकि जो इसे दुनिया में पहनेगा वह आख़िरत में नहीं पहनेगा।

फ़ाइदा:– उमर रज़ि॰ ने जो हदीस बयान की है वह ऊपर गुज़र चुकी है (1335) इन की रिवायत बुख़ारी में भी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "रेशम मत पहनो जिस ने इसे दुनिया में पहना वह आख़िरत में नहीं पहनेगा।" (बुख़ारी-5734) दोनों ही में महिलाओं के न पहनने के तअ़ल्लुक़ से कोई ज़िक्र नहीं है, इसलिये अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि॰ का उमर रज़ि॰ के हवाले से यह कहना कि महिला के लिये पहनना जाइज़ नहीं, यह उन की भूल है। निःसंदेह महिला के लिये रेशम और सोना पहनना जाइज़ है, इस में सब का इत्तिफ़ाक़ है। ऊपर की हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने महिलाओं के दूपट्टा बनाने का आदेश दिया है।

बाब {जो व्यक्ति अल्लाह से डरता है उस के लिये रेशम का जुब्बा पहनना दुरुस्त नहीं।}

1337:– उक्बा बिन आ़मिर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को कहीं से एक जुब्बा उपहार में मिला तो आप ने उसे पहन कर नमाज़ पढ़ी, फिर नमाज़ पढ़ने के (तुरन्त) बाद ही उसे जल्दी से उतार फेंका (आप के जल्दी-जल्दी उतारने से मालूम होता था) कि आप उसे बुरा जानते हैं, फिर फ़रमायाः यह नेक लोगों के लिये नहीं है।

बाब {रेशमी वस्त्र पहनना मना है, अल्बत्ता दो उँगलियों के बराबर (प्रयोग में लाना) जाइज़ है।}

1338:– अबू उस्मान नह्दी ने बयान किया कि उमर फ़ारुक़ रज़ि॰ ने हमें ख़त लिखा, उस समय हम लोग अज़रबाइजान नगर में थे (यह लिखा कि) ऐ उत्बा बिन फ़र्क़द! तुम्हारे पास जो माल है, (आम जनता) के घरों में तक़सीम कर के उन्हें पेट भर कर खिलाओ जिस प्रकार तुम अपने घरों में पेट भर कर खाते हो। और बहुत अधिक मौज-मस्ती करने से बचो, इसी प्रकार मुश्रिकों के वज़ा-क़ता (पहनावा, चाल-चलन) को अपनाने से और रेशम का कपड़ा पहनने से बचो, मगर इतना पहन सकते हो, फिर आप ने अपनी बीच की उँगली और शहादत की उँगली को उठाया और फिर उन्हें मिला लिया (यानी दो उन्गुल चौड़ाई के बराबर पहन सकते हो)

फ़ाइदाः– 'आर्ज़बाइजान' किसी समय रुस का एक स्टेट था जो अब एक स्वतन्त्र राष्ट्र बन चुका है। उमर रज़ि॰ ने अपने ख़िलाफ़त के ज़माना में उत्बा की कमान्डरी में एक लश्कर भेजा था, उस मौक़े पर जहाँ और दूसरे आर्डर थे उन में यह आर्डर और निर्देश भी लिख कर भेजा था कि दो उन्गुल से अधिक रेशम मत इस्तेमाल करो।

1339:– सुवैद बिन ग़फ़ला सेरिवायत है कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ ने जाबिया के स्थान पर ख़ुत्बा देते हुये कहाः नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने रेशमी वस्त्र पहनने से मना फ़रमाया है मगर यह कि दो उन्गुल या तीन, या चार उन्गुल के बराबर हो।

फ़ाइदाः– बुख़ारी की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दो उंगलियों के इशार का मैं ने यह मतलब समझा कि दो उंगुल के बराबर कपड़े पर रेशम की कढ़ाई के बेल-बूटे बना सकते हैं (बुख़ारी-5828) मालूम हुआ कि अगर कपड़े में दो-चार उन्गुल पैवन्द और चेपी लगाने की आवश्यक्ता पड़ जाये तो इस की अनुमति है। लेकिन फ़ैशन दिखाने और बड़ापन व अभिमान बघारने के लिये इतना भी जाइज़ नहीं। वैसे मजबूरी में तो पूरा कपड़ा पहनने की अनुमति है जैसा कि नीचे की हदीस न॰ 1341 में बयान आ रहा है।

बाब {रेशम का जुब्बा पहनना मना है।}

1340:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उपहार में प्राप्त हुआ जुब्बा पहना फिर उसे उतार कर उमर के पास भेजवा दिया। इस पर आप से पूछा गया कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! आप ने उमर को दे दिया? आप ने फ़रमायाः जिब्रील ने मुझे पहनने से मना कर दिया है। यह सुन कर उमर रज़ि॰ रोते हुये (भागे-भागे) आप के पास आयेऔर कहने लगेः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! जो चीज़ आप को पसन्द नहीं थी उसे मेरे हवाले कर दी, उसे मैं क्या करुँ? आप ने फ़रमायाः तुम्हें पहनने के लिये थोड़े दिया है, मैं ने इसलिये दिया है कि उसे बेच डालो। चुनान्चे उमर रज़ि॰ ने उसे दो हज़ार दिर्हम में बेच दिया।

फ़ाइदाः— मालूम हुआ कि जिस प्रकार सोने-चाँदी की तिजारत जाइज़ है (अल्बत्ता पहनना हराम है) यही हाल रेशम का भी है। 'क़बा' वह लंबी-चौड़ी और ढीली-ढाली क़मीस जिस अ़रब के लोग टख़्नों के ऊपर तक पहनते हैं, जिसे 'जुब्बा' 'क़ुबा' 'चोग़ा' और "अ़बा" आदि भी कहते हैं।

बाब {किसी तक्लीफ़ (बीमारी) के कारण रेशमी वस्त्र पहनने की अनुमति है।}

1341:— अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ और जुबैर बिन अ़व्वाम रज़ि० को यात्रा के दौरान रेशमी क़मीस पहनने की अनुमति दे दी थी, इसलिये कि उन्हें खुजली या कोई और तक्लीफ़ हो गयी थी। एक दूसरी रिवायत के अनुसार उन्होंने जूँ पड़ जाने की शिकायत की थी।

फ़ाइदाः— बुख़ारी की रिवायत में है कि उन्हें खुजली हो गयी थी (5839-अनस बिन मालिक) रेशमी कपड़े की विशेषता यह है कि उस में जूँ नहीं पड़ती और वह नर्म होता है इसलिये खुजली में पहनने से तक्लीफ़ नहीं होती। मालूम हुआ कि जाइज़ कारण से उसे प्रयोग करना जाइज़ है। इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मालिक के निकट रेशम का पहनना किसी हालत में जाइज़ नहीं। लेकिन इन दोनों का फ़तवा इस सहीह हदीस की रोशनी में रद्द है।

बाब {कपड़े की किनारी को रेशम से बनाना जाइज़ है।}

1342:— अबू बक्र की पुत्री अस्मा के आज़ाद किये हुये गुलाम और अ़ता के पुत्र के मामूँ अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि मुझे अस्मा रज़ि० ने अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० के पास यह मालूम करने के लिये भेजा कि मैं ने सुना है आप तीन चीज़ों (1) वह कपड़ा जिस में रेशम के फूल-बूटे बने हों (2) लाल रंग का ज़ीन पोश (3) और रजब के पूरे माह रोज़ा रखने से मना करते है? इस पर इब्ने उमर रज़ि० ने उत्तर दिया भला वह व्यक्ति रजब के महीने में रोज़ा रखने से क्यों मना करेगा जो स्वँय हमेशा रखता हो। रहा कपड़े पर बने रेशम के फूल-बूटों का मस्अला जिस का आप ने ज़िक्र किया है, तो मैं ने (अपने पिता) उमर फ़ारुक़ को बयान करते सुना है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "रेशम वह पहनेगा जिस का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं", तो मुझे शुब्हा हुआ कि रेशम के फूल-बूठे बना हुआ कपड़ा भी इस हुक्म में शामिल है। (इसलिये एहतियात के तौर पर मैं ने मना किया है) और रहा लाल रंग के ज़ीन के ऊपर के पालान का मस्अला तो स्वँय मेरे ज़ीन के पालान का कपड़ा भी लाल है (इसलिये मैं क्यों मना करुँगा) (अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि) यह सब बातें मैं ने जा कर अस्मा को बतायीं तो उन्होंने कहाः यह देखो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का जुब्बा। फिर उन्होंने मुझे निकाल कर दिखाया जो हरे रंग का किस्रवानी टाइप का था जिस के गिरेबान पर रेशम की पट्टी लगी हुयी थी।

अस्मा रज़ि॰ ने बयान किया कि यह जुब्बा आइशा रज़ि॰ के देहान्त के समय तक उन के पास था, उन के देहान्त के पश्चात् इसे मैं ने ले लिया। इस जुब्बे को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहना करते थे। अब हम इसे धोकर इस का पानी बीमार लोगों की तन्दुरुस्ती के लिये पिलाती हैं।

फ़ाइदाः– हदीस में एक शब्द 'किस्रवानिया' आया है। जिस का अर्थ है "किस्रा माडल" अर्थात जिस प्रकार इर्रान के बादशाह किसरा पहनते थे। आजकल भी यह शब्द बोला जाता है. जैसे "अलीगढ़ी माडल"। गरीबान की रेशम की पट्टी तीन-चार उन्गुल की रही होगी। इस से मालूम हुआ कि इस से अधिक प्रयोग करना जाइज़ नहीं है, जैसा कि अभी ऊपर हदीस न॰ 1338 में बयान हुआ। जिस प्रकार पहनना हराम है इसी प्रकार उसे बिछा कर उस पर बैठना भी हराम है (बुख़ारी-5837-हुज़ैफ़ा रज़ि॰) 'मिसरा' सवारी के ऊपर बैठने के लिये एक गद्दा बिछाया जाता है उसे ज़ीन कहते हैं। फिर उस ज़ीन के ऊपर एक कपड़ा डालते हैं जो दाँयें-बाँयें लटकता है, इस से सुन्दरता पैदा होती है इसे आप "झोल" भी कह सकते हैं। अगर यह सूती है और लाल रंग का है तो इस का प्रयोग जाइज़ है क्योंकि लाल रंग का जुब्बा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहना है (बुख़ारी-3551) अगर रेशम का है तो हराम है। अगर रेशम ज़्यादा है और सूत कम है तो रेशम के हुक्म में माना जायेगा और हराम है।

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ दोनों ईद और क़ुर्बानी के दिनों को छोड़ कर बराबर रोज़ा रखते थे। इन के निकट "सौमे दहर" जाइज़ है, लेकिन यह दुरुस्त नहीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दावूद अलै॰ का रोज़ा रखने का हुक्म दिया है, यानी एक दिन नाग़ा कर के। (देखें ऊपर हदीस न॰ 595) नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की किसी भी चीज़ से तबर्रुक हासिल करना, आप के कपड़े से, बाल से, नाखून से, थूक से, वज़ू के बचे पानी से, निःसंदेह जाइज़ है। आजकल हिन्दुस्तान में जामा मस्जिद दिल्ली में और कश्मीर में हज़रत बल वग़ैरह की मस्जिद में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाल शीशी में रख कर दिखाए जाते हैं, यह सब नक़्ली हैं, इसलिये इन सब से तबर्रुक हासिल करने से बचना चाहिये।

बाब {रेशमी कपड़ा फाड़ कर महिलाओं के लिये दूपट्टा बनाना जाइज़ है।}

1343:– अली बिन अबू तालिब रज़ि॰ से रिवातय है कि अकैदिर दूमा के राजा ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उपहार में रेशम का कपड़ा दिया तो आप ने उसे अली रज़ि॰ को देकर फ़रमायाः इसे तीन टुकड़े कर के तीनों फ़ातिमा के लिये दुपट्टा बना दो।

फ़ाइदा– तीनों 'फ़ातिमा' से मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुत्री फ़ातिमा, अली रज़ि॰ की माता जी फ़ातिमा बिन्त असद और हम्ज़ा रज़ि॰ की पुत्री फ़ातिमा हैं। महिला के लिये रेशम बिलाशुब्हा जाइज़ है। 'दूमा' यह एक नगर का नाम था जिस

में बड़े ऊँचे-ऊँचे क़िले थे, यहाँ के लोग बड़े धनवान थे। मदीना से 13 दिन पैदल सफ़र की दूरी पर आबाद था।

बाब {'क़स्सी' और 'मु-अस्फ़र' कपड़ा और सोने की अँगूठी पहनना मना है।}

1344:– अ़ली बिन अबू तालिब रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने "क़स्सी" और 'कुसुम' से रंगा हुआ कपड़ा पहनने और सोने की अँगूठी पहनने और रुकूअ़ में क़ुरआन पढ़ने से मना फ़रमाया है।

फ़ाइदा:– 'क़िस्सी' एक प्रकार के रेशमी कपड़े का नाम है। :मु-अस्फ़र' उस कपड़े को कहते हैं जो कुसुम फूल के रन्ग का रंगा हो । यह रन्ग गहरे लाल और पीले रन्ग का होता है। हिन्दू मत में साधु-संत और पंडित लोग केवल यही रंग पसन्द करते हैं। आजकल शिवसेना और भारतीय जनता पार्टी (बी.जे.पी) की पहचान ही यही भगवा कलर है। याद रहे कि ख़ालिस लाल नहीं होता है, बल्कि पीला की भी मिलावट होती है। इस को पहनना काफ़िरों से मुशाबहत भी है। इसी प्रकार ज़ाफ़रानी रंग से भी मना किया है, क्योंकि यह भी उसी रंग के मुशाबह है।

सोने के प्रयोग के बारे में देखें पीछे हदीस न॰ 1288, 1289 का फ़ाइदा। रुकअ़ में क़ुरआन पढ़ना मना है, देखें पीछे हदीस न॰ 295 का फ़ाइदा।

1345:– अम्र बिन आ़स रज़ि॰ के बेटे अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे कुसुम के रंग के दो कपड़े पहने हुये देखा तो फ़रमाया: यह रंग काफ़िरों के हैं, इसलिये मत पहनो।

बाब {ज़ाफ़रान (केसर) का रंग प्रयोग करना मना है।}

1346:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ज़ाफ़रान (केसर) प्रयोग करने और उस के रंग से मना फ़रमाया है।

फ़ाइदा:– 'कुसुम' एक गहरे लाल-पीले रंग के फूल का नाम है। 'केसर' इस का रंग गहरा पीला होता है। यह दोनों रंग गैरमुस्लिमों में साधु-संत, ब्रहमाण, पंडित और ज्योतिषी आदि प्रयोग करते हैं और इसी रंग का धोती-कुर्ता पहनते हैं। शिवसेना, बी.जे.पी, संघ परिवार कट्टर मुस्लिम दुश्मन पार्टियों का यही कलर पहचान है, इसलिये आप ने मना फ़रमाया ताकि उन से मुशाबहत न हो। बुख़ारी की रिवायत में 'वर्स' घास से भी मना किया है। इस का भी रंग गहरा पीला होता है। (बुख़ारी 134, 5874) लाल रंग का कपड़ा आप से पहना है (बुख़ारी-5848-बरा बिन आज़िब) इमाम शौकनी रह॰ के निकट भी लाल कपड़ा मर्दों के लिये जाइज़ है। जिस हदीस में लाल रंग ने मना किया गया है उस से कुसुम, र्वस और ज़ाफ़रानी रन्ग के कलर मुराद हैं।

बाब {बालों के रँगने और सफ़ेद बालों के रंग को बदलने का बयान।}

1347:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायतय है उन्होंने बयान किया कि (अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ के पिता) अबू क़हाफ़ा जिस वर्ष मक्का फ़त्ह हुआ आप के पास लाये गये उस समय उन के सर के बाल और दाढ़ी "सुग़ामा" की तरह सफ़ेद थी। उन्हें देख कर आप ने फ़रमायाः इस सफ़ेद रंग को बदल दो, लेकिन काले रंग से बचो।

फ़ाइदा:– यकदम काला ख़िज़ाब प्रयोग करना नाजाइज़ है, क्योंकि इस प्रकार डुप्लीकेट जवान बन कर महिलाओं को धोखा देना और फ़िऔ़न की नक़ल करना है। कहा जाता है कि सर्वप्रथम काले ख़िज़ाब का प्रयोग उसी ने किया था। उम्मे सलमा रज़ि॰ के पास आप के बाल थे, वह लाल रंग के थे (बुख़ारी-5898-अ़ब्दुल्लाह) एक रिवायत में है कि उन बालों पर महेंदी और वस्म घास का ख़िज़ाब था। मुस्लिम ही की एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ख़िज़ाब नहीं लगाया, अल्बत्ता अबू बक्र और उमर लगाते थे। फिर आप के बाल लाल क्यों थे? इस का उत्तर यह है कि बाल पकने से पहले लाल होने शुरु होते हैं, आप के बाल की लाली इस नाते रही होगी। बहरहाल मालूम हुआ कि यकदम काला लगाना बिला शुब्हा नाजाइज़ है। आजकल मटियाले रंग का प्रयोग किया जाता है, चूँकि यह यकदम काला नहीं है। इसलिये जाइज़ है। 'सुग़ामा' सफ़ेद रंग की एक घास का नाम है।

बाब {ख़िज़ाब लगा कर यहूद-नसारा की मुख़ालिफ़त करनी चाहिये।}

1348:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यहूद-नसारी ख़िज़ाब नहीं लगाते इसलिये उन की मुख़ालिफ़त करो और ख़िज़ाब लगाओ।

फ़ाइदा:– मालूम हुआ कि ख़िजाब लगाना सुन्नत है और यहूद-नसारा की मुख़ालिफ़त में लगाना ज़रुरी भी है। "इस्लाम में हलाल और हराम" पुस्तक में अ़ल्लामा क़र्ज़ावी ने इस विषय पर जो बहस की है वह अनर्थ है। यह हदीस बुख़ारी में भी है (5899-अबू हुरैरा रज़ि॰) तिर्मिज़ी की रिवायत में है कि बुढ़ापे को तबदील करो और यहूद की मुशाबहत मत करो (क्योंकि वह अपने बालों को सफ़ेद ही रखते हैं) (1752-अबू हुरैरा)

बाब {धारीदार यमन नगर की बनी हुयी चादर के बारे में।}

1349:– क़तादा रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने अनस बिन मालिक रज़ि॰ से पूछा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को कौन सा कपड़ा अधिक पसन्द था? उन्होंने कहा कि यमन की चादर (क्योंकि यह चादर धारीदार होती थी, और अधिक मज़बूत और सुन्दर होती थी)

फ़ाइदा:– बुख़ारी शरीफ़ में है कि आप को यमन की बनी हुयी हरे रंग की चादर अधिक पसन्द थी (5812-अनस) चुनान्चे जब आप का देहानत हुआ तो आप के शव पर

यमन के हरे रंग की चादर डाल दी गयी थी (5814-आ़इशा)

बाब {काले रंग का कंबल ओढ़ने का बयान।}

1350:- आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बाहर निकले तो काले बालों का कंबल ओढ़े हुये थे जिस पर पालान की तस्वीरें (चित्र) बनी हुयी थीं।

बाब {मोटा कपड़ा और "मुलब्बद" पहनने का बयान।}

1351:- अबू बूर्दा से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं आ़इशा के पास गया तो उन्होंने यमन का बुना हुआ एक तहबन्द निकाल कर दिखाया और एक कंबल जिस को "मुलब्बद" कहते हैं। फिर उन्होंने अल्लाह की क़सम खा कर कहाः इन्हीं दोनों कपड़ों में आप का देहान्त हुआ था।

फ़ाइदाः- मुस्लिम ही की एक दूसरी रिवायत में है कि कंबल पर पैवन्द लगा हुआ था और उसी कपड़े में आप का देहान्त हुआ (मुस्लिम-अबू दर्दा) कहने का अर्थ यह है कि आप मोटा-झोटा पहनते-ओढ़ते थे। आप के पास चमड़े का तकिया था जिस में खजूर की छाल भरी हुयी थी (मुस्लिम-आ़इशा)

बाब {क़ालीन प्रयोग करने का बयान।}

1352:- जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब मैं ने निकाह किया तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझ से पूछाः तुम्हारे पास (बिछाने के लिये) क़ालीन है? मैं ने कहा कि हमारे पास कहाँ? आप ने फ़रमायाः (कोई बात नहीं) बहुत जल्द तुम्हारे पास हो जायेंगे। जाबिर ने कहा कि मेरी पत्नी के पास एक क़ालीन है और मैं कहता हूँ कि इस को हटा दे तो वह कहती है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया था "बहुत जल्द तुम्हारे पास क़ालीन होगी"

फ़ाइदाः- 'अन्मात' यह "नेमत" का बहुवचन है, जो क़ालीन या इस प्रकार के मोटे कपड़ों और बिछावनों को कहा जाता है जो सोने के लिये बिछाया जाता है। इसे हम गद्दा भी कह सकते हैं। जाबिर रज़ि॰ बिना बिछाए मोटा-झोटा और सादा जीवन पसन्द करते थे और पत्नी कहती थीं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुआ़ से यह चीज़ मिली है इसलिये इस्तेमाल करुँगी।

बाब {केवल आवश्यक बिछौना ही बना कर रखें।}

1353:- जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक विस्तर पुरुष के लिये चाहिये और एक पत्नी के लिये और एक मेहमान के लिये, और (अगर चौथा भी है तो वह) चौथा शैतान के लिये होगा।

फ़ाइदा:– ज़ाहिर है ख़ाली रहेगा तो शैतान ही प्रयोग करोगे। इस में दिखावा और अभिमान भी है।

1354:– आइशा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का बिछौना जिस पर आप सोते थे चमड़े का था और उस के अन्दर खजूर की छाल भरी हुयी थी।

बाब {गोटमार कर बैठने और एक ही कपड़ा पूरे शरीर पर लपेटने से मना फ़रमाया है।}

1355:– जाबिर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बाँयें हाथ से खाने, एक ही जूता पहन कर चलने, और "इहतिबा" व "इश्तिमाले सम्मा" से मना फ़रमाया है।

फ़ाइदा:– "सम्मा" इस प्रकार चादर ओढ़ने को कहते हैं कि चादर को दाहिनी तरफ़ से लेकर बायें कन्धे पर डाल लिया जाये और फिर वही किनारा पीछे मे लेकर दायें कन्धे पर डाल लिया जाये और इस प्रकार चादर से दोनों कन्धों को लपेट लिया जाये। "इश्तिमाले सम्मा" इसे कहते हैं कि जिस्म पर ऊपर से नीचे तक केवल एक ही कपड़ा हो। इस प्रकार ओढ़ने से बैठते समय एक किनारा उठा कर बैठना पड़ता है और शर्मगाह खुल जाती है। आजकल हिन्दू में साधु-संत, महात्मा और पाखन्डी इसी प्रकार पहनते हैं (बुख़ारी-368, 5819) एक ही जूता पहन कर चलने से पैर ऊँचा-नीचा हो जाने से लंगड़ा कर चलेंगा, तेज़ी से नहीं चलेगा, गिर भी सकता है, इसलिये यह बुरी बात है।

बाब {चित्त लेटना (लेटे हुये) एक पाँव को दूसरे पाँव पर रखना मना है।}

1356:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम में से कोई एक पाँव को दूसरे पाँव पर रख कर चित्त न लेटे।

बाब {चित्त लेट कर एक पाँव को दूसरे पाँव पर रखना दुरुस्त है।}

1357:– अ़ब्बाद बिन तमीम अपने चचा से रिवायत करते हैं कि उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मस्जिद में इस हाल में देखा कि चित्त लेटे हुये हैं और एक पाँव दूसरे पाँव के ऊपर रखे हुये हैं।

फ़ाइदा:– चित्त लेट कर एक पाँव को दूसरे पाँव के ऊपर रखने से शर्मगाह के खुल ज़ाने की शंका रहती है। अगर तहबन्द पहने है तो वह खिसक कर रान पर आ जाती है। लेकिन अगर सतर्क है और तहबन्द को एहतियात से संभाले हुये है तो कोई हरज नहीं।

बाब {तहबन्द को आधी पिंडली से ऊपर रखने का बयान।}

1358:- इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास से गुज़रा उस समय मेरी तहबन्द लटक रही थी तो आप ने फ़रमायाः ऐ अ़ब्दुल्लाह! अपनी तहबन्द ऊपर कर लो, चुनान्चे मैं ने ऊपर कर लिया। आप ने फ़रमायाः और ऊँची करो, तो मैं ने और ऊँची कर ली। फिर (हमेशा) ऊँची ही कर के पहनता था। लोगों ने पूछाः कहाँ तक रखना चाहिये? इब्ने उमर रज़ि॰ ने कहाः आधी पिंडली तक।

बाब {जो व्यक्ति अभिमान करते हुये अपनी चादर और लुंगी को लटकाए गा, अल्लाह पाक (क़ियामत के दिन रहमत की नज़र से) उस को नहीं देखेगा।}

1359:- मुहम्मद बिन ज़ियाद ने बयान किया कि अबू हुरैरा रज़ि॰ ने देखाः एक व्यक्ति अपने तहबन्द को लटकाए हुये हैं, वह बहरैन का गवर्नर था, वह ज़मीन पर अपने पैर पटक-पटक कर कहता था कि "गवर्नर आया है, गवर्नर आया है।" यह देख कर अबू हुरैरा रज़ि॰ ने उस से कहाः नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि अल्लाह उस व्यक्ति को (क़ियामत के दिन) अपनी नज़र उठा कर भी नहीं देखेगा जो अपनी चादर अभिमान और तकब्बुर से लटका कर चलेगा।

1360:- अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक (क़ियामत के दिन) तीन आदमियों से न बात करेगा और न ही उन की तरफ़ नज़र उठा कर देखेगा और न ही उन्हें (गुनाहों से) पाक करेगा, बल्कि उन्हें दुःखदाई दन्ड देगा। आप ने इस वाक्य को तीन मर्तबा दोहराया। यह सुन कर अबू ज़र रज़ि॰ ने कहाः फिर तो ऐसे लोग बर्बाद हो गये और घाटे मैं रहे। ऐ अल्लह के रसूल! वह कौन लोग हैं? आप ने फ़रमायाः अपनी चादर (तहबन्द, पतलून और पाजामा टख़्नों से नीचे) लटकाने वाला, दूसरा एहसान कर के उसे जतलाने वाला, और तीसरा झूठी क़सम खा कर अपना माल बेचने वाला।

फ़ाइदा:- आजकल इमाम लोग नमाज़ शुरु करने से पूर्व कपड़ा टख़्ने से ऊपर कर लेने का एलान करते हैं, हालाँकि यह हुक्म नमाज़ के लिये नहीं है, बल्कि हर समय के लिये हैं। एक आदमी ने किसी सामान का 100 रुपया लगाया तो बेचने वाला झूठ बोल कर कहता है कि अल्लाह की क़सम फ़लाँ तो 150 रुपये दे रहा था लेकिन मैं ने नही दिया, चुनान्चे खरीदने वाला 150 रुपये में ले लेता है। इस हदीस में तहबन्द लटकाने के लिये गुरुर, तकब्बुर और अभिमान की शर्त है। मालूम हुआ कि अन्जाने में अगर लटक जाये तो माफ़ है। अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने कहा कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मेरे तहबन्द का निचला हिस्सा टख़्नों से नीचे लटक जाता है तो क्या इस का ख़्याल रखूँ? आप ने फ़रमायाः तुम उन में से नही हो जो तकब्बुर से ऐसा करते है। (बुख़ारी-5784-सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह) लेकिन सऊदी अरब के सुप्रसिद्ध मुफ़्ती इब्ने बाज़ रह॰ ने एक फतवे में तकब्बुर

करेन वाले और तकब्बुर न करने वाले दोनों ही के लिये हुक्म साबित किया है और यही सहीह फ़तवा है। यहाँ विस्तार से बयान का मौक़ा नहीं (देखें-फ़ताव इब्ने बाज़, उर्दू एडिशन)

बाब {जिस ने अपना कपड़ा तकब्बुर के नाते लटकाया (उस पर अल्लाह पाक रहमत की नज़र नहीं डालेगा।)}

1361:- अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो व्यक्ति गुरुर और तकब्बुर की बुनियाद पर अपना कपड़ा (ज़मीन पर) घसीटता है अल्लाह पाक (क़ियामत के दिन) उस पर अपनी नज़र नहीं करेगा।

बाब {एक आदमी इतराते हुये अकड़ कर चल रहा था तो वह ज़मीन में धंसा दिया गया।}

1362:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक व्यक्ति अपने बाल की लटों और तहबन्द पर इतराता हुआ चला जा रहा था कि वह ज़मीन में धंसा दिया गया, और वह क़ियामत तक ज़मीन में धंसता ही जायेगा।

फ़ाइदाः- आजकल यह बीमारी बहुत आ़म हो गयी है। मुंबइ और दिल्ली में विशेष कर एक प्रकार की पैन्ट और पतलून चली है जो इतनी लंबी होती है कि ज़मीन में घिसट कर उस का निचला किनारा कट जाता है और गुरुर और तकब्बुर से सीना तान कर अठिलाते हुये चलते हैं। ऐसे ही लोगों के लिये यह हदीस है। (बुख़ारी-5789-अबू हुरैरा)

बाब {जिस घर में कुत्ता और चित्र हो उस घर में (रहमत के) फ़रिश्ते नहीं दाख़िल होते।}

1363:- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी मैमूना रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक सुब्ह को चुपचाप उठे (जैसे कोई परेशान हाल उठता है और किसी से बात नहीं करता है) मैं ने पूछाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आज मैं ने आप का चेहरा ऐसा देखा है कि वैसा मैं ने कभी नहीं देखा है। आप ने फ़रमायाः जिब्रील ने मुझ से आज रात मिलने का वादा किया था मगर नहीं मिले और अल्लाह की क़सम! उन्होंने कभी वादा कर के उस के ख़िलाफ़ भी नहीं किया है। फिर आप दिन भर बेचैन रहे, इतने में ख़याल आया कि कुत्ते का एक पिल्ला मेरे खेमे के अन्दर है। चुनान्चे उसे निकाल बाहर किया गया, फिर आप ने पानी लेकर उस स्थान पर छिड़क दिया जहाँ वह बैठा हुआ था। फिर शाम को ज्रिबील आये तो आप ने उन से फ़रमायाः आप ने मुझ से बीती रात ही मिलने का वादा किया था? उन्होंने कहाः हाँ, मिलने का वादा तो किया था, लेकिन हम उस घर में नहीं जाते जिस घर में कुत्ता और चित्र हो। चुनान्चे आप ने सुब्ह होते ही कुत्तों को मार डालने का हुक्म दिया यहाँ तक कि छोटे-मोटे बाग़ (की निग्रानी करने वाले) कुत्तों को भी (मार डालने का हुक्म दिया) और केवल बड़े-बड़े बाग़ की रखवाली क़रने वाले कुत्तों को छोड़ दिया।

फ़ाइदाः– तस्वीर, चाहे काग़ज़ पर बनी हो, या दीवार पर बनी हो, या लक्ड़ी-पत्थर की मूर्ति की शक्ल की हो, इस में सब शामिल हैं। कुछ लोगों नेहाथ क़ी बनाई गयी तस्वीर और केमरे द्वारा खींची गयी तस्वीर में फ़र्क़ किया है, यह सब बेकार की बातें हैं, हर प्रकार से तस्वीर बनाना और उसे लटकाना हराम है। अ़ल्लामा क़र्ज़ावी ने "इस्लाम में हलाल और हराम" नामक पुस्तक में केवल इधर-उधर की बेकार की बातें की हैं। आज उन मुसलमान घरों का क्या हाल होगा जहाँ दिन-रात कुत्ते आते-जाते हैं और घरों को जीवधारी चित्रों से सजा रखा है। वह चित्र जो जीवधारी नहीं हैं, जैसे पेड़-पौधे, दरिया, पर्वत, जन्गल, आदि तो इन के चित्र लटका सकते हैं। बड़े-बड़े बागों की रखवाली करने वाले कुत्तों को छोड़ दिया, इस से मालूम हुआ कि मामूली कामों की निग्रानी के लिये पालना और जिलाना दुरुस्त नहीं है।

ऊपर की हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी आयी है (5960, 3227-इब्ने उमर) कुत्ता पालने से मुत्तअ़ल्लिक़ देखें ऊपर हदीस न॰ 1243, 1244, 1245 का फ़ाइदा। नसई शरीफ़ की रिवायत में कुत्ता और चित्र के साथ "जुनुबी" का भी ज़िक्र है, यानी पत्नी से संभोग करने के बाद घर में नापाकी की हालत में रहे और स्नान न करे तो उस घर में भी रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते हैं। (नसई)

1364:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः फ़रिश्ते उस घर में नहीं जाते जिस में मूर्तियाँ (स्टेचू) और चित्र हों।

बाब {फ़रिश्ते उस घर में नहीं दाख़िल होते जिस में चित्र हों, अल्बत्ता कपड़े के ऊपर फूल-बूटे बने हों तो इस में कोई हरज नहीं।}

1365:– नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबी अबू तल्हा से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः फ़रिश्ते उस घर में नही जाते जिस के अन्दर चित्र हों। बुस्र बिन सअ़ीद ने कहा कि ज़ैद बिन ख़ालिद बीमार हुये तो हम उन का हाल-चाल लेने गये तो देखा कि उन के दर्वाज़े पर एक पर्दा लटका हुआ है जिस पर चित्र बना हुआ है। चुनान्चे मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी मैमूना रज़ि॰ के रबीब उबैदुल्लाह ख़ौलानी से कहा कि स्वँय ज़ैद ने मुझ से चित्रों वाली हदीस बयान की थी (और आज इन्ही के घर चित्रों वाला पर्दा लटका है) यह सुन कर ख़ौलानी ने कहाः क्या आप ने नहीं सुना था? उन्होंने यह भी तो कहा था "मगर कपड़े में जो बेल-बूटे हों" (वह चित्र में नहीं शामिल हैं)

फ़ाइदाः– यहाँ हम संक्षिप्त में शैख़ इब्ने बाज़ रह॰ का फ़तवा नक़ल करते हैं। "चित्र अगर मनुष्य अथवा किसी जीवधारी के हों तो हराम है। आ़इशा रज़ि॰ ने अपने घर के आगँन में एक पर्दा लटका रखा था जिस पर चित्र बने थे जिसे आप ने फाड़ डाला..

.. (मुस्लिम) हाँ, अगर चित्र फ़र्श पर हो जिसे रौंदा जाता हो, या तकिया पर हो कि उस परे टेक लगाया जाता हो तो इस में कोई हरज नहीं, क्योंकि एक मर्तबा जिब्रील ने आप के पास आने का वादा किया तो वह आये, लेकिन घर में नहीं दाख़िल हुये। आप ने कारण पूछा तो बताया कि घर में तस्वीर है, पर्दे में तस्वीरें बनी हैं और घर में कुत्ता भी है। जिब्रील ने कहा कि तस्वीर के सर को काट दिया जाये, पर्दो को फाड़ कर उस के दो तकिए बना लिये जायें जिन्हें पाँव तले रौंदा जाये और कुत्ते को निकाल दिया जाये (नसई) कुत्ते का पिल्ला हसन या हुसैन का था जो घर के सामान के नीचे कहीं छुपा बैठा था (फ़तावा इब्ने बाज़ उर्दू एड़िशन पृष्ठ 180) यहाँ ज़ैद बिन ख़ालिद के पर्दे में फूल बूटे बने हुये थे (न कि जीवधारी के चित्र) इसलिये नाजाइज़ होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

बाब {वह पर्दा मक्रूह है जिस पर (जीवधारी की) तस्वीरें बनी हों। ऐसे कपड़े को काट कर तकिया बना लेना चाहिये।}

1366:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मेरे घर में दाख़िल हुये, उस समय मैं ने ताक़ या मचान को एक पर्दा से ढाँक रखा था जिस में तस्वीरें बनी हुयी थीं। जब आप की उस पर नज़र पड़ी तो उसे फाड़ डाला और आप के चेहरे का रन्ग बदल गया और फ़रमायाः ऐ आइशा! सब से अधिक दन्ड क़ियामत के दिन उन लोगों को होगा जो अल्लाह की मख़्लूक़ की तस्वीरें बनाते हैं। आइशा रज़ि॰ ने कहा कि फिर मैं ने काट कर दो या एक तकिया बना लिया।

1367:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने किसी सफ़र से वापस आये, और मैं ने अपने दर्वाज़े पर एक पर्दा लटका रखा था जिस पर घोड़ों की तस्वीरें बनी थीं तो आप के हुक्म से मैं ने उसे नोच डाला।

फ़ाइदाः– देखें ऊपर का फ़ाइदा। तकिया, बिछौना, या ज़मीन और फ़र्श पर तस्वीर हो उसे कुचला और रौंदा जाये तब तो ठीक है, वर्ना नहीं। और जीवधारी के अतिरिक्त कुछ भी बनाना और उन्हें प्रयोग करना निःसंदेह जाइज़ है। आप तबूक की जन्ग से वापस आये थे।

बाब {बिछौना के ऊपर बिछाने वाली चादर पर अगर तस्वीर हो तो उसे तकिया बना लिया जाये।}

1368:– आइशा रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने गद्दे के ऊपर बिछाने वाली एक चादर ख़रीदी जिस पर तस्वीरें बनी थीं। आप ने उसे देखा तो दर्वाज़े ही पर खड़े रहे और अन्दर नहीं आये। मैं ने तुरन्त भाँप लिया कि आप नाराज़ हैं। मैं ने कहाः ऐ अल्लह के सन्देष्टा! मैं अल्लह और उस के रसूल के सामने तौबा करती हूँ, मैं ने क्या पाप कर डाला? आप ने पूछाः यह गद्दा (या उस के ऊपर की चादर) कैसी है? मैं ने उत्तर दिया कि इसे आप

के बैठने और तकिया लगाने के लिये ख़रीदा है। आप नेफ़रमायाः जिन्होंने यह चित्र बनाए हैं उन्हें दन्ड होगा और उन से कहा जायेगा कि इन में प्राण डालो। फिर फ़रमाया कि जिस घर में तस्वीरें हों वहाँ फ़रिश्ते नहीं आते। एक दूसरी रिवायत में है कि फिर मैं ने उस के दो तकिए बना लिये और आप उस पर आराम फ़रमाते थे।

फ़ाइदाः– देखें हदीस न॰ 1365 का फ़ाइदा। तकिया, बिछौना, गद्दा, क़ालीन, तकिया आदि पर अगर तस्वीर है जिस पर बैठा जाये, रौंदा जाये, लेटा जाये तो जाइज़ है।

बाब {चित्र बनाने वालों को क़ियामत के दिन दन्ड दिया जायेगा।}

1369:– सअ़ीद बिन अबुल हसन ने बयान किया कि एक व्यक्ति अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि॰ के पास आया और कहने लगाः मैं चित्रकार (तस्वीरें बनाने वाला) हूँ, तो इस बारे में क्या हुक्म है? आप मुझे कुछ बताएँ। इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने कहाः मेरे निकट आओ। चुनान्चे वह उन के निकट हो गया तो कहाः और निकट आओ। जब वह उन के यकदम निकट आया तो उन्होंने अपना हाथ उस के सर पर रख कर कहाः मैं तुम से वही बयान करूँगा जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है। मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि हर चित्रकार जहन्नम में जायेगा। उस के बनाए गये हर चित्र के बदले एक जीवधारी वस्तु बनाई जायेगी जो उसे जहन्नम में दन्ड देगी। इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने कहा कि अगर तुम बनाना ही चाहते हो तो पेड़-पौधों और बिना जीव वाली तस्वीरें बनाओ।

बाब {चित्र बनाने वालों पर सख़्ती का बयान।}

1370:– अबू ज़ुरअ़ा ने बयान किया कि मैं अबू हुरैरा रज़ि॰ के साथ मर्वान के घर में दाख़िल हुआ तो वहाँ तस्वीरें देखीं। इस पर अबू हुरैरा रज़ि॰ ने कहाः मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि अल्लाह पाक ने कहा हैः उस से बढ़ कर दोषी भला और कौन होगा जो मेरे बनाने की तरह बनाता है। (पहले ज़रा) एक चींटी, या गेहूँ, या जौ बना कर तो दिखाए।

फ़ाइदाः– बनाने का अर्थ यह है कि जिस प्रकार हम ने जीवधारी बनाए हैं उन के अन्दर हड्डी है, रक्त है, माँस है, इसी प्रकार वह भी बना कर दिखाएँ।

बाब {सोने की अगूँठी बनाना मना है। इसी प्रकार चाँदी के बर्तन में खाना-पीना और रेशम व दीबाज पहनना मना है।}

1371:– बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमें सात बातों का आदेश दिया और सात बातों से मना किया। हमें (1) बीमार का हाल-चाल मालूम करने (2) जनाज़ा के साथ जाने (3) छींक का जवाब देने (4) क़सम को पूरा करने (5) मज़लूम की सहायता करने (6) दावत को

क़ुबूल करने (7) और सलाम को फैलाने का आदेश दिया है। चित्र बने ज़ीन पोश (4) क़स्सी कपड़ा पहनने (5) रेशम का कपड़ा पहनने (6) इस्तबरक़ पहनने (7) और दीबाज पहनने से मना फ़रमाया है।

फ़ाइदा:— हदीस का अर्थ स्पष्ट है। क़सम वही पूरी की जायेगी जो जाइज़ काम के लिये खाई गयी हो। दावत में जाना अनिवार्य है अगर रोज़े से हो तो कह दे कि मैं रोज़े से हूँ। सोने की अगूँठी केवल मर्द के लिये हराम है और सोने-चाँदी के बर्तन में खाना-पीना दोनों के लिये हराम है। रेशम, क़स्सी आदि केवल मर्द के लिये हराम है। मिस्र के एक नगर "क़स्स" के बने कपड़े को "क़स्सी" कहा जाता है, यह रेशम का होता था, यही हाल दीबाज और इस्तबरक़ का है। (बुख़ारी-5863-बरा बिन आज़िब)

बाब {सोने की अगूँठी उतार फैंकने का बयान।}

1372:— अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक व्यक्ति के हाथ में सोने की अन्गूठी देखी तो उसे निकाल कर फेंक दिया और फ़रमाया: तुम में से कोई जहन्नम की आग के अन्गारे का इरादा करता है फिर उसे अपने हाथ में ले लेता है। फिर जब आप वहाँ से चले गये तो लोगों ने उस व्यक्ति से कहा: तू अपनी अन्गूठी उठा ले और (उसे बेच कर उस की क़ीमत से) लाभ उठा तो उस ने कहा: अल्लाह की क़सम! मैं उस वस्तु को हाथ नहीं लगाऊँगा जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फेंक दिया हो।

फ़ाइदा:— अगर वह उठा लेता और बेच डालता तो यह गुनाह का काम नहीं था, लेकिन नबी के हुक्म का इतना ख़याल था कि उसे उठाना तक पसन्द न किया।

1373:— अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सोने की एक अन्गूठी बनवाई। आप उसे जब पहनतेतो उस का नगीना हथेली की तरफ़ रखते। एक बार (उसे पहन कर) आप मिंबर पर तशरीफ़ लाये तो उसे उतार दिया और फ़रमाया: मैं इसे पहनता था और इस का नगीना अन्दर (हथेली की तरफ़) रखता था, फिर उसे फेंक दिया और फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! मैं इसे अब कभी नहीं पहनूँगाँ। (आप को फेंकता देख कर) इस पर लोगों ने भी अपनी-अपनी अन्गूठियाँ उतार कर फेंक दीं।

फ़ाइदा:— हो सकता है आप ने उस समय बनवाई हो जब सोना पहनना पुरुष के लिये हलाल रहा हो, फिर हराम होने के बाद आप ने निकाल कर फेंक दिया (बुख़ारी-5867-इब्ने उमर)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चाँदी की अन्गूठी पहनी है जिस पर "मुहम्मदूर्रसूलुल्लाह" लिखा हुआ था। और आप के बाद ख़लीफ़ा लोगों ने भी पहना।}

1374:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चाँदी की अँगूठी बनवाई जिसे आप ने पहनी, फिर उसे अबू बक्र ने पहनी, फिर उमर ने भी पहनी, फिर उस्मान ने भी पहनी, लेकिन इन के हाथ से "अ़रीस" नामक कुँए में गिर गयी। उस अन्गूठी पर "मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" लिखा हुआ था।

फ़ाइदाः– उस्मान ग़नी रज़ि॰ ने उसे बहुत तलाश किया, कुएँ का सारा पानी निकलवाया और कीचड़ तक निकलवा दिया लेकिन अगूँठी न मिली। ख़लीफ़ा भी सरकारी पत्रों पर उसी की मोहर लगा कर भेजा करते थे। (बुख़ारी–5866–इब्ने उमर)।

1375:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चाँदी की अन्गूठी बनवाई और उस में "मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" का नक़्श बनवाया। फिर आप ने लोगों से कहाः मैं ने चाँदी की अन्गूठी बनवाई है। और उस में "मुहम्मदुर्रसूल्लाह" शब्द खोदवाया है, इसलिये कोई और इस शब्द को (अपनी अन्गूठी पर) न खोदवाए।

फ़ाइदाः– इसलिये कि मैं इसे सरकारी मोहर के तौर पर प्रयोग करता हूँ और सरकारी मोहर को और कोई दूसरा नहीं प्रयोग कर सकता। अब आजकल उन शब्दों को खोदवा कर पहनना बिला शुब्हा जाइज़ है।

1376:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने (ईरान के शासक) किसरा और (रुम के शासक) क़ैसर और (हबश के शासक) नजाशी को पत्र लिखना चाहा तो आप से बताया गया कि वह लोग उस समय तक पत्र स्वीकार नहीं करते जब तक उस पर (सरकारी) मोहर न लगी हो। चुनान्चे आप ने एक अन्गूठी बनवाई जिस का छल्ला चाँदी का था और उस में "मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" खोदा हुआ था।

बाब {उस चाँदी की अन्गूठी का बयान जिस का नगीना हब्शी पत्थर का हो, और उसे दाँए हाथ में पहनने का बयान।}

1377:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चाँदी की अन्गूठी अपने दाँए हाथ में पहनी, उस का नगीना आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी हथेली की तरफ़ (यानी अन्दर) रखते थे।

फ़ाइदाः– एक दूसरी रिवायत में हैं कि उस का नगीना अ़क़ीक़ पत्थर का था। और यह पत्थर हब्शा में पाया जाता था। आप ने एक और अन्गूठी बनवाई थी जिसका नगीना चाँदी ही का था (बुख़ारी–5870–अनस) इस प्रकार आप के पास दो अन्गूठियाँ थीं (नौवी)

बाब {बाएँ हाथ की छँगुली में अन्गूठी पहनने का बयान।}

1378:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस उँगली में अन्गूठी पहनते थे, फिर अपने बाएँ हाथ की छँगुली की तरफ़ इशारा किया।

बाब {बीच वाली और उस के बग़ल वाली उंगली में अन्गूठी पहनना मना है।}

1379:– अ़ली रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे इस और इस उँगली में अन्गूठी पहनने से मना फ़रमाया, और फिर अपनी बीच वाली उँगली और उसके पास वाली उँगली की तरफ़ इशारा किया (इन में पहनने से इसलिये मना किया, क्योंकि यही दो उँगलियाँ काम करते समय सदा सहयोग करती हैं और अन्गूठी पहनने से रुकावट होती है। (छगुँली चूँकि अलग रहती है इसलिये उसी में पहनना बेहतर है।)

फ़ाइदाः– ऊपर की हदीसों में दायें और बाँए दोनों हाथों में पहनने का ज़िक्र है। इस से मालूम हुआ कि दोनों हाथों में पहनना जाइज़ है, लेकिन दाएँ हाथ में बहरहाल पहनना अफ़ज़ल है। और उँगलियों में शहादत की उँगली और बीच वाली उँगली में नहीं पहननी चाहिये, क्योंकि यही दोनों उँगलियाँ अधिक काम करती हैं इसलिये इन में पहनने से काम करने में कठिनाई होगी। यहाँ जाइज़-नाजाइज़ का प्रश्न नहीं, बेहतर और ना बेहतर की बात है। इब्ने उमर बायें हाथ में पहनते थे। (अबू दावूद-4228-नाफ़े)

बाब {जूता पहनने और अधिक से अधिक पहनने का बयान।}

1380:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं एक जिहाद में जिस में मैं स्वयँ शरीक था नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि जूतियाँ बहुत अधिक पहना करो, क्योंकि आदमी जब तक जूतियाँ पहने रहता है सवार रहता है।

फ़ाइदाः– यानी जूता पहनने की आवश्यक्ता नहीं पड़ती, तुरन्त घोड़े पर सवार हो कर जिहाद के लिये तय्यार। अगर जूती नहीं पहने हैं और अचानक कहीं भाग कर जाने की ज़रुरत पड़ जाये तो पहले जूता ढूँड़ो, फिर मोज़ा देखो, फिर पहनो, फीता कसो और तब तक गाड़ी छूट जायेगी। इस में कम से कम 10 मिनट का समय लगेगा।

बाब {जूता जब पहने तो दायें तरफ़ से पहने और जब उतारे तो बायें तरफ़ से उतारे।}

1381/1:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब तुम में से कोई जूता पहने तो दायें पाँव से शूरु करे और जब उतारे तो बायें तरफ़ से उतारे। और पहने तो दोनों ही पहने और उतारे तो दोनों ही उतारे।

फ़ाइदाः– ऐसा नहीं कि एक पैर का पहन का चलने लगे, या एक पैर का उतार कर और दूसरा पैर में है और चलने लगे। देखें हदीस न॰ 1382)

1381/2 अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

फ़रमायाः तुम में से कोई एक ही जूता पहन कर न चले, बल्कि दोनों पहन कर चले, या दोनों ही उतार कर (दोनों पैर नंगे चले।)

फ़ाइदा:— क्योंकि एक पैर में जूता है और एक पैर नन्गा है तो अव्वल तो देखने में बुरा लगेगा, दूसरे चलेगा तो लंगड़ा कर चलेगा, तीसरे मोच खा कर गिर भी सकता है। यह है इस्लामी शरीअ़त जिस ने जूता पहनने तक की शिक्षा दी है।

बाब {अपने आधे सर के बाल मूँड दे और आधे सर के छोड़ दे, यह जाइज़ नहीं।}

1382:— इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने "क़ज़ा" से मना फ़रमाया है। हदीस के रावी ने कहा कि मैं ने इमाम नाफ़े से पूछाः "क़ज़ा" किसे कहते हैं? उन्होंने कहा कि सर के कुछ हिस्से के बाल मूँड देना और कुछ हिस्से के छोड देना इसी का नाम "क़ज़अ़" है।

फ़ाइदा:— हमारे मुल्क में तो ऐसा कम है लेकिन अफ़रीक़ा आदि मुल्कों के काफ़िर इसी प्रकार सर मूँड़ते हैं। देखने में ऐसा लगता है कि उस का चेहरा बिगाड़ दिया गया है। बच्चा, बूढ़ा, और महिला-पुरुष सब के लिये मना है और यह कि इस में यहूदियों से मुशाबहत भी है। (क़स्तलानी, बुख़ारी-5920, 5921-इब्ने उमर)

बाब {महिलाओं के लिये सर के बाल में बाल जोड़ना मना है।}

1383:— अबू बक्र रज़ि॰ की पुत्री अस्मा से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास एक महिला ने आ कर कहाः ऐ अल्लह के सन्देष्टा! मेरी पुत्री दुल्हन बनने वाली है, लेकिन उस के बाल ख़सरा की बीमारी में झड़ गये हैं तो क्या मैं उस के बालों में जोड़ लगा सकती हूँ? आप ने फ़रमायाः अल्लाह पाक ने जोड़ लगानेऔर लगवाने बालों पर लानत की है।

बाब {सर के बालों में दूसरे बाल जोड़ना महिला के लिये मना है।}

1384:— जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने महिला को अपने सर में जोड़ लगाने से मना फ़रमाया है।

1385:— अ़ब्दुरहमान बिन औ़फ़ के पुत्र हुमैद ने बयान किया कि मैं ने हज्ज के साल (मदीना में) मिंबर पर मुआ़विया बिन अबू सुफ़यान को खुत्बा में बयान करते सुना, उस समय उन्होंने बालों की चोटी अपने नौकर (चौकीदार) के हाथ से लेकर उठा रखी थी और कह रहे थेः ऐ मदीना वालों! तुम्हारे मौलाना लोग कहाँ हैं? मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना है आप इस से मना फ़रमाते थे (यानी बालों में चोटी जोड़ने से) और फ़रमाते थे कि जब बनी इस्राईल की महिलाओं ने यह सब करना आरंभ किया तो वह तबाह-बर्बाद हो गये।

फ़ाइदा:— आजकल दिल्ली के बाज़ारों, मीना बाज़ार, चित्तली क़ब्र, सदर बाज़ार और

चाँदनी चौक में किस प्रकार मुस्लिम महिलाएँ इन सामानों की ख़रीदारी करती हैं, और रुपये-पैसे बर्बाद करती हैं, अल्लाह रहम करे। यह हदीसें बुख़ारी शरीफ़ में भी आयी है (5932, 5933, 5934, 5935, 5936, 5939) आजकल दीन इस्लाम की बातें बताने वाले उलमा की महिलायें भी प्रयोग करती हैं।

बाब {चेहरे के बाल उखाड़ने वाली और दाँतो के दर्मियान कुशादगी **(space)** कराने वाला महिलाओं पर लानत है।}

1386:- अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ ने बयान किया कि अल्लाह पाक ने गोदना, गोदने वालों, गोदवाने वालियों, चेहरे के बाल उखाड़ने वालों और उखड़वाने वालियों, सुन्दर दिखने के लिये दाँतो के दर्मियान कुशादगी पैदा करने वालियों, और अल्लाह पाक के बनाए हुये में तबदीली पैदा करने वालियों पर लानत भेजी है।

यह सूचना क़बीला बनी असद की एक महिला उम्मे याकूब को मिली जो कुरआन पढ़ना जानती थीं, तो वह इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ के पास आ कर बोलीं कि में ने सुना है आप गोदना गोदने वाली, मुँह के बाल उखाड़ने वाली, उखड़वाने वाली और दाँतो के दर्मियान दूरी बनाने वाली महिलाओं पर लानत भेजते हैं? यह सुन कर इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ बोलेः मैं क्यों न उन पर लानत भेजूँ जिन पर अल्लाह ने लानत भेजी है, और फिर यह तो अल्लाह की किताब (कुरआन) में भी मौजूद है। वह बोलींः मैं ने भी कुरआन को पढ़ा है लेकिन मुझे तो उन में यह हुक्म नहीं मिला। इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ ने कहाः अगर ध्यान से पढ़ती तो तुम्हें ज़रुर यह हुक्म मिलता (देखों!) अल्लाह पाक ने फ़रमाया हैः "जो कुछ सन्देष्टा तुम्हें हुक्म दें उस पर अ़मल करो और जिस से मना कर दें उस से दूर रहो" (सूरः हश्र-7, पार-28)

उम्मे याकूब (की दाल नहीं गली और कुछ नहीं मिला तो उन्हों) ने कहा कि आप के घर की महिलायें भी यह सब करती हैं। उन्होंने कहाः जा कर देख लो। चुनान्चे उन्होंने जा कर देखा तो कुछ न पाया। चुनान्चे वापस आ कर कहने लगींः मैं ने कुछ नहीं पाया। इब्ने मस्ऊद ने कहाः अगर वह ऐसा करतीं तो हम उन से हमबिस्तरी ही न करते (उन्हें घर से निकाल देते)

फ़ाइदाः- यह महिला बड़ी पढ़ी-लिखी, बुद्धिमान और तेज़ थीं, किस प्रकार घुमा-फिरा कर इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ को दबाना चाहती थीं। (बुख़ारी शरीफ़-4886, 5931, 5948) गोदना के बारे में तो सभी जानते हैं। दो दाँतो के दर्मियान खुलापुन और दूरी होती है तो वह सुन्दर लगते हैं। आजकल मशीन द्वारा रगड़ कर जगह बना देते हैं। यह अल्लाह की बनावट में तबदीली पैदा करना है और हराम है।

बाब {अपने आप को "पेटभरा" साबित करना, हालाँकि वह ख़ाली पेट हो, यह दुरुस्त नहीं।}

1387:- अस्मा रज़ि॰ ने बयान किया कि एक महिला नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि

वसल्लम के पास आयीऔर कहने लगी कि मेरे एक सौकन है तो अगर मैं (उस का दिल जलाने के लिये) यह कहूँ कि पति ने मुझे यह दिया है और हालाँकि कुछ नहीं दिया है, तो क्या इस पर गुनाह है? आप ने फ़रमायाः जिसे कोई चीज़ नहीं मिली है और वह बयान करे कि उसे मिली है तो उस की मिसाल ऐसे हैं कि किसी ने धोखा देने के लिये दो कपड़े पहन लिये (कि मैं बड़ा प्रहेज़गार हूँ, हालाँकि वह दग़ाबाज़ है)

बाब {उन महिलाओं के सन्बंध में बयान जो कपड़ा पहने हुये भी नंगी रहती हैं।}

1388:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जहन्नमी लोगों की ऐसी भी दो क़िसमें हैं जिन्हें (अभी तक) मैं ने नहीं देखा है। उन में एक तो वह लोग हैं जिन के पास बैल की दुम की तरह कोड़े हैं और वह उस से लोगों कोमारते हैं। और दूसरी वह महिलायें हैं जो कपड़ा पहने होने के बावजूद नंगी नज़र आती हैं। यह महिलायें स्वँय (दूसरों को देख कर) रीझती हैं और दूसरों को रिझाती हैं। उन के सर (मटक कर चलने से) बुख़्ती ऊँट के कोहान की तरह एक तरफ़ झुके हुये होंगे। ऐसी महिलायें जन्नत में जाना तो दूर उस की खुश्बू तक सूँघने को न मिलेगी, हालाँकि जन्नत की खुश्बू इतनी-इतनी दूर से सूँघी जा सकती है।

फ़ाइदा:– इस प्रकार की महिलायें आजकल हर स्थान पर नज़र आती हैं। वह किस हाल में होती हैं यह बयान से बाहर है। वह कोड़े भी देखे जा सकते हैं जिन का ज़िक्र इस हदीस में है। सर के बाल इस प्रकार घुमा फिरा कर ऊँचा कर के किलिप से बाँधती हैं और अठिला कर चलती हैं, जैसे ऊँट का कोहान। एक दूसरी हदीस में है कि जन्नत की खुश्बू चालीस मील की दूरी से महसूस होगी।

बाब {जानवरों के गले में लटकाई हुयी (टोने-टोटके की) चीज़ें काट कर फेंक दी जायें।}

1389:– अबू बशीर अन्सारी रज़ि॰ से रिवातय है उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ किसी सफ़र में था कि आप ने लोगों के पास एलान करने वाले एक व्यक्ति को भेजा। अ़ब्दुल्लाह बिन अबू बक्र रज़ि॰ ने कहा कि मैं समझता हूँ उस समय लोग अपने-अपने सोने के स्थानों में थे (तब एलान करने वाले को भेजा) और हुक्म दिया कि जिन ऊँटों के गले में ताँत या हार पड़े हों उन्हें काट कर फेंक दिया जाये। मालिक ने कहा कि मेरे ख़याल से लोग बुरी नज़र से बचाव के लिये पहनाते थे।

फ़ाइदा:– जाहिलिय्यत के ज़माना में मक्का के मुश्रिक लोग बुरी नज़र से जानवरों को बचाने के लिये उन के गले में ताँत आदि पहना देते थे। आप ने इस से मना फ़रमा दिया। आजकल मुसलमान भी दुधारु गायों और भैंसों के गले में कछुए की हड्डी या बैर

आदि की लकड़ी पहना देते हैं, यह सब शिर्क के कार्य हैं। आप ने खुबसूरती वाले हार भी पहनाने से मना कर दिया था, क्योंकि यह भी उसी ही के मुशाबह था, लेकिन इसे अब पहनाना जाइज़ है।

बाब {घन्टी (जानवरों के गले में लटकाने के बारे में) और इस बारे में कि (रहमत के) फ़रिश्ते सफ़र में साथ नहीं रहते जिस में कुत्ता और घन्टी हो।

1390:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः (रहमत के फ़रिश्ते) उस मुसाफ़िर के साथ नहीं रहते जिस में घन्टी हो या कुत्ता हो।

1391:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः घन्टी शैतान का बाजा है।

फ़ाइदा:– कुत्ता तो नापाक जानवर है। इस के घर में रहने से रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते (देखें हदीस न॰ 1363 का फ़ाइदा) सफ़र आदि में इसे साथ रखने से भी फ़रिश्ते नहीं आते इसलिये इसे साथ में नहीं ले जाना चाहिये। और घन्टी जो जानवरों के गले में बाँध दी जाती है जो जानवर के चलते समय बजती रहती है इसे शैतान सुन कर खुश होता है। गोया यह शैतान के बाजे की आवाज़ है, इसलिये इन सब चीज़ों के प्रयोग से बचना चाहिये।

बाब {जानवरों के चेहरे को दाग़ना मना है।}

1392:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जानवरों के मुँह पर मारने और मुँह को दाग़ने से मना फ़रमाया है।

1393:– उम्मे सलमा के आज़ाद किये हुये गुलाम नअ़ीम बिन अ़ब्दुल्लह ने बयान किया कि मैं ने इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ को बयान करते सुना कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक गधे को देखा जिस का मुँह दाग़ा हुआ था तो आप ने इस बात को नापसन्द किया और फ़रमायाः अल्लाह की क़सम! मैं तो मुँह से दूर हट कर दाग़ने का हुक्म देता हूँ। और अपने गधे के पट्ठों को दाग़ने का हुक्म दिया। और सब से पहले आप ही ने पट्ठों को दाग़ने का हुक्म दिया।

बाब {बकरियों के कान दाग़ने का बयान।}

1394:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास बाड़े में गया तो क्या देखा कि आप बकरियों के कानों को दाग़ रहे थे।

बाब {जानवरों के पीठ को दाग़ने का बयान।}

1395:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब (मेरी माता जी) उम्मे सुलैम के हाँ बच्चा पैदा हुआ तो उन्होंने मुझ से कहाः ऐ अनस! तुम इसे देखते रहना, सुब्ह तक कुछ न खाये पीये जब तक सुब्ह को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास न ले जाये और आप अपने मुँह से चबा कर इस के मुँह में कुछ न डाल दें।

अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि फिर मैं सुब्ह को आप के पास गया तो उस समय आप एक बाग़ में थे और "हुवैत" के स्थान की बनी हुयी एक कंबल ओढ़े थे और अपने ऊँटों को दाग़ रहे थे जो फ़त्ह मक्का के मौक़ा पर आप के पास आये थे।

फ़ाइदाः– बुख़ारी की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तीन चीज़ों में शिफ़ा है (1) पोछना लगवाने में (2) शहद पीने में (3) आग से दाग़ने में। लेकिन मैं आग से दाग़ने को मना करता हूँ (5681–इब्ने अ़ब्बास) (5704–जाबिर) इन हदीसों को इकट्ठा करने के बाद यह अर्थ निकलता है कि मुँह को दाग़ना तो सख़्त मना है और यह जाइज़ नहीं। लेकिन अगर केवल दाग़ना ही विकल्प बचा हो तो मुँह को छोड़ कर दूसरे हिस्सों को दाग़ना जाइज़ है। सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ि॰ के बाज़ू को दो मर्तबा दाग़ा गया था (इब्ने माजा–3494–जाबिर) उबय्यि बिन कअ़ब ने भी दाग़ लगवाया था (मुस्लिम–2207–जाबिर) ख़ुलासा यह है कि मुँह को दाग़ना नाजाइज़ है। बिला वजह दाग़ से उपचार करना मक्रुह है और मजबूरी में जब दाग़ना ही विकल्प हो तो जाइज़ है।

अनस बिन मालिक रज़ि॰ किस काम से आप के पास गये थे? देखें आगे आने वाली हदीस न॰1400, 1401।

❀ ❀ ❀

किताबुल अ-दबि
(आदाब व अख़्लाक़ का बयान)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरे नाम पर नाम रखो, लेकिन मेरी कुन्नयित पर किसी की कुन्नीयत न रखो।}

1396:– अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति ने बक़ीअ़ के स्थान पर अपने दूसरे साथी को पुकाराः ऐ अबुल् क़ासिम! यह सुन कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस की तरफ़ देखने लगे तो उस ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! मैं ने आप को नहीं, बल्कि फ़लाँ को पुकारा है (क्योंकि उस की भी कुन्नीयत यही है) आप ने फ़रमायाः मेरे नाम पर नाम तो रख लो, लेकिन मेरी कुन्नीयत पर किसी की कुन्नीयत न रखो।

फ़ाइदाः– अस्ल नाम के अतिरिक्त कुछ लोग और दूसरा नाम रख लेते हैं उसे "कुन्नीयत" कहा जाता है। चूँकि आप की कुन्नीयत भी "अबुल क़ासिम" थीं, इसलिये आप ने मना कर दिया ताकि शुब्हा न हो। आप के देहान्त के बाद यह कुन्नीयत रखना दुरुस्त है। (बुख़ारी–6187–जाबिर) (6203, 6204, 6207)

बाब {"मुहम्मद" नाम रखने का बयान।}

1397:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लह रज़ि० से रिवायत है उन्हेंाने बयान किया कि हमारे यहाँ किसी के घर बच्चा पैदा हुआ तो उस ने उस का नाम "मुहम्मद" रखा। इस पर लोगों ने कहा कि हम तुम्हें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नाम की कुन्नीयत से नहीं पुकारेंगे (यानी "अबू मुहम्मद" नहीं कहेंगे) जब तक तुम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जा कर अनुमति न ले लो। चुनान्चे वह आप के पास गया और कहने लगाः मेरे घर एक बच्चा पैदा हुआ है जिस का नाम मैं ने मुहम्मद रखा है लेकिन मेरी क़ौम के लोग आप का नाम रखने सेमना करते हैं। इस पर आप ने फ़रमायाः (कोई बात नहीं) मेरे नाम पर नाम रख सकते हो, लेकिन मेरी कुन्नीयत न रखो, क्योंकि "क़ासिम" मैं हूँ और मैं ही तुम्हारे दर्मियान (दीन का अ़िल्म, माले ग़नीमत आदि) तक़्सीम करता हूँ।

बाब {अल्लाह के निकट सब से अच्छे नाम "अ़ब्दुल्लाह" और "अ़ब्दुर्रहमान" हैं।}

1398:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम्हारे नामों से बेहतर नाम अल्लाह के निकट अ़ब्दुल्लाह और अ़ब्दुर्रहमान हैं।

बाब {बच्चे का नाम "अ़ब्दुर्रहमान" रखना।}

1399:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम में से किसी के यहाँ बच्चा पैदा हुआ तो उस ने उस बच्चे का नाम क़ासिम रखा, इस पर लोगों ने कहा कि हम तुम्हें अबुल् क़ासिम की कुन्नीयत नहीं देंगे (यानी इस नाम से तुम्हें नहीं पुकारेंगे) और न तुम्हारी आँखें ठन्डी करेंगे। इस पर वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास गया और घटना बयान की तो आप ने फ़रमाया: अपनेबेटे का नाम अ़ब्दुर्रहमान रख लो।

बाब {बच्चे का नाम अ़ब्दुल्लाह रखना, उस के सर पर हाथ फेरना और उस के लिये दुआ़ करने का बयान।}

1400:– उर्वा बिन जुबैर और मुन्जुर बिन जुबैर की पुत्री फ़ातिमा से रिवायत है, उन दोनों ने बयान किया (अबू बक्र रज़ि॰ की पुत्री) अस्मा रज़ि॰ हिजरत की निय्यत से (जब मक्का से) निकलीं तो उस समय उन के पेट में अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर थे। चुनान्चे जब वह कुबा पहुचीं तो वहीं पर अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर पैदा हुये। फिर उन्हें लेकर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास गयीं ताकि आप उन की तहनीक कर दें। चुनान्चे आप ने उन्हें अस्मा से लेकर अपनी गोद में बैठा लिया और खजूर माँगा। आ़इशा रज़ि॰ ने बयान किया कि खजूर तलाश करने में थोड़ा समय लगा (फिर ला कर आप को दिया तो) आपने उसे चबाया और उसे उन के मुँह में डाल दिया। चुनान्चे पहली चीज़ जो अ़ब्दुल्लाह के पेट में पहुँची वह आप का थूक था। अस्मा रज़ि॰ ने बयान किया कि इस के बाद आप ने बेटे के ऊपर हाथ फेरा और उस के लिये दुआ़ की और उस का नाम अ़ब्दुल्लाह रखा।

फिर जब वह 7–8 वर्ष की आयु के हुये तो (अपने पिता जुबैर के हुक्म से) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ पर बैअ़त करनेके लिये गये। आप ने उन्हें अपनी तरफ़ आता देख कर मुस्कुराने लगे और उन से बैअ़त की।

फ़ाइदा:– 'तहनीक़' का अर्थ है "ख़ैर–बर्कत और भलाई के लिये किसी नेक आदमी का खजूर अथवा कोई मीठी चीज़ चबा कर उस का जूस और अपना थूक बच्चे के मुँह में डाल देना" इस से लाभ यह होता है उस बुर्जुग और नेक आदमी का थूक सर्वप्रथम बच्चे के पेट में जाता है, इस प्रकार बच्चे की उठान और उस की बुद्धि नेकी की ओर बढ़ती है। आज कल भी हमारे यहाँ इस का रिवाज है, लेकिन शहरों में तो लग भग समाप्त ही हो गया है।

1401:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अबू तल्हा रज़ि॰ का बच्चा बीमार था। इसी बीच वह बाहर (सफ़र पर) चले गये और इधर बच्चे का देहान्त हो गया। जब लौट कर आये तो पूछाः मेरे बेटे का क्या हाल है? (उन की पत्नी) उम्मे सुलैम ने कहाः पहले के मुक़ाबले में उसे आराम है (यह मौत की तरफ़ इशारा है और कोई झूठ भी नहीं है) फिर उम्मे सुलैम ने रात का खाना पेश किया और उन्होंने खाया, फिर उन्होंने हमबिस्तरी की। जब फ़ारिग़ हो गये तो उम्मे सुलैम ने कहाः जाओ बच्चा को दफ़न कर दो। सुब्ह को जब अबू तल्हा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास गये और पूरी घटना की जानकारी दी तो आप ने पूछाः क्या रात में पत्नी से संभोग किया था? उन्होंने कहाः हाँ। यह सुन कर आप ने दुआ़ दी कि ऐ अल्लाह! इन दोनों को बर्कत दे। फिर जब उम्मे सुलैम के यहाँ बच्चा पैदा हुआ तो अबू तल्हा ने कहाः उसे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास (तहनीक के लिये) ले जाओ। चुनान्चे अनस बिन मालिक रज़ि॰ उसे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास ले गये। उम्मे सुलैम ने बच्चे के साथ कुछ खजूरें भी दे दीं थीं (कि हो सकता है मौक़े पर आप के घर में कुछ न हों) आप ने बच्चे को गोद में लिया और पूछाः इस बच्चे के साथ कुछ है? लोगों ने (जो मौक़े पर उपस्थित थे) बताया कि खजूरें हैं। चुनान्चे आप ने उसे लेकर चबाया फिर उसे बच्चे के मुँह में डाल दिया और उस का नाम अ़ब्दुल्लाह रखा।

फ़ाइदा:– हदीस का बाब से संबन्ध स्पष्ट है। जब मालिक रज़ि॰ के पिता अनस का देहान्त हो गया तो उन की माता उम्मे सुलैम ने अबू तल्हा से दूसरा निकाह कर लिया, इस प्रकार अबू तल्हा इन के माँ जाये बाप हुये। वह बच्चा जिस का देहान्त हुआ था 3, 4 वर्ष का था उसे प्यार से लोग अबू उमैर कहतेथे। देखें आगे आ रही हदीस न॰ 1414 में।

बाब {नबियों और बुर्जुगों के नाम पर नाम रखने का बयान।}

1402:– मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब मैं (गवर्नर की हैसिय्यत से) नजरान आया (और इमामत करने लगा) तो वहाँ के लोगों ने मुझ पर एतराज़ किया कि (सूरःम्रयम की आयत 28 की नमाज़ में क़िरात करते समय) या उख़्-त हारु-न" (ऐ हारुन की बहन) पढ़ते हो। हालाँकि (हारुन तो मूसा के भाई थे) मूसा तो ओ़सा से इतनी-इतनी मुद्दत पहले (सन्देष्टा) गुज़रे हैं। (फिर म्रयम, हारुन की बहन कैसे हुयीं) चुनान्चे मैं ने इस बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास जा कर पूछा तो आप ने फ़रमायाः (यह वह हारुन नहीं हैं जो मूसा के भाई थे) बनी इस्राईल की आ़दत थी कि वह गुज़रे हुये सन्देष्टाओं और नेक लोगों के नाम पर नाम रखते थे।

फ़ाइदा:– नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने स्वैंय अपने पुत्र का नाम संदेष्टा के नाम पर "इब्राहीम" रखा था (बुख़ारी-6194, 6195-इब्ने अबू औफ़ा) अूब मूसा रज़ि॰

के बेटे के मुँह में खजूर चबा कर डाला और उस का नाम इब्राहीम रखा (बुख़ारी-6198-अबू मूसा) यह हदीस नीचे भी आ रही है। नेक लोगों के नाम पर नाम रखने से हो सकता है अल्लाह पाक उस नाम की बर्कत से उस बच्चे के अन्दर भी नेकी का जज़बा पैदा कर दे।

बाब {बच्चे का नाम इब्राहीम रखने का बयान।}

1403:- अबू मूसा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मेरे घर बच्चा पैदा हुआ तो मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास लेकर गया तो आप ने उस का नाम इब्राहीम रखा और उस के मुँह में (बर्कत के लिये) खजूर चबा कर डाला।

बाब {बच्चे का नाम मुन्ज़ुर रखने का बयान।}

1404:- सहल बिन सअ़द से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अबू उसैद रज़ि॰ के घर बच्चा पैदा हुआ तो वह उसे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास ले गये। आप ने उस बच्चे को अपनी रान पर बैठा लिया। अबू उसैद भी वहीं बैठे हुये थे। इतने में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम किसी काम से दूसरी तरफ़ मुतवज्जह हो गये तो अबू उसैद ने इशारा किया कि इस बच्चे को आप की रान से उठा लिया जाये, चुनान्चे उसे आप की रान से उठा लिया गया। फिर जब आप को ख़याल आया तो पूछा: बच्चा कहाँ गया। अबू उसैद ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! उसे मैं ने वापस भेज दिया। आप ने फ़रमाया: उस का नाम क्या है? अबू उसैद ने कहा: फ़लाँ नाम है। आप ने फ़रमाया: नहीं, उस का नाम "मुन्ज़िर" है। फिर उस दिन उस का नाम मुन्ज़िर ही रख दिया।

फ़ाइदा:- यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी है (6191-सहल) "मुन्ज़िर" का अर्थ है "बुरे लोगों को अल्लाह के अ़ज़ाब से डराने वाला।"

बाब {पहले नाम को बदल कर उस से अच्छा नाम रखने का बयान।}

1405:- इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि उमर रज़ि॰ की एक पुत्री का नाम 'आ़सिया" था तो आप ने उस का नाम "जमीला" रख दिया।

फ़ाइदा:- 'आ़सिया' का अर्थ है "अवज्ञा और नाफ़रमानी करने वाली" और 'जमीला' का अर्थ है "सुन्दर, ख़ूबसूरत"।

बाब {'बर्रा' का नाम "जुवैरिया" रखने का बयान।}

1406:- इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी) जुवैरिया का नाम पहले "बर्रा" था, फिर आप ने उन का नाम बदल कर "जुवैरिया" रख दिया। आप को यह बिल्कुल पसन्द नहीं था कि (जब आप उन के घर से निकल कर जायें तो) लोग कहें कि आप बर्रा (नेकी) से निकल गये।

फ़ाइदा:- 'बर्रा का अर्थ है "बहुत नेक महिला"। इस में एक प्रकार का अभिमान और

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना है। इसलिये आप ने पसन्द न किया। बुख़ारी की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी ज़ैनब का नाम बर्रा था, इस पर लोग कहने लगे कि वह स्वँय अपनी बुजुर्गी ज़ाहिर करती हैं, इस पर आप ने उन का नाम ज़ैनब रख दिया (बुख़ारी–6192–अबू हुरैरा) बहर हाल कोई भी पत्नी रही हों, आप ने उन का नाम बदल दिया। "ज़ैनब" का अर्थ है "भारी शरीर वाली महिला" और वास्तव में ज़ैनब रज़ि॰ बहुत मोटी और भारी बदन की थीं। यह रिवायत नीचे आ रही है।

बाब {"बर्रा" का नाम बदल का "ज़ैनब" रखना।}

1407:– मुहम्मद बिन उमर बिन अ़ता ने बयान किया कि मैं ने अपनी पुत्री का नाम "बर्रा" रखा तो अबू मूसा से सलमा की पुत्री ज़ैनब ने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह नाम रखने से मना फ़रमाया है, और मेरा नाम भी बर्रा था तो आप ने फ़रमाया: अपने मुँह अपने को पाक न कहो, यह तो केवल अल्लाह जानता है कि तुम में कौन नेक है। इस पर लोगों ने पूछा: फिर उस का नाम क्या रखें? आप ने फ़रमाया: उस का नाम "ज़ैनब" रख दो।

फ़ाइदा:– अबू सलमा की पुत्री ज़ैनब इन को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पाला–पोसा था। इन के पिता अबू सलमा का सन 3 हि॰ में देहान्त हो गया तो उस समय यह बच्ची थीं। इन की माता जी उम्मे सलमा से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने निकाह कर लिया। जब यह भी अपनी माँ के साथ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के घर आयीं तो इन का नाम बर्रा था। फिर कुछ दिनों के बाद आप नेज़ैनब बिन्त जहश या ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमा से निकाह किया तो इन का भी नाम पहले बर्रा था। इस प्रकार आप ने इन सब का नमा बदल कर ज़ैनब रख दिया।

बाब {अन्गूर का नाम "क्रम" न रखने का बयान।}

1408:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अन्गूर को "क्रम" न कहो, इसलिये कि क्रम, मुसलमान आदमी को कहते हैं।

1409:– वाइल बिन हुज्र रज़ि॰ सेरिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: (अन्गूर को) क्रम मत कहो, बल्कि "अ़िनब" या "हब्ला" कहो।

फ़ाइदा:– बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में यूँ है "लोग अन्गूर को क्रम कहते हैं, हालाँकि क्रम तो मोमिन का दिल होता है" (6183–अबू हुरैरा रज़ि॰)

बाब {'अफ़लह, यसार नाफ़े' नाम रखना मना है।}

1410:– समुरा बिन जुन्दुब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमें अपने गुलामों के लिये चार नाम रखने से मना फ़रमाया (यानी) अफ़ लह, रिबाह, यसार, और नाफ़े।

1411:– समुरा बिन जुन्दुब रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक को यह चार कलिमे बहुत अधिक पसन्द है (1) सुब्हानल्लाहि (2) अल्हम्दु लिल्लाहि (3) लाइला–ह इल्लल्लाहु (4) अल्लाहु अक्बर। इन में से जिस को चाहें पहले पढ़ें, इस में कोई गुनाह की बात नहीं। और अपने गुलाम का नाम यसार, रिबाह, नुजैह और अफ़्लह न रखो। इसलिये कि तुम पूछोगे कि वह कहाँ है? और अगर वह नहीं है तो जवाब मिलेगा कि नहीं है। समुरा रज़ि॰ ने बयान किया कि आपने केवल इन्ही चार नामों के बारे में फ़रमाया है इसलिये इन चार से अधिक नाम न बढ़ाना।

फ़ाइदाः– 'अफ़लह' और 'नुजैह' का अर्थ है "कामियाबी, नजात पाना।" अब अगर तुम आवाज़ लगाओगे कि "अफ़लह कहाँ है?" और उत्तर मिला कि अफ़लह (यानी कामियाबी) नहीं है, तो इस का यह अर्थ है कि "कामियाबी–नजात" नहीं है। इस को सुनना कौन पसन्द करेगा? इसलिये ऐसा नाम ही नहीं रखना चाहिये।

बाब {इन नामों के रखने की अनुमति है।}

1412:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरादा किया कि "याला, बंकत, अफ़्लह, यसार, नाफ़े" और इन जैसे नामों के रखने से मना कर दें लेकिन आप चुप रहे और कुछ नहीं कहा। फिर आप का देहान्त भी हो गया और मना नहीं फ़रमाया (आप के बाद) उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ ने भी मना करना चाहा, लेकिन छोड़ दिया और मना नहीं किया।

फ़ाइदाः– 'याला' के माना "बुलन्द, ऊँचा", 'अफ़लह' के माना "कामियाब", 'रिबाह' के माना "फ़ाइदा मन्द" 'यसार' के माना "मालदार" और 'नाफ़े' के माना "फ़ाइदा देने वाला"। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ऊपर हदीस में मना फ़रमाया और इस हदीस में मना करने का इरादा कर के चुप रहे। मालूम हुआ कि न रखना बेहतर है और अगर कोई रख ही ले तो भी कोई बुराई नहीं। लेकिन न रखना, रखने से बेहतर है (नौवी)

बाब {"नौकर, नौकरानी, और "मालिक, आक़ा" जैसे शब्द बौलना कैसा है?}

1413:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में से कोई अपने गुलाम से यूँ न कहे कि "अपने रब को पानी पिला" या "अपने रब को खाना खिला" या "अपने रब को वूज़ू करा"। इसी प्रकार तुम में से कोई "ऐ मेरे रब" भी न कहे, बल्कि "सय्यद" और "मौला" कहे। इसी प्रकार तुम में से कोई "मेरा बन्दा" या "मेरी बन्दी" भी न कहे, बल्कि "ऐ जवान मर्द" या "ऐ जवान महिला" या "ऐ मेरे गुलाम" शब्द का प्रयोग करे।

फ़ाइदाः– 'रब' का अर्थ है "पर्वरिश करने वाला, पालने और जिलाने वाला," और यह शब्द केवल अल्लाह पाक के लिये ख़ास है। इसी प्रकार "बन्दा" और "बन्दी" शब्द यह

केवल अल्लाह पाक ही अपने बन्दों के लिये बोलता है किसी इन्सान के लिये जाइज़ नहीं कि वह अपने नौकर को बन्दा या बन्दी कहे।

बाब {छोटे बच्चे की कुन्नीयत रखने का बयान।}

1414:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सब से अधिक अच्छें अख़्लाक़ वाले थे। मेरा एक भाई था जिसे "उबू उमैर" कहा जाता था। हदीस के रावी ने कहा कि मेरे ख़याल से अनस रज़ि॰ ने यह भी बयान किया कि वह दूध पीना छोड़ चुका था (यानी तीन-चार वर्ष का था, और वह "नुग़ैर" नाम की चिड़िया से खेला करता था) चुनान्चे जब भी आप आते और उसे देखते तो फ़रमातेः "ऐ अबू उमैर! तुम्हारी नुग़ैर कहाँ गयी"

फ़ाइदाः– इस हदीस से मालूम हुआ कि जिस के अभी औलाद ही न हो वह भी अपनी फ़र्ज़ी कुन्नीयत रख सकता है। 'अबू उमैर' का अर्थ हुआ "उमैर का बाप" हालाँकि वह अभी बच्चा था। 'नुग़ैर' लाल सर चिड़िया को कहते हैं। वह मर गयी थी, बच्चा उस से खेला करता था। इस बच्चा के देहान्त की घटना ऊपर हदीस न॰ 1401 में बयान हो चुकी है।

बाब {कोई व्यक्ति किसी को "या बु-नय्या" (ऐ मेरे बेटे) कह सकता है।}

1415:– मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि॰ सेरिवायत है उन्होंने बयान किया कि दज्जाल के बारे में किसी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से उतना नहीं पूछा जितना मैं ने पूछा (तो जब में पूछता तो) आप फ़रमातेः "ऐ मेरे बेटे! तुम उस से घबराते क्यों हो, वह तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा" मैं ने कहाः लोगों का कहना है कि उस के साथ में पानी की नहरें और रोटियों का पहाड़ होगा? आप ने फ़रमायाः उसी ही की वजह से वह अल्लाह पाक के निकट ज़लील और रुस्वा होगा।

फ़ाइदाः– मालूम हुआ कि अगर कोई अपने बेटे की आयु का है तो प्रेम और मुहब्बत से उसे "ऐ मेरे बेटे" कह कर पुकार सकते हैं। इसी प्रकार अगर कोई अपनी आयु का है तो उसे "ऐ मेरे भाई" और अगर पिता की आयु का है तो "ऐ मेरे चचा" कह सकते हैं।

बाब {अल्लाह पाक के निकट सब से बुरा नाम "शहनशाह" (बादशाहों का बादशाह) रखना है।}

1416:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक के निकट सब से बुरा नाम किसी को बादशाहों का बादशाह कह कर पुकारना है। इब्ने अबू शैबा की रिवायत में इतना और है (कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया) अल्लाह पाक के अतिरिक्त और कोई मालिक नहीं। अश्अ़स ने बयान किया कि सुफ़यान ब्नि उयैना ने कहा कि (किसी को)

"मलिकुल् अमलाक" कहना, यह "बादशाहों का बादशाह" के माना में है। इमाम अहमद बिन हंबल ने बयान किया कि मैं ने अबू अ़म्र से पूछा कि "अख़्सना" का क्या अर्थ है? उन्होंने कहा कि इस का अर्थ है "सब से अधिक ज़लील और कमीना।"

फ़ाइदा:- "बादशाहों का बादशाह" तो अल्लाह पाक की ज़ात है। कोई कमीना और शैतान ही अपने को यह कहलवा सकता है। सऊदी अ़रब के शासक भी अपने को "जलालतुल् मलिक" कहते थे लेकिन अब इसे बदल कर "ख़ादिमुल् हरमैन" (काबा और मस्जिदे नबवी का सवेक) टाइटल रख लिया। अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ जो शाह फ़हद के देहान्त के पश्चात् राजा बने हैं और 26 जनवरी सन 2006 को गणतंत्र दिवस के मौक़ा पर मुख्य अतिथि की हैसिय्यत सेहिन्दुस्तान आये थे, इन्होंने भी यही टाइटल अपने लिये पसन्द किया है।

बाब {एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर पाँच हक़ हैं।}

1417:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक मुसलमान पर उस के मुसलमान भाई के पाँच हक़ हैं (1) सलाम का जवाब देना (2) छींकने वाले को जवाब देना (3) दावत को कुबूल करना (4) किसी बीमार की ख़ैरियत मालूम करना (5) जनाज़ा के साथ जाना।

फ़ाइदा:- अगर किसी को छींक आये और वह "अल्हम्दु लिल्लाह" कहे तो सुनने वाला "यर-हमु-कल्लाह" कहे। इस के उत्तर में वह 'यहदीकुमुल्लाह" कहे। (बुख़ारी शरीफ़-6224-अबू हुरैरा) जनाज़े में शरीक़ होना अनिवार्य है। इस पर दो क़ीरात नेकियाँ मिलती हैं (बुख़ारी-47, 1323-अबू हुरैरा) ऊपर की हदीस में सात चीज़ों के करने का हुक्म है और सात के न करने का हुक्म है। देखें हदीस न॰......।

1418:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक मुसलमान पर उस के मुसलमान भाई के छः हक़ है। लोगों ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! वह क्या हैं? आप ने फ़रमायाः (1) जब तुम किसी मुसलमान भाई से मिलो तो सलाम करो (2) जब वह तुम्हारी दावत करे तो उसे कुबूल करो (3) जब वह तुम से कोई मश्वरा ले तो उसे अच्छा मश्वरा दो। (4) जब वह छींके और अल्हम्दुलिल्लाह कहे तो तुम जवाब दो (5) जब बीमार हो तो उस का हालचाल पूछो (6) जब मर जाये तो उस के जनाज़ा के साथ जाओ।

बाब {रास्ता में बैठना मना है। और अगर बैठे होतो उस का हक़ अदा करो।}

1419:- अबू सअ़ीद ख़ुदरी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम रास्तों में बैठने से बचो। इस पर लोगों ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मज्लिसों में बैठ कर बातें करनी हमारी मजबूरी है। आप ने फ़रमायाः अगर तुम मज्लिसों में बैठने से बाज़ नहीं आओगे तो रास्तेका हक़ अदा करो। लोगों ने पूछा

कि राह का क्या हक़ है? आप ने फ़रमायाः नज़र नीची रखना, किसी को कष्ट न देना, सलाम का उत्तर देना, नेक कार्य का आदेश देना और बुरी बातों सेमना करना।

फ़ाइदाः– समाज के सुधार में इस हदीस की बड़ी अहमियत है। रास्ते में लगी हुयी दुकानों पर लोग बिला वजह बैठ कर गप्पें मारते हैं। आने-जाने वाली महिलाओं को घूरते और जुम्ले कसते हैं। आप ने बैठने की अनुमति इस शर्त पर दी कि कि उपरोक्त बातों पर अमल करें तब बैठें, वर्ना हर्गिज़ न बैठे।

बाब {सवार, पैदल को सलाम करे, और छोटा गुट, बड़े गुट को सलाम करे।}

1420:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सवार, पैदल चलने वाले को सलाम करे और पैदल चलने वाला बैठे हुये को, और कम लोगों का गरोह अपने से बड़े गरोह को सलाम करे।

फ़ाइदाः– देखें बुख़ारी शरीफ़ (6232, 6233–अबू हुरैरा रज़ि॰) बुख़ारी की रिवायत में यह भी है कि "छोटा, बड़े को सलाम करे और कम संख्या वाले, बड़ी संख्या वालों को (6234–अबू हुरैरा) प्रश्न यह है कि क्या महिला पुरुष को, या पुरुष महिला को सलाम कर सकता है? तो इस का उत्तर यह है कि जाइज़ है। जिब्रील अ़लै॰ ने आइशा रज़ि॰ को सलाम किया है और आइशा रज़ि॰ ने जवाब दिया है (बुख़ारी–6248–अबू सलमा) कुछ उलमा का कहना है कि फ़ितना के डर से न करना बेहतर है। इस पर अ़ल्लामा वहीदुज़्ज़माँ लिखते हैं "मैं कहता हूँ कि इस प्रकार के ख़याल से शरीअ़त का हुक्म नहीं बदल सकता। जब कलाम जाइज़ है (देखें सूरः अहज़ाब 32) तो सलाम का मना होना आश्चर्य की बात है। हदीस में जहाँ भी सलाम का ज़िक्र है वह मर्द और महिला सभी को शामिल है। (बुख़ारी–6248 का हाशिया)

बाब {(घर में दाख़िल होने के लिये) अनुमति लेने और सलाम करने के बारे में बयान।}

1421:– अबू बुर्दा, अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ के वास्ते से रिवायत करते हैं कि अबू मूसा उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ के पास आये और कहाः अस्सलामु अ़लैकुम! मैं अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस हाज़िर हुआ हूँ। इस पर उन्हें अन्दर आने की अनुमति नहीं दी। चुनान्चे उन्होंने दोबारा कहाः अस्सलामु अ़लैकुम! मैं अबू मूसा हूँ। अस्सलामु अ़लैकुम! मैं अश्अ़री हूँ। यह कह कर फिर लौट गये। इस पर उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ ने उन से पूछाः तुम क्यों वापस हो गये? मैं एक काम में मशग़ूल था। इस पर अबू मूसा ने कहा कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि तीन बार अनुमति माँगों, अगर मिल जाये तो ठीक, वर्ना वापस हो जाओ। यह सुन कर उमर रज़ि॰ ने कहाः इस हदीस पर गवाह लाओ वर्ना मैं तुम्हें सज़ा दूगाँ। यह सुन कर अबू मूसा चले गये। इस पर उमर रज़ि॰ ने कहाः अगर अबू मूसा को गवाह मिल गये तब तो वह शाम को मिंबर के पास तुम्हें नज़र आयेंगे और अगर गवाह नहीं मिले तो उन्हें मिंबर के पास नहीं पाओगे। चुनान्चे

जब उमर शाम को मिंबर के पास आये तो वहाँ अबू मूसा मौजूद थे। उन्होंने कहाः ऐ अबू मूसा! क्या हुआ? कोई गवाह मिला? उन्होंने उत्तर दियाः जी हाँ, उबय्यि बिन कअ़ब गवाह हैं। उमर रज़ि॰ नेकहा कि वह तो भरोसेमन्द हैं। उमर ने पूछाः ऐ अबू तुफ़ैल! अबू मूसा क्या कहते हैं? उन्होंने कहाः मैं ने भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है? फिर अबू मूसा की ताईद की और कहाः ऐ ख़त्ताब के बेटे! तुम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबा पर अ़ज़ाब न बनो (और उन पर सख़्ती न करो) यह सुन कर उमर रज़ि॰ बोलेः वाह, वाह, सुब्हानल्लाह मैं ने तो एक हदीस सुनी थी जिस की तहक़ीक़ कर लेनी बेहतर समझा (न यह कि अबू मूसा झूठे हैं)

फ़ाइदाः– हदीस का अर्थ स्पष्ट है। यही आदेश सूरः नूर आयत 27, 28, 29 में भी है। (देखें बुख़ारी-6245-अबू सअ़ीद खुदरी) सलाम के बाद स्पष्ट तौर पर अपना नाम बताना चाहिये न कि कुन्नीयत, ताकि आदमी समझ जाये और उसे इत्मिनान हो जाये।

बाब {दर्वाज़े का पर्दा उठा देना भी इजाज़त ही है।}

1422:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमायाः जब पर्दा उठा दिया तो समझो कि तुम्हें मेरे पास आने की इजाज़त मिल गयी है और तुम मेरी बातें भी सुन सकते हो जब तक मैं तुम्हें रोक न दूँ।

फ़ाइदाः– यानी ज़बान से इजाज़त देना ज़रुरी नहीं, पर्दा का उठा देना भी इजाज़त मिलने की पहचान है। इब्ने मस्ऊद रज़ि॰, अ़ली रज़ि॰ के ख़ादिम थे इसलिये उन से कहा कि बार-बार अनुमति माँगने से काम का हरज होगा, इसलिये तुम्हारा पर्दा उठाना और मेरा मना न करना इजाज़त की पहचान है। (वहीदी)

बाब {घर में दाख़िल होने के लिये इजाज़त लेते समय यह कहना "मैं हूँ" ठीक नहीं है (अपना नाम बताया जाये)}

1423:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अनुमति माँगी तो आप ने पूछा कौन? मैं ने कहाः मैं हूँ। आप ने फ़रमायाः मैं हूँ, मैं हूँ। दूसरी रिवायत में है कि आप ने "मैं हूँ" कहने को बुरा माना।

फ़ाइदाः– कभी ऐसा होता है कि अन्दर रहने की वजह से बाहर की आवाज़ पहचानने में कठिनाई होती है कि कौन बोल रहा है, इसलिये जवाब में स्पष्ट तौर पर अपना नाम बताना चाहिये (बुख़ारी-6250-जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह)

बाब {इजाज़त लेते समय घर में झाँकना मना है।}

1424:– सहल बिन सअ़द साअ़दी रज़ि॰ से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने आप के घर

के दर्वाज़े की सूराख़ से झाँका उस समय आप के हाथ में कंघी थी जिस से अपना सर खुजला रहे थे। आप ने उस को देख कर फ़रमायाः अगर मुझे पता होता कि तू झाँक रहा है तो मैं तेरी आँख में कोंच देता। फिर फ़रमायाः ताक-झाँक से बचने ही के लिये इजाज़त माँगने का हुक्म है।

फ़ाइदाः— देखें बुख़ारी-5924, 6241-सहल बिन सअ्द, 6242, 6901-अनस बिन मालिक) अनस बिन मालिक रज़ि॰ की रिवायत में है कि तीर को लेकर आगे बढ़े और चाहा कि चुपके से उस की आँख में घुसेड़ दें (6900 अनस बिन मालिक) यह इतनी बुरी हर्कत है कि इस की जितनी भी निन्दा की जाये कम है।

बाब {अगर कोई बिना इजाज़त किसी के घर में झाँके और घर वाले उस की आँख फोड़ दें (तो इस में कोई गुनाह नहीं)}

1425:— अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अगर कोई व्यक्ति तुम्हारे घर में तुम्हारी अनुमति के बिना झाँके और तुम कंकरी उठाकर उसे मार दो और उस की आँख फूट जाये, तो कोई गुनाह नहीं है।

1426:— जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बु-ज़ली रज़ि॰ सेरिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अचानक नज़र पड़ जाने के बारे में पूछा तो आप ने मुझे तुरन्त नज़र फेर लेने का हुक्म दिया।

फ़ाइदाः— क्योंकि अचानक की नज़र माफ़ है, इसलिये कि बिला इरादा देखा है।

बाब मज्लिस में आ कर सलाम कर के बैठ जाना चाहिये।}

1427:— अबू वाक़िद लैसी रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मस्जिद में बैठे हुये थे और सहाबा भी आप के पास बैठे थे कि इतने में तीन आदमी आ गये उन में दो तो आप के पास रुक गये और तीसरा चला गया। जो दो रुक गये थे उन में से एक ने मज्लिस में थोड़ी से जगह ख़ाली देखी तो वहीं बैठ गया और दूसरा लोगों के पीछे जा बैठा, तीसरा तो वापस चला ही गया था। जब आप (ख़ुत्बा से) फ़ारिग़ हुये तो फ़रमायाः मैं तुम्हें उन तीनों का हाल बताता हूँ। एक ने अल्लाह के पास ठिकाना बनाया तो अल्लाह ने उसे जगह दे दी, दूसरे ने लोगों के दर्मियान घुसने से शर्म की तो अल्लाह ने भी उस से शर्म की, और तीसरे ने मुँह मोड़ा तो अल्लाह ने भी उस से मुँह मोड़ लिया।

बाब {किसी को उठा कर उस के स्थान पर बैठना मना है।}

1428:— इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में से कोई अपने भाई को उठा कर उस की जगह पर बैठने की कोशिश न करे। हाँ, इधर-उधर फैल कर बैठने की जगह दे दो।

एक दूसरी रिवायत में है कि रावी ने कहाः यह हुक्म जुमा के दिन के लिये है, इस पर इब्ने उमर ने कहाः जुमा का दिन हो या कोई और दिन (हर समय के लिये यह हुक्म है)। चुनान्चे इब्ने उमर रज़ि० के (आने पर उन के) बैठने के लिये कोई उठ जाता फिर भी वह वहाँ नहीं बैठते थे।

फ़ाइदाः– अ़ल्लामा वहीदुज़्ज़माँ रह० ने बुख़ारी-911 के हाशिया में दो टोक बात लिख दी है "मस्जिद अल्लह की है किसी के बाबा-दादा की मिलकिय्यत नहीं है। जो नमाज़ी पहले आया और किसी स्थान पर बैठ गया, वही उस स्थान का हक़दार है। अब बादशाह या वज़ीर भी आये तो उस को उठाने का हक़ नहीं रखता (वहीदी) (बुख़ारी-911-इब्ने उमर, 6269-इब्ने उमर)

बाब {कोई व्यक्ति अपने स्थान से उठ कर चला जाये और फिर लौट कर आये, फिर भी वह उसी स्थान का हक़ रखता है।}

1429:– अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में से कोई जब (किसी आवश्यकता के लिये) खड़ा हो। और इब्ने अ़वाना की हदीस में है कि जब तुम में से कोई अपनी मज्लिस से खड़ा हो जाये और फिर (किसी काम से जा कर) लौट आये तो वह उस (अपनी छोड़ी हुयी) जगह का अधिक हक़दार है (कि दोबारा वहीं बैठे)

बाब {जहाँ तीन व्यक्ति हों, वहाँ दो का अलग़ होकर काना-फूसी करना मना है।}

1430:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब तुम आपस में तीन आदमी हो तो दो आदमी तीसरे को अलग कर के (आपस में) काना फूसी न करो, यहाँ तक कि तुम से और लोग भी मिलें। इसलिये कि ऐसा करने से उस तीसरे को रन्ज होगा।

फ़ाइदाः– क्योंकि वह हरदम यही सोचेगा और अन्दर ही अन्दर कुढ़ेगा कि या अल्लाह! क्या मैं इस लाइक़ नहीं था कि मेरे सामने बात करते। या यह सोचेगा कि मेरे ख़िलाफ़ कोई बात कर रहे हैं। उस को इतनी तक्लीफ़ होगी कि इस का अनुमान लगाना कठिन है। हाँ, अगर तीन से अधिक हों तो काना फूसी करने में कोई हरज़ नहीं (बुख़ारी-6290-इब्ने मस्ऊद रज़ि०)

बाब {बच्चों को सलाम करने का बयान।}

1431:– सय्यार ने बयान किया कि मैं साबित बनानी के साथ जा रहा था, जब वह बच्चों के पास से गुज़रे तो उन्हें सलाम किया और यह हदीस बयान की कि मैं अनस बिन मालिक के साथ जा रहा था, जब वह बच्चों के पास से गुज़रे तो उन्हें सलाम किया, फिर उन्होंने हदीस बयान की कि मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ जा रहा था जब वह बच्चों के पास से गुज़रे तो उन्हें सलाम किया।

फ़ाइदाः— यह रिवायत बुख़ारी शरीफ़ में भी है (6247—साबित बनानी, अनस बिन मालिक रज़ि॰) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः खड़ा, बैठे को। सवार पैदल को। छोटा समूह, बड़े समूह को सलाम करे।

बाब {यहूद—नसारा को पहले सलाम न करो।}

1432:— अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यहूद—नसारा को पहले सलाम न करो, बल्कि जब तुम उन्हें राह में मिलो तो उन को तन्ग राह की तरफ़ दबा दो।

फ़ाइदाः— यही मामला काफ़िर और मुश्रिक के लिये भी है।

बाब {अहले किताब (यहूद—नसारा) अगर सलाम करें तो उन्हें किस प्रकार जवाब दें।}

1433:— जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि चन्द यहूदियों ने आप को सलाम करते हुये कहाः

अस्सामु अ़लैकुम या अ—बल् क़ासिम्
(ऐ अबुल क़ासिम! तुम्हें मौत आ जाये)

तो आप ने उत्तर दियाः

व—अ़लैकुम्
(और तुम पर भी)

उन का सलाम सुन कर आ़इशा रज़ि॰ गुस्से में हो गयीं और आप से कहने लगींः क्या आप ने नहीं सुना उन्होंने क्या कहा है? आप ने फ़रमायाः मैंने भी सुना है और उस का जवाब भी दे दिया। और हम जो दुआ़ करते हैं वह क़ुबूल होती है और उन की नहीं क़ुबूल होती है।

फ़ाइदाः— बुख़ारी शरीफ़ (2935, 6256—आ़इशा रज़ि॰) यानी उत्तर में केवल "व—अ़लैकुम्" (और तुम पर भी वही) कहो। लेकिन अगर कोई अच्छे शब्दों में सलाम करे तो उस का जवाब भी अच्छे शब्दों में देना चाहिये, जैसा कि सूरः निसा की आयत 86 में बयान हुआ है।

बाब {पर्दे का हुक्म नाज़िल होने के बाद महिलाओं का (खुले मुँह) निकलना मना है।}

1434:— आ़इशा रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बीवियाँ भी रात को अपनी आवश्यकता पूरी करने के लिये मदीना से बाहर खुली जगहों पर जाती थीं। इस पर उमर रज़ि॰ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बराबर तक़ाज़ा करते थे कि उन्हें पर्दे में रखा जाये, लेकिन आप पर्दे का हुक्म नहीं दे रहे थे। चुनान्चे एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी सौदा बिन्त ज़म्आ़ रज़ि॰ रात को बाहर निकलीं, वह लंबी डील—डोल की महिला थीं (इसलिये उमर ने उन्हें पहचान

लिया) और उन्हें पुकारा कि ऐ सौदा! मैं ने तुम्हें पहचान लिया। उन्होंने ऐसा इसलिये किया ताकि पर्दे का हुक्म नाज़िल हो जाये। आइशा रज़ि॰ ने कहा कि इस घटना के बाद पर्दा का हुक्म नाज़िल हुआ।

बाब {महिलाओं को अपनी आवश्यक्ता पूरी करने के लिये घर से बाहर निकलने की अनुमति है।}

1435:– आइशा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि पर्दे का हुक्म नाज़िल होने के बाद सौदा रज़ि॰ रात को बाहर निकलीं। चूँकि वह इतनी मोटी थीं कि तमाम महिलाओं में ज़ाहिर हो जाती थीं इसलिये जो उन्हें जानता था उस से पोशिदा नहीं रह सकती थीं (वह उन्हें पहचान लेता था) रास्ता में उमर ने उन्हें देख लिया और कहाः ऐ सौदा! अल्लाह की क़सम! आप अपने को मुझ से छुपा नहीं सकतीं तो फिर आप बाहर क्यों निकली हैं? यह सुन कर वह वापस लौट आयीं।

उस समय नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे घर में रात का खाना खा रहे थे और आप के हाथ में एक हड्डी थी। इसी बीच सौदा आ गयीं और बयान करने लगीं कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं शौच के लिये निकली तो रास्ता में उमर मुझ से ऐसा-ऐसा कह रहे थे। आइशा रज़ि॰ ने बयान किया कि उसी समय आप पर वह्यि आने लगी। जब इस का सिलसिला बन्द हुआ और हड्डी अभी आप के हाथ ही में थी और उसे आप ने रखा भी न था। फिर आप ने फ़रमायाः तुम्हें शौच के लिये बाहर जाने की इजाज़त मिल गयी है।

फ़ाइदाः– ऊपर की हदीस न॰ 1434 में महिलाओं के लिये बाहर निकलने की मिनाही हो गयी। लेकिन इस हदीस से मालूम हुआ कि घर से बाहर आवश्यक्ता पड़ने पर जा सकती हैं, लेकिन पर्दे के साथ। उस ज़माना में आजकल की तरह घरों में शौचालय नहीं था इसलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियाँ भी उस ख़ास स्थान पर जो मदीना से बाहर था शौच के लिये जाती थीं। बाद में जब घरों में इन्तिज़ाम हो गया तो बाहर जाना बन्द हो गया (बुख़ारी-148-इब्ने उमर)

बाब {महरम महिला (जिस से निकाह हराम है) को अपने पीछे सवारी पर बैठा लेना जाइज़ है।}

1436:– अबू बक्र की बिटिया अस्मा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि (नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी के लड़के) जुबैर बिन अव्वाम ने मुझ से निकाह किया तो उस समय उन के पास न तो कुछ धन-माल था, न गुलाम और न ही कोई और चीज़ थी। केवल ले देकर एक घोड़ा था जिस की मैं ही सेवा करती, उसे चराती, और उस की देख-भाल करती थी। उन के पास पानी ढोने का एक ऊँट था उस के लिये खजूर की गुठलियाँ कूटती, उसे चराने ले जाती और पानी पिलाती। डोल सी लेती और आटा भी गूँध लेती थी, लेकिन रोटी अच्छी तरह नहीं पका पाती थी, इसलिये पड़ोस की महिलाएँ आ कर पका दिया करती थीं, वह महिलायें बड़ी मिलनसार थीं।

अस्मा रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने थोड़ी सी ज़मीन जुबैर को दे दी थी जो मदीना से दोमील की दूरी पर थी, वहाँ से अपने सर पर खजूर की गुठलियाँ लाद कर लाया करती थीं। एक दिन मैं सर पर गुठलियाँ लाद कर वापस आ रही थी कि राह में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिल गये, आप के साथ चन्द सहाबा भी थे। आप ने मुझे बुलाया और अपने ऊँट को बैठाने के लिये "अख़-अख़" कहा ताकि मुझे पीछे सवार कर लें, लेकिन मुझे बैठते हुये बड़ी शर्म और ग़ैरत आयी। इस पर आप ने फ़रमायाः खजूर की गुठलियों को सर पर ढोना मेरे साथ ऊँट पर सवार होने से कहीं ज़्यादा कठिन है।

अस्मा रज़ि॰ ने बयान किया कि बाद में (मेरे पिता जी) अबू बक्र ने मुझे एक गुलाम दे दिया जो घोड़े का सारा काम करने लगा, गोया उन्होंने मुझे इस काम से छुटकारा दिला दिया।

फ़ाइदाः– अस्मा रज़ि॰, आइशा रज़ि॰ की बड़ी बहन हैं, आइशा की माँ का नाम उम्मे रुमान और इन की माँ का नाम क़तीला था। इस प्रकार दोनों बाप जाए बहन हैं। इन से 56 हदीसें रिवायत हैं। 100 वर्ष की आयु में स॰ 72 हि॰ में देहान्त हुआ। इस प्रकार यह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बड़ी साली हुयीं, और साली से निकाह हराम है जब तक उसकी बहन निकाह में है। मालूम हुआ कि उन महिलाओं को सवारी पर बैठाया जा सकता है, उन के साथ सफ़र किया जा सकता है, जिस से निकाह हराम है।

बाब {जब कोई अपनी पत्नी के साथ जा रहा हो और राह में कोई मिल जाये तो उस को बता दे कि यह मेरी पत्नी है।}

1437:– नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नी सफ़िय्या बिन्त हय्यि से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि (एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एतिकाफ़ में बैठे हुये थे। एक रात मैं आप से मिलने के लिये (मस्जिदे नबवी में) आयी और आप से बात-चीत करने के बाद वापस होने के लिये खड़ी हुयी तो आप भी मुझे भेजने के लिये मेरे साथ खड़े हो गये। उस समय मैं उसामा बिन ज़ैद के घर में रह रही थी। (जब आप मुझे पहुँचाने के लिये बाहर निकले) राह में दो अनसारी मिल गये। जब उन्होंने आप को देखा तो जल्दी-जल्दी चलने लगे। (यह देख कर) आप ने फ़रमायाः ज़रा धीरे चलो, यह (मेरी पत्नी) सफ़िय्या हैं। उन्होंने कहाः सुब्हानल्लाह! ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! (हम भला आप के बारे में कोई बुरा ख़याल कर सकते हैं) आप ने फ़रमायाः शैतान इन्सान के शरीर में खून की तरह दौड़ता है, इसलिये मुझे ख़याल हुआ कि कहीं वह तुम्हारे दिल में बुरा ख़याल न डाल दे।

फ़ाइदाः– इस प्रकार के मौक़ों पर नाम बता देने में कितना फ़ाइदा है आप स्वँय अनुमान लगा सकते हैं। इमाम बुख़ारी रह॰ ने इस हदीसको एतिकाफ़ के बाब में ज़िक्र किया है और इस से दो मस्अले निकाले हैं (1) एतिकाफ़ की हालत में महिला उस से मिल कर

बात-चीत कर सकती है (2) एतिकाफ़ करने वाला मस्जिद से बाहर निकल सकता है और अपने बारे में बदगुमानी को दूर करनेके लिये बात-चीत कर सकता है। (बुख़ारी-2035, 2038, 2039-सफ़िय्या रज़ि॰)

बाब {किसी भी व्यक्ति के लिये ग़ैर महरम के साथ रात बिताना मना है।}

1338:- जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ख़र्बदार! कोई भी व्यक्ति पति वाली (शादीशुद) महिला के पास रात को न रहे, मगर यह कि उस महिला का पति या कोई और महरम साथ में हो।

फ़ाइदाः- 'नामहरम' उसे कहते हैं जिस से निकाह करना जाइज़ है, जैसे अजनबी। 'महरम' वह है जिस से निकाह हराम है, जैसे बेटी, माँ, भाई, बाप आदि। कोई साथ में रहेगा तो शुब्हा नहीं होगा। बिना पति वाली (यानी कुँवारी) के बारे में भी यही हुक्म है।

1439:- उक़्बा बिन आ़मिर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः महिलाओं के पास आने-जाने से बचो। इस पर एक अन्सारी बोलेः ऐअल्लाह के सन्देष्टा! देवर के बारे में क्या हुक्म है? आप ने फ़रमायाः वह तो मौत है (यानी सब से बड़ा डर तो उसी से है) लैस बिन सअ़द ने बयान किया कि हदीस में जो "देवर" का शब्द आया है उस से मुरादशौहर के निकट संबन्धी हैं।

फ़ाइदाः- आ़मतौर पर लोग "देवर" से मुराद शौहर का छोटा भाई समझते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। पति के जिन रिश्तेदारों से महिला का निकाह जाइज़ है वह सब देवर के हुक्म में हैं जैस पति का भाई, चाचा जाये भाई आदि। चूँकि यह लोग घर में एक साथ रहते हैं, हर दम घर में आना जाना रहता है, बात-चीत भी होती है, इसलिये इन से अधिक बुराई होने का डर रहता है।

बाब {जिन महिलाओं के पति घर से बाहर हैं उन महिलाओं के घर आना-जाना मना है।}

1440:- अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ि॰ ने बयान किया कि क़बीला बनी हाशिम के कुछ लोग अस्मा बिन्त उमैस से मिलने गये (उस समय उन के पति अबू बक्र सिद्दीक़ घर में नहीं थे) इतने में अबू बक्र भी (बाहर से) आ गये। जब उन्होंने उन सब को देखा तो बुरा महसूस किया। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इस घटना की जानकारी देते हुये कहा कि मैं ने कोई बुरी बात नहीं देखी। आप ने फ़रमायाः अल्लाह पाक ने अस्मा को बुराई से बचा लिया। फिर आप ने मिंबर पर खड़े हो कर फ़रमायाः आज के बाद से कोई भी व्यक्ति ऐसी महिला के घर में न जाये जिस का पति घर में न हो। और अगर जाये तो एक या दो आदमी को साथ लेकर जाये।

फ़ाइदाः- महिला और पुरुष एकान्त में हैं तो कब शैतान उन के दिल में बुरा ख़याल डाल दे कुछ पता नहीं, इसलिये जब भी जाये तो एक या दो व्यक्ति को साथ लेकर जाना चाहिये। यह अस्मा, अ़ली रज़ि॰ के बड़े भाई जाफ़र तय्यार की पत्नी थीं, उन के

देहान्त (शहादत) के पश्चात अबू बक्र से निकाह कर लिया जिन से एक पुत्र मुहम्मद पैदा हुआ जिस का बयान ऊपर हदीस न॰ 1208 के फ़ाइदा में गुज़र चुका है, इसे अवश्य ही पढ़ें।

बाब {महिलाओं के पास हिजड़ों का आना-जाना मना है।}

1441:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों के पास एक हिजड़ा आया करता था। वह उस को उन लोगों में समझती थीं जिन को महिलाओं से संभोग की इन्छा नहीं होती है। एक दिन आप अपनी किसी पत्नी के पास आये तो क्या देखा कि वह हिजड़ा एक महिला की प्रशंसा करते हुये बयान कर रहा है कि जब वह आती है तो "चार के साथ" आती है जब जाती है तो "आठ के साथ" जाती है। यंह युन कर आप ने फ़रमायाः यह व्यक्ति इन सब बारीकियों को जानता है, यह तुमहारे पास न आने पायें, चुनान्चे वह उस से पर्दा करने लगीं।

फ़ाइदा:– बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि हिजड़े ने उम्मे सलमा रज़ि॰ के भाई अब्दुल्लाह से कहाः अगर कल तुम ताइफ़ को जीत लो मैं तुमहें ग़ैलान नामक व्यक्ति की पुत्री (बादिया नामक) को दिखाऊँगा कि जब वह....(बुख़ारी-5887-उम्मे सलमा) "चार के साथ आती है" का अर्थ यह है कि वह इतनी मोटी है कि जब चलती है तो उस के पेट के सामने चार बटपड़ जाते हैं। और जब जाती है आठ बट दिखाई देते हैं (बुख़ारी-5887) ऐसा मोटी-तगड़ी और तन्दुरुस्त होने की वजह से होता है। यह अभागे अगर कुछ बिगाड़ नहीं कसते हैं तो लालसा और संभोग की इच्छा को भड़का तो सकते हैं, इसलिये इन्हें घर में घुसने न दिया जाये। यानी इन का शुमार पुरुष में होगा।

बाब {सोते समय आग बझा देना चाहिये।}

1442:– अबू मूसा अश्अरी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक रात मदीना में किसी के घर में आग लग गयी, जब आप को बताया गया तो फ़रमायाः यह आग तुम्हारी दुश्मन है, इसलिये जब सोने चलो तो इसे बुझा दो।

फ़ाइदा:– इस बाब और हदीस को यहाँ बयान करने का कोई तुक नहीं है, संभवतः भूल-चूक हुयी है। इसी प्रकार की एक हदीस ऊपर आ चुकी है, देखें हदीस न॰1281 और उस का फ़ाइदा।

आज 8 जनवरी 2006 बुधवार 11:30 बजे रात में इस अध्याय का अनुवाद संपन्न हुआ। अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ-लमीन्, ऊँची मस्जिद अहले हदीस मोरी गेट, दिल्ली।

❀ ❀ ❀

किताबुर्रुक़ा
(झाड़-फूँक के मसाइल का बयान)

बाब {जिब्रील अ़लै॰ का नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को दम करने का बयान।}

1443:– नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी आ़इशा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बीमार होते तो जिब्रील अ़लै॰ आप पर यह दुआ़ पढ़तेः

> **बिस्मिल्लाहि युब्री-क वमिन् कुल्लि दाइन् यश्फ़ी-क वमिन् शर्रि हासिदिन् इज़ा ह-स-द वशर्रि कुल्लि ज़ी ऐनिन्**
> (अल्लाह के नाम से मैं मदद चाहता हूँ, वह तुम को हर बीमारी से अच्छा करेगा, हर जलने वाले के जलन से बचाएगा और हर बुरी नज़र डालने वाले की नज़र से बचाएगा।

1444:– अबू सअ़ीद रज़ि॰ से रिवायत है कि (एक मर्तबा) जिब्रील आप के पास आए और कहने लगेः ऐ मुहम्मद! सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! क्या आप बीमार हो गये? आप ने फ़रमायाः हाँ। उन्होंने कहाः

> **बिस्मिल्लाहि अर्क़ी-क मिन् कुल्लि शैइन् यूज़ी-क मिन् शर्रि कुल्लि नफ़सिन् औ अ़ैनि हासिदिन् अल्लाहु यश्फ़ी-क बिसमिल्लाहि अर्क़ी-क़**

फ़ाइदाः– 'दम' करना, यानी पढ़ कर शरीर के ऊपर फूँकना। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस की बड़ी प्रशंसा की है और फ़रमाया कि "दम, बुरी नज़र और बुख़ार में बहुत लाभ देता है" (मुस्लिम) लेकिन इस के जाइज़ होने के लिये शर्त यह है कि जो कलिमा पढ़ कर दम कर रहा है उस में शिर्क न हो, किसी दूसरे से वसीला न लिया गया हो। लटकाने के बारे में यह हुक्म है कि चाहे उस में कुरआन की आयत ही क्यों न हो, हराम है। इसलिये कि आप ने हर प्रकार के तावीज़ पहनने से मना किया है। इस मिनाही में कुरआन लिख कर लटकाना भी शामिल है। कुछ उलमा ने कुरआन की आयतों को जाइज़ कहा है। लेकिन हदीस में है कि "जिस ने तावीज़ लटकाया उस ने शिर्क किया।" इस में कुरआन भी शामिल है। तफ़सील का यहाँ मौक़ा नहीं। हाँ, इतना

अवश्य कहेंगे कि अगर कुरआन की आयतों को लिख कर गले आदि में लटकाने की गुन्जाइश निकाल ही ली जाये तो फिर धीरे-धीरे शिर्क का दर्वाज़ा खुल जायेगा। पहन कर गन्दे स्थानों पर जायेगा। सऊदी अ़रब के सब से बड़े मुफ़्ती शैख़ इब्ने बाज़, उसैमीन, जिबरीन और अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ अल् मस्नद आदि ने सख़्ती के साथ इस के पहनने के ख़िलाफ़ फ़तवा दिया है (फ़तवा इब्ने बाज़, हिन्दी एडिशन)

बाब {जादू का बयान। और जो कुछ यहूदियों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर जादू किया था उन का बयान।}

1445:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि क़बीला बनी ज़ुरैक़ के एक यहूदी लबीद बिन आसम नामक ने आप पर जादू कर दिया। जिस से आप का हाल यह हो गया कि आप को ख़्याल आता कि मैं ने फ़लाँ काम किया है, हालाँकि आप ने वह काम न किया होता। चुनान्चे आप ने एक दिन, या रात में दुआ़ की, फिर दोबारा दुआ़ की, और फ़रमायाः ऐ आ़इशा! तुम्हें मालूम होना चाहिये कि अल्लाह पाक से मैं ने जो कुछ पूछा उसे बतला दिया। मेरे पास दो आदमी आये। (वह दोनों फ़रिश्ते थे) उन में से एक मेरे सर के पास बैठा और दूसरा पाँव के पास। जो सर के पास बैठा उस ने दूसरे से कहा, या जो पाँव के पास बैठा था उस ने सर के पास बैठे हुये से कहाः इन्हें क्या बीमारी है? उस ने कहाः इन पर जादू किया गया है। उस ने पूछाः किस ने किया है? दूसरे ने कहाः लबीद बिन आसम ने। उस ने पूछाः किस वस्तु पर किया है? दूसरे ने कहाः कंघी में और कंघी से झड़ने वाले बालों में और नर खजूर के गाभे के रेशे में। उस ने पूछा कि यह कहाँ रखा है? दूसरा बोला कि "ज़ी अरवान" के कुँए में।

आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ ने बयान किया कि फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम चन्द सहाबा के साथ उस कुँए पर गये। आप ने फ़रमायाः ऐ आ़इशा! अल्लाह की क़सम! उस कुएँ का पानी ऐसा था जैसे मेहँदी का रंग घोल दिया गया हो, और वहाँ के खजूरों के सर ऐसे थे जैसे शैतानों के सर। मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा (जो कुछ निकला) उस को जला क्यों नहीं दिया? आप ने फ़रमायाः अल्लाह पाक ने मुझे अच्छा कर दिया मैं लोगों के दर्मियान फ़साद भड़काना अच्छा नहीं समझता, इसलिये उसे गाड़ देने का हुक्म दिया और वह गाड़ दिया गया।

फ़ाइदाः– यह बड़ी अहम हदीस है। क्या नबी पर भी जादू का असर हो सकता है? इस का उत्तर यह है कि हो सकता है। ताकि लोगों को मालूम हो जाये कि नबी जादूगर नहीं है, क्योंकि जादू का असर जादूगर पर नहीं होता (वहीदी) एक रिवायत में है कि आप ने अ़ली और अ़म्मार को कुँए पर भेजा, एक रिवायत में ज़ुबैर को भेजा। तो हो सकता है आप ने पहले इन लोगों को बारी-बारी भेजा, फिर आप स्वँय भी गये। यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी आयी है (5673, 5765, 5766-आ़इशा रज़ि॰) एक रिवायत में है कि आप पत्नी से संभोग कर लेते, लेकिन ख़याल होता कि नहीं किया है (मुस्लिम) बहरहाल

जादू एक हक़ीक़त है और नबी पर भी इस का असर होता है, जमहूर उलमा का यही फ़तवा है।

बाब {"मुअ़व्वज़ात" (सूरःफ़लक़, सूरःनास) पढ़ने और पढ़कर फूँक मारने का बयान।}

1446:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब घर में कोई बीमार होता तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस पर सूरः "फ़लक़" और सूरः "नास" पढ़ कर फूँकते। फिर जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बीमार हुये उस बीमारी में जिस में देहान्त किया, तो मैं आप के ऊपर दम करती (फूँकती) और आप का हाथ पकड़ कर आप ही पर फेरती, क्योंकि आप के हाथ में मेरे हाथ के मुक़ाबला में कहीं अधिक बर्कत थी।

बाब {अल्लाह का नाम पढ़ कर दम करना, और अल्लाह का नाम लेकर पनाह माँगना चाहिये।}

1447:– उस्मान बिन अ़बुल् आ़स सक़्फ़ी रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अपने उस दर्द को लेकर शिकायत की जो मेरे इस्लाम लाने के बाद से ही मेरे शरीर में पैदा हो गया था। तो आप ने फ़रमायाः अपना हाथ दर्द के स्थान पर रख कर तीन मतर्बा **"बिस्मिल्लर्हिरहमानिर्रहीम"** पढ़ो और सात मर्तबा यह दुआ़ पढ़ोः

> **अऊज़ु बिल्लाहि वक़ुद्-रतिही मिन् शर्रि मा अजिदु वउहाज़िरु** (मैं उस चीज़ से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ जिस को पाता हूँ और जिस से डरता हूँ)

फ़ाइदाः– मालूम रहे कि कुरआन की आयतें और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से साबित दुआ़एँ पढ़ कर किसी के ऊपर फूँक मारना, निःसंदेह जाइज़ है। लेकिन इन चीज़ों को लिख कर गले में पहनना और लटकानापलेट पर लिख कर, या पानी दम कर के पिलाना किसी हाल में जाइज़ नहीं। इस का कारण ऊपर हदीस न० 1444 के फ़ादइा में अवश्य ही देखें।

बाब {नमाज़ के अन्दर शक शुब्हा पैदा करने वाले शैतान से पनाह माँगने का बयान।}

1448:– अबू उला से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि उस्मान बिन अबुल आ़स रज़ि० ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास जा कर शिकायत की कि शैतान मेरी नमाज़ में आड़े आ जाता है और कुरआन भुला देता है। आप ने फ़रमायाः उस का नाम "ख़न्ज़ब" है। जब तुम्हें उस के भुलाने का एहसास हो जाये तो उस से अल्लाह की पनाह माँगो (और नमाज़ ही की हालत में) तीन बार अपने बाँयें तरफ़ थूक दो। उस्मान ने बयान किया कि मैं ने ऐसा ही किया तो अल्लाह पाक ने शैतान को मुझ से दूर कर दिया।

फ़ाइदाः– थूकना का अर्थ है "थू-थू" करना, न कि थूक निकाल कर वास्तव में थूकना।

बाब {बिच्छू के डंक मारने पर सूरः फ़ातिहा पढ़ कर दम करना।}

1449:– अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबा में से कुछ लोग सफ़र में अ़रब के किसी क़बीले के पास से गुज़रे तो क़बीला वालों से कुछ खाना-पीना माँगा, लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया। (इसी बीच उन के सर्दार को बिच्छू ने काट लिया तो) वह लोग कहने लगेः आप लोगों में से किसी को मन्त्र याद है? क्योंकि क़बीला के सर्दार को बिच्छू ने काट लिया है। सहाबा में से एक ने कहाः मुझे झाड़-फूँक करना आता है। फिर उन्होंने सूरः फ़ातिहा पढ़ कर दम किया जिससे वह अच्छा हो गया। इस पर क़बीला वालों ने उन्हें बकरियों का एक रेवड़ दिया लेकिन उन्होंने लेने से मना कर दियाऔर कहा कि मैं पहले नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से (लेने के बारे में) पूछूँगा। फिर उन्होंने आप के पास आ कर पूरी घटना की जानकारी देते हुये कहा कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! अल्लाह की क़सम! मैं ने सूरः फ़ातिहा पढ़ कर दम करने के अ़लावा और कुछ नहीं किया। यह सुन कर आप हँसने लगे और फ़रमायाः तुम्हें कैसे मालूम कि वह मन्त्र है? फिर फ़रमायाः जा कर बकरियों को ले लो और एक हिस्सा मेरा भी लगाना।

फ़ाइदाः– बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में इतना और है कि "सूरः फ़ातिहा को पढ़ कर उस पर फूँकने लगे और काटे के स्थान पर थूक भी लगाने लगे" (5736-अबू सअ़ीद खुदरी) इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि कुरआन पाक पर उजरत लेना जाइज़ है। यह भी मालूम हुआ कि जिस मस्अले में जानकारी न हो उसे पहले जानने वालों से पूछ लेना चाहिये, जैसा कि सहाबी ने बकरियों के लेने के बारे में पूछा। आप ने हिस्सा क्यों माँगा? जब दम करने पर उजरत जाइज़ है तो दीनी मस्अला बताने की उजरत क्यों जाइज़ नहीं।

बाब {हर प्रकार के विष (ज़हर) को दूर करने के लिये फूँक मारना जाइज़ है।}

1450:– अस्वद ने बयान किया कि मैं ने आ़इशा रज़ि॰ से दम करने के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अन्सार के एक घराना को ज़हर उतारने के लिये (कुरआन की आयतें या दुआ़यें पढ़ कर) दम करने (यानी फूँकने) की अनुमति दी थी।

बाब {"नम्ला" (एक प्रकार के फोड़े-फुन्सी) के लिये दम करने का बयान।}

1451:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बुरी नज़र, ज़हर और फुन्सी-दाना निकलने पर दम करने कीअनुमति दी है।

फ़ाइदाः– 'नम्ला' शरीर में एक प्रकार के दाने निकल आते हैं जिन में बड़ी जलन होती

है, और यह दाने जगह बदलते रहते हैं। या वह सफ़ेद या लाल दाने भी मुराद हैं जो बग़ल में निकल आते हैं।

बाब {बिच्छू के काटने पर भी दम करने की अनुमति है।}

1452:– जाबिर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दम (झाड़-फूँक) से मना फ़रमा दिया तो अ़म्र बिन हज़्म के लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये और कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल! आप ने दम करने से मना फ़रमा दिया है हालाँकि हमारे पास बिच्छु के काटने पर झाड़-फूँक का उपचार है। रावी ने बयान किया कि फिर उन्होंने उसे पढ़ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सुनाया तो आप ने फ़रमाया: इसे पढ़ने में कोई हरज नहीं, तुम में से अगर कोई अपनेभाई को फ़ाइदा पहुँचा सकता है तो पहुँचाये।

1453:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल! जिस बिच्छू ने मुझे कल रात काट लिया था उस ने मुझे बड़ी तक्लीफ़ पहुँचाई (यानी बहुत दर्द हुआ) आप ने फ़रमाया: अगर तुम रात को यह पढ़ लेते तो वह तुम्हें कुछ न नुक़्सान पहुँचा सकता।

अऊज़ु बि-कलिमातिल्ला हित्तम्माति मिन् शर्रि मा ख़-ल-क़

फ़ाइदा:– मालूम हुआ कि रात को दुआ़ को पढ़ कर सोना चाहिये, इस से जानवरों के काटने से सुरक्षित रहेगा। ऊपर की हदीस से मलूम हुआ कि अगर दम करने वाले शब्दों में किसी प्रकार का कुफ़्र-शिर्क नहीं है (और वह कुरआन व सुन्नत से साबित नहीं है) तो उन्हें भी पढ़ कर दम करने और झाड़-फूँक करने में कोई हरज नहीं है।

बाब { बुरी नज़र का लगना यह सत्य है। और जब तुम्हें स्नान करने का हुक्म दिया जाये तो स्नान कर लो (इस में शिर्क नहीं है)}

1454:– इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बुरी नज़र का लग जाना हक़ है। अगर कोई चीज़ तक़्दीर से आगे बढ़ सकती है तो वह नज़र है (लेकिन बढ़ती नहीं है) और अगर तुम से स्नान करेन को कहा जाये तो स्नान कर लो।

फ़ाइदा:– इस हदीस में उन लोगों का रद्द है जो नज़र का इन्कार करते हैं। जिस की नज़र लग जाये उस के नहाने के पानी से नज़र लगे हुये को नहला दिया जायेतो वह तुरन्त ठीक हो जाता है।

सहल बिन हनीफ़ ने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ मक्का के लिये रवाना हुआ। मैं गोरा-चिट्टा जवान था। जब क़ाफ़िला जोहफ़ा की घाटी में पहुँचा तो हजरत सहल ने स्नान किया। उन्हें आ़मिर बिन रबीअ़ा के लोगों

ने स्नान करते हुये देख लिया और कहा कि ऐसा सुन्दर बदन तो मैं ने किसी पर्दे वाली महिला का भी आज तक नहीं देखा। इस के बाद ही सहल ज़मीन पर बेहोश होकर गिर पड़। फिर उन्हें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास लाया गया और कह गया: ऐ अल्लाह के रसूल! ज़रा सहल को देख लें वह तो सर ही नहीं उठाते हैं। आप ने पूछा: क्या किसी की नज़र लग गयी है? लोगों ने कहा: आ़मिर ने उन्हें स्नान करते देखा था। आप ने उन्हें बुला कर डाँटा और फ़रमाया: तू ने अपने भाई को क्यों क़त्ल किया? जब वह तुम्हें भला लगा था तो उस के लिये बर्कत की दुआ़ क्यों नहीं की। फिर आप ने आ़मिर को स्नान करने को कहा। चुनान्चे उन्होंने अपना मुँह, हाथ, कोहनियाँ, घुटने पैरों को चारों ओर से और तहबन्द के अन्दर का जिस्म (शर्मगाह) को एक बर्तन में धोया, फिर उस पानी को सहल के ऊपर डाल दिया गया। एक व्यक्ति ने पीछे से उनके सर और पीठ पर बर्तन का पानी उलट दिया। फिर सहल चन्गे होगये और ऐसे हो गये गोया उन्हें कुछ हुआ ही नहीं था। (अहमद)

बाब {बुरी नज़र लग जाने पर दम करने का बयान।}

1455:- आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे नज़र में झाड़-फूँक करने की अनुमति देते थे।

1456:- जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अ़म्र बिन हज़्म क़बीला के लोगों को साँप के काटने पर झाड-फूँक करने की अनुमति दी है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अस्मा बिन्त उमैस (यानी जाफ़र तय्यार रज़ि॰ की पत्नी) से पूछा: मैं अपने भाई के बच्चों को बहुत दुबला देखता हूँ, क्या वह भूखे रहते हैं? (उन्हें पेट भर खाने को नहीं मिलता है?) अस्मा ने कहा: ऐसी कोई बात नहीं, बल्कि बात यह है कि उन्हें बहुत जल्दी नज़र लग जाती है। आप ने फ़रमाया: फिर उन्हें दम कर दिया करो। चुनान्चे मैं ने एक दम आप को पढ़ कर सुनाया तो आप ने फ़रमाया (ठीक है) इसी को पढ़ कर फूँक दिया करो।

फ़ाइदा:- आप ने अनुमति दी है। देखें ऊपर हदीस न॰ 1452

बाब {बुरी नज़र लगने पर दम करने का बयान।}

1457:- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी उम्मे सलमा से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक लड़की को मेरे घर में देखा जिस के चेहरे पर झाइयाँ थीं, तो फ़रमाया: इस को नज़र लग गयी है इसलिये दम कर दो।

फ़ाइदा:- देखें बुख़ारी शरीफ़ (5739-उम्मे सलमा)

बाब {ज़मीन की मिट्टी में दम करने का बयान।}

1458:- उम्मे सलमा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब कोई बीमार होता, या कोई घाव लग जाता तो आप अपनी शहादत की उँगली को ज़मीन पर रखते (फिर हदीस के रावी सुफ़यान ने ज़मीन पर उँगली रख कर बताया कि इस तरह) और फिर पढ़तेः

बिस्मिल्लाहि तुर-बतु अर्ज़िना बिरी-क़ति बाज़िना लियुश्फ़ा बिही सक़ीमुना बिइज़्नि रब्बिना (अल्लाह के नाम से। हमारे मुल्क की मिट्टी किसी के थूक के साथ, इस से हमारा बीमार शिफ़ा पायेगा अल्लाह के हुक्म से)

1459:- हकीम सुलमी की बेटी ख़ौला से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना जो व्यक्ति किसी स्थान पर उतरते समय यह दुआ़ पढ़ ले तो वहाँ से कूच करते समय तक कोई चीज़ उसे नुक़सान नहीं पहुचाँयेगी। (दुआ़ यह है)

अऊज़ु बि-कलिमाति ल्लाहित्ताम्माति मिन् शर्रि मा ख़-ल-क़

बाब {आदमी का अपने घर वालों को दम करना जबकि वह बीमार हों।}

1460:- आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम में से जब कोई बीमार होता तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपना दायाँ हाथ फेरते और यह दुआ़ पढ़तेः

अज़्हिबिल् बा-स रब्बन्नासि वश्फ़ि अन्-तश्शाफ़ी ला शिफ़ा-अ इल्ला शिफ़ाउ-क शिफ़ा-अन् ला युग़ादिरु

फिर जब आप ,बीमार हुये और बीमारी गंभीर हो गयी तो मैं ने इरादा किया कि मैं भी आप का हाथ पकड़ कर वैसे ही करुँ जैसे आप किया करतेथे, लेकिन आप ने अपना हाथ मुझ से छोड़ा लिया और फ़रमायाः

अल्लाहुम्मग़ फ़िर्ली वज्-अ़ल्नी म-अ़र्रफ़ीक़िल् आला (ऐ मेरे मौला! मुझे बख़्श दे और नेक लोगों (फ़रिश्तों) के साथ मिला दे।

आ़इशा रज़ि॰ ने बयान किया कि फिर मैं ने जो आप को देखा तो आप देहान्त फ़रमा चुके थे।

फ़ाइदाः- आप का अन्तिम वाक्य यही था। इसे हम लोगों को भी पढ़ते रहना चाहिये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने 12 रबीउल अव्वल सन 11 हि॰ सोमवार चाश्त (दिन चढ़े) 10 जबे के समय 63 वर्ष 3 दिन की आयु में देहान्त किया (रहमतुल्लिल् आ़लमीन)

1461:- आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस दम से झाड़-फूँक किया करते थेः

अज़्हिबिल् बा-स रब्बन्नासि बि-यदि कश्शिफ़ाउ ला काशि-फ़ लहू इल्ला अन्-त

बाब {ऐसा दम करने में कोई हरज नहीं जिस में शिर्क न हो।}

1462:— औफ़ बिन मालिक अश्जअी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग जाहिलिय्यत के ज़माना में दम किया करते थे, तो हम ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछाः आप इस बारे में क्या फ़रमाते हैं? आप ने फ़रमायाः अपने दम को मेरे सामने पेश करो (यानी उसे पढ़ कर सुनाओ)

फ़ाइदाः— यानी हर वह दम, मन्त्र, दुआ और शब्द पढ़ कर उस से झाड़-फूँक किया जा सकता है जिस में कुफ़्र-शिर्क की बातें न हों। बुख़ारी की एक हदीस में है कि मेरी उम्मत में सत्तर हज़ार ऐसे लोग जन्नत में जायेंगे जो झाड़-फूँक और दम व मन्त्र नहीं करते-कराते (बुख़ारी-340, 5752-इब्ने अब्बास) इस हदीस से दम और झाड़-फूँक का रद्द नहीं होता है। इस हदीस से यह साबित होता है कि ईमान और तवक्कुल के कई दर्जे हैं और यह दर्जा सब से बुलन्द है जो अल्लाह के वलिय्यों को प्राप्त है।

नोटः— कुरआन पाक की आयतों और दुआओं को पढ़ कर फूँकना तो जाइज़ है। लेकिन इन्हें काग़ज़ या लक्ड़ी, या बर्तन आदि में लिख कर पिलाना, या लटकाना कैसा है? सऊदी अरब के सुप्रसिद्ध मुफ़्ती शैख़ इब्ने बाज़ का फ़तवा नक़ल करना यहाँ बहुत उचित है। एक प्रश्न के उत्तर में लिखते हैं "बहुमूल्य पत्थरों, कड़ो, कीलों हड्डियों आदि पर जो तावीज़ बनाई जाती और बीमार बच्चों, अथवा बीमारों, अथवा दूसरे लोगों के गले में लटकाई जाती हैं, इस प्रकार की तावीज़ हराम है। उलमा की सहीह राय के अनुसार कुरआन की आयतों और सुन्नत से साबित दुआओं को भी लिख कर गले में लटकाना भी उसी प्रकार नाजाइज़ है जिस प्रकार ग़ैर कुरआनी आयतों और हदीसों को लिख कर लटकाना हराम है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "जो लिख कर तावीज़ लटकाए अल्लाह पाक उस का उद्देश्य ही पूरा न करे, और जो सीपी लटकाए अल्लाह उसे आराम न दे।" और एक दूसरी हदीस मे हैं "जिस ने तावीज़ बाँधा उस ने शिर्क किया।" एक व्यक्ति के हाथ में पीतल का कड़ा देखा तो आप ने फ़रमायाः यह क्या है? उस ने बताया कि इस को कमज़ोरी दूर करने के लिये पहन लिया है। आप ने फ़रमायाः इसे उतार कर फेंक दो, यह तुम्हारी कमज़ोरी ही बढ़ाएगी, और अगर पहने हुये मौत आ गयी तो तुम कभी कामियाब नहीं होगे।"

इस अर्थ की और दूसरी हदीसें भी हैं। और इन तमाम हदीसों से यह मालूम हुआ कि तावीज़ लटकाना चाहे वह जिस प्रकार का हो हराम है और लटकाने का संबन्ध शिर्क के कार्यो में से है। हाँ, इस को छोटा शिर्क कहें। और अगर गले में लटकाने वाला यह अक़ीदा रखता है कि अल्लाह के अलावा यह तावीज़ स्वँय उस की कठिनाइयों को दूर कर देगी, तो यह खुला शिर्क हुआ (फ़तावा इब्ने बाज़, उर्दू एडिशन पृष्ठ 80)

कितबुल् मर्ज़ि वत्तिब्बि
(बीमारी और उपचार का बयान)

बाब {मोमिन को ज़ोभी बीमारी या तक्लीफ़ पहुँचती है उस पर उसे सवाब मिलता है।}

1463:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ सेरिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास गया तो उस समय आप बुख़ार से पीड़ित थे। मैं ने आप से कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! आप को बहुत कड़ा बुख़ार चढ़ता है? आप ने फ़रमायाः मुझे तुम में से दो आदमियों के बराबर बुख़ार चढ़ता है। इस पर मैं ने कहाः फिर तो आप को दो सवाब मिलता है? आप ने फ़रमायाः हाँ। फिर आप ने फ़रमायाः जिस मुसलमान को कोई बीमारी या तक्लीफ़ पहुँचती है तो अल्लाह पाक उस के गुनाहों को ऐसे ही झाड़ देता है जैसे दरख़्त अपने पत्ते झाड़ देता है।

फ़ाइदा:– देखें बुख़ारी शरीफ़ (5640, 5641, 5642, 5643, 5644)

बाब {किसी बीमार का पुर्सा करना सवाब का कार्य हैं।}

1464:– सौबान रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बीमार का हाल–चाल मालूम करने वाला जब तक उस के पास होता है गोया जन्नत के बाग़ में होता है।

1465:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक क़ियामत के दिन फ़रमायेगा कि ऐ आदम के बेटे! मैं बीमार हुआ तो तूने मेरी खोज–ख़बर न ली। इस पर वह कहेगाः ऐ मेरे मौला! मैं तेरी खोज–ख़बर कैसे लेने लगा। तू तो समस्त संसार का स्वामा है। इस पर अल्लाह पाक फ़रमायेगा कि तुझे मालूम नहीं कि मेरा फ़लाँ बन्दा बीमार हुआ था लेकिन तूने उस का हाल–चाल नहीं लिया। अगर तू उस की ख़बर लेता तो तू मुझे उस के निकट पाता।

ऐ आदम के बेटे! मैं ने तुझ से खाना माँगा लेकिन तू ने नहीं दिया? वह कहेगा कि ऐ मेरे मौला! मैं तुझे कैसे खिलाता? तू तो सारे जहान का मालिक है। इस पर अल्लाह पाक कहेगाः क्या तुझे नही मालूम कि मेरे फ़लाँ बन्दे ने तुझ से खाना माँगा था लेकिन नू ते नहीं खिलाया। अगर तू उस को खिला देता तो खिलाने का सवाब मेरे पास से पाता।

ऐ आदम के बेटे! मैं ने तुझ से पानी माँगा लेकिन तुम ने नहीं पिलाया। इस पर बन्दा कहेगा कि ऐ मेरे मौला! मैं तुझे कैसे पानी पिलाता, तू तो समस्त संसार का मालिक है। इस पर अल्लाह पाक कहेगा कि मेरे फ़लाँ बन्दे ने तुझ से पानी माँगा था लेकिन तू ने नहीं पिलाया, अगर तू पिला देता तो उस का सवाब मेरे पास पाता।

फ़ाइदाः— इस हदीस से मालूम हुआ कि बीमार आदमी का हाल-चाल लेने के लिये उस के घर जाना भूखे को खाना खिलाना, प्यासे को पानी पिलाना बहुत बड़े सवाब का काम है और यह हर मुसलमान पर वाजिब है। देखें बुख़ारी (5649-अबू मूसा) (5690-बरा बिन आज़िब)

बाब {यूँ न कहो कि मेरी आत्मा गन्दी हो गयी है।}

1466:— आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कोई यह न कहे "मेरी आत्मा (नफ़स) नापाक हो गया है," बल्कि यूँ कहे कि "मेरी आत्मा काहिल और सुस्त हो गयी है।"

फ़ाइदाः— ख़बीस, नापाक और नजिस जैसे शब्द काफ़िर के लिये बाले जाते हैं, इस़लिये एक मुसलमान के लिये इस शब्द का प्रयोग मना है।

बाब {हर बीमारी के लिये दवा है।}

1467:— जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हर बीमारी के लिये दवा है। और जब दवा (शरीर में) पहुँचती है तो अल्लाह के हुक्म से शिफ़ा हो जाती है।

फ़ाइदाः— कहने का अर्थ यह है कि दवा में अपनी कोई तासीर नहीं है, उस में तासीर और प्रभाव अल्लाह पाक डालता है। चुनान्चे हम रोज़ ही देख रहे है कि दो आदमी को एक ही तरह की बीमारी है और दोनों को डाक्टर एक ही दवा देता है। लेकिन एक अच्छा हो जाता है और दूसरा मर जाता है। जो मर जाता है उस के शरीर में दवा अल्लाह के हुक्म से अपना असर नहीं दिखाती है।

बाब {बुख़ार, जहन्नम के भाप से है, इसलिये बुख़ार को पानी से ठन्डा करो।}

1468:— अस्मा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मेरे पास जब कोई बुख़ार वाली महिला लाई जाती तो मैं पानी मँगवा कर उसके गरीबान में (सीने पर) डालती और कहती कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि बुख़ार को पानी से ठन्डा करो और यह भी फ़रमाया कि बुख़ार जहन्नम के भाप में से है।

फ़ाइदाः— बुख़ारी शरीफ़ में यह हदीस इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है (5723-इब्ने उमर) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बुख़ार की गर्मी को जहन्नम के भाप से तश्बीह दी है। इमाम नाफ़े ने बयान किया कि इब्ने उमर को बुख़ार चढ़ता तो यूँ दुआ करतेः

अल्लाहुम्मक् शिफ़ अन्नर्रिज-ज़ (ऐ अल्लाह! इस अज़ाब को हम से दूर कर दे (बुख़ारी-5723-नाफ़े)

आजकल बड़े-बड़े हस्पतालों में बुख़ार वाले मरीज़ के ऊपर बर्फ़ का भीगा हुआ कपड़ा डाल देते हैं। हर आधा घन्टा पर कपड़ा बदलते रहते हैं, इस प्रकार बुख़ार उतर जाता है।

बाब {बुख़ार गुनाहों को दूर कर देता है।}

1469:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उम्मे साइब (या उम्मे मुसय्यिब) के पास गये तो (उन्हें देख कर) फ़रमायाः ऐ उम्मे साइब (या ऐ उम्मे मुसय्यिब!) तुम काँप रही हो? उन्होंने कहा कि बुख़ार चढ़ा हुआ है, अल्लाह पाक इसे बर्कत न दे। यह सुन कर आप ने फ़रमायाः बुख़ार को बुरा मत कहो क्योंकि वह आदमी के गुनाहों को इस प्रकार दूर कर देता है जैसे आग की भट्ठी लोहे के मैल को दूर कर देती है।

बाब {मिंगी और इस के आने पर सवाब का बयान।}

1470:– अ़ता बिन रिबाह रज़ि॰ ने बयान किया कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने मुझ से कहाः क्या मैं तुम्हें एक जन्नती महिला को न दिखाऊँ? मैं ने कहाः ज़रुर दिखाइये। उन्होंने कहाः यह काली महिला नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आयी और कहने लगी कि मुझे मिंगी की बीमारी है और दौरा पड़ने पर मेरा शरीर नन्गा हो जाता है, इसलिये आप अल्लाह पाक से दुआ़ फ़रमा दीजिये। आप ने फ़रमायाः अगर तुम इस बीमारी में सब्र से काम लो तो तुम्हारे लिये जन्नत है। और अगर कहो तो मैं दुआ़ करता हूँ, अल्लाह पाक तुम्हें चन्गा कर देगा। उस नेकहाः मैं सब्र करुँगी। उस ने फिर कहा कि उ़स हालत में मेरा शरीर खुल जाता है इस के लिये आप अल्लाह पाक से दुआ़ कर दें कि मेरा शरीर न खुले। चुनान्चे आप ने उस के लिये दुआ़ फ़रमायी।

फ़ाइदाः– स्पष्ट है कि आप के दुआ़ के पश्चात् उस का शरीर नहीं खुलता था। मालूम हुआ कि हर बीमारी और मुसीबत में सब्र का बदला जन्नत है।

बाब {"तलबीना" (मलीदा) बीमार के दिल को खुश रखता है।}

1471:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हमारे घरों में किसी का देहान्त हो जाता तो महिलाएँ एकत्र होतीं, फिर जब वह चली जातीं और घर में केवल घर वाले और ख़ास लोग बचते तो तलबीना की हाँडी पकाने का हुक्म देती, जब वह पकने लगता तो रोटी को तोड़ कर शूबा में मिला कर सरीद (मलीदा) तय्यार किया जाता, फिर तलबीना को सरीद में मिला कर महिलाओं से कहतीं कि इसे खाओ, क्योंकि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि तलबीना बीमार आदमी के दिल को खुश करता है और

उसके पीने से रन्ज हल्का हो जाता है।

फ़ाइदा:– आटे के चोकर में शहद और दूध मिला कर उसे पकाया जाता है, इस का नाम "तलबीना" है। और रोटी को तोड़ कर शूर्बा में मिला कर मलीदा बनाया जाता है, इस का नाम "सरीद" है। इन दोनों को मिला लेने से खाना बड़ा स्वादिष्ट हो जाता है और पेट भर कर आदमी खा लेता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस के खाने से रन्ज कम हो जाता है। (बुख़ारी शरीफ़–5689–आ़इशा, 5690)

बाब {शहद पिला कर उपचार करने का बयान।}

1472:– अबू सओ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगा: मेरे भाई को दस्त लग रहे हैं (शौच पतला कर रहा है) आप ने फ़रमाया: उसे शहद पिला दो। चुनान्चे उस ने शहद पिलाया और फिर आ कर कहने लगा: शहद पिलाने से और अधिक दस्त आने लगा। आप ने तीन बार यही फ़रमाया कि उसे शहद पिला दो। फिर वह चौथी बार आ कर कहने लगा कि मैंने शहद पिलाया लेकिन और अधिक दस्त आने लगा। इस पर आप ने फ़रमाया: अल्लाह पाक (का हुक्म) सच्चा है और तेरे भाई का पेट झूठा है। चुनान्चे उस ने फिर पिलाया तो वह चन्गा हो गया।

फ़ाइदा:– शहद बहुत ही लाभदायक आहार है। पेट को साफ़ करता और पाचन क्रिया (हाज़िमा) को ठीक करता है। यह एक साथ दवा और आहार दोनों का काम करता है। (देखें बुख़ारी–5684– अबू सओ़ीद खुदरी) एक दूसरी रिवायत में फ़रमाया: अगर तुमहारी दवाओं में कुछ भलाई है तो पोछना लगवाने, शहद पीने और आग से दाग़ने में है (बुख़ारी–5683–जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह)

बाब {कलौंजी से उपचार करने का बयान।}

1473:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि काले दाने में "साम" को छोड़ कर हर बीमारी से शिफ़ा है। और "साम" मौत को कहते हैं, और काले दाने से मुराद कलौंजी है।

फ़ाइदा:– (बुख़ारी–5687–आ़इशा) 'कलौंजी' काला ज़ीरा को कहते हैं। यह खाँसी, दमा गैस, डकार और जलन्धर आदि में बहुत लाभदायक है। एक सहाबी बीमार हुये तो पाँच या सात दाने पीस कर ज़ैतून के तेल में मिला कर दोनों नाक में टपका दिया (बुख़ारी–5687–इब्ने अबी अ़तीक़) आप की किसी पटनी की उंगली में दाना निकल आया तो कलौंजी को पीस कर रखने का हुक्म दिया।

बाब {जो व्यक्ति सुब्ह को अ़जवा खजूर खा लिया करे तो (शाम तक) उसे कोई ज़हर और जादू–टोना हानि नहीं पहुँचा सकता।}

1474:- सअ़द बिन अ़बू वक़्क़ास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना: जो व्यक्ति सुब्ह के समय सात अ़जवा खजूरें खा ले तो पूरे दिन उस को कोई ज़हर (विष) और जादू (टोना-टोटका) हानि नहीं पहुँचा सकता।

1475:- आइशा सिद्दीका रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया "आ़लिया" की अ़जवा खजूर में शिफ़ा है, यह फ़रमाया कि: वह सुब्ह के समय तिरयाक़ है।

फ़ाइदा:- मदीना का वह क्षेत्र जो नज्द की तरफ़ है उसे "आ़लिया" कहा जाता है। "तिरयाक़" उस दवा को कहते हैं जो ज़हर के असर को समाप्त कर दे। यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी है (5445, 5768-सअ़द बिन अ़बू वक़्क़ास)

बाब {कुमात "मन्न" की तरह है, और उस का पानी आँख के लिये शिफ़ा है।}

1476:- सओ़द बिन ज़ैद रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कुमात, मन्न की तरह है जिसे अल्लाह पाक ने बनी इस्राईल (के खाने) के लिये उतारा था, और उस का पानी आँख के लिये दवा है।

फ़ाइदा:- 'कुमात' कुंभी को कहते हैं। इसे दीहात में "साँप की छतुरी" कहते हैं, आ़म तौर से गेहूँ के खेत में होती है। "मन्न" और "सल्वा," इसे अल्लाह पाक ने आसमान से बनी इस्राईल के खाने के लिये उतारता था (देखें सूर: बक़र:57, सूर:आराफ़ 160) 'सल्वा' बटेर के माँस को कहते हैं और "मन्न" एक प्रकार की मीठी चीज़ होती थी।

बाब {ऊ़द हिन्दी से उपचार करना, जिसे "कुस्त" भी कहा जाता है।}

1477:- उबैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उत्बा बिन मस्ऊ़द से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मेहसन की पुत्री उम्मे क़ैस ने मुझे बताया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास अपने गोद के बच्चे को लेकर गयी जो अभी अनाज नहीं खाता था, और मैं ने एक बीमारी की वजह से उस के गले को उगँलियों से दबाया हुआ था। उम्मे क़ैस ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम अपने बच्चों को तालू दबा कर उन्हें क्यों तक्लीफ़ देती हो (इस बीमारी में) "ऊ़द हिन्दी" यानी "कुस्त" इस्तेमाल करो। इस दवा में सात बीमारियों का उपचार है, उन में से एक पिसुली चलना भी है।

हदीस के रावी उबैदुल्लाह ने बयान किया कि उम्मे क़ैस ने मुझ से यह भी बयान किया कि उस बच्चे ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ऊपर पेशाब कर दिया तो आप ने पानी मँगवा कर कपड़े पर छिड़क दिया और उसे नहीं धोया।

फ़ाइदा:- बुख़ारी शरीफ़ में है कि "इस में सात बीमारियों का उपचार है। तालू के दर्द में इसे नाक में डाला जाता है और पिसुली के दर्द में चबाया जाता है" (5692-उम्मे क़ैस) "कुस्त हिन्दी" एक पौधे की जड़ होती है जिसे "कोट" भी बोलते हैं। यह बहुत मश्हूर दवा है, पन्सारियों के पास हर समय मिलती है। बच्चों के मुँह में कव्वा बढ़ जाता है,

इस बीमारी में इसे पीस कर नाक में डाला जाता है, या सूँघा जाता है। एक मस्अला यह भी मालूम हुआ कि जो बच्चा अनाज नहीं खाता है उस के पेशाब पर केवल पानी की छीटें काफ़ी है, लेकिन अगर बच्ची है तो उस के पेशाब को धोना पड़ेगा (तिर्मिज़ी)

बाब {मुँह में दवा डाल कर उपचार करना।}

1478:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ सेरिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बीमारी में आप के मुँह में दवा डाली तो आप ने इशारा से फ़रमाया कि मेरे मुँह में दवा न डालो। हम लोगों ने सोचा कि आप बीमारी की वजह से नफ़रत कर रहे हैं। (इसलिये ज़र्बदस्ती दवा पिला दी) जब आप को होश आया तो फ़रमायाः तुम सब के मुँह में दवा डाली जाये, लेकिन अ़ब्बास के मुँह में न डाली जाये क्योंकि वह मौजूद नहीं थे।

फ़ाइदा:– यह अन्तिम बीमारी के मौक़े की घटना है। आप के मना करने के बावजूद दवा पिलाई गयी। आप के चचा अ़ब्बास रज़ि॰ बाद में आये थे।

बाब {पोछना लगवाना और नाक में दवा डालने का बयान।}

1479:– इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पोछना लगवाया और पोछना लगाने वाले को मज़दूरी दी, और नाक में दवा भी डाली।

बाब {पोछना लगवा कर और दाग़ कर उपचार करने का बयान।}

1480:– आ़सिम बिन उमर बिन क़तादा से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ हमारे घर आये उस समय किसी को घाव हो जाने की शिकायत थी। जाबिर रज़ि॰ ने उस से पूछाः तुम्हें क्या परेशानी है? उस ने कहा कि घाव हो जाने से सख़्त तक्लीफ़ हो रही है। इस पर जाबिर ने कहाः ऐगुलाम! जा कर पोछना लगाने वाले को बुला ला। उस ने कहाः ऐ अब्दुल्लाह! पोछना लगाने वाले को बुला कर क्या करेंगे उन्होंने कहा कि इस घाव पर पोछना लगवाना चाहता हूँ। उस ने कहाः अल्लाह की क़सम! (पोछना लगाने के बाद घाव बड़ा हो जायेगा) मक्खियाँ (बैठ कर) तंग करेंगी, कपड़े के रगड़ से तक्लीफ़ पहुँचेगी और यह मेरे लिये बर्दाशत के क़ाबिल नहीं। जब उन्होंने देखा कि यह पोछना लगवाने से भाग रहा है तो फ़रमायाः मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि दवाओं में सब से बेहतर तीन दवाइयाँ हैं (1) पोछना लगवाना (2) शहद पीना (3) आग से दाग़ना। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि मैं आग से दाग़ना अच्छा नहीं समझता। चुनान्चे पोछना लगाने वाले ने आ कर पोछना लगाया और उन की बीमारी समाप्त हो गयी।

फ़ाइदा:– मैं ने "घाव" का तर्जुमा किया है, हदीस में "खुराज" का शब्द आया है जिस का अर्थ है घाव पर खून और पीब आदि जम कर सूख जाता है। ऊपर से घाव नहीं मालूम पड़ता, लेकिन जब उस पर कपड़े का रगड़ लगता है तो काँटे की तरह चुभता है। यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी है (5683–जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰)

1481:– जाबिर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की

पत्नी उम्मे सलमा रज़ि॰ ने आप से पोछना लगवाने की अनुमति माँगी तो आप ने अबू तैबा को पोछना लगाने का हुक्म दिया। हदीस के रावी ने बयान किया कि मेरे ख़याल से अबू तैबा, उम्मे सलमा रज़ि॰ के दूध शरीक भाई थे और अभी नाबालिग़ थे।

फ़ाइदा:– आप नेभी इन्ही अबू तैबा से पोछना लगवाया था और एक साअ़ा खजूर मज़दूरी भी दी थी (बुख़ारी–2102–अनस बिन मालिक) मालूम हुआ आवश्यक्ता पड़ने पर अजनबी मर्द से भी उचार कराना जाइज़ है।

बाब {नस को काट कर और आग से दाग़ कर उपचार करने का बयान।}

1482:– जाबिर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उबय्यि बिन कअ़ब के पास एक डाक्टर को भेजा तो उस ने एक नस काट कर उसे दाग़ दिया।

बाब {घाव का उपचार आग से दाग़ कर करना।}

1483:– जाबिर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ि॰ के अक्हल नस में तीर लग गया तो आप ने तीर के फल को गर्म कर के अपने हाथ से उसे दाग़ा। उन का हाथ सूज गया तो आप ने दोबारा दाग़ा।

फ़ाइदा:– सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ि॰ खन्दक़ की लड़ाई में तीर से घायल हो गये थे। तीर उन के बाजू में लगा था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन के उपचार के लिये मस्जिदे नबवी में ख़ेमा लगवा दिया और रोज़ उन की अ़यादत फ़रमाते थे। इसी मौक़े पर आप ने दाग़ कर उन का उपचार किया। अन्ततः इसी बीमारी में उन्होंने देहान्त किया। रज़ियल्लाहु अ़न्हु।

बाब {शराब से उपचार जाइज़ नहीं है।}

इस बाब से संबन्धित हदीस न॰ 1279 ऊपर गुज़र चुकी है। वाइल हज़रमी से रिवायत है कि तारिक़ बिन सुवैद जोफ़ी रज़ि॰ ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से शराब के बारे में पूछा तो आप ने उस को बनाने से मना कर दिया, या नापसन्द किया। उन्होंने कहाः मैं तो केवल दवा के लिये बनाता हूँ। इस पर आप ने फ़रमायाः वह दवा है ही नहीं, वह तो (सरापा) बीमारी है।

फ़ाइदा:– शराब पीना हराम है, लेकिन क्या जोड़ों के दर्द में उस की मालिश भी हराम है? आ़म तौर पर लोग गठिया की बीमारी में, या चोट की वजह से जोड़ों के दर्द में मालिश करते हैं। इस विषय पर विस्तार से जानकरी के लिये ऊपर हदीस न॰ 1279 का "फ़ाइदा" देखें।

❀ ❀ ❀

किताबुत्ताऊनि

(महामारी (Plegue) से संबन्धित मसाइल)

नोटः– 'ताऊन' के बारे में अ़ल्लामा नववी रह॰ मुस्लिम की शरह में लिखतेहैं कि यह एक फोड़ा है जो कोहनी, बग़ल, या हाथ की उंगलियों अथवा शरीर के किसी भी भाग में ज़ाहिर होता है। इस फोड़े में आ़म फोड़ों से हट कर बहुत अधिक सूजन, दर्द और जलन होता है। इस से व्यक्ति बीमार हो जाता है और बार-बार कै़ और उल्टी होती है। यह महामारी दूसरे ख़लीफ़ा उमर फ़ारुक़ रज़ि॰ के ख़िलाफ़त के समय में मुल्क शाम में फैली थी, जिस को "ताऊन अ़मवास" के नाम से जाना जाता है।

यह महामारी अगली उम्मतों पर अ़ज़ाब थी, लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्मत के लिये रहमत और शहादत है। चुनान्चे बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत में है कि जो ताऊन की बीमारी में मरे वह शहीद हैं। तफ़सील नीचे आ रही है।

बाब {ताऊन के बारे में बयान। यह एक अ़ज़ाब है। तो न तो उस बस्ती में जाओ जहाँ यह बीमारी फैली है और न उस बस्ती को छोड़ कर भागो।}

1484:– उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यह बीमारी एक अ़ज़ाब है जो तुम से पहले एक उम्मत पर आया था। अब यह बीमारी ज़मीन मे समा गयी। लेकिन कभी समाप्त हो जाती है और कभी आ जाती है। इसलिये अगर कोई सुने कि फ़लाँ मुल्क में ताऊन है तो वहाँ न जाये। और अगर उस मुल्क में जहाँ रहता है यह बीमारी फैले, तो उस स्थान को छोड़ कर भागे भी नहीं।

1485:– अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ (अपने ख़िलाफ़त के ज़माना में) मुल्क शाम के दौरे पर निकले। जब वह (मुल्क शाम के निकट के एक नगर) "सर्ग़" में पहुँचे तो अजनाद (यानी फ़लस्तीन, उर्दुन, दमिश्क़, हिम्स और कुन्सुरीन) के गर्वनरों ने उन से मुलाक़ात की। अबू उबैदा बिन जर्राह और उन के साथियों ने बताया कि मुल्क शाम में ताऊन की वबा फैली हुयी है। यह सुन कर उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ ने कहाः मेरे सामने सर्वप्रथम हिजरत करने वालों को लाओ। इब्नेअ़ब्बास

और उन्हें बताया कि मुल्क शाम में वबा फैली हुयी है (इस हालत में मेरा वहाँ जाना कैसा है?) इस पर उन्होंने मुख़्तलिफ़ रायें दीं। कुछ लोगों ने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लमके सहाबा मैं से बचे-खुचे लोग ही आप के साथ हैं, इसलिये यह उचित नहीं कि आप उन्हें वबा में डाल दें। यह सुन कर उमर रज़ि॰ ने कहाः अच्छा, अब आप लोग जायें। फिर कहा कि अन्सारी सहाबा को बुलाओ। (इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने बयान किया कि) मैं उन्हें भी बुला लाया। उन्होंने उन से भी मश्वरा किया तो उन्होंने भी महाजिर लोगों की तरह इख़्तिलाफ़ किया और उन्ही के डगर पर चले। उमर रज़ि॰ ने कहाः आप लोग भी जायें। फिर हुक्म दिया कि यहाँ पर कुरैश के जो बड़े-बूढ़े हैं जो फ़त्ह मक्का से पहले ईमान लाये हैं उन्हें बुला लाओ। चुनान्चे मैं उन्हें भी बुला लाया। तो उन में से किसी ने भी इख़्तिलाफ़ नहीं किया, सभी ने यही कहा कि हम मुनासिब समझते हैं कि आप सब को लेकर वापस लौट चलें और वबा वाले मुल्क में उनहें न ले जायें। इस के बाद उन्होंने लोग़ों में एलान करवा दिया कि मैं सुब्ह होते ही ऊँट पर सवार होकर मदीना लौट जाऊँगा। चुनान्चे सुब्ह होते ही और लोग भी सवार हो गये।

यह देख कर अबू उबैदा बिन जराह रज़ि॰ कहने लगेः क्या आप अल्लाह की तक़्दीर से भागते हैं? उमर रज़ि॰ ने कहाः काश यह बात और कोई दूसरा कहता (आप जैसे बुद्विमान कैसे कहते हैं?) उमर रज़ि॰ अपने इस फ़ैसले के विपरीत को बुरा जानते थे। (उन्होंने कहा) हाँ, हम अल्लाह की तक़्दीर से भाग तो रहे हैं, लेकिन अल्लाह की तक़्दीर की तरफ़ ही भाग रहे हैं। (यह बताओ) अगर आप के पास ऊँट हों और आप उन्हें लेकर किसी ऐसी वादी में जायें जिस के दो कनारे (छोर) हों, एक कनारा हरा भरा हो और दूसरा सूखा हुआ हो। अब अगर आप हरे भरे कनारे पर चरायेंगे तो यह भी अल्लाह की तक़्दीर से होगा, और सूखे कनारे पर चराएँगे तो यह भी अल्लाह की तक़्दीर से ही होगा। (यानी जिस प्रकार इस चरवाहे पर कोई आरेप नहीं, क्योंकि उस ने जानवरों को आराम दिया, इसी प्रकार मैं भी अपनी प्रजा का चरवाहा हूँ, जो स्थान अच्छा मालूम होता है वहीं लेकर जाता हूँ। और यह काम तक़्दीर के ख़िलाफ़ नहीं, बल्कि तक़्दीर ही के अनुकूल है)

इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने बयान किया कि इसी बीच अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ि॰ आ गये, वह अपने किसी काम से कहीं गये हुये थे, उन्होंने कहा कि मेरे पास इस मस्अला से संबन्धित एक तर्क मौजूद है। मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना आप ने फ़रमायाः जब तुम किसी मुल्क के बारे में सुनो क़ि वहाँ महामारी फैली हुयी है तो वहाँमत जाओ, और अगर ऐसे स्थान पर महामारी फैल जाये, जहाँ तुम मौजूद हो तो वहाँ से भागो भी नहीं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने बयान किया कि यह हदीस सुन कर उमर फ़ारुक़ रज़ि॰ ने अल्लाह का शुक्र अदा किया (कि मेरी राय हदीस के मुताबिक़ ठहरी) और फिर वहाँ से वापस (मदीना) लौट आये।

फ़ाइदाः– हदीस का अर्थ स्पष्ट है। जहाँ माहमारी फैली हो वहाँ न जाओ, और जहाँ फैली हो और वहाँ पहले ही से मौजूद हो तो वहाँ से निकलो भी नहीं। अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि॰ का ख़्याल दुरुस्त नहीं था। उमर फ़ारुक़ रज़ि॰ ने शाम को पाँच खन्डों में बाँट रखा था। फ़लस्तीन, उर्दुन, दमिश्क़, हिम्स, कुन्सुरीन। इन के गर्वनर ख़ालिद बिन वलीद, उबैदा बिन जराह, ज़ैद बिन अबू सुफ़यान, शुरहबील बिन हसनह और अ़म्र बिन आ़स रज़ि॰ थे। यह सभी लोग "सरअ़" के स्थान पर उमर रज़ि॰ के स्वागत के लिये मौजूद थे।

❀ ❀ ❀

किताबुत्ति-य-रति
(शगून लेने के मसाइल का बयान)

बाब {"अ़दवा, ति-यरा, हामा, सफ़र" इन की कोई हक़ीक़त नहीं।}

1486:- अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नेफ़रमायाः छूत की बीमारी, बदशगूनी, उल्लू और सफ़र की नहूसत इन की कोई अस्ल नहीं। यह सुन कर एक दीहाती बोलाः ऐ अल्लह के सन्देष्टा! ऊँट के बारे में क्या ख़्याल है। यह रेत में हिरन की तरह साफ़-सुथरे होते हैं, लेकिन जब खुजली ग्रस्त एक ऊँट दूसरे ऊटों में चला जाता है तो सब को खुजली वाला कर देता है (यानी सब को खुजली की बीमारी लग जाती है) आप ने फ़रमायाः उस पहले ऊँट को खुजली की बीमारी कैसे लगी?

एक दूसरी रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः छूत की बीमारी, बदशगूनी, सफ़र और उल्लू की नहूसत इन की कोई हक़ीक़त नहीं।

फ़ाइदाः- 'उल्लू' एक शिकारी परिन्दा है। इसे दिन में दिखाई नहीं देता। अ़रब के लोग इसे मन्हूस समझते थे। उन का अ़क़ीदा था कि आदमी के मरने के बाद उस की रुह उल्लू का रुप धारण कर लेती है और रात में पुकारती फिरती है। 'सफ़र' पेट के एक कीड़े का नाम है जो भूख के समय आदमी के पेट को नोचता है। कभी आदमी इस की वजह से मर भी जाता है। अ़रब के लोग इस बीमारी को छूत वाली बीमारी मानते थे (मुसिलम-जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह) लेकिन कुछ उलमा के निकट इस से मुराद मुर्हरम महीना के बाद वाले महीना का नाम है। इस सफ़र महीना को अ़रब के लोग मन्हूस माने थे। इस में शादी-ब्याह आदि नहीं करते थे। आज भी हमारे मुल्क हिन्दुस्तान में इस महीना के आरंभ के 13 दिन को मन्हूस मानते हैं। 'तीरह' का अर्थ है "परिन्दा उड़ाना"। अ़रब के लोग जब किसी काम के लिये बाहर निकलते तो चिड़िया को पकड़ कर उड़ाते। अगर वह उन के दाँयें होकर उड़ जाती तो उसे नेक फ़ाल मानते, लेकिन अगर बायें होकर उड़ती तो बुरा फ़ाल मानते और सफ़र (यात्रा) का इरादा तर्क कर देते। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इन सब को अन्ध विश्वास क़रार दिया।

बाब {बीमार ऊँट को तन्दुरुस ऊँट के बीच में न शामिल किया जाये।}

1487:– इब्ने शिहाब ज़हरी से रिवायत है उन्होंने कहा कि मुझ से अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ के लड़के अबू सलमा ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "एक जानवर की बीमारी दूसरे को नही लगती।" और अबू सलमा यह हदीस भी बयान करते थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "बीमार ऊँट को तन्दुरुस्त ऊँट के साथ न मिलाओ" (क्योंकि इस की बीमारी उस को भी लग जायेगी) अबू सलमा ने कहा कि अबू हुरैरा रज़ि॰ इन दोनों हदीसों को रिवायत करते थे, लेकिन बाद में उन्होंने "एक जानवर की बीमारी दूसरे को नहीं लगती" वाली हदीस को बयान करना बन्द कर दिया।

इस पर हारिस बिन अबू जुबाब ने जो अबू हुरैरा रज़ि॰ के चचा जायेभाई थे कहाः ऐ अबू हुरैरा! तुम इस हदीस को पहले तो रिवायत करते थे लेकिन अब क्यों नहीं करते? इस पर अबू हुरैरा ने कहाः मैं तो इस हदीस को नहीं जानता। हाँ, यह जानता हूँ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है "बीमार ऊँट को तन्दुरुस्त ऊँट के साथ न मिलाओ"। यह सुन कर हारिस और अबू हुरैरा में कहा–सुनी हो गयी। अबू हुरैरा रज़ि॰ ने नाराज़ होकर हब्शी ज़बान में हारिस को कुछ कहा भी। फिर उन से पूछा कि तुम ने कुछ समझा कि मैं ने क्या कहा? हारिस ने कहाः नहीं। अबू हुरैरा ने कहा कि मैं ने (हब्शा की भाषा में) यह कहा है कि मैं छूत न लगने वाली हदीस को बयान करने से इन्कार करता हूँ।

अबू सलमा ने कहाः मैं अपनी उम्र की क़सम खा कर कहता हूँ कि अबू हुरैरा रज़ि॰ इस हदीस को बयान करते थे "एक जानवर की बीमारी दूसरे को नहीं लगती है"। अब मालूम नहीं कि वह इस हदीस को भूल गये, या इस हदीस को दूसरी हदीस से मन्सूख़ मान लिया।

फ़ाइदाः– बुरा शगून लेना, इस को तो सभी पढ़े–लिखे लोग ग़लत मानते हैं। लेकिन डाक्टर लोग दूत की बीमारी को तस्लीम करते हैं। लेकिन यह भी एक भ्रम है। क्योंकि ऐसा भी देखा गया है कि एक घर में छूत की बीमारी फैली लेकिन सभी लोग बीमार नहीं हुये।

अस्ल में इस हदीस में यह बताना उद्देश्य है कि कोई बीमारी अल्लाह के हुक्म के बिना दूसरे को नहीं लगती। मुश्रिकों का यह अ़क़ीदा नहीं था। छूत की बीमारी को तस्लीम किया जाये, लेकिन साथ ही यह अ़क़ीदा भी रखा जाये कि यह अल्लाह के हुक्म ही से फैलती है, न कि आप ही आप। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वस़ल्लम ने इस से बचने की तदबीर भीबताई, जैसा कि ऊपर हदीस न॰1484 में अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ि॰ ने बयान किया।

अगर अबू हुरैरा रज़ि॰ हदीस को भूल गये तो इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, क्योंकि

छूत न लगने वाली हदीस साइब बिन यज़ीद, जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह और अनस बिन मालिक से भी रिवायत है (मुस्लिम) और बुख़ारी में भी है (5753-इब्ने उमर, 5756-अनस बिन मालिक)

बाब {"नौआ" की कोई हक़ीक़त नहीं।}

1488:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक की बीमारी दूसरे को नहीं लगती (यानी छूत की कोई हक़ीक़त नहीं) इसी प्रकार "हामा", "नौआ", और "सफ़र" की कोई हक़ीक़त नहीं।

फ़ाइदाः- अ़रब के मुश्रिकों का अ़क़ीदा था कि किसी नक्षत्र (सितारे) के डूबने अथवा निकलने पर वर्षा होती है। इसी को "नौआ" कहते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस अ़क़ीदा को ग़लत कहा है। वर्षा अल्लाह के हुक्म से होती है, इस में नक्षत्रों का कोई अ़मल-दख़ल नहीं होता है।

बाब {"गूल" की कोई हक़ीक़त नहीं।}

1489:- जाबिर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः छूत की बीमारी कोई चीज़ नहीं, नहूसत कोई चीज़ नही और गूल कोई चीज़ नहीं।

फ़ाइदाः- अ़रब के मुश्रिकों का अ़क़ीदा था कि जन्गल के शैतान रात को चराग़ों की तरह चमकते हैं, मुसाफ़िर को रास्ता भूलवा देते हैं, उन्हें जान से मार देते हैं, इन शैतानों का नाम "गूल" है। यह सब भ्रम है और निरी जिहालत है।

बाब {कोढ़ी व्यक्ति से दूर रहने का बयान।}

1490:- शरीद से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि (क़बीला बनी) सक़ीफ़ में एक कोढ़ी रहता था आप ने उस के पास संदेश भेजा कि तुम वापस लौट जाओ हम तुम से बैअ़त ले चुके हैं।

फ़ाइदाः- यह एक गन्दी बीमारीहै। इस में रक्त ख़राब हो जाता है जिस से शरीर गलने लगता है और हाथ-पाँव की उंगलियाँ झड़ने लगती हैं। बुख़ारी की रिवायत में है कि कोढ़ी से ऐसे भागो जैसे कि कोई शेर से डर कर भागता है (5707-अबू हुरैरा) लेकिन इस के ख़िलाफ़ जाबिर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कोढ़ी के साथ खाना खाया। आ़इशा रज़ि॰ ने भी बयान किया कि मेरा एक आज़ाद किया हुआ गुलाम भी कोढ़ी था जो हमारे बर्तन में खाता-पीता था। उलमा ने लिखा है कि इन हदीसों में टकराव नहीं है। अर्थ यह है कि जो कमज़ोर ईमान का हो और डरता हो वह दूर रहे, लेकिन जिसे अल्लाह पर भरोसा है, उस का ईमान पक्का हो कि सब कुछ अल्लाह ही के हुक्म से होता है वह खाए-पीये। अगर कोई दूर रहता है तो उस का अ़मल उस हदीस पर है जिस में बचने का हुक्म दिया गया है। और अगर कोई मिल-जुल कर खाता-पीता है तो वह उस हदीस पर अ़मल करता है कि "जो कुछ होता है अल्लाह के हुक्म से होता है।"

अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम रह॰ ने लिखा है कि छूत की बीमारी का हदीसों में इन्कार केवल उस भ्रम और अन्धविश्वास को समाप्त करने के लिये किया गया है कि यह बीमारी स्वँय उड़ कर लग जाती है और अल्लाह के हुक्म का इस में कोई अ़मल-दख़ल नहीं। वर्ना छूत का लगना हक़ीक़त है।

बाब {अच्छा शगून लेना अच्छी बात है।}

1491:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना आप ने फ़रमायाः बुरे शगून की कोई हक़ीक़त नहीं, लेकिन "फ़ाल" लेना अच्छा है। लोगों ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! फ़ाल क्या चीज़ है? आप ने फ़रमायाः कोई नेक बात जो तुम में से कोई सुने।

फ़ाइदाः– यानी कोई आदमी किसी काम से जा रहा है, राह में उस ने किसी को कहते हुयें सुन लिया कि "इस का काम हो कर रहेगा" या कोई बीमार है उस ने किसी को कहते सुन लिया कि "यह अच्छा हो जायेगा" तो इन नेक बातों पर अ़क़ीदा और भरोसा करना अच्छी बात है। मौलाना दावूद रज़ि॰ ने बुख़ारी के हाशिया में लिखा है "लड़ाई पर जाने वाला व्यक्ति राह में किसी ऐसे व्यक्ति से मिले जिस का नाम "फ़तेह खाँ" हो, तो इस से नेक फ़ाल लिया जा सकता है कि लड़ाई में जीत हमारी ही होगी (5754- की तफ़सीर)

बाब {नहूसत, घर, महिला और घोड़े में होती है।}

1492:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहिं वसल्लम ने फ़रमायाः अगर नहूसत किसी में है तो वह घोड़े, महिला और घर में है।

1493:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः नहूसत अगर किसी चीज़ में है तो वह घर, नौकर, और घोड़े में है।

फ़ाइदाः– क्या वास्तव में इन तीन चीज़ों में नहूसत है? इस सिलसिले में दोनों प्रकार की हदीसें हैं। एक रिवायत में है कि दो व्यक्ति आ़इशा रज़ि॰ के पास गये और कहा कि अबू हुरैरा हदीस बयान करते हैं कि नहूसत तीन चीज़ों में होती है। यह सुन कर आ़इशा नाराज़ हो गयीं और कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने केवल इतना कहा है कि अ़रब के लोग इन तीन चीज़ों में नहूसत को मानते थे।

कुछ उलमा ने यह तावील की है कि अगर घोड़ा, काहिल, सुस्त और पेटू हो तो वह मनहूस है। अगर महिला दुराचारी, बद अख़्लाक़, लड़ाका, झगड़ालू और बदसूरत हो तो वह मन्हूस है। इसी प्रकार अगर घर छोटा हो, ढंग से न बनाया गया हो, हवा और रोशनी के आने-जाने का ढंग से इन्तिज़ाम न हो तो मन्हूस है। (वहीदी)

❀ ❀ ❀

किताबुल् कहा–नति
(भविष्यवाणी का बयान)

नोटः– ग़ैब की बातें, भविष्य की बातें और अटकल पच्चू बातें बताना, हाथ की रेखाएँ देख कर या नक्षत्रों का ताल–मेल देख कर, लोगों का भाग्य बताना, यह सब शिर्क के कार्य हैं। इने को बताने वाला और इन से जा कर पूछने वाला और इन पर विश्वास करने वाला समस्त पापी हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो कोई ज्योतिषी अथवा पन्डित के पास ग़ैब की बातें मालूम करने के लिये गया और उस की बताई हुयी बातों को सच जाना तो उस ने मुझ पर नाज़िल की गयी चीज़ (कुरआन) के साथ कुफ़्र किया, अर्थात वह कुरआन पाक का इन्कारी हो गया (सुनन–अबू हुरैरा) अ़रब में इस प्रकार के बहुत से लोग थे जो भविष्य की बातें और लोगों के भाग्य का हाल बयान करते थे। आजकल मुसलमानों में भी इस प्रकार के पाखंडी, बहरुपये और पीर–फ़क़ीर झूठ और मक्कारी का वस्त्र पहन कर दावा करते हैं कि जिन्नात मेरे क़ब्ज़े में हैं और हम उन की सहायता से बिगड़ी बना देते हैं। इन के पास भी जाना गुनाह है।

बाब {भविष्य की बातें बताने वाले के पास जाना मना है। और हाथ–पैर की रेखाओं के बारें में बयान।}

नोटः– इस बाब से मुतअ़ल्लिक़ लंबी हदीस न॰333 ऊपर "किताबुस्सलात" में बयान हो चुकी है, वहाँ उस का तर्जुमा और फ़ाइदा पढ़ें। हदीस को रिवायत करने वाले हकम सुलमी के पुत्र मुआ़विया रज़ि॰ हैं।

बाब {वह बातें जिन को जिन्नों में से बुरे लोग (फ़रिश्तों से सुन कर) हथिया लेते हैं।}

1494:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से काहिनों के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमायाः उन की बातों का कोई एतबार नहीं। उन्होंने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! वह कभी–कभी ऐसी बातें बता देते हैं जो सच साबित होती हैं। आप ने फ़रमायाः वह बातें वह होती हैं जिन को जिन्न (फ़रिश्तों से सुन कर) हथिया लेते हैं फिर अपने मित्र (यानी ज्योतिषियों) के कानों में डाल देते हैं, जिस प्रकार मुर्ग़ा, मुर्गी को दाने के लिये बुलाता है (और दूसरा मुर्ग़ा समझ जाता है। इसी प्रकार उन की बातों को यह ज्योतिषि लोग समझ लेते हैं और कोई दूसरा नहीं समझ पाता) फिर यह ज्योतिषि उस में सौ झूठ मिला कर बयान करते हैं।

फ़ाइदाः– यह जिन्नात आकाश में जा कर फ़रिश्तों की बातें किस प्रकार सुनते थे? (देखें सूरः जिन्न, आयत 9, पारः29) अब इस प्रकार का सिलसिला बन्द हो चुका है। हाँ, जिन्होंने शैतान से दोस्ती कर रखी है उन के द्वारा इधर-उधर रिपोंट मगँवा कर ज्योतिषि लोग बता सकते हैं। यह असंभव (नामुमकिन) तो नहीं, लेकिन बहुत अधिक कठिन है। हो सकता है संसार में एक-आध ज्योतिषि इस प्रकार के हों। हमारे उस्ताद मौलाना जलील अहसन नदवी रह० ने "जामि-अ़तुल् फ़लाह" बिलरिया गंज में दर्स देते समय बयान किया कि दारुल उलूम नदवा लखनऊ में पढ़ाई के ज़माना में उन का एक बन्गाली साथी था जो मिन्टों में बाहर से मिठायी मँगवा लिया करता था। अपने अंगूठे के नाखून पर अपने घर वालों की तस्वीरें देखा करता था। उस का कहना था कि मेरे पास जिन्नात हैं। अल्लाह बेहतर जाने। यह घटना 1973 में पढ़ाई के समय की है।

बाब {जब शैतान चोरी-छुपे फ़रिश्तों की बातें सुनने की कोशिश करते हैं तो उन पर सितारे हम्ला कर देते हैं।}

1495:– अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मुझ से एक अन्सारी सहाबी ने (या सहाबा की एक जमाअ़त ने) बयान किया कि हम लोग एक रात नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ बैठे हुये थे कि इतने में एक सितारा टूटा और बड़ी तेज़ी से चमका। आप ने उसे देख कर इन लोगों से पूछाः जाहिलिय्यत (कुफ़्-शिर्क) के ज़माना में इस प्रकार जब तुम लोग देखते थे तो इस का क्या अर्थ लेते थे? उन्होंने कहाः अल्लाह और उस के सन्देष्टा ही बेहतर जानते हैं, लेकिन हम लोग तो यह अर्थ लेते थे कि आज रात कोई बड़ा आदमी पैदा होने वाला है, या कोई इस प्रकार का आदमी मरा है। आप ने फ़रमायाः कोई सितारा किसी के मरने अथवा पैदा होने पर नहीं टूटता है (मामला यह है कि) जब हमारा पर्वरदिगार कोई हुक्म देता है तो उस का अ़र्श थामने वाले फ़रिश्ते तस्बीह पढ़ने लगते हैं, उन की आवाज़ सुन कर उन के नीचे के आसमान वाले फ़रिश्ते भी पढ़ने लगते हैं, यहाँ तक कि सब से निचले आसमान तक आवाज़ पहुँच जाती है। फिर जो लोग अल्लाह का अ़र्श थामे हुये फ़रिश्तों सेनिकट होते हैं वह पूछते हैं कि आज रात पर्वरदिगार ने क्या आर्डर दिया है? वह इन्हें बता देते हैं, तो इन से नीचे वाले फ़रिश्ते इन से पूछते हैं। इस प्रकार वह बात (यके बाद दीगरे) सब से निचले आकाश वाले फ़रिश्तों के पास पहुँचती है। इस प्रकार इन फ़रिश्तों से जिन्न सुन लेते हैं और आ कर अपने दोस्तों (ज्योतिषियों) को बता देते हैं। चुनान्चे फ़रिश्ते जब उन को देख लेते हैं तो वह इन सितारों को फेंक कर उन्हें मारते हैं। इस प्रकार वह जिन्न जितनी सुन कर लाते हैं अगर उतनी ही कहें तो सच है, लेकिन वह उस में और झूठ मिला कर लंबी-चौड़ी कहानी बना देते हैं।

फ़ाइदाः– इस की तफ़सीर बयान करने की यहाँ गुन्जाइश नहीं। विस्तार से जानकारी प्राप्त करने के लिये पारः29, सूरःजिन्न, आयत 9,10. का शाने नुज़ूल पढ़ें। या ऊपर का फ़ाइदा पढ़ें।

बाब {जो व्यक्ति नुजूमी के पास गया तो उस की नमाज़ नहीं कुबूल होती है।}

1496:– अबू उबैद की पुत्री सफ़िय्या रज़ि॰ ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बीवियों के हवाले से बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो व्यक्ति नुजूमी (पामिस्ट) के पास जा कर (अपने भविष्य या भाग्य के बारे में) कुछ पूछता है तो चालीस दिन तक उस की नमाज़ कुबूल नहीं होती है।

फ़ाइदाः– आज भी दिल्ली की फुटपाथों पर प्रकार के पन्डित और ढोंगी पाखंडी बाबा अपनी पोथी और पत्र रखे दिखाई देते हैं (1) प्रश्नकर्ता के नाम से मन्त्र पढ़ कर उस के भाग्य का हाल बताते हैं (2) अपनी पोथी में सितारों की राशि देख कर बताते हैं। कुछ लड़के और लड़की की जन्म कुडली देख कर रिश्ता तै करते हैं। (3) हाथ की लकीरें (रेखायें) देख कर उस का भाग्य बताते हैं। और मुसलमानों में ढ़ोंगी बाबा और मक्कार फ़क़ीर लोग अगर की बत्ती सुलगा कर कुछ इधर-उधर की अनाप-शनाप पढ़ कर उस के भाग्य के बारे में बताते हैं। इन सब के पास जाना और कुछ पूछना और उस पर यक़ीन करना महापाप है।

❀ ❀ ❀

किताबुल् हय्यति
(साँप (आदि जानवरों) से संबन्धित अहकाम)

बाब {घर में रहने वाले साँपों को मारना मना है।}

1497:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना है आप ने कुत्तों को मार डालने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि साँपों और कुत्तों को मार डालो, इसी प्रकार दो धारी वाले और दुम कटे साँप को भी मार डालो, क्योंकि यह दानों साँप आँख की रोशनी (ज्योति) छीन लेते और गर्भवती महिलाओं का गर्भपात कर देते हैं। इमाम ज़ुहरी ने कहा कि हो सकता है उन के ज़हर (विष) में इस प्रकार की तासीर हो।

सालिम ने बयान किया कि (उन के पिता) अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ने कहा कि मैं तो जो भी साँप देखता हूँ उसे मार डालता हूँ। चुनान्चे एक दिन मैं अपने घर में एक साँप मारने के लिये उस का पीछा कर रहा था, इतने में ज़ैद बिन ख़त्ताब अथवा लुबाबा मेरे सामने से गुज़रे, उन्होंने कहाः ऐ अ़ब्दुल्लाह! यह क्या कर रहे हो? मैं ने कहाः नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने साँपो को मार डालने का हुक्म दिया है। उन्होंने कहा (हर्गिज़ नहीं) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने घर में रहने वाले साँपों को मारने से मना किया है।

फ़ाइदाः– यानी कुछ साँप ऐसे भी होते हैं जिन के काटने से कुछ नहीं होता है और जब घरों में आते-जाते हैं, बच्चे उन की दुम पकड़ कर नचाते फिरते हैं। हमारे जनपद सिद्धार्थ नगर में ऐसे साँप को "डोढ़हा" कहा जाता है। इन्हें मारने से मना फ़रमाया है। यह सारी हदीसें बुख़ारी शरीफ़ में भी है (3297- इब्ने उमर, 3298-अबू लुबाबा, 3311-अबू लुबाबा) दोधारी वाले साँप का क्या नाम है? इसे अपने-अपने क्षेत्र के रहने वाले लोग जानते होंगे। हमारे क्षेत्र में "नाग" और "गेहुवन" नामक दो प्रकार के फन वाले साँप सब से अधिक विषैले माने जाते हैं। और जो कोई इन्हें देखता है बिना मार डाले नहीं छोड़ता है। दुमकटा साँप का भी यही मामला है।

बाब {घर में रहने वाले साँपों को तीन बार चेतावनी दे दो।}

1498:– हिशाम बिन ज़हरा के आज़ाद किये हुये गुलाम अबू साइब ने बयान किया कि

मैं अबू सअ़ीद ख़ुदरी रज़ि॰ से मिलने के लिये उन के घर गया तो देखा कि वह नमाज़ पढ़ रहे हैं, चुनान्चे मैं बैठ कर नमाज़ समाप्त करने का इन्तिज़ार करने लगा। इसी बीच मैं ने देखा कि उन के घर के कोने में रखी हुयी लकड़ियाँ हिल रही है। मैं ने उधर देखा तो उस में एक साँप बैठा हुआ है। मैं उसे मारने के लिये आगे बढ़ा तो अबू सअ़ीद ख़ुदरी रज़ि॰ ने हाथ के इशारे से मुझे बैठ जाने का हुक्म दिया तो मैं बैठ गया। जब वह नमाज़ पढ़ चुके तो मुझे एक कोठरी दिखाई और पूछाः क्या उसे देख रहे हो? मैं ने कहाः जी हाँ। उन्होंने बयान किया कि उस कोठरी में एक जोड़ा रहता था जिस की अभी नई-नई शादी हुयी थी। हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ ख़न्दक़ की तरफ़ निकले (और वहाँ खोदाई करने लगे) वह नौजवान दोपहर को आप से अनुमति लेकर घर आ जाया करता था। एक दिन उस ने इजाज़त माँगी तो आप ने फ़रमाया कि अपने हथियार भी साथ लेते जाओ, क्योंकि मुझे बनी क़ुरैज़ा के लोगों से डर है (कि रास्ता में तुम पर हमला न कर दें) चुनान्चे उस ने हथियार साथ ले लिया और अपने घर पहुँचा तो क्या देखा कि उस की पत्नी दोनों पटों के बीच दर्वाज़े पर खड़ी है। यह देख कर उस ने मारे ग़ैरत के उस को मारने के लिये नेज़ा तान लिया तो वह बोल पड़ी कि अपना नेज़ा रोक लो और अन्दर जा कर देखो कि क्यों मैं बाहर आ कर खड़ी हुयी। उस जवान ने अन्दर जा कर देखा तो एक लंबा साँप कुँडली मारे बिछौना पर बैठा हुआ है। उस नौजवान ने अपने नेज़े से उसे कोंच दिया और घर से बाहर निकल आया और नेज़ा घर ही में गाड़ दिया, फिर वह साँप उस पर पलट पड़ा (और उसे डस लिया) अब मैं नहीं जानता कि वह साँप पहले मरा या नौजवान।

हम लोग जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये तो पूरी घटना की जानकारी दी और अनुरोध किया कि उस के दोबारा जीवित हो जाने की दआ़ फ़रमा दें तो आप ने फ़रमायाः उस की बख़्शिश की दुआ़ करो। फिर फ़रमायाः मदीना में कुछ जिन्नात रहते हैं जो ईमान ले आये हैं, इसलिये अगर साँप को देखों तो तीन दिन तक उन्हें चेतावनी दो। फिर अगर तीन दिन के बाद भी निकलें तो उन्हें मार डालो, क्योंकि वह शैतान हैं (यानी या तो काफ़िर जिन्न हैं, या वास्तव में साँप हैं)

फ़ाइदाः- कुछ उलमा ने लिखा है कि मदीना को छोड़ कर हर स्थान के साँप को बिना चेतावनी दिये मार डाला जाये। लेकिन यह दुरुस्त नहीं है। हदीस की रोशनी में घर के साँपों को भी चेतावनी देने का हुक्म है इसलिये इस पर अ़मल होना चाहिये। अ़ल्लामा वहीदुज़्ज़माँ लिखते हैं कि इस प्रकार चेतावनी दी जायेः "मैं तुझ को उस वादे की क़सम देता हूँ जो हज़रत सुलैमान ने लिया था कि हम को तक्लीफ़ मत देना और आइन्दा मत निकलना" (हवाला नहीं दिया है) फिर अगर निकले तो मार डाले।

ऊपर हदीस में बयान की गयी घटना जन्ग ख़ैबर के समय की है जब लोग ख़न्दक़ की खोदाई करते थे और दोपहर को घर आ कर खाना खाते और आराम करते थे।

बाब {साँपों को मार डालने का बयान।}

1499:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ (मिना के स्थान पर) एक खोह में ठहरे हुये थे और आप पर सूरः "वल् मुर-सलात" (पारः29) की वह्यि नाज़िल हुयी थी जिसे हम लोग आप की ज़बान से ताज़ा-ताज़ा सुन रहे थे कि इसी दर्मियान एक साँप निकल आया। आप ने फ़रमायाः उसे मार डालो। हम लोग जब तक उसे मारते, वह निकल कर भाग गया। आप ने फ़रमायाः अल्लाह पाक को उस को तुम्हारे हाथों (मरने से) बचाया, और तुम्हें उस की बुराई से (यानी काटने से) बचाया।

फ़ाइदाः– हो सकता है यह साँप धारीदार या दुम कटा रहा हो जिस के तुरन्त मारने का आप ने हुक्म दिया है, इसीलिये इसे भी तुरन्त मारने का हुक्म दिया। एक बार आप ने अपने घर की दीवार गिरवाई तो उस में केचली निकली, सहाबा ने साँप को ढूँड़ निकाला तो आप ने मार डालने का हुक्म दिया (बुख़ारी-3310-इब्ने उमर) यह साँप भी उन्हीं दो साँपों में से एक रहा होगा इसलिये मार डालने का हुक्म दिया।

बुख़ारी की रिवायत में स्पष्ट रुप से है कि मिना के किसी ग़ार में आप थे। ज़ाहिर है उस समय आप एहराम की हालत में थे। मालूम हुआ कि एहराम की हालत में साँप को मार सकते हैं (1830-अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद)

बाब {गिरगिट के मारने के बारे में बयान।}

1500:– सअ़द बिन अबू वक़्क़ास रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने गिरगिट को मारने का हुक्म दिया और उस का नाम "फुवैसिक़" (यानी छोटा बदकार) रखा।

1501:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स गिरगिट को पहली मार में मार डाले तो उसे इतना सवाब है। और अगर दूसरी मार में मारे तो इतना सवाब है लेकिन पहली मार से कम। और जो तीसरी मार में मारें उसे इतना सवाब है लेकिन दूसरी मार से कम।

एक दूसरी रिवायत में है कि जो पहले ही वार में मार डाले उस के लिये सौ नेकियाँ लिखी जायेंगी। और दूसरे वार में मारे उस को पहले वार के मुक़ाबला में कम। और जो तीसरे वार में मारे उस को दूसरे वार के मुक़ाबले में कम नेकियाँ मिलेंगी।

फ़ाइदाः– बुख़ारी की रिवायत में है कि "हज़रत इब्राहीम की आग पर फूँक मारा था" ताकि और भड़क जाये और इब्राहीम अ़लै॰ जल जायें (3359-उम्मे शुरैक) मुस्लिम की एक रिवायत में है कि सत्तर नेकियाँ मिलेंगी (अबू हुरैरा) तो हो सकता है पहले सत्तर का हुक्म हुआ, बाद में तीस गुना और बढ़ा दिया।

कुछ उलमा ने गिरगिट के स्थान पर छिपकली कहा है और इस के बहुत से तर्क

दिये हैं। मेरे निकट भी छिपकली ही को मारने का हुक्म है जो घरों में रहती है। इस विषय पर विस्तार से लिखने की गुन्जाइश नहीं।

बाब {चींटीं को मारे जाने के बारे में।}

1502:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सन्देष्टाओं में से एक संदेष्टा एक पेड़ के नीचे उतरे तो एक चींटीं ने उन्हें काट लिया। उन्होंने उस का छत्ता (घर) निकालने का हुक्म दिया फिर उन के हुक्म से उसे जला दिया गया, इस पर अल्लाह पाक ने उन पर वह्यि भेजी कि तुम ने उस एक ही चींटी को क्यों नहीं सज़ा दी (दूसरी चींटियों का क्या दोष था)

फ़ाइदाः– मुस्लिम ही कि एक दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह पाक ने उन से कहा कि एक चींटी के काटने से तुम ने पूरी उम्मत को मार डाला जो मेरी पाकी बयान करती थीं। मालूम हुआ कि अकारण इन्हें मारना दुरुस्त नहीं। यह भी हमारी तरह अल्लाह पाक की इबादत करती हैं। अबू दावूद की एक रिवयत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चींटी, शहद की मक्खी, हुदहुद चिड़िया को मारने से मना फ़रमाया है (अबू दावूद)

बाब {बिल्ली को मारने का गुनाह।}

1503:– अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक महिला को बिल्ली की वजह से दन्ड दिया गया। उस ने पकड़ कर बाँध दिया, यहाँ तक कि वह मर गयी, इसी कारण वह जहन्नम में गयी। जब उस ने उसे बाँध कर रखा था तो न तो उसे खाना दिया और न ही पानी, और न ही उसे छोड़ा कि वह ज़मीन के कीड़े-मकोड़े खा लेती।

फ़ाइदाः– बिल्ली का जूठा पाक है। इसे पालने से मना नहीं फ़रमाया है। इसलिये अकारण हत्या करना हराम है।

बाब {चूहे के बारे में बयान।}

1504:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बनी इस्राईल के कुछ लोग गुम हो गये। पता नहीं चला कि कहाँ चले गये। मेरे ख़याल से उन के चेहरों को बिगाड़ कर चूहे की शक्ल में बना दिया गया। देखते नहीं (जभी तो) चूहों के सामने ऊँट का दूध रखा जाये तो वह उसे नहीं पीते (क्योंकि बनी इस्राईल के दीन में ऊँट का माँस और दूध हराम था) और अगर बकरी का दूध रखा जायेतो पी जाते हैं। (अबू हुरैरा रज़ि॰ ने कहा कि) मैं ने यह हदीस कअ़ब अहबार से बयान की तो उन्होंने कहाः क्या तुम ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना है? मैं ने कहाः हाँ। उन्होंने कई मर्तबा यही प्रश्न किया तो मैंने कहा (अगर उन से नहीं

सुनी तो फिर किस से सुनी) क्या मैं तौरात पढ़ता हूँ? (कि उस से नक़ल कर के बयान करता हूँ)

फ़ाइदाः– इस हदीस को समझने के लिये हदीस न॰ 1324 का फ़ाइदा अवश्य पढ़ें। वहाँ गोह के बारे में भी आपने फ़रमाया है कि बनी इस्राईल के कुछ लोगों की सूरत को बिगाड़ कर गोह बना दिया था। यह बात आप ने वह्यि नाज़िल होने से पहले कही थी, चुनान्चे अल्लाह पाक ने वह्यि भेज कर बता दिया कि जिन क़ौमों का चेहरा बिगाड़ दिया गया और सुअर व बन्दर बना दिये गये, उन की नस्ल नहीं चली और सब हलाक कर दिये गये। ऊपर हदीस न॰ 1324 का फ़ाइदा अवश्य पढ़ें।

बाब {जानवरों को पानी पिलाने की फ़ज़ीलत का बयान।}

1505:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक व्यक्ति राह पकड़े चला जा रहा था कि उसे सख़्त प्यास लगी। उसे एक कुआँ मिला तो उस में उतर कर पानी पिया और निकला तो एक कुत्ते को देखा जिस की ज़बान (मारे प्यास के) बाहर निकली हुयी है और वह गीली मिट्टी चाट रहा है। उस व्यक्ति ने कहाः इस कुत्ते का हाल मारे प्यास के वैसा ही है जैसे मेरा हाल था। फिर वह कुँए में उतरा, अपने मोज़े में पानी भरा और उसे दाँतों से दबा कर ऊपर आया और कुत्ते को पिलाया। इस पर अल्लाह पाक ने उस की इस नेकी को कुबूल कर के बख़्श दिया।

इस पर सहाबा ने पूछाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! क्या हमें इन जानवरों कोभी खिलाने-पिलाने में सवाब मिलेगा? आप ने फ़रमायाः हर ताज़ा जिगर रखने वाले (जानदार की सेवा) में सवाब है।

फ़ाइदाः– ऊपर हदीस न॰ 1503 में बिल्ली को बाँध कर मारने के जुर्म में जहन्नम की सज़ा का ज़िक्र है और यहाँ कुत्ते को पानी पिलाने पर जन्नत में जाने का ज़िक्र है। यह केवल दीन इस्लाम ही है जो इन्सान की हर क्षेत्र में रहनुमाई करता है, यहाँ तक कि साँप-बिच्छु, कुत्ते, बिल्ली के बारे में मस्अले बयान करता है। नास जाये उन लोगों का जो ऐसे धर्म को आतंकवादी और बेरहम धर्म बताते हैं। 13.2.2006, सोमवार

❀ ❀ ❀

किताबुश्शेरि
(कविताएँ आदि का बयान)

बाब {कविताएँ और उन के पढ़ने का बयान।}

1506:– शरीद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पीछे सवारी पर बैठा तो आप ने फ़रमायाः क्या तुम्हें उमय्या बिन अबू सल्त की कुछ कविताएँ याद हैं? मैं ने कहाः जी हाँ (याद हैं) आप ने फ़रमायाः पढ़ कर सुनाओ। चुनान्चे मैं ने एक बन्द (छन्द) पढ़ कर सुनाया तो आप ने फ़रमायाः और सुनाओ। चुनान्चे मैं ने सौ बन्द पढ़ कर सुनाया।

बाब {सब से सच्ची बात जो किसी कवि ने कही।}

1507:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सब से सच्ची बात जो किसी कवि ने कही है लबीद की बात है (उस ने एक बन्द में कहा है)

अला कुल्लु शैइन् मा ख़-लल्लाहु बातिलू
(अल्लाह की ज़ात को छोड़ कर सारी चीज़ों को फ़ना (नष्ट) हो जाना है)

और अबू सल्त का बेटा इस्लाम लाने के बिल्कुल क़रीब था।

फ़ाइदाः– लबीद बिन रबीआ़ अ़रब के उन सात सुप्रसिद्ध कवियों में से हैं जिन की कविताएँ बैतुल्लाह के द्वार पर मुश्रिकों ने लटका दी थीं, जिन्हें लोग रोज़ाना पढ़ते थे। बाद में यह इस्लाम ले आये और यह कह कर कविताएँ कहनी बन्द की दीं कि कुरआन पाक के नाज़िल होने के बाद अब इन की आवश्यक्ता नहीं रह गयी। पूरा बन्द इस प्रकार है

अला कुल्लु शैइन् मा ख़-लल्लाहु बातिलू
वकुल्लु नईमिन् ला महा-ल-त ज़ाइलू
(अल्लह की ज़ात को छोड़ कर सब को नष्ट हो जाना है
और हर प्रकार की मौज-मस्ती को समाप्त होजाना है)

यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी है (3841–अबू हुरैरा, 6147–अबू हुरैरा)

बाब {कविताओं से पेट भरना मक्रुह है।}

1508:– सअ़द बिन अबू वक़्क़ास रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अगर कोई व्यक्ति अपना पेट फेफड़ों तक पीब से भर ले, तो यह इस से कहीं बेहतर है कि वह अपना पेट कविताओं से भरे।

फ़ाइदाः– यहाँ मुराद अर्नथ, बेमाना, वाहियात, अनर्थ और नापाक कवितायें हैं जिन से मनुष्यका आचरण अख़्लाक़ और दिल–दिमाग़ ख़राब हो, जैसे फ़िल्मी कवितायें आदि। रहीं वह कविताएँ जिन के पढ़ने–सुनने से ईमानी जोश पैदा हो और कुछ नेकी के कार्य कर गुज़रने का सबक़ मिले, उन्हें याद करने में कोई बुराई नहीं। लेकिन केवल यही याद करना, इसी को हर समय पढ़ते रहना, इसी को रोज़ी–रोटी का आधार बना लेना यह हर हाल में ग़लत है।

बाब {प्रशंसा करने वाले के मुँह पर धूल झोंक दो।}

1509:– हम्मा बिन हारिस से रिवायत है कि एक व्यक्ति उस्मान रज़ि॰ (के मुँह पर उन) की प्रशंसा करने लगा तो मिक़दाद रज़ि॰ (जो मोटे आदमी थे) अपने घुटनों के बल बैठ कर उस के मुँह पर कंकरियाँ मारने लगे। यह देख कर उस्मान रज़ि॰ ने कहाः ऐ मिक़दाद! तुम्हें क्या हो गया है? उन्होंने कहाः (मुझे कुछ नहीं हुआ है, हाँ) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कि जब तुम प्रशंसा करने वालों को देखो तो उन के मुँह में मिट्टी भर दो।

फ़ाइदाः– किसी के मुँह पर उस की प्रशंसा करना यह बहुत बुरी बात है, इस से उस के अन्दर गर्व और तकब्बुर पैदा होता है। हाँ, पीठ पीछे उस की प्रशंसा लोगों के दर्मियान कर सकते हैं, इस से दूसरों केअन्दर भी वही नेकी और एहसान करने की ललक पैदा होगी, और यह अच्छी बात है।

बाब {किसी की प्रशंसा करना और उसे पाक–साफ़ क़रार देना मक्रुह है।}

1510:– अबू बक्रा रज़ि॰ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप के सामने किसी व्यक्ति का ज़िक्र किया गया तो एक व्यक्ति कहने लगाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! अल्लाह के रसूल के बाद फ़लाँ–फ़लाँ काम में इस व्यक्ति से बेहतर कोई नहीं। यह सुन कर आप ने फ़रमायाः तुम्हारा नास जाये, तुम ने तो अपने साथी की गर्दन ही काट डाली। आप ने इस वाक्य को कई मतर्बा फ़रमाया और कहा कि अगर तुम्हें अपने भाई की प्रशंसा ही करनी है तो यूँ कहो "मेरे ख़याल में वह व्यक्ति ऐसा है" इस पर भी मैं अल्लाह के सामने किसी को अच्छा नहीं कहता।

फ़ाइदाः– किसी के नेक होने के बारे में दावा करना यह बहुत बड़ी बात है, क्योंकि हमें ग़ैब की बात और उस की नियय्तों का हाल नहीं मालूम। क्या मालूम कि उस का

अ़मल अगर्चे अच्छा है लेकिन उस की नियत सहीह न हो। और इस का ज्ञान केवल अल्लह पाक को है। इसलिये अधिक से अधिक इतना कह सकते हैं कि "मेरे ख़याल में. ...." और ज़ाहिर है कि इस वाक्य में दावा नहीं है।

बाब {चौसर खेलना हराम है।}

1511:– बुरैदा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस व्यक्ति ने चौसर खेला तो गोया उस ने अपने हाथों को सुअर के माँस और उस के रक्त से रंगा।

फ़ाइदाः– कुछ खेल ऐसे होते हैं जिन में हार जीत की बाज़ी लगती है, ऐसे खेल स्पष्ट तोर पर हराम हैं क्योंकि वह जुआ हुआ और जुवा हराम हैं। कुछ खेल ऐसे होते हैं जो केवल दिल बहलाने और समय समाप्त करने के लिये खेला जाता है, जैसे शतरन्ज आदि। इन में भी समय की बर्बादी है और यह कि इन में फँस कर नमाज़, रोज़ा और दूसरे नेकी के कार्य सब छूट जाते हैं। इन खेलों का चिस्का शराब से भी अधिक घातक है। इन में न दीन का फ़ाइदा है, न दुनिया का। इसलिये इस से भी बचना अनिवार्य है।

❀ ❀ ❀

किताबुर्रूया
(सपनों (ख़्वाब) का बयान)

नोटः— सपने दो प्रकार के होते हैं। एक वह जिस का संबन्ध रुह से होता है। दूसरा वह जो पेट और आँत के पाचन क्रिया के अच्छी तरह काम न करने के कारण, अथवा शैतान के बहकावे के कारण देखता है। पहले को अ़रबी भाषा में "रोया" और दूसरे को "अह्लाम" कहते हैं। इन दोनों शब्दों का बयान कुरआन पाक की सूरः यूसुफ़ (पारः13) में आया है और जैसा कि आगे हदीस न॰ 1516 में बयान आ रहा है। जो लोग सपने और उस के प्रभाव का इन्कार करते हैं उन का विचार व ख़याल ग़लत है। जिस का जैसा ईमान और तक़्वा होता है वैसा ही उस का सपना भी होता है। (दावूद राज़)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सपने में देखने का बयान।}

1512:— अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं ने एक रात सपने में देखा कि मैं गोया उक़्बा बिन राफ़े के घर में हूँ, फिर मेरे पास "इब्ने ताब" नामक खजूरें लाई गयीं। इस सपने का अर्थ मैं ने यह निकाला कि हमारा मतर्बा दुनिया और आख़िरत दोनों स्थानों पर ऊँचा होगा और हमारा ही धर्म सब से अच्छा और बेहतर है।

1513:— अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं ने सपने में देखा कि ऐसे स्थान की ओर हिजरत कर रहा हूँ जहाँ खजूर के पेड़ हैं। इस पर मेरा ख़याल "यमामा" और "ह–जर" के स्थन की ओर गया, लेकिन वह "मदीना" निकला, जिस का दूसरा नाम "यस्रिब" भी है। उस समय सपने में यह भी देखा कि मैं ने अपनी तल्वार हिलायी तो उस का ऊपरी हिस्सा टूट गया। इस सपने का अर्थ उहुद की जन्ग के दिन मुसलमानों की पराजय की शक्ल में निकला। फिर मैं ने सपने ही में उस तल्वार को दोबारा हिलाया तो उस के ऊपर का हिस्सा पहले से भी अच्छी शक्ल में दुरुस्त हो गया। इस का अर्थ यह निकला कि अल्लाह पाक ने मुसलमानों को विजय दिलायी और सब यकजुट हो गये। और मैं ने सपने में गायें भी देखीं (जो ज़ब्ह की जा रही थीं) और अल्लाह पाक का जो भी काम होता है वह भलाई के लिये होता है। इन गायों से उन मुसलमानों की तरफ़ इशारा था जो उहुद

के दिन शहीद कर दिये गये थे। और ख़ैर और भलाई और सच्चाई का बदला अल्लाह पाक ने हमें बद्र की लड़ाई के बाद दिया।

फ़ाइदाः– देखें बुख़ारी शरीफ़ (3622–अबू मूसा, 7041–अबू मूसा) हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने लिखा है कि सपने में तल्वार से मुराद सहाबा का हमला करना। तल्वार हिलाने का अर्थ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का डाएरक्शन देना। टूटने से जानी–माली हानि पहुँचाना। और तल्वार के जुड़ने से मुराद सहाबा का यकजुट होकर आक्रमण करनाऔर विजय प्राप्त करना है।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मुसैलना कज़्ज़ाब और अस्वद अन्सी झूठे को सपने में देखने का बयान।}

1514:– इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मुसैलमा कज़्ज़ाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना में मदीना आया और आप से कहा कि अगर मुहम्मद अपने बाद मुझे ख़िलाफ़त सौंपने का वादा करें तो मैं उन की पैरवी करने पर राज़ी हूँ। वह अपने साथ अपनी क़ौम के बहुत से लोगों को भी साथ ले कर आया था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस से मिलने गये उस समय आप के साथ साबित बिन क़ैस बिन शम्मास भी थे, उस समय आप के हाथ में लक्ड़ी की एक छड़ी भी थी। आप सीधे मुसैलमा के पास उस के साथियों के दर्मियान पहुँचे और फ़रमायाः (ऐ मुसैलमा!) अगर तू मुझ से लक्ड़ी का यह डन्डा माँगे तो भी तुझे मैं इसे नहीं देने का (ख़िलाफ़त को देना तो बड़ी बात है) और पर्वरदिगार की इच्छा (मर्ज़ी) को तो मैं टाल नहीं सकता। और अगर तू इस्लाम से पीठ फेरेगा तो अल्लाह पाक तुझ को तबाह–बर्बाद कर देगा। और मैं समझता हूँ कि तू वही है जो मुझे (सपने में) दिखाया गया था, और यह साबित मुझे मेरी तरफ़ से उत्तर देंगं। यह कह कर आप वहाँ से चले गये।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने बयान किया कि मैं ने पूछा कि (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़रमाना) “मैं समझता हूँ कि तू वही है जो मुझे सपने में दिखाया गया है,” इस का क्या अर्थ है? इस पर अबू हुरैरा रज़ि० ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं सो रहा था कि सपने में सोने के दो कन्गन अपने हाथों में देखे। इसे देख कर मुझे बड़ी चिन्ता हुयी, फिर सपने ही में वह्यि द्वारा मुझे बताया गया कि मैं उन पर फूँक मार दूँ। चुनान्चे जब मैंने उन पर फूँक मारी तो वह दोनों उड़ गये। इस का मैं ने यह अर्थ निकाला कि मेरे बाद दो झूठे नबी होंगे। चुनान्चे उन में से एक तो सन्आ़ (यमन) का रहने वाला अस्वद अ़न्सी है और दूसरा यमामा का रहने वाला मुसैलमा है।

फ़ाइदाः– ‘यमामा’ मक्का और यमन के दर्मियान एक बस्ती का नाम है। यहीं “बनी हनीफ़ा” नाम का एक क़बीला आबाद था जिस के सर्दार उसामा बिन उसाल थे (तफ़सील ऊपर हदीस न० 1152 में देखें) यह ईमान ले आये और अपने क़बीला के 17 आदमियों

को लेकर सन 9 हिजरी में मदीना आये। इसी गुरुप में मुसैलमा भी शामिल था। सभी लोग तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मिलने चले गये, लेकिन यह नहीं गया और अपने साथियों के सामान के पास ही रह गया। आप ने वफ़्द का स्वागत किया, जब पता चला कि मुसैलमा अपने डेरे ही पर है तो उस से मिलने आप स्वँय गये। यमामा की जन्ग में वह्शी रज़ि॰ ने इसे जहन्नम में पहुचायाँ। इस ने सन 10 हि॰ में अपने सन्देष्टा होने का दावा किया था। (पैंगंबरे-आ़लम, मौलाना मन्ज़र पृष्ठ 654)

इसी प्रकार मुल्क यमन के एक नगर "सन्आ़" के रहने वाले अस्वब अ़न्सी ने भी अपने नबी होने का दावा किया तो फ़ीरोज़ ने उसे क़त्ल किया। (बुख़ारी-7034-इब्ने अ़ब्बास)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "जिस ने मुझे सपने में देखा उस ने वास्तव में मुझे ही देखा।"}

1515:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना आप नेफ़रमायाः जिस ने मुझे सपने में देखा तो समझो कि वह मुझे जागते में देख रहा है (या आप ने यूँ फ़रमाया) जिस ने मुझे सपने में देखा तोगोया उस ने मुझे जागते हुये देखा, क्योंकि शैतान मेरी सूरत नहीं धारण कर सकता।

अबू सलमा ने बयान किया कि क़तादा रज़ि॰ ने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस ने मुझे देखा उस ने वास्तव में मुझे देखा।

फ़ाइदाः- मौलाना दावूद रज़ि॰ ने इस प्रकार तर्जुमा किया है "जिस ने मुझे सपने में देखा तो किसी दिन मुझे बेदारी में भी देखेगा।" (बुख़ारी शरीफ़-6993-अबू हुरैरा, 6994-अनस, 6996-अबू क़तादा) शैतान को अल्लाह ने इतनी शक्ति दी है कि वह हाथी, घोड़ा, शैर, मनुष्य आदि जो रुप चाहे धारण कर सकता है, लेकिन केवल नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का रुप घारण नहीं कर सकता। अगर उस को यह भी इख़्तियार मिल जाता तो आप की सूरत में बन कर जहाँ चाहता लोगों को झूठ बोल कर गुमराह करता फिरता।

बाब {अच्छा सपना अल्लाह की तरफ़ से है और बुरा सपना शैतान की तरफ़ से।}

1516:- अबू सलमा से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अबू क़तादा रज़ि॰ ने कहा कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना आप ने फ़रमायाः अच्छा सपना अल्लाह की तरफ़ से है और बुरा सपना शैतान की तरफ़ से। इसलिये जब तुम में से कोई बुरी चीज़ देखे तो तीन मतबा अपनी बायीं ओर थू-थू कर दे और उस की बुराई से अल्लाह से पनाह माँगे (ऐसा करने से) फिर वह सपना तुम्हें कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकेगा।

अबू सलमा ने कहा कि मै ऐसे सपने देखता था जो मुझ पर पहाड़ से भी अधिक भारी होते थे, लेकिन जब से मैं ने यह हदीस सुनी इस के बाद से मुझे कोई पर्वा नहीं रही।

फ़ाइदा:— देखें बुख़ारी शरीफ़ (70005-अबू क़तादा, 3292-अबू क़तादा) बुख़ारी ही की एक दूसरी रिवायत में है कि उस बुरे सपने को किसी से बयान न करे। और अगर अच्छा सपना देखे तो केवल उस से बयान करे जो उस का मित्र हो (मुस्लिम) एक दूसरी रिवायत में है कि तीन बार "अऊज़ुबिल्लाहि मि-नश्शैता निरजमि" पढ़े और जिस कर्वट लेटा था उसे बदल दे। (मुस्लिम)

बाब {अच्छा सपना अल्लाह की तरफ़ से है। और अगर बुरा सपना देखे तो उसे बयान न करे।}

1517:— अबू सलमा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं कभी ऐसा सपना भी देखता कि (उस से डर कर) बीमार हो जाता। फिर मेरी मुलाक़ात अबू क़तादा से हुयी तो उन्होंने कहाः यही हाल मेरा भी था। एक दिन मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः अच्छा सपना अल्लाह की जानिब से होता है और बुरा शैतान की ओर से। इसलिये तुम में से कोई अगर अच्छा सपना देखे तो केवल अपने दोस्तों से बयान करे। और अगर बुरा देखे तो बायें तरफ़ तीन बार थू-थू करे और तीन बार शैतान की बुराई और उस सपने की बुराई से अल्लाह की पनाह चाहे और किसी से बयान न करे। इस प्रकार उसे कोई हानि नहीं पहुँचेगा।

फ़ाइदा:— जाबिर रज़ि॰ ने बयान किया कि एक दीहाती ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बयान किया कि मैं ने सपना देखा है कि मेरा सर कट गया है और मैं उस के पीछे भाग रहा हूँ। आप ने फ़रमायाः शैतान तुझ से सपने में खेलवाड़ करता है। इस प्रकार का बुरा सपना किसी से मत बयान किया करो। (मुस्लिम)

बाब {अगर कोई बुरा सपना देखे तो अल्लाह की पनाह माँगे और कर्वट बदल ले।}

1518:— जाबिर बिन अ़ब्दुल्लह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब तुम में से कोई बुरा सपना देखे तो अपने बायें तरफ़ तीन मतर्बा थू-थू करे और तीन बार "अऊज़ुबिल्लाहि मि-नश्शैतानिर्जीम" पढ़ें, और जिस कर्वट लेटा हुआ है व कर्वट बदल दे।

फ़ाइदा:— यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी है (6986-अबू क़तादा, 3292-अबू क़तादा)

बाब {मोमिन का सपना नबुव्वत के छियालिस (46) हिस्सों में से एक हिस्सा है।}

1519/1:— उबादा बिन सामित रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मोमिन का सपना नबुव्वत के 46 हिस्सों में से

एक हिस्सा होता है।

बाब {अच्छा सपना नबुव्वत के सत्तर (70) हिस्सों में से एक हिस्सा होता है।}

1519/2:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अच्छा सपना नबुव्वत के सत्तर (70) हिस्सों में से एक हिस्सा होता है।

फ़ाइदाः– देखें बुख़ारी शरीफ़ (6986–उबादा बिन सामित, 6988–अबू हुरैरा, 6989–अबू सअ़ीद खुदरी) मुस्लिम की एक रिवायत में 45 हिस्सों में से एक हिस्सा, तबरानी में 76, इब्ने अ़ब्दुल् बर्र में 26 और तबरी की रिवायत में 44 हिस्सों में से एक हिस्सा रिवायत है। इस कमी–बेशी का बयान इस कारण है कि रोज़–रोज़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नबुव्वत में बढ़ोतरी और तरक़्क़ी होती जाती थी और नबुव्वत के नए–नए हिस्से मालूम होते जाते थे, जितना ज्ञान बढ़ता जाता था उतने हिस्सों में भी बढ़ोतरी होती जाती थी। 46 हिस्सों वाली रिवायत सब से अधिक प्रसिद्व है (वहीदी)

बाब {क़ियामत के निकट मुसलमान का (देखा हुआ) सपना झूठा नहीं होगा (जैसा रात में देखेगा, सुब्ह को वैसा ही होता हुआ पाएगा।}

1520:– अबू हुरैरा रज़ि॰ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमायाः क़ियामत के निकट मुसलमान का (देखा हुआ) सपना झूठा नही होगा। और जो अपने क़ौल में जितना अधिक सच्चा होगा, उस का दर्जा उतना बुलन्द होगा। सपना नबुव्वत के पैंतालिस (45) हिस्सों में से एक हिस्सा होता है। और सपना तीन प्रकार का होता है (1) नेक सपना जो अल्लाह की तरफ़ से शुभ सूचना के तौर पर होता है (2) बुरा सपना जो शैतान की तरफ़ से रन्ज में डालने के लिये होता है (3) वह सपना जो आदमी अपने दिल में ख़याल करे (वही रात को देखे) तो जब तुम में से कोई बुरा सपना देखें तो उठ कर नमाज़ पढ़ें और उसे लोगों के सामने बयान न करे। और मैं सपने में पैरों में बेड़ियाँ पहने हुये देखने को अच्छा सपना और गले में तौक़ पहने हुये देखने को बुरा सपना समझता हूँ। हदीस के रावी (अबू अय्यूब) ने कहा कि मुझे नहीं मालूम कि यह बात (यानी सपने का अर्थ) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीस है, या इब्ने सीरीन की अपनी ताबीर है।

फ़ाइदाः– यानी हदीस का अन्तिम हिस्सा जिस में बेड़ी पहनने को अच्छा और तौक़ पहनने को बुरा सपना बताया है, यह हदीस नहीं है, बल्कि इब्ने सीरिन ने अपने ख़याल से अर्थ निकाला है। यह सपने की ताबीर (अर्थ) बताने में बहुत प्रसिद्व थे। इन की पुस्तक " ताबीर्रुरुया" लोगों में बहुत लोकप्रिय है। बुरा सपना देखने पर चार कार्य करने का हुक्म है (1) बाँये तरफ़ थू–थू करे (2) अऊज़ुबिल्लाह पढ़े (3) नमाज़ पढ़ें (4) किसी से बयान न करे। इन चारों पर अ़मल न हो सके तो जिन पर भी सरलता से अ़मल कर सकता हो करे।

बाब {सपने की ताबीर (अर्थ) के बारे में बयान।}

1521:– अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! आज रात मैं ने सपना देखा है कि बादल के एक टुक्ड़े से घी और शहद टपक रहा है, और लोग उसे अपने चुल्लू में ले रहे हैं। उन में से कोई कम ले रहा है और कोई अधिक। और मैं ने यह भी देखा कि आकाश में पृथ्वी तक एक रस्सी लटक रही है जिसे पकड़ कर आप ऊपर चढ़ गये हैं। आप के बाद एक दूसरे व्यक्ति ने भी उसे थामा और वह भी चढ़ गया। फिर एक दूसरे व्यक्ति ने भी थामा और वह भी चढ़ गया। फिर एक तीसरे व्यक्ति ने भी थामा और चढ़ा लेकिन वह टूट गयी, लेकिन फिर जुड़ गयी और वह भी ऊपर चढ़ गया।

यह सपना सुन कर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ कहने लगेः ऐ अल्लह के सन्देष्टा! मेरे माता-पिता आप पर निछावर, मैं इस सपने की ताबीर (अर्थ) बताऊँगा। आप ने फ़रमायाः तुम ही बता दो। उन्होंने कहा कि बादल के टुक्ड़े से मुराद इस्लाम है, और घी और शहद के टपकने से मुराद कुरआन पाक की मिठास और नर्मी है। कुछ लोग चुल्लू भर कर लेते हैं और कुछ लोग कम, इस से यह मुराद है कि कुछ लोगों को अधिक कुरआन याद है और कुछ लोगों को कम। और जो रस्सी आसमान से लटकी हुयी थी वह दीन इस्लाम है जिस पर आप स्थित हैं, फिर अल्लाह पाक आप को उसी दीन पर सितिथ रहते अपने पास बुला लेगा। आप के बाद एक और व्यक्ति (आप का ख़लीफ़ा) उस को पकड़ कर चढ़ जायेगा, फिर दूसरा (ख़लीफ़ा) भी पकड़ कर चढ़ जायेगा। फिर तीसरा व्यक्ति (ख़लीफ़ा) भी पकड़ कर चढ़ेगा लेकिन उस के साथ कुछ रुकावटें आयेंगी, लेकिन जल्द ही वह समाप्त हो जायेंगी और वह भी चढ़ जायेगा (यानी ख़िलाफ़त का शासन चलाएगा)

(अबू बक्र रज़ि॰ ने कहा) ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मेरे माता-पिता आप पर कुर्बान, क्या मैं ने अर्थ सही बताया या नहीं? आप ने फ़रमायाः तुम ने कुछ ठीक बताया और कुछ ग़लत। अबू बक्र बोलेः अल्लाह की क़सम! ऐ अल्लाह के रसूल! आप बताएँ कि मैं ने कहाँ ग़लती की है? आप ने फ़रमायाः क़सम मत खाओ।

फ़ाइदाः– नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ग़लती नहीं बताई, और न ही किसी और हदीस में इस का ज़िक्र है। उलमा ने बताया कि घी से मुराद कुरआन और शहद से मुराद हदीस है। जिस व्यक्ति के चढ़ते ही रस्सी टूट गयी वह उस्मान रज़ि॰ हैं, उन के ज़माना में बग़ावत हुयी। फिर रस्सी जुड़ी नहीं, अर्थात बग़ावत समाप्त नही हुयीऔर शहीद कर दिये गये। (यही अबू बक्र रज़ि॰ न बता सके)

बाब {किसी के साथ सपने में खेल करे तो वह उसे बयान न करे।}

1522:— जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक दीहाती ने आ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! मैं ने सपना देखा है कि मेरा सर काट दिया गया है और वह लुढ़कता जा रहा है और मैं उस के पीछे-पीछे दौड़ रहा हूँ। यह सुन कर आप ने फ़रमायाः इस प्रकार के सपने जिस में शैतान तुझ से खेल करे किसी से मत बयान किया करो।

जाबिर रज़ि० ने बयान किया कि इस के बाद आप ने खुत्बा में लोगों से फ़रमाया कि शैतान सपने में खेलवाड़ करे तो उस को लोगों से न बयान किया करो।

फ़ाइदाः— नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुछ सपनों का अर्थ बताया है जिसे इमाम बुख़ारी ने अपनी पुस्तक "सहीह बुख़ारी" में जमा कर दिया है (1) जिस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सपने में देखा तो वास्तव में आप ही को देखा (बुख़ारी-6993-अबू हुरैरा) (2) इमाम बुख़ारी रह० के निकट रात का देखा हुआ सपना ज़्यादा सच्चा होता है (6998 का बाब-समुरा) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उम्मे हराम के घर में दोपहर दिन में सपना देखा (7001-अनस बिन मालिक) सपने में दूध पीना, ज्ञान और नेकी प्राप्त करना है (7006-इब्ने उमर) सपने में किसी महिला का मुँह खोलना उस से शादी की पहचान है (7012-आ़इशा) पानी का चश्मा बहते देखना, नेकी का काम का बाक़ी रहना मुराद है (7018-उम्मे अ़ला) डोल से पानी खंचना, लोगों को नेकी पहुँचाना (7019-इब्ने उमर) सपने में महल देखना शुभ है (7023-अबू हुरैरा) सपने में वुज़ू करना, नेकी की पहचान है (7025-अबू हुरैरा) सपने में काबा का तवाफ़ करना नेकी की पहचान है (7026-इब्ने उमर) सपने में दूध का प्याला देखना, इस से अ़िल्म मुराद है (7032-इब्ने उमर) गाय ज़ब्ह होते देखना, यह हानि की पहचान है (7035-अबू मूसा) सपने में फूँक मारना, बुराई दूर करना है (7037-अबू हुरैरा) काली महिला देखना, बीमारी की पहचान है (7039-इब्ने उमर) बिखरे बाल वाली महिला देखना, हानि और बीमारी की पहचान है (7040-इब्ने उमर)

यह समस्त सपने इमाम बुख़ारी रह० ने अपनी पुस्तक के बाब "किताबुत्ताबीर" में निक़ल किये हैं।

❀ ❀ ❀

फ़ज़ाइलिन्नबी
(नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की फ़ज़ीलत का बयान)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को (नबुव्वत के लिये) चुने जाने का बयान।}

1523:– वासला बिन अश्क़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना, आप ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला ने इस्माईल अ़लै॰ की औलाद में से कनाना को चुना, और कनाना में से कुरैश को, और कुरैश में से बनी हाशिम को और बनी हाशिम में से मुझे चुना।

फ़ाइदा:– नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का नसब नामा इस प्रकार है (1) मुहम्मद (2) बिन अ़ब्दुल्लाह (3) बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (4) बिन हाशिम (5) बिन अ़ब्दे मुनाफ़ (6) बिन कुसय्यि (7) बिन किलाब (8) बिन मुर्रा (9) बिन क–अ़ब (10) बिन लुवय्यि (11) बिन ग़ालिब (12) बिन कुरैश (13) बिन मालिक (14) बिन नज़र (15) बिन कनाना। गोया इस्माअ़ील अ़लै॰ 15वें पुश्त में आप के दादा है।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "मैं आदम की औलाद का सर्दार हूँ।"}

1524:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन आदम की औलाद का सर्दार बनूँगा, सर्वप्रथम (क़ियामत के दिन) मेरी क़ब्र फटेगी, सर्वप्रथम मैं सिफ़ारिश करुँगा और सर्वप्रथम मेरी सिफ़ारिश कुबूल की जायेगी।

बाब {उन संदेष्टा की मिसाल जो हिदायत और ज्ञान के साथ भेजे गये।}

1525:– अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक ने जो हिदायत और ज्ञान देकर मुझे भेजा है उस की मिसाल उस वर्षा की सी है जो किसी भूमि पर बरसी। उस भूमि में से जो हिस्सा उपजाऊ था उस ने पानी को पी लिया, जिस पर हरियाली और चारा उगा। और भूमि का जो हिस्सा सख़्त था उस ने पानी को एकत्र कर लिया, उस से अल्लाह पाक ने लोगों को लाभ

पहुँचाया। उन्होंने उसे पिया और अपने जानवरों को भी पिलाया और चराया। उसी भूमि का जो हिस्सा चटियाल था उस ने न तो पानी ही रोका और न ही हरयिाली उगायी।

तो जिस ने अल्लाह के दीन को समझा और जो कुछ अल्लाह पाक ने मुझे देकर भेजा है उस का फ़ाइदा उठाया, उस ने स्वँय सीखा और दूसरों को भी उस की शिक्षा दी (वह उस भूमि की तरह है जिस ने पानी को पिया और उस से हरियाली उगायी जिसे जानवरों ने चरा) और जिस ने उस की तरफ़ तवज्जोह न दी, और जो हिदायत अल्लाह ने मुझे देकर भेजी थी उसे स्वीकार न किया (उस की मिसाल उस चटियल भूमि की सी है जिस ने न तो पानी ही जमा किया और न ही हरियाली उगायी, और न ही किसी को फ़ाइदा पहुँचाया।

1526:– अबू मूसा अश्अरी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरी मिसाल और जो कुछ अल्लाह पाक ने मुझे देकर भेजा है उस की मिसाल उस व्यक्ति के समान है जो अपनी क़ौम वालों के पास जा कर कहने लगा: ऐ मेरी कौम के लोगों! देखों, मैं ने दुश्मन के लश्कर को अपनी आँखों से देखा है, इसलिये मैं स्पष्ट रुप से बता देना चाहता हूँ कि छुपने की जगह तलाश कर लो। उस की क़ौम के लोगों में से जिन्होंने उस की बात को मान लिया वह शाम होते ही आराम से (सुरक्षित स्थानों की तरफ़) चले गये। लेकिन जिन्होंने उस को झूठलाया और सुब्ह तक अपने घरों में ही पड़े रहे उस पर लश्कर ने आक्रमण कर दिया, उन्हें उलट-पलट कर रख दिया और उन की जड़ काट दी। चुनान्चे जिस ने मेरा कहा न माना और मेरे दीन को झुठलाया उस की मिसाल इन्ही लोगों की तरह है।

बाब {नबियों के आने का सिलसिला मुकम्मल हो गया, और अन्तिम सन्देष्टा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आ कर इस पर मोहर लगा दी।}

1527:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरी और मुझ से पहले आने वालें सन्देष्टाओं की मिसाल ऐसी है जैसे किसी ने एक भवन का निर्माण किया और उसे हर प्रकार से सजाया-संवारा, लेकिन उस के (चारों) कोनों में से किसी एक कोने में एक ईटँ का स्थान ख़ाली छोड़ दिया। जब लोग उसे देखने के लिये आने लगे तो उस एक ईटँ के ख़ाली स्थान को देख कर आश्चर्य प्रकट करते और कहते कि इस स्थान पर ईटँ क्यों नहीं रखी गयी। फिर आप ने फ़रमाया कि वह ईटँ मैं हूँ और (भविष्य में) संदेष्टाओं के आने पर मोहर लगाने वाला हूँ।

फ़ाइदा:– अर्थात, अब मेरे बाद कोई संदेष्टा नहीं आयेगा। दीन इस्लाम के भवन में अन्तिम संदेष्टा का जो स्थान ख़ाली था उसे में ने आ कर भर दिया।

आप के बाद जितने भी लोगों ने सन्देष्टा होने का दावा किया वह सब झूठे थे। रियासत पंजाब के नगर क़ादियान का रहने वाला गुलाम अहमद क़ादियानी ने भी अपने नबी होने का दावा किया था जो झूठा था और अन्ततः मई सन 1908 को इस प्रकार

इस झूठे नबी का बुरा अन्त हुआ, शौचालय में मरा।

बाब {पत्थर का नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सलाम करना।}

1528:– जाबिर बिन समुरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं मक्का के उस पत्थर को पहचानता हूँ जो मुझे नबी बनाए जाने से पूर्व सलाम किया करता था, आज भी मैं उसे पहचानता हूँ।

फ़ाइदाः– अल्लाह तआ़ला ने कुरआन पाक में पत्थरों के बारे में फ़रमाया है कि बहुत से पत्थर इस प्रकार के होते हैं कि उन के फटने से पानी के सोते जारी हो जाते हैं, कुछ ऐसे होते है जो अल्लाह के डर से काँपते हैं (सूरः बक़रः–74) एक वह पत्थर था जो मूसा अ़लै॰ का कपड़ा ले भागा था, (देखें नीचे हदीस न॰ 1610) इसी प्रकार आप ने दो पेड़ों को बुलाया तो वह चल कर आ गये। (देखें–हदीस न॰ 1537 नीचे) तो आप को सलाम करना कोई आश्चर्य की बात नहीं।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उंगलियों से पानी के चश्मे जारी हो जाने का बयान।}

1529:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि एक मतबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आप के सहाबा ज़ौरा के स्थान पर थे (ज़ौरा, मदीना में मस्जिदे–नबवी और बाज़ार के दर्मियान एक स्थान का नाम है) आप ने पानी का प्याला मँगवाया, फिर उस में अपनी हथेली रख दी तो आप की उंगलियों से पानी फूटने लगा और समस्त सहाबा ने उस से वुज़ू भी कर लिया। इमाम क़तादा कहते हैं कि मैं ने अनस बिन मालिक रज़ि॰ से पूछाः ऐ अबू हम्ज़ा! उस समय आप लोगों की कितनी संख्या थी? उन्होंने कहाः तीन सौ के निकट।

फ़ाइदाः– बुख़ारी की रिवायत में है कि अ़स्र की नमाज़ का समय हो गया था और पानी नहीं था। इमाम ने बाब बाँधा है "नमाज़ का समय हो जाने पर पानी तलाश करना अनिवार्य है" फिर इस हदीस को लाये हैं (हदीस न॰1697, 195)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नबी होने की पहचान।}

1530:– मआ़ज़ बिन जबल रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम सहाबा तबूक की जन्ग के मौक़ा पर लड़ाई के लिये मदीना से रवाना हुये। आप ने उस मौक़े पर दो नमाज़ों को जमा कर के पढ़ा। चुनान्चे जुहर और अ़स्र को एक साथ और मग़िरब और इशा को एक साथ मिला कर पढ़ी। एक दिन आप ने नमाज़ में कुछ देरी कर दी, फिर आ कर जुह्र और अ़स्र को एक साथ मिला कर पढ़ाई फिर अन्दर चलेगये। फिर आ कर मग़िरब और इशा की एक साथ पढ़ाई और फ़रमायाः अल्लाह ने चाहा तो कल आप लोग तबूक के चश्मे पर पहुँच जाओगे और दिन निकलने के बाद ही पहुँच सकोगे। इसलिये तुम में से जो भी चश्मे के पास पहले पहुँचे तो मेरे आने तक पानी को हाथ न लगाए।

मआ़ज़ बिन जबल रज़ि॰ ने बयान किया कि जब हम लोग उस चश्मे के पास पहुँचे तो क्या देखा कि हम से पहले दो व्यक्ति वहाँ पधार चुके हैं। चश्म का यह हाल था कि उस में जूती के तस्मे के बराबर पानी होगा और वह भी बहुत धीमे-धीमे बह रहा था। आप ने पहुँच कर उन दोनों (पहले पहुँचने वालों) से पूछाः क्या इस पानी को तुम दोनों ने छुवा है? उन्होंने कहाः हाँ। इस पर आप ने उन्हें डाँट पिलायी और जो कुछ अल्लाह को मन्ज़ूर था उन्हें खरी-खोटी सुनाई। फिर सहाबा ने चुल्लू में थोड़ा-थोड़ा पानी लेकर एक बर्तन में जमा किया, फिर आप ने उस पानी में अपने दोनों हाथ धोए और मुँह भी धोया, फिर उस पानी को उस चश्मा में उँडेल दिया, तो वह जोश मार कर बहने लगा। सहाबा ने (उस से अपने जानवरों को) पिलाना शुरु कर दिया।

इस के पश्चात आप ने मआ़ज़ बिन जबल रज़ि॰ से फ़रमायाः ऐ मआ़ज़! अगर तुम जीवित रहे तो देखोगे कि इस चश्मे का पानी बाग़ों को भर देगा।

फ़ाइदाः— यह चमत्कार जन्ग तबूक के मौक़ा पर हुआ जो रजब सन 9 हि॰ को हुयी। सूचना मिली कि क़ैसर हेरक्ल मदीना पर आक्रमण कर के जन्ग मौता का बदला लेना चाहता है जो सन 8 हि॰ में लड़ी गयी थी और दुश्मन को भारी पराजय हुयी थी। चुनान्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तीस हज़ार के लश्कर के साथ सरहद पर पहुँचे, लेकिन लड़ाई नहीं हुयी।

एक रिवायत के अनुसार लश्कर की संख्या सत्तर हज़ार थी। इतनी भारी संख्या के लिये पानी का काफ़ी हो जाना यह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का चमत्कार था। इस प्रकार के चमत्कार की बहुत सी घटनाएँ हदीस की पुस्तकों में मौजूद हैं। आप ने एक छोटे सेप्याले में अपनी उंगलियाँ डाल दीं, जिस से 70-80 आदमियों ने वुज़ू किया (बुख़ारी-200-अनस बिन मालिक)

1531:— जाबिर रज़ि॰ से रिवायत है कि एक व्यक्ति आ कर आप से खाना माँगने लगा तो आप ने उसे आधा वसक जौ दिया। (वह व्यक्ति उसे घर ले गया) और वह, उस की पत्नी और (आने जाने वाले) मेहमान बराबर उसी में से खाते रहे (लेकिन कम न हुआ) यह देख कर उस ने जौ को दोबारा माप लिया (ऐसा करने से उस की बर्कत जाती रही और वह ख़त्म हो गया) फिर आप के पास आया तो आप ने फ़रमायाः अगर तुम न नापते और यूँ ही खाते रहते तो वह उतना ही बना रहता।

फ़ाइदाः— आ़इशा रज़ि॰ ने भी बयान किया कि मेरे घर में जौ रखा था जिसे में खाती रही, लेकिन उसे माप लिया तो वह समाप्त हो गया (बुख़ारी) चुनान्चे आप ने तौल-नाप कर रखने और बेचने की तो अनुमति दी है, लेकिन खाने के लिये तौल कर और नाप कर निकालने से मना किया है, इस से बर्कत चली जाती है घर की महिलायें अनुमान और अन्दाज़ा से निकालें, इस से ज़्यादा से ज़्यादा इतना होगा कि कुछ ग्राम कम हो जायेगा, या ज़्यादा। (बुख़ारी-किताबुल् बुयूअ़)

1532:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब (मदीना के तीन तरफ़) ख़न्दक़ खोदी जा रही थी तो उस मौक़े पर मैं ने देखा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भूखे हैं। चुनान्चे मैं अपनी पत्नी के पास गया और पूछाः तुम्हारे पास कुछ (खाने-पीने की चीज़) है? मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अधिक भूखा देखा है। इस पर पत्नी ने मेरे सामने एक थैला निकाला जिस में एक साअ़ा जौ था, और घर में एक बकरी का बच्चा पला हुआ था। मैं ने उस बच्चे को ज़ब्ह किया और पत्नी ने जौ को पीसना आरंभ किया और दोनों साथ ही फ़ारिग़ हो गये। मैं ने उसे बोटी-बोटी कर के हाँड़ी पर चढ़ा दिया और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास जाने लगा तो पत्नी ने कहाः देखो! मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आप के सहाबा के सामने अपमानित (रुस्वा) न करना (कि खाना थोड़ा है और अधिक लोगों को बुला लो) चुनान्चे मैं ने आप के पास जा कर चुपके से कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मैं ने एक बकरी का बच्चा ज़ब्ह किया है और एक साअ़ा जौ था उस का आटा तैयार है इसलिये आप और चन्द सहाबा खाने के लिये चलें। यह सुन कर आप ने आवाज़ बुलन्द कर के पुकाराः ऐ खाई खोदने वालो! जाबिर ने सब की दावत की है इसलिये सभी लोग चलो। और आप ने मुझे हुक्म दिया कि हँड़िया को चूल्हे से मत उतारना और जब तक मैं न आ जाऊँ रोटी भी मत पकवाना। मैं घर आया और आप भी आ गये और आप के पीछे समस्त सहाबा भी पहुँच गये। जब मैं पत्नी के पास गया तो वह कहने लगीः तुम स्वँय ही परेशान होगे और तुम ही को लोग बुरा-भला कहेंगे (हमारा क्या जायेगा) मैं ने उस से कहा कि मैं ने वैसे ही किया था जैसा तुम ने कहा था, लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने स्वँय ही सब को दावत दे दी।

फिर पत्नी ने आटा निकाला तो आप ने उस में आपना पवित्र थूक डाल दिया और बर्कत की दुअ़ा फ़रमाई। फिर माँस की डँडिया के पास जा कर उस में भी थूका और बर्कत की दुअ़ा की और मेरी पत्नी से कहाः एक और रोटी पकाने वाली को बुला लो और तुम दोनों मिल कर रोटी पकाओ। और हाँड़ी में से चम्चे से सालन निकालती जाओ, लेकिन उसे उतारना मत। जाबिर रज़ि॰ ने बयान किया कि उन की संख्या एक हज़ार थी। मैं अल्लाह की क़सम खा कर बयान करता हूँ कि सभों ने खूब डट कर खाया और बचा भी दिया। उधर हाँडी का यह हाल था कि वह वैसे ही पक रही थी और आटा भी उतना ही रखा हुआ था, जबकि उस में से रोटियाँ बन रही थीं।

फ़ाइदा:– यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी आ चुकी है (4101, 4102, 3070-जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह)

1533:– अबू बक्र रज़ि॰ के पुत्र अ़ब्दुर्रहमान रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम 130 सहाबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ थे। आप ने पूछाः तुम लोगों के पास खाने-पीने की कोई वस्तु है? तो एक सहाबी के पास एक साअ़ा से कुछ

कम या अधिक अनाज निकला। चुनान्चे वह सब गूँध लिया गया। इसी बीच एक लंबा-तगड़ा बिखरे बालों वाला, मुश्रिक (चरवाहा) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ गया। आप ने उस से पूछाः या तो एक बकरी मेरे हाथ बेच दो, या यूँ ही दे दो। उस ने उत्तर दिया कि मैं बेचता हूँ। चुनान्चे आप ने उस से एक बकरी ख़रीद ली फिर (ज़ब्ह कर के) उस का माँस तैयार कर के उस की कलेजी भूनने का हुक्म दिया। हदीस के रिवायत करने वाले बयान करते हैं कि अल्लाह की क़सम! हम 130 जनों में से हर एक के लिये एक-एक बोटी बनाई गयी, फिर जो मौजूद था उस को दे दिया गया और (जो मौजूद नहीं था उस का हि ा) रख दिया गया। फिर आप ने दो प्याला माँस निकाला और हम सब ने खाया, यहाँ ा क कि पेट भर गया और प्याला में भी बच गया, चुनान्चे उसे वैसे ही ऊँट पर रख लि ा।

फ़ाइदाः- इस हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दो चमत्कार बयान हुये। एक तो कलेजी में इतनी बर्कत हुयी कि सब को एक-एक बोटी मिल गयी। दूसरे बकरी के माँस में इतनी बर्कत हुयी की दो ही प्याले माँस में 130 जनों ने पेट भर कर खा लिया और प्याले में भी बच गया।

1534:- अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ के पुत्र अ़ब्दुर्रहमान रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि सुफ़्फ़ा में रहने वाले ग़रीब और मुहताज लोग होते थे। चुनान्चे एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस के घर दो जनों के खाने भर का हो वह अपने साथ तीन को ले जाये, जिस के पास चार का हो वह पाँच या छः को ले जाये। चुनान्चे अबू बक्र तीन को ले गये और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दस को साथ ले गये।

अ़ब्दुर्रहमान रज़ि॰ ने बयान किया कि मेरे घर में एक मैं था और माता-पिता (रावी ने बयान किया कि संभवतः) उन्होंने अपनी पत्नी और एक नौकर का भी नाम लिया (यानी कुल 5 जन थे) अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया कि (पिता जी) अबू बक्र रज़ि॰ ने रात का खाना नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास ही खा लिया और वहीं रुक गये, फिर आप के साथ इशा की नमाज़ पढ़ी और फिर आप के पास रह गये। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सो गये और जितनी लंबी रात अल्लाह को मन्ज़ूर थी बीत गयी तो वापस घर आये। और तुरन्त ही पत्नी ने उन से पूछाः आप अपने मेहमानों को छोड़ कर कहाँ चले गये थे। उन्होंने पूछाः तुम ने उन्हें (यानी सुफ़्फ़ा वालों को) अभी तक नहीं खिलाया? उन्होंने कहाः मेहमानों ने तुम्हारे आने तक खाने से इन्कार कर दिया। मैं ने उन के सामने खाना ला कर रखा लेकिन मेहमानों ने नहीं खाया।

अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया कि मैं तो (मारे डर के) छुप गया, लेकिन उन्होंने मुझे आवाज़ देकर पुकाराः ओ काहिल, बेवकूफ़ और जाहिल, तेरा नास जाये, और इसी प्रकार मुझे बुरा-भला कह कर मेहमानों से कहाः आप लोग खाइये, अगर्चे यह खाना अच्छा नहीं

है (क्योंकि समय बीत जाने से ठन्डा हो गया है) अबू बक्र रज़ि॰ ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं तो नहीं खाऊँगा (क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ खा चूका हूँ) अ़ब्दुरहमान ने कहा कि अल्लाह की क़सम! खाते समय हम (बर्तन में से) जो लुक़्मा उठाते, उस में उतना ही और बढ़ जाता, यहाँ तक कि हम लोगों का पेट भर गया और खाना जितना पहले था उस से कई गुना बढ़ गया। अबू बक्र ने भी जब देखा कि खाना तो जितना पहले था उतना ही है, बल्कि कुछ अधिक है तो उन्हेंाने अपनी पत्नी से कहा: ऐ क़बीला बनी फ़राहा वालों की बहन! यह क्या माला है? उन्होंने कहा: मेरी आँखों की ठन्डक की क़सम! यह तो पहले से भी अधिक है, बल्कि तीन गुना अधिक है।

इस के बाद अबू बक्र रज़ि॰ ने भी उस में से खाया और कहने लगे कि मैं ने जो न खाने की क़सम खाई थी वह शैतान की तरफ़ से था। उन्होंने उस में से एक लुक़्मा खा कर उसे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास ले गये। उस समय हमारे और एक क़ौम के दर्मियान सुलह का मुआ़हिदा हुआ था और उस की मुद्दत समाप्त हो गयी थी, इसलिये आप ने (ख़तरा को भाँप कर) 12 कमांडर बना हर एक के साथ कुछ लोगों को दे दिया था, उन की संख्या कितनी थी वह अल्लाह ही जानता है, फिर वह खाना उन्हें दिया गया और उन लोगों ने उसे खाया।

फ़ाइदा:– 'सुफ़्फ़ा' उस चबूतरे का नाम है जो मस्जिदे-नबवी के पास बना हुआ था जहाँ बैठ कर सहाबा पढ़ते थे। यह सब ग़रीब लोग होते थे। कुछ मालदार सहाबा इन्हें ले जा कर अपने घर खाना खिला देते थे। चुनान्चे अबू बक्र रज़ि॰ ने भी इन सब की दावत कर दी और बेटे अ़ब्दुरहमान से कहा कि तुम इन्हें खिला देना और स्वँय नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास चले गये। खाने में इतनी बर्कत हुयी कि सुफ़्फ़ा वालों ने खाया, घर के समस्त लोगों ने खाया, फिर सुब्ह को लश्कर के तमाम लोगों ने खाया।

1535:– मिक़्दाद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं और मेरे दो और साथी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये। उस समय हम लोगों का यह हाल था कि मारे भूख के न तो हमें कुछ दिखाई देता था और न ही सुन पाते थे। हम तीनों ने अपने आप को सहाबा के सामने पेश कर दिया लेकिन किसी ने कुबूल न किया। आख़िर में हम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास गये तो आप हमें अपने घर ले गये। आप के पास तीन बकरियाँ थीं। आप ने फ़रमाया: इन का दूध निकालो और हम सब पी लिया करें। चुनान्चे हम लोग उन का दूध निकालते और अपना हिस्सा पी लेते और आप का हिस्सा रख देते। फिर जब आप रात को किसी समय आते तो इतनी ऊँची आवाज़ से सलाम करते कि सोने वाला जाग न जाये और जो जाग रहा है वह सुन ले। फिर मस्जिद में जा कर नमाज़ पढ़ते और वापस आ कर दूध पीते।

एक रात जब मैं अपना हिस्सा पी रहा था कि शैतान ने मुझे बहका दिया और

कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तो अन्सार के पास आते-जाते रहते हैं उन्हें खाने-पीने को तो मिल ही जाता है इसलिये उन का हिस्सा बचा कर रखने की क्या आवश्यक्ता है। चुनान्चे मैं ने आप का हिस्सा भी पी लिया। जब दूध पेट में चला गया तो शैतान मुझ से कहने लगाः तुम ने बहुत बुरा किया कि आप का हिस्सा भी पी गया। वह आ कर जब अपना हिस्सा नहीं पायेंगे तो तुम पर बद्दुआ़ कर देंगे और तुम्हारी दुनिया-आख़िरत सब ख़राब हो जायेगी।

मैं उस समय एक चादर ओढ़े हुये था, उस से जब अपना सर ढाँकता तो पैर खुल जाता और पैर ढाँकता तो सर खुल जाता। मेरे साथी तो सो गये लेकिन मुझे नींद नहीं आ रही थी। इसी बीच आप भी आ गये और सलाम किया, फिर मस्जिद जा कर नमाज़ पढ़ी, इस के बाद दूध के पास आये तो देखा तो उस में कुछ नहीं था। इस पर आप ने आकाश की तरफ़ सर उठाया तो मैं समझा कि आप मेरे लिये बद्दुआ़ करने जा रहे हैं और मैंने बर्बाद हो गया। लेकिन आप ने दुआ़ में यह फ़रमायाः

> "ऐ अल्लाह! उसे खिला जो मुझे खिलाए, और उसे पिला जो मुझे पिलाये"

मिक़दाद रज़ि॰ ने बयान किया कि आप की ज़बान से यह दुआ़ सुन कर मैं ने अपनी चादर को मज़बूती से बाँधा और छुरी लेकर बकरियों के पास गया और यह इरादा किया कि उन में से जो सब से मोटी होगी उसे ज़ब्ह कर डालूँगा (और आप के खाने का इन्तिज़ाम करूँगा) जब वहाँ गया तो क्या देखा कि उस का थन दूध में भरा हुआ है। फिर देखा तो सभी बकरियों का थन दूध से भरा हुआ है। चुनान्चे मैंने आप के घर से ऐसा बर्तन लिया जिस में दूध नहीं दुहा जाता था और उस में दूहा तो वह बर्तन भर गया। फिर उसे लेकर आप के पास आया तो आप ने पूछाः आप लोगों ने रात अपना हिस्सा पी लिया था? मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप पी लीजिये। चुनान्चे आप ने पिया और मुझे वापस कर दिया। मैं ने फिर कहा कि और पी लीजिये। चुनान्चे आप ने दोबारा पिया। जब मुझे मालूम हो गया कि आप ने अच्छी तरह पी लिया है और आप ने जो दुआ़ की थी मुझे मिल गयी तो मारे ख़ुशी के हँसने लगा और ज़मीन पर लोट-पोट हो गया। यह देख कर आप ने फ़रमायाः ऐ मिक़दाद! क्या तुम ने कोई ग़लत काम कर डाला था? मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! मैं ने ऐसी-ऐसी ग़लती कर डाली थी (यानी आप का भी हिस्सा पी गया था) आप ने फ़रमायाः इस समय जो दूध उतरा है यह अल्लाह की रहमत और बर्कत से उतरा है। तुम अगर पहले ही बता देते तो अपने दोनों साथियों को जगा देते और वह भी पी लेते। मैं ने कहाः उस अल्लह की क़सम! जिस ने आप को सच्चा कलाम दे कर भेजा है, अब मुझे कोई फ़िक्र नहीं जबकि मैं ने आप से बर्कत हासिल कर ली तो कोई भी हासिल करे।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वजह से घी में बर्कत का बयान।}

1536:— जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि मालिक की माँ के पास एक कुप्पी में घी था जिस में से वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तोहफ़ा भेज दिया करती थीं। फिर जब उन के बेटे खाने को माँगते तो उस कुप्पी में से निकाल कर दे दिया करतीं और उस कुप्पी में हमेशा घी भरा रहता। एक बार उन्होंने कुप्पी का सारा घी निचोड़ लिया, फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आयीं तो आप ने फ़रमायाः अगर तुम उसे न निचोड़ती और ज़रुरत के मुताबिक़ उस में से लेती रहती तो उस में हमेशा बाक़ी रहता।

बाब {पेड़ का नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आज्ञा पालन करना।}

1537:— उबादा बिन वलीद बिन उबादा बिन सामित रज़ि॰ ने बयान किया कि इस से पहले कि हम लोग मर जायें, मैं और मेरे पिता दोनों दीन का ज्ञान प्राप्त करने के लिये अन्सार के क़बीला की तरफ़ चले। चुनान्चे सब से पहले हम अबू यसीर के पास पहुँचे जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबी थे। उस समय उन के साथ उन का गुलाम भी था जो किताबों (काग़ज़ात) की गठरी लादे हुये था। अबू यसीर एक चादर ओढ़े हुये और मआफ़िर का कपड़ा पहने हुये थे, उन का गुलाम भी वही कपड़ा पहने हुये था जो वह पहने हुये थे। मैं ने अबू यसीर से पूछाः ऐ चचा! आप कुछ परेशान दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने कहाः बात यह है कि क़बीला बनी हराम के एक व्यक्ति के बेटे पर मेरा क़र्ज़ बाक़ी है। चुनान्चे मैं उस के घर गया और सलाम कर के उस के घर वालों से पूछा कि वह कहाँ है? मेरी आवाज़ सुन कर उस का एक पुत्र बाहर आया तो मैं ने पूछाः तुम्हारे पिता कहाँ हैं? उस ने बताया कि आप की आवाज़ सुन कर माता जी की चारपाई के नीचे छुप गये हैं। इस पर मैं ने उसे पुकारा और कहा कि बाहर आओ, मुझे मालूम है कि तुम कहाँ छुपे हुये हो। यह सुन कर वह बाहर आया तो मैं ने पूछाः तुम मुँह क्यों छुपा रहे हो? उस ने कहाः अल्लाह की क़सम! मैं आप से झूठ नहीं बोलूँगा, अल्लाह की क़सम! (आप की आवाज़ सुन कर) मैं डर गया था कि अभी आप के सामने झूठ बोलना पड़ेगा, या झूठा वादा करना पड़ेगा, फिर इस वादे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी होगी। आप तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबी हैं (सच्ची बात यह है कि) अल्लाह की क़सम! मैं मुहताज हूँ। यह सुन कर मैं ने उसे अल्लाह की क़सम दे कर पूछा कि वास्तव में क्या तुम मुहताज हो? उस ने अल्लाह की क़सम खा कर कहा कि मैं वास्तव में मुहताज हूँ। मैं ने दोबारा उसे क़सम देकर पूछा कि क्या वास्तव में तुम मुहताज हो? तो उस ने दोबारा क़सम खाई कि मैं मुहताज हूँ (इसलिये क़र्ज़ नहीं अदा कर सकता) मैं ने फिर क़सम दिलाई कि क्या तुम मुहताज हो? उस ने कहा अल्लाह की क़सम खाई कि मैं मुहताज हूँ।इस पर अबू यसीर ने उस के क़र्ज़ का कागज़ मँगवा कर उसे अपने हाथ से मिटा दिया और उस से कहा कि अगर तुम्हारे पास पैसा आ जाये तो अदा कर देना, वर्ना तुम आज़ाद हो (मैं तुम से नहीं माग़ूँगा)

उबादा बिन वलीद ने कहा कि मेरी दोनों आँखों ने देखा कि अबू यसीर ने अपनी दोनों उगँलियों को अपनी आँखों पर रखा, और मेरे दोनों कानों ने सुना और मेरे दिल ने याद रखा कि अबू यसीर ने अपने सीने पर हाथ रख कर कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि "जो व्यक्ति किसी ग़रीब को मोहलत दे, या उस को माफ़ ही कर दे तो क़ियामत के दिन अल्लाह पाक उस को अपने साये में जगह . देगा।"

उबादा ने बयान किया कि मैं ने उन से कहाः ऐ चचा जान! आप गुलाम की चादर ले लें और अपना मग़ाफ़ीरी कपड़ा उसे दे दें, इस प्रकार दोनों के पास जोड़ा हो जाये गा। उस के पास मग़ाफ़ीरी जोड़ा होगा और आप के पास चादर का जोड़ा। यह सुन कर अबू यसीर ने मेरे सर पर हाथ फेरा और दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! इस बच्चे को बर्कत दे, फिर फ़रमायाः ऐ मेरे भतीजे! देखो, मेरी इन दोनों आँखों ने देखा और मेरे इन दोनों कानों ने सुना और दिल की तरफ़ इशारा करते हुये कहा कि इस दिल ने याद रखा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "लौडीं और गुलाम को वही खिलाओ जो स्वँय खाओ, और उन्हें वही पहनाओ जो स्वँय पहनते हो" इसलिये मैं दुनियाँ ही में इस गुलाम को उस का हक़ दे देना चाहता हूँ ताकि आख़िरत में मेरी नेकियाँ बाक़ी रहें।

उबादा बिन वलीद ने बयान किया कि फिर हम लोग यहाँ से रवाना हुये और जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से मुलाक़ात के लिये उन की मस्जिद में पहुँचे तो देखा कि वह एक कपड़ा लपेटे हुये नमाज़ पढ़ रहे हैं। चुनान्चे मैं लोगों की गर्दनों को फाँदता हुआ उन के और क़िब्ला के दर्मियान जा कर बैठ गया और कहाः अल्लाह तआ़ला आप पर रहम फ़रमाये, आप एक कपड़ें में नमाज़ पढ़ रहे हैं, हालाँकि बग़ल ही में एक और चादर रखी हुयी है? यह सुन कर उन्होंने अपने हाथ की उंगलियों को खोला, फिर कमान की तरह मोड़ कर मेरे सीने की तरफ़ इशारा कर के कहने लगेः मैं यह चाहता हूँ कि तुम्हारी तरह बुद्धू मेरे पास आयें और जो मैं करता हूँ उसी तरह देख कर वह भी करे। (सुनो!) एक मतर्बा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मेरी मस्जिद में आये उस समय आप के हाथ में खजूर की एक छड़ी थी। आप की नज़र मस्जिद में क़िब्ला की दीवार पर लगे बलग़म पर पड़ी (जिसे किसी नमाज़ी ने थूक दिया था), तो आप ने उसे अपनी छड़ी से खुरच दिया फिर हमें मुख़ातब कर के फ़रमायाः तुम में से कौन इस बात को पसन्द करता है कि अल्लाह पाक उस की तरफ़ से मुँह फेर ले? यह सुन कर हम लोग डर गये। लेकिन आप ने दोबारा फ़रमायाः तुम में से कौन इस बात को पसन्द करता है कि अल्लाह पाक उस की तरफ़ से मुँह फेर ले? यह सुन कर फिर हम लोग डर गये। लेकिन आप ने तीसरी मतर्बा फिर फ़रमायाः तुम में से कौन इस बात को पसन्द करता है कि अल्लाह पाक उस की तरफ़ से अपना मुँह फेर ले? यह सुन कर हम लोगों ने कहाः ऐसा तो कोई नहीं होगा जो यह चाहे कि अल्लाह पाक उस की तरफ़ से मुँह फेर ले। इस पर आप ने फ़रमायाः जब तुम नमाज़ के लिये खड़े होते हो तो अल्लाह पाक तुम्हारे

मुँह के सामने होता है, इसलिये जब कोई थूकना चाहे तो सामने न थूके और न ही अपने बाएँ तरफ़ थूके, बल्कि बायें पावँ के नीचे थूक ले, या फिर अपने कपड़े में थूक लें, और आप ने अपने को लपेट कर बताया (कि इस प्रकार) फिर आप ने फ़रमायाः खुश्बू लाओ। यह सुन कर क़बीला का एक नौजवान लड़का दौड़ता हुआ अपने घर गया और हाथ की हथेली में खुश्बू ले आया। आप ने उस खुशूबू को लकड़ी की नोक पर लगा कर बलग़म के निशान पर लगा दिया। जाबिर रज़ि॰ ने कहाः कि इस हदीस से मालूम हुआ कि मस्जिद में खुश्बू रखनी चाहिये।

जाबिर रज़ि॰ ने आगे बयान किया कि एक मतर्बा हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ "बवात" की वादी में लड़ाई के लिये निकले। आप को मजदी बिन अ़म्र जोहनी काफ़िर की तलाश थी। उस समय हम लोगों का यह हाल था कि पाँच-छः आदमियों के दर्मियान एक ऊँट था जिस पर हम लोग बारी-बारी सवार होते थे। चुनान्चे एक अन्सारी के सवार होने की बारी आयी तो उस ने ऊँट को बैठाया और सवार हुआ, फिर उसे उठा कर चलाने लगा तो ऊँट अड़ गया। इस पर अन्सारी ने उसे डाँटते हुये कहाः आगे चल, अल्लाह तुझ पर लानत करे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सुना तो फ़रमायाः कौन अपने ऊँट पर लानत भेज रहा है? अन्सारी ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! मैं हूँ। आप ने फ़रमायाः इस ऊँट से उतर जा, हमारे साथ वह न रहे जिस पर लानत भेजी गयी हो। (फिर आप ने फ़रमाया) अपने जानवरों पर मत लानत भेजा करो, इसी प्रकार अपनी औलाद पर और अपने धन-माल पर मत बद्दुआ़ भेजा करो, कहीं ऐसा न हो कि दुआ़ क़ुबूल होने के समय बद्दुआ़ करो और वह क़ुबूल हो जाये (तो तुम्हारे लिये मुसीबत आ जायेगी)

जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ ने बयान किया कि हम लोग (बवात की जन्ग के लिये) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ निकले। जब शाम हो गयी और अ़रब के एक चश्मे के निकट पहुँचे तो आप ने फ़रमायाः कोई है जो आगे जा कर चश्मे को ठीक-ठाक कर दे, स्वयँ पानी पियें और हम सब को भी पिलाये। जाबरि रज़ि॰ ने कहा कि इस पर मैं खड़ा हो गया और उन से अनुरोध किया मैं यह काम अन्ज़ाम दूँगा। आप ने फ़रमायाः जाबिर के साथ और कौन जायेगा? इस पर जब्बार बिन सख़ उठ खड़े हुये। बहरहाल हम दोनों ने जा कर उस चश्मे के पास के होज़ में पानी डाल कर उस पर मिट्टी लगा दी और उस में पानी डाल कर लबाबलब भर दिया। फिर सब से पहले हमें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दिखाई पड़े। आप ने फ़रमायाः क्या तुम दोनों पानी पीने की अनुमति देते हो? हम दोनों ने कहाः जी हाँ, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। यह सुन कर आप ने अपनी ऊँटनी को छोड़ दिया और वह पानी पीने लगी। फिर आप ने उस की नकेल खींच ली तो पानी पीना बन्द कर दिया और पेशाब करने लगी। आप ने उस को अलग ले जा कर बैठा दिया। फिर आप ने वापस आ कर उस से वुज़ू किया। मैं ने भी वहीं जा कर वुज़ू किया जहाँ आप ने किया था। जब्बार

बिन सख़ शौच करने के लिये चले गये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ने की तय्यारी करने लगे। मेरे पास एक चादर थी, मैं उस के दोनों कनारों को उलटने लगा। वह चादर छोटी थी, लेकिन उस में फुंदने लगे हुये थे, इसलिये दोनों कनारों को पकड़ कर गर्दन में बाँध दिया। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर आप के बाएँ खड़ा हो गया। आप ने मेरा बायाँ हाथ पकड़ कर अपने दाहिनी तरफ़ खड़ा कर दिया। इसी बीच जब्बार बिन सख़ रज़ि॰ भी आ गये और वुज़ू कर के आप के बायीं तरफ़ खड़े हो गये। आप ने हम दोनों का हाथ पकड़ कर पीछे कर दिया, फिर आप हमें घूरने लगे लेकिन हम लोगों को कुछ ख़बर नहीं हुयी। जब हम लोगों को पता चला तो अप ने हाथ के इशारे से अपना हाथ कमर पर बाँध लेने को कहा (ताकि सतर न खुल जाये) फिर जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुये तो कहने लगेः ऐ जाबिर! मैं ने उत्तर दियाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मैं हाज़िर हूँ। आप ने फ़रमायाः जब चादर कुशादा होतो उस के दोनों कनारे उलट लिया करो और जब छोटी हो तो उसे कमर पर (तहबन्द की तरह) बाँध लिया करो।

जाबिर रज़ि॰ ने बयान किया कि फिर हम लोग आप के साथ आगे रवाना हुये। उस समय हम में से हर एक को खाने के लिये हर रोज़ एक खजूर मिलती थी जिसे हम लोग लेकर चूस लिया करते थे और उसे दाँतों में इधरे-उधर फिराते रहते। हम लोग अपनी कमानों से पेड़ के पत्ते झाड़ कर उसे चबाते जिस से मुँह में छाले पड़ जाते। एक दिन खजूर बाँटने वाला किसी को देना भूल गया तो हम लोगों ने उसे ले जा कर गवाही दी कि इस को खजूर नहीं मिली है। यह जान कर बाँटने वाले ने उसे भी खजूर दी। चुनान्चे उस ने खड़ा हो कर उसे ले लिया। फिर लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ आगे रवाना हुये और एक कुशादा वादी में जा कर उतरे तो आप अपनी आवश्यक्ता पूरी करने के लिये चले गये तो मैं भी एक डोल पानी लेकर आप के पीछे चला गया। आप ने जब कहीं कोई आड़ न पाई तो वादी के एक पेड़ के पास जा कर उस की डाली पकड़ कर फ़रमायाः अल्लाह के हुक्म से मेरी बात मान ले चुनान्चे वह पेड़ आप के साथ हो गया। एसे ही, जैसे ऊँट की नाक में नकेल डाल दी जाती है तो वह नकेल खींचने वाले के काबू में हो जाता है। फिर आप दूसरे पेड़ के पास गये और उस की डाली को पकड़ कर कहा कि अल्लाह के हुक्म से मेरे ताबे हो जा। चुनान्चे वह भी आप के साथ हो गया, फिर उन दोनों से कहा कि अल्लाह के हुक्म से एक साथ जुड़ जाओ, चुनान्चे वह दोनों एक साथ जुड़ गये। जाबिर रज़ि॰ ने बयान किया कि इधर मैं ने ख़याल किया कि आप मुझे नज़दीक देख कर दूर न चले जायें इसलिये मैं पीछे खिसक आया और बैठे-बैठे अपने दिल में यही सोच ही रहा था कि क्या देखा कि आप सामने से चले आ रहे हैं और वह दोनों पेड़ अलग-अलग हो कर दोबारा अपनी जड़ों पर खड़े हो गये हैं। मैं ने यह भी देखा कि आपने थोड़ी देर खड़े होकर अपने सर से दायें-बाँयें कुछ इशारा किया। फिर मेरे पास आये तो फ़रमायाः ऐ जाबिर! मैं जहाँ खड़ा

था वहाँ तुम ने कुछ देखा? मैं ने कहाः जी हाँ ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मैं ने देखा। आप ने फ़रमायाः उन दोनों पेड़ों के पास जा कर उन की एक-एक डाली काट कर ले आओ। फिर आप ने फ़रमायाः उन्हें ला कर जहाँ तुम खड़े हो वहीं डाल दो।

जाबिर रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने एक पत्थर लेकर उसे तोड़ दिया और उस की नोक को धारदार बनाया और उन दोनों पेड़ों के पास गया और हर एक से एक-एक डाली काट कर उन्हें घसीटता हुआ उस स्थान पर ले आया जहाँ आप खड़े थे, फिर एक को दाहिनी तरफ़ और दूसरी को बाँयी तरफ़ डाल दिया। और आप के पास जा कर कहा कि आप ने जो हुक्म दिया था उसे पूरा कर दिया, लेकिन इस का क्या कारण है? आप ने फ़रमायाः मैं ने देखा कि उस स्थान पर दो क़ब्रें हैं और उन क़ब्र वालों पर अ़ज़ाब हो रहा है, इसलिये मैं ने चाहा के उन के लिये थोड़ी बहुत सिफ़ारिश कर दूँ, जब तलक यह डालियाँ हरी-भरी रहेंगी, हो सकता है उन के अ़ज़ाब में कुछ कमी हो जाये।

जाबिर रज़ि॰ ने बयान किया कि फिर हम लश्कर में लौट आये तो आप ने फ़रमायाः ऐ जाबिर! लोगों से कहो कि वुज़ू करें। चुनान्चे मैं ने पुकार कर कहाः वुज़ू करो, वुज़ू करो। फिर मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! क़ाफ़िला वालों के पास तो एक बूँद भी पानी नहीं है। एक अन्सारी जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिये मश्क में पानी भर कर पेड़ की डालियों पर लटका दिया करते थे ताकि पानी ठन्डा रहे। आप ने फ़रमाया कि उन अन्सारी के पास जाओ और उन से मालूम करो कि उन के पास कुछ पानी है या नहीं? चुनान्चे मैं ने जा कर देखा तो उस में कुछ भी पानी नहीं है, अल्बत्ता उस के मुँह पर केवल एक बूँद पानी टिका हुआ है, अगर उसे भी टेढ़ा कर के निकालूँ तो सूखी मश्क में वह भी सोख जायेगा। आप ने फ़रमायाः उस मश्क ही को मेरे पास ले आओ। चुनान्चे मैं उसे आप के पास ले गया तो आप ने उसे हाथ में ले लिया और कुछ पढ़ने लगे जिसे मैं समझ न सका। आप उस मश्क को अपने हाथ से दबाते जाते। फिर आप ने उसे मुझे दे दिया और फ़रमायाः ऐ जाबिर! लोगों से कहो कि लश्कर का पानी का सब से बड़ा घड़ा ले आयें। मैं ने लोगों से कहा तो सब लोग उसे लेकर आप के पास आये। मैं ने उस को आप के सामने रख दिया। आप ने उस के ऊपर अपना हाथ फेरा फिर उस की तह (पेंदे) में अपना हाथ रख कर फ़रमायाः ऐ जाबिर! उस मशक को लेकर मेरे हाथ पर उँड़ेल दो, लेकिन बिस्मिल्लाह कह कर उँडेलना। चुनान्चे मैं ने बिस्मिल्लाह पढ़ कर उसे आप के हाथों पर उँडेल दिया, तो क्या देखा कि आप की उंगलियों के दर्मियान से पानी जोश मार रहा है, फिर घड़े ने भी जोश मारा और घूमा, फिर पानी से भर गया। आप ने फ़रमायाः ऐ जाबिर! लोगों से कह दो, जिस को पानी की आवश्यक्ता हो (वह आ कर ले जाये) जाबिर रज़ि॰ ने बयान किया कि लोगों ने आ कर पानी लिया और सभी लोग सैराब हो गये। फिर आप ने अपना हाथ घड़े के ऊपर से उठा लिया और वह घड़ा पानी से भरा हुआ था।

इसी बीच लोगों ने आप से भूख की शिकायत की तो आप ने फ़रमायाः अल्लाह

पाक बहुत जल्द आप लोगों को खिलाएगा। फिर हम लोग समुद्र के तट पर पहुँचे तो समुद्र की लहरों ने एक जानवर को तट पर ला कर फेंक दिया। फिर हम लोगों ने आग जला कर उसे भूना और उस का माँस खाया और सब आसूदा हो गये। जाबिर रज़ि॰ ने बयान किया कि फ़लाँ और फ़लाँ पाँच आदमी उस की आँख के गोले के अन्दर घुस गये और उन में का कोई भी बाहर नहीं दिख रहा था, फिर वह लोग उस की आँख से बाहर निकल आये। फिर उस की पिसुलियों में से एक हड्डी ली, फिर लश्कर के सब से लंबे व्यक्ति को बुलाया और सब से ऊँचे ऊँट पर, सब से ऊँची ज़ीन लगा कर उसे सवार किया और वह बिना गर्दन झुकाए उस पिसुली के नीचे से गुज़र गया।

फ़ाइदा:– 'बवात' की जन्ग सन 2 हि॰ में हुयी थी। इस मोहिम में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम स्वँय शामिल थे और दो सौ सहाबा थे। दुश्मन की तरफ़ से उमय्या बिन ख़लफ़, उस के एक सौ साथी और ढाई हज़ार ऊँट थे। आप ने बुवात तक इन का पीछा किया लेकिन जन्ग नहीं हुयी और दुश्मन भाग गये। इस हदीस में आप के बहुत से चमत्कारों का ज़िक्र है (1) हाथ से पानी के सोते जारी हो जाना (2) दो पेड़ों का एक साथ मिल जाना (3) फिर उन का अलग हो जाना (4) आप का फ़रमान था कि आगे अल्लाह पाक खाना देगा आदि। हदीस में जिस मछली का ज़िक्र है उस का नाम "अ़ंबर" था। आजकल नाम "हुवील" और "डोलफ़ेन" है। 40, 50 फुट की लंबी मछली आजकल देखी जा सकती हैं। इसीम छली का ज़िक्र ऊपर हदीस न॰ 1326 में भी आ चुका है, लेकिन उस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मौजूद नहीं थे।

बाब {चाँद का फट कर दो टुक्ड़े हो जाने का बयान।}

1538:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग मिना के मैदान में थे कि चाँद फट कर दो टुक्ड़े हो गया। एक टुक्ड़ा तो पहाड़ के इस तरफ़ रहा और दूसरा पहाड़ के उस तरफ़ चला गया। इस मौक़े पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम लोग इस बात पर गवाह रहना।

1539:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि मक्का वालों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कोई निशानी माँगी तो आप ने उन्हें चाँद को दो हिस्सों में फटा हुआ दिखाया।

फ़ाइदा:– ऊपर की हदीस में मिना का ज़िक्र है। इस का यह अर्थ हुआ कि ज़िलहिज्जा माह में चाँद की 12 वीं, तैरहवीं तारीख़ थी और चाँद अपने पूरे शबाब पर था। चाँद फटने को लंका के राजा ने भी अपनी आँखों से देखा था और उसे अपनी पुस्तक में नोट कर लिया था। (पुस्तक "हिन्दुस्तान इस्लाम के साये में")

बाब {जो भी व्यक्ति आप को हानि पहुँचाने की नियत से आप के पास आया, आप उस की बुराई से सुरक्षित रहे। (यह भी एक चमत्कार है)}

1540:— अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अबू जेहल ने कहा कि (इबादत करते समय) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपना मुँह तुम लोगों के सामने ज़मीन पर रखते हैं? लोगों ने कहा: जी हाँ, रखते हैं। उस ने कहा: लात और उज़्ज़ा की क़सम! अगर मैं ने उन्हें सज्दे की हालत में देख लिया तो मैं उन की गर्दन को रौंद डालूँगा, या उन के मुँह में ख़ाक भर दूगाँ। फिर जबकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ की हालत में थे, वह आप के पास बुरे इरादे से आया ताकि आप की गर्दन रौंदे। लेकिन अचानक लोगों ने देखा कि वह तो उल्टे क़दम पीछे हट रहा है और साथ ही किसी चीज़ से अपने को अपने हाथ से बचा रहा है। इस पर लोगों ने उस से पूछा: तुझे क्या हो गया? उस ने कहा कि मैं ने दखा कि मेरे और उन के दर्मियान आग की एक खाई है, ख़ौफ़ है और (फ़रिश्तो का) बाजू है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर वह मेरे पास आता तो फ़रिश्ते उस की तिक्का-बोटी कर के उस को उठा ले जाते। फिर अल्लाह पाक ने यह आयत नाज़िल फ़रमायी: "हर्गिज़ नहीं; आदमी शरारत करता है क्योंकि वह अपने आप को क़ानून से ऊँचा समझता है। हालाँकि (मरने के बाद) उसे अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौट कर जाना है। ज़रा उस व्यक्ति को तो देखो जो एक बन्दे को नमाज़ पढ़ने से रोकता है। ज़रा तुम देखो तो सही, अगर वह हिदायत पर है और वह नेकी का हुक्म देता है (तो फिर रोकने वाले का क्या अन्जाम होना चाहिये?) ज़रा देखो तो सही, कि वह (बिला वजह) झुठलाता है और गर्दन अकड़ा कर चलता है (यानी अबू जेहल) वह याद रखे कि अल्लाह पाक उस की हर्कतों को देख रहा है। वह जो कुछ भी कर रहा है सब बकवास है, अगर वह अपनी हर्कतों से बाज़ न आया तो हम उस की चोटिया पकड़ कर नाक के बल धर रगड़ेंगे उस की नाक झूठी और पापी है। फिर वह (अगर) अपनी चन्डाल चोकड़ी को बुलाता है तो हम भी अपने फ़रिश्तों को बुलायेंगे। ऐ नबी! वह जो कुछ भी कहता है सब बकवास है, आप उस की बात हर्गिज़ न मानिए (सूर: अलक़-6 ता 13, पार:30)

फ़ाइदा:— चुनान्चे दुनिया ही में उसे सज़ा मिल गयी। उस की टाँग को पकड़ कर नाक के बल घसीट कर बद्र के कुँए में औंधे मुँह फेंक दिया गया और उस की चन्डाल चोकड़ी जिस पर उसे बड़ा गर्व था काम न आयी। यह किस प्रकार मारा गया? देखें ऊपर हदीस न॰ 1142

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, क़त्ल के इरादे से आने वाले की बुराई से सुरक्षित रहे।}

1541:— जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मतबा हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नज्द की तरफ़ जिहाद के लिये निकले। रास्ता में आप एक ऐसी वादी में पहुँचे जहाँ काँटेदार पेड़-पौधे बहुत अधिक थे, चुनान्चे आप एक पेड़ के नीचे ठहर गये और अपनी तल्वार एक डाली पर लटका दी। और दूसरे लोग भी अलग-अलग साया देख कर फैल गये। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने फ़रमाया कि जब मैं सो रहा था तो एक व्यक्ति ने आ कर मेरी तल्वार उतार ली। जब मेरी आँख खुली तो क्या देखा कि वह मेरे सर पर खड़ा है। मुझे उस समय पता चला जब वह तल्वार को अपने हाथ में ले चुका था। उस ने कहाः अब तुम्हें मुझ से कौन बचायेगा? मैं ने कहाः अल्लाह पाक। उस ने दूसरी मतर्बा भी यही कहा तो मैं ने पुनः कहाः अल्लाह पाक। उस ने यह सुन कर तल्वार को अपने मियान में कर लिया। और वहीं बैठ गया। फिर आप ने उसे कुछ भी नहीं कहा।

बाब {ज़हर और ज़हर मिला बकरी का माँस खाने का बयान।}

1542:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि एक यहूदी महिला ज़हर मिला बकरी का माँस लेकर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आयी तो आप ने उस में से थोड़ा बहुत खा लिया। फिर उस महिला को आप के सामने पेश किया गया तो आपने उस से पूछाः यह तू ने क्या किया? उस ने कहाः मैं आप को मार डालना चाहती थी। आप ने फ़रमायाः अल्लह पाक तुझे इतनी ताक़त नहीं देगा (कि तू संदेष्टा को हलाक कर सके) इस पर अ़ली रज़ि॰ ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मैं उस की हत्या न कर दूँ? आप ने फ़रमायाः नहीं।

हदीस के रावी ने कहा कि मैं ने हमेशा उस ज़हर का असर आप के कव्वे (तल्वे) में पाता रहा।

फ़ाइदा:– महिला का नाम ज़ैनब था जो सल्लाम बिन मिश्कम की पत्नी थी। आप के साथ एक सहाबी बरा बिन मारुर रज़ि॰ थे जिन्होंने माँस खा लिया था, चुनान्चे उन का देहान्त हो गया। एक दूसरी रिवायत में है कि उस ने कहा कि मैं ने इस लिये ज़हर खिलाया था कि अगर वास्तव में आप नबी होंगे तो आप को बता दिया जायेगा और अगर झूठे होंगे तो मर जायेंगे। अबू दावूद की रिवायत में है कि आप हमेशा उस ज़हर का प्रभाव महसूस करते थे।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जो भी अनुमान लगाया वह दुरुस्त निकला।}

1543:– अबू हुमैद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ तबूक की जन्ग के लिये निकले। जब कुरा की घाटी में एक महिला के बाग़ में पहुँचे तो आप ने पूछाः इस बाग़ में कितने फल लगे हैं? हम लोगों ने अनुमान लगाया और आप ने दस वसक़ का अनुमान लगाया। फिर आप ने उस महिला से फ़रमायाः अल्लाह ने चाहा तो हम दोबारा लौट कर आयेंगे इसलिये तुम (खजूर तोड़ने के बाद) वज़न याद रखना। फिर हम लोग रवाना हुये और तबूक के स्थान पर पहुँच गये तो आप ने फ़रमायाः आज रात बड़ी तेज़ आँधी आयेगी इसलिये कोई भी खड़ा न रहे गा और जिस के पास ऊँट हों उन्हें अच्छी तरह से बाँध दें। चुनान्चे ऐसा ही हुआ कि बड़ी ज़ोर की आँधी चली। इसी बीच एक व्यक्ति खड़ा हो गया तो उसे

हवा ने उड़ा कर तै घाटी के दोनों पहाड़ों के बीच में ले जा कर डाल दिया। इस के बाद अ़लमा का बेटा जो ऐला का शासक था उस का एक एल्ची एक पत्र लाया और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिये एक ख़च्चर भी तोहफ़ा में लाया। आप ने उस के पत्र का उत्तर दिया और एक चादर भी तोहफ़ा में दी।

फिर जब जन्ग से वापस लौट कर कुरा की घाटी में पहुँचे तो आप ने उस महिला से बाग़ के फलों के बारे में पूछा तो उस ने बताया कि ठीक दस वसक़ निकला। आप ने फ़रमायाः मैं मदीना जल्दी पहुँचना चाहता हूँ इसलिये जो मेरे साथ चलना चाहे वह चले और जो रुकना चाहता है वह ठहर जाये। जब हम लोग रवाना हुये और मदीना दिखाई देने लगा तो आप ने फ़रमायाः वह देखों "ताबा" है और यह उहुद पर्वत है जो हम से मुहब्बत करता है और हम उस से मुहब्बत करते हैं। फिर आप ने फ़रमायाः देखों, अन्सार के घरों में सब से अच्छा घराना बनी नज्जार का है (क्योंकि यही सब से पहले ईमान लाया) इस के बाद बनी अ़ब्दे-अशहल का है, फिर बनी हारिस का, फिर बनी साअ़दा का है। लेकिन (मजमूअ़ी तौर पर) अन्सार का तमाम घराना ही बेहतर है। इसी बीच सअ़द बिन उबादा रज़ि॰ मिल गये तो अबू उसैद ने उन से कहाः आप को नहीं मालूम कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अन्सार के तामाम घरानों की प्रशंसा की है, और हमारे घराने को सब से पीछे कर दिया है। यह सुन कर उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मुलाक़ात की और शिकायत की कि आप ने अन्सार के घरानों की प्रशंसा की है लेकिन हमारे घराने को सब से पीछे कर दिया है। आप ने फ़रमायाः क्या तुम्हारे लिये यह कम है कि तुम अच्छे लोगों में से हो।

फ़ाइदाः— हदीस का बाब से संबन्ध स्पष्ट है। आप ने फलों के बारे में जितना अनुमान लगाया उतने ही फल निकले। मदीना शरीफ़ का दूसरा नाम "ताबा" था। 'कुरा' मदीना से तीन मील की दूरी पर शाम के रास्ते में एक पहाड़ी घाटी का नाम है।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "मैं तुम्हारी कमर पकड़ कर जहन्नम से रोकता हूँ।}

1544:— अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी मिसाल उस व्यक्ति सी है जिस ने आग जलाई, जब चारों ओर रोशनी फैल गयी तो उस में कीड़े-मकोड़े या जानवर जो आग में हैं गिरने लगे, और वह उन को आग में गिरने से रोकने लगा, लेकिन वह न माने और आग में गिरने लगे। यही मिसाल हमारी और तुम्हारी है कि मैं तुम्हारी कमर पकड़ का जहन्नम से रोक रहा हूँ और कहता हूँ कि जहन्नम से दूर हो जाओ, लेकिन तुम हो कि नहीं मान रहे हो और उस में घुसते चले जा रहे हो।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह पाक को सब से अधिक जानने वाले और उस से डरने वाले थे।}

1545:— आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक काम किया और उस के करने को जाइज़ क़रार दिया। जब सहाबा को मालूम हुआ तो उन्होंने उस काम को अच्छा नहीं जाना और उसे करने से कतराने लगे। आप को जब मालूम हुआ तो लोगों को संबोधित करते हुये फ़रमायाः उन लोगों को क्या हो गया है, जिन के बारे में मालूम हुआ है कि मैं ने जिस काम को जाइज़ कहा उन्होंने उसे पसन्द नहीं किया और उस पर अ़मल नहीं किया। अल्लाह की क़सम! मैं सब से अधिक अल्लाह को जानने वाला और डरने वाला हूँ।

फ़ाइदा:— इसलिये मेरी पैरवी करनी अनिवार्य है और ख़ाह-मख़ाह छूट से फ़ाइदा न उठा कर अपने को कठिनाई में डालना जाइज़ नहीं। वह कौन सा काम था जिसे सहाबा ने नापसन्द किया? इस बारे में मुझे हदीस की किसी किताब में नहीं मिला।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमेशा गुनाहों से दूर रहते और अल्लाह पाक के आदेशों का सदा पालन करते थे।}

1546:— नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को जब दो कामों में से एक को करने का इख़्तियार दिया गया तो आप ने उसी को किया जो सब से आसान था। और गुनाह के कामों से सब से दूर रहने वाले थे। और आप ने अपनी ज़ात के लिये कभी किसी से बदला नहीं लिया, हाँ, अगर कोई अल्लाह के आदेश के ख़िलाफ़ करता तो उसे दन्ड देते थे।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नमाज़ ऐसी थी कि (पढ़ते-पढ़ते) पाँव सूज जाते और फ़रमाते कि क्या मैं अल्लाह का शुक्र अदा करने वाला बन्दा न बनूँ?}

1547:— मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इतनी देर तक नमाज़ पढ़ते कि आप के पाँव सूज जाते थे। इस पर लोगों ने आप से कहाः जब आप के अगले-पिछले गुनाह माफ़ हैं फिर इतना कष्ट क्यों उठाते हैं? इस पर आप ने फ़रमायाः क्या मैं अल्लाह पाक का शुक्र अदा करने वाला बन्दा न बनूँ।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "मैं क़ियामत के दिन हौज़े-कौसर पर तुम्हारा इन्तिज़ार करुँगा।}

1548:— जुन्दुब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना आप फ़रमाते थे कि मैं तुम से पहले हौज़े-कौसर पर पहुँचूगा (और वहाँ तुम्हारे पीने-पिलाने का इन्तिज़ाम करुँगा)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हौज़ का बयान, उन के कुशादा होने और आप के वहाँ जाने का बयान।}

1549:- अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरे हौज़ की दूरी एक माह की यात्रा के बराबर है, उस के चारों कोने बराबर हैं (यानी चारों तरफ़ की दूरी बराबर है) उस का पानी चाँदी से भी अधिक सफ़ेद और मुश्क से भी अधिक ख़ुश्बूदार है। वहाँ पिलाने के लिये जो कप हैं उन की संख्या आकाश के तारों के बराबर है, उसे जिस ने एक मतर्बा पी लिया फिर कभी प्यासा न होगा।

हदीस के रावी अ़ब्दुल्लाह ने कहा कि अबू बक्र रज़ि॰ की पुत्री अस्मा रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं हौज़-कौसर पर मौजूद रहूँगा और देखूँगा कि कौन पहुँचा और कौन नहीं पहुँचा। उन में से कुछ लोग मेरे पास आने से रोक दिये जायेंगे तो मै कहूँगाः ऐ मेरे मौला! यह सब तो हमारे उम्मती हैं। इस पर कहा जायेगाः आप को नहीं मालूम कि इन्होंने आप के दुनिया से चले जाने के पश्चात् क्या-क्या गुल खिलाए। अल्लाह की क़सम! आप के बाद यह लोग तुरन्त ही इस्लाम से फिर गये, आप के घर वालों को सताया और उन्हें शहीद किया।

अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि इब्ने मुलैका हमेशा यह दुआ माँगा करते थे कि ऐ मेरे मौला! हम दीन इस्लाम से फिर जाने और दीन इस्लाम में फितना बनने से तेरी पनाह माँगते हैं।

फ़ाइदाः- इस से मुराद अ़ली रज़ि॰ के ज़माना के ख़ारिजी हैं और आज कल के बिद्अती और क़ब्रों के मुजाविर व पुजारी भी हैं। मुक़ल्लिद भी इस में शामिल हैं। केवल एक गरोह इन सब से अलग है और वह अहले हदीसों का है, क्यों कि यह केवल किताब व सुन्नत की पैरवी करने वाले हैं। शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह॰ ने इस गरोह को "अहले सुन्नत वल् जमाअ़त" का नाम दिया है।

1550:- हारिसा बिन वहब रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी क़रीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरा हौज़ इतना बड़ा है जितना दूर मदीना से सनआ नगर है। यह सुन कर मुस्तौरिद ने हारिसा से कहा तुम ने वहाँ रखे हुये प्यालों के बारे में नहीं सुना? तुम वहाँ सितारों की तरह (अनगिन्त) रखे हुये बर्तनों को देखोगे।

1551:- इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन तुम्हारे सामने जो हौज़ होगा उस के दोनों छोर और किनारों की दूरी इतनी होगी जितनी दूरी जरबा और अज़-रह नगरों के दर्मियान है। एक रिवायत में है कि आप ने फ़रमायाः तुम्हारे सामने मेरा हौज़ होगा। एक रिवायत में है कि उबैदुल्लाह ने इमाम नाफ़े से पूछाः "जरबा" और "अज़-रह" क्या हैं? उन्होंने कहा कि यह दोनों मुल्क शाम के दो गाँव हैं, उन दोनों के दर्मियान तीन दिन के सफ़र की दूरी है। एक रिवायत में है कि तीन दिन की सफ़र की दूरी है।

1152:– जाबिर बिन समुरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं हौज़े-कौसर पर (तुम्हें पिलाने के लिये) तुम से पहले पहुँचूगा। उस के दोनों कनारों के दर्मियान नगर सनआ और ईला के दर्मियान जितना फ़ासला है। और पीने के लिये वहाँ रखे हुये पियालों की संख्या तारों के बराबर (अर्थात अनगिन्त) है।

1553:– अबू ज़र रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछाः हौज़े-कौसर पर किस प्रकार के पीने के बर्तन होंगे? आप ने फ़रमायाः उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की जान है, उस हौज़ पर रखे हुये बर्तनों की संख्या तारों से अधिक हैं। और किस रात के तारों से अधिक? अँधेरी रात में जिस रात बदली न हो (उस रात के सितारों से अधिक) वह जन्नत के बर्तन होंगे। जो उस हौज़ से पानी पी लेगा वह कभी भी प्यासा न होगा। उस हौज़ में जन्नत के दो नाले बहते हैं, उस में से भी जो एक मतबा पी लेगा वह कभी प्यासा न होगा। उस हौज़ के दोनों किनारों की दूरी इतनी हैजितनी एला से अम्मान के दर्मियान की दूरी है। उस का पानी दूध से भी अधिक सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है।

फ़ाइदाः– यहाँ हौज़ की लंबाई ईला से अम्मान तक की दूरी को बताया है। यह केवल हमें मिसाल देकर समझाने के लिये है, वर्ना उस का ज्ञान केवल अल्लाह पाक ही को है। इसी प्रकार प्यालों की संख्या तारों के बराबर बताई है, यह भी उदाहरण के तौर पर है। अँधेरी रात में जब बदली न हो तो तारे अधिक नज़र आते हैं।

1554:– सौबान रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यमन वालों को पिलाने के लिये मैं अपने हौज़ के पास से लोगों को हटाऊँगा (ताकि वह पहले पीलें) और उन्हें छड़ी से मारुँगा, फिर यमन वालों के ऊपर हौज़ का पानी बह जायेगा (यानी ख़ूब पेट भर कर पी लेंगे) फिर आप से हौज़ की लंबाई-चौड़ाई के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमायाः (उस की लंबाई इतनी है) जैसे यहाँ (मदीना) से अम्मान। फिर आप से उस के पानी के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमायाः उस का पानी दूध से भी अधिक सफ़ेद है और शहद से ज़्यादा मीठा है। जन्नत के दो नहरों से उस में पानी आता रहता है। एक सोने का है और दूसरा चाँदी का।

1555:– उक़्बा बिन आमिर रज़ि॰ से रिवायत है कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निकले और उहुद के शहीदों पर जनाज़े की नमाज़ पढ़ने की तरह जनाज़ा की नमाज़ पढ़ी, फिर मिंबर पर तशरीफ़ ले गये और फ़रमायाः मैं तुम्हारा पेश ख़ेमा हूँगा और तुम्हारे लिये गवाही दूँगा। और अल्लाह की क़सम! मैं अपने उस हौज़े-कौसर को देख रहा हूँ, और मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों (या ज़मीन) की कुन्जियाँ दी गयी हैं। अल्लाह

की क़सम! मुझे इस बात का डर है कि कहीं तुम मेरे बाद मुश्रिक न हो जाना, बल्कि यह भी डर है कि तुम दुनिया के लालच में पड़ कर एक-दूसरे से हसद करने लगोगे।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के होलिया और नबी बनाये जाने और आप की आयु का बयान।}

1556:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का क़द न तो बहुत लंबा था और न ही छोटा। न ही बहुत सफ़ेद थे और न ही गन्दुमी। आप के बाल न तो बहुत उल्झे हुये (घुँघराले) थे और न ही बहुत सीधे। अल्लाह पाक ने आप को चालीस वर्ष की आयु में संदेष्टा बनाया। आप दस वर्ष मक्का में रहे और दस वर्ष मदीना में। साठ वर्ष की आयु तक पहुँचे तो आप को अल्लाह ने उठा लिया, उस समय आप के सर और दाढ़ी के अधिक से अधिक बीस बाल ही सफ़ेद हुये थे।

फ़ाइदा:- मुस्लिम में तीन रिवायतें है (1) आप की आयु 60 वर्ष की थी (अनस बिन मालिक) (2) आप की आयु 63 वर्ष की थी (इब्ने अ़ब्बास) (3) आप की आयु 65 वर्ष की थी (इब्ने अ़ब्बास) (आगे आ रही हदीस न॰ 1592 देखें) अधिकांश रिवायतों में 63 का बयान है, इसलिये उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि आप की आयु 63 वर्ष की थी। इसी प्रकार उलमा का इस बात पर भी इत्तिफ़ाक़ है कि आप मक्का में 23 वर्ष और मदीना में 10 वर्ष नबी बनाये जाने के बाद रहे। आगे आ रही हदीस न॰ 1595 का फ़ाइदा अवश्य देखें।

1557:- बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बीच क़द के थे, आप के दोनों मोंढ़ों के दर्मियान कुछ अधिक फ़ासला था (यानी सीना चौड़ा था) आप के बाल लंबे थे और कान की लौ तक लटकते थे, आप लाल रंग का जोड़ा भी पहनते थे (जिस में लाल और पीली धारी होती थी) मैं ने किसी को भी आप से अधिक सुन्दर नहीं देखा।

1558:- अबू तुफ़ैल रज़ि॰ से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा है और अब मेरे अ़लावा आप को देखने वाला कोई नहीं बचा। हदीस के रावी जरीर ने बयान किया कि मैं ने उन से पूछा कि आप ने देखा है तो वह कैसे थे? उन्होंने बताया कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम गोरे रन्ग के थे और दर्मियाना क़द के थे।

इमाम मुस्लिम ने कहा कि अबू तुफ़ैल सन 100 हि॰ में फ़ौत हुये, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबा में वह अन्तिम सहाबी है जिन्होंने सब से अन्त में देहान्त किया।

फ़ाइदा:- अबू तुफ़ैल यह अन्तिम सहाबी थे, इन के देहान्त के बाद सहाबा में से कोई नहीं बचा जिस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा। इस के बाद से

ताबअ़ीन का दौर शुरु होता है।

बाब {नबुव्वत की मुहर का बयान।}

1559:— जाबिर बिन समुरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सर और दाढ़ी के आगे का हिस्सा सफ़ेद हो गया था। जब आप दाढ़ी में तेल लगाते तो सफ़ेदी नहीं दिखाई देती थी, और दाढ़ी बहुत घनी थी।

ऐ व्यक्ति ने प्रश्न कियाः क्या आप का चेहरा तल्वार की तरह (लंबा) था? जाबिर रज़ि॰ ने कहाः नहीं। आप का चेहरा चाँद-सूरज की तरह था और गौल था। मैं ने आप के कंधों के बीच में मुहरे-नबुव्वत देखी है वह कबूतरी के अंडे की तरह था और उस का रंग शरीर के रंग ही से मिलता जुलता था।

1560:— साइब बिन यज़ीद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मेरी ख़ाला मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास ले गयीं और कहाः ऐ अल्लाह के संदेष्टा! मेरी बहन का यह बेटा बीमार रहता है। चुनान्चे आप ने मेरे सर पर हाथ फेरा और मेरे लिये बर्कत की दुआ़ की, फिर आप ने वुज़ू किया तो मैं ने बचा हुआ पानी पी लिया, फिर आप की पीठ के पीछे खड़ा हुआ तो मेरी नज़र आप के दोनों मोंढों के दर्मियान मोहरे-नबुव्वत पर पड़ी जो हजला चिड़िया के अन्ड़े की तरह थी।

1561:— अ़ब्दुल्लाह बिन सरजिस रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा है और आप के साथ बैठ कर रोटी और गोश्त (या सरीद) भी खाई है। इस पर हदीस के रावी आ़सिम ने पूछाः क्या नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आप के लिये दुआ़ भी फ़रमाई है? उन्होंने कहाः हाँ, और तुम्हारे लिये भी। फिर उन्होंने यह आयत तिलवात की (जिस का तर्जुमा यह है)

"अपने और मोमिन मर्दों और महिलाओं के गुनाह के लिये
माफ़ी माँगा करो (सूरः मुहम्मद-19)"

अ़ब्दुल्लाह बिन सरजिस ने बयान किया कि फिर मैं घूम कर आप के पीछे गया तो दोनों मोंढों के दर्मियान चलनी हड्डी के पास मोहरे-नबुव्वत देखी वह चुटकी की तरह थी और उस पर मस्सों की तरह तिल थे।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मुँह, आँखों और एड़ियों का बयान।}

1562:— जाबिर बिन समुरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मुँह कुशादा था, आप की आँखों में लाल डोरे थे, एड़ियों में माँस कम था।

इमाम शोबा ने सिमाक से पूछाः "ज़लीउल् फ़म्" से क्या मुराद है? उन्होंने कहाः इस से मुराद यह है कि आप का मुँह कुशादा था। इमाम शोबा ने पूछाः "अश्-कलुल् अ़ैन" से क्या मुराद है? उन्होंने कहाः आप की आँखें बड़ी थीं। उन्होंने फिर पूछाः मन्हूसुल्

अक़िब" से क्या मुराद है? उन्होंने कहाः आप की एड़ी माँस से भरी थी।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दाढ़ी का बयान।}

1663:– अनस बिन मालिक रजि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि सर और दाढ़ी के सफ़ेद बाल उखाड़ना मना है। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कभी ख़िज़ाब नहीं लगाया। आप के होंट के नीचे के दाढ़ी के कुछ बाल सफ़ेद थे। इसी प्रकार कंपटी और सर के कुछ बाल सफ़ेद थे।

फ़ाइदाः– अनस बिन मालिक रजि॰ ने इमाम सीरीन से पूछाः क्या आप ख़िज़ाब लगाते थे? उन्होंने कहाः आप ने इतना बुढ़ापा देखा ही नहीं (कि ख़िज़ाब लगाने की नौबत आये) अल्बत्ता अबू बक्र व उमर ने मेंहदी और ख़िज़ाब लगाया है (मुस्लिम) इस मामले में उलमा का इत्तिफ़ाक़ है और अधिकांश का यही कहना है कि आप ने नहीं लगाया। उम्मे सलमा और इब्ने उमर रज़ि॰ की रिवायत में है कि आप ने लगाया है। मालूम हुआ कि आप ने लगाया है और नहीं भी लगाया है। ऊपर हदीस न॰ 1559 में है कि आप तेल लगाते तो सफ़ेदी छुप जाती थी। तो हो सकता है उम्मे सलमा और उमर ने तेल ही को ख़िज़ाब समझ लिया हो।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बुढ़ापे का बयान।}

1564:– अबू जोहैफ़ा रज़ि॰ सेरिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा है, आप का रंग-रुप सफ़ेद था और बूढ़े हो चले थे। (आप के नाती) हसन बिन अ़ली रज़ि॰ आप के मुशाबह थे।

फ़ाइदाः– अ़ली रज़ि॰ ने बयान किया कि हसन का आधे शरीर से ऊपर का हिस्सा और हुसैन का आधे शरीर से नीचे का हिस्सा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मुशाबह था (रहमतुल्लि्-आ़लमीन)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बालों का बयान।}

1565:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सर के बाल मोंढों तक लंबे थे।

1566:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सर के बाल आधे कानों तक लटकते थे।

फ़ाइदाः– अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि आप के बाल न तो बहुत घुँघराले थे और न ही बिल्कुल सीधे थे और कानों और मोंढों तक लंबे थे। और आप बीच में माँग भी निकालते थे (मुस्लिम-इब्ने अ़ब्बास) बहर-हाल हज्ज और उम्रा के अलावा आप ने कभी बाल छोटे नहीं कराए।

बाब {सर के बालों को लटकाने और माँग निकालने का बयान।}

1567:— इब्ने अब्बास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अहले किताब (यानी यहूद व नसारा) अपने बालों को पेशानी पर लटकता छोड़ देते थे (यानी माँग नहीं निकालते थे) और मुश्रिक लोग माँग निकालते थे। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जिस मस्अले में अहले किताब की मुख़ालिफ़त का हुक्म न होता, उस में उन्ही के मुवाफ़िक़ करना पसन्द करते थे, इसलिये आप भी (बिना माँग निकाले) पेशानी पर बाल लटकाते थे, फिर बाद में (मुश्रिकों की तरह) बीच में माँग निकालने लगे।

फ़ाइदा:— हदीस में माँग निकालने और न निकालने दोनों का ज़िक्र है, लेकिन अब आप के अन्तिम अ़मल यानी माँग निकालने को सुन्नत माना जायेगा। आरंभ में आप अहले-किताब के तरीक़े पर अ़मल करते थे, लेकिन जब उन की मुख़ालिफ़त का हुक्म दिया गया तो आप ने उन के हर-हर अ़मल के ख़िलाफ़ किया।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम किस प्रकार हँसते थे।}

नोट:— इस बाब से संबन्धित हदीस ऊपर न॰ 280 के तहत गुज़र चुकी है, वहाँ तर्जुमा देखें।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर्दे में रहने वाली कुँवारी किशोरी से भी अधिक शर्मीले थे।}

1568:— अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर्दे में रहने वाली कुँवारी लड़की से भी अधिक शर्मीले थे। और जब आप किसी चीज़ को बुरा जानते तो हम आप के चेहरे से पहचान लेते थे।

बाब {आप का शरीर मुलाइम और ख़ुश्बूदार था।}

1569:— अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का रंग सफ़ेद चमकीला था, आप का पसीना मोती की तरह था, जब चलते तो आगे की तरफ़ झुके हुये होते। मैं ने दीबाज और हरीर (जैसे रेशमी कपड़े को) इतना नर्म-मुलायम नहीं पाया जितनी आप की हथेली थी। और मैं ने मुश्क और अंबर जैसी ख़ुश्बू में भी इतनी ख़ुश्बू नहीं पाई, जैसी आप के शरीर में थी।

1570:— जाबिर बिन समुरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ ज़ुह्र की नमाज़ अदा की, फिर आप अपने घर जाने के लिये निकले तो मैं भी आप के साथ निकला। सामने कुछ बच्चे नज़र आये तो आप ने हर एक बच्चे के गाल पर अपना हाथ फेरा और मेरे गाल पर भी हाथ फेरा, मैं ने आप के हाथ में इतनी ठन्डक पाई जैसे आप ने अपना हाथ ख़ुश्बू बनानें वाले के डब्बे में से निकाला है।

बाब {सर्दी के दिनों में जब आप पर वह्यि आती तब भी आप पसीने में डूब जाते थे।}

1571:– आइशा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सर्दी के दिनों में वह्यि नाज़िल होती तो भी आप की पेशानी से (सख़्ती की वजह से) पसीना बहने लगता था।

1572:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा हिशाम के पुत्र हारिसा ने आप से पूछाः आप पर वह्यि किस प्रकार आती है? आप ने फ़रमायाः हमारे ऊपर कभी तो वह्यि इस प्रकार आती है जैसे घन्टी बजने की अवाज़ आती है और इस प्रकार की वह्यि मुझ पर बहुत भारी महसूस होती है, फिर जब वह्यि का सिलसिला बन्द हो जाता है तब मैं उसे याद कर लेता हूँ। कभी इस प्रकार भी वह्यि आती है कि एक फ़रिश्ता मर्द की सूरत में आता है और वह कुछ सुनाता है उसे याद कर लेता हूँ।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पसीने की खुश्बू का बयान।}

1573:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे घर तशरीफ़ लाये और आराम करने लगे तो आप को पसीना आने लगा, आप का पसीना देख कर मेरी माता जी (उम्मे सुलैम) ने एक शीशी ली और आप के पसीना को उस में भरने लगीं। इतने में आप की आँख खुल गयी तो फ़रमायाः ऐ उम्मे सुलैम! यह क्या कर रही हो? उन्होंने कहाः आप के इस पसीने को हम खुश्बू में मिला लेते हैं जिस से वह सब से अच्छी खुश्बू बन जाजी है।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पसीना से तबर्रुक हासिल करने का बयान।}

1574:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (मेरी माता जी) उम्मे सुलैम के घर जाते और वह न होतीं तो उन के बिछौने पर सो जाते। चुनान्चे एक मतर्बा आप आ कर उन के बिछौने पर सो गये। जब वह घर लौटीं तो लोगों ने बताया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हारे बिस्तर पर सो रहे हैं। चुनान्चे उन्होंने आ कर देखा कि आप को पसीना छूट रहा है और वह चमड़े के बिस्तर पर जमा हो गया है। यह देख कर उम्मे सुलैम ने अपना एक डब्बा खोला और उस में से शीशी निकाल कर आप के पसीने को भरने लगीं। इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घबरा कर उठ बैठे और पूछने लगे: ऐ उम्मे सुलैम! तुम यह क्या कर रही हो? उन्होंने कहाः मैं अपने बच्चों के लियेजमा कर रही हूँ। आप ने फ़रमायाः ठीक है। (इकट्ठा कर लो)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात से लोगों के तबर्रुक हासिल करने का बयान।}

1575:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो मदीना के नौकर पानी से

भरा हुआ बर्तन आप के पास लाते तो आप अपना हाथ उस में डाल देते। अगर सर्दी के दिनों में लाते फिर भी आप अपना हाथ उस में डुबो देते।

1576:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा कि नाई आप के बाल काट रहा है और सहाबा आप के चारों तरफ़ चक्कर काट रहे हैं। वह चाहते थे कि आप का कोई भी बाल ज़मीन पर न गिर कर किसी सहाबी के हाथ में गिरे।

1577:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि एक महिला थोड़ी बहुत पागल हो गयी थी, उस ने आप से कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मुझे आप से कुछ काम है (लेकिन लोगों के सामने नहीं कह सकती) आपने फ़रमायाः ऐ फ़ला की माँ! अच्छा ठीक है, जिस गली में चाहो ले चलो मैं वहाँ तुम्हारा काम कर दूगाँ। फिर आप रास्ते से हट कर एकान्त में चले गये, फिर उस ने आप से कुछ बातें कीं (और आप ने भी उसे मश्वरा दिया)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बाल–बच्चों पर सब से अधिक रहम करने वाले थे।}

1578:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अधिक किसी को भी बच्चों से प्यार करते नहीं देखा। आप के पुत्र इब्राहीम मदीना के निकट के दीहात में (एक लोहार की पत्नी की पर्वरिश में थे और उस का) दूध पीते थे, चुनान्चे आप बराबर उन्हें देखने जाया करते और हम भी आप के साथ होते थे। आप जब उस महिला के घर जाते तो वहाँ धुवाँ होता, क्योंकि उस दूध पिलाने वाली महिला का शौहर लोहारी का काम करता था। फिर आप इब्राहीम को गोद में ले कर प्यार करते फिर वापस लौट आते।

हदीस के रावी अ़म्र ने बयान किया कि जब इब्राहीम का देहान्त हो गया तो आप ने फ़रमायाः मेरे बेटे इब्राहीम ने दूध पीते देहान्त किया है इसलिये जन्नत में उन्हें दूध पिलाने के लिये दो अन्ना (दूध पिलाने वालियाँ) मिली हैं।

फ़ाइदाः– इब्राहीम, मारिया क़िबतिय्या रज़ि॰ से सन 8 हि॰ में पैदा हुये और 16 माह जीवित रहे। उम्मे बुंदा जो मुन्ज़ुर बिन ज़ैद अन्सारी की पुत्री और बरा बिन औस अन्सारी की पत्नी थीं, इब्राहीम को दूध पिलाया। पति बरा बिन औस लोहारी का काम करते थे इसलिये घर में अक्सर भट्ठी से धुआँ उठता था। मारिया और इन की बहन सीरीन को मिस्र के बादशाह मक़ूक़स ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उपहार में दिया था। सीरीन को आप ने इस्लामी कवि हस्सान बिन साबित रज़ि॰ को दे दिया और मारिया को स्वँय आप ने ले लिया (पैगंबरे–आ़लम)

1579:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि अक़रा बिन हाबिस ने देखा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने नाती को चूम रहे हैं, इस पर उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह

के रसूल! मेरे दस बच्चे हैं लेकिन मैं ने आज तक किसी को नहीं चूमा। इस पर आप ने फ़रमायाः जो (बच्चों) पर रहम नहीं करेगा, अल्लाह पाक उस पर भी रहम नहीं करेगा।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रहमत हमेशा महिलाओं के साथ रहती थी, इसलिये महिलाओं की सवारी को धीरे हाँकने का हुक्म दिया।}

1580:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने किसी सफ़र में थे और आप का गुलाम जिस का नाम अन्जशा था ऊटों को तेज़ चलाने के लिये गीत गा रहा था, इस पर आप ने फ़रमायाः ऐ अन्जशा! ऊँटों को यह समझ कर धीरे हाँक कि उस पर काँच की शीशियाँ लदी हुयी हैं। (जो तेज़ चलने से टूट जायेंगी)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वीरता और जन्ग में सब से आगे–आगे रहने का बयान।}

1581:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम लोगों में सब से अधिक सुन्दर और सब अधिक सख़ी और सब से अधिक बहादुर थे। एक मतबा ऐसा हुआ कि मदीना वाले (दुश्मन के आक्रमण की ग़लत सूचना से) डर गये चुनान्चे जिधर से आवाज़ आ रही थी लोग (पता लगाने के लिये) उसी रुख़ पर चल पड़े, तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन्हें रास्ता में लौटते हुये मिले, क्योंकि आप अकेले ही सब से पहले (पता लगाने के लिये) उस आवाज़ (शौर–हल्ला) की तरफ़ लपके थे। उस समय आप तल्हा अन्सारी के नंगी पीठ घोड़े पर सवार थे, गले में तल्वार लटक रही थी और फ़रमा रहे थेः घबराने की कोई बात नहीं, डरने की कोई बात नहीं, और यह घोड़ा तो (दौड़ने में) दरिया के समान है। हाँलाकि वह पहले चलने में बहुत बोदा था।

फ़ाइदाः– यह चमत्कार था कि आप के सवार होते ही तेज़ दौड़ने लगा। और यह आप की वीरता की पहचान थी कि बिला झिझक अकेले ही तहक़ीक़ के लिये उस शौर और हल्ला की तरफ़ चले गये।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम लोगों में सब से ज़्यादा अख़्लाक़ वाले थे।}

1582:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम लोगों में सब से अधिक बड़े अख़्लाक़ वाले और मिलनसार थे। एक बार आप ने मुझे किसी काम के लिये भेजा, लेकिन मैं ने कह दिया "अल्लाह की क़सम! मैं तो नहीं जाऊँगा" हालाँकि दिल में यही था कि जिस का हुक्म दिया है उस के लिये जाऊँगा (लेकिन लड़कपने की वजह से ऐसा कह गये) चुनान्चे मैं उस काम के लिये चला तो राह में कुछ बच्चे खेलते हुये मिल गये (जिसे मैं देखने लगा) इतने में आप ने पीछे से आ कर अचानक मेरी गर्दन पर हाथ रख दिया। मैं ने घूम कर देखा

तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम थे जो हँस रहे थे। आप ने फ़रमाया: ऐ उनैस! क्या तुम वहाँ गये थे जहाँ के लिये मैं ने तुम्हें भेजा था? मैं ने कहा: हाँ, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं जा रहा हूँ।

अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! में ने 9 वर्ष तक आप की सेवा की, लेकिन मुझे याद नहीं पड़ता कि उस काम के बारे में जिसे मैं ने (अपनी इच्छा से) कर डाला हो, आप ने यह पूछा हो कि तुम ने ऐसा क्यों किया। या जिस काम को मैं ने न किया हो उस के बारे में पूछा हो कि तुम ने क्यों नहीं किया।

फ़ाइदा:– अनस के पिता मालिक का इन के छोटपने ही में देहान्त हो गया था, फिर इन की माता उम्मे सुलैम जी ने अबू तल्हा अन्सारी से दूसरा निकाह कर लिया; तो लत्हा रज़ि॰ इन्हें कंधे पर बैठा कर आप की सेवा में लाये और कहा कि आप इस बच्चे को अपने पास रख लें, यह आप की सेवा करेगा और आप इसे अच्छी शिक्षा देंगे।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बात-चीत करने के अन्दाज़ का बयान।}

1583:– उर्वा बिन जुबैर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अबू हुरैरा रज़ि॰ मुझ से बयान करते थे कि (एक मर्तबा) मैं ने कहा: ऐ हुजरा वाली महिला! आप सुन लीजिये, ऐ हुजरा वाली महिला, आप सुन लीजिये (फिर कई हदीसें बयान कर गये) उस समय आइशा रज़ि॰ नमाज़ पढ़ रही थीं। फिर जब नमाज़ पढ़ चुकीं तो उर्वा से कहने लगीं: तुम ने अबू हुरैरा की बातें सुनीं (कि जल्दी-जल्दी कितनी बातें कह गये) हालाँकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस प्रकार (ठहर-ठहर कर) बातें करते थे कि गिनने वाला चाहता तो उसे गिन भी सकता था।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नसीहत करते समय हम लोगों का ख़याल रखते थे (कि हम उक्ता न जायें)}

1584:– शफ़ीक़ बिन वाइल (ताबओ़) से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ हमें हर जुमेरात को वाज़-नसीहत फ़रमाते थे, इस पर एक व्यक्ति ने कहा: ऐ अबू अ़ब्दुर्रहमान! हमें आप की वाज़-नसीहत बहुत पसन्द है और हम सुनना भी चाहते हैं इसलिये हम चाहते हैं कि आप हमें रोज़ाना ही नसीहत किया करें। यह सुन कर उन्होंने कहा: हम तुम्हें जो रोज़ाना-नसीहत नहीं सुनाते हैं उस का यह कारण हैं कि हम तुम्हें उक्ता देना नहीं चाहते हैं, इसलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी गाहे-बगाहे नसीहत के लिये कोई दिन मुक़र्रर करते थे और हम पर बोझ डालना बुरा जानते थे।

फ़ाइदा:– मालूम हुआ कि रोज़ाना लोगों को इकट्ठा कर के वाज़-नसीहत और तब्लीग़ करना बुरा है। इस से तबीअ़त में उक्ताहट पैदा होती है और सुनने की तरफ़ तबीअ़त कम होती है। इसलिये नाग़ा कर के करना चाहिये।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भलाई के कामों में सब से अधिक सख़ी थे।}

1585:– इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है वह बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सदक़ा–ख़ैरात करने में सब से अधिक सख़ी थे और सब से अधिक सख़ावत रमज़ान के महीने में करते थे। हर वर्ष रमज़ान के महीना में जिब्रील अ़लै॰ पास आते और पूरे रमज़ान के महीने में आप को क़ुरआन पाक सुनाया करते। जब जिब्रील अ़लै॰ आप के पास आते तो उस समय आप माल देने में (सदक़ा-ख़ैरात करने में) चलती हवा से भी अधिक सख़ावत में तेज़ी करते थे।

फ़ाइदा:– देहान्त वाले साल जिब्रील अ़लै॰ रमज़ान में दो बार आप के पास आये और दो मतर्बा आप को, और आप ने जिब्रील को क़ुरआन पाक ज़बानी सुनाया। जिब्रील सुनाते तो आप सुनते, और आप सुनाते तो जिब्रील सुनते थे।

बाब {ऐसा कभी नहीं हुआ कि आप से कुछ माँगा गया और आप ने फ़रमाया कि नहीं दूगाँ।}

1586:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि ऐसा कभी नहीं हुआ कि आप से कोई चीज़ माँगी गयी और आप ने फ़रमाया हो कि नहीं दूगाँ।

1587:– अनस बिन मालिक रजि॰ से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने आप से दो पहाड़ों के बीच की बकरियाँ माँगी तो आप ने उसे दे दीं, चुनान्चे उस ने क़ौम वालों के पास जा कर कहा कि मेरी क़ौम के लोगो! इस्लाम ले आओ, अल्लाह की क़सम! मुहम्मद तो इतना देते हैं कि इस बात से भी नहीं डरते हैं कि मैं स्वंय मुहताज हो जाऊँगा।

अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि एक व्यक्ति दुनिया की लालच में मुसलमान होता फिर वह इतना पक्का–सच्चा मुसलमान हो जाता कि इस्लाम उस के निकट पूरी दुनिया और उस के अन्दर की तमाम चीज़ों से ज़्यादा प्यारा हो जाता।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अधिक से अधिक उपहार (सदक़ा–ख़ैरात) देने का बयान।}

1588:– इब्ने शिहाब (ज़हरी) ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मक्का फ़त्ह करने के लिये जिहाद किया, फिर इस के तुरन्त ही बाद हुनैन की जन्ग के लिये निकल पड़ें। इस जन्ग में अल्लाह पाक ने दीन इस्लाम और मुसलमानों की मदद की। उस दिन आप ने सफ़वान बिन उमय्या को सौ ऊँट दिये, फिर सौ ऊँट दिये फिर फिर सौ ऊँट दिये (यानी तीन बार में तीन सौ ऊँट दिये) इस पर सफ़वान बोलेः अल्लाह की क़सम! आप ने मुझे जो कुछ दिया और जितना भी दिया। हालाँकि आप मेरी नज़रों में सब से बुरे थे। लेकिन आप ने मुझे देना जारी रखा यहाँ तक कि आप मेरी नज़रों में सब से अधिक महबूब हो गये।

फ़ाइदा:— मक्का, रमज़ान सन 8 हि॰ में फ़त्ह हुआ। उस के तुरन्त बाद शव्वाल सन 8 हि॰ में हुनैन की जन्ग हुयी। इस जन्ग के लिये आप ने सफ़वान बिन उमय्या से 100 ज़िरहें वापसी की शर्त पर उधार ली थीं, उस समय तक सफ़वान काफ़िर थे। जन्ग के बाद ईमान ले आये। हुनैन की जन्ग में छः हज़ार काफ़िर मर्द और महिलायें गुलाम बनाए गये, चौबीस हज़ार ऊँट, चार हज़ार ऊक़िया चाँदी और चालीस हज़ार बकरियाँ माले-ग़नीमत में मिलीं। इसी में से आप ने सफ़वान को दिया था।

इसी जन्ग में दाई हलीमा की लड़की और आप की दूध शरीक बहन शैमा पकड़ी गयीं तो उन्होंने कहा आप मेरे दूध शरीक भाई हैं, यह देखियेः आप ने बचपन में मेरे कन्धे पर दाँत काट लिया था जिस के निशान आज तक मौजूद हैं। इस पर आप ने उन्हें छोड़ दिया। वह ईमान लायीं या नहीं लायीं? मालूम न हो सका।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वादों का बयान।}

1589:— जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः (ऐ जाबिर!) अगर मेरे पास बहरैन से माल आयेगा तो मैं तुम्हें उस में से इतना दूगाँ, इतना दूगाँ, इतना दूगाँ, और दोनों हाथों से इशारा किया (यानी तीन लप भर-भर कर दूगाँ) लेकिन बहरैन का माल आने से पूर्व ही आप देहान्त कर गये और वह माल अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ के पास आप के बाद आया। चुनान्चे उन्होंने एक एलान्ची को हुक्म दिया कि वह एलान कर दे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जिस को कुछ देने का वादा किया था, या जिस किसी का भी क़र्ज़ आप पर हो वह आये (और अपना हक़ ले जाये) चुनान्चे वह एलान सुन कर मैं उन के पास गया और कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझ से वादा किया था कि अगर बहरैन से माल आया तो मैं तुम्हें इतना, इतना, इतना दूगाँ। चुनान्चे अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने एक लप भर कर दिया और कहा कि इसे गिनो। मैं ने गिना तो वह पाँच सौ (दिर्हम) निकले। फिर उन्होंने कहा कि इस का दोगुना और ले लो (चुनान्चे तीन लप यानी 15 सौ दिर्हम हो गये।)

फ़ाइदा:— 'बहरैन' बसरा और अ़म्मान के दर्मियान एक स्थान का नाम था। अ़ली रज़ि॰ वहाँ के हाकिम थे और उन्होंने टेक्स वसूली कर के भेजा था।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नामों की संख्या का बयान।}

1590:— जुबैर बिन मुत्इम रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरे कई नाम हैं। मेरा नाम "अहमद" है, मेरा नाम "मुहम्मद" है, मेरा नाम "माही" है, मेरे द्वारा अल्लाह पाक कुफ़्र को मिटायेगा। और मेरा नाम "हाशिर" भी है। ,लोग क़ियामत के दिन मेरे पास (शफ़ाअ़त के लिये) इकट्ठे होंगे। मेरा नाम "आक़िब" भी है, यानी मेरे बाद कोई संदेश्टा नहीं आयेगा। अल्लाह पाक ने आप का नाम "रऊफ़"

और "रहीम" रखा है। (यानी बहुत नर्म और बहुत कृपा शील)

1591:– अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हम से अपना कई नाम बयान करते थे, चुनान्चे आप ने फ़रमायाः मैं "मुहम्मद" हूँ, "अहमद" हूँ। "मु-क़फ़्फ़ी" हूँ, "हाशिर हूँ, "नबिय्युर्रहमत" हूँ और "नबिय्युत्तौबा" हूँ।

फ़ाइदा:– इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी पुस्तक में 99 नाम गिनाए हैं, यह 99 नाम लोगों के दर्मियान बहुत मश्हूर हैं। और क़ुरआन मजीद की जिल्द के स्तर पर भी छपे हुये होते हैं। पूरे नामों की जानकारी के लिये वहाँ देखें।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का और मदीना में कितने समय तक रहे।}

1592:– इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का में 13 वर्ष रहे और आप पर वह्यि नाज़िल होती रही। इसी प्रकार मदीना में दस वर्ष तक रहे। और 69 वर्ष कीआयु में देहान्त हुआ।

1593:– इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का में 15 वर्ष तक रहे (उस दौरान) आप (फ़रिश्तों की) आवाज़ सुनते थे और 7 वर्ष तक (फ़रिश्तों की) रोशनी (चमक) भी देखते रहे, लेकिन इस दौरान कोई शक्ल-सूरत नहीं देखी। और आप पर 8 वर्ष तक वह्यि आती रही। और आप दस वर्ष तक मदीना शरीफ़ में रहे।

फ़ाइदा:– आरंभ में केवल आवाज़ सुनते थे फिर उन को देखा और बात-चीत भी की। रोशनी और चमक से मुराद या तो फ़रिश्तों की रोशनी मुराद है, या अल्लह पाक की निशानियाँ। आप मक्का में नबी बनाए जाने के बाद 13 वर्ष रहे, लेकिन यहाँ 51 वर्ष रिवायत है। इस में नबुव्वत से पूर्व के भी कुछ वर्ष शामिल हैं। (देखें ऊपर हदीस न॰ 1556)

बाब {देहान्त के समय आप की आयु कितनी थी?}

1594:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने 63 वर्ष की आयु में देहान्त किया। अबू बक्र ने भी 63 वर्ष की आयु में देहान्त किया और इसी प्रकार उमर ने भी।

1595:– बनी हाशिम खान्दान के स्वतन्त्र किये हुये गुलाम अ़म्मार ने बयान किया कि मैंने इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से पूछाः जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का देहान्त हुआ उस समय आप की कितनी आयु थी? इस पर उन्होंने कहाः मैं नहीं जानता था कि बनी हाशिम के साथ रहते हुये तुम इतना भी नहीं जानते होगे। मैं ने कहा कि लोगों से इस बारे में मालूम किया तो उन्होंने इस बारे में इख़्तिलाफ़ किया (यानी किसी ने कम

और किसी ने अधिक बताया) इसलिये आप ही की ज़बान से सुनना बेहतर जाना। उन्होंने पूछाः कुछ जोड़–घटाव (हिसाब) जानते हो? मैं ने कहाः हाँ। उन्होंने कहाः इस बात को याद रखो कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम संदेष्टा बनाए गये उस समय 40 वर्ष के थे, फिर इस में 15 वर्ष (नबी बनाए जाने के बाद के वर्ष) को जोड़ दो जिस को आप ने मक्का में कभी चैन से और कभी डर और ख़ौफ़ की हालत में बिताया (यह कुल 55 वर्ष हुये) अब इस में हिजरत के बाद जो दस वर्ष मदीना में बिताए उसे जोड़ दो (यानी देहान्त के समय आप की आयु 65 वर्ष थी)

फ़ाइदा:– ऊपर हदीस न॰ 1556 में रिवायत है कि आप ने 63 वर्ष की आयु में देहान्त किया। तो इस में इख़्तिलाफ़ नहीं है, क्योंकि किसी ने छः दहाई से ऊपर नहीं लिया तो 60 कह दिया, किसी ने 60 से ऊपर आधी दहाई लिया तो 65 कह दिया, और जिस ने छः दहाई के ऊपर की तीन गिन्ती ली उस ने 63 कहा। आजकल भी इसी प्रकार बोला जाता है कि या तो पूरी दहाई लेते हैं या आधी दहाई। जैसे अगर 27 आदमी किसी स्थान पर थे तो कहेंगे "25, 30" व्यक्ति थे। सहीह यही है कि आप की कुल आयु देहान्त के समय 63 वर्ष थी (नौवी)

बाब {जब अल्लाह किसी उम्मतपर रहम करने का इरादा करता है तो उस उम्मत से पहले नबी को वफ़ात दे देता है।}

1596:– अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब अल्लाह पाक किसी उम्मत पर रहम करता है तो उस उम्मत का नबी उम्मत के हलाक होने से पहले ही फ़ौत हो जाता है और अपनी उम्मत का पेशख़ेमा होता है। और जब अल्लाह किसी उम्मत को बर्बाद करना चाहता है तो उस के नबी के सामने ही हलाक कर देता है, और नबी उस की तबाही–बर्बादी को देख कर प्रसन्न होता है। क्योंकि उस उम्मत ने नबी की नार्फ़मानी की होगी और उसे झुठलाया होगा।

बाब {अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः "तेरे रब की क़सम! यह लोग उस समय तक मोमिन नहीं हो सकते जब तलक.....(सूरः निसा 65)}

1597:– अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर बिन अ़व्वाम रज़ि॰ ने बयान किया कि दो अन्सारी सहाबा ने हर्रा के स्थान के उस पानी की नाली को लेकर मेरे पिता जी से झगड़ा किया जिस से वह अपने खजूरों की सिंचाई करते थे, और अपना मुक़दमा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास ले गये। अन्सारी का कहना था कि पानी बहने दो (उसे न रोको) लेकिन ज़ुबैर इस बात पर राज़ी न थे। जब मामला नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास पहुँचा तो आपने ज़ुबैर से फ़रमायाः ऐ ज़ुबैर! पहले तुम अपने पेड़ों को सींच लो फिर अपने पड़ोसी के लिये पानी छोड़ दो। यह सुन कर वह अन्सारी नाराज़ हो गये और कहने लगेः ऐ अल्लाह के रसूल! चूँकि वह आप की फूफी के बेटे हैं इसीलिये (अपने

उन की तरफ़दारी की है) इतना सुनना था कि आप का चेहरा लाल-तूल हो उठा। आप ने फ़रमाया: ऐ ज़ुबैर! तुम पानी रोक कर अपना बाग़ उस समय तक सींचो जब तलक पानी से मेंढ डूब न जाये। ज़ुबैर ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मेरे ख़याल से (सूरः निसा की) यह आयत इसी मौक़े पर नाज़िल हुयी है (तर्जुमा) "तुम्हारे रब की क़सम! यह लोग उस समय तक मोमिन नहीं हो सकते जब तलक उन के आपसी झगड़ों के दर्मियान जो कुछ आप फ़ैसला सुना दें उसे तस्लीम न कर लें और उस फ़ैसले के सामने अपने आप को सरेन्डर न कर दें (सूरः निसा-आयत 65)

फ़ाइदाः- ज़ुबैर, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हक़ीक़ी फूफी उम्मे हकीम बैज़ा के बेटे थे। फूफी, खदीजा रज़ि॰ के भाई अ़व्वाम के बेटे अ़ब्दुल्लाह से बियाही थीं। इन का बाग़ अन्सारी के बाग़ से पहले पड़ता था और नाली ज़ुबैर के बाग़ से होकर अन्सारी के बाग़ तक पहुँचती थी। इसीलिये हक़ यह बनता है कि पहले जिस का बाग़ है वह सींचाई करे। अन्सारी का कहना था कि नाली बन्द कर के पहले तुम अपना बाग़ न सींचो, पानी मेरे बाग़ में आने दो। मदीना के निकट काले पत्थरों की ज़मीन थी इसीलिये उस क्षेत्र का नाम "हर्रा" पड़ गया।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पैरवी करने का बयान। और अल्लाह पाक का यह आदेश कि "तुम रसूल से उन चीज़ों के बारे में न पूछा करो, कि अगर उस का उत्तर दे दें तो तुम्हें बुरा लगेगा (सूरः मादइा 101)}

1598:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने सहाबा के बारे में कोई (बुरी) बात सुनी तो आप ने उन्हें मुख़ातब कर के फ़रमाया: मेरे सामने जन्नत और दोज़ख़ दोनों को पेश किया गया तो मैं ने आज जैसी अच्छी और आज जैसी बुरी चीज़ कभी नहीं देखी। जिस चीज़ को मैं जानता हूँ अगर तुम लोग भी जान जाओ तो हसँना कम और रोना अधिक कर दो। अनस रज़ि॰ ने बयान किया कि उस दिन से अधिक भारी दिन सहाबा पर कभी नहीं गुज़रा। उन्होंने अपने सरों को छुपा लिया और अन्दर ही अन्दर सिसकियाँ लेने लगे। यह देख कर उमर रज़ि॰ खड़े हो गये और कहने लगे: "हम अल्लाह पाक के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नबी होने पर राज़ी हैं"

इस के बाद एक सहाबी ने खड़े होकर पूछा: मेरे पिता कौन हैं? आप ने फ़रमाया: फ़लाँ। इसी मौक़े पर यह आयत नाज़िल हुयी कि "ऐ ईमान वालो! नबी से ऐसी चीज़ों के बारे में न पूछा करो कि अगर वह बता दें तो तुम को बुरा लग जाये" (सूरः माइदा-101)

फ़ाइदाः- किसी ने पूछा कि मेरा पिता कौन है? और वह हरामी नुतफ़े का है और आप ने सच-सच बता दिया तो भाँडा फूट जायेगा और खान्दान में उस की बेइज़्ज़ती होगी। महिला से अलग पूछ-ताछ होगी और तलाक़ की नौबत आयेगी। इसलिये इस प्रकार के ऊट-पटाँग और अनर्थ प्रश्न करने से मना फ़रमा दिया। इसी प्रकार आप ने फ़रमाया: कि

तुम में से जिस के पास रुपया-पैसा है उस पर हज्ज फ़र्ज़ है, वह हज्ज करे। एक सहाबी ने पूछ लिया: क्या हर वर्ष फ़र्ज़ है? आप ने फ़रमाया: अगर मैं हाँ कह देता तो हर वर्ष फ़र्ज़ हो जाता और तुम अदा न कर सकते और गुनहगार होते (मुस्लिम) एक रिवायत में है कि प्रश्नकर्ता अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ि॰ थे। लोग उन्हें अपने बाप की औलाद नहीं समझते थे, लेकिन आप ने बताया कि तुम्हारा बाप हुज़ाफ़ा ही है (मुस्लिम)

1599:— सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मुसलमानों में सब से बड़ा दोषी वह व्यक्ति है जिस ने ऐसी चीज़ के बारे में पूछा जो उस पर हराम न थी, लेकिन उस के पूछने की वजह से हराम हो गयी।

फ़ाइदा:— यहाँ बिला वजह मस्अला पूछने और सवाल करने से मना किया गया है। वर्ना शरीअ़त में ऐसा काम जिस के करने या न करने के बारे में उसे शुब्हा हो, उस के बारे में पूछना अनिवार्य है। अल्लाह पाक ने फ़रमाया: इल्म वालों से पूछो अगर तुम नहीं जानते हो तो"

1600:— अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे पिता किस हाल में है? आप ने फ़रमाया: जहन्नम में है। फिर जब वह वापस जाने लगा तो आप ने फ़रमाया: मेरे पिता और तुम्हारे पिता दोनों जहन्नम में हैं।

बाब {जिस से नबी रोक दें उस से दूर रहने, और किसी मस्अले में इख़्तिलाफ़ पैदा करने से बचने का बयान।}

1601:— अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं जिस काम के करने से रोक दूँ उसे मत करो और जिस के करने का हुक्म दूँ उस को भरसक करने की कोशिश करो। क्योंकि तुम से पहले के लोग इसी नाते तबाह हुये कि (बिला वजह) बहुत अधिक सवाल करते थे (और अगर नबी बता देते) तो उस में कजबहसी करते थे।

बाब {नबी के दीन के बारे में ख़बर देने और दुनियावी मामलात में राय देने में (दोनों में) फ़र्क़ है।}

1602:— तल्हा बिन उबैदुल्लाह रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ खजूर के बाग़ में काम करने वालों के पास से जा रहा था कि आप ने पूछा: यह लोग क्या कर रहे हैं? उन लोगों ने कहा: खजूर के पेड़ों में गाभा लगा रहे हैं, यानी नर खजूर की डाली को मादा खजूर के पेड़ में रख देते हैं। इस से मादा खजूर का पेड़ गर्भवती हो जाता है (फल अधिक देने लगता है) आप ने फ़रमाया: ऐसा करने से कोई फ़ाइदा नहीं होता। जब लोगों को इस बात की ख़बर लगी तो गाभा लगाना छोड़ दिया (चुनान्चे उस वर्ष फल कम आये) फिर जब आप को इस बारे में मालूम हुआ तो फ़रमाया: अगर गाभा लगाने में फ़ाइदा है तो वह लोग लगा सकते हैं। यह तो मेरी एक राय थी, इसीलिये मेरी राय पर अ़मल करना कोई ज़रुरी नहीं। लेकिन अगर (दीन में) अल्लाह की तरफ़ से कोई हुक्म बयान करुँ तो उस पर अ़मल

करो क्योंकि दीन के मस्अले के बारे में मैं अपनी तरफ़ से कोई बात नहीं कहता।

फ़ाइदाः– दीन और दुनिया के मस्अले के बारे में फ़र्क़ है। दीन के मस्अले में नबी वही कहता है जो अल्लाह हुक्म देता है, इसलिये उस मस्अले में बिला किसी संकोच के अ़मल करना अनिवार्य है। रहा दुनिया का मामला, तो जिस प्रकार और दूसरे लोग अपनी राय देते हैं जो ग़लत भी होती है और सहीह भी, यही हुक्म नबी की राय में भी है। इसलिये ऐसी राय पर अ़मल करना कोई ज़रुरी नहीं। नबी की राय खेती-किसानी में अगर ग़लत हो जाती है तो यह कोई ऐब नहीं है, क्योंकि आप को बाग़-बग़ीचा का हाल मालूम नहीं और न ही आप ने यह सब कार्य किया, कि किस प्रकार फल अधिक आते हैं। चुनान्चे मुस्लिम ही की एक रिवायत में आप ने फ़रमायाः "तुम अपने दुनिया के कामों को मुझ से अधिक जानते हो।"

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखने की इच्छा प्रकट करने का बयान।}

1603:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उस अल्लाह की क़सम! जिस के हाथ में मुहम्मद की जान है एक समय ऐसा भी आयेगा जब तुम मुझे देख न सकोगे, हालाँकि उस समय मुझे देखना, अपने बाल-बच्चों और धन-माल से कहीं अधिक बेहतर होगा (लेकिन हम ही नहीं रहेंगे, इसलिये मेरे साथ रहने को ग़नीमत जानो, ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं)

अबू इस्हाक़ (यानी इब्ने मुहम्मद बिन सुफ़यान) ने कहा कि मेरे ख़याल से इस का यह अर्थ है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का देखना पहले है, फिर माल-दौलत और बीवी-बच्चे हैं।

बाब {उस व्यक्ति के बारे में बयान जो यह पसन्द करता है कि मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखना हो जाये, (यानी मैं आप को देख लूँ) अर्गचे मेरे बाल-बच्चे कुर्बान हो जायें।}

1604:– अबू हुरैरा रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी उम्मत में मेरे दुनिया से चले जाने के बाद मुझ से इस प्रकार मोहब्बत करने वाले पैदा होंगे जो ख़ाहिश करेंगे कि अर्गचे मेरे बीवी-बच्चे और माल-दौलत सब बिक जायें लेकिन एक झलक अपने नबी को देख लेते।

फ़ाइदाः– लेकिन नबी तो उन से पहले दुनिया से जा चुका है इसलिये उन की इच्छा पूरी नहीं होगी, लेकिन इस इछा करने पर तो नेकी मिलेगी ही।

❀ ❀ ❀

(सन्देष्टाओं के फ़ज़ाइल का बयान)

बाब {आदम अलै॰ की पैदाइश के आरंभ का बयान।}

1605:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमायाः अल्लाह तआला ने मिट्टी (ज़मीन) को सनीचर के दिन पैदा किया, फिर इतवार को उस में पहाड़ बनाए, सोमवार के दिन पेड़-पौधों को पैदा किया, मंगल के दिन काम काज की चीज़ें (जैसे लोहा आदि) पैदा कीं, बुध के दिन नूर को पैदा किया, जुमेरात के दिन जानवरों को फैलाया, आदम को सब से अन्तिम मख़्लूक़ के तौर पर जुमा के दिन अस्र की नमाज़ के बाद अस्र और मग़्रिब के दर्मियान बनाया।

बाब {इब्राहीम अलै॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1606:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगाः ऐ ज़मीन के सब से बेहतर इन्सान। यह सुन कर आप ने फ़रमायाः यह दर्जा इब्राहीम अलै॰ का है।

फ़ाइदा:– यह बात आप ने नम्रता और आदर-सम्मान के नाते कही थी, वर्ना इन्सानों में आप से बड़ा किसी का मर्तबा नहीं। अल्लाह के बाद आप ही का दर्जा है।

बाब {इब्राहीम अलै॰ के ख़तना करने का बयान।}

1607:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः इब्राहीम अलै॰ ने बसूले से अपना ख़त्ना स्वयँ किया था उस समय उन की आयु ८० वर्ष की थी।

फ़ाइदा:– चूँकि इसी आयु में ख़त्ना का हुक्म हुआ इसलिये इसी आयु में किया। बसूला एक औज़ार है जिस से बढ़ई लकड़ी काटते-छीलते हैं। जिस वस्तु से आदमी ख़त्ना कर सकता है उस से करे, चाहे वह चाकू हो, छुरी हो, आरी हो या कुछ हो। मक़सद चमड़े का कटना है। एक आदमी अपने नाफ़ के नीचे का बाल स्वँय बनाता है तो फिर अपने हाथ से ख़त्ना कर लेने में कौन सी शर्म की बात है। जो इस हदीस का मज़ाक़ उड़ाते हैं वह स्वँय पागल हैं (बुख़ारी-3356-अबू हुरैरा)

बाब {इब्राहीम अ़लै॰ का अनुरोध करना: "मेरे मौला! किस प्रकार मुर्दों को जीवित करता है, मुझे भी दिखा दे"। और लूत और यूसुफ़ अ़लै॰ का भी बयान।}

1608:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हम इब्राहीम अ़लै॰ के मुक़ाबले में (ईमान में इज़ाफ़ा की ख़ातिर) शक करने का अधिक हक़ रखते हैं जबकि उन्होंने कहा था: "ऐ मेरे मौला! मुझे भी दिखा दे कि तू मुर्दों को किस प्रकार जीवित करता है?" इस पर अल्लाह ने पूछा: "क्या तुम्हें ईमान नहीं है?" उन्होंने कहा: "मुझे यक़ीन तो है, लेकिन चाहता हूँ कि मेरे दिल को (और अधिक) इत्मिनान हो जाये।" इसी प्रकार अल्लाह पाक लूत अ़लै॰ पर रहम फ़रमाये, वह मज़बूत और ठोस चीज़ का सहारा लेते थे। और अगर मैं जेल में उतने समय तक रहता जितने समय यूसुफ़ अ़लै॰ रहे तो मैं बुलाने वाले के साथ जेल से निकल कर चला जाता।

फ़ाइदा:– **हज़रत इब्राहीम अ़लै॰ ने शक और शुब्हे का इज़हार नहीं किया, बल्कि और अधिक यक़ीन पैदा होने के लिये अपनी आँखों से देखना चाहा। इस का उदाहरण ऐसे ही है जैसे एक लड़का किसी काम को करना जानता है लेकिन अपने उस्ताद से कहता है कि आप ही स्वँय कर के दिखा दीजिये। इस से लड़के का मक़सद और अधिक जानकारी प्राप्त करना है। इस आयत के बारे में देखें सूर: बक़र: 260। लूत अ़लै॰ के लिये देखें: सूर:हूद 80। यूसुफ़ अ़लै॰ के लिये देखें: पार:12, सूर: यूसुफ़ 33।**

बाब {इब्राहीम अ़लै॰ ने (अपने घर वालों से) कहा: "मैं बीमार हूँ" और यह भी कहा कि "इन बुतों को तुम्हारे इस बड़े बुत ने तोड़ा है" और अपनी पत्नी सारा के बारे में कहा कि "यह मेरी बहन है।"}

1609:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: इब्राहीम अ़लै॰ ने (अपने जीविन में) केवल तीन मतर्बा झूठ बोला। उन में दो झूठ तो अल्लाह के लिये बोला। पहला यह कि उन्होंने कहा: "मैं बीमार हूँ" (सूर: साफ़्फ़ात 89) दूसरा यह झूठ बोला कि "उन को इस बड़े बुत ने तोड़ा है" (सूर: अन्बिया–63) और तीसरा झूठ अपनी पत्नी सारा को लेकर बोला था (कि यह मेरी बहन है)

इस घटना की तफ़्सील यह है कि इब्राहीम अ़लै॰ (तब्लीग़ करते हुये) एक ज़ालिम बादशाह के राज्य में पहुँच गये, उन के साथ पत्नी सारा भी थीं जो बड़ी सुन्दर थीं। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि अगर इस बादशाह को पता चला कि तू मेरी पत्नी है तो वह तुम्हें मुझ से छीन ले लगा, इसलिये अगर वह पूछे तो कह देना कि मैं इस की बहन हूँ, और तुम (वास्तव में) मेरी इस्लामी बहन हो। और इस दुनिया में हमारे और तुम्हारे अ़लावा कोई मुसलमान नहीं मालूम पड़ता। जब दोनों उस के मुल्क में दाख़िल हुये तो उस के कारिन्दों ने देख कर बादशाह को सूचित किया कि आप के राज्य में एक ऐसी महिला आयी है जो तुम्हारे ही योग्य है। चुनान्चे उस ने उन्हें बुलवा भेजा। जब वह जाने लगीं तो इधर इब्राहीम अ़लै॰ नमाज़ पढ़ने लगे (और सुरक्षा के लिये दुआएँ करने लगे)

जब वह दर्बार में पहुँची तो उस ने (बुरी निय्यत से) उन की तरफ़ हाथ बढ़ाया लेकिन उस के हाथ आपस में बँध गये। यह देख कर उस ने कहाः मेरे लिये दुआ़ कर दो कि मेरा हाथ खुल जाये, मैं तुम्हें कोई तक्लीफ़ न दूगाँ। चुनान्चे उन की दुआ़ से उस का हाथ खुल गया तो उस ने फिर बढ़ाया। लेकिन अबकी मतर्बा पहले से कहीं अधिक जकड़ गया। तो उस ने फिर प्रार्थना की कि आप दुआ़ कर दीजिये मेरा हाथ खुल जाये, मैं आप को कोई तक्लीफ़ न दूगाँ। चुनान्चे उन की दुआ़ से हाथ खुल गया। लेकिन उस ने (तीसरी मतर्बा) फिर हाथ बढ़ा दिया तो इस मतर्बा भी उस का हाथ जकड़ गया। चुनान्चे इस मतर्बा वह बोलाः आप अल्लाह पाक से दुआ़ कर दीजिये कि मेरा हाथ खुल जाये, अब मैं आप के ऊपर हाथ नहीं उठाऊँगा। चुनान्चे सारा ने दुआ़ की और उस का हाथ खुल गया।

अब बादशाह ने अपने उस कारिन्दे को बुलाया जो सारा को लेकर आया था और उस से कहा कि तू मेरे पास किस शैतान को लेकर आ गया यह तो इन्सान नहीं है, इसे मुल्क से निकाल बाहर करो और हाजिरा को लौंडी के तौर पर उस के हवाले कर दो। चुनान्चे सारा, हाजिरा को लेकर वापस लौटीं तो इब्राहीम अ़लै॰ ने पूछाः क्या मामला पेश आया? सारा ने कहाः सब ठीक है, अल्लाह पाक ने उस बदकार के हाथ को मुझ से रोक दिया और एक लौंडी भी दी।

अबू हुरैरा रज़ि॰ ने बयान किया कि ऐ आसमानी पानी की औलाद! (यानी अ़रब वालों!) यही लौंडी हाजिरा, तुम्हारी माँ हैं।

फ़ाइदाः– यह हदीस बुख़ारी में भी है (बुख़ारी–3358– अबू हुरैरा) क्या इब्राहीम अ़लै॰ की तीनों बातों को झूठ कहा जायेगा? कोई भी बात तो झूठ नहीं है (1) मैं बीमार हूँ। नबी लोग अपनी क़ौम की बुराइयाँ देख कर कुढ़ते और घुलते हैं, और यह भी बीमारी ही है। अल्लाह पाक ने कुरआन में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बारे में फ़रमायाः "ऐसा मालूम होता है कि आप उन के ईमान न लाने के ग़म में अपनी जान को जोखिम में डाल देंगे।" (सूरः आराफ़)
(2) इस बड़े बुत ने तोड़ा है। यह भी झूठ नहीं है। अगर झूठी बात होती तो पुजरी लोग सब से पहले चिल्लाते कि ऐ इब्राहीम! तुम झूठ बोल रहे तो। लेकिन झूठ का आरोप लगाने के बजाए "उन्होंने मारे शर्म के अपने सरों को झुका लिया" (सूरः अन्बिया 65) इब्राहीम अ़लै॰ उन से यही कहलवाना ही चाहते थे कि पत्थर के अन्दर किसी को मारने और हानि पहुँचाने की क्षमता नहीं होती है, लेकिन काफ़िरों ने यह नहीं कहा। क्यौंकि वह जानते थे कि अगर यह कहा तो इब्राहीम तुरन्त कहेंगे कि फिर इन पत्थरों को खुदा क्यों मानते हो जो कुछ भी नहीं कर सकते। (3) सारा को बहन बताना यह भी झूठ नहीं है। क्योंकि आदम–हव्वा की औलाद होने के नाते हर कोई भाई–बहन है, और मुसलमान होने के नाते इस्लामी भाई–बहन है।

मौलाना आज़ाद रह॰ अपनी पुस्तक "तर्जुमानुल् कुरआ़न" मैं पारः16 सूरः म्रयम की

तफ़्सीर में लिखते हैं कि सच्चाई, पैंगबर का आहार है, वर्ना शरीअत पूरी की पूरी शुब्हे वाली हो जायेगी। आप अनुमान लगायें कि वह इब्राहीम जिस को अल्लाह पाक ने आग में जलने से बचाया, क्या उस संदेष्टा का अक़ीदा इतना कमज़ोर हो गया कि अगर वह अपनी पत्नी को पत्नी बता देगा तो अल्लाह पाक उस बादशाह के चन्गुल से उसे नहीं बचाएगा? मौलाना आज़ाद रह॰ लिखते हैं कि यहाँ हदीस रिवायत करने वाले ठीक तौर पर हदीस बयान नहीं कर सके। दूसरे उलमा ने यह तावील की है कि इब्राहीम ने "तौरिया" से काम लिया। तौरिया उसे कहते हैं कि कहने वाला तो इस्लामी बहन मुराद ले लेकिन सामने वाला वास्तव में हक़ीक़ी बहन समझे। लैकिन यहाँ भी ईमानी कमज़ोरी स्पष्ट है कि इस प्रकार के बहाने बाज़ी से काम ले। यह सब बातें संदेष्टा की शान के ख़िलाफ़ हैं।

बहर हाल मुस्लिम की हदीस का इन्कार भी नहीं कर सकते और इब्राहीम अ़लै को झूठ बोलने वाला भी नहीं कह सकते, इसीलिये जमहूर उलमा की राय पर अ़मल करते हुये "तौरिया" मुराद लेना ही बेहतर है।

'ऐ आसमानी पानी की औलाद' चूंकि अ़रब के लोगों का जीवन आसमानी पानी पर निर्भर था, उन का गुज़र-बसर ज़्यादा तर वर्षा के पानी पर होता था, इसीलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह वाक्य प्रयोग किया।

बाब {मूसा अ़लै॰ का बयान। अल्लाह पाक ने फ़रमाया: "फिर मैं ने उन्हें पाक कर दिया.......(सूरः अहज़ाब)}

1610:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया) मूसा अ़लै॰ बड़े हयादार मर्द थे, उन्हें कभी किसी ने नन्गा नहीं देखा था। चुनान्चे बनी इस्राईल के लोग कहने लगे कि उन को फ़ोता बढ़ने (फ़ाइलेरिया) की बीमारी है। एक बार वह कहीं पानी में (नन्गे होकर) स्नान करने लगे और कपड़ा किसी पत्थर पर रख दिया, लेकिन वह पत्थर (कपड़ा के साथ) भागने लगा और मूसा अ़लै॰ ने अपनी लठिया लेकर उसे दौड़ाया। वह उसे मारते जाते थे और कहते जाते थे कि ऐ पत्थर! मेरा कपड़ा मुझे वापस कर दे। फिर वह पत्थर जा कर उस स्थान पर रुका जहाँ बनी इस्राईल के लोग एकत्र थे (चुनान्चे उन्हें नन्गे हालत में देखा कि उन्हें कोई बीमारी नहीं है) फिर आप ने यह आयत तिलवात की "ऐ ईमान वालों! तुम लोग भी उन की तरह न हो जाओ जिन्होंने मूसा को सताया (यानी उन पर बीमारी का आरोप लगाया) लेनिक अल्लाह पाक ने उन्हें आरोप से बरी कर दिया। मूसा अ़लै॰ अल्लाह के निकट बड़े प्रतिष्ठावान (इज़्ज़त वाले) थे।

फ़ाइदा:- बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि "मूसा के शरीर में कोई ऐब है, या कोढ़ (बर्स) की बीमारी है, या दोनों फ़ोते बढ़े हुये हैं (हाइड्रोसील की बीमारी है) मूसा के लाठी मारने की वजह से पत्थर पर चार या पाँच निशान पड़ गये थे" (3404-अबू हुरैरा)

बाब {मूसा और खज़िर अ़लै॰ का क़िस्सा।}

1611:– सअ़ीद बिन जुबैर से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से कहा: नौफ़ बकाली का कहना है कि बनी इस्राईल में जो मूसा नामक संदेष्टा हुये हैं वह और हैं, और जिन्होंने ख़ज़िर अ़लै॰ से मुलाक़ात की थी वह दूसरे मूसा हैं। यह सुन कर उन्होंने कहा कि अल्लाह का दुश्मन झूठ बोल रहा है (दोनों एक ही मूसा हैं) मैं ने उबय्यि बिन कअ़ब रज़ि॰ को बयान करते सुना है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: एक मतबा मूसा अ़लै॰ अपनी क़ौम बनी इस्राईल के दर्मियान खुत्बा देने खड़े हुये तो उन से किसी ने पूछा: लोगों में सब से अधिक ज्ञान किस को है? उन्होंने उत्तर दिया कि मुझे हैं। यह बात अल्लाह पाक को बुरी लगी कि उन्होंने यह क्यों नहीं कहा कि अल्लाह बेहतर जानता है (कि कौन सब से अधिक ज्ञानी है) चुनान्चे अल्लाह ने उन के पास वह्यि भेजी कि दो दरियाओं के संगम पर मेरा एक बन्दा रहता है जो तुम से अधिक ज्ञान रखता है। मूसा ने पूछा: ऐ मेरे मौला! मेरी उस से किस प्रकार भेंट हो? उन्हें बताया गया कि एक मछली अपने झोले में रख लो (और उन्हें तलाश करने के लिये निकलो) जहाँ वह मछली गुम हो जाये उस स्थान पर वह बन्दा मिलेगा। इस के बाद मूसा ने अपने शार्गिद यूशा बिन नून को साथ लिया और रवाना हो गये। साथ में मछली भी रख ली। दोनों चलते-चलते एक चट्टान के पास पहुँचे तो मूसा और उन के साथी सो गये, इसी दर्मियान मछली (जीवित होकर) तड़पी और थैले से निकल कर दरिया में जा पहुँची। अल्लाह पाक ने उस के पास से पानी का बहाव रोक दिया और पानी खड़ा हो गया जिस से पानी के अन्दर सुरंग बन गया और मछली के लिये रास्ता बन गया। यह देख कर मूसा और उन के साथी को बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर वह दोनों पूरा दिन और पूरी रात चलते रहे। इधर मूसा के साथी उन से मछली का हाल बयान करना भूल गये।

जब सुब्ह हुयी तो मूसा ने आप से कहा: हमारा नाश्ता लाओ, आज तो हम थक कर चूर हो गये। उन्हें थकान उस स्थान से आगे बढ़ने के बाद मालूम हुयी जहाँ पहुँचने का हुक्म हुआ था। यह सुन कर उन के साथी ने कहा: क्या आप को नहीं मालूम जब हम उस चट्टान के पास पहुँचे (तो मछली निकल कर दरिया में कूद गयी) और मैं मछली के बारे में बताना तो भूल ही गया और शैतान ने मुझे मछली के बारे में बतलाना भुला दिया, उस मछली ने तो दरिया में कूद कर अपनी राह बना ली। मूसा ने कहा: हमें तो उसी स्थान की तलाश थी। फिर दोनों उल्टे पाँव पलटे और उस चट्टान के पास पहुँचे तो क्या देखा कि एक सहाब सफ़ेद कपड़ा ओढ़े हुये खड़े हैं। मूसा ने उन्हें सलाम किया तो उन्होंने कहा: तुम्हारे मुल्क में कहाँ सलाम का रवाज है। इस पर उन्होंने कहा: मेरा नाम मूसा है। उन्होंने पूछा: बनी इस्राईल के मूसा? उन्होंने कहा: जी हाँ (बनी इस्राईल के मूसा) यह सुन कर ख़ज़िर ने कहा कि अल्लाह पाक ने आप को जो ज्ञान दिया है उसे मैं नहीं जानता और मुझे जो ज्ञान दिया है उसे आप नहीं जानते। मूसा ने कहा कि मैं

आप के साथ रहना चाहता हूँ ताकि आप को जो ज्ञान दिया गया है उसे मुझे सिखा दें। ख़जिर ने क़हाः आप मेरे साथ रह कर सब्र नहीं कर पायेंगे, और जिस के बारे में ज्ञान न हो उसे देख कर आप सब्र कर भी नहीं पायेंगे (अवश्य ही प्रश्न करेंगे) मूसा ने कहाः अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वाला पायेंगे, और मैं किसी मामले में भी आप की नाफ़रमानी नहीं करुँगा। ख़ज़िर ने कहाः (ठीक है) आप मेरे साथ रहें, लेकिन किसी चीज़ के बारे में मुझ से प्रश्न न करेंगे मैं स्वँय ही उस के बारे में बता दूगाँ। मूसा ने कहाः ठीक है। फिर मूसा और ख़ज़िर दोनों समुन्दर के कनारे-कनारे चलने लगे कि उन के सामने से एक नाव गुज़री तो उन दोनों ने सवार करने के लिये कहा। उन लोगों ने ख़ज़िर को पहचान लिया और बिना भाड़ा-किराया लिये सवार कर लिया। ख़ज़िर ने उस नाव का एक तख़्ता उखाड़ दिया। यह देख कर मूसा बोल पड़े कि उन लोगों ने हमें बिना किराया लिये सवार कर लिया और आप हैं कि उस कश्ती का तख़्ता ही उखाड़ दिया ताकि सभी लोग डूब जायें, आप ने तो बड़ा बुरा काम कर डाला। इस पर ख़ज़िर ने कहा कि क्या मैंने आप से नहीं कहा था कि सब्र नहीं कर पायेंगे? इस पर मूसा ने कहा (माफ़ कर दीजिये) और भूल-चूक पर पकड़ न कीजिये और मुझे तन्गी में न डालिये।

फिर दोनों कश्ती से नीचे उतरे और समुन्दर के कनारे-कनारे चलने लगे कि इसी दर्मियान एक लड़का मिल गया जो और लड़कों के साथ खेल रहा था। चुनान्चे ख़ज़िर ने उन की खोपड़ी पकड़ कर उखाड़ दी और उसे मार डाला। इस पर मूसा ने कहाः आप ने एक बेगुनाह लड़के को मार डाला यह बहुत बुरा कार्य कर डाला। ख़ज़िर ने कहाः क्या मैं ने तुम से यह नहीं कह दिया था कि तुम सब्र न कर सकोगे? और यह काम पहले के मुक़बाले में ज़्यादा बुरा था। इस पर मूसा ने कहाः अब अगर मैं आप के किसी काम पर एतराज़ करुँ तो आप मुझे अपने साथ मत रखियेगा, यह मेरी आप से अन्तिम गुज़ारिश है। फिर दोनों आगे बढ़े और एक गाँव में पहुँच कर लोगों से खाना माँगा, लेकिन उन लोगों ने मेहमानी करने से इन्कार कर दिया। इसी बीच एक दीवार दिखाई पड़ी जो अब गिरी की तब गिरी। ख़ज़िर ने उसे अपने हाथ से दरुस्त कर दिया। मूसा ने कहाः इस गाँव वालों के पास आ कर हम ने खाना माँगा लेकिन इन्कार कर दिया और कुछ न दिया, तो ऐसे लोगों से उस दीवार को दुरुस्त करने पर मज़दूरी ले सकते थे। ख़ज़िर ने यह सुन कर कहाः अब हमारे और आप के बीच जुदाई है, लेकिन मैं अपने उन कामों के बारे में बतलाए देता हूँ जिन पर तुम सब्र न सके।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला मूसा पर रहम करे, काश मूसा सब्र से काम लेते तो हमें औरभी बातें मालूम होतीं। आप ने फ़रमायाः पहला एतराज़ मूसा ने तो भूल-चूक से किया था। इसी बीच एक चिड़िया आयी और कश्ती के कनारे बैठ कर समुद्र में चोंच मारी। ख़जिर ने कहाः हम ने और आप ने अल्लाह के ज्ञान में से इतना ही ज्ञान प्राप्त किया है जितना इस चिड़िया ने समुन्दर का पानी कम किया है। सअ़ीद बिन जुबैर ने बयान किया कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ इस आयत

को इस प्रकार पढ़ते थे "वका-न अमा-महुम" (हालाँकि आज के कुरआन में "वका-न वरा अहुम" है)

फ़ाइदा:- मूसा और खज़िर का बयान पार:15, सूर: कहफ़ में है, वहाँ विस्तार से पढ़ें। ख़ज़िर ने तीनों काम करने का कारण भी बताया है जिस का बयान सूर: कहफ़ में है।

फ़ाइदा:- 'ख़ज़िर' का अर्थ है "हरियाली"। वह जहाँ बैठते वहाँ हरियाली हो जाती थी इसीलिये उन का यह नाम पड़ा। यह नबी थे, अथवा फ़रिश्ते या वली थे? इस में इख़्तिलाफ़ है। लेकिन सहीह यही है कि वह फ़रिश्ता नहीं थे और न ही वह जीवित हैं। इस विषय में हिन्दी तर्जुमा सनाई वाल कुरआन में मैं ने बहुत तफ़्सील से रोशनी डाली है आप वहाँ सूर: कहफ़ में अवश्य देखें-ख़ालिद। 'नौफ़ल बकाली' यह दमिशक़ का रहने वाला यहूदी था। दो दरियाओं का संगम्र वह है जहाँ फ़ारस और रुम के समुन्दर परस्पर मिलते हैं। इमाम बुख़ारी रह० ने इस हदीस को ला कर यह मस्अला सिद्व किया है कि दीन का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यात्रा और समुद्र की यात्रा करना जाइज़ है। (74-इब्ने अब्बास+78-उबय्यि बिन क-अब+122, 220, 68 आदि)

बाब {किसी नबी को नबी पर फ़ज़ीलत न दो।}

1612:- अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक यहूदी कुछ माल बेच रहा था जब (माल ख़रीद कर) उस को क़ीमत दे दी गयी तो उस ने नापसन्द किया, या उतनी क़ीमत लेने पर राज़ी न हुआ है (अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रावी को शुब्हा है) और कहने लगाः उस ज़ात की क़सम जिस ने मूसा अ़लै० को समस्त इन्सानों में से चुना। इतना सुनना था कि एक अन्सारी ने उस को एक थप्पड़ मार दिया और कहा कि हमारे दर्मियान नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मौजूद होते हुये तू कहता है कि इन्सानों में मूसा को चुना। फिर उस यहूदी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास जा कर शिकायत की कि ऐ अबुल् क़ासिम! मैं एक ज़िम्मी यहूदी हूँ और मुझे सुरक्षा (अमान) प्राप्त है, फिर कहा कि फ़लाँ ने मेरे चेहरे पर तमाचा मारा है। आप ने उन से पूछाः क्यों उस को तमाचा मारा। अन्सारी ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! उस ने कहा कि "क़सम है उस की जिस ने समस्त इन्सानों में मूसा को चुना" हालाँकि हमारे दर्मियान आप मौजूद हैं। यह सुन कर आप इतना नाराज़ हुये कि नाज़ारगी आप के चेहरे से झलकने लगी। फिर आप ने फ़रमायाः किसी सन्देष्टा को दूसरे सन्देष्टा पर फ़ज़ीलत न दो, क्योंकि क़ियामत के दिन जब सूर में फूँक मारी जायेगी तो ज़मीन और आकाश के तमाम लोग बेहोश हो जायेंगे, मगर अल्लाह पाक जिस को होश में रखे (वह बेहोश न होगा) फिर जब दूसरी बार सूर में फूँक मारी जायेगी तो सब से पहले मैं होश में आऊँगा, तो क्या देखूँगा कि मूसा अ़लै० अर्श को थामे हुये खड़े हैं। अब मुझे नहीं मालूम कि वह तूर पर्वत पर बेहोश होने के नाते बेहोश ही नहीं होंगे, या मुझ से पहले होश में आ जायेंगे (और अर्श का पाया पकड़ लेंगे) और मैं इसी प्रकार यह भी कहना नहीं पसन्द करता कि कोई सन्देष्टा यूनुस बिन मता से अफ़ज़ल है।

फ़ाइदा:— आप का यह कहना कि मुझे किसी पर फ़ज़ीलत न दो, यह नम्रता और बड़प्पन के नाते था, वर्ना अल्लाह के बाद सब से बड़ा मतर्बा आप ही का है। चूँकि एक को बड़ा कहने में दूसरे की तौहीन होती है, और इस से नफ़रत पैदा होती है, इसलिये आप ने मना फ़रमा दिया।

बाब {मूसा अलै॰ के देहान्त का बयान।}

1613:— अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मूसा अलै॰ के पास जान निकालने वाले फ़रिश्ते आये और कहा कि अपने रब के पास चलो। यह सुन कर मूसा अलै॰ ने उन की आँख पर इतने ज़ोर का तमाचा मारा कि उन की आँख फूट गयी। वह लौट कर अल्लाह के पास गये और कहा कि ऐ मेरे मालिक! तू ने मुझे ऐसे बन्दे की जान निकालने के लिये भेज दिया जो मरना ही नहीं चाहता है और उस ने तो मेरी आँख ही फोड़ दी। अल्लाह ने उन की आँख ठीक कर दी और फ़रमाया: मेरे उस बन्दे के पास जा कर कहे कि अगर तुम और जीना चाहते हो तो अपना हाथ किसी बैल की पीठ पर रख दो, तुम्हारे हाथ के नीचे जितने बाल आयेंगे उतने वर्ष तुम अधिक जीवित रहोगे। मूसा ने पूछा: इस के बाद क्या होगा? उत्तर दिया कि फिर मरना है। इस पर मूसा ने कहा कि फिर तो इसी समय मर जाना बेहतर है। लेकिन ऐ मेरे मौला! मुझे पवित्र ज़मीन से एक पत्थर फेंकने की दूरी पर मौत दे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! अगर मैं उस स्थान पर होता तो तुम्हें मूसा की क़ब्र बता देता। उन की क़ब्र बैतुल् मुक़द्दस के पास रास्ते के कनारे पर रेत के लाल टीले के पास है।

फ़ाइदा:— मलकुल मौत जान निकालने के लिये फ़रिश्ता की सूरत में जाते हैं। यहाँ वह इन्सान की शक्ल में आये थे इसलिये आदमी जान कर मार दिया। इस में कोई अंचभे की बात नहीं है कि इस हदीस का इन्कार किया जाये। मूसा अलै॰ ने पवित्र ज़मीन (बैतुल् मुक़द्दस) में दफ़न होना पसन्द नहीं किया कि कहीं लोग क़ब्र की पूजा न करने लग जायें। चुनान्चे अनुरोध किया कि उस स्थान पर दफ़न किया जाये कि वहाँ से अगर कोई पत्थर फेंके तो बैतुल मुक़द्दस तक पहुँचे। (दादू राज़)

बाब {आप जब मूसा अलै॰ से मिले उस समय वह नमाज़ पढ़ रहे थे।}

1614:— अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेराज की रात जब मैं मूसा अलै॰ से मिला (या उन के पास से गुज़रा) तो क्या देखा कि वह लाल टीले के पास क़ब्र में खड़े होकर नमाज़ पढ़ रहे हैं।

फ़ाइदा:— वह क़ब्र के बाहर निकल कर नमाज़ पढ़ रहे थे, या क़ब्र में पढ़ रहे थे तो आप ने कैसे देखा? इस प्रकार के शुब्हे में न पड़ कर केवल ईमान लाना काफ़ी है। संदेष्टा का कनेक्शन अल्लाह से हर समय जुड़ा रहता और सम्पर्क बना रहता है, अल्लाह पाक उसे सब कुछ दिखा सकता है।

बाब {यूसुफ़ अलै॰ का बयान।}

1615:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा गयाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! लोगों में सब से अधिक मर्तबे वाला कौन है? आप ने फ़रमायाः जो अल्लाह पाक से सब से अधिक डरता हो। सहाबा ने कहाः हमारा पूछने का यह मक़सद नहीं है। आप ने फ़रमायाः फिर तो सब से बड़े मर्तबे वाले यूसुफ़ हैं क्योंकि वह स्वैंय नबी हैं, नबी के बेटे हैं और इब्राहीम अल्लाह के दोस्त के पोते हैं। सहाबा ने कहाः हम यह भी नही जानना चाहते। आप ने फ़रमायाः फिर तुम लोग अरब क़बीलों के बारे में पूछते हो तो मालूम हो कि लोगों की मिसाल खान की सी है (कि उस में अच्छा माल निकलता है और बुरा माल भी) अ़रब क़बीलों में सब से बेहतर वह लोग हैं जो जाहिलिय्यत के समय में भी बेहतर थे। वह अगर दीन इस्लाम को सीख लें तो इस्लाम के ज़माना में भी सब से बेहतर होंगे।

फ़ाइदाः– मालूम हुआ कि अस्ल बुर्जुगी और बड़ाई दीनदारी में है। किसी ऊँचे गौत्र में पैदा हो जाने से किसी का मतर्बा बड़ा नहीं हो जाता। (देखें बुख़ारी शरीफ़–3383, 3374, 3353–अबू हुरैरा रज़ि॰)

बाब {ज़–करिया अ़लै॰ का बयान।}

1616:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ज़करिया अ़लै॰ बढ़ई थे।

फ़ाइदाः– इस हदीस के लाने का उद्देश्य यह है कि कोई भी जाइज़ पेशा बुरा नहीं है चाहे वह लोहारी का हो, या बढ़ईगीरी का, या राजगीरी का। इदरीस अ़लै॰ दर्जी थे, वह सिलाई का काम करते थे। दावूद अ़लै॰ हथियार बनाते थे।

बाब {यूनुस अलै॰ का बयान।}

1617:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि मेरे किसी भी बन्दे के लिये जाइज़ नहीं कि वह कहे कि मैं यूनुस बिन मत्ता अ़लै॰ से मर्तबे में बड़ा हूँ।

फ़ाइदाः– देखें हदीस न॰ 1612 का फ़ाइदा देखें।

बाब {ईसा अ़लै॰ का बयान।}

1618:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं ईसा बिन म्रयम अ़लै॰ से दुनिया और आख़िरत (दोनों जगह) दूसरों के मुक़ाबला (अनुपात) में सब से अधिक निकट हूँ। इस पर सहाबा ने पूछाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! यह कैसे? आप ने फ़रमायाः नबी अ़ल्लाती भाइयों की तरह हैं। उन के मामलात में अर्गचे इख़्तिलाफ़ है लेकिन दीन सब का एक ही है और मेरे और उन के दर्मियान कोई और नबी नहीं है।

फ़ाइदाः– 'अ़ल्लाती भाई' उन्हें कहते हैं जिन का बाप एक हों और दोनों की मातायें अलग–अलग हों। "व–उम्महातुहुम् शत्ता" इस का तजुर्मा मौलाना वहीदुज़्ज़माँ ने यह किया

है "उन की माताएँ अलग-अलग हैं।" मौलाना दावूद रज़ि॰ ने बुख़ारी की हदीस न॰ 3443 में यूँ किया है: "दीन के कुछ मस्अलों में इख़्तिलाफ़ है" दोनों ही तर्जुमे अपने स्थान पर दुरुस्त हैं। 'अ़ल्लाती' उन्हें कहते हैं जिन का बाप एक और मायें जुदा-जुदा हों। और यह भी दुरुस्त है कि दीन एक है लेकिन कुछ मसाइल में इख़्तिलाफ़ है, जैसे किसी उम्मत पर दो रकअ़त नमाज़ फ़र्ज़ थी और किसी पर चार। किसी पर 10 रोज़े फ़र्ज़ थे और किसी पर एक माह के। और सभी के दीन का नाम दीन इस्लाम ही था।

बाब {हर बच्चे (शिशु) को पैदा होने के बाद शैतान कचोके लगाता है, लेकिन म्रयम और उन के पुत्र अ़ीसा अ़लै॰ सुरक्षित रहे।}

1619:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कोई भी बच्चा जब पैदा होता है तो शैतान उस को कचोके मारता है जिस की वजह से वह चिल्लाने लगता है, मगर म्रयम अ़लै॰ और उन का बच्चा अ़ीसा उस के कचोके से सुरक्षित रहे। इस रिवायत के बयान करने के बाद अबू हुरैरा रज़ि॰ ने कहा: अगर चाहो तो यह आयत पढ़ लो: "ऐ मेरे मौला! मैं इस बच्चे (अ़ीसा) को और इस की औलाद को शैतान मर्दूद से बचाव के लिये तेरी क्षत्रछाया (सुरक्षा) में देती हूँ" (आले अ़िम्रान-36)

फ़ाइदा:- इस हदीस से मालूम हुआ कि केवल म्रयम और अ़ीसा अ़लै॰ पैदा होने के बाद शैतान की यातना और कचोके से सुरक्षित रहे। लेकिन क़ाज़ी अ़याज़ रह॰ का कहना है कि समस्त सन्देष्टा पैदा होने के बाद शैतान के कचोके से सुरक्षित रहे। (देखें बुख़ारी शरीफ़-3431-अबू हुरैरा)

बाब {अ़ीसा अ़लै॰ का यह कहना: "मैं भी अल्लाह पर ईमान लाया और अपने नफ़्स को झुठलाता हूँ।}

1620:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अ़ीसा अ़लै॰ ने किसी को चोरी करते देखा तो उस से पूछा: क्या तू ने चोरी की है? उस ने कहा: नहीं तो, उस अल्लाह की क़सम! जिस के अतिरिक्त कोई इबादत के लाइक़ नहीं, मैं ने चोरी नहीं की है। उस का उत्तर सुन कर अ़ीसा अ़लै॰ ने कहा: मैं भी अल्लाह पर ईमान लाया और अपने नफ़्स को झुठलाता हूँ।

फ़ाइदा:- क्योंकि हो सकता है मुझ से ही देखने में ग़लती हुयी हो, और तू क़सम खाता है तो हो सकता है तू ही सच्चा हो। एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान के क़सम पर भरोसा करना चाहिये। इस हदीस से मालूम हुआ कि क़ाज़ी, जज और न्यायधीश भी अगर किसी को चोरी करते देख ले तो दन्ड नहीं दे सकता जब तक उस के पास गवाह न हों।

बाबु फ़ज़ाइलिस्सहा-बति
(सहाबा रज़ि॰ के फ़ज़ाइल का बयान)

बाब {अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि की फ़ज़ीलत का बयान।}

1621:— अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने कहा कि अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने मुझ से बयान किया कि हम (सौर के) ग़ार में थे तो अपने सरों के ऊपर मुश्रिकों के पाँव को देख कर कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! अगर उन में से किसी ने भी अपने पैरों की तरफ़ देखा तो हमें अपने पैरों के नीचे देख लेगा। आप ने फ़रमायाः ऐ अबू बक्र! तुम्हारा उस (अल्लाह) के बारे में क्या ख़याल है जो हम दोनों का तीसरा है।

फ़ाइदा:— इस का ज़िक्र सूरः तौबा की आयत न॰ 40 में भी है। यह घटना ग़ारे- सौर की है जो मक्का से चार-पाँच मील की दूरी पर एक पहाड़ी के अन्दर है। आप 12 सिंतबर सन 621 ई को जा कर उस में छुपे थे। आ़मिर बिन फुहैरा जो आ़इशा रज़ि॰ के भाई के गुलाम थे बकरियाँ चराते हुये वहाँ ले जाते और इन दोनों को तीन दिन तक दूध पिलाते रहे। मक्का वाले आप की खोज में निकले और ग़ार के मुँह तक पहुँच गये उस समय अबू बक्र ने घबरा कर कहा तो आप ने फ़रमायाः हम दोनों का तसीरा साथी अल्लाह है इसलिये चिन्ता करने की कोई ज़रुरत नहीं।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अबू बक्र ने मेरा साथ देकर और धन-माल से सहायता कर के मेरे ऊपर सब से अधिक एहसान किया है।}

1622:— अबू सअ़ीद ख़ुदरी रज़ि॰ ने बयान किया कि एक मर्तबा आप मिंबर पर तशरीफ़ लाये और फ़रमायाः एक बन्दे को अल्लाह ने इख़्तियार दिया कि चाहे तो दुनिया की दौलत को पसन्द कर ले, या अल्लाह के पास रहना पसन्द कर ले, लेकिन उस ने अल्लाह के पासरहने को पसन्द किया है। यह सुन कर अबू बक्र रज़ि॰ रोने लगे और बहुत रोए और कहाः मेरे बाप-दादा और दादियाँ आप पर क़ुर्बान हों। अबू बक्र ने कहा कि बन्दे से मुराद स्वँय नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम थे। चूँकि अबू बक्र हम लोगों से अधिक तजरुबा रखते थे (इसलिये समझ गये कि आप के देहान्त का समय निकट है और रोने लगे) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अबू बक्र ने मेरा साथ देकर

और धन-माल से सहायता कर के मेरे ऊपर सब से अधिक एहसान किया है, इसलिये अगर में किसी को (अल्लाह के अ़लावा) अपना दोस्त बनाता तो अबू बक्र को बनाता, लेकिन इस्लामी भाई-चारा ही काफ़ी है (देखो!) मस्जिदे नबवी की तरफ़ खुलने वाली तमाम खिड़कियाँ बन्द कर दी जायें, केवल अबू बक्र के घर की खिड़की को खुली रहने दी जायें।

फ़ाइदाः- बुख़ारी शरीफ़ में "बाब" का शब्द है, यानी अबू बक्र के दर्वाज़े को न बन्द करो" आज भी मस्जिदे नबवी में यह एतिहासिक स्थान सुरक्षित है। (बुख़ारी-3654-अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकट लोगों में सब से अधिक महबूब अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ थे।}

1623:- अबू उस्मान नहदी ने कहा कि अ़म्र बिन अ़ास रज़ि॰ ने मुझे बताया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे "ज़ातुस्सलासिल" के लश्कर के साथ भेजा। फिर जब मैं आप के पास आया तो पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! आप को सब से अधिक किस से मुहब्बत है? आप ने फ़रमायाः आ़इशा से। मैं ने पूछाः फिर किस से है? आप ने फ़रमायाः उन के पिता से। मैं ने पूछाः फिर इन दोनों के बाद किस से? फ़रमायाः उमर से। फिर इस प्रकार और कई सहाबा का ज़िक्र किया।

फ़ाइदाः- 'ज़ातुस्सलासिल' मुल्क शाम के निकट एक पानी के चश्मे का नाम था। यहाँ कुछ क़बीले आबाद थे जो इकट्ठा हो कर मदीना पर आक्रमण की तय्यारी कर रहे थे। आप ने अ़म्र बिन अ़ास की कमान्डरी में 500 सहाबा का लश्कर रवाना किया। यह लड़ाई सन 8 हि॰ में हुयी।

बाब {समस्त भलाइयाँ अबू बक्र के अन्दर एकत्र थीं और वह जन्नती हैं।}

नोटः- इस बारे में हदीस ऊपर 543 में बयान हो चुकी है वहाँ देखने का कष्ट करें।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "मैं भी ईमान लाया और अबू बक्र व उमर भी ईमान लाये।"}

1624:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक व्यक्ति एक बैल के ऊपर सामान लाद कर उसे लिये जा रहा था कि बैल ने उस की तरफ़ देख कर कहाः मैं बोझ ढोने के लिये नहीं पैदा हुआ हूँ, मैं तो खेती के लिये पैदा हुआ हूँ। लोगों ने बैल को देख कर कहाः अल्लाह की पनाह! बैल भी बात-चीत करता है। आप ने फ़रमायाः (क्यों नहीं?) मैं भी इस घटना पर ईमान लाता हूँ और अूब बक्र व उमर भी ईमान लाते हैं (यानी इसे सच मानते हैं)

अबू बक्र रज़ि॰ ने बयान किया कि एक चरवाहा बकरियाँ चरा रहा था इतने में

भेड़िया आया और एक बकरी लेकर भाग गया। उस चरवाहे ने भेड़िया का पीछा कर के बकरी को छुड़ा लिया, इस पर भेड़िया उसे देख कर कहने लगाः भला उस दिन बकरी को कौन बचाएगा जिस दिन मेरे सिवा और कोई चरवाहा न होगा इस पर लोगों ने कहाः सुब्हानल्लाह! (भेड़िया भी बातें करता है) आप ने फ़रमायाः मैं इस घटना पर ईमान लाता हूँ और अबू बक्र व उमर भी ईमान लाये (यानी इसे सच जाना)

फ़ाइदाः— दूसरी रिवायत से स्पष्ट है कि उस समय अबू बक्र व उमर आप के पास मौजूद नहीं थे। इस हदीस से अबू बक्र व उमर का मतर्बा स्पष्ट हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इन पर पूरा विश्वास था, इसीलिये आप ने इन दोनों की तरफ़ से स्वँय ही गवाही दे दी। बैल और भेड़िया के बातें करने की घटनाएँ क़ियामत के निकट अधिक होंगी। (बुख़ारी शरीफ़-3663- अबू हुरैरा रज़ि॰)

बाब {अबू बक्र और उमर रज़ि॰ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के रफ़ीक़ (गहरे साथी) थे।}

1625:— इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि (देहान्त के बाद) उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ के शव को चारपाई पर रख दिया गया तो उन के पास एकत्र होकर लोग दुआयें देने और उन की प्रशंसा करने लगे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं भी उन्हीं लोगों में था। इतने में किसी ने पीछे से मेरे कन्धे को पकड़ लिया तो मैं घबरा गया, और पीछे मुड़ कर देखा तो अ़ली रज़ि॰ थे। वह भी कहने लगेः अल्लाह पाक उमर पर रहम फ़रमाये, फिर (उमर रज़ि॰ के शव को मुख़ातब कर के) कहने लगेः ऐ उमर! तुम्हारे बाद मुझे कोई ऐसा नज़र ही नहीं आता जिस के आमाल ऐसे हों कि वैसे आमाल कर के मुझे अल्लाह से मिलना पसन्द हो (यानी तुम्हारे नेक कार्य सब से अधिक हैं) अल्लाह की क़सम! मुझे पूरा यक़ीन था कि अल्लाह पाक तुम्हें भी तुम्हारे दोनों साथियों (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और अबू बक्र) के साथ कर देगा, क्योंकि मैं अक्सर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़बान मुबारक से सुना करता था कि "मैं आया और अबू बक्र व उमर आये", "मैं अन्दर गया और अबू बक्र व उमर भी अन्दर दाख़िल हुये" "मैं निकला और साथ ही अबू बक्र व उमर भी बाहर निकले" (आदि) इसीलिये मुझे पूरा विश्वास था कि अल्लाह पाक आप को उन दोनों से मिला देगा।

फ़ाइदाः— यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी आयी है (बुख़ारी-3677,3685-अब्ने अ़ब्बास रज़ि॰)

बाब {अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ख़लीफ़ा बनने के हक़दार थे।}

1626:— इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि मैं ने आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से सुना जब उन से पूछा गया कि अगर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ख़लीफ़ा बनाते तो किस को बनाते? उन्होंने कहाः अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ को। फिर पूछा गयाः इन के बाद?

कहा कि उमर रज़ि॰ को। फिर पूछा गया कि इन के बाद? कहा कि उबैदा बिन जराह रज़ि॰ को। फिर इस से आगे और कुछ नहीं बताया।

फ़ाइदा:– इस हदीस से मालूम हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहिं वसल्लम ने अपनी ज़बान से किसी को ख़लीफ़ा नामज़द नहीं किया, बल्कि सहाबा ने अपनी राय से अबू बक्र को चुना। और शिया लोगों का यह कहना कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अ़ली को नामज़द किया था, यह बिलुलि झूठ है और इस के लिये उन के पास कोई दलील नहीं है।

1627:– मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुत्इम अपने पिता के हवाले से रिवायत करते हैं कि एक मर्तबा किसी महिला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के किसी चीज़ के बारे में कुछ पूछा तो आप नेफ़रमाया: फिर दोबारा आ जाना। उस नेक हा: अगर मैं आऊँ और आप को न पाऊँ? (यानी आप देहान्त कर जायें जब मैं क्या करुँ?) आप ने फ़रमाया: अगर मुझे न पाना तो अबू बक्र सिद्दीक़ के पास आ जाना।

1628:– आ़इशा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझ से (अपनी अन्तिम) बीमारी में कहा: अपने पिता और भाई को मेरे पास बुला लाओ ताकि मैं उन्हें लिख कर दे दूँ, मुझे इस बात का डर है कि (ख़िलाफ़त करने की) ख़्वाहिश रखने वाला कहीं अपनी ख़्वाहिश का इज़हार न करने लगे, और कहने वाला कहीं यह न कहने लगे कि मैं ख़िलाफ़त कस सब से अधिक हक़दार हूँ। (याद रखो!) अल्लाह और मुसलमान अबू बक्र के अ़लावा और किसी को ख़लीफ़ा बनाना पसन्द नहीं करते।

फ़ाइदा:– ऊपर की हदीस से अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ की फ़ज़ीलत और आप के बाद उन का ख़लीफ़ा होना स्पष्ट है। चुनान्चे आप के बाद यही ख़लीफ़ा बनाये गये।

बाब {उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. की फ़ज़ीलत का बयान।}

1629:– अबू सओ़द खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं सो रहा था कि सोते में क्या देखा कि लोग मेरे सामने हाज़िर किये जा रहे है, वह सभी क़मीस पहने हुये हैं। उन में से किसी क़मीस सीने तक लंबी है और किसी की सीने से नीचे तक। फिर, जब उमर आये तो वह इतनी लंबी क़मीस पहने हुये थे जो ज़मीन पर घिसट रही है। लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! इस की क्या ताबीर है? आप ने फ़रमाया: दीन (में उन की बुर्जुगी और बड़ाई)

1630:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं सो रहा था कि उसी हालत में मेरे पास दूध का पियाला लाया गया, जिसे मैं ने इतना पिया कि उस की ताज़गी और सैराबी मेरे नाखून से ज़ाहिर होने लगी। फिर जो बचा रहा उसे मैं ने उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ को दे दिया। लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह

के रसूल! इस की क्या ताबीर है? आप ने फ़रमायाः अिल्म (की अधिक जानकारी)

1631:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना आप ने फ़रमायाः एक मतर्बा मैं सो रहा था तो क्या देखा कि पानी का एक डोल कुएँ के पास रखा हुआ है, चुनान्चे मैं ने उस से उतना पानी निकाला जितना अल्लाह पाक का हुक्म हुआ। फिर उस डोल को अबू क़हाफ़ा के पुत्र अबू बक्र ने ले लिया (और वह भी पानी निकालने लगे) उन्होंने भी दो-एक डोल खींचा, लेकिन (अल्लाह उन्हें माफ़ करे) उन के खींचने में कमज़ोरी दिखाई दे रही थी। इतने में वह डोल बड़ा होकर बहुत बड़ा बन गया। उसे उमर ने लेकर खींचना शुरु किया। मैं ने इतनी ताक़त वाला नहीं देखा जो उमर की तरह भरपूर ताक़त से खींच रहा हो। चुनान्चे उन्होंने इतना अधिक पानी निकाला कि लोगों ने अपने ऊँटों को भी पिलाया और अपने ठिकानों पर ले गये।

1632:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं सो रहा था कि सोने की ही हालत में अपने को जन्नत में देखा। वहाँ यह देखा कि एक महिला एक महल के कोने में बैठी वज़ू कर रही है। मैं ने पूछाः यह किस का महल है? लोगों ने बताया कि उमर बिन ख़त्ताब का। यह सुन कर मुझे उन की ग़ैरत का ख़याल आ गया और वापस लौट गया। अबू हुरैरा रज़ि॰ ने बयान किया कि उमर को जब मालूम हुआ तो वह रोने लगे, उस समय लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मज्लिस ही में उपस्थित थे। फिर उमर रज़ि॰ ने कहाः मेरे माता-पिता आप पर कुर्बान, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं आप पर क्यों ग़ैरत करने लगा।

फ़ाइदाः– देखें बुख़ारी शरीफ़-3242, 3680,-अबू हुरैरा रज़ि॰।

1633:– सअद बिन अबू वक़्क़ास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा उमर बिन ख़त्ताब ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अन्दर आने की अनुमति माँगी, उस समय कुरैश की कुछ महिलायें आप के पास बैठी हुयी ऊँचे स्वर में बातें कर रही थीं। जब उमर ने आने की अनुमति माँगी तो वह भाग कर छुपने लगीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें अन्दर आने की अनुमति दीं और आप उस समय हँस रहे थे। यह देख कर उमर ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह पाक आप को हमेशा हँसता हुआ रखे। आप ने फ़रमायाः मुझे इन महिलाओं पर बड़ा आश्चर्य हुआ जो मेरे पास बैठी हुयी बातें कर रही थीं, लेकिन तुम्हारी आवाज़ सुनते ही चंपत हो गयीं। उमर ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! इन को तो आप से अधिक डरना चाहिये, फिर महिलाओं से कहने लगेः ऐ अपनी जान की दुश्मनों! तुम मुझ से डरती हो लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नहीं डरतीं। इस पर महिलाओं ने कहाः तुम ठीक कहते हो, इसीलिये कि तुम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के मुक़ाबले में अधिक सख़्त और गुस्सा करने वाले हो। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है, शैतान अगर तुम्हें राह चलते देखता है तो तुम जिस राह पर चलते हो उसे छोड़ कर दूसरी राह पर चला जाता है।

1634:– आइशा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम से पहली की उम्मतों में "महद्दस" लोग हुआ करते थे, अगर मेरी उम्मत में कोई है तो वह उमर बिन ख़त्ताब हैं। इब्ने वहब ने कहा कि "मुहद्दस" का अर्थ है जिस पर इलहाम हो।

फ़ाइदाः– 'मुहद्दस' उन्हें कहा जाता है जिस कि राय दुरुस्त हो, उस का अनुमान, अन्दाज़ा और आंकलन ठीक उतरे। ऐसा वही होता है जो तजरुबा रखता हो।

1635:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है वह कहते हैं कि (मेरे पिता) उमर ने कहाः तीन बातों में मेरी राय अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ ठहरी। (1) मुक़ामे–इब्राहीम के बारे में (2) महिलाओं के पर्दे के बारे में (3) बद्र के बन्दियों के बारे में।

फ़ाइदाः– उमर रज़ि॰ ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अनुरोध किया कि आप मुक़ामे–इब्राहीम में नमाज़ पढ़िये, चुनान्चे मेरी बात की ताईद में वहयि नाज़िल हुयी और सूरः बक़रः की आयत न॰ 125 नाज़िल हुयी। पर्दे की आयत नाज़िल होने से पहले मेरी ख़ाहिश थी कि महिलाओं के पर्दे से संबन्धित हुक्म आना चाहिये, चुनान्चे पर्दे की आयत नाज़िल हुयी। उमर रज़ि॰ ने बद्र के बन्दियों के बारे में मश्वरा दिया था कि उन्हें क़त्ल कर दिया जाये, हर्जाना न लिया जाये। लेकिन आप ने अबू बक्र के मश्वरा पर अ़मल किया और हर्जाना ले कर छोड़ दिया, इस पर अल्लाह पो ने उमर के मश्वरा के मुताबिक़ सूरः अन्फ़ाल की आयत 67 नाज़िल फ़रमायी।

1636:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि जब मशहूर मुनाफ़िक़ अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि बिन सलूल मर गया तो उस के बेटे अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये और अनुरोध किया कि आप अपना कुर्ता मेरे पिता के कफ़न के लिए दे दीजिये। चुनान्चे आप ने दे दिया। फिर उन्होंने कहाः आप उस की जनाज़ा नमाज़ भी पढ़ दीजिये। इस पर आप जनाज़ा की नमाज़ पढ़ने के लिये तैयार हुये तो उमर रज़ि॰ ने आप का दामन थाम लिया और कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! आप ऐसे व्यक्ति की जनाज़ा की नमाज़ पढ़ने जा रहे हैं जिस के बारे में अल्लाह ने मना किया है। आप ने फ़रमायाः मुझे अल्लाह ने इख़्तियार दिया है कि "तुम उन के लिये दुआ करो या न करो, अगर सत्तर मतर्बा भी दुआ माँगोगे तो भी अल्लाह उस को नहीं बख़्शेगा" (सूरः तौबाः 80) इसलिये सत्तर से भी अधिक मतर्बा दुआ मागूँगा। उमर रज़ि॰ ने कहाः वह तो मुनाफ़िक़ था। लेकिन आप ने उस की जनाज़ा की नमाज़ पढ़ी तब यह आयत नाज़िल

हुयीः "किसी मुनाफ़िक़ के मरने के बाद उस की जनाज़ा की नमाज़ मत पढ़िये और उस की क़ब्र पर भी दुआ के लिये न खड़े हो जीये" (सूरः तौबाः 84)

फ़ाइदाः– यहाँ अल्लाह पाक ने उमर रज़ि॰ की राय की ताईद में आयत नाज़ि फ़रमायी, यही उन की फ़ज़ीलत की दलील है। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि आप जब उस की जनाज़ा की नमाज़ के लिये पहुँचे तो उसे दफ़नाया जा चुका था, चुनान्चे आप ने उस का शव क़ ब्र से निकलवा कर अपने घुटनों पर रखा, फिर उस के मुँह में अपना थूक डाला, फिर अपना कुर्ता पहनाया (बुख़ारी-1350-जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह) इसी रिवायत में यह भी है कि आप ने उसे क़मीस इसलिये पहनाई थी कि आप के चचा अ़ब्बास जब बद्र की लड़ाई में क़ैदी बना कर लाये गये उस समय वह नन्गे थे तो इसी मुनाफ़िक़ ने उन्हें अपना कुर्ता पहनने के लिये दिया था, चुनान्चे आप ने उसे अपना कुर्ता पहना कर बदला चुका दिया। फिर नमाज़ जनाज़ा क्यों पढ़ी? इस का उत्तर यह है कि आप ने उस के बेटे अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ जो कि पक्क-सच्चे मुसलमान थे, उन को प्रसन्न करने के लिये पढ़ी थी। अगर आप न पढ़ते और कुर्ता न देते तो उन्हें तक्लीफ़ पहुँचाती। इसलिये ध्यान रहे कि आप ने पुत्र पर एहसान किया न कि पुत्र के मुनाफ़िक़ पिता पर। यही बात हाफ़िज़ इब्ने रह॰ ने अपनी पुस्तक बुख़ारी की शरह "फ़त्हुल बारी" में लिखी है।

बाब {उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1637:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने घर में लेटे हुये थे और आप की रानें या पिंडलियाँ खुली हुयी थीं। इसी बीच अबू बक्र रज़ि॰ ने अन्दर आने की अनुमति माँगी तो आप ने उसी हालत में इजाज़त दे दीऔर फिर बातें करने लगे। फिर उमर रज़ि॰ ने भी आ कर अन्दर आने की अनुमति माँगी तो उन्हें भी उसी हालत में इजाज़त दे दी और फिर उन से भी बातें करने लगे। इतने में उस्मान रज़ि॰ ने भी इजाज़त माँगी तो आप उठ कर बैठ गये और अपना कपड़ा दुरुस्त कर लिया, फिर उन को आने की इजाज़त दी और उन से भी बातें कीं। आइशा रज़ि॰ ने बयान किया कि जब वह लोग चले गये तो मैं ने पूछाः अबू बक्र के आने पर आप ने अपने कपड़ों का कुछ ख़्याल न किया, फिर उमर भी आये तब भी आप ने कोई ध्यान न दिया, लेकिन जब उस्मान आये तो आप उठ कर बैठ गये और कपड़ा भी दुरुस्त कर लिया। आप ने फ़रमायाः मैं भी उस व्यक्ति से शर्म करता हूँ जिस से फ़रिश्ते शर्म करते हैं।

1638:– अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं अपने घर से वज़ू कर के बाहर निकला और यह इरादा किया कि आज दिन भर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ रहूँगा (और आप का साथ नहीं छोड़ूँगा) फिर मैं सीधा मस्जिदे-नबवी में आया और आप के बारे में पूछा तो लोगों ने बताया कि आप

कहीं बाहर तशरीफ़ ले गये हैं। चुनान्चे मैं भी आप के क़दमों के निशान ढूँढ़ता हुआ निकल पड़ा और लोगों से आप के बारे में पूछता जाता था। चलते-चलते मालूम हुआ कि आप अरीस नामक कुँए के बाग़ में तशरीफ़ ले गये हैं। चुनान्चे मैं भी जा कर उस बाग़ के दर्वाज़े पर जो खजूर की डालियों का बना हुआ था बैठ गया। इस दर्मियान आप ने अपनी आवश्यक्ता पूरी की और वज़ू से फ़ारिग़ हो गये तब मैं अन्दर गया, तो क्या देखा कि आप अरीस नामक कुएँ पर दोनों पिंडलियाँ खोल कर पैर लटकाए बैठे हुए हैं। मैं ने जा कर आप को सलाम किया और वापस आ कर दर्वाज़े के पास बैठ गया और दिल ही दिल में सोचा कि आज आप का चौकीदार बनूँगा।

इतने में अबू बक्र ने आ कर दर्वाज़ा धकेला तो मैं ने पूछाः कौन? उन्होंने कहाः अबू बक्र। मैं ने कहाः ज़रा रुके रहिये। फिर मैं आप के पास गया और कहा कि अबू बक्र आने की इजाज़त माँग रहे हैं। आप ने फ़रमायाः उन्हें आने दो और जन्नत की बशारत (शुभ सूचना) भी दे दो। मैं ने वापस आ कर कहा कि अन्दर आ जाइये और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आप को जन्नत की बशारत भी दी है। फिर यह अन्दर गये और आप के दाहिनी ओर जिस प्रकार आप बैठे हुये थे वह भी पिंडली खोल कर पैर लटका कर बैठ गये। फिर मैं वापस आ कर दोबारा दर्वाज़े पर बैठ गया। मैं जब अपने घर से निकला था तो अपने भाई (आ़मिर) को वुज़ू करता छोड़ कर निकला था, चुनान्चे मैं ने चाहा कि अगर अल्लाह को मन्ज़ूर हुआ तो वह भी यहाँ आ जायेगा। इतने में कोई साहब दर्वाज़ा हिलाने लगे। मैं ने पूछाः कौन? उन्होंने कहाः उमर। मैं ने कहा कि ज़रा सा ठहर जाइये। फिर आप के पास गया और सलाम करने के बाद कहा कि उमर इजाज़त माँग रहे हैं। आप ने फ़रमायाः उन्हें इजाज़त दे दो और उन्होंने भी जन्नत की बशारत दे दो। फिर मैं ने वापस आ कर कहाः अन्दर आ जाइये और आप को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जन्नत की बशारत भी दी है। चुनान्चे वह भी अन्दर आ गये और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बाँयीं तरफ़ मुँडेर पर कुँए में पाँव लटका कर बैठ गये। मैं फिर वापस आ कर दर्वाज़े के पास बैठ गया और सोचने लगा कि अगर अल्लाह पाक का हुक्म होगा तो मेरा भाई आ़मिर भी आ जायेगा। इतने में किसी ने फिर दर्वाज़ा हिलाया तो मैं ने पूछाः कौन? उन्होंने कहाः उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान। मैं ने कहाः ज़रा रुक जाइये। फिर जा कर आप को सूचना दी तो आप ने कहाः उन्हें अन्दर आने दो और जन्नत की बशारत भी दे दो, मगर वह एक आज़माइश में डाले जायेंगे। चुनान्चे मैं ने जा कर कहा कि अन्दर आ जाइये और आप को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जन्नत की बशारत दी है लेकिन एक मुसीबत झेलने के बाद। चुनान्चे वह भी अन्दर आ गये लेकिन देखा तो मुँडेर का एक हिस्सा भर चुका है इसलिये दूसरे किनारे पर आप के सामने जा कर बैठ गये।

हदीस के रावी शुरेक ने कहा कि सअ़ीद बिन मुसय्यिब ने बयान किया कि इस हदीस का मैं ने यह भी अर्थ निकाला कि इन सब की क़ब्रें भी इसी प्रकार होंगी।

फ़ाइदा:— चुनान्चे ऐसा ही हुआ कि अबू बक्र व उमर आप के पास दफ़न हुये और हज़रत उस्मान रज़ि॰ जन्नतुल् बक़ीअ़ के क़ब्रास्तान में। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस्मान रज़ि॰ की शहादत की तरफ़ इशारा फ़रमाया था। चुनान्चे स्वयं अपने को मुसलमान कहने वालों के हाथों शहीद कर दिये गये।

'अरीस' मदीना के एक कुँए का नाम था। उस के अन्दर का बाग़ उसी कुँए के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इसी कुँए में उस्मान रज़ि॰ के हाथ से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अगूँठी गिर गयी थी जो क़भी न मिली। आजकल यह कुँआ खँडर की शक्ल में सूखा हुआ मौजूद है। मौला दावूद रज़ि॰ ने सन 1390 हि॰ में हज्ज किया था उस समय जो देखा था बुख़ारी शरीफ़ की हदीस न॰ 3674 के हाशिया में नक़ल किया है।

बाब {अ़ली बिन अबू तालिब रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1639:— सअ़द बिन अबू वक़्क़ास रज़ि॰ से रिवायत है जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तबूक की लड़ाई के लिये तश्रीफ़ ले गये तो उस समय (मदीना का) गर्वनर अ़ली रज़ि॰ को बनाया। इस पर उन्होंने कहा: ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! आप मुझे महिलाओं और बच्चों के दर्मियान छोड़ कर जा रहे हैं? आप ने फ़रमाया: क्या तुम्हें यह बात पसन्द नहीं कि तुम्हारा दर्जा मेरे पास ऐसा ही है जैसे हारुन अ़लै॰ का मूसा के पास था (फ़र्क़ केवल इतना है) कि मेरे बाद कोई पैंगबर नहीं है।

1640:— सहल बिन सअ़द रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ख़ैबर की लड़ाई के दिन फ़रमाया: आज झन्डा मैं उस व्यक्ति के हाथ में दूगाँ जिस के हाथ से अल्लाह पाक विजय देगा और उस के रसूल से प्रेम करता होगा, और अल्लाह और उस के रसूल उस से प्रेम करते होंगे। यह सुन कर रात भर लोग सोच-विचार करते रहे कि कल देखें झन्डा किस को देते हैं। चुनान्चे सुब्ह को सभी लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये और यह आशा लिये हुये आये कि झन्डा मुझे ही मिलेगा। लेकिन आप ने पूछा: अ़ली कहाँ है? लोगों ने कहा: ऐ अल्लह के सन्देष्टा! उन की आँखें दुःख रही हैं। फिर आप ने उन्हें बुला भेजा और उन की आँखों में अपना थूक लगा दिया और उन के लिये दुआयें कीं, तो वह इस तरह चंगे हो गये गोया उन की आँखों में कोई तक्लीफ़ ही न थी, फिर उन के हाथ में झन्डा थमा दिया। उन्होंने कहा: ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मैं उन से उस समय तक जन्ग जारी रखूगाँ जब तलक वह इस्लाम नहीं ले आयंगे। आप ने फ़रमाया: तुम उन के पास जाओ और उन की ज़मीन पर पहुँच कर उन्हें इस्लाम की तरफ़ बुलाओ, अल्लाह का जो उन पर हक़ है उस से उन्हें अवगत कराओ। अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह पाक तुम्हारी वजह से किसी एक व्यक्ति को हिदायत दे दे तो वह तुम्हारे हक़ में लाल ऊँटों से भी कहीं बेहतर है।

1641:— सहल बिन सअ़द रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मर्वान के खान्दान

का कोई व्यक्ति मदीना का गवर्नर बना तो उस ने सह्ल बिन सअ़द को बुलावा भेजा और उन्हें हुक्म दिया कि अ़ली रज़ि॰ को गालियाँ दें, लेकिन उन्होंने ऐसा करने से इन्कार किया। उस ने कहा कि अगर तू (बजस्ता) गाली देने से इन्कार करता है (तो तू गाली न दे) लेकिन इतना तो कह दे कि अबू तोराब पर अल्लाह की लानत हो। सह्ल बिन सअ़द ने बयान किया कि अ़ली बिन अबू तालिब रज़ि॰ को "अबू तोराब" नाम पसन्द था और इस नाम से उन्हें पुकारने वाले से खुश होते थे। उस ने कहाः उन का नाम अबू तोराब क्यों पड़ा? इस का कारण बयान करो। उन्होंने बताया कि एक मतर्बा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़ातिमा के घर आये और पूछा कि तुम्हारे चचा के पुत्र कहाँ चले गये? उन्होंने कहा कि मुझ से और उन से कुछ खुटपुट हुयी तो वह नाराज़ होकर कहीं चले गये। आप ने किसी से कहाः जा कर देखो अ़ली कहाँ हैं? उन्होंने आ कर बताया कि वह तो मस्जिद में सो रहे हैं। आप उन के पास गये तो क्या देखा कि वह ज़मीन पर लेटे हुये हैं। और उन की चादर उन के ऊपर से अलग हो गयी है और उन के बदन पर मिट्टी लगी हुयी है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस मिट्टी को उन के बदन से पोछते जाते और फ़रमाते जातेः ऐ अबू तोराब! उठो, ऐ अबू तोराब! उठो,

बाब {तल्हा बिन उबैदुल्लाह रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1642:– अबू उस्मान रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि बाज़ जन्गों में जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम लड़ते होते तो उस समय तल्हा और सअ़द के अतिरिक्त आप के साथ कोई नहीं होता था।

फ़ाइदाः– यह उन दस सहाबा में से हैं जिन्हें दुनिया ही में जन्नत की बशारत मिल चुकी है। उहुद की जन्ग में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चेहरे को बचाने में इन के हाथों में 75 घाव आये और उंगलियाँ सुन्न हो गयीं। ज-मल की लड़ाई में 64 वर्ष की आयु में शहीद हुये। उस समय यह आ़इशा रज़ि॰ की तरफ़ से लड़ रहे थे।

बाब {जुबैर बिन अ़ब्बाम रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1643:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि ख़न्दक़ की जन्ग के मौक़ा पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने लोगों को जिहाद की दावत दी तो जुबैर रज़ि॰ ने कहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! मैं हाज़िर हूँ और लड़ने-मरने को तय्यार हूँ। आप ने फिर दावत दी तो इन्होंने फिर कहाः मैं हाज़िर हूँ और लड़ने-मरने को तय्यार हूँ। आप ने तीसरी मतर्बा दावत दी तो फ़िर इन्ही ने कहाः मैं हाज़िर हूँ और जिहाद में मरने-मारने को तय्यार हूँ। यह सुन कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हर संदेष्टा का एक विशेष साथी (हवारी) होता हैं और मेरे हवारी जुबैर हैं।

फ़ाइदाः– जुबैर बिन अ़व्वाम की माता जी का नाम सफ़िय्या था। यह अ़ब्दुल मुत्तलिब की पुत्री और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी हैं (यानी आप के पिता

की सगी बहन हैं) 16 वर्ष की आयु में इस्लाम लाये, 64 वर्ष की आयु में शहीद हुये।

1644:– अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं और अ़म्र बिन अबू सलमा महिलाओं के साथ हस्सान बिन साबित रज़ि॰ के घर में थे (क्योंकि यह अभी कम आयु के थे) तो कभी ऐसा होता कि वह झुक जाते और में देखता और कभी मैं झुक जाता तो वह देखने लग जाते। चुनान्चे मैं ने अपने पिता को उस समय पहचान लिया जब वह हथियार से लैस हो कर बनी कुरैज़ा की तरफ़ बढ़े। बाद में जब मैं ने अपने पिता जी से इस घटना का ज़िक्र किया तो उन्होंने पूछाः बेटा! क्या तुम ने मुझे देखा था? मैं ने कहाः जी हाँ। उन्होंने कहाः अल्लाह की क़सम! उस दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने माँ-बाप को मेरे लिये जमा कर दिया था और फ़रमाया थाः "तुम पर मेरे माता-पिता कुर्बान।"

फ़ाइदाः– नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इन्हें बनी कुरैज़ा की जासूसी के लिये भेजा था, जब लौट कर आये तो मारे ख़ुशी के नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने माँ-बाप को एक साथ ज़िक्र कर के फ़रमायाः "मेरे माता-पिता तुम पर कुर्बान हों।" (बुख़ारी-3720-अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर)

1645:– उर्वा बिन जुबैर ने बयान किया कि आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ ने मुझ से कहाः अल्लाह की क़सम! तुम्हारे दोनों बाप (यानी जुबैर और अबू बक्र) उन लोगों में से थे जिन का ज़िक्र इस आयत में है "जिन लोगों ने अल्लाह और उस के सन्देष्टा की घायल होने के बाद भी आज्ञा की" (आले अ़िम्रान-172)

फ़ाइदाः– अबू बक्र उर्वा के नाना और आ़इशा ख़ाला थीं, क्योंकि अबू बक्र की बड़ी पुत्री अस्मा रज़ि॰ जुबैर को ब्याही थीं। इस हदीस में नाना को भी बाप कहा गया है।

बाब {तल्हा और ज़ुबैर रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1646:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि एक मतर्बा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उहुद के पर्वत पर थे। उस समय आप के साथ अबू बक्र, उमर, अ़ली, उस्मान, तल्हा और जुबैर रज़ि॰ भी उपस्थिति थे, इतने मे पर्वत हिलाने लगा तो आप ने फ़रमायाः थम जा! तेरे ऊपर नबी, सिद्दीक़ और शहीद खड़े हैं।

फ़ाइदाः– क़ैस बिन हाज़िम ने बयान किया कि मैं ने तल्हा का हाथ देखा है जिस से उन्हींने उहुद की जन्ग में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुरक्षा की थी, वह बिल्कुल बेकार हो गया था (बुख़ारी-3724-क़ैस बिन हाज़िम) इस में नबी तो स्वैंय नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम थे, सिद्दीक़ अबू बक्र थे, और बाक़ी सब शहीद हुये।

बाब {सअ़द बिन अबू वक़्क़ास रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1647:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मदीना तशरीफ़ लाने के बाद एक रात आप की नींद उचाट हो गयी तो आप ने फ़रमायाः काश कोई नेक बन्दा पूरी रात मेरी सुरक्षा करता (पहरा देता) आ़इशा रज़ि॰ ने बयान किया कि इतने में मुझे हथियारों की झंकार सुनाई दी, आप ने पूछाः कौन? उत्तर दिया कि मैं सअ़द बिन वक़्क़ास हूँ। आप ने फ़रमायाः कैसे आने की ज़हमत गवारा की? उन्होंने कहाः मेरे दिल में आप की सुरक्षा को लेकर डर महसूस हुआ इसलिये आप की सुरक्षा के लिये हाज़िर हुआ हूँ। यह सुन कर आप ने उन को दुआ़यें दीं और सो गये।

1648:– आ़मिर बिन सअ़द रज़ि॰ से रिवायत है कि मेरे पिता जी सअ़द (बिन अबू वक़्क़ास रज़ि॰) ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उहुद की जन्ग के दिन अपने माता-पिता को मेरे लिये जमा फ़रमाया था (और कहा थाः तीर चलाओ, मेरे माता-पिता तुम पर कुर्बान) उन्होंने बयान किया कि एक मुश्रिक ने बहुत से मुसलमानों को जला दिया था (यानी शहीद कर दिया था) इस पर आप ने फ़रमायाः "ऐ सअ़द! तीर चलाओ, मेरे माता-पिता तुम पर कुर्बान। चुनान्चे मैं ने एक तीर निकाल कर चला दिया जिस में पैकान नहीं था, वह उस की पिसुली में जा घुसा और वह गिर गया और उस की शर्मगाह भी खुल गयी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसे देख कर हसँने लगे यहाँ तक कि मैं ने आप के केचली के दाँतों को देखा।

1649:– मुस्अ़ब बिन सअ़द से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मेरे पिता जी सअ़द के बारे में कुरआ़न में कई आयतें नाज़िल हुयीं हैं। उन्होंने बयान किया कि उन की माता जी (और मेरी दादी) ने क़सम खा ली कि जब तक वह दीन इस्लाम से फिर नहीं जायेंगे, मैं उन से बात न करुँगी, और न हीं खाऊँ-पियूँगी। और समझाने लगीं कि देखो अल्लाह पाक ने तुम्हें माँ-बाप की आज्ञा पालन का आदेश दिया है और मैं तुम्हारी माँ होकर हुक्म देती हूँ (कि दीन इस्लाम को छोड़ दो) इस प्रकार उन्होंने कुछ न खाया-पिया इसलिये बेहोश हो गयीं। यह देख कर उन के एक बेटे अ़म्मारा ने उन्हें पानी पिलाया (तब वह होश में आयीं) तो सअ़द के लिये बद्दुआ़ करने लगीं। इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमायीः "हम ने इन्सान को अपने माता-पिता के साथ नेकी करने का आदेश दिया है, लेकिन अगर वह तुझे मेरे साथ शरीक करने पर दबाव डालें तो उन की बात मत मानना (और शिर्क न करना) और उन के साथ दुनियाँ में दस्तूर के अनुसार अच्छा व्यवहार करते रहना (सूरः अ़न्कबूत-8)

एक मतर्बा आप के पास बहुत अधिक माले-ग़नीमत आया, उस में एक तल्वार भी थी, उसे मैं लेकर आप के पास आया और अनुरोध किया कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! आप इस तल्वार को मुझे इनाम में दे दीजिये, मेरी हालत तो आप जानते ही हैं (कि मैं कितना ग़रीब हूँ) आप ने फ़रमायाः इसे जहाँ से उठाई है वहीं ले जा कर रख दो। चुनान्चे मैं उसे रखने के लिये ले गया तो मेरे मन ने मुझे रखने से रोका। चुनान्चे फिर

दोबारा उसे आप के पास ले आया और अनुरोध किया कि इसे मुझे दे दीजिये। तो आप ने बड़ी सख़्ती से आदेश दिया कि उसे ले जा कर उसी स्थान पर रख दो जहाँ से उठाई है, तब अल्लाह पाक ने यह आयत नाज़िल फ़रमायीः "लोग आप से माले-ग़नीमत के बारे में पूछते हैं.......(सूरःअन्फ़ाल-1)

सअ़द रज़ि॰ ने बयान किया कि एक मर्तबा मैं बीमार पड़ा तो आप को बुलवा भेजा, चुनान्चे आप तशरीफ़ लाये तो मैं ने अनुरोध किया कि मैं अपना तमाम माल जिसे चाहूँ बाँट दूँ, आप इस की मुझे अनुमति दे दें। आप ने इस बात से इन्कार किया तो मैं ने कहाः अच्छा आधा बाँट दूँ। इस पर भी आप राज़ी न हुये तो मैं ने कहाः एक तिहाई बाँट दूँ। यह सुन कर आप चुप रहे। चुनान्चे यही नियम बन गया कि अपने कुल माल का एक तिहाई ख़ैरात कर देना दुरुस्त है।

सअ़द रज़ि॰ ने बयान किया कि एक मर्तबा मैं अन्सार और मुहाजिर लोगों में से कुछ एक के पास गया तो उन्होंने खाने-पीने और शराब पीने की दावत दी उस समय शराब हराम नहीं हुयी थी। चुनान्चे मैं उन लोगों के साथ एक बाग़ में गया, वहाँ ऊँट के सर का माँस भूना हुआ रखा था और पास ही शराब से भरा एक मटका भी था। मैं ने उन के साथ माँस खाया और शराब पी। फिर इसी बीच अन्सार और मुहाजिर का ज़िक्र चल पड़ा तो मैं ने कहा कि मुहाजिर लोग अन्सार से बेहतर हैं। यह सुन कर एक व्यक्ति ने जबड़े की हड्डी उठाई और मुझे दे मारा और मेरी नाक घायल हो गयी। जब मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस घटना का ज़िक्र किया तब यह आयत नाज़िल हुयीः "शराब, जुवा, थान और पाँसे के तीर यह सब नापाक और शैतान के कार्य है......(सूरः माइदा-90)

फ़ाइदाः- यह सहाबी अन्तिम हज्ज के मौक़ा पर मक्का ही में बीमार हो गये और जीवन से निराश हो गये और आप से अनुमति माँगी। बुख़ारी की रिवायत में है कि आप ने एक तिहाई ख़ैरात करने की अनुमति तो दे दी, लेकिन यह भी फ़रमाया कि यह भी बहुत है। और अगर तुम अपने पीछे अपने वारिसों को मालदार छोड़ो तो यह इस से कहीं बेहतर है कि उन्हें मुहताज छोड़ो और वह लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें। (बुख़ारी-2742-सअ़द बिन वक़्क़ास) चुनान्चे जमहूर उलमा का कहना है कि अगर उस के कोई वारिस न हो फिर भी एक तिहाई ही के ख़ैरात की वसिय्यत करेगा और बाक़ी बैतुल माल में जमा हो जायेगा।

तल्वार रखने वाली हदीस ऊपर हदीस न॰ 1138 के तहत बयान हो चुकी है, वहाँ का फ़ाइदा देखें।

1650:- सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम छः लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास बैठे हुये थे कि मुश्रिकों ने आ कर कहाः इन्हें अपने पास से दूर कर दीजिये। उन्होंने कहा कि उन में से मैं और इब्ने मस्ऊद थे,

एक व्यक्ति क़बीला बनी हुज़ैल का था, बिलाल रज़ि॰ थे, और दो और थे जिन का नाम मैं नहीं जानता। इस मौक़ा पर आप के दिल में अल्लाह ने जो चाहा वही ख़याल आया और आप ने सोचा, तब अल्लाह पाक ने यह आयत नाज़िल फ़रमायी: "ऐसे लोगों कोअपने पास से मत धुतकारो जो सुब्ह-शाम अल्लाह को याद करते हैं..... (सूर: अन्आम-52)

फ़ाइदा:- सअद बिन वक़्क़ास रज़ि॰ बड़े निडर, बेख़ौफ़ और बहादुर सहाबी थे। आप भी उन दस सहाबा में हैं जिन्हें दुनिया ही में जन्नत की बशारत दी गयी है। 17 वर्ष की आयु में इस्लाम लाये। उस्मान रज़ि॰ के ख़िलाफ़त के शासन काल में कूफ़ा के गवर्नर थे। सन 55 हि॰ में 55 वर्ष की आयु में देहान्त किया और मदीना में दफ़न किये गये।

बाब {अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1651:- हुज़ैफ़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नजरान के लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये और कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल! हमारे पास किसी अमानत दार व्यक्ति को (गर्वनर बना कर) भेजिये। आप ने फ़रमाया: मैं तुम्हारे पास अमानतदार व्यक्ति को ही भेजूँगा, जो वास्तव में अमानतदार होगा, जो वास्तव में अमानतदार होगा। हुज़ैफ़ा रज़ि॰ ने बयान किया कि लोग सोचने लगे कि आप किस को भेजते हैं, फिर आप ने उबैदा बिन जर्राह रज़ि॰ को भेजा।

फ़ाइदा:- आप कुरैशी सहाबी हैं, उन दस नेक लोगों में से एक हैं जिन्हें दुनिया ही में जन्नत की बशारत दी गयी है। हबश की तरफ़ दो मर्तबा हिजरत की। उहुद की जन्ग में जो ख़ोद की दो कड़ियाँ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मुँह में घुस गयी थी, इन्होंने ही अपने दाँतों से खींच कर निकाला था। अ़मवास की बीमारी में सन 18 हि॰ में 58 वर्ष की आयु में ताऊन की बीमारी में शहीद हुये, जनाज़ा मआ़ज़ बिन जबल ने पढ़ाई। (बुख़ारी-3744, 3745-अनस बिन मालिक, हुज़ैफ़ा रज़ि॰)

बाब {हसन व हुसैन रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1652:- सलमा बिन अक्वा रज़ि॰ से रिवाय है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हसन व हुसैन "शहबा" नामक खच्चर पर सवार थे उस की लगाम पकड़ कर मैं ले चला और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुजरे तक पहुँचाया।

1653:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ दिन के किसी समय निकला। उस समय न तो आप मुझ से बात कर रहे थे और न ही मैं आप से कर रहा था (यानी दोनों ही ख़ामोशी से चले जा रहे थे) इस प्रकार चलते-चलते क़बीला बनी क़यनुक़ाअ़ के बाज़ार तक गये। वहाँ से लौट कर सीधे फ़ातिमा रज़ि॰ के घर तशरीफ़ लाये और पूछने लगे: "बच्चा कहाँ है? बच्चा कहाँ है? यानी आप हसन रज़ि॰ के बारे में पूछ रहे थे। मैं ने सोचा कि हो सकता

है उन की माँ ने नहलाने धुलाने और फूलों का हार (आदि) पहनाने के नाते उन्हें बाहर निकलने से रोक रखा हो। लेकिन थोड़ी देर बाद वह दोड़ते हुये आये और दोनों एक-दूसरे के गले मिल गये। फिर आप ने फ़रमायाः ऐ अल्लाह! मैं इस बच्चे से मुहब्बत करता हूँ तो भी इस से मुहब्बत कर और जो इस से मुहब्बत करे उस से भी मुहब्बत कर।

फ़ाइदाः- हसन रज़ि॰ रमज़ान 3 हि॰ मैं पैदा हुये और सन 59 हि॰ में देहान्त किया। हुसैन रज़ि॰ शाबान 4 हि॰ में पैदा हुये और सन 61 हि॰ में शहीद हुये। (बुख़ारी-3747, 3749-उसामा बिन ज़ैद, बरा बिन आ़ज़िब)

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पुत्री फ़ातिमा रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1654:- मिस्वर बिन मख़रमा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अ़ली बिन अबू तालिब रज़ि॰ ने अबू जेहल की पुत्री से निकाह का सन्देश भेजा। उस समय नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पुत्री फ़ातिमा इन के निकाह में (पहले ही से) थीं। जब फ़ातिमा को इस बात की ख़बर लगी तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर कहा कि आप के बारे में लोगों का कहना है कि अपनी बेटियों को लेकर गुस्सा नहीं करते हैं और यह अ़ली हैं जो अबू जेहल की बेटी से निकाह करना चाहते हैं। मिस्वर ने बयान किया कि मैं ने अपने कानों से सुना आप सीधे मिंबर पर तशरीफ़ ले गये और हम्द-सना के बाद फ़रमायाः अम्मा बाद! मैं ने अपनी बेटी (ज़ैनब) का निकाह अबुल आ़स बिन रबीअ़ से किया तो उन्होंने जो कुछ मुझ से कहा वह सच कर दिखाया। और मेरी बेटी फ़ातिमा मेरे गोश्त का एक टुकड़ा है और मुझे यह बात हर्गिज़ गवारा नहीं कि लोग उसे आज़माइश में डालें। अल्लाह की क़सम! अल्लाह के नबी की बेटी और अल्लाह के दुश्मन की बेटी दोनों एक ही शोहर के पास कभी भी जमा नहीं हो सकतीं। मिस्वर ने बयान किया कि इस के बाद अ़ली रज़ि॰ ने निकाह का इरादा छोड़ दिया।

फ़ाइदाः- अबू लहब की बेटी जिस से अ़ली ने निकाह का इरादा किया था उन का नाम "दुर्रा" था, यह और इन के दो भाई उक़्बा और मोऐक़िब फ़त्ह मक्का के मौक़ा पर ईमान लाये, और दो भाई कुफ़्र ही की हालत में मरे। दुर्रा का निकाह हारिस बिन नौफ़ल से हुआ, उन से तीन बेटे पैदा हुये। उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से हदीस भी रिवायत की है। एक हदीस यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "कोई आदमी बुरा काम कर के मर गया तो उस के बदले में ज़िन्दा को दन्ड नहीं दिया जायेगा" (देखें-रहमतुल्लिल् आ़लमीन) अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम रह॰ लिखते हैं कि अगर कोई महिला दूसरा निकाह न करने की शर्त लगा कर किसी मर्द से निकाह करे तो इस शर्त पर मर्द को अ़मल करना होगा, यह शर्त लगाना जाइज़ है (ज़ादुल् मआ़द) अल्लाह बेहतर जाने। अ़ली का अबू लहब की बेटी से निकाह बिला शुब्हा जाइज़ था,

क्योंकि आप ने स्वँय फ़रमा दिया कि जिस चीज़ को अल्लाह पाक ने हलाल कर दिया है उसे मैं हराम नहीं ठहराता लेकिन चूँकि इस से मेरी बेटी को तक्लीफ़ पहुँचेगी, वह मांसिक रोगी हो जायेगी और ग़ैरत में आ कर ग़लत क़दम भी उठा सकेगी, इसलिये अ़ली व फ़ातिमा के हित में मुहब्बत की बुनियाद पर आप ने सख़्ती से मना फ़रमाया था। चूँकि दोनों ही अपने थे इसलिये मना करने में कठोर रुख़ अपनाया।

अ़ास बिन रबीअ़ बद्र की लड़ाई में बन्दी बनाए गये थे। इन्होंने कहा कि अगर मुझे छोड़ दिया जाये तो मैं आप की बेटी ज़ैनब को ला कर मदीना छोड़ जाऊँगा। आप ने सहाबा से उन की रिहाई की इजाज़त माँगी और उन्हें आज़ाद कर दिया। उन्होंने भी वादा निभाया और ज़ैनब को अपने भाई के साथ मदीना नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हवाले कर दिया। इसी की तरफ़ हदीस में इशारा है।

1655:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की समस्त पत्नियाँ आप के पास उपस्थित थीं, कोई ऐसी न थी जो मौजूद न हो (सभी आप की बीमारी में इकट्ठा थीं) इतने में फ़ातिमा रज़ि॰ भी आ गयीं। उन की चाल बिल्कुल नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चाल की सी थी। आप ने उन्हें देख कर उन का स्वागत किया और फ़रमायाः आओ मेरी बेटी, फिर उन्हें अपने दायें या बाँयें तरफ़ बैठा लिया और उन के कान में धीरे से कुछ कहा तो वह रोने लगीं। जब आप ने उन्हें रोते देखा तो दोबारा उन के कान में कुछ फ़रमाया तो वह हँसने लगीं। आइशा रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने फ़ातिमा रज़ि॰ से पूछा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तुम से कोई राज़ की बात कही तो तुम रोने लगीं। फिर जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उठ कर खड़े हुये तो मैं ने फ़ातिमा से पूछाः नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तुम से क्या कहा था? उन्होंने कहाः मैं इस राज़ को नहीं बताऊँगी। फिर जब आप का देहान्त हो गया तो मैं ने फ़ातिमा को क़सम दी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जो राज़ की बात तुम्हें बताई थी वह मुझे बता दो। फ़ातिम ने कहाः अब मैं उसे बता सकती हूँ। पहली मर्तबा मेरे कान में आप ने यह कहा था कि जिब्रील अ़लै॰ हर वर्ष आ कर एक या दो बार क़ुरआन पढ़ कर सुनते और सुनाते थे, लेकिन इस वर्ष उन्होंने दो मर्तबा पढ़ कर सुना और सुनाया, इसलिये मेरा ख़याल है कि मेरे दुनियाँ से जाने का समय निकट आ गया है, इसलिये अल्लाह पाक से डरती रहना और सब्र से काम लेना, मैं तुम्हारा (जन्नत में) इन्तिज़ार करूँगा। यह सुन कर मैं रोने लगी जैसा कि तुम ने देखा था। जब आप ने मुझे रोते देखा तो दोबारा मेरे कान में कहते हुये फ़रमायाः क्या तुम्हें इस बात से ख़ुशी नहीं कि तुम मोमिन महिलाओं या इस उम्मत की महिलाओं की सर्दार हो। चुनान्चे यह सुन कर मैं हँस पड़ी, जैसा कि आप ने देखा था।

फ़ाइदाः– ऊपर हदीस मैं है कि जिब्रील हर वर्ष दो बार आते थे, यह रावी का शक

है, सहीह यही है कि हर वर्ष एक बार आ कर कुरआन सुनते और सुनाते थे। बुख़ारी की रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दूसरी बार कान में यह कहा था कि तुम सब से पहले मुझ से आ कर मिलोगी। तो हो सकता है आप ने दोनों बातें कही हों और फ़ातिमा ने आ़इशा को एक ही बात बताई हो, फिर किसी और मौक़े पर दूसरी बात भी बता दी हो (बुख़ारी-3715, 3716-आइशा सिद्दीक़ा) इन की माता जी का नाम ख़दीजा है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को जिस वर्ष नबुव्वत मिली उसी वर्ष पैदा हुयीं। सन 21 हि॰ में अ़ली से निकाह हुआ। 28 वर्ष की आयु में 11 रमज़ान सन 11 हि॰ को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के देहान्त के छः माह पश्चात् देहान्त किया। अ़ली रज़ि॰ ने जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाई। हसन, हुसैन उम्मे कुल्सूम और ज़ैनब यह चारों लड़के-लड़कियाँ पैदा हुये। उम्मे कुल्सूम का पहला निकाह उमर फ़ारुक़ से हुआ। ज़ैनब का निकाह अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र तय्यार से हुआ।

बाब {अहले-बैत की फ़ज़ीलत का बयान।}

1656:— आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सुब्ह सवेरे ही काले बालों वाली चादर जिस पर कजावे या हाँडियों के चित्र बने हुये थे ओढ़ कर निकले, कि इसी बीच हसन रज़ि॰ (आप के नाती) आ गये आप ने उन्हें चादर के अन्दर कर लिया, फिर हुसैन भी आ गये तो उन्हें भी अन्दर छुपा लिया, फिर फ़ातिमा भी आ गयीं तो उन्हें भी उसी चादर के अन्दर कर लिया, इतने में अ़ली भी आ गये उन्हें भी अन्दर कर लिया, इस के बाद फ़रमायाः "ऐ मेरे अहले बैत! (ऐ घर वालों) अल्लाह पाक चाहता है कि तुम से पानाकी को दूर कर दे और तुम्हें (हर प्रकार की ज़ाहिरी और बातिनी नापाकियों से) अच्छी तरह पाक कर दे।" (सूरः अहज़ाब-33)

1657:— यज़ीद बिन हय्यान से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं, हुसैन बिन सुब्रा और उमर बिन मुस्लिम तीनों ज़ैद बिन अर्क़म से मिलने के लिये गये, जब हम लोग बैठ गये तो हुसैन बोलेः ऐ ज़ैद! आप ने तो बड़ी नेकियाँ कमा लीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा, उन से हदीसें सुनीं, उन के साथ ज़िहाद किया, उन के साथ नमाज़ें अदा कीं, ख़ूब-ख़ूब नेकियाँ कमायीं, हमें भी एक-आध वह हदीसें सुनाइये जिन्हें आप ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुनी हों। यह सुन कर ज़ैद रज़ि॰ ने कहाः ऐ मेरे भाई के बेटे! अब तो मैं बूढ़ा हो गया हूँ, जिन हदीसों को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुन कर याद किया था उन्हें भूल गया, इसलिये मुझे जो याद रह गयी वही बयान करुँगा, उसे आप कुबूल करें, और जो मैं बयान न करुँ उन के बारे में मुझे ज़हमत न दें। इस के बाद उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का और मदीना के दर्मियान स्थिति "खुम्म" नामक एक पानी के चश्मे (सोते) के पास खुत्बा देने के लिये खड़े हुये। पहले तो आप ने अल्लाह की हम्द-सना

बयान की, फिर लोगों को नसीहत की, इस के बाद फ़रमायाः ऐ लोगो! मैं भी मनुष्य ही हूँ, मेरे पास भी मेरे रब का भेजा हुआ (मौत का फ़रिश्ता) आयेगा और मैं भी उसे स्वीकार करूँगा। इसलिये मैं तुम्हारे दर्मियान दो अहम चीज़ें छोड़ कर जा रहा हूँ। प्रथम अल्लाह की किताब है जिस मैं तुम्हारे लिये हिदायत और रोशनी है, इसलिये अल्लाह की इस किताब को मज़बूती से पकड़े और थामे रहना। इस प्रकार आप ने अल्लाह की किताब की तरफ़ लोगों को रग़बत दिलायी। फिर फ़रमायाः दूसरी चीज़ मेरे अहले बैत (घर वाले) हैं। मैं तुम्हें अल्लाह वास्ते अपने अहले बैत की तरफ़ तवज्जोह दिलाता हूँ। आप ने तीन मर्तबा इस वाक्य को फ़रमाया।

इस पर हुसैन ने उन से पूछाः ऐ ज़ैद! नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अहले बैत से कौन-कौन लोग मुराद है? क्या नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नियाँ इस में नहीं शामिल हैं? उन्होंने कहाः वह भी शामिल हैं, लेकिन (अस्ल) अहले बैत वह हैं जिन पर ज़कात हराम है। इस पर हुसैन ने पूछाः वह कौन हैं? ज़ैद ने कहाः अ़ली, अ़क़ील, जाफ़र और अ़ब्बास रज़ि॰ की औलाद हैं। हुसनै ने पूछाः क्या इन सब पर सदक़ा हराम है? ज़ैद रज़ि॰ ने कहाः हाँ।

फ़ाइदाः- अ़क़ील, जाफ़र और अ़ली यह तीनों भाई हैं। अ़क़ील, जाफ़र से दस वर्ष बड़े थे। इसी प्रकार जाफ़र, अ़ली से दस वर्ष बड़े थे। एक और भाई तालिब नाम के थे जो इस्लाम नहीं लाये थे। इन सब के बेटे, पोते, पड़पोते नीचे तक सब के लिये सदक़ा हराम है। मुस्लिम ही की एक दूसरी रिवायत में जिस के रावी यज़ीद बिन हय्यान ही हैं, उस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नियों को अहले-बैत में नहीं शामिल किया है। इमाम नौवी मुस्लिम की शरह में लिखते हैं कि मेरे निकट अहले-बैत बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब हैं।

बहरहाल अहले बैत दो प्रकार के हैं। प्रथम जिन का ज़िक्र सूरः अहज़ाब की आयत 33 में है, इस में पत्नियाँ भी शामिल हैं। दूसरे वह अहले-बैत जिन पर सदक़ा हराम है, इस में पत्नियाँ नहीं शामिल हैं। (नौवी)

बाब {आइशा रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1658:- आइशा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं ने तुम्हें तीन रात सपने में इस प्रकार देखा कि एक फ़रिश्ता तुम्हें रेशम के कपड़े में लपेट कर लाया और कहने लगाः यह आप की पत्नी हैं। जब मैं ने उस का चेहरा खोला तो वह तुम निकलीं। इस पर मैं ने कहा कि अगर यह सपना अल्लाह की तरफ़ से है तो ऐसाही होगा। (यह मेरी पत्नी बनेगी)

फ़ाइदाः- यह नहीं मालूम हो सका कि यह नबुव्वत से पहले का सपना है या बाद का।

1659:– आइशा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ आइशा! जब तुम मुझ से खुश रहती हो और जब तुम नाराज़ रहती हो, इस बात को मैं भाँप लेता हूँ। मैं ने पूछाः आप कैसे जान लेते हैं? आप ने फ़रमायाः जब तुम खुशी में रहती हो तो कहती हो "नहीं, मुहम्मद के रब की क़सम।" और जब नाराज़ रहती हो तो कहती हो "नहीं, इब्राहीम के रब की क़सम।" इस पर मैं ने कहाः अल्लाह की क़सम। ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! (जब मैं आप से नाराज़ होती हूँ तो) केवल आप का नाम छोड़ देती हूँ। (दिल से मोहब्बत करती हूँ)

फ़ाइदाः– महिलाओं की एक आदत होती है कि वह दिल से तो पति को चाहेंगी, लेकिन ज़ाहिर में मुँह फुलाये रहेंगी, यही कुछ हाल आइशा रज़ि॰ का भी था। जिस प्रकार खुल्लम-खुल्ला अपनी नाराज़गी का इज़हार आजकल की पत्नियाँ करती हैं, वैसा उन्होंने कभी सोचा तक न होगा।

1660:– आइशा सिद्दिक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास (ससुराल में भी) गुड़ियों से खेला करती थी। उन्होंने बयान किया कि मेरी सखियाँ (मेरे पास खेलने के लिये) आतीं तो अल्लाह के रसूल को देख कर छुप जातीं, तो आप उन्हें मेरे पास भेज देते।

फ़ाइदाः– गुड़ियों का हुक्म चित्र और स्टेचू सा नहीं है, वर्ना नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस के बनाने और खेलने से निःसंदेह मना कर देते।

1661:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि लोग आप के पास उपहार (और खाने-पीने का) तोहफ़ा भेजने के लिये मेरी बारी के दिन का इन्तिज़ार करते, और जिस दिन हमारे यहाँ आप की बारी होती उस दिन भेजते ताकि आप खुश हों।

1662:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मतर्बा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की समस्त पत्नियों ने मिल का फ़ातिमा रज़ि॰ को आप क़े पास भेजा। उन्होंने अन्दर आने की अनुमति माँगी, उस समय आप मेरे साथ मेरी चादर में लेटे हुये थे, चुनान्चे आप ने अनुमति दे दी। उन्होंने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! आप की पत्नियों ने मिल कर मुझे आप के पास भेजा है। वह चाहती हैं कि आप अबू क़हाफ़ा की बेटी (आइशा) और दूसरी बीवियों के दर्मियान न्याय से काम लें। आइशा ने बयान किया कि मैं चुपचाप सुन रही थी। आप ने फ़रमायाः ऐ बेटी! क्या तुम वह नहीं चाहती हो जिसे में चाहूँ? उन्होंने कहाः मैं वही चाहूँगी जो आप चाहेंगे। आप ने फ़रमायाः तो बस आइशा से प्रेम करो। यह सुन कर फ़ातिमा आप की बीवियों के पास गयीं और अपने सवाल और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के जवाब को सुना दिया। यह सुन कर वह बोलींः तुम हमारी बात को आप के सामने भली भाँति न रख सकीं, इसलिये पुनः जाओ और कहो कि आप की पत्नियाँ अबू क़हाफ़ा की बेटी (आइशा) की बाबत

इन्साफ़ चाहती हैं। इस पर फ़ातिमा ने कहाः अल्लाह की क़सम! अब तो मैं आइशा के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से किसी प्रकार की बात न करुँगी।

आइशा ने बयान किया कि अन्त में तमाम बीवियों ने मिल कर ज़ैनब बिन्त जहश को आप के पास भेजा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नज़दीक मेरे मुक़ाबले की अगर कोई थीं तो वह ज़ैनब थीं। मैं ने उन से अधिक दीनदार, अल्लाह से डरने वाली, हक़ बात कहने वाली, नाता जोड़ने वाली, सदक़ा-ख़ैरात करने वाली किसी महिला को नहीं पाया। बस वह केवल बहुत अधिक गर्म स्वभाव की थीं, फिर भी जल्द ही ठन्डी पड़ जातीं और घुल-मिल जातीं और अफ़सोस भी करने लगतीं। उन्होंने आ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अन्दर आने की अनुमति माँगी तो आप ने दे दी, हालाँकि उस समय भी आप मेरी चादर में मेरे साथ थे जिस समय फ़ातिमा आयीं थीं। उन्होंने अन्दर आ कर कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! आप की बीवियाँ अबू क़हाफ़ा की बेटी (आइशा) के बारे में इन्साफ़ चाहती हैं, इतना कह कर वह मेरे पास आ कर मुझ पर बरसने लगीं। मेरा हाल यह था कि मैं आप का मुँह ताक रही थी कि आप मुझे जवाब देने की अनुमति देते हैं या नहीं? जब मुझे अन्दाज़ा हो गया कि अगर मैं उन्हें जवाब दूँ तो आप बुरा नहीं मानेंगे, तो फिर मैं भी उन पर बरस पड़ी और उन की बोलती बन्द कर दी। यह देख कर आप हँसने लगे और फ़रमायाः (यह किसी ऐरे-ग़ैरे की बिटिया नहीं है) यह अबू बक्र की बिटिया हैं।

1663:- आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (अपनी अन्तिम बीमारी में) पता लगाते और कहतेः मेरी बारी आज किस के घर है, कल किस पत्नी के घर होगी, आइशा की बारी में देरी होने की वजह से। फिर जब मेरे घर आप की बारी आयी तो अल्लाह पाक ने आप को (दुनिया) से बुला लिया उस समय आप का सर मेरे सीना और हसुँली से टिका हुआ था।

1664:- आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपने देहान्त से पूर्व फ़रमाते सुना, उस समय आप मेरे सीना से टेक लगाए हुये थे। मैं ने जब कान लगा कर सुना तो आप फ़रमा रहे थेः **अल्लाहुम्मग़् फ़िर् ली वर्-हम्नी व-अल्हिक़्नी बिरफ़ीक़ि** (ऐ मेरे मौला! मुझे माफ़ कर दे, मुझ पर रहम फ़रमा दे और मुझे मेरे साथियों (नबिय्यों, सिद्दीकों और नेक लोगों) से मिला दे।

फ़ाइदाः- आप ने अपने देहान्त से पूर्व जो अन्तिम वाक्य ज़बान से अदा किया वह यही था। इस के बाद हाथ लटक गया और पुतली ऊपर उठ गयी। 12 रबीउल अव्वल सन 11 हि॰, सोमवार के दिन, दिन चढ़ें, अ़रबी वर्ष के हिसाब से 63 वर्ष, चार दिन की आयु में अल्लाह से जा मिले। इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊन।

1665:- आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी तन्दुरुस्ती की हालत में फ़रमाते थे कि तमाम नबिय्यों ने देहान्त से पूर्व अपने जन्नत के ठिकाने को देख लिया है, और उन्हें इख़्तियार मिला है (कि चाहें तो दुनिया ही में रहें, या आख़िरत को पसन्द करें) आ़इशा ने बयान किया कि जब आप के देहान्त का समय निकट आ गया उस समय आप का सर मेरी रान पर था। आप थोड़े समय तक अचेत रहे, फिर जब होश में आये तो अपनी आँखों से छत की तरफ़ टकटकी बाँध कर देखने लगे और फ़रमायाः "ऐ अल्लाह! मुझे मेरे बुलन्द मर्तबे वाले साथियों से मिला दे (इ-लर्रफ़ीक़िल् आला)

आ़इशा रज़ि॰ ने बयान किया कि अब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि आप ने हमें (यानी दुनिया को) नहीं चुना है। फिर मुझे यह हदीस भी याद आ गयी जो आप ने तन्दुरुस्ती की हालत में बयान फ़रमायी थी कि "हर नबी ने देहान्त से पूर्व जन्त का अपना घर देख लिया है और उस को दुनिया में रहने या न रहने का इख़्तियार दिया गया है। उन्होंने बयान किया कि आप ने अन्तिम वाक्य जो अपनी जुबान से फ़रमाया वह यही था

इ-लर्रफ़ीक़िल् आला (ऐ मेरे मौला! मुझे मेरे नेक साथियों से मिला दे)

1666:— आ़इशा रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब यात्रा के लिये निकलते तो अपनी बीवियों के दर्मियान गोटी डालते (और जिस का नाम निकलता उसे साथ ले जाते) एक बार गोटी डाली तो मेरा और हफ़्सा का नाम निकला। चुनान्चे हम दोनों आप के साथ रवाना हुयीं। आप का नियम था कि सफ़र में आ़इशा के साथ उन से बातें करते हुये चलते।

एक मर्तबा ऐसा हुआ कि हफ़्सा ने आ़इशा सेक हाः आज रात तुम मेरे ऊँट पर सवार हो जाओ और मैं तुम्हारे ऊँट पर। फिर तुम देखना कि क्या होता है और मैं भी देखूँगी। आ़इशा ने कहाः ठीक है (सवारी को बदल लेते हैं) फिर वह हफ़्सा के ऊँट पर सवार हो गयीं और हफ़्सा आ़इशा के ऊट पर। रात को जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आ़इशा वाले ऊँट के पास आये तो क्या देखा कि उस पर हफ़्सा सवार हैं। फिर आप ने उन्हें सलाम किया और उन्हीं के साथ अन्तिम पड़ाव तक सफ़र किया। आ़इशा ने बयान किया कि उस रात मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपने साथ ने पाया तो मुझे इतना अफ़सोस हुआ और उतर कर अपेन पाँव को इज़ख़िर घास में डालने लगी और कहने लगीः ऐ अल्लाह! कोई साँप-बिच्छू भेज दे जो मुझे डस ले, और मैं तेरे रसूल के बारे में कुछ नहीं कह सकती (ग़लती तो मेरी थी कि मैं ने सवारी बदली)

1667:— अबू मूसा अश्-अ़री रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः पुरुषों में तो बहुत से कामिल लोग हुये हैं, लेकिन महिलाओं में केवल

अ़िम्रान की बेटी म्रयम और फ़िरऔ़न की पत्नी आसिया कामिल हुयी हैं। और आ़इशा को दूसरी महिलाओं पर वैसी ही फ़ज़ीलत और मर्तबा हासिल है जैसे सरीद को दूसरे खानों पर हासिल हैं।

फ़ाइदाः– 'सरीद' मलीदा को कहते हैं। जिस में कई प्रकार की चीज़ डाल कर एक में मिलाया जाता है जो खाने में बड़ा अच्छा लगता है। अ़रब में यह सब से उत्तम खाना माना जाता था।

1668:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ आ़इशा! यह जिब्रील हैं जो तुम्हें सलाम कहते हैं। मैं ने कहाः "व-अ़लैहिस्सलामु व-रह्-मतुल्लाहि" आ़इशा रज़ि॰ ने बयान किया कि आप जिस को देखते थे मैं नहीं देखती थी।

फ़ाइदाः– जिब्रील, आ़इशा के घर ही में थे और उन्हें सलाम कर रहे थे और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बातें कर रहे थे, लेकिन आ़इशा को नहीं दिखाई दे रहे थे।

बाब {उम्मे ज़रा रज़ि॰ की घटना का बयान।}

1669:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि ग्यारह महिलाएँ एक स्थान पर एकत्र हुयीं और परस्पर तै किया कि हम लोग अपने-अपने पतियों के घरेलू हालात बयान करेंगी और कोई भी बात नहीं छुपायेंगी। चुनान्चे पहली महिला ने बतायाः मेरे पति की मिसाल दुबले-पतले ऊँट के माँस के समान है जो पहाड़ की चोटी पर रखा हुआ है, वहाँ तक पहुँचने के लिये सीधा रास्ता भी नहीं है कि कोई आसानी से चढ़ कर उसे ले आये। और फिर वह माँस भी इतना अच्छा नहीं है कि उस की लालच में कोई उस पर्वत पर चढ़ने का कष्ट उठाये (1)

दूसरी महिला (जिस का नाम अ़म्रा बिन्त अ़म्र तमीमी था) उस ने अपने पति का हाल बयान करना शुरु किया और कहाः मैं अपने पति का हाल कहाँ तक बयान करुँ (उस के अन्दर इतनी कमियाँ हैं कि) मैं उन सब को बयान ही नहीं कर सकती (2) फिर भी अगर बयान ही करने लग जाऊँ तो उस के खुले-छुपे तमाम ऐबों को बयान कर सकती हूँ (3) इस के बाद तीसरी महिला (हुयी बिन्त कअ़ब यमानी) ने बयान किया कि मेरे पति देव महोदय ताड़ के ताड़ हैं (यानी लंबे-तंड़गे हैं) अगर उन के ऐबों को बयान कर दूँ तो समझो मेरी तलाक़ है, और अगर यूँ ही चुपचाप रहूँ तो ऐसे ही अधर में लटकी रहूँ (4) इस के पश्चात चौथी महिला (महद बिन्त अबू हरवमा) ने बयान किया कि मेरे पति महोदय मुल्क तहामा की रात की तरह दर्मियाना दर्जे के हैं, न ही बहुत गर्म हैं और न ही यकदम ठन्डे। इसलिये न तो मैं उन से डरती हूँ और न ही घबराती हूँ। इस के बाद पाँचवीं महिला (कब्शा नामक) ने बयान किया कि मेरे पति जब

घर में आते हैं तो चीते की तरह आते हैं (5) और जब बाहर निकलते हैं तो बहादुर शेर की तरह निकलते हैं। घर में जो चीज़ रख कर जाते हैं उस के बारे में वह कुछ नहीं पूछते। वह इतने लार्पवाह हैं कि जो कुछ आज कमाया, उसे कल के लिये नहीं छोड़ते, वह बड़े ख़र्च करने वाले हैं। इस के बाद छठी महिला (जिस का नाम हिन्द था) ने कहाः मेरे पति जब खाने बैठते हैं तो सब कुछ चट कर जाते हैं, और जब पीने लगते हैं तो एक बूँद भी नहीं छोड़ते। और जब सोते हैं तो अकेले ही अपने ऊपर कपड़ा डाल कर सो जाते हैं, मेरे कपड़े को कभी छूते ही नहीं है, और न ही मेरे दुःख दर्द की उन्हें कोई चिन्ता रहती है (6) इस के बाद सातवीं महिला (हुय्यी बिन्त अल्क़मा) ने बयान किया कि मेरे पति बिल्कुल अनाड़ी और मस्त हैं, संभोग करते समय अपना सीना मेरे सीने से लगा कर औंधे मुँह पड़ जाते हैं, दुनियाँ में जितने ऐब तमाम लोगों में हैं, वह सारे अकेले उन के अन्दर मौजूद हैं (अगर मैं कुछ एतराज़ करूँ) तो मेरा सर फोड़ डालें, या हाथ तोड़ डालें, या सर और हाथ दोनों ही फोड़-तोड़ डालें (7) इस के बाद आठवीं महिला (यासिर बिन्त औस) ने बयान किया कि मेरे पति महाराज जो छूने में ख़रगोश की तरह नर्म हैं और ज़ाफ़रान के खूश्बू की तरह महँकते हैं। (8) इस के बाद नौंवी महिला ने बतायाः मेरे पति जी का घर बहुत ऊँचा है और स्वँय भी बड़े बहादुर हैं, उन के घर इतना खाना पकता है कि राख के ढेर के ढेर जमा हो जाते हैं (यानी ग़रीबों को खूब खिलाते-पिलाते हैं) जहाँ लोग बैठ कर राय-मश्वरा करते हैं (यानी पंचायत घर) उन का घर उस के बिल्कुल निकट ही है (9) दस्वीं महिला (जिन का नाम कब्शा बिन्त राफ़े था) ने बयान किया कि मेरे पति जी के क्या कहने, उन के पास जायदाद है, और जायदाद भी ऐसी कि वैसी अच्छे-अच्छों के पास नहीं। ऊँट के रेवड़ के रेवड़ उन के घर के आस-पास बँधे रहते हैं, वह जंगल चरने के लिये कम ही जाते हैं। (10) जहाँ उन ऊँटों ने किसी क़ाफ़िला के आने की घन्टी की आवाज़ सुनी, उन्हें यक़ीन हो गया कि मेरे ज़ब्ह होने का समय आ गया (11) ग्यारहवीं महिला (उम्मे ज़रआ) ने बयान किया कि मेरे पति जी का नाम अबू ज़राअ है, उन के क्या कहने! उन्होंने मेरे कानों को सोने से बोझल कर दिया है, (मुझे खिला-पिला कर) मेरे दोनों बाजुओं को फुला दिया है, और मुझे खिला-पिला कर खूब मोटा कर दिया है। शादी से पहले मैं चन्द बकरियों के साथ बड़ी तन्गी में गुज़र-बसर करती थी, लेकिन मेरे पति जी ने तो मुझे घोड़ों, ऊँटों और खेत-खलियान सब का मालिक बना दिया है। इतनी धन-दौलत होने के बावजूद भी वह बड़े अच्छे स्वभाव के मालिक हैं, कोई भी बात कह दूँ तो बुरा नहीं मानते और न ही मुझे बुरा-भला कहते हैं, अगर सो जाऊँ तो मुझे कोई जगाता नहीं है, पानी पीती हूँ तो खूब डट कर पीती हूँ। मेरे पति जी की माँ (यानी मेरी सास) तो उन की भी अच्छाइयाँ क्या बयान करूँ, उन का बार्वची ख़ाना सामान से हमेशा भरा रहता है, उन का घर बहुत ही कुशादा है। अबू ज़रआ का बेटा भी बड़ा सुन्दर (और छोटा) है। हरी छाल या नन्गी तल्वार के बराबर उस के सोने की जगह है (12) बहुत ही कम खुराक है, छः महीना

के बक्री के बच्चे के दस्त से उस का पेट भर जाता है। रही अबू ज़रआ की पुत्री, तो सुब्हानल्लाह! उस के भी क्या कहने, अपने पिता की प्यारी और अपनी माँ की दुलारी है, कपड़े खूब पहनती है (मोटी ताज़ी है) उस की सौकन उस को देख कर जलती है। (13) रही अबू ज़रआ की लौंडी की बात, तो इस की भी कुछ न पूछो, हमारी कोई बात लीक नहीं करती है (घर का भेद प्रकट नहीं करती है) खाना तक चोरी कर के नहीं खाती, घर में कूड़ा-कचड़ा भी नहीं करती है।

लेकिन.....एक दिन ऐसा हुआ लोग मक्खन निकालने के लिये दूध मथ रह थे, इसी बीच अबू ज़रआ (सुब्ह-सुब्ह) घर से बाहर निकले तो उन की नज़र एक महिला से लड़ गयी, उस के दो बच्चे थे जो चीते के बच्चों की तरह उस की कमर के नीचे के दो अनारों से खेल रहे थे (दो अनार से मुराद उस की दोनों छातियाँ हैं) फिर क्या था मेरे पति अबू ज़रआ ने मुझे तलाक़ दे दी और उस से निकाह कर लिया। फिर मैं ने भी एक शरीफ़ और सर्दार से निकाह कर लिया। अब यह दूसरे पति भी अच्छे घोड़सवार हैं, अच्छे तीर अन्दाज़ और नेज़ा बाज़ हैं। इन्होंने भी मुझे अधिक जानवर दिये हैं, हर प्रकार के समान में से एक-एक जोड़ा दिया हुआ है। वह मुझ से कहते रहते हैं कि ऐ उम्मे ज़रा! खूब खाओ और अपने रिश्तेदारों को भी खिलाओ, तुम्हारे लिये कोई पाबन्दी नहीं है। लेकिन जो कुछ मैं ने तुम्हें दिया हुआ है, अगर उन्हें एकत्र करुँ, तो जो तुम्हारे पहले पति ने दिया है उस में का एक छोटा बर्तन भी न भरेगा (यानी उन के मुक़ाबले में बहुत कम है)

आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ ने यह हदीस बयान करने के बाद कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमायाः मैं भी तुम्हारे लिये वैसा ही हूँ जैसा उम्मे ज़राअ़ के लिये अबू ज़राअ़ थे (लेकिन मैं तुम्हें तलाक़ नहीं दूगाँ)

फ़ाइदाः- इस हदीस के अन्दर एक से लेकर 12 तक नंबर दिये गये हैं जो हाशिया नंबर हैं, उन्हें यहाँ देखें। (1) यानी उन का पति कन्जूस है और हद दर्जा बदअख़्लाक़ और नाकारा है। (2) या मैं इस बात से डरती हूँ कि कहीं उस को पता चल जाये और मुझे तलाक़ दे दे, हालाँकि मैं उसे छोड़ भी नहीं सकती। (3) यानी मेरे लिये ख़ामोश रहना ही बेहतर है (4) यानी न ही तलाक़ मिल जाये कि दूसरा शौहर कर लूँ, न ही उस से कोई सुख मिलना है (5) यानी घर आया कि सो गया और कुछ मतलब नहीं। यह कि आते ही संभोग करना शुरु कर देता है, न सलाम-कलाम, न हँसी-मज़ाक़। (6) यानी बड़ा ही पेटू है और मेरे लिये किसी काम का नहीं है (7) यानी अव्वल तो लालसा और इच्छा कम है, मेरी इच्छा नहीं पूरी कर पाता, और अगर कुछ कहो तो मारने-पीटने और काट खाने को तय्यार हो जाता है। (8) हदीस में 'ज़रनब' का शब्द आया है, जो ज़ाफ़रान की तरह खुश्बूदार होता है। यानी मेरे पति भीतर-बाहर हर तरह के अच्छे हैं। (9) इसलिये लोग राय-मश्वरा के लिये तुरन्त बुलाते हैं और उन के मश्वरे पर अ़मल करते हैं। (10)

ताकि काफ़िला वाले और मेहमान लोग आयें तो उन का दूध और गोश्त तय्यार मिले। (11) यह घन्टी मेहमानों केआने की खुशी में बजाई जाती है तो ऊँट समझ जाते हैं कि अब हम मेहमानों के लिये ज़ब्ह किये जायेंगे। (12) यानी छरेरे शरीर और नाजुक कमर वाला है जो बिस्तर पर सोते वक़्त टिकती है। (13) यानी सौकन मेरी सुन्द्रता पर जलती और मेरे अच्छे व्यवहार से तिलमिलाती है (14) यानी घर को हमेशा साफ़ा सुथरा रखती है और पूरा घर चमन बना रहता है।

यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी आई है (5189-आ़इशा सिद्दीक़ा)

बाब {ख़दीज़ा रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1670:- अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने कूफ़ा नगर में अ़ली रज़ि॰ को बयान करते सुना, वह बयान करते थे कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः आकाश व ज़मीन की समस्त महिलाओं में अ़िम्रान की पुत्री म्रयम सब से अफ़ज़ल हैं, इसी प्रकार समस्त महिलाओं में ख़दीज़ा सब से अफ़ज़ल हैं। अबू कुरैब ने बयान किया कि हदीस के रावी वकीअ़ ने आसमान और ज़मीन की तरफ़ इशारा किया।

1671:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जिब्रील अ़लै॰ ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर कहाः ऐ अल्लह केर सूल! वह ख़दीजा आप के पास एक बर्तन में सालन, या खाना, या पानी लेकर आ रही हैं। जब वह आयें तो आप अल्लाह पाक का और मेरा सलाम उन तक पहुँचा दीजिये और उन्हें (जन्नत में) ऐसे महल की बशारत दे दीजिये जो मोती के ख़ोल का बना हुआ है, उस महल में न तो किसी प्रकार का शोर-शराबा है और न किसी प्रकार की तक्लीफ़ और ज़हमत।

1672:- आ़इशा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने आप की बीवियों में से ख़दीज़ा को छोड़ कर बाक़ी किसी पर रश्क नहीं किया, हालाँकि मैं ने उन को नहीं देखा है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब कोई बकरी ज़ब्ह करते तो फ़रमाते कि यह माँस ख़दीजा की सहेलियों को दे दो, चुनान्चे मैं ने एक दिन आप को नाराज़ करते हुये कह दियाः ख़दीज़ा? यह सुन कर आप ने फ़रमायाः मेरे दिल में अल्लाह पाक ने उन की मुहब्बत डाल दी है।

फ़ाइदाः- अल्लाह और फ़रिश्तों का किसी को सलाम भेजवाना, इस से अनुमान लगाया जा सकता है कि उस का दर्जा और मर्तबा कितना बुलन्द है और दुनिया के समस्त इन्सानों में कितना अफ़ज़ल है। हज़ार-हज़ार रहमतें और बर्कतें नाज़िल हों ऐसी महिला पर।

1673:- आ़इश सिद्दीक़ा रज़ि॰ ने बयान किया कि ख़दीजा के निकाह में होते हुये उन के देहान्त तक दूसरा निकाह आप ने नहीं किया।

1674:- आ़इश सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा खदीजा

की बहन हाला ने आ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अन्दर आने की अनुमति माँगी, तो आप को ख़दीज़ा का इजाज़त माँगना याद आ गया और मारे खुशी के फ़रमायाः या अल्लाह! अरे हाला। आ़इशा कहती हैं कि इस पर मुझे बड़ा रश्क आया और कहा कि आप क्यों कुरैश की बुढ़ियों में लाल मसूढ़ों वाली एक बुढ़िया की यादों के पीछे पड़े हैं। अब तो वह दुनिया से जा चुकी हैं और अल्लाह ने आप को उन से बेहतर जवान और कुँवारी बीवी दे दी है।

फ़ाइदाः– नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आ़इशा की यह बचकाना बातें सुन कर चुप रहे कोई डाँट नहीं पिलाई। क्योंकि आप जानते थे कि महिलाओं के अन्दर इस प्रकार की बातें पाई जानी फ़ितरी हैं। फिर दूसरे यह कि वह अभी कम आयु की थीं और बचपना अभी नहीं गया था। वर्ना ख़दीज़ा रज़ि॰ के बारे में ऐसी बातें आप हर्गिज़ गवारा नहीं कर सकते थे।

ख़दीज़ा रज़ि॰ का नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से निकाह से पहले दो निकाह हो चुका था। पहला 28 वर्ष की आयु में अ़तीक़ मख़्ज़ूमी से। फिर इन के देहान्त के बाद दूसरा निकाह अबू हाला हिन्द से हुआ। इन से तीन लड़के (1) हाला (2) ताहिर (3) हिन्द पैदा हुये और तीनों सहाबी हैं। फिर इन के देहान्त के बाद तीसरा निकाह 40 वर्ष की आयु में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से हुआ। आप नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से 2 लड़के और चार लड़कियाँ पैदा हुयीं। रमज़ान सन 10 नबुव्वत में देहान्त हुआ। पत्नी की हैसिय्यत से साढ़े चौबीस वर्ष रहीं। रज़ियल्लाहु अ़न्हा। आप की बहन हाला नाम की थीं, इन्ही के बेटे आ़स से अपनी पुत्री ज़ैनब का निकाह किया था।

ख़दीजा के देहान्त के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का उस 64 वर्षीय पोपली बुढ़िया को बार–बार याद करना यही उन की फ़ज़ीलत के लिये क़ाफ़ी है। आ़इशा रज़ि॰ जैसी सरीद (सीख़ कबाब) की मौजूदगी में ख़दीजा जैसी सूखी रोटी को पसन्द करना, उन की फ़ज़ीलत की दलील है।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी ज़ैनब की फ़ज़ीलत का बयान।}

1675:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक दफ़ा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी बीवियों में जिस के हाथ सब से लंबे होंगे वह सब से पहले मुझ से मिलेगी। चुनान्चे तमाम ही बीवियाँ एक–दूसरे के हाथ नापने लगीं ताकि मालूम हो कि किस के हाथ लंबे हैं। आ़इशा ने बयान किया कि ज़ैनब के हाथ सब से लंबे थे, वह अपने हाथ से मेहनत कर के कमाई करतीं फिर ख़ैरात कर देती थीं।

फ़ाइदाः– आप की बीवियों ने प्रथम यही समझा कि जिस का हाथ लंबा होगा वह पहले

आप के पास जायेगी। बाद में मालूम हुआ कि "हाथ लंबा होना" से मुराद सदक़ा-ख़ैरात करना है। इन का पहला निकाह तुफ़ैल से, दूसरा उबैदा से हुआ (यह दोनों ही आप के चचा हारिस के लड़के थे) तीसरा निकाह अ़ब्दुल्लाह बिन जहश से हुआ। यह जन्ग उहुद में शहीद हो गये तो चौथा निकाह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से हुआ। आप के निकाह में दो-तीन माह रह कर देहान्त कर गयीं। "उम्मुल् मसाकीन" (ग़रीबों की माँ) के नाम से प्रसिद्ध थीं।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी उम्मे सलमा रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1676:- अबू उस्मान से रिवायत है कि सलमान रज़ि॰ ने बयान कियाः कोशिश यह करो कि बाज़ार में सब से पहले न जाओ और न ही सब से अन्त में वहाँ से निकलो। क्योंकि बाज़ार शैतान के लिये लड़ाई-झगड़े का अड्डा होता है, और यहीं उस का झन्डा खड़ा होता है। उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा जिब्रील अ़लै आप के पास आये, उस समय उम्मे सलमा आप के पास मौजूद थीं। आप जिब्रील से बातें करने लगे, जब जाने लगे तो आप ने उम्मे सलमा से पूछाः जानती हो यह कौन हैं? उन्होंने कहाः दह्या कल्बी। उम्मे सलमा ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! मैं जिब्रील को दह्या क्लबी (सहाबी) ही समझती रही, लेकिन जब मैं ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़ुत्बा में बयान करते सुना कि आप हमारे बारे में ख़बर दे रहे थे।

हदीस के रावी ने अबू उस्मान से पूछा कि यह हदीस आप ने किस से सुनी है? तो उन्होंने कहाः उसामा बिन ज़ैद से।

फ़ाइदाः- इन का निकाह प्रथम अबू सलमा से हुआ था जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दूध शरीक भाई थे और आप की फूफी बर्रा के बेटे थे। जन्ग उहुद में घायल हो गये थे बाद में उसी घाव से सन तीन हि॰ में देहान्त कर गये। इन से दो बेटे और दो बेटियाँ थी। जब आप ने इन से निकाह किया तो इन सब को पाला पोसा और शादी-बियाह किया। मदीना में सन 59 हि॰ में 84 वर्ष की आयु में देहान्त किया। इन से कुल 349 हदीसें रिवायत हैं-रज़ियल्लाहु अ़न्हा। (रह्मतुल्लिल् आ़लमीन)

बाब {अनस बिन मालिक रज़ि॰ की माता जी उम्मे सुलैम रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1677:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी पत्नियों या फिर उम्मे सलैम के घर के अ़लावा और किसी के घर में नहीं जाते थे। आप के उम्मे सुलैम के घर जाने पर लोगों ने वजह मालूम की तो आप ने फ़रमायाः मुझे उन पर बड़ा तर्स और रहम आता है, उन का भाई मेरे साथ मारा गया था।

फ़ाइदाः- उम्मे सुलैम के पति का नाम मालिक था जिन का देहान्त कुफ़्र की हालत में हुआ। बाद में अबू तल्हा अन्सारी से दूसरा निकाह कर लिया। उस समय अनस 5-6

वर्ष के बच्चे थे, उन्होंने शिक्षा-प्रशिक्षण के लिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में उन्हें सौंप दिया। आप इन की माता जी से बड़ी मुहब्बत करते थे। इन से एक बच्चा उमैर नामक पैदा हुआ उस से आप रोज़ाना खेल करते थे-देखें ऊपर हदीस न॰ 1401, 1414। मुस्लिम ही की रिवायत है कि आप ने फ़रमायाः मुझे जन्नत दिखाई गयी तो उस में अबू तल्हा की पत्नी (उम्मे सुलैम) को टहलते देखा, फिर अपने आगे जूती की आवाज़ सुनी तो क्या देखा कि बिलाल आगे-आगे जा रहे हैं (मुस्लिम)

1678:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं जन्नत में गया तो वहाँ किसी महिला के चलने की आवाज़ सुनी तो मैं ने पूछाः यह कौन हैं? लोगों ने बतायाः अनस बिन मालिक की माँ गुमैज़ा बिन्त मिल्हान हैं (यह उन का अस्ली नाम था)

बाब {उसामा बिन ज़ैद की माता जी उम्मे ऐमन रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1679:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के देहान्त के पश्चात् अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने उमर रज़ि॰ से कहाः मेरे साथ आप भी उम्मे ऐमन से मुलाक़ात के लिये चलें, हमें भी उन से मिलने जाना चाहिये जिस प्रकार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन के पास मिलने के लिये जाया करते थे। चुनान्चे जब हम उन के पास पहुँचे तो वह रोने लगीं। हम दोनों ने पूछाः आप क्यों रो रही हैं? आप ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की जो सेवा की है अल्लाह के पास उस का अज्र मौजूद है। उन्होंने कहाः मुझे अच्छी तरह मालूम हैं। मैं इस नाते नहीं रो रही, रोना इस बात को लेकर है कि अब आसमान से वह्यि आने का सिलसिला बन्द हो चुका है। यह सुन कर वह दोनों भी रोने लगे।

फ़ाइदाः- वह आप के पिता अ़ब्दुल्लाह की लौंडी थीं। इन्होंने बचपन में आप की बड़ी सेवा की। आप की माँ आमिना के देहान्त के बाद यह समझें कि यही आप की सब कुछ थीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इन्हें आज़ाद कर दिया तो ज़ैद बिन हारिसा से निकाह कर लिया जिन से उसामा पैदा हुये। ज़ैद बिन हारिसा भी गुलाम थे। ख़दीज़ा रज़ि॰ ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा के लिये इन्हें दे दिया था। आप ने इन्हें मुँह बोला बेटा बना लिया था। बाद में इन का निकाह अपनी माँ की लौंड़ी ऐमन से कर दिया।

बाब {ज़ैद बिन हारिसा रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1680:- इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मिंबर पर खुत्बा देते हुये फ़रमायाः आज तुम उसामा के फ़ौज का कमान्डर बनाए जाने पर ताना देते हो (कि यह तो हब्शी गुलाम है) तो इस से पहले भी इन के बाद (ज़ैद) के बारे में भी ताना दे चुके हो। हालाँकि अल्लह की क़सम! इन के बाप के अन्दर फ़ौज

की कमान्डरी करने की पूरी क्षमता मौजूद थी और वह मेरे लिये सब से अधिक प्यारा था। अब उसामा मेरे नज़दीक तुम सबस से अधिक प्यारा है। मैं तुम लोगों को वसिय्यत करता हूँ कि उसामा के साथ अच्छा व्यवहार करना, क्योंकि वह नेक लोगों में से हैं।

फ़ाइदा:– ज़ैद बिन हारिसा रज़ि॰ को जन्ग में तीन हज़ार के लश्कर का कमान्डर बनाया था, जो सन 8 हि॰ में लड़ी गयी थी। इस जन्ग में हारिसा के बाद, एक के बाद एक कमान्डर शहीद हुये। अन्त में ख़ालिद बिन वलीद ने कमान्डरी संभाली और मुसलमानों को फ़त्ह हुयी।

आप ने उसामा को कमान्डर बना कर क़बीला हरक़ा की तरफ़ भेजा था। 'हरक़ा' का नाम जैश बिन आमिर था। इस ने एक क़ौम को जला दिया था इसलिये यह नाम पड़ा। उसामा के कमान्डर बनाए जाने पर लोगों ने एतराज़ किया था (बुख़ारी–4269–सलमा बिन अकवा) आप ज़ात–पात, क़ौम और ख़ान्दान देखकर किसी को पदभार नहीं सौंपते थे, जिस के अन्दर सलाहियत देखते उस के हवाले करते थे। उसामा की आयु मुश्किल से 20 वर्ष की रही होगी, लेकिन इन की मातहती में बड़े–बूढ़े लश्कर में शामिल थे। इसी पर सहाबा को एतराज़ था।

बाब {ज़ैद बिन हारिसा और उसामा बिन ज़ैद की फ़ज़ीलत का बयान।}

1681:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मिंबर पर फ़रमाया: अगर तुम लोग उसामा के अमीर बाने पर ताना देते हो तो इस से पहले भी उस के बाप (ज़ैद) के अमीर बनाये जाने पर भी ताना दिया है। अल्लाह की क़सम! उस का पिता कमान्डरी के लाइक़ था और उब लोगों में मुझे अधिक प्यारा था। और अब उसामा मुझे लोगों में अधिक प्यारा है। इसलिये मैं वसिय्यत करता हूँ कि उसामा के साथ नेक सुलूक करना, क्योंकि वह तुम में अच्छे क़िस्मत वालों में से है।

बाब {अबू बक्र के आज़ाद किये हुये गुलाम बिलाल बिल रिबाह रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1682:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सुब्ह फ़ज्र की नमाज़ के बाद बिलाल से फ़रमाया: ऐ बिलाल! अपने उस नेक अ़मल के बारे में ज़रा बताओ जो तुमने इस्लाम लानेकेबाद किया है और तुम्हें उस अ़मल से लाभ की आशा है, क्योंकि मैं ने जन्नत में अपने सामने (आगे) तुम्हारी जूतियों की आवाज़ सुनी है। बिलाल ने कहा: हमारे पास तो ऐसा कोई नेक काम नहीं है जिस पर मुझे बहुत अधिक नेकियाँ मिलने की आशा हो। हाँ, इतना में करता हूँ कि रात या दिन में किसी भी समय जब मैं वज़ू करता हूँ तो तुरन्त जितनी अल्लाह को मन्ज़ूर होती है उतनी रक्अ़त नमाज़ पढ़ लेता हूँ।

फ़ाइदा:– बिलाल रज़ि॰ जब भी वुज़ू करते थे तो दो–चार रक्अ़त (तहिय्यतुल् वुज़ू) नमाज़ अवश्य पढ़ लिया करते थे, यह उन का नियम था। वज़ू के बाद दो रक्अ़त यह

सुन्नत है। जिस प्रकार मस्जिद में दाख़िल होते समय "तहिय्यतुल मस्जिद" पढ़ना सुन्नत है, इसी प्रकार वजू के बाद भी।

बाब {सलमान फ़ारसी सुहैब रुमी और बिलाल रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1683:– आइज़ बिन अम्र ने बयान किया कि एक मर्तबा अबू सुफ़यान, सलमान फ़ारसी, सुहैब रुमी और बिलाल रज़ि॰ से मिलने के लिये आये, उस समय और दूसरे लोग भी मौजूद थे। उन्होंने अबू सुफ़यान को देख कर कहाः अल्लाह की तल्वारें अल्लाह के दुश्मन की गर्दन तक समय पर नहीं पहुँच सकीं (यानी अबू सुफ़यान मारा नहीं गया) इस पर अबू बक्र ने कहाः क्या तुम लोग ऐसी बातें कुरैश के बड़े-बूढ़ और सर्दार के बारे में कहते हो? फिर अबू बक्र ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आ कर इस घटना की जानकारी दी तों आप ने फ़रमायाः शायद तुम ने उन लोगों को (यानी सलमान व बिलाल आदि को) नाराज़ कर दिया। (याद रखो!) अगर उन को नाराज़ किया तो अल्लह को नाराज़ किया। इस पर अबू बक्र उन के पास वापस गये और पूछा कि मेरे भाइयों! मैं ने आप को नाराज़ तो नहीं किया है? उन्होंने कहाः ऐ मेरे भाई! ऐसी कोई बात नहीं, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाये।

फ़ाइदा:– यह घटना अबू सुफ़यान के ईमान लाने से पहले की है। अबू बक्र ने इस नाते बुरा माना होगा कि ऐसा न हो कि इतनी सख़्त बातें सुन कर अगर उन के ईमान लाने का भी इरादा हो, तो ईमान न लायें। इन्हेंाने फ़त्ह मक्का के मौक़ा पर इस्लाम कुबूल किया था। इन्होंने कुफ़्र की हालत में उन मज़लूम सहाबा पर कितना अत्याचार किया था, यह तो वही सहाबा जानते हैं, जिन्होंने उन के अत्याचार को झेला था।

बाब {अनस बिन मालिक रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1684:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मेरी माता जी मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास लेकर गयीं तो उन्होंने अपनी ओढ़नी को फाड़ कर दो टुक्ड़ा किया, आधे को चादर बना कर मुझे पहना दिया और आधे को चादर बना कर ऊपर (क़मीस के स्थान पर) ओढ़ा दिया, फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास लेकर आयीं और कहने लगीं: ऐ अल्लाह के रसूल! यह मेरा छोटा-मोटा बेटा अनस है, आप के पास लेकर आयी हूँ, आप इस के लिये दुआ फ़रमा दीजिये। आप ने फ़रमायाः ऐ अल्लाह! इस बच्चे के धन-माल और औलाद को खूब बढ़ा दे। अनस रज़ि॰ ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! आज मेरे पास माल की कमी नहीं है और मेरे बेटों और पोतों की संख्या सौ से भी अधिक है।

1685:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्हेंाने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (मेरे घर के पास से) गुज़रे तो मेरी माता जी ने आप की आवाज़ सुन ली, तो आप से कहने लगीं: ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे माता-पिता आप पर

कुर्बान हों, यह मेरा प्यारा बेटा अनस हैं। आप ने मेरे लिये तीन दुआयें कीं, इन में से दो तो दुनियाँ में पा लिया, तीसरे की आख़िरत में आशा है।

फ़ाइदा:– दो को तो दुनिया ही में पा चुकी यानी धन–दौलत और आल–औलाद। तीसरी, यानी जन्नत तो वह आख़िरत में मिलेगी।

1686:– साबित से रिवायत है कि अनस रज़ि॰ ने बयान किया: मैं लड़कों के दर्मियान खेल रहा था कि इसी बीच आप तशरीफ़ लाये और सलाम कर के मुझे किसी काम से भेज दिया इस नाते घर देर से पहुँचा। जब घर गया तो माता जी ने पूछा: आज क्यों देर कर के आये? मैं ने बताया कि आप ने किसी काम से भेज दिया था (इसलिये आने में देरी हुयी) उन्होंने पूछा: किस बात से भेजा था? मैं ने कहा: वह राज़ की बात है। चुनान्चे उन्होंने मुझे हिदायत की कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का भेद किसी से मत बताना। अनस ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! उस भेद को अगर मैं किसी से बयान करता तो ऐ साबित आप से बयान करता।

बाब {जाफ़र बिन अबू तालिब, अस्मा बिन्त उमैस और कश्ती वालों की फ़ज़ीलत का बयान।}

1687:– अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोगों ने मन ही में सुन लिया था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का से (मदीना के लिये) हिजरत के इरादे से रवाना हो चुके हैं, तो मैं और मेरे दो भाई अबू बुर्दा और अबू रहम और खान्दान के 50, 52 या 53 लोग भी एक साथ निकले। और कश्ती पर सवार होगये। मैं अपने भाइयों में सब से छोटा था। इत्तिफ़ाक़ से कश्ती नज्जाशी बादशाह के मुल्क हबश पहुँच गयी। वहाँ हमें जाफ़र बिन अबू तालिब और उन के साथी लोग मिले। जाफ़र ने कहा: हमें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यहाँ भेजा है और यहीं रहने का आदेश दिया है इसलिये आप लोग भी हमारे साथ रहें। चुनान्चे हम लोग उन के पास ठहर गये। फिर बाद में हम सब एक ही साथ वहाँ से मदीना के लिये वापस लौटे और आप के पास उस समय पहुँचे जबकि आप ख़ैबर फ़त्ह कर चुके थे। चुनान्चे आप ने हम सब के लिये भी माले ग़नीमत से हिस्सा लगाया और हम कश्ती वालों को छोड़ कर जो भी जन्ग में शरीक न रहा उसे कुछ न दिया। कुछ लोगों ने तो हम लोगों का नाम ही "कश्ती वाले" रख दिया और कहने लगे कि हम लोग हिजरत में तुम सब से आगे निकल गये।

अस्मा बिन्त उमैस जिन्होंने लोगों के साथ हबश की तरफ़ हिजरत की थी (और हमारे साथ वापस लौटी थीं) हफ़सा रज़ि॰ के घर मेहमान बन कर गयीं। एक दिन उमर हफ़सा के घर गये तो वहाँ अस्मा मौजूद थीं। उन्हें देख कर उमर ने पूछा: यह कौन हैं? हफ़सा ने बताया कि यह उमैस की पुत्री अस्मा हैं। उन्होंने फिर पूछा: जो हिजरत कर के हबश चली गयी थीं और अब लौटी हैं? अस्मा ने उत्तर दिया: हाँ, मैं वही हूँ। इस पर उमर ने कहा: हम लोगों ने तुम से पहले हिजरत की है इसलिये नबी करीम सल्लल्लाहु

अ़लैहि वसल्लम पर हमारा अधिक हक़ बनता है। इतना सुनना था कि वह भड़क गयीं और बोलीः ऐ उमर! अल्लाह की क़सम! ऐसा हर्गिज़ नहीं हो सकता, तुम झूठ-मूठ की कह रहे हो। तुम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ थे, वह तुम भूखों को खिलाते और तुम जाहिलों को नसीहत फ़रमाते थे (और चिन्ता मुक्त थे) और हम लोगों का हाल यह था कि अजनबी और दुश्मन की ज़मीन हबश में पड़े हुये थे, यह सारी परेशानियाँ अल्लाह और उस के रसूल की ख़ातिर बर्दाशत की हैं। अल्लाह की क़सम! मैं उस समय तक न खाऊँ-पियूँगी जब तलक तुम्हारी बातों को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने न रख दूँ। (तुम्हें नहीं मालूम कि) हमें वहाँ तक्लीफ़ दी जाती थी और ख़ौफ़ के साये में रहते थे। मैं अभी इस मस्अले को आप के पास रख कर पूछूँगी, और अल्लाह की क़सम! न मैं इधर-उधर की कहूँगी, न झूठ बोलूँगी, न कमी-बेशी करुँगी।

फिर जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तशरीफ़ लाये तो उन्होंने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! उमर ने इस-इस प्रकार की बातें कहीं हैं। आप ने फ़रमायाः तुम लोगों से अधिक किसी का हक़ नहीं है। उमर और उन के साथियों ने एक हिजरत की है और तुम कश्ती वालों ने दो की हैं। (एक मक्का से हबश, दूसरे हबश से मदीना) अस्मा रज़ि॰ ने बयान किया कि अबू मूसा और उन के साथ कश्ती वाले झुन्ड बना कर मेरे पास आते और इस हदीस को सुनते। उन लोगों के नज़दीक इस से ज़्यादा खुशी की और इस से ज़्यादा बड़ी बात और कोई नहीं थी (कि हम ने दो-दो हिजरत की) अबू बुर्दा ने बयान किया कि अस्मा रज़ि॰ कहती थीं: अबू मूसा अश्अ़री (मारे खुशी के) बार-बार इस हदीस को मेरे सामने दोहराते थे।

फ़ाइदाः- इस से अधिक खुशी की क्या बात हो सकती है कि किसी को दो-दो हिजरत का सवाब मिले और माले ग़नीमत में बराबर का हिस्सा भी मिले।

बाब {अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र बिन अबू तालिब का बयान।}

1688/1:- अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब यात्रा से वापस तशरीफ़ लाते तो हम लोगों से मिलते। उन्होंने बयान किया कि एक बार आप मुझ से और हसन या हुसैन से मिले तो हम दोनों में से एक को अपनी सवारी पर आगे बैठाया और दूसरे को पीछे, फिर मदीना में इसी हालत में दाख़िल हुये।

1688/2:- अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक दिन मुझे अपने पीछे बैठाया और चुपके से एक बात कही जिसे मैं किसी से भी बयान न करुँगा।

बाब {अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1689:– इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम शौच के लिये तशरीफ़ ले गये तो मैं ने आप के लिये वुज़ू का पानी भर कर रख दिया। आप जब बाहर निकले तो पूछाः यह पानी किस ने रखा है? इस पर लोगों ने कहा, या इब्ने अ़ब्बास ने कहाः मैं ने रखा है। इस पर आप ने (दुआ़ देते हुये) फ़रमायाः ऐ अल्लाह! इन्हें दीन की समझ अ़ता फ़रमा।

बाब {अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1690:– उमर रज़ि॰ के पुत्र अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में जब कोई सपना देखता तो आप से बयान करता। चुनान्चे मेरी भी इच्छा थी कि मैं भी कोई सपना देखूँ और आप से बयान करुँ। उन दिनों मेरी शादी नहीं हुयी थी, नौजवान था और मस्जिदे-नबवी में सोया करता था। फिर एक रात मैं ने सपना देखा कि दो फ़रिश्ते पकड़ कर मुझे जहन्नम की तरफ़ ले गये, मैंने उसे देखा तो वह टेढ़े-मेढ़े गहरे कुँए की तरह है, उसके ऊपर आज कल के कुओं की तरह दो लकड़ियाँ रखी हुयीं हैं, उसके अन्दर कुछ लोगों को देखा जिन्हें मैं ने पहचान लिया। फिर मैं ने कहना शुरु कर दिया "मैं जहन्नम से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ, मैं जहन्नम से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ"। इतने में एक और फ़रिश्ता मिल गया वह कहने लगाः तुम्हें डरने और घबराने की ज़रुरत नहीं।

फिर मैं ने यह सपन (अपनी बहन) हफ़्सा से बयान किया और उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बयान किया तो आप ने फ़रमायाः अ़ब्दुल्लाह अच्छा आदमी है अगर रात को तहज्जुद भी पढ़ा करे। हदीस के रावी सालिम ने बयान किया कि इस के बाद से अ़ब्दुल्लाह रात को बहुत कम सोते थे (और उठ कर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करते थे)

फ़ाइदाः– देखें (बुख़ारी शरीफ़-1121, 1122-इब्ने उमर रज़ि॰) इमाम साहब इस हदीस को तहज्जुद के बाब में लाये हैं और तहज्जुद की फ़ज़ीलत साबित की है। और इमाम मुस्लिम इब्ने उमर की फ़ज़ीलत के बाब में लाये हैं और इब्ने उमर की फ़ज़ीलत साबित की है। अल्हम्दु लिल्लाह, दोनों ही हक़ पर हैं और दोनों ही की फ़ज़ीलत साबित होती है। हज़रत सुलैमान अ़लै॰ की माता जी ने उन्हें नसीहत की थीः बेटे! रात में अधिक सोना यह अच्छा नहीं है, इस से आदमी क़ियामत के दिन मुहताज हो कर रह जायेगा। हदीस से भी स्पष्ट है कि तहज्जुद की नमाज़ जहन्नम से नजात का ज़रीआ़ है। एक दूसरी हदीस में आप ने फ़रमायाः तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करो, यह नेक लोगों का तरीक़ा है।

बाब {अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1691:– अ़ब्दुल्लाह बिन मुलैका से रिवायत है कि अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र ने इब्ने ज़ुबैर रज़ि॰ से कहाः क्या आप को याद है जब मैं और तुम और इब्ने अ़ब्बास नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मिले थे? उन्होंने कहा: हाँ (याद है, और यह भी याद है कि) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे अपने पीछे सवार कर लिया था और आप को नहीं सवार किया था।

फ़ाइदा:– जुबैर, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चचा थे। अ़ब्दुल्लाह आप के चाचा जाए भाई हुये। आप इन से बड़ी मोहब्बत करते थे। आप की सवारी के पीछे जगह नहीं थी, वर्ना अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र को भी अवश्य ही सवार कर लेते।

बाब {अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1692:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है कि जब यह आयत नाज़िल हुयी: "वह लोग जो ईमान वाले हैं और नेक कार्य करते हैं उन के लिये उस चीज़ में कोई गुनाह नहीं जिस को वह खा–पी चुके हैं जबकि वह अल्लाह से डरते हों और ईमान रखते हों .... (सूर:मादइ:–93) तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया: तुम उन्हीं लोगों में से हो।

1693:– अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं और मेरा भाई यमन से (मदीना) आये और काफ़ी समय तक रहे, लेकिन यही समझते रहे कि इब्ने मस्ऊद और उन की माता जी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ही घराने के सदस्य हैं, क्योंकि यह दोनों आप के घर में बहुत अधिक आते–जाते थे और आप के साथ रहते थे।

फ़ाइदा:– इन का संबन्ध बनी हुज़ैल गोत्र से था। आप के ख़ादिम थे। घर में, सफ़र में, हर स्थान पर आप की सेवा में लगे रहते थे। छोटे कद के कमज़ोर शरीर के थे, लेकिन दीन का बहुत ज्ञान रखते थे। साठ वर्ष की आयु में सन 32 हि॰ में देहान्त किया–रज़ियल्लाहु अ़न्हु।

1694:– अबुल् अहवस से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ के कई शार्गिदों के साथ अबू मूसा के घर में थे, वह लोग एक कुरआन पाक देख रहे थे, इतने में अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (जाने के लिये) खड़े हुये तो अबू मस्ऊद कहने लगे: यह जो साहब खड़े हैं, मैं नहीं जानता कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बाद इन से अधिक कुरआन पाक का ज्ञानी कोई बचा हो। यह सुन कर अबू मूसा रज़ि॰ ने कहा: तुम बिल्कुल सच कहते हो, इसलिये कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास नहीं होते, लेकिन यह मौजूद होते थे, और हमें जब अन्दर आने की अनुमति नहीं मिलती तो इन के लिये कोई रोक–टोक नहीं होता था।

फ़ाइदा:– यह हर समय मौजूद रहते थे, इन के आने–जाने में कोई रुकावट नहीं थी इसलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हर बात को सुनते और करते देखते, तो इन से बढ़ कर ज्ञानी और कौन होगा।

1695:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि "जो व्यक्ति कोई वस्तु छुपा कर रखेगा वह उसे क़ियामत के दिन लेकर हाज़िर होगा" (आले इ़म्रान-161) फिर कहा कि तुम लोग हमें किस व्यक्ति के क़िरात की तरह कुरआन पढ़ने का आदेश देते हो, मैं ने तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने 70 से अधिक सूरतें पढ़ी हैं और आप के सहाबा अच्छी तरह जानते हैं कि मैं उन सब से अधिक अल्लाह की किताब के बारे में जानता हूँ। और अगर मुझे मालूम होजाये कि कोई व्यक्ति मुझ से अधिक अल्लाह की किताब को जानता है तो मैं उस के पास जाऊँगा।

हदीस के रावी शक़ीक़ ने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबा की मज्लिस में शरीक हुआ हूँ, लेकिन किसी ने भी इब्ने मस्ऊद की बात को रद्द नहीं किया और न ही उन पर कोई आरोप लगाया।

फ़ाइदा:– यह हदीस बहुत संक्षिप्त है। इस की तफ़सील यह है कि अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद और उन के शर्गिदों के पास जो कुरआन था वह और दूसरे लोगों के कुरआन के ख़िलाफ़ था। इस पर उन लोगों ने कहा कि तुम सब अपना कुरआन वापस कर दो ताकि हम उसे नष्ट कर दें और जमहूर लोगों का कुरआन प्रचलित (जारी) रहे। इस पर इब्ने मस्ऊद ने कहा कि अपने-अपने कुरआन छुपा कर रख लो, फिर क़ियामत के दिन हम उसे अल्लाह के सामने ज़ाहिर करेंगे। यह बात उन्होंने फ़ज़ीलत की बुनियाद पर कही थी कि हम हक़ पर हैं, हम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकट रहे हैं और हम से अधिक कुरआन के बारे में कोई नहीं जानता है, फिर क्यों हम अपना कुरआन जला दें।

1696:– इमाम मस्रुक़ ने बयान किया कि हम लोग अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स के पास बैठे हुये थे कि इसी बीच किसी ने इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ का ज़िक्र छेड़ दिया तो उन्होंने कहा: तुम लोगों ने ऐसे व्यक्ति का ज़िक्र छेड़ दिया जिसे मैं उस समय से मोहब्बत करता हूँ जब से मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से यह हदीस सुनी है कि तुम चार आदमियों से (कुरआन) सीखो, उम्मे अ़ब्द के बेटे से (यानी इब्ने मस्ऊद से) और आप ने उन का नाम पहले लिया, उबय्यि बिन क-अ़ब से, सालिम से और मआ़ज़ बिन जबल से।

फ़ाइदा:– आप ने चार का नाम बताया तो उन में सर्वप्रथम अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद का नाम लिया, गोया उन में उन का पहला दर्जा है।

बाब {अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन हराम की फ़ज़ीलत का बयान।}

1697:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ ने बयान किया कि मेरे पिता जी (अ़ब्दुल्लाह) उहुद के दिन शहीद कर दिये गयें तो मैं ने मुँह के ऊपर से कपड़ा हटा कर (उन्हें देख कर) रोने लगा, तो लोगों ने रोने से मना किया, लेकिन आप ने नहीं रोका,

उस समय अम्र की बेटी फ़ातिमा (यानी मेरी फूफी) भी रो रही थीं। आप ने (इतना) फ़रमायाः उन पर रोओ या न रोओ, उन पर अपने परों से फ़रिश्ते उस समय तक साया किये हुये थे जब तक उन के शव को नहीं उठाया गया।

फ़ाइदा:– अब्दुल्लाह रज़ि॰ उहुद की जन्ग में शहीद कर दिये गये थे और उन के नाक-कान काट कर उन के चेहरे को बिगाड़ दिया गया था, उन का चेहरा डरावना हो गया था।

बाब {अब्दुल्लाह बिन सलाम की फ़ज़ीलत का बयान।}

1698:– आमिर बिन सअ़द ने बयान किया कि मैंने अपने पिता कसे बयान करते सुना वह बयान करते थे कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़बान से किसी चलते-फिरते ज़िन्दा व्यक्ति के बारे में यह कहते नहीं सुना कि वह जन्नत में है, मगर अब्दुल्लाह बिन सलाम के लिये (आप ने फ़रमाया)

1699:– ख़रसा बिन हुर्र ने बयान किया कि मैं मदीना की मस्जिद में लोगों के दर्मियान बैठा था; उस में एक प्रतिभाशाली बूढ़े बुर्जुग भी बैठे हुये थे, उन के बारे में मालूम हुआ के वह अब्दुल्लाह बिन सलाम हैं, वह लोगों से बड़ी प्यारी-प्यारी बातें कर रहे थे। जब वह उठ कर जाने लगे तो लोगों ने कहा जिसे किसी जन्नती को देखना हो वह इन्हें देख ले। चुनान्चे मैं ने अपने दिल में ठान लिया कि अल्लाह की क़सम! मैं इन के घर जा कर इन का घर देखूँगा। चुनान्चे मैं उन के पीछे ही चल पड़ा। चलते-चलते शहर के बिल्कुल किनारे पहुँच कर वह अपने घर में चले गये तो मैं ने भी अन्दर आने की अनुमति माँगी, उन्होंने अन्दर आने की अनुमति दे दी और पूछाः ऐ मेरे बेटे! आप को क्या काम है? मैं ने कहाः जब आप जाने के लिये उठे तो लोगों ने कहाः जिसे किसी जन्नती को देखने की इच्छा हो वह इन्हें देख ले, इसलिये मुझे आप के साथ रहना (अर्गचे थोड़ी देर के लिये सही) अच्छा मालूम हुआ। उन्होंने कहाः कौन जन्नती है? इस का हाल तो केवल अल्लाह ही जानता है, अल्बत्ता लोगों ने आप से जो कुछ (मेरे बारे में) कहा है तो उन लोगों के कहने की वजह से मैं अपनी एक कहानी सुनाए देता हूँ।

एक मर्तबा मैं सो रहा था कि सपने ही में किसी ने आ कर मुझ से कहाः खड़े हो जाओ। फिर उस ने मेरा हाथ पकड़ लिया और मैं उस के साथ चलने लगा। चलते हुये राह में अपने बायीं और कुछ रास्ते मिले, में उधर मुड़ने लगा तो उस ने कहाः इस राह पर मत जाओ, यह बायें तरफ़ वालों (यानी काफ़िरों) की राह है। फिर आगे चल कर दायीं और कुछ रास्ते मिले तो उस ने कहाः इस रास्ते पर जा सकते हो। आगे चल कर एक पहाड़ मिला तो उस ने कहाः, इस पर चढ़ जाओ। मैं उस पर चढ़ने लगा तो चूतड़ के बल गिर पड़ा। मैं ने कई मर्तबा चढ़ने की चेष्टा की लेकिन हर बार गिर पड़ा। फिर वह मुझे आगे ले चला तो वहाँ एक ऊँचा खंबा मिला जिस की ऊँचाई आकाश के

बराबर थी, उस के ऊपरी सिरे पर एक छल्ला बना हुआ था। उस ने कहाः इस खंबे पर चढ़ जाओ। मैं ने कहा कि इस पर कैसे चढ़ पाऊँगा, इस का सिरा तो आकश को छू रहा है। फिर उस ने मुझे ऊपर उछाल दिया और मैं उस ऊपरी छल्ले को पकड़ कर लटक गया, फिर उस ने उस खंबे को गिरा दिया लेकिन मैं ने उस छल्ले को नहीं छोड़ा और लटका ही रहा।

जब मेरी आँख खुली तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर अपने इस सपने को बयान किया तो आप ने फ़रमायाः तुम ने जो अपने बायीं ओर के रास्ते देख थे वह गुनहगार लोगों के थे और जो अपने दायीं ओर देखे थे वह नेक लोगों के थे। वह पहाड़ शहीदों का दर्जा था तुम उस दर्जे तक नहीं पहुँच सके (इसीलिये गिर पड़े) वह खंबा इस्लाम का सुतून था और उस के ऊपर का छल्ला इस्लाम का छल्ला है (तुम ने उसे नहीं छोड़ा) तो मरते दम तक इस्लाम पर क़ाइम रहोगे।

फ़ाइदाः– थोड़े से फ़र्क़ के साथ यह रिवायत बुख़ारी में भी आई है (3813–क़ैस बिन अ़ब्बाद) अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम बहुत ही प्रसिद्व यहूदी ज्ञानी थे। जब आप मदीना आये तो इन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से तीन प्रश्न किये, उन का उत्तर पा कर ईमान ले आये।

बाब {सअ़्द बिन मआ़ज़ रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1700:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ ने बयान किया कि जब सअ़्द बिन मआ़ज़ का ज़नाज़ा लोगों के सामने रखा हुआ था, उसी दर्मियान आप ने फ़रमायाः उन के लिये अल्लाह का अर्श (मारे खुशी के) झूम उठा।

1701:– बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास कहीं से रेशम का एक जोड़ा कपड़ा आया तो सहाबा उसे छू कर देखने लगे और उस की नर्मी पर तअ़ज्जुब करने लगे। यह देख कर आप ने फ़रमायाः तुम लोग इस के अधिक नर्म मुलायम होने पर तअ़ज्जुब करते हो? सअ़्द बिन मआ़ज़ का (नाक साफ़ करने वाला) रुमाल जन्नत में इस से कहीं अधिक बेहतर और नर्म है।

फ़ाइदाः– "मआ़ज़ के लिये अल्लाह का अर्श झूम उठा" इस का अ़ल्लामा नौवी ने मुस्लिम की शरह में बहुत विस्तार से लिखा है, सब का खुलासा यह है कि उन की रुह के दुनिया से आख़िरत में जाने से अल्लाह, फ़रिश्तों, अर्श और आख़िरत की समस्त चीज़ों को प्रसन्नता हुयी, इसलिये कि सहाबी रज़ि॰ बहुत नेक थे। वास्तव में अर्श झूम उठा, तो यह भी अल्लाह की ज़ात से दूर नहीं। और अ़र्श के झूमने से प्रसन्नता मुराद लेना यह भी दुरुस्त है।

बुख़ारी की रिवायत में है कि जाबिर रज़ि॰ से किसी सहाबी ने कहा कि बरा बिन

आज़िब ने तो यह बयान किया है कि "जिस चारपाई पर मआज़ का शव रखा हुआ था वह हिल गयी" उन्होंने कहा कि मैंने तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से यह सुना है कि अ़र्श हिल गया (झूम उठा) (बुख़ारी-3803-जाबिर) बहरहाल चाहे अर्श हिला, या चारपाई, दोनों से यही अर्थ निकला कि मआ़ज़ रज़ि॰ नेक और बुर्जुग सहाबी थे। चारपाई को भी खुशी हुयी कि नेक आदमी का शव हमारे ऊपर रखा है। सअ़द रज़ि॰ के जन्नती होने में क्या शुब्हा है कि उन को ऐसा रुमाल मिलेगा कि दुनिया में उस के बारे में सोचा नहीं जा सकता।

बाब {अबू तल्हा अन्सारी और उन की पत्नी उम्मे सुलैम की फ़ज़ीलत का बयान।}

1703/1:— अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि अबू तल्हा का एक बच्चा जो उम्मे सुलैम की कोख से पैदा हुआ थो देहान्त कर गया (अबू तल्हा उन दिनों बाहर गये हुये थे) चुनान्चे उम्मे सुलैम ने घर वालों से कहा कि उन्हें इस बारे में ख़बर न करना, मैं स्वँय उन्हें बताऊँगी। जब वह (यात्रा से) वापस आये तो उन्होंने शाम का खाना खिलाया और अच्छी तरह बनाव-सिंगार किया, फिर उन्होंने संभोग किया। जब वह हर तरह से मुतमइन हो गये तो उन्होंने कहाः ऐ अबू तल्हा! अगर कोई किसी के माँगने पर अपनी चीज़ दे दे, फिर वापस माँगे तो क्या उसे वापस नहीं किया जायेगा? अबू तल्हा ने कहाः बिल्कुल वापस करना पड़ेगा। उम्मे सुलैम ने कहाः अब मैं आप को बताती हूँ कि आप का बेटा देहान्त कर गया है। यह सुन कर अबू तल्हा बहुत नाराज़ हुये और कहने लगेः तू ने मुझे पहले नहीं बताया और जबकि मैं ने तुम से संभोग कर लिया (और नापाक हो गया) तो अब बता रही हो। फिर उन्होंने जा कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इस बारे में सूचना दी तो आप ने फ़रमायाः अल्लाह पाक उस रात के तुम्हारे किये हुये काम में बर्कत दे। अबू तल्हा ने बयान किया कि उसी रात उम्मे सुलैम को हमल ठहर गया (और वह गर्भवती हो गयीं)

फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब सफ़र के लिये निकले तो उम्मे सुलैम भी साथ हो गयीं। जब आप सफ़र से बापस लौटे तो मदीना के निकट ठहर गये (क्योंकि आप वापसी में सीधे नगर में नहीं दाख़िल हो जाते थे) चुनान्चे सभी लोग ठहर गये। इधर इसी दर्मियान उन्हें प्रसव का पीड़ा उठा तो अबू तल्हा उन के पास ठहर गये। इसी बीच नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना में दाख़िल होने के लिये रवाना हो गये (और यह दोनों अकेले रह गये) अबू तल्हा ने बयान किया कि मैं ने अल्लाह पाक से दुआ की कि मेरे मौला! तू अच्छी तरह जानता है कि हमें अपने नबी के साथ निकलना पसन्द है जब वह निकले, और नबी के साथ वापस होना पसन्द है जब भी वह वापस हो। और तू अच्छी तरह जानता है कि आज मैं क्यों रुक गया हूँ।

इसी बीच उम्मे सुलैम ने कहाः ऐ अूब तल्हा! अब मेरा दर्द समाप्त हो गया है इसलिये हम लोग भी मदीना चलें, चुनान्चे हम भी मदीना पहुँच गये। मदीना पहुँचने के

बाद फिर उम्मे सुलैम को दर्द उठा और एक बच्चा जना। बच्चा पैदा हो जाने के बाद उन्होंने अनस से कहाः देखो, इसे कुछ भी न खिलाना-पिलाना जब तक सुब्ह को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास इसे न लेकर जाओ। अनस रज़ि॰ ने कहा कि फिर सुब्ह को मैं बच्चे को लेकर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास गया तो उस समय आप के हाथ में ऊँटों को दाग़ने के लिये कोई लोहा था। आप ने मुझे देख कर फ़रमायाः उम्मे सुलैम का बच्चा है? मैं ने कहाः जी हाँ। आप ने दाग़ने का लोहा रख दियाऔर मैं ने आप की गोद में बच्चे को रख दिया। आप ने अज्वा खजूर मँगाई और उसे चबा कर नर्म किया जब वह गल गयी तो उसे बच्चे के मुँह में डाल दिया और वह चूसने लगा। यह देख कर आप ने फ़रमायाः देखो, अन्सार को खजूर से कितनी मोहब्बत है, आप ने उस के मुँह पर हाथ फेरा और उस का नाम अ़ब्दुल्लाह रखा।

फ़ाइदाः- इस हदीस से कितनी बातें मालूम हुयीं अनुमान लगाना कठिन है। उम्मे सुलैम रज़ि॰ का ईमान कितना पक्का था, उन का मर्तबा कितना बुलन्द था वह कितनी ज्ञानी थीं, आप अनुमान लगा सकते हैं। जिस बच्चे का देहान्त हुआ था उस का नाम उमैर था। आप जब उम्मे सुलैम के घर आते तो उस बच्चे से खेलते और फ़रमातेः ऐ उमैर! नुग़ैर कहाँ गया (देखें ऊपर हदीस न॰ 1414) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस रात संभोग में बर्कत की दुआ़ की जिस से उम्मे सुलैम गर्भवती हो गयीं और अ़ब्दुल्लाह नामक बालक पैदा हुआ। इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि किसी बुर्जुग से कोई मीठी चीज़ चबवा कर मुँह में बच्चे के डालना इस में बर्कत है। (देखें ऊपर की हदीस न॰ 1401)

बाब {उबय्यि बिन कअ़ब रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1703/2:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़िन्दगी ही में चार सहाबा ने कुरआन पाक को जमा कर लिया था और वह चारों अन्सारी थे (1) मआ़ज़ बिन जबल (2) उबय्यि बिन कअ़ब (3) ज़ैद बिन साबित (4) अबू ज़ैद। अ़बू क़तादा रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने अनस से पूछाः यह अबू ज़ैद कौन हैं? उन्होंने बताया कि यह मेरे चचाओं में से एक चचा थे।

फ़ाइदाः- (बुख़ारी शरीफ़-3810-अनस बिन मालिक) उबय्यि बिन कअ़ब रज़ि॰ क़बीला ख़ज़रज के अन्सारी सहाबी थे। पहली घाटी की बैअ़त में शरीक थे, फिर बद्र की लड़ाई में भी शरीक रहे। सन 30 हि॰ में देहान्त किया। अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ उबय्यि! अल्लाह ने हुक्म दिया है मैं तुम्हें कुरआन पढ़ कर सुनाऊँ। उन्होंने कहाः अल्लाह पाक ने मेरा नाम लेकर कहा है? आप ने फ़रमायाः हाँ, हाँ, तुम्हारा नाम लेकर मुझे हुक्म दिया है। यह सुन कर सहाबी मारे खुशी के रोने लगे। अल्लाह पाक किसी नेक कार्य में किसी का अपनी ज़बान से नाम ले, इस से बड़ी फ़ज़ीलत और क्या होगी। इस हदीस से यह शुब्हा न हो कि केवल चार ही सहाबा कुरआन जमा करने वाले थे। यह अनस बिन मालिक का ख़याल

है। वर्ना सैकड़ों हाफ़िज़ मौजूद थे। केवल यमामा की जन्ग में 70 हाफ़िज़ शहीद हुये थे। चारों ख़लीफ़ा क्या कुरआन के हाफ़िज़ नही थे? इसलिये यह कहना कि इस के दर्मियान तसलसुल नहीं है कोरा झूठा है।

बाब {अबू ज़र गिफ़ारी रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1704:– अ़ब्दुल्लाह बिन सामित से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अबू ज़र रज़ि॰ने मुझ से बयान किया कि हम अपने क़बीला ग़िफ़ार से रवाना हुये। क़बीला के लोग हराम महीना को भी हलाल मानते थे (और उस हराम महीना में भी लड़ाई-भिड़ाई करते थे) चुनान्चे मैं, मेरा भाई उनैस और मेरी माता जी तीनों (मक्का के लिये) रवाना हुये और अपने एक मामूँ के पास पहुँचे तो उन्होंने हम सब की बड़ी आवभगत और हर प्रकार की सेवा की। लेकिन मेरी क़ौम वालों को उन की सेवा अच्छी नहीं लगी तो उन्होंने मेरे मामूँ से हसद में आ कर कह दिया कि जब तुम घर से बाहर चले जाते हो तो उनैस तुम्हारी पत्नी से ज़िना करता है। चुनान्चे मेरे मामूँ ने भी इस (झूठी) बात को (अपनी मूर्खता से) मशहूर कर दिया। इस पर मैं ने उन से कहाः तुम ने हमारे ऊपर जो एहसान किया है वह भी मिट्टी में मिल गया, अब हम लोग तुम्हारे पास नहीं रह सकते। चुनान्चे अपने ऊँटों के पास जा कर हम ने अपना सामान लादा (और रवाना हो गये) उधर मेरे मामूँ ने कपड़े से अपने मुँह को छुपा कर रोना शुरु कर दिया। लेकिन हम लोग वहाँ से चल पड़े और मक्का के निकट पहुँच कर पड़ाव डाल दिया। वहाँ पहुँच कर उनैस ने अपने मामूँ से शर्त लगाई कि इस समय जितने ऊँट मेरे पास हैं उतने ऊँट लेकर मैं फ़लाँ काहिन के पास चलता हूँ (वह फैसला करेगा कि मैं अच्छा हूँ या बुरा) चुनान्चे दोनों जब काहिन (ज्योतिषि) के पास पहुँचे तो उस ने उनैस की प्रशंसा की और कहने लगा कि उनैस के पास जितने ऊँट थे उसे लाया है और उतने ही और ऊँट भी लाया है (इस का यह अर्थ है कि यह अ़िज़्ज़तदार है)

अबू ज़र रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने अपने भाई उनैस से कहाः मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मुलाक़ात करने से तीन वर्ष पूर्व ही से नमाज़ पढ़ता रहा हूँ। अ़ब्दुल्लाह बिन सामित ने पूछाः आप किस के लिये पढ़ते थे? मैं ने कहाः अल्लाह के लिये पढ़ता था। मैं ने पूछाः किस ओर मुँह कर के पढ़ते थे? उन्होंने कहाः जिस तरफ़ अल्लाह मुँह कर के पढ़ाता था। रात के अन्तिम समय अ़िशा की नमाज़ पढ़ कर कंबल ओढ़ कर सो जाता और सूरज की धूप पड़ने तक सोता रहता।

इसी दर्मियान उनैस ने मुझ से कहा कि मुझे मक्का में कुछ काम है इसलिये मैं तो जा रहा हूँ और आप यहीं रुके रहें। चुनान्चे वह नगर में गये लेकिन आने में बहुत देरी की (जब वापस आये) तो मैं ने उन से पूछाः क्यों इतनी देर लगाई? उन्होंने कहाः मैं ने नगर मक्का में एक व्यक्ति से मुलाक़ात की है, उस का भी दीन आप के दीन ही की तरह है, उस का भी कहना है कि उसे अल्लाह ने (नबी बना कर) भेजा है। मैं

ने उन से पूछा: लोगों का उस के बारे में क्या ख़याल है? उन्होंने कहा: लोग उसे कवि, काहिन (नजूमी) और जादूगर कहते हैं। उनैस स्वँय कवि थे उन्होंने कहा कि मैं ने काहिनों की बातें सुनी हैं, लेकिन वह व्यक्ति जो बात कहता है काहिन की बात नहीं हो सकती। मैं ने उस के कलाम को कविता की कसौटी पर भी परखा है लेकिन वह कविता के समान भी नहीं लगता। अल्लाह की क़सम! वह व्यक्ति जो भी कहता है सच कहता है और लोग झूठे हैं।

मैं ने उनैस से कहा: तुम यहीं ठहरो, मैं भी जा कर उस के बारे में मालूमात करता हूँ। चुनान्चे मैं नगर मक्का में जा कर एक कमज़ोर व्यक्ति को तलाशा और उस से पूछा: वह व्यक्ति कहाँ है जिस को तुम लोग बेदीन कहते हो? यह सुन कर उस ने कहा कि तुम भी तो बेदीन हो (इसलिये बेदीन के बारे में पूछ रहे हो) यह सुन कर मक्का वालों ने हड्डी ढेले (आदि) लेकर मुझ पर हमला कर दिया और मुझे मार-मार कर बेहोश कर दिया। फिर जब मुझे होश आया और उठ कर खड़ा हुआ तो क्या देखता हूँ कि गोया मैं किसी लाल बुत की तरह हूँ (यानी सर से पैर तक खून में डूबा हुआ हूँ) मैं उठ कर ज़मज़म कुँए के पास गया और खून को धोया और ज़मज़म का पानी पिया। मेरे भतीजे! मैं मक्का में तीस रात या तीस दिन तक ठहरा रहा, मेरे पास ज़मज़म पानी के अलावा खाने-पीने की और कोई चीज़ न थी (जिस से में अपनी भूख मिटाता) लेकिन ज़मज़म पीने से मैं इतना मोटा हो गया कि पेट में बट पड़ गया और भूख की कमज़ोरी भी समाप्त हो गयी।

एक मर्तबा ऐसा हुआ कि चाँदनी रात थी और मक्का वाले सो रहे थे, उस समय कोई भी तवाफ़ नहीं कर रहा था। केवल दो महिलायें असाफ़ और नाइला नामक दो बुतों की पुकार लगा रही थीं। वह तवाफ़ करते हुये मेरे सामने आयीं तो मैं ने उन दोनों से कहा: इन बुतों का एक-दूसरे से निकाह कर दो। यह सुन कर भी वह उन की पुकार लगाती रहीं तो मैं ने भी कह दिया: उन की शर्मगाह में लकड़ी, और मैं ने तनिक भर इशारा से काम न लिया (बल्कि स्पष्ट शब्दों में गाली दी) यह सुन कर वह कहने लगीं कि काश इस मौक़े पर हमारे अपने लोगों में से कोई होता (तो तुम्हें सबक़ पढ़ाता) यह कह कर चीख़ती-चिल्लाती हुयी भाग खड़ी हुयीं। इसी बीच हमें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और अबू बक्र राह में मिल गये। वह दोनों पहाड़ी से नीचे उतर रहे थे। आप ने उन से पूछा: क्या मामला है? (क्यों चीख़ रही हो?) उन्होंने बताया कि एक बेदीन आया हुआ है जो काबा के पर्दों के बीच खड़ा हुआ है। आप ने पूछा: वह बेदीन क्या कह रहा था? वह बोलीं कि इतनी बुरी बातें कह रहा था जिसे में दोहरा नहीं सकती। फिर आप ने आ कर हजरे-अस्वद को बोसा दिया और अपने साथी अबू बक्र के साथ तवाफ़ किया और नमाज़ अदा की। जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो अबू ज़र ने कहा कि सर्वप्रथम मैं ने सलाम करते हुये कहा: अस्सलामु अ़लैकुम या रसूलल्लाह! आप ने उत्तर

दियाः व-अ़लै-क व-रह-मतुल्लाहि! इस के बाद पूछा कि तुम कौन हो? मैं ने हाः क़बीला ग़िफ़ार का रहने वाला हूँ। यह सुन कर आप ने अपने हाथ की उंगलियों को अपनी पेशानी पर रख लिया। यह देख मैं ने अपने दिल में सोचा कि शायद आप को मेरा यह कहना कि मैं क़बीला गिफ़ार का रहने वाला हूँ बुरा लगा है। चुनान्चे मैं ने आप का हाथ पकड़ने के लिये अपना हाथ आप की तरफ़ बढ़ाया तो अबू बक्र ने ऐसा करने से रोक दिया, क्योंकि वह आप का हाल मुझ से अधिक बेहतर जानते थे।

फ़िर आप ने सर उठा कर पूछाः तुम यहाँ कब से ठहरे हुये हो?मैं ने कहाः तीस रात या तीस दिन से। आप ने पूछाः खिलाता-पिलाता कौन है? मैं ने कहाः खाना-पीना का प्रश्न ही नहीं उठता, केवल ज़मज़म का पानी पी लेता हूँ, चुनान्चे मैं इतना तन्दुरुस्त हो गया हूँ कि मेरे पेट में बट पड़ गया है। आप ने फ़रमायाः ज़मज़म के पानी में बड़ी बर्कत है, वह खाने का काम देता है, इस के पीने से पेट भर जाता है (और भूख समाप्त हो जाती है) यह सुन कर अूब बक्र ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! आज की रात इन्हें खाना खिलाने की मुझे अनुमति दीजिये। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और अबू बक्र रवाना हुये तो मैं भी उन दोनों के पीछे-पीछे चल पड़ा, फिर अबू बक्र ने एक दर्वाज़ा खोल कर ताइफ़ की सूखी किशमिश निकाल कर मुझे दिया। यह मेरा मक्का में रहने के दौरान पहला खाना था जो मैं ने खाया। फिर मैं मक्का में चन्द दिन और रहा। जब आप से मिलने के लिये आया तो आप ने फ़रमायाः मुझे सपने में खजूरों वाली ज़मीन दिखाई गयी है, मेरे ख़याल से वह यसरिब (मदीना) की सरज़मीन है। तुम जा कर अपनी क़ौम वालों को दीन इस्लाम की दावत दो, हो सकता है अल्लाह पाक तुम्हारी दावत की वजह से उन्हें दीन इस्लाम कुबूल करने की तौफ़ीक़ दे और तुम्हें उस का सवाब मिले।

फिर जब मैं उनैस के पास लौटा तो उन्होंने पूछाः आप वहाँ क्या करते रहे? मैं ने कहाः मैं ने इस्लाम को कुबूल किया और आप के नबी होने की तस्दीक़ की। फिर हम दोनों अपनी माता जी के पास आये तो उन्होंने कहाः हमें भी तुम दोनों का दीन पसन्द है इसलिये मैं भी दीन इस्लाम को स्वीकार करती हूँ और मैं भी आप के नबी होने की तस्दीक़ करती हूँ। फिर हम ने ऊँटों पर सामान लादा और अपने क़बीला ग़िफ़ार को वापस लौट गये। उस समय क़बीला के आधे लोग ईमान ला चुके थे, उन के इमाम ईमान बिन रहज़ा गिफ़ारी थे, वही उन के सर्दार भी थे। और आधे लोगों ने यह कहा कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना हिजरत कर के आयें गे जब हम इस्लाम लायें गे। चुनान्चे जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाये तो वह आधी क़ौम के लोग भी इस्लाम में दाख़िल हो गये। इस के बाद क़बीला अस्लम के लोग भी आये और कहने लगेः ऐ अल्लाह के रसूल! हम लोग अपने भाइयों की तरह इस्लाम को स्वीकार करते हैं, चुनान्चे वह भी इस्लाम ले आये। इस पर आप ने (दुआ़ करते हुये) फ़रमायाः अल्लाह पाक ने क़बीला ग़िफ़ार को बख़्श दिया और क़बीला बनी अस्लम को बचा लिया।

1705:— इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब अबू ज़र ग़िफ़ारी को पता चला कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मक्का में अपने नबी होने का दावा किया है तो उन्होंने अपने भाई उनैस से कहा कि ऊँट पर सवार हो कर मक्का जाओ और उसके बारे में तहक़ीक़ कर के आओ जो कहता है कि मेरे पास आसमान से ख़बर आती है। चुनान्चे उनैस रवाना हुये और मक्का पहुँच कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बातें सुनीं फिर वापस जा कर अपने भाई अबू ज़र को बताया कि मैं ने उस व्यक्ति से मुलाक़ात की है, वह नेकी के कार्य का आदेश देता है और ऐसे शब्द पढ़ कर सुनाता है जो कविता नहीं है। अबू ज़र ने बयान किया कि मुझे अपने भाई की बातों से तसल्ली नहीं हुयी चुनान्चे मैं ने स्वँय खाने-पीने का सामान बाँधा, एक मशक पानी का लिया और मक्का पहुँच कर बैतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल हो गया। वहाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तलाश किया, मैं आप को पहचानता भी न था और किसी से आप के बारे में पूछना भी उचित न जाना इसलिये रात को वहीं पड़ कर सो गया। अ़ली रज़ि॰ ने मुझे देखा तो समझ गये कि मुसाफ़िर है, तो मैं भी उन के पीछे-पीछे चल पड़ा, लेकिन किसी ने एक-दूसरे से किसी प्रकार की कोई बात न की (रात उन के घर रहे) जब सुब्ह हुयी तो मैं अपने खाने-पीने का सामान और पानी का मशक लेकर बैतुल्लाह शरीफ़ वापस आ गया और दिन भर वहीं रहा, लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कहीं नज़र न आये। जब रात हो गयी तो मैं अपने सोने की जगह पर चला गया, इतने में अ़ली रज़ि॰ फिर मेरे पास से गुज़रे तो कहने लगे: अभी इस व्यक्ति के लिये अपने ठिकाने पर पहुँचने का समय नहीं आया है, फिर उन्होंने मुझे खड़ा किया और मैं उन के साथ हो गया, लेकिन इस मर्तबा भी किसी ने एक-दूसरे से कोई बात-चीत न की। फिर इसी प्रकार तीसरा दिन भी बीत गया तो अ़ली रज़ि॰ ने मुझे खड़ा किया और कहने लगे: आप मुझ से अपना मक़सद क्यों नहीं बयान करते जिस के लिये मक्का में आये हैं? इस पर मैं ने उन से कहा: अगर आप मुझ से पक्का वादा करें कि मैं तुम्हारी रहनुमाई करुँगा तो मैं आप को अपना मक़सद बयान करुँ। चुनान्चे उन्होंने वादा किया (तो मैं ने अपने आने का मक़सद उन के सामने रखा) तो उन्होंने बताया कि वह सच्चे हैं और वास्तव में अल्लाह के संदेष्टा हैं। ऐसा है कि तुम सुब्ह को मेरे साथ चलना (और देखो!) अगर राह में कोई ऐसी बात देखूँगा जिस से तुम्हारी जान जाने का डर हो तो मैं (किसी दीवार के निकट) खड़ा हो जाऊँगा गोया पेशाब करने की हाजत है। और अगर चलता रहूँ तो तुम भी मेरे साथ पीछे-पीछे चलते रहना। जहाँ मैं अन्दर दाख़िल हूँगा तुम भी उस घर के अन्दर घुस जाना। अबू ज़र रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने उन के कहने के अनुसार अ़मल किया और उन के पीछे-पीछे चलता रहा, यहाँ तक कि अ़ली नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास पहुँचे तो मैंभी उन के पीछे-पीछे आप के पास पहुँच गया। मैं ने आप की बातें सुनीं और वहीं इस्लाम ले आया।

इस के बाद आप ने फ़रमायाः तुम अपने क़बीला के लोगों के पास जा कर उन के दर्मियान तबलीग़ करो यहाँ तक कि मेरे ग़ालिब आ जाने की तुम्हें सूचना मिले (उस समय तुम मुझ से मिलना)

अबू ज़र ने यह सुन कर कहाः उस अल्लाह की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है मैं इस बात को मक्का वालों को बुलन्द आवाज़ से पुकार कर सुनाऊँगा। इस के बाद मैं आप के पास से उठ कर सीधे बैतुल्लाह शरीफ़ आया और बुलन्द आवाज़ से पुकार कर कहाः "अश्-हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व-अन्न मु-हम्म-दन् रसूलुल्लाहि" (मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा और कोई मांबूद नहीं, और मुहम्मद अल्लाह के भेजे हुये सच्चे संदेष्टा हैं)

यह सुन कर मक्का वालों ने मुझ पर धावा बोल दिया और मार-मार कर मुझे ढेर कर दिया। इसी बीच अ़ब्बास रज़ि॰ मेरे पास आ गये और मेरे ऊपर झुक गये (और मुझे बचाये हुये) लोगों से कहने लगेः तुम लोगों की बर्बादी हो, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि यह क़बीला बनी ग़िफ़ार का रहने वाला है और तुम मुल्क शाम को तिजारत के लिये इस के क़बीला से होकर जाते हो (यह लोग भी तुम्हारा आना-जाना बन्द कर देंगे) यह कह कर उन्होंने मुझे उन से बचाया। दूसरे दिन मैं ने फिर वैसे ही एलान किया तो उन लोगों ने दोबारा मुझ पर धावा बोल दिया और मारने लगे तो अ़ब्बास रज़ि॰ ने इस बार भी मेरे ऊपर झुक कर मुझे उन लोगों से बचाया।

फ़ाइदाः- यह बड़े बुर्ज़ुग सहाबी हैं। इन का नाम जुन्दुब था। इस्लाम लाने वालों में इन का पाँचवाँ स्थान है। ख़न्दक़ की लड़ाई में शरीक रहे। यह बड़े तेज़ मिज़ाज के थे, बड़ी जल्दी भड़क उठते थे, इसलिये लोगों से कम पटती थी। चुनान्चे उस्मान रज़ि॰ ने अपने शासन काल में इन्हें ज़बदा के स्थान पर रहने के लिये भेज दिया और वहीं सन 32 हि॰ में देहान्त किया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सन्देष्टा बनाए जाने से पूर्व भी अल्लाह की इबादत किया करते थे। यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी आयी है (3522, 3861-इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰)

बाब {अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1706:- अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं (हबश से वापस होकर) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास उस समय पहुँचा जबकि आप मक्का और मदीना के दर्मियान जिइर्राना के स्थान पर ठहरे हुये थे, उस समय आप के पास बिलाल भी उपस्थित थे। इसी बीच एक देहाती ने आ कर कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! आप जो वादा करते हैं उसे पूरा नहीं करते। आप ने फ़रमायाः (मैं तुम्हें बशारत देता हूँ) खुश हो जाओ। उस ने कहाः आप हमेशा खुश होने की सूचना ही देते हैं। यह सुन कर आप नाराज़गी की हालत में अबू मूसा और बिलाल की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमायाः उस ने बशारत को रद्द कर दिया, इसलिये तुम दोनों कुबूल कर लो। चुनान्चे

हम ने कहाः हम दोनों ने कुबूल किया। फिर आप ने पानी का एक पियाला मँगवा कर उस में अपने दोनों हाथों और मुँह को धोया, फिर उस में कुल्ली की और फ़रमायाः इस पानी को पी लो और अपने मुँह और सीने पर भी छिड़क लो और खुश हो जाओ। चुनान्चे हम दोनों ने पियाला लेकर पानी पिया और छिड़कना शुरु किया तो आप नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी उम्मे सलमा रज़ि॰ ने पर्दे के ओट से आवाज़ लगायीः अपनी माँ के लिये भी कुछ थोड़ा-बहुत बचा लेना, चुनान्चे उन्हें भी थोड़ा सा पानी बचा कर दे दिया।

फ़ाइदाः— इस हदीस को समझने के लिये हदीस न॰ 1687 भी पढ़ें। अबू मूसा आप के पास कैसे पहुँचे? वह दीहाती बड़ा अभागा था कि जल्द बाज़ी में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नाराज़ कर बैठा और एक अच्छे अवसर को गँवा बैठा।

बाब {अबू मूसा और अबू आ़मिर अश्अ़री रज़ि॰ के मसाइल का बयान।}

1707:— अबू बुर्दा अपने पिता अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत करते हैं कि मेरे पिता जी ने बयान किया कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हुनैन की जन्ग से निमट चुके तो (तुरन्त ही) अब आ़मिर को एक लश्कर देकर औतास की जन्ग के लिये भेज दिया। वहाँ उन का मुक़ाबला दुरैर बिन सिम्मा से हुआ जो मौत के घाट उतार दिया गया और अल्लाह पाक ने दुश्मन को पराजित कर दिया। अबू मूसा ने बयान किया कि मुझे भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अबू आ़मिर के साथ रवाना किया था। जन्ग के दौरान क़बीला बनी जुशम के एक व्यक्ति ने अबू आ़मिर पर तीर चलाया जो उन के घुटने में जा कर धँस गया। मैं ने उन के पास जा कर पूछाः ऐ मेरे चचा! तुम्हें यह तीर किस ने मारा है? उन्होंने मुझे इशारा से बताया कि उस फ़लाँ ने मुझ पर क़ातिलाना हमला कर के तीर चलाया है। अबू मूसा ने बयान किया कि मैं ने उस का पीछा कर के उसे जा दबोचा, उस ने मुझे देखा तो पीठ फेर कर भागने लगा, मैं ने भी उसे यह कहते हुये दौड़ाया कि ओ बेहया! क्या तेरा संबन्ध अ़रब वालों से नहीं है कि ठहर जा (और मेरा मुक़ाबला कर) बहरहाल हम दोनों आपने-सामने हो गये, उस ने मुझ पर वार किया और मैं ने उस पर किया। अन्ततः मैं ने उसे अपनी तल्वार से मौत के घाट उतार दिया और वापस लौट कर अबू आ़मिर से कहा कि अल्लाह पाक ने तुम्हारे हत्यारे को मौत के घाट उतार दिया। अबू आ़मिर ने कहाः अब इस तीर को मेरे घुटने से निकालो। चुनान्चे मैं ने उसे निकाला तो तीर के स्थान से पानी निकलने लगा (खून नहीं निकला) फिर अबू आ़मिर ने मुझ से कहाः ऐ मेरे भतीजे! तुम अल्लाह के रसूल के पास जा कर मेरा सलाम पहुँचा दो और यह भी कह देना कि अबू आ़मिर की बख़्शिश के लिये दुआ़ फ़रमा दीजिये। अबू मूसा ने बयान किया कि उन्होंने अपने स्थान पर मुझे फ़ौज का कमान्डर बना दिया और कुछ समय पश्चात् देहान्त कर गये। मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास पहुँचा तो आप उस समय किसी घर में चारपाई

पर जिस पर बिछौना बिछा हुआ था बैठे हुये थे। उस चारपाई की रस्सी का निशान आप की पीठ और पिसुलियों पर बन गया था। मैं ने आप से अपना और अबू आ़मिर का हाल बयान किया और कहा कि अबू आ़मिर ने आप से अनुरोध किया था कि मेरे लिये बख़्शिश की दुआ़ फ़रमा दीजिये। यह सुन कर आप ने पानी मँगवाया, फिर वज़ू कर दोनों हाथों को उठा कर फ़रमायाः ऐ मेरे मौला! उबैद अबू आ़मिर को बख़्श दे। आप ने दुआ़ के लिये अपने हाथों को इतना ऊपर उठाया कि मैं ने आपके बग़ल की सफ़ेदी देख ली। फिर फ़रमायाः ऐ मेरे मौला! क़ियामत के दिन अबू आ़मिर को लोगों का सर्दार बना दीजिये। मैं ने यह सुन कर अनुरोध कियाः ऐ अल्लह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! और मेरे लिये भी दुआ़ फ़रमा दीजिये। इस पर आप ने फ़रमायाः ऐ मेरे मौला! अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस के भी गुनाहों को बख़्श दे और क़ियामत के दिन उन्हें अ़िज़्ज़त के मकान में स्थान दे। अबू बुर्दा ने बयान किया कि इस प्रकार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक दुआ़ अबू आ़मिर के लिये की और एक दुआ़ मेरे पिता अबू मूसा के लिये फ़रमायी।

फ़ाइदाः– तीर निकलने पर खून के स्थान पर पानी निकला, इसलिये कि तीर ज़हर में बुझा हुआ था। अबू आ़मिर का नाम उबैद बिन सलीम था। अबू मूसा की कुन्नियत अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस थी। चारपाई पर बिस्तर नहीं बिछा था, यहाँ रावी से भूल हुयी है, जभी तो रस्सी के निशान आप की पीठ में पड़ गये थे। बुख़ारी (4323–अबू बुर्दा) औतास की जन्ग यूँ हुयी कि हुनैन की जन्ग में पराजित होकर काफ़िर बिखर गये। कुछ ताइफ़ के क़िला में बन्द हो गये, कुछ नख़्ला के स्थान पर चले गये और कुछ औतास के स्थान पर एकत्र हो गये। इन्हीं को कुचलने के लिये आप ने अबू आ़मिर की कमान्डरी में एक दस्ता रवाना किया। यह घटना सन 8 हि॰ की हुनैन के तुरन्त बाद की है।

बाब {अबू हुरैरा रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1708:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मेरी माँ ने जब इस्लाम नहीं कुबूल किया था तो मैं उन्हें बराबर इस्लाम की दावत देता रहा। चुनान्चे एक दिन उन्हें इस्लाम की दावत दी तो उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बारे में ऐसी बात कह दी जिसे सुन कर मुझे बड़ी तक्लीफ़ हुयी और रोता हुआ सीधे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास पहुँचा और अनुरोध किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपनी माता जी को बराबर इस्लाम लाने की दावत देता हूँ लेकिन वह राज़ी नहीं होती हैं, आज फिर उन्हें समझाया तो उन्होंने आप की शान में ऐसी गुस्ताख़ी की जिस से मुझे बड़ी तक्लीफ़ हुयी, आप अल्लाह पाक से दुआ़ फ़रमा दीजिये कि वह अबू हुरैरा की माँ को इस्लाम लाने की तौफ़ीक़ दे दे। आप ने (दुआ़ करते हुये) फ़रमायाः ऐ अल्लाह! अबू हुरैरा की माँ को हिदायत दे दे। मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुआ़ से खुश हो कर वापस हुआ और घर पहुँचा तो दर्वाज़ा अन्दर से बन्द था। मेरी माँ ने जब

मेरे आने की आहट सुनी तो कहने लगींः ज़रा देर के लिये बाहर ठहरे रहो। अबू हुरैरा रज़ि॰ ने बयान किया कि मैंने उस दौरान पानी गिरने की आवाज़ सुनी (जैसे कोई स्नान कर रहा हो) इस दर्मियान मेरी माता जी ने स्नान किया, क़मीस पहनी और जल्दी से दूपट्टा ओढ़ा, फिर दर्वाज़ा खोल कर कहने लगीः अश्-हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व-अश्-हदु अन्न मु-हम्म-दन् अ़ब्दुहू व-रसूलुहू (यानी मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त और कोई माबूद नहीं, और इस बात की गवाही देती हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) अल्लाह के बन्दे और सन्देष्टा हैं)

अबू हुरैरा रज़ि॰ ने बयान किया कि यह देख कर ख़ुशी के आसूँ रोता हुआ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और कहा कि ऐ अल्लह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! मुबारक हो, अल्लह पाक ने आप की दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ली और अबू हुरैरा की माँ को हिदायत दे दी। यह सुन कर आप ने अल्लाह की तारीफ़ बयान की और नेक बातें कहीं। मैंने फ़िर अनुरोध किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप इस बात के लिये भी दुआ़ फ़रमा दीजिये कि अल्लाह पाक मेरीऔर मेरी माँ की मोहब्बत मुसलमानों के दिलों में डाल दे। आप ने फ़रमायाः ऐ अल्लाह! अपने इस बन्दे यानी अबू हुरैरा और उस की माँ की मोहब्बत अपने बन्दों के दिलों में डाल दे और मोमिन बन्दों की मोहब्बत इन के दिलों में डाल दे। (अबू हुरैरा रज़ि॰ ने बयान किया कि) इस के बाद कोई मोमिन बन्दा ऐसा नहीं हुआ जिस ने मुझे देखा और सुना और मुझ से मुहब्बत न की हो।

1709:– उर्वा बिन ज़ुबैर से रिवायत है उन्होंने बयान कि (एक मर्तबा) आ़इशा रज़ि॰ ने कहाः तुम लोगों को अबू हुरैरा (के इस प्रकार जल्दी-जल्दी हदीस बयान करने) पर अफ़सोस करना चाहिये। उन्होंने आ कर मेरे हुजरे के एक कोने में बैठ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीस (जल्दी-जल्दी) बयान करने लगे। मैं उस समय नमाज़ पढ़ रही थी (वर्ना मैं उन्हें ज़रुर टोकती) और मेरे नमाज़ से फ़ारिग़ होने से पहले ही चले गये। अगर मैं उन्हें पाती तो उन का रद्व करती, क्यों कि जैसी जल्दी-जल्दी बातें तुम लोग करते हो, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस प्रकार बात नहीं करते थे।

इब्ने शिहाब ज़हरी और सओ़द बिन मुसय्यिब ने बयान किया कि अबू हुरैरा रज़ि॰ ने कहा कि अबू हुरैरा बहुत अधिक हदीसें बयान करते हैं, इन के विपरीत मुहाजिर और अन्सार लोग मेरी तरह अधिक हदीसें नहीं बयान करते हैं। मैं अधिक हदीसें बयान करने का कारण बताता हूँ। बात यह है कि मेरे अन्सारी भाई ज़मीन में खेती-किसानी में लगे रहते थे और मुहाजिर भाई बाज़ारों में लेन-देन में मस्रुफ़ रहते थे, और मेरा हाल यह था कि खाना खा कर सीधे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास पहुँचता और हर दम आप की सेवा में उपस्थित रहता। चुनान्चे मैं मौजूद होता और वह ग़ैर हाज़िर रहते, मैं याद रखता और वह भूल जाते। एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

ने फ़रमायाः तुम में से जो कोई अपनी चादर फैला कर मेरी हदीस सुनेगा फिर उसे अपने सीने से लगा लेगा तो वह जो भी हदीस सुनेगा उसे कभी न भूलेगा। यह सुन कर मैं ने अपनी चादर बिछा दी और जब आप हदीस बयान कर चुके तो मैं ने चादर को सीने से लगा लिया। चुनान्चे उस दिन के बाद से मैं ने जो भी हदीस सुनी कभी नहीं भूला। और अगर इन दो आयतों ( ) को अल्लाह पाक कुरआन पाक में न नाज़िल करता तो मैं कभी कोई हदीस न बयान करता।

फ़ाइदा:– बुख़ारी की रिवायत में है कि अबू हुरैरा रज़ि॰ ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! आप से जो बातें सुनता हूँ उसे भूल जाता हूँ। आप ने फ़रमायाः चादर फैलाओ। मैं ने चादर फैला दी तो आप ने अपने दोनों हाथों को चुल्लू बना कर उस में डाल दिया। फिर आप ने फ़रमायाः अब चादर समेट लो। चुनान्चे मैं ने चादर को समेट कर अपने शरीर पर लपेट लिया। इस के बाद से मैं कभी कोई बात नहीं भूला (119–अबू हुरैरा)

बाब {अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा की फ़ज़ीलत का बयान।}

1710:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उहुद की जन्ग के दिन तल्वार को हाथ में लेकर फ़रमायाः इस तल्वार को कौन मुझ से लेगा? यह सुनते ही लोगों ने अपने-अपने हाथों को बढ़ा दिया और हर कोई यही कहता था कि मैं लूँगा, मैं लूगाँ। आप ने फिर फ़रमायाः कौन इस का हक़ अदा करेगा? यह सुनकर लोग ठन्डे पड़ गये। इस पर सिमाक बिन ख़रशा अबू दजाना ने कहाः मैं इस तल्वार को लेकर इस का हक़ अ़दा करुँगा। फिर उसे लेकर मुश्रिकों का सर फाड़ना आरंभ कर दिया।

फ़ाइदा:– तल्वार का हक़ अदा करने के नाम सुन कर कुछ सहाबा इसलिये ठन्डे पड़ गये थे कि उस समय काफ़िर जन्ग में मुसलमानों पर हावी थे। और ज़ाहिर में शिकस्त से दो चार थे। ऐसे नाजुक मौक़े पर तल्वार लेकर जी-जान से लड़ना बड़ी फ़ज़ीलत की बात है। अबू दुजाना ने सर पर लाल पट्टी बाँध कर लड़ रहे थे, इतने में देखा कि कोई व्यक्ति उन को उभार रहा है चुनान्चे उस पर तल्वार लेकर लपके तो वह चीख़ने लगा। मालूम हुआ कि वह हिन्द उत्बा की पुत्री है जो मर्दाना लिबास पहने हुये है। सहाबी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तल्वार से महिला का क़त्ल करना मुनासिब न जाना और उसे छोड़ दिया (पैंगंबरे-आ़लम-मौलाना मन्ज़र)

बाब {अबू सुफ़यान सख़ बिन हर्ब रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1711:– अबू ज़ुमैल से रिवायत है कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि॰ ने बयान किया कि मुसलमान अबू सुफ़यान की तरफ़ न तो ध्यान देते थे और नही उन के साथ उठते-बैठते थे (क्योंकि कुफ़्र की हालत में मुसलमानों से कई लड़ाइयाँ लड़ी थीं) चुनान्चे उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अनुरोध कियाः ऐ अल्लाह के नबी! आप

मुझे तीन चीजें दे दीजिये। आप ने फ़रमायाः (दे दूँगा) उन्होंने कहाः मेरे पास मेरी पुत्री उम्मे हबीबा है जो अ़रब में सब से सुन्दर लड़की है, मैं आप से उस का विवाह कर देना चाहता हूँ। आप ने फ़रमायाः ठीक है। उन्होंने कहाः दूसरा अनुरोध यह है कि मेरे पुत्र मुआ़विया को अपना मुन्शी (प्रसनल सिक्रेटी) बना लीजिये। आप ने फ़रमायाः ठीक है। उन्होंने कहाः मुझे काफ़िरों से जन्ग करने की अनुमति दे दीजिये ताकि मैं उन से उसी प्रकार जन्ग करुँ जिस प्रकार (इस्लाम लाने से पूर्व) मुसलमानों से करता था। आप ने फ़रमायाः ठीक है।

हदीस के रावी अबू जुमैल ने बयान किया कि अगर वह आप से अनुरोध न करते तो आप स्वँय ही उन्हें कुछ न देते, क्योंकि आप की यह आदत थी कि जब कोई प्रश्न करता तभी आप हाँ कहते थे।

फ़ाइदाः– उम्मे हबीबा सर्वप्रथम ईमान लाने वालों में से हैं। अपने पति उबैदुल्लाह के साथ हबश की तरफ़ हिजरत की। पति बड़ा पियक्कड़ (शराबी) था, वहाँ जा कर मुर्तद हो गया। अब यह तन्हा रह गयीं तो आप ने अ़म्र बिन उमय्या के हाथ उन्हें शादी का संदेश भेजा, उन्होंने स्वीकार कर लिया। वहाँ के बादशाह नजाशी ने स्वँय निकाह की मज्लिस जमा कर के स्वँय निकाह का खुत्बा पढ़ा, चार सो दिनार मुहर मुक़र्रर कर के स्वँय मुहर अदा किया और उम्मे हबीबा के निकाह के गवाह ख़ालिद बिन सओ़द बने। फिर शुरहबील के हाथ मदीना भेज दिया। यह निकाह सन 6 हि॰ में हुआ, उस समय उन की आयु 36 वर्ष और आप की 58 वर्ष थी। 6 वर्ष निकाह में रहीं और 72 वर्ष की आयु में सन 44 हि॰ में देहान्त किया। इन से कुल 65 हदीसें रिवायत हैं (रहमतुल्लिल् आ़लमीन)

अबू सुफ़यान रज़ि॰ यह फ़त्ह मक्का से एक-दो दिन पूर्व ईमान लाये, हुनैन और ताइफ़ की जन्ग में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ रहे। अन्तिम समय में नाबीना हो गये थे। सन 33 हि॰ में 96 वर्ष की लंबी जीवन यात्रा कर के देहान्त किया। इन से सहाबा इसलिये नफ़रत करते थे कि 21 वर्ष तक नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम, मुसलमानों और दीन इस्लाम के ख़िलाफ़ जन्ग लड़ते रहे।

अमीर मुआ़विया रज़ि॰, यह उम्मे हबीबा के बाप जाये भाई हैं, इन की माँ दूसरी हैं। 20 वर्ष तक शाम के गवर्नर रहे, फ़िर 20 वर्ष तक ख़लीफ़ा की हैसियत से रहे। आप वह्यि की किताबत करने (लिखने) वालों में से थे। 82 वर्ष की आयु में देहान्त किया। बहुत संक्षिप्त में लिखने के बावजूद फ़ाइदा लंबा हो गया।

बाब {जुलैबीब रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1712:– अबू बर्ज़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक जिहाद किया जिस में अल्लाह पाक ने आप को माले-ग़नीमत दिया, तो आप ने सहाबा से पूछाः आप लोगों में से कोई ग़ाइब तो नहीं है? सहाब ने कहाः हाँ, फ़लाँ, फ़लाँ गुम

हैं। आप ने फिर पूछाः और भी कोई ग़ाइब है? सहाबा ने उत्तर दियाः हाँ, फ़लाँ, फ़लाँ लोग ग़ाइब हैं। आप ने फिर पूछाः और भी कोई गाइब तो नहीं? सहाबा ने उत्तर दियाः नहीं, कोई नहीं। आप ने फ़रमायाः लेकिन मैं जुलैबीब को नहीं देख रहा हूँ जाओ उन्हें तलाश करो। फिर उन्हें मुर्दा लाशों में तलाश किया गया तो वह उन सात लाशों के पास मिले जिन्हें उन्होंने क़त्ल किया था। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन के शव के पास आ कर खड़े हुये और फ़रमायाः इन्होंने सात लोगों को क़त्ल किया फिर मारे गये। यह मेरे हैं और मैं इन का हूँ (यानी मैं और वह दोनों एक हैं) फिर आप ने उन के शव को अपने दोनों बाजुओं पर उठा लिया, आप के दोनों बाजू ही उन के लिये (जनाज़ा की) चार पाई थे। रावी ने बयान किया कि फिर उन के लिये क़ब्र खोदी गयी और उस में दफ़न कर दिये गये। हदीस के रावी (अबू बर्ज़ा) ने उन्हें नहलाने या न नहलाने के बारे में कोई ज़िक्र नहीं किया।

फ़ाइदाः– "वह मेरे हैं और में उन का हूँ" इस का यह अर्थ है कि अल्लाह की इबादत और आज्ञापालन में वह मेरी तरह हैं। दूसरी रिवायत के अनुसार न उन्हें नहलाया गया और न ही उन पर जनाज़ा की नमाज़ पढ़ी गयी, क्योंकि शहीद को न तो गुस्ल दिया जाता है और न जनाज़ा की नमाज़ पढ़ी जाती है।

बाब {हस्सान बिन साबित (सुप्रसिद्ध इस्लामी कवि) की फ़ज़ीलत का बयान।}

1713:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि (एक मर्तबा) उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ हस्सान के पास से उस समय गुज़रे जबकि वह मस्जिद में कविता पढ़ रहे थे। यह देख कर उमर उन्हें गुस्सा से घूरने लगे। इस पर हस्सान ने कहाः मैं तो मस्जिद में उस समय भी कवितायें पढ़ता था जब तुम से अच्छे व्यक्ति (यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) मौजूद थे। फिर उन्होंने अबू हुरैरा से मुख़ातब होकर कहाः मैं आप को अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या आप ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह फ़रमाते नहीं सुना था कि "ऐ हस्सान! मेरी तरफ़ से (काफ़िरों को) जवाब दो, ऐ अल्लाह! जिब्रील के ज़रीआ उन की सहायता फ़रमा?" इस पर अबू हुरैरा रज़ि॰ ने कहाः जी हाँ, मैं ने सुना है।

1714:– बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हस्सान बिन साबित से यह फ़रमाते सुनाः "काफ़िरों की हिजू (यानी बुराई बयान) करो जिब्रील अ़लै॰ तुम्हारे साथ हैं।"

फ़ाइदाः– ऊपर की हदीस न॰ 1713 का ज़िक्र कर के इमाम बुख़ारी रह॰ ने यह साबित किया है कि मस्जिद में इस्लामी कवितायें जिस में अल्लाह की हम्द और सन्देष्टा की प्रशंसा की गयी हो पढ़ना जाइज़ है (बुख़ारी–453–अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान) 'हिजू' का अर्थ है किसी के अन्दर की बुराइयाँ बयान करना जिस से उस का अपमान हो। मस्जिद में

तकरीरें करना, इस्लामी कवितायें पढ़ना अर्गचे जाइज़ है लेकिन मस्जिद का एहतराम और नमाजियों का ख़याल रखना अनिवार्य है।

1715:— इमाम मस्रुक़ ने बयान किया कि मैं आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ के पास गया तो क्या देखा कि हस्सान बिन साबित उन के पास बैठे हुये हैं और अपनी कविता के कुछ बन्द (छन्द) पढ़-पढ़ कर उन्हें सुना रहे हैं। उस में का एक बन्द यह भी था

हसानुन् रज़ानुन् सा तु-ज़न्नु बिरी-बतिन्
वतुस्बिहु ग़रसा मिन् लहूमिल् ग़वाफ़िली
(आप पवित्र और नेक हैं, बुद्धिमान हैं, आप पर किसी प्रकार का कोई आरोप नहीं है। सुबह खुश उठती हैं और किसी की ग़ीबत व चुगली नहीं खाती हैं।)

यह सुन कर आइशा रज़ि॰ ने कहा: लेकिन आप तो ऐसे नहीं हैं (यानी तुम ने तो मुझ पर ज़िना का आरोप लगाया था) इमाम मस्रुक़ ने बयान किया कि मैं ने आइशा रज़ि॰ से कहा: आप ऐसे व्यक्ति को अपने पास क्यों आने देती हैं? जबकि ऐसे व्यक्ति के बारे में अल्लाह पाक ने कुरआन में फ़रमा दिया है "जिस ने तोहमत और आरोप लगाया है उस के लिये बड़ा कष्ट दन्ड है" (सूर: नूर-11) इस पर आइशा रज़ि॰ ने कहा कि इस से बढ़ कर मार और क्या होगी कि वह अन्धे हो गये हैं। वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ से काफ़िरों को जवाब देते और उन की बुराइयाँ बयान करते थे (इसलिये उन्हें अपने पास आने की अनुमति देती हूँ)

फ़ाइदा:— मुस्तलिक़ की जन्ग के मौक़ा पर सन 5 हि॰ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने साथ आइशा को भी ले गये थे। एक स्थान पर पड़ाव डाला तो वह अपनी आवश्यक्ता पूरी करने के लिये दूर चली गयीं, इधर क़ाफ़िला कूच कर गया और अकेली रह गयीं। इस पर मुनाफ़िक़ों ने आरोप लगाया कि सफ़वान बिन मुअ़त्तल रज़ि॰ से इन्होंने नाजाइज़ संबन्ध बनाया है। इस बात पर चन्द सीधे-साधे जैसे हस्सान, मिस्तह और हमना आदि ने विश्वास कर लिया और आरोप लगाने वालों की सफ़ में शामिल हो गये। विस्तार से जानकारी के लिये देखें पार: 18, सूर: नूर, आयत 11 ता 20) हस्सान बिन साबित रज़ि॰ ने 120 वर्ष की बड़ी लंबी आयु पायी, अन्त में नाबीना (नेत्रहीन) हो गये थे।

1716:— आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कुरैश की बुराइयाँ बयान करो, क्योंकि उन्हें यह बात तीर की बौछार से थी अधिक तक्लीफ़ पहुँचाने वाली है। चुनान्चे आप ने अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा को कहला भेजा कि वह (अपनी कविता में) क़ुरैश की बुराइयाँ बयान करें, इस पर उन्होंने क़ुरैश को अपमानित करने वाली कविता पढ़नी शुरु की लेकिन आप को पसन्द न आयी तो कअ़ब बिन मालिक को कहला भेजा, फिर हस्सान बिन साबित को। जब हस्सान आप के पास आये तो कहने लगे: आज आपने ऐसे शेर को बुलाया है जो अपनी दुम से मारता है

(यानी अपनी कविताओं से लोगों को क़त्ल करता हैं) फिर अपनी ज़बान निकाल कर उसे हिलाने लगे और कहने लगेः उस ज़ात की क़सम! जिस ने आप को सच्चा नबी बना कर भेजा है, आज मैं अपनी ज़बान से काफ़िरों को इस प्रकार फाड़ कर रख दूगाँ जैसे कपड़ा फाड़ा जाता है। यह सुन कर आप ने फ़रमायाः जल्दबाज़ी से मत काम लेना, अबू बक्र कुरैश के हसब-नसब के सब से अधिक जानकार हैं और मेरा भी नसब कुरैश ही से मिलता है इसलिये मेरे नसब को अलग कर के उन की हिजो करना (जा कर अबू बक्र से समझ लो) चुनान्चे हस्सान ने अबू बक्र से मुलाक़ात की और वापस आ कर कहाः ऐ अल्लह के रसूल! अबू बक्र ने आप का नसब नामा बता दिया है। उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को सन्देष्टा बना कर भेजा है मैं आप को कुरैश के नसब से (उन की बुराइयाँ बयान करते समय) इस प्रकार अलग कर दूँगा जिस प्रकार गूँधे हुये आट में से बाल खींच लिया जाता है।

आइशा रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने स्वँय नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हस्सान से यह फ़रमाते सुनाः जब तक तुम अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ से काफ़िरों को जवाब देते रहोगे, जिब्रील तुम्हारी मदद करते रहेंगे। उन्होंने बयान किया कि मैं ने आप को यह भी फ़रमाते सुनाः हस्सान ने अपनी कविता में कुरैश की बुराइयों को गिना कर मोमिनों के दिलों को शिफ़ा बख़्श दी और काफ़िरों की मान प्रयादा और प्रतिष्ठा को समाप्त कर दिया। उस मौक़ा पर हस्सान ने यह कविता कही थी (जिस का अनुवाद यह है)

(1) तू ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बुराई बयान की तो मैं ने (तुरन्त) उस का जवाब दिया। अल्लाह पाक इस पर मुझे नेक बदला देगा (मेरा इस बात पर पूरा विश्वास है)

(2) तू ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बुराइयाँ बयान की हैं, हालाँकि वह नेक और प्रहेज़गार हैं, वह अल्लाह के नबी और रसूल हैं, वफ़ादारी उन की विशेष्ता है।

(3) मेरे माता-पिता और मेरी प्रतिष्ठा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रतिष्ठा और अिज़्ज़त बचाने के लिये (हमेशा) ढाल का काम करते रहेंगे।

(कुछ बन्द का अनुवाद छोड़ दिया गया है)

बाब {जरीर बिन अब्दुल्लाह बुजली रज़ि॰ की फ़ज़ीलत का बयान।}

1717:- जरीर रज़ि॰ ने बयान किया कि इस्लाम में दाख़िल होने के बाद से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे अपने पास अन्दर आने से कभी नहीं मना किया, और जब भी आप ने मुझे देखा तो मुस्कुराते हुये ही देखा।

फ़ाइदाः- यानी आप हमेशा मुझ से प्रसन्न रहे और जब भी मिले प्रसन्न मुद्रा में मिले।

1718:- जरीर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझ से कहाः ऐ जरीर! क्या तुम मुझे जुल् ख़िलसा (कोतोड़ कर उस) से

मुझे सुकून नहीं दोगे? "जुल ख़िल्सा क़बीला ख़स्-अ़म के एक बुत का नाम था जिस का दूसरा नाम "काबा यमानी" भी था। जरीर ने बयान किया कि डेढ़ सौ घोड़ सवारों को लेकर मैं रवाना हुआ, लेकिन मैं स्वँय घोड़े की पीठ पर जम कर नही बैठ पाता था। चुनान्चे मैं ने आप से इस का ज़िक्र किया तो आप ने अपना हाथ मेरे सीने पर मार कर फ़रमायाः ऐ अल्लाह! इन्हें जमा दे, इन्हें राह पाने वाला और राह दिखाने वाला बना दे। जरीर ने बयान किया कि फिर मैं ने जा कर उस को फूँक दिया और अबू अतार्त नामक एक व्यक्ति को अल्लाह के रसूल के पास खुशख़बरी देकर भेजा। उस ने आप के पास जा कर सूचना दी के में जुलख़िल्सा नामक मन्दिर को खुजली वाले ऊँट की तरह (काला कलूटा) छोड़ कर आया हूँ। यह सुन कर आप ने क़बीला अह्मस के घोड़सवारों और मर्दों केलिये पाँच मतबा बर्कत की दुआ फ़रमायी।

फ़ाइदाः– **यह बुतख़ाना (मन्दिर) केवल कहने को पूजा स्थल था, लेकिन यहाँ एकत्र होकर इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ कुफ़्फ़ार साज़िश करते थे। आप ने उसे गिरवा कर फसाद के केन्द्र को समाप्त कर दिया। इमाम बुख़ारी रह॰ ने यह हदीस ला कर मस्अला निकाला है कि वह काफ़िर जो हर समय मुसलमानों से लड़ने पर उतारु हों और उन से कोई अनुबन्ध न हो तो उन के घरों, बाग़ों और पूजा स्थलों को जलाना और गिराना जाइज़ है। जिस ऊँट को खुजली की बीमारी हो जाती है उस के पूरे शरीर पर ताड़कूल मल देते हैं, जिस ने उस का शरीर काला हो जाता है। मतलब यह कि आग और धुँए से उस की दीवारें काली हो गयी हैं। (बुख़ारी–3020, 3036–जरीर रज़ि॰) इस पूजा स्थल को काबा शरीफ़ के मुक़ाबला में बनाया गया था। जरीर रज़ि॰ की फ़ज़ीलत यह हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुआ की बर्कत से माहिर घोड़ सवार बन गये और आप ने उन्हें दुआ भी दी।**

बाब {हुदैबिय्या के स्थान पर बबूल के पेड़ के नीचे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ पर बैअ़त करने वालों की फ़ज़ीलत का बयान।}

1719:– **उम्मे म–बश्शिर रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने हफ़्सा के घर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बयान करते सुना कि अल्लाह पाक ने चाहा तो पेड़ के नीचे बैअ़त करने वालों में से कोई भी जहन्नम में न जायेगा। इस पर हफ़्सा ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! जायेंगे। यह सुन कर आप ने उन्हें डाँट पिलाई तो वह कहने लगीः कुरआन में तो लिखा है कि "तुम में से हर एक को जहन्नम से होकर जाना होगा" (पारः16, सूरः म्रयम–71) आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः लेकिन आगे अल्लाह पाक यह भी तो फ़रमाता है "फिर हम प्रहेज़ागरों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को पकड़ कर घुटनों के बल जहन्नम में ढकेल देंगे" (आयत सूरः म्रयम 72)**

फ़ाइदाः– सन 6 हि॰ को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने 14–15 सौ सहाबा को लेकर उम्रा के इरादा से मदीना से मक्का के लिये निकले लेकिन मक्का वालों ने

हुदैबिय्या के स्थान पर रोक दिया। आप ने उस्मान ग़नी रज़ि० को दूत बना कर मक्का वालों के पास भेजा ताकि उन्हें समझा दें कि हम केवल उम्रा करने के इरादे से आये हैं। उस्मान को मक्का वालों ने रोक लिया। इधर सहाबा में यह ख़बर फैल गयी कि वह शहीद कर दिये गये। इस पर आप ने तमाम सहाबा से मुश्रिकों के साथ जन्ग करने की बैअ़त ली। इसी घटना की तरफ़ इस हदीस में इशारा है।

सूरः म्रयम की आयत को समझने के लिये कुरआन पाक की तफ़सीर देखें, यहाँ फ़ाइदा में विस्तार की गुन्जाइश नहीं।

बाब {बद्र की लड़ाई में शरीक होने वाले सहाबा की फ़ज़ीलत का बयान।}

1720:— अ़ली रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे, जुबैर और मिक़दाद को यह हुक्म दिया कि "रोज़ा ख़ाख़" के स्थान पर जाओ, वहाँ ऊँट पर सवार एक महिला मिलेगी, उस के पास एक पत्र है उसे उस से प्राप्त कर के ले आओ। चुनानचे हम सब ने तेज़ी से अपने घोड़ों को दौड़ाया और उस महिला को जा लिया। हम ने उस से पत्र वापस करने को कहा तो वह कहने लगीः मेरे पास तो कोई पत्र-वत्र नहीं है। हम ने कहा कि या तो पत्र दे दे या फिर अपने कपड़े उतार (और झाड़ा दे) यह सुन कर उस ने अपने जूड़े से पत्र को निकाल कर दे दिया, फिर उसे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ला कर दे दिया, उस पत्र को हातिब बिन बल्तअ़ा ने मक्का के कुछ मुश्रिकों के नाम लिखा था जिस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की कुछ (राज़ की) बातों का भी ज़िक्र था। आप ने हातिब से पूछाः यह क्या मामला है? उन्होंने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे मामले में जल्दी न फ़रमायें (और मेरी भी सुन लें) मक्का में मेरी हैसियत केवल इतनी थी कि कुरैश वालों के साथ रहना-सहना था, इस के अ़लावा उन से कोई मतलब (रिश्ता-नाता) न था। आप के साथ जो दूसरे मुहाजिर लोग हैं उन की तो मक्का में रिश्तेदारी भी है, इसी वजह से मक्का वाले उन के रिश्तेदारों और उन के धनमाल की सुरक्षा करेंगे, मगर मक्का वालों के साथ चूँकि मेरा कोई खान्दानी सम्बन्ध नहीं है, इसलिये मैं ने सोचा कि उन पर कोई एहसान कर दूँ ताकि वह लोग उस से प्रभावित होकर मेरे रिश्तेदारों की भी मक्का में सुरक्षा करेंगे। मैं ने यह काम इस नाते नहीं किया है कि मैं काफ़िर हूँ या दीन इस्लाम से फिर गया हूँ। इसी प्रकार इस्लाम लाने के बाद कुफ़्र से प्रसन्न होकर भी यह काम नहीं किया है। आप ने फ़रमायाः हातिब ने बिल्कुल सच कहा है। उमर रज़ि० नेकहाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! आप अनुमति दें ताकि इस मुनाफ़िक़ की मैं गर्दन मार दूँ। आप ने फ़रमायाः यह तो बद्र की जन्ग में (मुसलमानों के साथ मिल कर) लड़ाई लड़े हैं, और तुम्हें मालूम होना चाहिये कि अल्लाह पाक बद्र के मुजाहिदों के बारे में अच्छी तरह जानता था इसीलिये उन के बारे में फ़रमा चुका हैः "तुम अब जो चाहो करो, मैं ने तुम्हारा सब कुछ माफ़ कर दिया है।" फिर बाद में यह आयत नाज़िल फ़रमायीः "ऐ ईमान वालो! मेरे

और अपने दुश्मनों को मित्र मत बनाओ।" (सूरः मुम्-तहिना-1)

फ़ाइदाः– मुहाजिर लोग अपनी जायदाद और घर-बार छोड़ कर मदीना चले आये, तो जिन की वहाँ रिश्तेदारी थी उन के काफ़िर रिश्तेदार उन की देखभाल करतेथे। हातिब रज़ि॰ की कोई रिश्तेदारी न थी इसलिये मक्का में अपनी छोड़ी हुयी जायदाद की सुरक्षा और देख-भाल के लिये यह राह निकाली।

पत्र में यह लिखा था "ऐ कुरैश के लोगो! तुम्हें मालूम हो कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक भारी लश्कर लेकर तुम पर आक्रमण करने वाले हैं। अगर आप अकेले ही तुम पर हम्ला करें तो भी अल्लाह उन की सहायता करेगा और अपना वादा पूरा करेगा। इसलिये तुम लोग अपने बचाव की तय्यारी कर लो।" महिला का नाम "सारा" था, यह अ़म्रान बिन अबू सैफ़ी की आज़ाद की हुयी लौंडी थी। चूँकि बद्री सहाबा की ग़लतियों को अल्लाह ने माफ़ फ़रमा दिया है, इसलिये आप ने भी उन की सियासी ग़लती को माफ़ कर दिया। "ख़ाख़" मक्का और मदीना के दर्मियान मदीना से निकट एक नगर का नाम है। (बुख़ारी शरीफ़-3007-अ़ली रज़ि॰)

बाब {कुरैश और अन्सार आदि की फ़ज़ीलत का बयान।}

1721:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़बीला कुरैश, अन्सार, मुज़ैना, जुहैना, अस्लम, ग़िफ़ार और अशजा आदि क़बीले दोस्त हैं, और अल्लाह और उस के रसूल के अ़लावा उन का कोई हिमायती व सहयोगी नहीं।

फ़ाइदाः– जिस का साथी, सहायक और सहयोगी अल्लाह और उस का रसूल हो इस से बड़ी फ़ज़ीलत और क्या हो सकती है। "जिस का हामी हो ख़ुदा उस को मिटा सकता है कौन"

बाब {कुरैशी महिलाओं की फ़ज़ीलत का बयान।}

1722:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः ऊँट पर सवार होने वाली महिलायें सब से अच्छी महिलायें हैं, अपने बच्चों से बहुत अधिक मुहब्बत और कृपा करती हैं, और अपने पति के धन-माल की सब से अधिक देखरेख और निग्रानी करती हैं। अबू हुरैरा रज़ि॰ इस हदीस को बयान करने के बाद कहते थे कि म्रयम बिन्त अ़म्रान (यानी हज़रत ओ़सा अ़लै॰ की माता जी) ने कभी ऊँट की सवारी नहीं की।

बाब {अन्सार की फ़ज़ीलत का बयान।}

1723:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लह अन्सारी रज़ि॰ से रिवातय है उन्होंने बयान किया कि कुरआन पाक की यह आयत "जब तुम में से दो गुट ने हिम्मत हार जाने की ठान ली,

हालाँकि अल्लाह उन दोनों का सहयोगी था" (सूरः आले अिम्रान-122) हम लोगों, यानी क़बीला बनी सलमा और बनी हारिसा के बारे में नाज़िल हुयी। और हमें यह बिल्कुल ही पसन्द नहीं कि यह आयत न उतरती, क्योंकि अल्लाह पाक ने इस आयत में फ़रमाया है कि "अल्लाह उन दोंनों गुटों (बनी सलमा व बनी हारिसा) का दोस्त हैं।"

फ़ाइदाः– इस आयत में दोनों क़बीलों की बुराई बयान की गयी है कि उन्होंने हिम्मत हार जाने की ठान ली थी, लेकिन आगे ही प्रशंसा का ज़िक्र है कि "अल्लाह उन दोनों का दोस्त है" इसलिये इस आयत का नाज़िल होना पसन्द है।

1724:– ज़ैद बिन अर्क़म रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ अल्लाह! अन्सार को बख़्श दे उन के बेटों और पोतों को भी बख़्श दे।

1725/1:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किय ाकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चन्द बच्चों और महिलाओं को किसी शादी की पार्टी से वापस आते हुये देखा तो उन के सामने खड़े होकर फ़रमायाः तमाम लोगों में तुम लोग मुझे सब से अधिक महबूब हो, यानी अन्सार के लोग (मुझे सब से अधिक महबूब हैं)

1725/2:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अन्सार की एक महिला आप के पास आयी तो आप ने उस से एकान्त और तन्हाई में बात-चीत की और फ़रमायाः उस अल्लाह की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है तमाम लोगों में सब से अधिक मैं तुम से मुहब्बत करता हूँ। आप ने यह वाक्य तीन मर्तबा दोहराया।

फ़ाइदाः– वह महिला नामहरम रही होगी जिस से निकाह हराम है, जैसे अनस बिन मालिक की माता जी उम्मे सुलैम, या उम्मे हराम। वर्ना आप ने किसी और महिला से तन्हाई में बात-चीत नहीं फ़रमाई है।

1726:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अन्सार के लोगों, उन की औलाद और उन के गुलामों के लिये बख़्शिश की दुआ़ फ़रमायी। अनस ने बयान किया कि इस बारे में मुझे तनिक भर शुब्हा नहीं है।

1727:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अन्सार के लोग मेरे ख़ास मुलाक़ाती और भरोसे मन्द लोग हैं। दूसरे लोगों की संख्या तो बढ़ेगी लेकिन इन की संख्या कम होती जायेगी, इसलिये उन की अच्छाइयों और नेकियों को कुबूल करो और उन की बुराइयों पर उन्हें माफ़ कर दो।

बाब {अन्सार के ख़ानवादों की फ़ज़ीलत का बयान।}

1728:– अबू उसैद अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने गवाही दी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अन्सार में बेहतर घराना बनी नज्जार का है, फिर

क़बीला बनी अश्हल का, फिर क़बीला बनी हारिसा बिन ख़ज़रज का, फिर बनी साअ़दा का है। और अन्सार के तो हर घर में भलाई और ख़ैर है।

हदीस के रावी अबू सलमा ने बयान किया कि अबू उसैद ने कहा कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर झूठ-मूठ आरोप नहीं लगा रहा हूँ (कि आप ने यह हदीस बयान्न की) अगर मैं झूठ बोलता तो पहले नंबर पर अपने क़बीला बनी साअ़दा का नाम लेता। यह हदीस जब सअ़द बिन उबादा रज़ि॰ ने सुनी तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ और कहने लगे कि हमारा क़बीला चौथे नंबर पर फ़ज़ीलत में है (यह कैसे संभव है) मेरे गधे पर ज़ीन कसो, मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास जाऊँगा (और इस मस्अले पर बात करुँगा) यह सुन कर उन के भतीजे सहल रज़ि॰ ने कहाः क्या आप नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास उन की बातों को झुठलाने केलिये जा रहे हैं? जबकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आप से अधिक जानते हैं (कि किस क़बीला का दर्जा चौथे नंबर पर है) यह सुन कर सअ़द बिन उबादा ने भी कहा कि अल्लाह और उस के रसूल वास्तव में सब से अधिक जानने वाले हैं और गधे से ज़ीन खोल देने का हुक्म दिया (और यात्रा रद्द कर दी)

फ़ाइदाः- इस हदीस से मालूम हुआ कि सअ़द नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास नहीं गये, लेकिन बुख़ारी की रिवायत में हैं कि बाद में किसी मौक़ा पर जा कर मिले तो आप ने फ़रमायाः तुम्हारे खान्दान का नंबर पहले रहे या बाद में रहे, इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है, तुम्हारा ख़ान्दान तो बेहतरीन ख़ान्दान है, तुम्हें इसी पर ख़ुश हो जाना चाहिये (बुख़ारी-1481, 3791-अबू हुमैद साअ़दी)

क़बीला बनी नज्जार के लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मामूँ होते हैं, आप के दादा की पत्नी बनी नज्जार ही की बेटी थीं, इसीलिये आप मदीना आये तो बनी नज्जार ही में पहले ठहरे। अनस बिन मालिक भी इसी ख़ान्दान से थे।

बाब {अन्सार के साथ रहने की फ़ज़ीलत का बयान।}

1729:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बुजली के साथ सफ़र पर निकला तो वह राह में मेरी सेवा और ख़िदमत करने लगे। इस पर मैं ने उन से कहा कि आप मेरी सेवा करने का कष्ट न उठायें, क्योंकि आप आयु में मुझ से बड़े हैं। उन्होंने कहाः मैं ने अन्सार को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इतनी सेवा करते देखा है कि उसी के बाद मैं ने क़सम खा ली कि जब भी किसी अन्सारी के साथ रहूँगा उस की ख़िदमत ज़रुर करुँगा (वह आयु में चाहे छोटा हो या बड़ा) एक दूसरी रिवायत में है कि जरीर रज़ि॰ आयु में बड़े थे।

बाब {क़बीला अश्अ़र के लोगों की फ़ज़ीलत का बयान।}

1730:- अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं अश्अ़री लोगों को उन के कुरआन पढ़ने के लहजे से पहचान लेता हूँ। अगर वह रात को आते हैं तो रात ही में उन के कुरआन पढ़ने की आवाज़ से उन के ठहरने की जगह को पहचान लेता हूँ, हालाँकि जब वह दिन में आ कर ठहरते हैं उस समय उन के ठहरने की जगह हमें नहीं मालूम होती। इन्हीं लोगों में से एक व्यक्ति हकीम नाम का है जब वह दुश्मन से भिड़ता, या दुश्मन के लश्कर को देखता है तो उन से (बेधड़क) कहता है, हमारे क़बीला के लोग जन्ग लड़ने को तैयार बैठे हैं, बस ज़रा उन्हें आ जाने दो।

फ़ाइदाः– हकीम के क़ौल का दो अर्थ है। प्रथम यह कि वह किसी से नहीं डरता है और हर समय जिहाद के लिये तय्यार रहता है। दूसरा अर्थ यह है कि जब अकेले में दुश्मन मिलता है तो यह कहता है कि "ज़रा रुक जाओ मेरे साथ वाले भी आ जायें। इस पर दुश्मन यह समझता है कि यह अकेला नहीं, इस के साथ और लोग भी हैं। इस प्रकार दुश्मन को डरा कर अपने को सुरक्षित कर लेता है। इस प्रकार से अपना बचाव करना बुद्विमानी की बात है।

1731:– अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़बीला अश्अ़र के लोगों का हाल यह है कि जब जिहाद के मौक़ा पर खाने-पीने का सामान कम हो जाता है, या मदीना में (ठहरने के दौरान) उन के बाल-बच्चों के लिये खाने-पीने की कमी हो जाती है तो उन लोगों के पास जो कुछ भी खाने-पीने का सामान होता है उसे एक कपड़े में एकत्र कर लेते हैं, फिर आपस में एक बर्तन (यानी माप) से बराबर-बराबर बाँट लेते हैं। वह लोग मेरे हैं और मैं उन का हूँ।

फ़ाइदाः– इस प्रकार आपस में मिल बाँट कर खाने से सब को थोड़ा-थोड़ा मिल जाता है और परस्पर प्रेमभावना पैदा होती है। 'वह मेरे हैं और मैं उन का हूँ" अर्थात वह मेरी सुन्नत और तरीक़े पर हैं और मैं उन के तरीक़े पर हूँ। इमाम बुख़ारी रह॰ ने इस हदीस को ला कर यह मस्अला साबित किया है कि सफ़र में, अथवा घर में इस प्रकार मिला कर और बराबर-बराबर बाँट-चोट कर खाना सुन्नत है। (बुख़ारी-2486-अबू मूसा)

बाब {क़बीला ग़िफ़ार और क़बीला अस्लम के लिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दुआ़ करने का बयान।}

1732:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक ने क़बीला अस्लम के लोगों को सुरक्षित रखा और क़बीला ग़िफ़ार के लोगों को बख़्श दिया। यह बात मैं नहीं कह रहा, बल्कि अल्लह पाक ने फ़रमाया है।

1733:– खुफ़ाफ़ बिन ईमा ग़िफ़ारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी नमाज़ में (बद्दुआ़ करते हुये) कहाः ऐ अल्लाह! क़बीला बनी लहयान, रअ़ल और ज़कवान व उसय्य पर अपनी ओर से लानत भेज, क्योंकि इन्होंने अल्लह और उस के रसूल की अवज्ञा की है। और अपने क़बीला गिफ़ार को माफ़ कर दिया और अस्लम को बचा लिया।

फ़ाइदाः– आप ने इन क़बीला पर क्यों लानत की दुआ़ की थी? कारण यह है कि सफ़र सन 4 हि॰ में क़बीला अज़्ल व क़ारा के लोगों ने मदीना आ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अनुरोध किया कि आप हमें दीन की बातें सिखाने और कुरआन की शिक्षा देने के लिये अपने सहाबा को भेज दें। चुनान्चे आप ने छः सहाबा को उन के साथ भेज दिया। जब वह रजीअ़ के स्थान पर पहुँचे तो क़बीला बनी हुज़ैल व लहयान आदि को एकत्र कर के उन सब को शहीद कर दिया।

इसी प्रकार बीर मऊना के स्थान पर इन्हीं लोगों ने 70 कुरआन पाक के हाफ़िज़ सहाबा को तब्लीग़ के बहाना से बुला कर शहीद कर दिया। इस पर आप ने एक महीना तक उन हत्यारों पर लानत की बद्दुआ़ की। तफ़सील से जानकारी के लिये देखें (रहमतुल्लिल् आ़लमीन, पैंगबरे इस्लाम, तारीख़े-इस्लाम) रिवायतों में आता है कि इन लोगों ने क़बीला अस्लम को भी शामिल होने के लिये बुलाया लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया। "अल्लाह ने उन्हें बचा लिया" इसी तरफ़ इशारा है।

बाब {क़बीला मुज़ैना, जोहैना और गिफ़ार की फ़ज़ीलत का बयान।}

1734:– अबू बकरा ने बयान किया कि अक़रा बिन हाबिस रज़ि॰ ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर सूचना दी कि आप ने तो हाजियों का माल चुराने वाले क़बीला अस्लम, ग़िफ़ार मुज़ैना और जोहैना के लोगों से बैअ़त की है। (मुहम्मद बिन अबू याक़ूब ने कहा कि मेरे ख़याल से अ़ब्दुर्रहमान ने क़बीला जोहैना का भी नाम लिया, लेकिन मुहम्मद बिन याक़ूब को शक हुआ है) यह सुन कर आप ने फ़रमायाः ज़रा बताओ तो सही कि क्या क़बीला अस्लम, ग़िफ़ार, मोज़ैना (और रावी को शक है कि जोहैना) के लोग (यानी यह चारों क़बीले) बनी तमीम, बनी आ़मिर, बनी असद और बनी ग़ितफ़ान से बेहतर हैं? और क्या यह (बाद के चार) क़बीले बर्बाद नहीं हो गये? अक़रा ने कहाः जी हाँ, बर्बाद हो गये। आप ने फ़रमायाः उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है यह लोग (यानी क़बीला अस्लम, ग़िफ़ार, मोज़ैना और जोहैना) क़बीला बनी तमीम आदि से बेहतर हैं।

फ़ाइदाः– जाहिलिय्यत के ज़माना में क़बीला जोहैना, मोज़ैना, अस्लम और ग़िफ़ार के लोग क़बीला बनी तमीम, बनी असद, बनी ग़ितफ़ान व बनी आ़मिर के लोगों से कम दर्जा के समझे जाते थे, लेकिन जब इस्लाम आया तो उन्होंने पहले इस्लाम कुबूल कर के उन से फ़ज़ीलत में आगे बढ़ गये। (बुख़ारी-3516-इक़रा बिन हाबिस)

बाब {क़बीला बनी तै का बयान।}

1735:– अदी बिन हातिम से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ के पास आया तो उन्होंने मुझ से कहाः सब से पहला सदक़ा का माल जिसने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आप के सहाबा को दिया वह क़बीला बनी तै का सदक़ा था जिसे मैं अल्लाह के रसूल के पास लेकर आया था।

फ़ाइदाः– उमर रज़ि॰ क्या लेकर आये थे? कितना लाये थे कि आप प्रसन्न हो गये थे?

बाब {क़बीला दौस की बाबत बयान।}

1736:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा तुफ़ैल और उन के कुछ मित्र नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये और कहने लगे कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! क़बीला दौस के लोगों ने इस्लाम लाने से इन्कार कर दिया है और अपने कुफ़्र पर ही बाक़ी हैं, इसलिये आप उन की बर्बादी के लिये दुआ़ कर दीजिये। इस पर लोगों की तरफ़ से कहा गया कि दौस के लोग बर्बाद हो जायें। लेकिन आप ने फ़रमायाः ऐ अल्लाह! क़बीला दौस के लोगों को हिदायत दे दे और उन्हें (इस्लाम लाने के लिये) मेरे पास भेज दे।

फ़ाइदाः– लोगों ने बद्दुआ़ के लिये कहा, लेकिन आप ने दुआ़ दी, चुनान्चे बहुत जल्द समस्त क़बीला के लोग इस्लाम में दाख़िल हो गये। अबू हुरैरा रज़ि॰ भी इसी क़बीला से थे।

बाब {क़बीला बनी तमीम की फ़ज़ीलत का बयान}

1737:– अबू जुअ़ा से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अबू हुरैरा रज़ि॰ नेफ़रमायाः मैं क़बीला बनी तमीम के लोगों से उस समय से प्रेम करता हूँ जब से मैंने उन के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़बानी तीन बातें सुनी हैं। मैं ने आप को फ़रमाते सुना कि इस क़बीला के लोग मेरी उम्मत में दज्जाल पर सब से सख़्त हैं। जब उस क़बीला से सदक़ा का माल आया तो आप ने फ़रमायाः यह हमारी क़ौम के सदक़े का माल है। क़बीला बनी तमीम की एक महिला आ़इशा सिद्दीक़ा के पास लौंडी थी तो आप ने फ़रमायाः उसे आज़ाद कर दो क्योंकि यह हज़रत इस्माअ़ील की औलाद में से है।

बाब {सहाबा के दर्मियान भाई–चारे का बयान।}

1738:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अबू उबैदा बिन जराह और अबू तल्हा अन्सारी रज़ि॰ के दर्मियान भाई चारा कराया था।

फ़ाइदाः– भईचारा का यह अर्थ है कि जो मुहाजिर मक्का से आते उन्हें मदीना के किसी

अन्सार के घर कर देते, अब वह उन्हीं के घर रहते, खाते-पीते उन के काम में हाथ बटाते। कुछ अन्सार ने तो अपनी एक बीवी और जायदाद भी बाँट कर उन को दे दी, गोया अपना सगा भाई बना लिया।

1739:- आसिम अहवल ने बयान किया कि अनस बिन मालिक रज़ि॰ से पूछा गया कि क्या आप को भी इस बारे में कोई जानकारी है कि इस्लाम में क़सम नहीं है। उन्होंने कहा कि (इस्लाम में क़सम है) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने स्वँय कुरैश और अन्सार के दर्मियान अपने घर में बुला कर क़सम दिलाई है।

फ़ाइदा:- क़सम दिलाने का यह अर्थ है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब अन्सार और मुहाजिर के दर्मियान भाईचारा कराते तो क़सम दिलाते कि परस्पर मिलजुल कर रहेंगे, एक दूसरे का ख़याल रखेंगे एक दूसरे को हानि नहीं पहुचायेंगे, आदि। आज भी कारोबार आदि में इस प्रकार क़सम खिला कर वादा लेना निःसंदेह जाइज़ है।

1740:- जुबैर बिन मुत्इम रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कुफ़्र की हालत में खाई गयी क़समों का इस्लाम लाने के बाद कोई एतबार नहीं। लेकिन जाहिलिय्यत के ज़माना में (कुफ़्र की हालत में) अगर किसी नेक काम के बारे में क़सम खाई है तो वह क़सम इस्लाम लाने के बाद और मज़बूत हो जायेगी।

फ़ाइदा:- यानी उस पर अ़मल करना और ज़रुरी हो जायेगा। उदाहरण के तौर पर उमर रज़ि॰ ने कुफ़्र के ज़माना में नज़र मानी थी कि काबा में एक रात एतिकाफ़ करुँगा तो इस्लाम लाने के बाद एतिकाफ़ करनाऔर ज़रुरी हो गया। चुनान्चे उन्होंने एतिकाफ़ किया। किसी ने क़सम खाई थी कि कुफ़्र की हालत में चार गुलाम स्वतन्त्र करुँगा, फिर इसी दर्मियान वह इस्लाम ले आया तो अब उस पर अमल करना और अनिवार्य हो गया। लेकिन यह हुक्म केवल नेकी के कामों में है। किसी ने कुफ़्र की हालत में क़सम खाई थी कि मैं तुम्हें क़त्ल कर दूगाँ लेकिन इस्लाम ले आया तो इस इस क़सम को पूरी करना जाइज़ नहीं।

बाब {मैं अपने सहाबा के लिये ढाल हूँ और सहाबा मेरी उम्मत के लिये ढाल हैं।}

1741:- अबू बुर्दा रज़ि॰ से रिवायत है कि मेरे पिता जी ने बयान किया कि हम लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ मग़िरब की नमाज़ पढ़ी, फिर मश्वरा किया कि हम लोग यहीं बैठे रहें और आप के साथ अिशा की भी नमाज़ पढ़ लें। चुनान्चे हम लोग (मग़िरब की नमाज़ पढ़ कर) अपने-अपने स्थान पर बैठे रहे। फिर जब आप (अपने हुजरे से) बाहॅर तश्रीफ़ लाये तो पूछा: तुम लोग यहीं बैठे रह गये? हम लोगों ने उत्तर दिया: जी हाँ ऐ अल्लाह के रसूल! हम ने आप के साथ मग़िरब की नमाज़ पढ़ने के बाद सोचा कि यहीं बैठे रहें और आप की साथ इशा की नमाज़ भी पढ़ लें। आप ने फ़रमाया: बहुत अच्छा किया, या (यह फ़रमाया कि) ठीक किया। फिर आप ने अपना

सर आकाश की ओर उठाया (और आप अक्सर अपना सर आकाश कीओर उठाया करते थे) फिर फ़रमायाः यह सितारे आसमान की सुरक्षा करते हैं: जब यह समाप्त हो जायेंगे तो आसमान भी मिट जायेगा (यानी क़ियामत आ जायेगी) इसी प्रकार मैं अपने सहाबा के लिये ढाल के समान हूँ। जब मैं भी दुनिया से चला जाऊँगा तो उन पर भी बुरा समय आ जायेगा (फ़ितना, फ़साद और बुराइयाँ फैल जायेंगी) और मेरे सहाबा मेरी उम्मत के लिये ढाल के समान हैं, तो जब वह भी दुनियाँ से उठ जायेंगे तो मेरी उम्मत पर भी बुरे दिन आ जायेंगे (यानी लड़ाई, झगड़े, मज़हबी इख़्तिलाफ़ और कुफ़्र की फ़तवे बाज़ी आरंभ हो जायेगी।

फ़ाइदाः– चुनान्चे सहाबा के ज़माना तक सब एक उम्मत की हैसिय्यत से दीन इस्लाम पर बाक़ी रहे और किताब व सुन्नत पर अ़मल करते रहे। इन के दुनिया से चले जाने के बाद इमामों की तक़लीद का सिलसिला आरंभ हुआ और उम्मत चार धड़ों में बट गयी, परिणामस्वरुप इख़्तिलाफ़ शुरु हो गया, मस्जिदें बट गयीं, मर्दसे अलग हो गये, किताब व सुन्नत की खुल्लम-खुल्ला नार्फ़मानी होने लगी। आज क्या कुछ हो रहा है इसे अपनी आँखों से देख रहे हैं इस पर कुछ लिखने की आवश्यक्ता नहीं।

बाब {उस व्यक्ति के बारे में बयान जिस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा, या जिस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबा को देखा, या जिस ने सहाब को देखने वालों को देखा (यानी सहाबा, ताबअ़ी और तबा–ताबअ़ी की फ़ज़ीलत का बयान।)}

1742:– अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक समय लोगों पर ऐसा भी आयेगा कि बड़ी संख्या में लोग जिहाद करेंगे और पूछेंगे कि भला तुम में से कोई ऐसा भी है जिस ने अल्लाह के रसूल को देखा हो? (जब सहाबी मिल जायेंगे तो) उन से जन्ग जीतने के लिये फ़त्ह की दुआ़ कराई जायेगी। फिर एक दूसरा दौर आयेगा जिस में भी एक बड़ी संख्या में लोग जिहाद करेंगे तो वह भी पूछेंगे कि क्या तुम में से कोई ऐसा भी है जिस ने सहाबा को देखा है? (जब सहाबा को देखने वाले यानी ताबअ़ी मिल जायेंगे तो) उन से जन्ग में फ़त्ह के लिये दुआ़ कराई जायेगी। फिर एक तीसरा दौर आयेगा जिस में भी लोग बहुत बड़ी संख्या में जिहाद करेंगे, लेकिन पूछेंगे कि क्या तुम में से कोई ऐसा भी है जिस ने सहाबा के देखने वाले को देखा हो? (यानी तबा तबअ़ी) फिर उस से लड़ाई में जीत के लिये दुआ़ कराई जायेगी।

फ़ाइदाः– इस हदीस से कई बातें मालूम हुयीं (1) अल्लाह वाले, नेक बन्दों से अपने लिये दुआ़ कराना जाइज़ है, मगर शर्त यह है कि वह जीवित हो (2) दूसरी बात यह मालूम हुयी कि सहाबा, ताबअ़ीन यह तीन दौर (काल) सब से बेहतर काल हैं। मुस्लिम ही की एक दूसरी रिवायत में है कि आप ने फ़रमायाः मेरी उम्मत में सब से बेहतर ज़माना मेरे सहाबा का है, फिर उन का जिन्होंने उन्हें देखा हो (यानी ताबअ़ीन का, फिर उन का जिन्होंने उन को देख है (यानी तबा ताबअ़ीन का)

इस हदीस की रोशनी में पहला दौर 120 हि॰ में समाप्त हुआ, क्योंकि सब से अन्तिम सहाबी अबू तुफ़ैल का देहान्त सन 120 हि॰ में हुआ। दूसरा दौर ताबीअ़ीन का सन 170 हि॰ में समाप्त हुआ। तीसदा दौर तबा ताबअ़ीन का सन 220 हि॰ में समाप्त हुआ। (देखें बुख़ारी-2897-अबू सअ़ीद ख़ुदरी)

फिर चौथी सदी हि॰ में तक़्लीद का दौर आरंभ हुआ और कुकुरमुत्तों की तरह फ़िर्क़े पैदा होने आरंभ हो गये और देखते-देखते फ़िर्क़ा जहमिय्या, क़दरिय्या, जबरिय्या, क़ादिरी, चुश्ती, नक़्शबन्दी, साबिरी, सहरर्वदी, हनफ़ी, मालिकी, हंबली, शाफ़अ़ी, देवबन्दी, बरैलवी, शीआ़, क़ादियानी, नेचरी आदि फ़िर्क़े वजूद में आ गये।

बाब {बेहतरीन दौर सहाबा का दौर है, फिर वह दौर है जो उन के बाद हैं, फिर वह जो उन के बाद हैं।}

1743:- अ़िम्रान बिन हुसैन रज़ि॰ से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में सब से बेहतर ज़माना मेरा है, फिर उन का जो मेरे बाद हैं, फिर उन का जो उन के बाद हैं, फिर उन का जो उन के बाद हैं। अ़िम्रान रज़ि॰ ने बयान किया मुझे नहीं मालूम कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दो ज़मानों के बाद, या तीन ज़मानों के बाद फ़रमायाः फिर उन के बाद ऐसे लोग पैदा होंगे जो बिना गवाही माँगे ही गवाही देने को तय्यार रहेंगे, ख़ियानत करेंगे, अमानतदारी का कुछ भी लिहाज़ न करेंगे। यह लोग नज़र मानेंगे, लेकिन पूरी न करेंगे। इन के अन्दर मोटापा छा जायेगा।

फ़ाइदा:- यहाँ रावी को दो या तीन में शुब्हा हुआ है। सही तीन दौर ही है। यानी सहाबा का, फिर ताबअ़ीन का, फिर तबा ताबअ़ीन का। यहाँ एक आ़म बात बताई गयी है। (वर्ना यह कोई ज़रुरी नहीं कि हर ताबअ़ी, तबा ताबअ़ी से अफ़ज़ल हो। और हर तबा ताबअ़ी अपने बाद के लोगों से अफ़ज़ल है। ऐसे भी बड़े-बड़े बुर्जुग गुज़रे हैं जिन को तबा ताबअ़ीन पर फ़ज़ीलत हासिल है। हराम-हलाल की पर्वा किये बिना अधाधुंद खायें गे जिस से चर्बी चढ़ जायेगी। एक रिवायत मैं हे कि सब से बेहतर गवाह वह है जो बिना गवाही माँगे गवाही दे। एक आदमी का हक़ मारा जा रहा है, या उसे बिला कुसूर दन्ड दिया जा रहा है, लेकिन वह नहीं जानता कि कोई मेरे मामले में गवाही देने वाला भी है। इस सूरत में जिस ने देखा है वह स्वँय आगे बढ़ कर गवाही दे दे ताकि उस का हक़ उसे मिल जाये, या सज़ा से नजात पा जा जाये। आजकल पैसे के आधार पर गवाह बनाये जाते हैं और आपस में झगड़ा-फ़साद बढ़ाने के लिये स्वँय ही झूठी गवाही देने को तय्यार रहते हैं, इस हदीस में ऐसे ही लोगों की बुराई बयान की गयी है।

बाब {लोग कान (खान) की तरह हैं।}

1744:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

फ़रमायाः तुम लोगों को खान की तरह पाओगे। कुछ लोग ऐसे हैं जो कुफ़्र के समय में भी बेहतर थे और इस्लाम की भी हालत में बेहतर हैं, अगर थोड़ा सा दीन का ज्ञान हो जाये। और (दीन में) सब से बेहतर उसे पाओगे जो दीन इस्लाम से सब से अधिक नफ़रत करता था (यानी जिस प्रकार कुफ़्र में सख़्त था, उसी प्रकार इस्लाम लाने के बाद इस में भी उतना ही मज़बूत हो जाता है) और सब से बुरे वह लोग हैं जो दो मुँह रखते हैं, जब फ़लाँ के पास जाते हैं तो इस मुँह को लेकर जाते हैं और फ़लाँ के पास जाते हैं तो उस मुँह को लेकर जाते हैं।

फ़ाइदाः– यानी मुँह देखी बातें करते हैं, थाली के बैगन होते हैं, हक़ बात कहने से डरते हैं, ऐसे लोग पक्के मुनाफ़िक़ होते हैं। आप देखें कि उमर रज़ि॰ कुफ़्र की हालत में जितने सख़्त थे इस्लाम लाने के बाद दीन इस्लाम में भी उतने ही सख़्त और मज़बूत थे। खान (कान) की मिसाल यूँ दी है कि उस में अच्छा–बुरा हर प्रकार का माल होता है, इसी प्रकार इन्सानों में भी पैदाइशी तौर पर अच्छे बुरे होते हैं।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "हर साँस लेने वाला (जानदार) जो आज मौजूद है, वह सौ वर्ष के बाद मर जायेगा।}

1745:– अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक रात नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अ़िशा की नमाज़ पढ़ाई, फिर सलाम फेर कर खड़े हो गये और फ़रमायाः तुम आज की इस रात को देख रहे हो, इस रात से सौ वर्ष के अन्त तक ज़मीन वालों में से कोई भी (जीवधारी) जीवित नहीं रहेगा।

इब्ने उमर रज़ि॰ ने बयान किया कि जिन लोगों ने "सौ वर्ष" रिवायत की है उन्होंने बयान करने में ग़लती की है। आप ने तो फ़रमाया था : "इस समय जो ज़मीन पर मौजूद हैं उन में से कोई जीवित नहीं रहेगा, इस का यह अर्थ हुआ कि सदी (शताब्दी) पूरी हो जायेगी।

फ़ाइदाः– यह हदीस बुख़ारी में भी आ चुकी है (116–इब्ने उमर) मौलाना दावूद राज़ इस का अर्थ बताते हुये लिखते हैं "अर्थ यह है कि आ़म तौर पर इस उम्मत की आयु सौ वर्ष से अधिक न होगी। या यह अर्थ है किआज की रात में जितनी संख्या में इन्सान जीवित हैं सौ वर्ष के अन्त तक सब मर जायेंगे। इस रात के बाद जो पैदा होंगे उन की ज़िन्दगी की नफ़ी (यानी उन का मरना) शामिल नहीं है।"

इसी हदीस को दलील बना इमाम बुख़ारी रह॰ का कहना है कि ख़िज़र अ़लै॰ मर चुके हैं। और यह भी मस्अला साबित किया है कि सोने से पहले दीन–इस्लाम के बारे में बात–चीत करना, वाज़–नसीहत करना जाइज़ है। हाँ, आप ने इधर–उधर की बेमतलब क़िस्से–कहानियाँ बयान करने से मना फ़रमाया है।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबा को बुरा–भला कहना मना है, यह लोग बाद

वाले लोगों से अफ़ज़ल हैं (फिर उन्हें बुरा-भला कहने का क्या हक़ बनता है।)

1746:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरे सहाबा को बुरा मत कहो। उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है अगर तुम में से कोई उहुद पर्वत के बराबर भी सोना ख़ैरात करे तो उन सहाबा के आधे मुद के भी बराबर (सवाब में) नहीं हो सकता।

फ़ाइदा:- यानी एक मुद (आधा किलो ग्राम) ख़ैरात करने पर उन्हें जितना सवाब मिला, उहुद के पहाड़ के बराबर सोना ख़ैरात करेन पर भी तुम्हें उतना सवाब नहीं मिलेगा। फिर किस मुँह से तुम ऐसे नेक लोगों को बुरा कहने का हक़ रखते हो।

बाब {उवैस क़रनी (ताबअ़ी) की फ़ज़ीलत का बयान।}

1747:- उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि ताबअ़ीन (यानी सहाबा को देखने वालों) में एक बहुत ही नेक व्यक्ति हैं जो उवैस के नाम से जाने जाते हैं, उन की एक माँ है (उन की पहचान यह है कि) उन के एक सफ़ेदी होगी, तुम उन से कहना कि वह तुम्हारे लिये दुआ कर दें (क्योंकि वह बहुत नेक हैं)

फ़ाइदा:- इन का नाम उवैस बिन आ़मिर या उवैस बिन अ़म्र है। यह क़बीला बनी क़र्न के रहने वाले थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना ही में इस्लाम ला चुके थे लेकिन आप से मुलाक़ात न कर सके, इसलिये यह ताबअ़ी (यानी जिस ने सहाबा को देखा हो) में गिने जाते हैं। अ़ली रज़ि॰ के शासन काल में सिफ़्फ़ीन की जन्ग में मारे गये। इन के सफ़ेद दाग़ का बयान नीचे की हदीस में आ रहा है।

1748:- उसैर बिन जाबिर से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब यमन से कोई क़ाफ़िला सहयोग और मदद के लिये आता (ताकि उसे कहीं भी जिहाद के लिये भेजा जाये) तो वह उन से मालूम करते कि तुम में उवैस बिन आ़मिर नाम का भी कोई है? चुनान्चे एक मतर्बा वह स्वँय ही उवैस के पास आये और पूछाः क्या आप ही का नाम उवैस बिन आ़मिर है? उन्होंने कहाः जी हाँ। उन्होंने पूछाः क्या आप की माता जी हैं? कहाः जी हाँ (अभी जीवित हैं) फिर पूछाः आप का संबन्ध "मुराद" क़बीला से है? कहाः जी हाँ। फिर पूछाः क्या आप को बर्स (सफ़ेद दाग़) की बीमारी थी जो अब ठीक हो गयी है लेकिन सूजन अब भी बाक़ी है? उन्होंने कहाः जी हाँ। फिर उमर रज़ि॰ ने उन से कहा कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि "तुम्हारे पास उवैस बिन आ़मिर नामक व्यक्ति यमन वालों के साथ फ़ौज की सहायता के लिये कुमक के तौर पर आयेगा जो "क़र्न" की एक ब्रान्च क़बीला "मुराद" से होगा, उसे बर्स की बीमारी थी जो अब ठीक हो गयी है लेकिन सूजन अभी बाक़ी है, उस के पास उस की माँ भी (अभी जीवित) है। उस का यह हाल है अल्लाह के भरोसे पर अगर कोई

क़सम खा लेता है तो अल्लाह पाक उसे पूरा कर देता है, अगर तुम उस से दुआ़ करवा सको तो करवा लेना।" इसलिये आप मेरे लिये दुआ़ कर दीजिये। उन्होंने उन के लिये दुआ़ कर दी तो उमर रज़ि॰ ने पूछाः आप कहाँ जाना चाहते हैं? उन्होंने उत्तर दियाः कूफ़ा। उमर ने कहाः मैं आप के लिये कूफ़ा के गवर्नर के नाम एक पत्र लिख दूँ? उन्होंने कहाः (कोई आवश्यक्ता नहीं) मुझे धूल-मिट्‌टी अटे लोगों के साथ रहना भला लगता है। (फिर वह कूफ़ा चले गये) दूसरे साल कूफ़ा के मालदार लोगों में से किसी ने हज्ज किया तो उस ने उमर रज़ि॰ से भी मुलाक़ात की, उमर ने उस से उवैस का हाल मालूम किया तो उस ने बतायाः हमने उन्हें इस हाल में छोड़ा है कि उन के घर में खाने-पीने की तन्गी थी और वह परेशान हाल थे। यह सुन कर उमर रज़ि॰ ने कहाः मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि "एक व्यक्ति उवैस बिन आ़मिर नामक यमन वालों के इमदादी कुमक के साथ तुम्हारे पास आयेगा, उस का संबन्ध क़बीला मुराद की एक शाखा (ब्रान्च) क़र्न से है, उसे बर्स (यानी सफ़ेद कोढ़) की बीमारी थी लेकिन वह बीमारी तो अब समाप्त हो गयी है लेकिन सूजन अभी भी बाक़ी है। उस के साथ उस की माँ भी है जिस की सेवा करता है। अगर वह किसी काम के तअ़ल्लुक़ से अल्लाह की क़सम खा लेता है तो अल्लाह पाक उस की क़सम को पूरी कर देता है। अगर तुम से हो सके तो उस से अपने बारे में दुआ़ करवा लेना।"

चुनान्चे वह व्यक्ति (वापस हज्ज से लौट कर) उवैस से मिला और उन से अपने लिये दुआ़ की दर्ख़ास्त की तो उन्होंने कहाः तुम अभी एक नेक सफ़र (यानी हज्ज) से वापस आ रहे हो इसलिये तुम मेरे लिये दुआ़ करो। उस ने फिर कहाः आप मेरे लिये दुआ़ फ़रमा दें। लेकिन उवैस ने फिर वही उत्तर दिया और पूछाः क्या तुम उमर से मिले थे? उस ने कहाः जी हाँ। यह सुन कर उन्होंने उस के लिये दुआ़ की तब लोगों को उवैस के मर्तबे का हाल मालूम हुआ। हदीस के रावी उसैर ने बयान किया कि मैं ने उन्हें (अपनी तरफ़ से) एक चादर पहना दिया था, चुनान्चे जब लोग उन्हें देखते तो पूछते कि उवैस के पास यह चादर कहाँ से आ गयीं?

फ़ाइदाः- इन बुज़ुर्ग के बारे में सहीह रिवायत से बस इतना ही साबित है कि वह ताबई़ थे (जिन्होंने सहाबा को देखा था) बड़े नेक थे। लेकिन इन के संबन्ध में कुछ बाज़ारी पुस्तकों में बहुत बढ़ा-चढ़ा कर मनघड़त लिखा गया है, वह सब ग़लत हैं। इन की फ़ज़ीलत के लिये यही काफ़ी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा से उन से दुआयें लेने का अनुरोध किया है।

बाब {नगर मिस्र और वहाँ के रहने वालों के बारे में बयान।}

1749:- अबू ज़र रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम एक ऐसे राष्ट्र को पराजित करोगे जहाँ क़ीरात (सिक्के) का प्रचलन होगा, तो तुम वहाँ के लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करना, क्योंकि (उन की सुरक्षा और

आदार-सम्मान) तुम्हारे ज़िम्मा है और उन का तुम से रिश्ता भी है (या आप ने यह फ़रमाया कि उन का तुम्हारे ऊपर हक़ है और उन से दामादी का रिश्ता भी है) और जब तुम दो व्यक्तियों को एक ईंट की जगह भर ज़मीन के लिये लड़ते देखना तो वहाँ से टल जाना। अबू ज़र ने बयान किया कि मैं ने अब्दुर्रहमान बिन शुरहबील बिन ह-सना और उन के भाई रबीअ़ा को देखा कि एक ईंट बराबर जगह के लिये परस्पर झगड़ा कर रहे थे, चुनान्चे अबू ज़र वहाँ से चले गये।

फ़ाइदा:- 'क़ीरात' यह दिंहम व दीनार की तरह का रुपया था जो मिस्र में प्रचलित था। लोग उसी को इस्तेमाल करते थे और ख़रीद-फ़रोख़्त में लेते-देते थे। आप ने फ़रमाया: "उन से तुम्हारी रिश्तेदारी है" इस प्रकार कि इस्माअ़ील अ़लै॰ की माता जी हाजिरा मिस्र की थीं और वह अ़रब वालों की माँ हुयीं, इस प्रकार मिस्र के लोग नाना-मामा हुये। "उन से दामादी का रिश्ता है" इस प्रकार कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी मारिया क़िबतिया मिस्र की थीं। मिस्र के बादशाह मक़ूक़स ने इन्हें और इन की बहन सीरीन को तोहफ़ा में दिया था। आप ने सीरीन को हस्सान बिन साबित रज़ि॰ को दे दिया।

बाब {ओमान मुल्क के बारे में बयान।}

1750:- अबू बर्ज़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक व्यक्ति को अ़रब के क़बीलों में से किसी क़बीला की तरफ़ भेजा तो (वहाँ के लोगों ने) उसे मारा-पीटा और गालियाँ दीं। जब उस ने आप के पास वापस आ कर इस बात की सूचना दी तो आप ने फ़रमाया: अगर तुम ओमान वालों के पास जाते तो वह न तो तुम्हें मारते-पीटते और ना ही बुरा-भला कहते (क्योंकि वहाँ के लोग भले और अच्छे हैं)

बाब {फ़ारस (ईरान) मुल्क के बारे में बयान।}

1751:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग आप के पास बैठे हुये थे कि इसी बीच आप पर सूरः जुमु-अ़ः की वह्यि होने लगी, जब आप ने यह आयत पढ़ी: "और वह लोग जो अभी तक अ़रब वालों से नहीं मिले हैं" इस पर एक व्यक्ति ने प्रश्न किया: ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! इस से कौन लोग मुराद हैं? आप ने इस का कोई उत्तर न दिया। उस ने दूसरी बार और तीसरी बार भी प्रश्न किया तो आप ने सलमान फ़ारसी के ऊपर अपना हाथ रखा जो उस समय हम लोगों के बीच में बैठे हुये थे, और फ़रमाया: अगर ईमान सोरय्या (नक्षत्र) पर होता तो भी इन की क़ौम (फ़ारस) में से कुछ लोग उस को प्राप्त करेन के लिये वहाँ पहुँच जाते।

फ़ाइदा:- इस हदीस में इशारा ईरान की तरफ़ है। क्योंकि सलमान फ़ारसी रज़ि॰ फ़ारस (ईरान) के रहने वाले थे। आकाश में बहुत सारे छोटे-छोटे नक्षत्र झुरमुट की शक्ल में दिखाई देते हैं जो इतने बुलन्द हैं कि उन की दूरी का अनुमान ही नहीं लगाया जा सकता।

मुस्लिम ही की दूसरी रिवायत में है कि "यही फ़ारस का व्यक्ति (सलमान) ईमान लाने की ख़ातिर वहाँ तक चला जाता।"

कुछ हनफ़ी उलमा ने इस से अबू हनीफ़ा को मुराद लिया है। लेकिन उन का दावा बोदा और बेहूदा है। इमाम साहब काबुल के रहने वाले थे जो मुल्क फ़ारस में नहीं आता है। दूसरे यह कि हदीस में बहुवचन प्रयोग है तो इस से मुराद वह अ़जमी मुहद्दिसीन हो सकते हैं जिन्होंने हदीस की खोज और उस के एकत्र करने में अपना खून-पसीना एक कर दिया। इस में भी इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ नहीं आते, क्योंकि वह मुहद्दिस नहीं थे और न ही उन्होंने एकत्र करने में कोई भूमिका अदा की। मुहद्दिसीन में केवल इमाम बुख़ारी, मुस्लिम और तिर्मिज़ी आदि ही मुल्क फ़ारस के रहने वाले हैं। (बुख़ारी-4897-अबू हुरैरा)

बाब {लोगों की मिसाल ऊँटों की सी है कि सौ में भी एक ऊँट सवारी के लाइक़ नहीं।

1752:- इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम लोगों को ऊँट की तरह पाओगे कि सौ ऊँटों में भी एक ऊँट तेज़ सवारी के योग्य (क़ाबिल) नहीं मिलता।

फ़ाइदाः- अर्थात आदमियों की कमी नहीं, लेकिन नेक, मुत्तक़ी और प्रहेज़गार तलाश करने के बाद भी मुश्किल ही से मिलते हैं। जिस प्रकार ऊँटों की कमी नहीं, लेकिन सवारी के लाइक़ एक आध ही मिलते हैं।

बाब {क़बीला बनी सक़ीफ़ के झूठे का ज़िक्र।}

1753:- अबू नौफ़ल ने बयान किया कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (की लाश) को मदीना की एक घाटी में देखा (कि उन की लाश सूली पर लटक रही है) मक्का वाले और दूसरे लोग उधर से आ-जा रह थे। इसी बीच अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ भी उधर से गुज़रे तो वहाँ खड़े हो गये और कहाः ऐ खुबैब! अस्सलामु अ़लैकुम! (अबू खुबैब उन की कुन्नियत थी) ऐ खुबैब! अस्सलामु अलैकुम ऐ खुबैब! अस्सलामु अ़लैकुम! (यानी उन के शव को तीन बार सलाम किया) अल्लाह की क़सम! (फिर कहा कि) मैं तुम्हें इस से मना करता था, मैं तुम्हें इस से मना करता था, मैं तुम्हें इस से मना करता था (कि ख़िलाफ़त को हासिल करेन के चक्कर में न पड़ो) अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे बारे में (अच्छी तरह) जानता हूँ कि तुम दिन को रोज़ा रखने वालों और रात भर इबादत करने वालों में से थे, तुम रिश्ता-नाता जोड़ने वाले थे। अल्लाह की क़सम! वह गरोह जिसने तुम्हें क़त्ल किया अच्छा है (यह बात तन्ज़ में कही, यानी बुरा है) यह सब बातें उन के शव के पास कह कर चले गये।

जब इस की सूचना गवर्नर हज्जाज बिन यूसुफ़ को मिली तो उस ने उन की लाश को सूली से उतार कर यहूदियों के क़ब्रस्तान में फेंकवा दिया और उन की माता जी (अबू बक्र की बड़ी पुत्री) अस्मा रज़ि॰ को बुलवा भेजा, लेकिन उन्होंने उस के पास जाने से इन्कार कर दिया। उस ने फिर बुला भेजा और यह संदेश भी भेजा कि (अपनी खुशी से)

चली आओ वर्ना मैं ऐसे व्यक्ति को भेजूगाँ जो तुम्हारी चोटियों को पकड़ कर मेरे पास लायेगा। फिर उस ने कहाः मेरा जूता लाओ। चुनान्चे उसे पहन कर अकड़ता हुआ अस्मा रज़ि॰ के पास पहुँचा और कहने लगाः तुम ने देख लिया कि मैं ने अपने दुश्मन की क्या दुर्गत बनाई है? उन्होंने उत्तर दियाः मैं ने देख लिया, तुम ने उन की दुनिया बिगाड़ी और उन्होंने तुम्हारी आख़िरत ख़राब की। मैं ने यह भी सुना है कि तुम मेरे बेटे को "दो कमर बन्द वाली" का बेटा कह कर पुकारते थे। अल्लाह की क़सम! बेशक मैं दो कमर बन्द वाली हूँ। एक कमर बन्द में अल्लाह के रसूल और अबू बक्र का खाना बाँधती थी और दूसरा कमर बन्द वह था जिस की एक महिला को पहनने की आवश्यक्ता पड़ती है। मेरी बात सुनो! नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझ से बयान किया कि क़बीला बनी सक़ीफ़ में एक झूठा पैदा होगा और दूसरा हलाकू। तो झूठे को तो मैं ने देख लिया और हलाकू (यानी हत्या करने वाला) तेरे अ़लावा और मैं किसी को नहीं समझती। यह सुन कर हज्जा खड़ा हो गया और उन्हें कोई जवाब न दिया।

फ़ाइदाः– अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर बिन अ़व्वाम। आप स्वँय सहाबी हैं और सहाबी के बेटे हैं। आप की माता जी अस्मा रज़ि॰ अबू बक्र सिद्दीक़ की बेटी और आइशा की बड़ी बहन थीं। आप की दादी का नाम सफ़िय्या था जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की फूफी थीं। आप मदीना में महाजिरीन की सब से पहली औलाद हैं। अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर ने अमीर मुआ़विया के देहान्त के बाद ही मक्का में अपनी होकूमत क़ाइम कर ली थी। इन्होंने यज़ीद को मक्का में कभी भी होकमत क़ाइम करने की इजाज़त नहीं दी। यज़ीद के देहान्त के बाद लोगों से अपनी ख़िलाफ़त पर बैअ़त ली और बहुत जल्द शाम मुल्क के कुछ स्थानों को छोड़ कर समस्त इस्लाम के ख़लीफ़ा तस्लीम कर लिये गये।

अ़ब्दुल मलिक बिन मर्वान ने हज्जाज बिन यूसुफ़ को इब्ने जुबैर की ख़िलाफ़त को ख़त्म करने पर लगाया। उस ने रमज़ान के महीना में मक्का को घेर लिया और काबा शरीफ़ पर पत्थर फेंक कर उस की छत को तोड़ दिया। इधर इब्ने जुबैर के साथी उन का साथ छोड़ कर मारे डर के भागने लगे। इन्होंने अपनी माँ अस्मा से मश्वरा किया तो उन्होंने कहा कि अगर आप हक़ पर हैं तो शहादत को कुबूल करें। चुनान्चे हज्जाज बिन यूसुफ़ के ख़िलाफ़ जिहाद करते हुये सन 73 हि॰ में शहीद हुये। शव को हुजून के स्थान पर लटका दिया गया और सर काट कर अ़ब्दुल् मलिक के पास भेज दिया गया। एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ सर को काबा के दर्वाज़े पर लटका दिया। माता जी अस्मा ने शव दफ़न करने की अनुमति माँगी मगर हज्जाज ने अनुमति नहीं दी। बाद में अ़ब्दुल् मलिक के हुक्म से शव को दफ़नाया गया। चन्द दिन के बाद माता जी अस्मा का भी देहान्त हो गया। रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अजमअ़ीन। हज्ज़ाज किस मौत मरा? इस बारे में तफ़सील आगे चल कर किसी हदीस के फ़ाइदा में बयान करूँगा।

❀ ❀ ❀

किताबुलबिर्रि-वस्सिलति
(नेकी और सदभावना का बयान)

बाब {माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने का बयान। और उन दोनों में किस का हक़ अधिक है।}

1754:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! लोगों में अच्छा व्यवहार करने के एतबार से मुझ पर किस का हक़ सब से अधिक है? आप ने फ़रमायाः तेरी माँ का। उस ने पूछाः फिर किस का? आप ने फ़रमायाः तेरी माँ का। उस ने पूछाः फिर किस का? आप ने फ़रमायाः फिर तेरे बाप का।

फ़ाइदाः- माँ का प्रथम हक़ है, क्यों उस ने नौ महीना पेट में रखा, दो वर्ष तक दूध पिलाया, तुम्हारी सेवा की, तुम्हें नहलाया, धुलाया, खिलाया, पिलाया, पाल-पोस कर जवान किया। इस दौरान बाप ने तुम्हारे साथ क्या किया और तुम्हारी कितनी सेवा की? आप स्वँय ग़ौर करें।

बाब {माता-पिता के साथ नेकी करना (उन की सेवा करना) नफ़्ली इबादत से बेहतर है।}

1755:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः माँ की गोद में केवल तीन बच्चों ने बात की है। अव्वल ओ़ीसा अ़लै॰। और दूसरे जुरैज के साथी ने (इस की तफ़सील यह है कि) जुरैज नाम का एक प्रहेज़गार व्यक्ति था, उस ने एक धर्मस्थल (इबादत ख़ाना) बना रखा था उसी में नमाज़ पढ़ता और वहीं सोता भी था। एक दिन जबकि वह नमाज़ पढ़ रहा था उस की माँ ने आ कर कहाः ऐ जुरैज! यह सुन कर वह (अपने दिल में) कहने लगाः ऐ मेरे मौला! इधर मैं नमाज़ पढ़ रहा हूँ उधर मेरी माँ बुला रही है (मैं क्या करुँ) फिर वह अपनी नमाज़ ही में लगा रहा। यह देख कर उस की माँ वापस चली गयी। दूसरे दिन जबकि वह नमाज़ पढ़ रहा था उस की माँ फिर आयी और आवाज़ लगाने लगीः ऐ जुरैज! चुनान्चे वह अपने दिल ही दिल में सोचने लगा कि एक मेरे मौला! इधर तो मैं नमाज़ पढ़ रहा हूँ और उधर मेरी माँ बुला रही है (मैं क्या करुँ, क्या न करुँ) आख़िर वह नमाज़ ही में लगा रहा। फिर उस की माँ तीसरे दिन भी आयी और उसे बुलाया, लेकिन वह नमाज़

ही पढ़ता रहा तो उस ने (बद्दुआ देते हुये) कहा: ऐ अल्लाह! इसे उस समय तक मौत न देना जब तक यह किसी वैष्या और बदकार महिला का मुँह न देख ले। इस प्रकार जुरैज और उसके इबादत ख़ाने का बड़ा चर्चा हो गया।

उधर बनी इस्राईल में एक अतिसुन्दर महिला रहती थी जिस की सुन्द्रता का लोग उदाहरण देते थे, उस ने कहा कि अगर आप लोग चाहें तो मैं जुरैज को बला में फँसा सकती हूँ। फिर वह जुरैज के पास आने-जाने लगी, लेकिन वह उस की तरफ़ कोई तवज्जोह ही नहीं देते थे। एक दिन वह एक चरवाहे के पास गयी और उस से संभोग करेन को कहा। चुनान्चे उस के संभोग से वह गर्भवती हो गयी और एक बच्चा जना, तो उस ने कहा: यह बच्चा जुरैज का है। लोगों ने सुना तो जुरैज के पास आये और उस को इबादत ख़ाना से उतार कर मारने-पीटने लगे और उस के इबादत ख़ाना को गिरा दिया। उस ने कहा: आप लोगों को क्या हो गया है? उन्होंने कहा: तुम ने उस वैष्या महिला से ज़िना किया है जिस से उस ने एक बच्चा जना है। उस ने पूछा: वह बच्चा कहाँ हैं? वह बच्चा कहाँ है? चुनान्चे लोग बच्चे को उस के पास ले आये तो उस ने कहा: मुझे ज़रा नमाज़ पढ़ लेने दो, फिर उस ने नमाज़ पढ़ी और बच्चे के पास आ कर उस के पेट में कचोके लगा कर बोला: ऐ बच्चे! तेरा बाप कौन है? वह बोल उठा: फ़लाँ चरवाहा। इतना सुनना था कि लोग जुरैज की तरफ़ दौड़ कर उसे चूमने-चाटने लगे और कहने लगे कि हम तुम्हारा धर्म स्थल सोने-चाँदी का बना देंगे। लेकिन उस ने कहा: इस की कोई आवश्यक्ता नहीं, जैसा था वैसा ही बना दो, चुनान्चे लोगों ने फिर दोबारा वैसा ही बना दिया।

तीसरा बच्चा (जिस ने माँ की गोद ही में बात की) बनी इस्राईल में का था जो अपनी माँ का दूध पी रहा था कि इसी दर्मियान एक बड़ा ही सुहेला जवान घोड़े पर सवार होकर उस के पास से गुज़रा। उस बच्चे की माँ उसे देख कर कहने लगी: ऐ अल्लाह! मेरे बेटे को भी इसी जवान की तरह बना दे। यह सुन कर उसने माँ की छाती छोड़ दी और घोड़सवार की ओर देख कर बोला: ऐ अल्लाह! मुझे उस की तरह न बनाना। यह कह कर फिर वह छाती से मुँह लगा कर दूध पीने लगा। हदीस के रावी अबू हुरैरा रज़ि॰ ने बयान किया कि इस समय भी वह दृष्य (मन्ज़र) मेरे सामने है जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी उंगली चूस कर बता रहे थे कि वह बच्चा इस प्रकार माँ की छाती से दूध पीने लगा। इसी दिर्मयान एक लौंडी उस के पास से गुज़री जिसे लोग मार-पीट रहे थे और कह रहे थे कि इस ने ज़िना किया है और चोरी की है, और वह कह रही थी कि मेरे लिये अल्लाह ही काफ़ी है और वही गवाह है। उस लौंडी को देख कर बच्चे की माँ ने कहा: ऐ अल्लाह! मेरे बच्चे को इस लौंडी की तरह न बनाना। यह सुन कर उस ने फिर दूध पीना छोड़ दिया और उस लौंडी को देख कर बोला: ऐ अल्लाह! मुझे इस लौंडी की तरह बनाना।

उस समय माँ और बेटे के दर्मियान बात होने लगी। माँ नेबच्चे से कहा: जब मैं

ने एक अच्छी शक्ल-सूरत वाले व्यक्ति को देख कर कहा कि ऐ अल्लाह! मेरे बेटे को भी वैसा ही बना दे तो तू ने कहाः ऐ अल्लाह! मुझे वैसा न बनाना। और उस लौंडी को जिसे लोग मार-पीट रहे थे और कह रहे थे कि तू ने ज़िना किया है और चोरी की है, उसे देख कर मैं ने कहाः ऐ अल्लाह! मेरे बेटे को उस की तरह न बनाना, तो तू कहता है कि ऐ अल्लाह! मुझे उसी की तरह बनाना। (मेरे बेटे! बताओ मामला क्या है?) बच्चे ने कहाः चूँकि वह सवार अत्याचारी था इसलिये मैं ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! मुझे उस की तरह न बनाना। और वह लौंडी जिसे लोग मार रहे थे और कह रहे थे कि तू ने ज़िना किया है और चोरी की है। हालाँकि उस ने न तो ज़िना किया है और न ही चोरी की है, इसलिये मैं ने कहाः ऐ अल्लाह! मुझे उसी की तरह (नेक) बनाना।

फ़ाइदाः- इस हदीस की तफ़सीर में उलमा ने बहुत कुछ लिखा हैं। किसी ने कहाः माँ बुलाये तो नमाज़ छोड़ दे, लेकिन बाप बुलाये तो न छोड़े। किसी ने कहाः कि अगर नमाज़ की हालत में बोल देगा तो नमाज़ टूट जायेगी, किसी ने कहा कि नहीं टूटेगी। किसी ने कहा कि जुरैज की शरीअत में बोलना जाइज़ था इसलिये उसे बोलना चाहिये था। किसी ने कहाः बोल देने से फ़र्ज़ नमाज़ टूटेगी और नफ़ल नमाज़ नहीं टूटेगी। इन लोगों ने हदीस के अर्थ को अनर्थ बना कर रख दिया है।

आदमी चाहे फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ रहा हो या नफ़्ली नमाज़, माँ जब पुकारे गी तो यह भी बताएगी कि क्यों पुकार रही है, या पुकारने के बाद उस के दिल में ख़याल आयेगा कि किस अहम काम से पुकार रही है। अगर कोई अहम काम या कोई अहम मामला है, तो तुरन्त नमाज़ तोड़ दो और उस की सुनो। फिर काम कर के तुरन्त नमाज़ पढ़ो, कोई नमाज़ का समय भागा नहीं जा रहा है। हदीस को ला कर यह बतलाना उद्देश्य है कि माँ की आज्ञा पालन कितना अहम है। जो लोग घरों में रह कर माँ-बाप की नहीं सुनते उन्हें चेतावनी है कि नमाज़ की हालत में न सुनने पर इतना गुनाह है तो घर में रह कर न सुनने-मानने पर कितना बड़ा पाप है। यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी आयी है (1206-अबू हुरैरा रज़ि॰, 3435, 1206-अबू हुरैरा)

बाब {माता-पिता के साथ रहने और उन की सेवा करने के लिये जिहाद छोड़ देना जाइज़ है।}

1756:- अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि॰ से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने आ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अनुरोध किया कि मैं आप से हिजरत और जिहाद पर बैअत करता हूँ और इस कार्य पर अल्लाह से सवाब चाहता हूँ। आप ने उस से पूछाः क्या तुमहारे माता-पिता में से कोई जीवित है? उस ने कहाः दोनों ही जीवित हैं। आप ने पूछाः तुम अल्लाह से सवाब चाहते हो? उस ने कहाः हाँ। आप ने फ़रमायाः फिर तो जाओ और उन की सेवा करो।

फ़ाइदाः- माता-पिता की सेवा सब से प्रथम है, चाहे वह जिहाद और हिजरत ही क्यों न हो। अबू हुरैरा रज़ि॰ के बारे में आता है कि माँ की सेवा में लगे रहने की वजह

से हज्ज नहीं किया था।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "माँ की अवज्ञा को अल्लाह पाक ने हराम क़रार दिया है।}

1757:– मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक ने माँ की अवज्ञा और नार्फ़मानी करने, लड़कियों को जीवित गाड़ देने (किसी सवाली को जो मुहताज हो) न देने और (बिला ज़रुरत) माँगते फिरने को हराम क़रार दिया है। इसी प्रकार तीन बातों को नापसन्द करता है (1) बिला ज़रुरत बकबक करना (2) बहुत अधिक सवाल करना (3) और रुपया-पैसा को बर्बाद करना।

बाब {वह आदमी बर्बाद हो, जिस ने अपने माता-पिता या दोनों में से किसी एक को बुढ़ापे की हालत में पा कर उन की सेवा कर के जन्नत का हक़दार नहीं बन गया।}

1758:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः वह व्यक्ति बर्बाद हो, वह व्यक्ति बर्बाद हो, वह व्यक्ति बर्बाद हो। इस पर पूछा गयाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! कौन बबार्द हो? आप ने फ़रमायाः जो अपने माता-पिता दोनों का, या उन में से किसी एक को बुढ़ापे की हालत में पाये और (उन की सेवा कर के) जन्नत में न जाये।

बाब {अपने पिता के मित्रों के साथ नेकी करनां यह भी बड़ी नेकी है।}

1759:– अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब मैं मक्का का सफ़र करता तो (ऊँट की सवारी के साथ) एक गधा भी रखता। जब ऊँट थक जाता तो गधे पर सवार हो जाता, और एक अ़मामा होता जिसे सर पर बाँधे रहता। एक दिन मैं गधे पर सवार होकर जा रहा था कि इसी दर्मियान एक दीहाती मिल गया, मैं ने उस से पूछाः क्या तुम फ़लाँ के बेटे-पोते हो? उस ने कहाः हाँ, इब्ने उमर ने बयान किया कि फिर मैं ने उसे अपना गधा दे दिया और कहा कि इस पर सवारी करो, और अपनी पगड़ी भी दे दी कि इसे अपने सर पर बाँध लो। इस पर मेरे कुछ साथियों ने मुझ से कहाः अल्लाह पाक आप को बख़्शे, आप ने अपना गधा उसे दे दिया और सर पर बाँधने वाली पगड़ी भी सौंप दी। मैं ने कहाः मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि यह भी बहुत बड़ी नेकी है किअपने पिता के मर जाने के बाद आदमी उस के दोस्तों से भी अच्छा बर्ताव करे। उस दीहाती का बाप उमर रज़ि॰ का दोस्त था।

फ़ाइदाः– गधे को इसलिये साथ रखते थे कि ऊँट अगर थक जाये तो उस पर सवारी करें और ऊँट को थोड़ा आराम मिल जाये। बाप के दोस्त की सेवा करना यह भी नेकी है। यह शिक्षा केवल दीन इस्लाम हमें देता है।

बाब {बेटियों के साथ अच्छा बर्ताव करने का बयान।}

1760:– नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया किमेरे पास एक महिला आयी जिस के साथ उस की दो बेटियाँ थीं। उस ने मुझ से माँगा, लेकिन मेरे पास एक खूजर के अ़लावा और कुछ न था इसलिये उसी को दे दिया। उस ने उसे लेकर दो टुक्ड़ा किया और एक-एक टुक्ड़ा दोनों को दे दिया और स्वँय कुछ न खाया और उठ कर चली गयी। फिर जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आये तो उस महिला का हाल आप से बयान किया तो आप ने फ़रमायाः जिस को केवल बेटियाँ ही मिली हैं और वह उन की अच्छी तरह देख-भाल और पर्वरिश करता है तो वह बेटियाँ क़ियामत के दिन उस के लिये जहन्नम की ओट बन जायेंगी।

1761:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस व्यक्ति ने दो बच्चियों की पर्वरिश की और पाल-पोस कर जवान कर दिया तो क़ियामत के दिन मैं और वह एक साथ होंगे, फिर आप ने अपनी उंगलियों को मिला कर बताया।

फ़ाइदाः– यानी क़ियामत के दिन मेरा उस का साथ होगा। इस हदीस से मालूम हुआ कि बेटियों की पर्वरिश करना बड़ी नेकी का काम है। जिन के पास बेटियाँ न हों वह यतीम बच्चियों को लेकर उन को पाल-पोस कर जवान करें और शादी-विवाह कर दें, ताकि क़ियामत के दिन आप का साथ नसीब हो।

बाब {रिश्ते-नाते जोड़ने से उम्र बढ़ती है।}

1762:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः जिस को पसन्द हो कि उस की रोज़ी बढ़े, या उस की उम्र लंबी हो वह रिश्ते-नाते को जोड़े और मिलाए।

फ़ाइदाः– यानी उन के साथ अच्छा व्यवहार करना, उन के दुःख-दर्द और परेशानी में शामिल होना, उन की हर प्रकार से भरसक सहायता करना यह सब रिश्ता जोडने में शामिल हैं।

बाब {तुम रिश्तों-नातों को जोड़ते रहो अगर्चे वह तोड़ने की कोशिश करें।}

1763:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे कुछ रिश्तेदार ऐसे हैं कि मैं उन के साथ नेकी करता हूँ तो वह मेरे साथ बुराई करते हैं, मैं उन के साथ रिश्ता-नाता जोड़ता हूँ तो वह तोड़ने में लगे रहते हैं, मैं उन के साथ हमर्ददी करता हूँ तो वह जिहालत करते हैं। आप ने फ़रमायाः अगर तुम वास्तव में ऐसा ही करते हो तो उन के मुँह में गर्म राख डालते हो, तुम जब तक अपनी हालत पर बाक़ी

रहोगे (यानी ऊपर के नेक काम करते रहोगे) अल्लाह की ओर से तुम्हारे साथ हमेशा एक फ़रिश्ता रहेगा जो तुम्हें उन पर ग़ालिब रखेगा।

फ़ाइदा:– वह फ़रिश्ता तुम्हें उन की बुराइयों से सुरक्षित रखेगा और नेक काम में तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे लिये दुआयें माँगेगा।

बाब {रिश्ता–नाता जोड़ने और तोड़ने का बयान।}

1764:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक ने मख़्लूक़ को पैदा किया और उन को बना–सजा कर फ़ारिग़ हुआ तो नाता–रिश्ता ने खड़े होकर कहाः यह स्थान उस का है जो नाता तोड़ने से अल्लाह की पनाह माँगे। अल्लाह ने फ़रमयाः तुम ने ठीक कहा, क्या तुम्हें यह पसन्द नहीं कि जो तुम को जोड़े मैं भी उस को जोड़ूँ और तुम्हें तोड़े मैं भी उसे तोड़ूँ? रिश्ता–नाता ने उत्तर दियाः ऐ मेरे मौला! हाँ, ऐसा ही होना चाहिये। अल्लाह ने फ़रमायाः फिर ऐसा ही होगा।

हदीस के रावी अबू हुरैरा रज़ि॰ ने फ़रमायाः अगर तुम्हारा जी चाहे तो यह आयत पढ़ लो "तुम लोगों से यह बअीद (दूर) नहीं कि अगर तुम को होकूमत मिल जाये तो तुम ज़मीन में फ़साद मचाओगे और रिश्ते–नाते तोड़ोगे। यही वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने बहरा बना दिया है और उन की आँखों की रोशनी छीन ली है" (पारः26, सूरः मुहम्मद–22, 23)

फ़ाइदा:– क्या रिश्ता–नाता के पास ज़बान है जो अल्लाह से बात–चीत कर सकता है? जैसा कि इस हदीस में ज़िक्र है। इस का उत्तर यह है कि सब कुछ संभव है। अल्लाह पाक जिस को बोलने की ताक़त दे दे। (बुख़ारी–4830–अबू हुरैरा)

1765:– जुबैर बिन मुत्इम रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः रिश्ता–नाता तोड़ने वाला जन्नत में नहीं जायेगा। इब्ने अबू उमर ने बयान किया कि अबू सुफ़यान ने भी रिवायत किया हैः जो रिश्ता–नाता को तोड़े (वह जन्नत में नहीं जायेगा)

1766:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अनाथ की देख–भाल और उस की पर्वरिश करने वाला चाहे उस का रिश्ते दार हो, या कोई और, मैं और वह जन्न्त में इस तरह एक साथ दाख़िल होंगे जैसे यह दोनों उगँलियाँ। फिर इमाम मालिक ने शहादत और बीच की उंगली की तरफ़ इशारा किया।

फ़ाइदा:– शहादत की उँगली और बीच की उंगली के दर्मियान कोई दूरी नहीं है, दोनों एक साथ हैं। आप अनुमान लगा सकते हैं कि अनाथ की पर्वरिश करना कितना बड़ा नेक काम है। इस प्रकार की शिक्षा केवल दीन इस्लाम ही में है और दूसरे धर्मों में इस का दूर–दूर तक कहीं ज़िक्र नहीं।

बाब {बेवाओं और ग़रीबों को कमा कर खिलाना बड़े सवाब का काम है।}

1767:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बेवाओं (विधुवाओं) और ग़रीब महिलाओं के लिये जो कमाई करता और दौड़-धूप करता है, अल्लाह के नज़दीक उस का मर्तबा जिहाद करने वालों के बराबर हैं। और मेरे ख़याल में आप ने यह भी फ़रमायाः उस का दर्जा उस शख़्स के बराबर है जो नमाज़ में खड़े रहते हुये नहीं थकता और जो बिला नाग़ा रोज़ा रखता है।

बाब {अल्लाह के लिये मुहब्बत करने वालों की फ़ज़ीलत का बयान।}

1768:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक क़ियामत के दिन पुकारेगाः कहाँ हैं वह बन्दे जो मेरी अ़िज़्ज़त और जलाल (प्रताप) के लिये एक-दूसरे से मुहब्बत करते थे? आज मैं उन को अपने साया तले रखूगाँ, और आज मेरे साया के अ़लावा और कोई साया न होगा।

1769:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लमने फ़रमायाः एक व्यक्ति अपने भाई से मुलाक़ात करने के लिये एक दूसरे गाँव की तरफ़ जा रहा था कि अल्लाह तआ़ला ने उस की राह में एक फ़रिश्ता भेज दिया, जब वह उस के पास पहुँचा तो फ़रिश्ते ने पूछाः तुम कहाँ जा रहे हो? उस ने उत्तर दियाः फ़लाँ गाँव में मेरा भाई रहता है उसे देखने जा रहा हूँ। फ़रिश्ते ने पूछाः क्या तुम्हारे ऊपर उस का कोई एहसान है जिसे उतारने के लिये उस के पास जा रहे हो? उस ने कहाः ऐसी कोई बात नहीं है, मैं केवल अल्लाह के लिये उस से मोहब्बत करता हूँ। फ़रिश्ते ने कहाः मैं अल्लाह का भेजा हुआ एल्ची हूँ, अल्लाह पाक तुझ से भी वैसी ही मुहब्बत करता है जैसी तू अपने भाई से मुहब्बत करता है।

बाब {जो व्यक्ति जैसे मुहब्बत करता है उस का शुमार वैसे के साथ होता है।}

1770:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और पूछाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! क़ियामत कब आयेगी? आप ने फ़रमायाः तू ने उस के लिये क्या तय्यारी की है? उस ने कहाः अल्लाह और उस के रसूल से मुहब्बत (कर के तय्यारी की है) आप ने फ़रमायाः जिस से तुम मुहब्बत करते हो तुम्हारी गिनती उसी के साथ होगी। अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि हमें इस्लाम लाने के बाद किसी चीज़ से इतनी ख़ुशी नहीं हुयी जितनी इस हदीस को सुन कर हुयी कि "तुम्हारी गिनती भी उसी के साथ होगी जिस से तुम मुहब्बत करते हो।" अनस रज़ि॰ ने यह भी कहा कि मैं तो अल्लाह, उस के रसूल, अबू बक्र व उमर (सभी से) मुहब्बत करता हूँ और आशा करता हूँ कि क़ियामत के दिन मैं इन सब के साथ रहूँगा, अर्गचे उन लोगों की तरह मैं ने नेक कार्य नहीं किये हैं।

फ़ाइदा:– मुहब्बत करने का अर्थ जबानी नहीं है। जो रसूल से मुहब्बत करेगा वह उस की आज्ञापालन करेगा और हर-हर क़दम उस के हुक्म के मुताबिक़ उठायेगा। सोते, जागते, उठते, बैठते, चलते, फिरते उसी की तरह करने की कोशिश करेगा। इस का नाम है मुहब्बत करना। वर्ना आजकल तो अल्लाह के रसूल से मुहब्बत का दम भरने वाले भी लाखों की संख्या में हैं, लेकिन दिन-रात रसूल की अवज्ञा में ही बिताते हैं। ऐसे नालायक़ों का शुमार नबी के साथ क्योंकर होगा।

बाब {जब अल्लाह पाक अपने किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो अपने बन्दों के दिलों में भी उस की मुहब्बत डाल देता है।}

1771:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह पाक जब किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्रील को बुला कर उन से कहता है कि मैं फ़लाँ बन्दे से मुहब्बत करता हूँ इसलिये तुम भी उस से मुहब्बत करो। फिर जिब्रील भी उस से मुहब्बत करने लगते हैं और साथ ही आसमान में भी एलान कर देते हैं कि अल्लाह पाक फ़लाँ बन्दे से मुहब्बत करता है इसलिये तुम लोग भी उस से मुहब्बत करो। चुनान्चे आसमान के समस्त फ़रिश्ते भी उस से मुहब्बत करने लगते हैं। इस प्रकार वह ज़मीन में भी महबूब हो जाता है (और इन्सान भी उस से मुहब्बत करने लगते हैं) और जब अल्लाह पाक किसी बन्दे से दुश्मनी करता है तो जिब्रील को बुला कर कहता है कि मैं फ़लाँ बन्दे से दुश्मनी करता हूँ इसलिये तुम भी उस से दुश्मनी करो। चुनान्चे वह भी उस से दुश्मनी करने लगते है और आसमान में एलान कर देते हैं कि अल्लाह पाक फ़लाँ व्यक्ति से दुश्मनी करता है इसलिये तुम सब भी उस से दुश्मनी करो, इस प्रकार आसमान के तमाम फ़रिश्ते भी उस से दुश्मनी करने लगते हैं, फिर ज़मीन वाले भी उस के दुश्मन बन जाते हैं।

फ़ाइदा:– इस हदीस से मालूम हुआ कि किसी बुज़ुर्ग और नेक आदमी से लोगों की मुहब्बत और उस की तरफ़ लोगों का झुकाव, अल्लाह के उस से मुहब्बत करने की पहचान है।

बाब {रुहें झुन्ड की शक्ल में रहती हैं।}

1772:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: लोगों की मिसाल सोने-चाँदी के कानों की सी हैं (कि उस में अच्छा-बुरा हर तरह का पदार्थ होता है) इसलिये जो कुफ़्र की हालत में नेक थे वह दीन इस्लाम कुबूल कर लेने के बाद भी नेक होते हैं, मगर यह कि दीन की समझ हासिल कर लें। और रुहें झुन्ड दर झुन्ड की शक्ल में रहती हैं। सो जिन की दुनियाँ में एक-दूसरे से पहचान थी वह यहाँ भी एक साथ रहती हैं और जो वहाँ अलग थीं वह यहाँ भी एक-दूसरे से अलग-थलग ही रहती हैं।

बाब {एक मोमिन बन्दा अपने दूसरे मोमिन बन्दे के लिये मकान की तरह है।}

1773:– अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये मकान की तरह है कि उस की एक ईंट दूसरी ईंट को थामें रहती है।

फ़ाइदा:– इसी प्रकार मोमिन बन्दा जीवन के हर क्षेत्र में, सुख–दुःख और अच्छे–बुरे हर समय में एक–दूसरे का सहयोगी और सहायक होता है।

बाब {मेहरबानी और हमदर्दी में मोमिन परस्पर एक शरीर (जिस्म) के समान हैं।}

1774:– नोमान बिन बशीर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेहरबानी, रहमत और हमर्ददी में मोमिन की मिसाल परस्पर एक शरीर की सी है, कि शरीर का एक अंग अगर बीमार हो जाता है तो पूरा शरीर दुखी हो जाता है, नींद नहीं आती है और बुख़ार चढ़ जाता है।

फ़ाइदा:– इस प्रकार हर मोमिन को चाहिये कि अपने दूसरे मोमिन भाई की तक्लीफ़ को अपनी तक्लीफ़ समझे और उस के दुख–तक्लीफ़ को दूर करने का भरसक प्रयास करे।

बाब {एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई होता है, इसलिये न तो उस पर किसी प्रकार का अत्याचार करता है और न ही उसे ज़लील करता है।}

1775:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः आपस में एक–दूसरे से हसद न करो, एक–दूसरे के अ़ैब को तलाश करने के पीछे मत पड़ो, आपस में कीना कपट और दुश्मनी मत रखो, और तुम में का कोई किसी के ख़रीदे हुये सामान का सौदा न करे, अल्लाह का बन्दा और भाई–भाई बन कर रहो। एक मुसलमान, दूसरे मुसलमान के लिये भाई की हैसिय्यत रखता है इसलिये (उस का फ़र्ज़ बनता है कि) वह उस पर न अत्याचार करे और न ही उसे ज़लील करे। (याद रखो!) तक़्वा और प्रहेज़गारी यहाँ है, फिर आप ने अपने सीने (दिल) की तरफ़ तीन बार इशारा फ़रमाया। और आदमी के बुरा होने के लिये केवल इतना ही काफ़ी है कि वह अपने मुसलमान भाई को बुरा जाने। एक मुसलमान का खून, माल और मान–मर्यादा (सब कुछ) दूसरे मुसलमान के लिये हराम है।

फ़ाइदा:– इन्सान की दुनियावी ज़िन्दगी में यह हदीस सब से अधिक राहनुमा है। यह हदीस मुख़्तसर होने के बावजूद अथाह समुद्र की तरह है।

1776:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक तुम्हारी सूरत और धन–दौलत को नहीं देखता है, वह तुम्हारे दिल और आमाल को देखता है।

फ़ाइदा:– अल्लाह के यहाँ काले–गोरे रन्ग का होने की कोई अहमियत नहीं, अगर किसी

काले इन्सान के दिल में तक़्वा और प्रहेज़गारी है और उस का अ़मल अच्छा है, तो अल्लाह के निकट वह गोरे इन्सान से बेहतर है।

बाब {एक मुसलमान बन्दा, दूसरे मुसलमान बन्दे के अ़ैबों को छुपाता है।}

1777:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब किसी बन्दे की बुराई पर अल्लाह पाक दुनिया में पर्दा डाल देता है तो आख़िरत में भी पर्दा डाल देगा।

अबू हुरैरा रज़ि॰ ही से एक दूसरी रिवायत में है कि जो कोई बन्दा अपने मुसलमान भाई बन्दे के अ़ैब को दुनिया में छुपायेगा, तो अल्लाह पाक भी उस के अ़ैब (दोष) को (क़ियामत के दिन) छुपा लेगा।

बाब {साथ उठने–बैठने वालों के लिये सिफ़ारिश करने का बयान।}

1778:– अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास जब कोई अपनी ज़रुरत को लेकर आता तो आप अपने सहाबा से फ़रमातेः इस के लिये तुम लोग भी सिफ़ारिश करो (क्योंकि इस की जाइज़ ज़रुरत के लिये) सिफ़ारिश करने पर तुम्हें सवाब मिलेगा। अल्लाह पाक अपने सन्देष्टा की ज़बान से वही फ़ैसला करता है जो वह पसन्द करता है।

फ़ाइदाः– किसी नेक काम में सिफ़ारिश करना सवाब का काम है, चाहे उस की सिफ़ारिश कुबूल हो या न हो। उस को सिफ़ारिश करने के बदले नेकी मिलती है।

बाब {नेक साथी की मिसाल।}

1779:– अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः नेक साथी और बुरे साथी की मिसाल खुश्बू बेचने वाले और भट्ठी जलाने वाले की सी है। खुश्बू बेचने वाला (उस के पास बैठोगे तो) या तो तुम्हें तोहफ़ा में खुश्बू देगा, या तुम स्वँय ही (किसी न किसी दिन) उस से ख़रीदोगे (या कुछ नहीं तो) उस के पास बैठने से खुश्बू की महक तो पाओगे ही। और भट्ठी जलाने वाला (उस के पास बैठोगे तो) या तो तुम्हारे कपड़े जला देगा (और कुछ नहीं तो) उस की बुरी गन्ध तो तुम्हें सूँघनी ही पड़ेगी।

फ़ाइदाः– हदीस का यह अर्थ है कि जिस प्रकार की संगत अपनाओगे वैसा ही प्रभाव तुम्हारे ऊपर पड़ेगा। अच्छे लोगों के साथ रहोगे तो अच्छी बातें सीखोगे और बुरे लोगों की संगत अपनाओगे तो बुरी बातें सीखोगे। खुश्बू बेचने वाले से दोस्ती करोगे तो खुश्बू की महक पाओगे। लोहार से दोस्ती करोगे तो चिन्गारी और धुँवा पाओगे।

बाब {पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करने की वसिय्यत।}

1780:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जिब्रील ने अपने

पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करने की इतनी बार नसीहत की कि मुझे एहसास होने लगा कि वह पड़ोसी को भी (तर्का का) वारिस बना देंगे।

बाब {नेकी और भलाई के कामों में पड़ोसी का ख़ास ख़ियाल रखना।}

1781:– अबू ज़र रज़ि॰ ने बयान किया कि मेरे दोस्त (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने मुझे वसिय्यत की कि जब गोश्त पकाओ तो शूबा बढ़ा दिया करो और अपने पड़ोसियों में जिस के घर मुनासिब समझो (थोड़ा-बहुत) पहुँचा दो।

1782:– अबू ज़र रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमायाः किसी प्रकार की नेकी और एहसान को मामूली न आँको। और यह भी एक एहसान है कि जब तुम अपने भाई से मिलो तो ख़न्दापेशानी (हंसते हुये चेहरे) से मिलो।

बाब {नर्मी का बयान।}

1783:– जरीर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः जो व्यक्ति नर्मी (हमर्ददी) से महरुम (वंचित) है वह भलाई से महरुम है।

1784:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः किसी के अन्दर नर्मी (और हमर्ददी) उस की खूबी होती है, लेकिन जब यह समाप्त हो जाये तो अ़ैब बन जाता है।

फ़ाइदा:– कुछ लोग कठोर दिल के होते हैं, उन के अन्दर नर्मी, हमर्ददी, सहनशीलता, नम्रता और सद्भावना नहीं पाई जाती। ऐसे व्यक्ति को दूसरों से भी हमर्ददी और नर्मी की उम्मीद नहीं रखनी चाहिये।

बाब {अल्लाह पाक नर्मी को पसन्द करता है।}

1785:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ आ़इशा! अल्लाह नर्मी को पसन्द करता है और स्वँय भी नर्म है। वह नर्मी पर देता है। सख़्ती पर या किसी और तरीक़े से माँगने पर नहीं देता है।

फ़ाइदा:– नर्मी, से मुराद हमर्ददी, बुर्दबारी, रहमत, नम्रता, अच्छा व्यवहार-बर्ताव, खुशदिली सब शामिल हैं। जिस प्रकार किसी से कोई चीज़ लेने के लिये नर्मी और लचीलापन अपनाना पड़ता है, इसी प्रकार अल्लाह पाक से भी हासिल करने के लिये नम्रता और आ़जिज़ी इख़्तियार करनी पड़ेगी। सख़्ती से माँगने पर न बन्दा देता है और न ही अल्लाह।

बाब {तकब्बुर करने वाले को अ़ज़ाब मिलता है।}

1786:– अबू सओ़ीद खुदरी और अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अ़िज़्ज़त अल्लाह का ओढ़ना है और बड़ाई उस का बिछौना है (यह दोनों अल्लाह की सिफ़त हैं) जो कोई यह दोनों सिफ़तें इख़्तियार करेगा मैं उसे दन्ड दूगाँ।

फ़ाइदाः– 'अ़िज़्ज़त' और 'बड़ाई' यह दोनों अल्लाह की सिफ़त हैं जो ख़ालिक़ है। ख़ालिक़ के सामने मख़्लूक़ कैसे बड़ा बन सकता है। फ़िऔन, हामान, शद्दाद ने बड़ा बनने की कोशिश की तो अन्जाम आप ने देख लिया। इसीलिये इन्सान को अपने आप को हमेशा ज़लील, छोटा और ख़ाकसार समझना चाहिये।

1787:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन अल्लाह पाक तीन आदमियों से न तो बात करेगा, न उन्हें पाक करेगा। हदीस के रावी अबू मुआविया ने कहा कि न ही उन की तरफ़ रहमत की नज़र करेगा, बल्कि उन को कठोर दन्ड देगा (1) बूढ़ा ज़िनाकार (2) झूठा बादशाह (3) मग़रुर मुहताज।

फ़ाइदाः– ज़िना करने की एक आयु होती है। अगर बुढ़ापे में कोई करे तो उस से बड़ा अभागा दुनिया में और कौन होगा। बादशाह का काम न्याय करना है। अगर वही झूठा हो तो फिर जनता किस के सामने न्याय की गोहार लगाये। एक मुहताज और ग़रीब का सर झुका होता है, लेकिन जब वही तकब्बुर करने लगे तो भला उसे भीख कौन देगा।

बाब {अल्लाह पाक पर क़सम खाने वाले का बयान।}

1788:– जुन्दुब रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक व्यक्ति ने कहा कि "अल्लाह की क़सम! अल्लाह फ़लाँ को नहीं माफ़ करेगा। यह सुन कर अल्लाह ने फ़रमायाः कौन है वह जो क़सम खा कर कहता है कि नहीं माफ़ करुँगा। मैं ने तो फ़लाँ को माफ़ कर दिया, और उस की क़सम बेकार गयी।

फ़ाइदाः– किसी के बारे में दावे के साथ क़सम खा कर कहना यह महा जिहालत है। उस को कैसे मालूम कि फ़लाँ व्यक्ति को माफ़ नहीं करेगा, वह ग़ैब की बात तो जानने वाला नहीं। इसलिये इस प्रकार दूसरे के लिये क़सम खा कर दावा करना ग़लत है।

बाब {र्नमी का बर्ताव करने का बयान। और उस व्यक्ति का बयान जिस की बुराई की वजह से लोग उस से कन्नी काटें।}

1789:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि किसी व्यक्ति ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अन्दर आने की अनुमति माँगी तो आप ने फ़रमायाः उसे अनुमति दे दो, यह अपने खान्दान का बुरा शख़्स है। चुनान्चे जब वह अन्दर आया तो आप ने उस से बड़ी र्नमी से बातें कीं। आ़इशा रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! आप ने उस के बारे में ऐसी–ऐसी बातें कही थीं, फिर उस से र्नमी से बातें कीं?

आप ने फ़रमायाः ऐ आइशा! क़ियामत के दिन अल्लाह के नज़दीक सब से बुरा वह व्यक्ति होगा जिस की बुराइयों से बचने के लिये लोग उस से मिलना जुलना छोड़ दें (और बग़ल काट कर निकल जायें)

फ़ाइदाः— बहुत से लोग इतने नक चढ़े और बदमिज़ाज होते हैं कि किसी से मिलते ही उसे दो-एक अपशब्द अवश्य ही सुना देते हैं, या इतने बुरे व्यवहार से पेश आते हैं कि कोई दोबारा उन से मिलना पसन्द नहीं करता। आप ने फ़रमायाः यह कोई ज़रुरी नहीं एक कठोर आदमी से कठोरता से पेश आया जाये।

बाब {माफ़ कर देने का बयान।}

1790:— अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सदक़ा-ख़ैरात करने से माल में कमी नहीं आती। और जिस बन्दे को माफ़ कर देने की आदत है अल्लाह पाक उस की इज़्ज़त व मर्तबे को बढ़ाता है। और जो बन्दा अल्लाह के सामने आजिज़ी और नम्रता का इज़हार करता है, अल्लाह पाक उस के नेकी के दर्जे को बुलन्द कर देता है।

फ़ाइदाः— मालूम हुआ कि जो नेक लोग होते हैं वह झुक कर चलते हैं अभिमान से दूर रहते हैं। और जिन के अन्दर कुछ नहीं होता वह सर बुलन्द कर के अकड़ कर चलते हैं। वह पेड़ जो फलदार होता है उस की डालियाँ झुकी रहती हैं।

बाब {जो व्यक्ति ग़ुस्सा के समय अपने आप को क़ाबू में रखे।}

1791:— अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बेऔलाद किसे समझते हो? लोगों ने कहाः जिस के औलाद नहीं होती। आप ने फ़रमायाः वह बेऔलाद नहीं है। बेऔलाद तो वह है जिस ने अपनी औलाद में से अपने आगे कुछ नहीं भेजा (यानी जिस की औलाद ने देहान्त नहीं किया) आप ने फिर पूछाः तुम में से पहलवान कौन है? रावी कहते हैं कि हम ने कहाः पहलवान वह है जिसे लोग पछाड़ न सकें। आप ने फ़रमायाः नहीं, बल्कि पहलवान वह है जो ग़ुस्सा के समय अपने को क़ाबू में रखे।

फ़ाइदाः— यानी ग़ुस्सा के समय अपनी ज़बान को क़ाबू में रखे और किसी पर हाथ न उठाये। मार-पीट और गाली-गुलूच पर आमदा न हो। जिस की औलाद बचपने में मर जाती है वह क़ियामत के दिन उस का हाथ पकड़ कर जहन्नम से बचाने की कोशिश करेगी। औलाद से फ़ाइदा यह है कि वह दुख-दर्द में काम आती है। और अगर मर गयी और उस पर सब्र किया तो उस पर नेकी मिलती है। और अगर बचपने ही में मर गयी तो आख़िरत में अपने माता-पिता के लिये सिफ़ारिश करेगी। मुस्लिम शरीफ़ ही की रिवायत में है कि अबू हस्सान ने अबू हुरैरा रज़ि॰ से कहाः मेरे दो बेटे मर गये हैं इसलिये मुझे कोई हदीस सुना दीजिये जिस से मेरा दिल खुश हो जाये। उन्होंने बयान किया कि छोटे

बच्चे जन्नत के कीड़े हैं (जो जन्नत से जुदा नहीं होंगे) वह अपने माँ-आप से मिलेंगे और उन का कपड़ा, या हाथ पकड़ कर थाम लेंगे, जिस प्रकार मैं तुम्हारा कपड़ा पकड़ कर थामे हुये हूँ, और उस समय तक न छोड़ेंगे जब तक अल्लाह पाक उन के माँ-बाप को जन्नत में न दाख़िल कर देगा। (मुस्लिम)

बाब {गुस्सा के समय "अऊज़ुबिल्लाहि....." पढ़ लेना चाहिये।}

1792:– सुलैमान बिन सर्द से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि दो आदमी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने गाली-गुलूच करने लगे। इतने में एक की आँख (मारे गुस्सा के) लाल हो गयीं और उस के गले की रगें फूल गयीं। इस पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुझे एक ऐसा कलिमा मालूम है कि अगर वह व्यक्ति पढ़ ले तो उस का गुस्सा ठन्डा हो जाये। यानी **"अऊज़ुबिल्लाहि मि-नश्शैता निरजीम"** (मैं धुतकारे हुये शैतान से अल्लह की पनाह माँगता हूँ) एक व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़बान से यह दुआ सुन कर उस के पास गया और बयान किया तो वह कहने लगाः क्या तुम मुझे पागल समझते हो।

फ़ाइदा:– उस ने यह समझा होगा कि जब आदमी पागल हो जाता है तब शैतान से पनाह माँगा जाता है। हालाँकि गुस्सा भी दीवानापन, पागलपन और जुनून ही है। (बुख़ारी-3282, 6115, 6048-सुलैमान बिन सर्द) जबकि यह तशरीह लिख रहा हूँ सूचना मिली है कि भारतीय जनता पार्टी के महासचीव प्रमोद महाजन को उसी के सगे भाई प्रवीण महाजन ने मुंबई में गुस्से से पागल होकर गोली मार दी। 23.4.06

बाब {इन्सान इस प्रकार पैदा किया जाता है जो अपने कोथाम न सकेगा।}

1793:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब आदम का पुतला अल्लाह ने जन्नत में बनाया तो उस को बना कर छोड़ दिया जब तक के लिये उस ने चाहा। चुनान्चे शैतान ने (मौक़ा पा कर) उस के चारों तरफ़ घूमना और उस को ताकना-झाँकना शुरु कर दिया, जब देखा कि वह अन्दर से खोखला है तो उस ने ताड़ लिया कि इस की पैदाइश ही इस प्रकार की है कि अपने पर ही क़ाबू न रख सकेगा।

फ़ाइदा:– अर्थात गुस्सा और नाराज़गी के समय अपने आप पर क़ाबू न रख सकेगा। अपने आप को शक-शुब्हे से न बचा सकेगा। जो चाहेगा इसे अपने बहकावे में ले लेगा।

बाब {नेकी और गुनाह का बयान।}

1794:– नव्वास बिन सिम्आ़न से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ मदीना में एक वर्ष तक रहा, मैं हिजरत की निय्यत से मदीना नहीं आया था बल्कि एक मस्अला पूछने आया था वह यह कि मैं ने आप

से भलाई और बुराई के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमायाः अच्छे अख़्लाक़ का नाम नेकी है, और गुनाह उस का नाम है जो तुम्हारे दिल में खटके और तुम्हें यह पसन्द न हो कि लोगों को वह बात मालूम हो जाये।

बाब {रास्ता से तक्लीफ़ देने वाली चीज़ के हटा देने वाले के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़रमान।}

1795:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक व्यक्ति ने राह में काँटेदार टहनी पड़ी देखी तो कहने लगाः अल्लाह की क़सम! मैं इस को राह से हटा दूगाँ ताकि मुसलमानों को आने-जाने में तक्लीफ़ न पहुँचे। बस इतने पर अल्लाह पाक ने उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया।

फ़ाइदा:- रब की बख़्शिश के लिये कोई बहाना चाहिये। अल्लाह पाक छोटी-बड़ी नहीं देखता है, बल्कि बन्दे के अन्दर का जोश, जज़्बा और निय्यत देखता है। एक रिवायत में है कि मैं ने जन्नत में एक व्यक्ति को मज़े से टहलते-घूमते देखा। उस ने राह में से एक पेड़ को काट कर हट दिया था जिस से लोगों को (आने-जाने में) तक्लीफ़ पहुँचती थी (मुस्लिम-अबू हुरैरा)

1796:- अबू बर्ज़ा रज़ि॰ से रिवातय है उन्होंने बयान किया कि मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप मुझे ऐसी बात बतला दीजिये जो मेरे फ़ाइदा की हो। आप ने फ़रमायाः मुसलमानों के रास्ता से तक्लीफ़ देने वाली चीज़ को हटा दो।

बाब {मोमिन के पैर में जो काटाँ चुभता है, या उस को कोई मुसीबत पहुँचती है तो उस पर उसे सवाब मिलता है।}

1797:- अस्वद से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि कुरैश के चन्द नौजवान आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से मिलने के लिये गये। वह उस समय मिना में ठहरी हुयी थीं। वह लोग हँस रहे थे। आ़इशा रज़ि॰ ने पूछाः तुम लोग क्यों हँस रहे हो? उन्होंने कहाः फ़लाँ व्यक्ति अपने ख़ेमा की तनाब (बाँस की लक्ड़ी) पर गिर पड़ा और बच गया वर्ना उस की गर्दन (टूट जाती) या आँख फूट जाती। उन्होंने कहाः इस पर मत हँसो (सुनो!) मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि अगर किसी मुसलमान को काँटा चुभता है, या कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो उस के लिये एक दर्जा बुलन्द हो जाता है और उस का एक गुनाह भी मेट दिया जाता है।

फ़ाइदा:- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उम्मे साइब या उम्मे मुसय्यिब से मिलने के लिये गये तो वह काँप रही थीं। आप ने पूछाः क्या हुआ? उन्होंने कहाः बुख़ार है, अल्लाह उसे बर्कत न दे। आप ने फ़रमायाः बुख़ार को बुरा-भला न कहो। क्योंकि वह आदमी के गुनाहों को इस प्रकार दूर कर देता है जैसे आग की भट्ठी लोहे के मैल

को दूर कर देती है (मुस्लिम-जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह) एक महिला को मिरगी (दौरा) की बीमारी आती थी, उस ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! आप दुआ़ कर दीजिये। आप ने फ़रमायाः अगर तू सब्र से काम ले तो तेरे लिये जन्नत है, वर्ना मैं दुआ़ करने को तैयार हूँ। उस ने कहाः मैं सब्र करती हूँ लेकिन आप दुआ़ कर दें कि दौरा की हालत में मेरे बदन से कपड़ा न खुले। चुनान्चे आप ने दुआ़ फ़रमा दी (ऊपर की हदीस न॰ 1470)

बाब {मोमिन बन्दे को जो तक्लीफ़ या रन्ज पहुँचता है उस पर उसे सवाब मिलता है।}

1798:– अबू सअ़ीद ख़ुदरी और अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः जब मोमिन को कोई तक्लीफ़, या बीमारी या कोई रन्ज-ग़म पहुँचता है तो इन के बदले में उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं।

1799:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि (जब सूरःनिसा की आयत न॰ 123) "जो बुराई करेगा उस का बदला उसे मिलेगा" नाज़िल हुयी, तो मुसलमानों पर यह आयत बहुत सख़्त मालूम हुयी। इस पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः (परेशान होने की कोई ज़रुरत नहीं) बीच की राह इख़्तियार करो और ठीक राह पर चलो, मुसलमान पर जो कोई मुसीबत आती है वह उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती है, यहाँ तक कि अगर उसे कोई ठोकर लगे या उसे कोई काँटा भी चुभे (तो यह भी उस के लिये गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाते हैं)

फ़ाइदाः– इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ ने बयान किया कि एक दिन मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मिलने गया और आप को हाथ लगाया तो मालूम हुआ कि सख़्त बुख़ार है। आप ने फ़रमायाः जब मुझे बुख़ार चढ़ता है तो इतना सख़्त चढ़ता है जितना तुम में से दो को चढ़ता है। मैं ने पूछाः फिर तो आप को दो नेकियाँ मिलती हैं? आप ने फ़रमायाः हाँ, जिस मोमिन को कोई तक्लीफ़ या बीमारी पहुँचती है तो अल्लाह उस के गुनाहों को ऐसे झाड़ देता है जैसे पेड़-पौधे अपने पत्ते गिरा देते हैं। (मुस्लिम-इब्ने मस्ऊद रज़ि॰)

बाब {एक दूसरे के साथ हसद, कीना, दुश्मनी रखना मना है।}

1800:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक-दूसरे से कीना-कपट न रखो, एक-दूसरे से हसद न करो, और एक-दूसरे से दुश्मनी न करो, और परस्पर भाई-भई बन कर रहो। एक मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि वह अपने भाई से तीन दिन से अधिक बात-चीत करना तर्क कर दे।

फ़ाइदाः– इस हदीस से मालूम हुआ कि गुस्सा और नाराज़गी का प्रभाव तीन दिन तक रहता है, इस के बाद आदमी नॉर्मल हो जाता है। इसलिये तीन दिन के बाद भी अगर बात-चीत न करे तो गुनहगार होगा। बात-चीत की शक्ल यह है कि अगर रोज़ मिलते

हैं तो एक-दूसरे को सलाम करें। और अगर दूर-दूर हैं तो पत्र आदि लिख कर, या सन्देश भेजवा कर सलाम पहुँचा दें। बहर हाल तीन दिन से अधिक नाजाइज़ और हराम है। एक दूसरी हदीस में है कि अपने भाई को तीन रातों से अधिक छोड़ देना जाइज़ नहीं कि जब मिलें तो एक का मुँह इधर हो और दूसरे का उधर हो। (मुस्लिम-अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि॰)

बाब {उन दोनों में बेहतर वह है जो पहले सलाम करे।}

1801:- अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि वह अपने भाई से तीन रातों से अधिक बात-चीत करना बन्द कर दे, और इस प्रकार मिले कि एक का मुँह इधर हो और दूसरे का उधर हो। और उन दोनों में बेहतर वह है जो सलाम करने में पहल करे।

बाब {कीना-हसद रखना और बात-चीत तर्क कर देना हराम है।}

1802:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सोमवार और जुमेरात को जन्नत के दर्वाज़े खोले जाते हैं, फिर हर उस बन्दे के गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं जिस ने अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराया हो। लेकिन वह बन्दा जो अपने किसी भाई से कीना रखता हो उस के गुनाह माफ़ नहीं होते हैं। उस केबारे में हुक्म होता है कि उन दोनों को देखते रहो कि कब सुलह करते हैं, उन दोनों को देखते रहो कब सुलह करते हैं, उन दोनों को देखते रहो, कब सुलह करते हैं (यानी जब सुलह कर लेंगे तो उन के भी गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे)

फ़ाइदाः- एक रिवायत में है कि बन्दों के आमाल सप्ताह में दो दिन सोमवार और जुमेरात को बन्दों के आ़माल अल्लाह के पास पेश किये जाते हैं। आ़मतौर पर जुमेरात के दिन मुसलमान अधिक ख़ैरात करते हैं, इस का कारण यही है। हमारे यहाँ दिल्ली में जुमेरात के दिन होटलों पर खाने और खिलानों वालों की भीड़ नज़र आती है। जुमेरात के दिन कोई फ़क़ीर भूंखा नहीं रहता है।

बाब {जासूसी करना, हसद करना और बदगुमानी करना हराम है।}

1803:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम बदगुमानी करने से बचो, क्योंकि बदगुमानी सब से झूठी चीज़ है, और किसी की बात को कान लगा कर न सुनो, किसी की जासूसी न करो, किसी से हसद न करो, और न ही किसी से हसद और कीना रखो, अल्लाह के बन्दे और आपस में भाई-भाई बन कर रहो।

फ़ाइदाः- कुरआन पाक में सूरः हुजुरात की आयत न॰ 12 में भी इन कामों से मना किया गया है, क्योंकि यह काम ऐसे हैं जो समाज में बुराइयाँ फैलाते हैं और नफ़रत के

बीज बोते हैं। आप अगर ग़ौर करें तो पायेंगे कि समाज में एक-दूसरे से दुश्मनी इन्ही बातों में से किसी एक की वजह से पैदा हुयी है।

बाब {नमाज़ियों के दर्मियान शैतना लड़ाई भड़काने का काम करता है।}

1804:- जाबिर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः शैतान इस बात से निराश हो गया है कि अ़रब में लोग उस की पूजा करें (जैसे मश्रिक लोग करते थे) लेकिन एक-दूसरे को भड़का कर लड़ाई करवाता रहता है।

बाब {हर इन्सान के साथ शैतान लगा हुआ है।}

1805:- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक रात मेरे पास से उठ कर बाहर निकले तो मुझे ग़ैरत आयी (कि आप किसी दूसरी पत्नी के पास गये हैं) फिर जब आप वापस आये और मेरी हालत देखी तो फ़रमायाः ऐ आ़इशा! क्या बात है, शायद तुझे ग़ैरत आ गयी है। मैं ने कहाः मुझ जैसी पत्नी को आप पर रश्क करना ही चाहिये। आप ने फ़रमायाः शायद तुम्हारा शैतान तुम्हारे पास आ गया है। मैं ने कहाः क्या मेरे पास शैतान है? आप ने फ़रमायाः हाँ। मैं ने पूछाः क्या हर मनुष्य के साथ शैतान लगा है? आप ने फ़रमायाः हाँ। (मेरे साथ भी लगा हुआ है) लेकिन मेरे पर्वरदिगार ने उस के मुक़ाबले में मेरी सहायता की और वह मुसलमान हो गया (आज्ञाकारी हो गया, मुझे नहीं बहकाता है)

फ़ाइदा:- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क़ब्रस्तान जाने के लिये निकले तो आ़इशा ने समझा आप किसी दूसरी पत्नी के पास जा रहे हैं, चुनान्चे यह भी पीछे-पीछे चल पड़ीं। आप क़ब्रस्तान पहुँचे और मुर्दों के लिये दुआ़ की जिसे आ़इशा ने अपनी आँखों से देखा। फिर जब आप वापस लौट तो यह आप के आगे-आगे थीं, इसलिये तेज़ क़दम चल कर घर पहुँची और चुपचाप लेट गयीं, लेकिन साँस फूल रहा था। इधर आप भी पहुँच गये और उन्हें हाँपते देख कर पूछाः क्या मामला है......। आ़इशा ने पूरी बात बताई तो आप ने फ़रमायाः जिब्रील ने मुझे क़ब्रस्तान की ज़ियारत के लिये बुलाया था। यह हदीस बहुत लंबी है देखें (मुस्लिम-किताबुल जनाइज़, मायुक़ालु......। नसई-किताबुल् जनाइज़, बाबुल अम्रि बिल् इस्तिग़फ़ारि। मुसन्द-अहमद)

इस हदीस से मालूम हुआ कि नबी, वली, बुर्ज़ग और आ़म इन्सान शैतान सब के साथ लगा हुआ है। जो उस के बहकावे में आ जाता है गुमराह हो जाता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अल्लाह पाक ने उन के साथ रहने वाले शैतान से सुरक्षित रखा और आप का आज्ञाकारी बना दिया।

बाब {ग़ीबत करना मना है।}

1806:— अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क्या तुम जानते हो ग़ीबत किसे कहते हैं? लोगों ने कहाः अल्लाह और उस के रसूल ही बेहतर जानते हैं। आप ने फ़रमायाः ग़ीबत इस का नाम है कि तुम अपने भाई की बुराई (उस के पीठ पीछे) इस तरह करो कि (अगर उस के सामने करो तो) उस को बुरा लगे। लोगों ने पूछाः अगर वह बुराई उस के अन्दर मौजूद हो तो? आप ने फ़रमायाः अगर उस के अन्दर बुराई मौजूद है (और तुम उस के पीठे पीछे बयान करो) इसी का नाम ग़ीबत है, लेकिन अगर उस के अन्दर बुराई मौजूद नहीं है तो इस का नाम आरोप और बुहतान है।

फ़ाइदाः— अल्लाह पाक ने पारः 26, सूरः हुजुरात की आयत न॰ 12 में इन बुराइयों को ज़िक्र किया है और मुसलमान भाई की ग़ीबत करने को "मुर्दा भाई का माँस खाना" कहा है। लोग इन बातों को मामूली समझते हैं, हालाँकि लड़ाई-झगड़ा, दंगा-फ़साद, हत्या, मार-पीट, गाली-गुलूच, मुक़दमा बाज़ी जो आजकल समाज में आ़म है, यह इस हदीस शरीफ़ पर अ़मल न करने का परिणाम है।

बाब {चुगुल खोरी की मिनाही का बयान।}

1807:— अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें न बताऊँ कि सब सेबदतरीन चीज़ क्या है? वह चुग़ली है जो लोगों के दर्मियान दुश्मनी के बीज बोती है। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः आदमी सच बोलता है तो अल्लाह के यहाँ सच्चा लिखा जाता है, और झूठ बोलता है तो उस के यहाँ झूठा लिखा जाता है।

बाब {चुग़ली खाने वाला जन्नत में नहीं जायेगा।}

1808:— हम्माम बिन हारिस से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग हज़ैफ़ा रज़ि॰ के पास मस्जिद में बैठे हुये थे कि एक व्यक्ति आ कर हमारे पास बैठ गया। लोगों ने हुज़ैफ़ा से कहाः यह व्यक्ति बादशाह तक बातें पहुँचाता है। इस पर हुज़ैफ़ा रज़ि॰ ने उसे सुनाते हुये कहाः मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि चगुल ख़ोर जन्नत में नहीं जायेगा।

बाब {दो मुँह वाले की बुराई का बयान।}

नोटः— यह हदीस ऊपर 1744 में बयान हो चुकी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सब से बुरा व्यक्ति तुम उसे पाओगे जो दो मुँह वाला हो कि इन के पास दूसरा मुँह लेकर जाये और उन के पास दूसरा मुँह ले कर जाये।

फ़ाइदाः— ऐसा व्यक्ति मुनाफ़िक़ कहलाता है। ऐसे को दीहाती मुहावरा में "थाली का बैगन" कहा जाता है कि जिधर फ़ाइदा देखा उस की वाली करने लगा। ऐसे व्यक्ति पर

कोई भरोसा नहीं करता और दोनों तरफ़ से बेएतबार समझा जाता है और लोग उसे "हरजाई" के नाम से पुकारते हैं।

बाब {झूठ और सच का बयान।}

1809:— अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम अपने ऊपर सच बोलने को लाज़िम कर लो, क्योंकि सच नेकी की राह दिखाता है और नेकी जन्नत की ओर ले जाती है। और जो आदमी हमेशा सच बोलता और सच की ताईद करता है वह अल्लाह पाक के यहाँ सच्चों में लिखा जाता है। और तुम झूठ बोलने से बचो, क्योंकि झूठ बुराई की राह दिखाता है और बुराई जहन्नम की तरफ़ ले जाती है। और एक व्यक्ति हमेशा झूठ बोलता और उस की ताईद करता रहता है जिस की वजह से वह अल्लाह के नज़दीक झूठा लिखा जाता है।

बाब {कब झूठ बोलना जाइज़ है?}

1810:— उक्बा बिन अबू मुअ़ीत की पुत्री उम्मे कुल्सूम रज़ि॰ से रिवायत है (और वह सर्वप्रथम हिजरत करने वालों में से थीं। इन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ पर बैअ़त भी की थी) इन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः झूठा उसे नहीं कहा जायेगा जो लोगों के दर्मियान सुलह करा दे और बेहतर बात कहे।

हदीस के रावी इब्ने शिहाब ने कहा कि मैं ने सुना हैः तीन मौक़ों पर झूठ बोलने की अनुमति दी गयी है (1) लड़ाई (2) सुलह कराने के दर्मियान (3) बीवी शौहर से और शौहर बीवी से।

फ़ाइदा:— इन तीन स्थानों पर सभी के निकट झूठ बोलना जाइज़ है, इस में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है। जैसे, एक व्यक्ति को कोई नाजाइज़ क़त्ल करना चाहता है और वह उसके पास छुपा हुआ है तो उस के लिये कह देना जाइज़ है कि मैं नहीं जानता वह कहाँ है। सुलह में झूठ यूँ बोले कि अपनी तरफ़ से बात बना कर वादी से कह दे कि फ़लाँ व्यक्ति तुम्हारी बड़ी प्रशंसा कर रहा था, और प्रतिवादी के पास भी जा कर इसी प्रकार कहे, ताकि दोनों एक-दूसरे से प्रसन्न होकर सुलह करने पर आमादा हो जायें। जन्ग में झूठ यूँ बोले कि अफ़वाह फैला दे कि तुम्हारा कमान्डर मारा गया, ताकि फ़ौज के अन्दर बुज़दिली पैदा हो जाये। इसी प्रकार पति-पत्नी मोहब्बत में इज़ाफ़ा के लिये झूठ बोल सकते हैं, मगर शर्त यह है कि धोखा देना उद्देश्य न हो।

बाब {जाहिलिय्यत का दावा करना मना है।}

1811:— जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग किसी लड़ाई में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ थे। उस मौक़ा पर किसी मुहाजिर ने अन्सारी की चूतड़ पर लात मार दी। अन्सारी ने गोहार लगायीः ऐ अन्सार

के लोगों! मदद के लिये दौड़ो। उधर मुहाजिर ने भी गोहार लगायीः ऐ मुहाजिर लोगों! दौड़ो। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यह जाहिलिय्यत (यानी कुफ़्र व शिर्क) के ज़माने की कैसी पुकार है? सहाबा ने कहा कि किसी मुहाजिर ने अन्सारी की चूतड़ पर मार दिया है। आप ने फ़रमायाः इन बातों को अब छोड़ो क्योंकि यह गन्दी बातें हैं। यह सूचना जब अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि (मुनाफ़िक़) तक पहुँची तो कहने लगाः अच्छा, मुहाजिरों ने ऐसा किया है? अल्लाह की क़सम! मदीना पहुँचने के बाद हम में जो अ़िज़्ज़त वाला है वह ज़लील को वहाँ से निकाल बाहर कर देगा।

यह सुन कर उमर रज़ि॰ बोलेः ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे इस मुनाफ़िक़ की गर्दन मारने दीजिये। आप ने फ़रमायाः जाने दो, वर्ना लोग यही कहेंगे कि मुहम्मद तो अपने साथियों को क़त्ल करते हैं।

फ़ाइदाः– जाहिलिय्यत के ज़माना की पुकार ऐसी प्रकार थी कि ज़ालिम–मज़लूम दोनों ही अपने खान्दान वालों को एकत्र कर लेते थे और वह लोग भी हक़–नाहक़ की कोई पर्वा किये बग़ैर एक–दूसरे पर टूट पड़ते थे। इस्लाम ने इसे नाजाइज़ कहा है और नियम यह बताया है कि अगर इस प्रकार का केस सामने आये तो क़ाज़ी के दर्बार में मुक़दमा करे, न कि स्वैंय ही लड़ कर मामला को निबटाए।

बाब {गाली–गुलूच देना मना है।}

1812:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब दो व्यक्ति परस्पर गाली गुलूच करने लगें तो सब का गुनाह उसी पर होगा जिस ने गाली का आरंभ किया, जब तक मज़लूम ज़ियादती न करे।

बाब {ज़माना को बुरा–भला कहना मना है।}

1813:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक फ़रमाता है "आदम की औलाद मुझे तक्लीफ़ पहुँचाती है, वह कहता है कि "हाये बदबख़्ती ज़माना की।" इसलिये तुम में से कोई "हाये ज़माना की बदबख़्ती" न कहे, क्योंकि (अल्लाह पाक कहता है) मैं ही ज़माना हूँ, मैं ही दिन–रात को लाता हूँ औ जब चाहूँगा दिन–रात को मिटा दूगाँ।

फ़ाइदाः– ज़माना नाम है दिन–रात के आने–जाने का। और यह कार्य अल्लाह पाक अन्जाम देता है, इसलिये दिन–रात और समय (वक़्त) को गाली देना अल्लाह को गाली देना हुआ।

1814:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ज़माना को बुरा भला न कहो, क्योंकि अल्लाह पाक स्वैंय ज़माना है।

बाब {एक मुसलमान अपने मुसलमान भाई पर हथियार से इशारा न करे।}

1815:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में से कोई भी अपने भाई को हथियार के इशारे से न धमकाए, हो सकता है शैतान तुम्हारे हाथ को डगमगा दे (और हथियार चल जाये) तो वह जहन्नम के गढ़े में चला जायेगा।

फ़ाइदाः– कितनी प्यारी बात नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बताई है। ऐसा अक्सर देखने में आया है कि बन्दूगक़ के घोड़े पर हाथ रख कर केवल डराने के लिये बन्दूक़ तानता है और हाथ से घोड़ा दब जाता है, इस प्रकार मौत के घाट उतार देता है और स्वँय जहन्नम में चला जाता है। एक दूसरी हदीस में है कि जो कोई अपने भाई को लोहे के हथियार से डराता है, फ़रिश्ते उस पर लानत करते हैं, अगर्चे उस का सगा भाई ही क्यों न हो (और उस को केवल डरा-धमका ही क्यों न रहा हो) (मुस्लिम-अबू हुरैरा)

बाब {तीर लेकर मस्जिद में आये तो उस की नोक पकड़ कर आये (ताकि कहीं किसी को लग न जाये और वह घायल हो जाये)}

1816:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि एक व्यक्ति मस्जिद के पास तीर बाँटता था, तो आप ने उसे हुक्म दिया कि जब यहाँ से निकले तो तीर को पकड़ कर निकले (ताकि किसी को अन्जाने में चुभ न जाये)

1817:– अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में से कोई मस्जिद या बाज़ार से गुज़रे और हाथ में तीर हो तो उस की नोक को हाथ से पकड़े रहे, उस की नोक को हाथ से पकड़े रहे, उस की नोक को हाथ से पकड़े रहे। अबू मूसा रज़ि॰ ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! एक-दूसरे के मुँह पर तीर लगा कर (चुभा कर) हम लोग मरे (यानी आप के हुक्म के खिलाफ़ किया)

फ़ाइदाः– एक दूसरी रिवायत में है कि एक व्यक्ति मस्जिद में तीर लेकर दाख़िल हुआ तो आप ने फ़रमायाः उस की नोक को थाम ले (मुस्लिम-जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह) चलते-फिरते भीड़-भाड़ में, समारोहों में, बाज़ारों में आये दिन धक्का लगजाने, आदि की वजह से लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं। अफ़सोस कि दीन इस्लाम के मानने वाले मुसलमान भी इन बातों की तरफ़ तवज्जोह नहीं देते हैं।

बाब {मुँह पर मारना मना है।}

1818:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब तुम अपने भाई से लड़ाई-झगड़ा करो तो उस के मुँह पर हर्गिज़ न मारो।

1819:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

फ़रमायाः जब तुम में से कोई अपने भाई से लड़ाई-भिड़ाई करे तो उस के मुँह (पर मारने) से बचे, इसीलिये कि अल्लाह पाक ने आदमी को अपनी सूरत पर बनाया है।

फ़ाइदाः— अल्लाह ने इन्सान को अपनी सूरत पर बनाया तो क्या अल्लाह इन्सान की शक्ल का है? हाँ वह इन्सान की शक्ल का है, लेकिन किस प्रकार है? इन सब पर सोचने की कोई ज़रुरत नहीं और न ही हदीस की तावील करने की ज़रुरत है। बस हमारा काम हदीस के ज़ाहिरी मफ़हूम पर ईमान लाना है। इसी प्रकार कुरआन में है कि "अल्लाह अ़र्श पर बैठा" जी हाँ, बैठा। किस प्रकार बैठा, जब वह बैठा तो इस का यह अर्थ हुआ कि उस के शरीर है, हाथ-पाँव हैं आदि। हमें इन सब की खोज-कुरेद करने की ज़रुरत नहीं, हमारा काम केवल मान लेना है। अहले हदीस का यही मज़हब है और यही हक़ है।

बाब {जानवरों को लानत भेजना और उन्हें बुरा-भला कहना मना है।}

1820:— अ़िम्रान बिन हुसैन रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ किसी यात्रा में थे, इसी बीच एक अन्सारी महिला भी ऊँटनी पर सवार थी, कि वह कूदने लगी, इस पर महिला ने उस पर लानत भेजी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब सुना तो फ़रमायाः ऊँट के ऊपर का सारा सामान उतार कर उसे छोड़ दो, क्योंकि उस पर लानत भेजी गयी है। अ़िम्रान ने बयान किया कि बाद में वह ऊँट यूँ ही आज़ाद घूमता था और कोई उस की तरफ़ तवज्जोह नहीं देता था।

फ़ाइदाः— एक दूसरी रिवायत में है कि उस महिला के ऊँट पर लोगों का सामान लदा हुआ था जिस राह में जा रही थी वह तन्ग था, उस ने आप को देखा तो उसे आगे बढ़ा दिया और कहाः "ऐ अल्लाह! इस पर लानत कर।" इस पर आप ने फ़रमायाः वह जानवर मेरे साथ न रहे जिस पर लानत की गयी है। (मुस्लिम-अबू बर्ज़ा अस्लमी) हदीस से तो यही निकला कि जब वह मलऊन है तो उस पर सवारी का कोई हक़ नहीं। उलमा ने लिखा है कि आप ने डाँट-फटकार के तौर पर फ़रमाया था कि लोग लानत भेजने से बचें।

बाब {लानत करना बुरा कार्य है।}

1821:— अबू दर्दा रज़ि॰ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः जो लोग लानत भेजते रहते हैं ऐसे लोग क़ियामत के दिन न तो किसी की सिफ़ारिश करेंगे और न गवाह बनेंगे।

फ़ाइदाः— लानत का अर्थ है "अल्लाह की रहमत से दूर करना" अगर किसी ने अपने मुसलमान भाई पर लानत भेजी तो गोया उस के साथ दुश्मनी निभाई। तो ऐसा व्यक्ति जो मुसलमानों का दुश्मन हो वह क़ियामत के दिन भला कैसे सिफ़ारिश करने वाला हो सकता है।

1822:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा गयाः ऐ अल्लाह के रसूल! आप मुश्रिकों पर बद्दुआ़ कर दीजिये। आप ने फ़रमायाः मैं लोगों पर लानत भेजने के लिये तो नहीं भेजा गया हूँ, मैं तो रहमत बना कर भेजा गया हूँ।

बाब {जो व्यक्ति यह कहे कि "लोग हलाक हो गये" उस के बारे में बयान।}

1823:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब कोई यह कहे कि "लोग हलाक हो गये" तो ऐसा कहने वाला स्वँय सब से अधिक बर्बाद होने वाला है। अबू इस्हाक़ (यानी मुहम्मद बिन सुफ़यान के बेटे) ने कहा कि हदीस में "अह्-ल-क" का शब्द है या "अह्लुकु।"

फ़ाइदा:– कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने को बड़ा नेक और पाक-साफ़ समझते हैं और दूसरों को गुमराह और बर्बाद समझते हैं, ऐसे लोगों के बारे में आप ने फ़रमाया कि वह स्वँय शैतान के धोखे में पड़ कर तबाह हैं।

बाब {बात को बढ़ा-चढ़ा कर पेश करने वालों के लिये तबाही-बर्बादी है।}

1824:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बाल की खाल निकालने वाले (बेबात की बात बनाने वाले) तबाह हो गये। आप ने यह वाक्य तीन मतबा फ़रमाया।

फ़ाइदा:– दीहाती भाषा में इसे "बात का बतगंड़ बनाना" बोलते हैं। कुछ लोगों की आ़दत होती है कि लड़ाई-झगड़े के लिये कोर और शोशा तलाश करते हैं, या किसी मामूली बात को नमक-मिर्च लगा कर खूब बढ़ा-चढ़ा कर पेश करते हैं कि सामने वाले को गुस्सा आ जाये और वह लड़ जाये। आज भी समाज को आग लगाने वाले इस प्रकार के गुमराह लोग मौजूद हैं।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बद्दुआ़ भी मोमिन के लिये रहमत है।}

1825:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि दो व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये और कुछ बातें कीं, मुझे नहीं मालूम किस विषय पर बातें कीं। उन की बातों को सुन कर आप गुस्से में आ गये और दोनों पर लानत भेजी और बुरा-भला भी कहा। जब यह दोनों चले गये तो मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! उन दोनों में से किसी का भी भला नहीं हुआ। आप ने पूछाः क्यों? मैं ने कहाः आप ने तो दोनों पर लानत भेजी और उन्हें बुरा-भला कहा है। यह सुन कर आप ने फ़रमायाः मैं ने अपने रब से जो शर्त की है वह तुम्हें नहीं मालूम। मैं ने अपने रब से कह दिया कि "ऐ मेरे मौला! मैं एक इन्सान ही हूँ, तो जिस किसी मुसलमान पर लानत भेजूँ या बुरा भला कहूँ तो तू मेरी लानत को नेकी और सवाब में बदल दे।"

फ़ाइदा:– यानी उस को नेक बदला दे और उस के गुनाहों को माफ़ कर दे।

1826:– अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि (मेरी माता जी) उम्मे सुलैम के पास एक अनाथ बालिका थी जिस का नाम उम्मे अनस था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसे देख कर फ़रमायाः तू तो बड़ी आयु की हो गयी है अल्लाह करे तेरी आयु लंबी न हो। यह सुन कर वह लड़की रोती हुयी उम्मे सुलैम के पास गयी तो उम्मे सुलैम ने पूछाः मेरी बेटी तुम्हें क्या हुआ? उस ने कहाः नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बद्दुआ की है कि तेरी आयु लंबी न हो। तो अब मैं कभी बड़ी नहीं हूँगी, (या यह फ़रमाया कि तेरी हम जोली बड़ी न हो) यह सुन कर उम्मे सुलैम ने जल्दी से ओढ़नी ओढ़ी और जल्दी से चल कर आप के पास पहुँच गयीं। आप ने उन से पूछाः ऐ उम्मे सुलैम! ख़ैरियत तो है? उन्होंने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! आप ने मेरी यतीम बेटी को बद्दुआ दी है? आप ने पूछाः क्या बद्दुआ दी है? उन्होंने कहाः उस का कहना है कि आप ने फ़रमाया हैः "उस की या उस की हमजोली की आयु लंबी न हो" यह सुन कर आप हँसने लगे और फ़रमायाः ऐ उम्मे सुलैम! तुम्हें नहीं मालूम कि मैं ने अपने रब से क्या शर्त की है। मैं ने यह शर्त की है कि ऐ मेरे मौला! मैं भी एक इन्सान ही हूँ इसीलिये वैसे ही खुश होता हूँ जिस प्रकार आदमी खुश होता है, और वैसे ही गुस्सा होता हूँ जिस प्रकार आदमी गुस्स करता है। इसलिये अगर मैं अपनी उम्मत में किसी के लिये ऐसी बद्दुआ करूँ जो उसके लिये उचित नहीं है, तो उस बद्दुआ को उस के हक़ में पाकी, नेकी और कुरबत (नज़दीकी) का ज़रीआ बना जिस की मदद से क़ियामत के दिन तेरी नज़दीकी हासिल हो।

अबू म–अ़न ने कहा कि इस हदीस में तीनों स्थानों पर "यतीमा" की जगह "युतय्यिमा" का शब्द प्रयोग किया गया है।

1827:– इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं बच्चों के साथ खेल रहा था कि इसी बीच नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आ गये तो मैं दर्वाज़ा की आड़ में छुप गया। आप ने अपने हाथ से मुझे थपकी दी और फ़रमाया कि जा कर मुआ़विया को बुला लाओ। मैं गया और वापस आ कर बताया कि वह खाना खा रहे हैं। आप ने फिर फ़रमायाः जा कर मुआ़विया को बुला लाओ। चुनान्चे मैं फिर गया और लौट कर आया और कहा कि वह खाना खा रहे हैं। आप ने फ़रमायाः अल्लाह उस का पेट न भरे।

इब्ने मुसन्ना ने कहा कि मैं ने उमय्या से पूछा कि "ह–त–अ" का क्या अर्थ है? उन्होंने कहाः इस का अर्थ है "आप ने इब्ने अ़ब्बास की गुद्दी पर मारा"

फ़ाइदा:– यानी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इब्ने अ़ब्बास की गुद्दी (सर के ऊपरी हिस्सा) पर अपना हाथ रख दिया। आज भी बूढ़े–बुज़ुर्ग लोग छोटे बच्चों के सर

पर हाथ रख कर या थपकी देकर किसी काम के लिये कहते हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ की आयु उस समय 10 वर्ष की रही होगी।

इस हदीस से मालूम हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम किसी के लिये बद्दुआ़ करेंतो अल्लाह पाक बन्दे के हक़ में अगर भला नहीं समझेगा तो नहीं कुबूल करेगा, क्योंकि आप ने अल्लाह से पहले ही शर्त लगाई हुयी है। लेकिन चूँकि आ़म इन्सान की अल्लाह से शर्त नहीं है इसलिये उस के लिये बद्दुआ़ और लानत भेजना दुरुस्त नहीं।

26.4.06, ऊँची मस्जिद अहले हदीस मोरी गेट दिल्ली-6

❀ ❀ ❀

किताबुज़्ज़ुल्मि
(ज़ुल्म-ज़्यादती का बयान)

बाब {अत्याचार करना हराम है। और तौबा व माफ़ी माँगने का बयान।}

1828:- अबू ज़र रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया है कि ऐ मेरे बन्दो! मैं ने ज़ुल्म को अपने ऊपर हराम कर लिया है और तुम्हारे दर्मियान भी हराम कर दिया है, इसलिये एक-दूसरे पर ज़ुल्म करेन से बचो। ऐ मेरे बन्दो! तुम सब गुमराह हो मगर यह कि जिसे मैं हिदायत दे दूँ। ऐ मेरे बन्दो! तुम सब भूखे हो मगर जिसे मैं खिला दूँ। इसलिये मुझ से खाना माँगो, मैं तुम्हें खिलाऊँगा। ऐ मेरे बन्दो! तुम सब नन्गे हो, मगर जिसे मैं पहना दूँ। इसलिये मुझ से कपड़ा माँगो, मैं तुम्हें पहनाऊँगा। ऐ मेरे बन्दो! तुम सब दिन रात बुराइयाँ करते हो और मैं तमाम गुनाहों को माफ़ कर देता हूँ, इसलिये मुझ से माफ़ी माँगो, मैं तुम्हारे गुनाहों को माफ़ करूँगा। ऐ मेरे बन्दों! तुम न तो मुझे कोई हानि पहुँचा सकते हो और न लाभ। ऐ मेरे बन्दो! तुम्हारे अगले और पिछले लोग और तुम्हारे इन्सान और जिन्नात तुम में सब से बड़े मुत्तक़ी और प्रहेज़गार की तरह हो जायें तो इस से मेरी बादशाहत में तनिक भर इज़ाफ़ा नहीं होने का। और अगर तुम्हारे अगले और पिछले लोग और समस्त इन्सान और जिन्नात तुम में से सब से बुरे व्यक्ति की तरह हो जायें तो इस से भी मेरी बादशाहत में तनिक भर हानि नहीं पहुँचेगा। ऐ मेरे बन्दों! अगर तुम्हारे अगले और पिछले और (इस समय मौजूद) इन्सान और जिन्नात सब एक मैदान में खड़े होकर मुझ से माँगने लगें और मैं हर एक को जो वह माँगे देना शुरु कर दूँ तब भी मेरे पास जो कुछ है उस में तनिक भर कमी नहीं होगी (और अगर कमी होगी भी) तो बस इतना कि जैसे कोई दरिया में सुई डुबो कर निकाल ले (तो उस सूई में जितना पानी लगा होगा, समझो कि उतनी कमी हो गयी) ऐ मेरे बन्दो! मैं तुम्हारे (अच्छे-बुरे) आ़माल को शुमार करता रहता हूँ ताकि तुम्हारे आमाल का पूरा-बूरा बदला दूँ। तो जो अच्छा बदला पाए वह अल्लाह का शुक्र अदा करे। और जो बुरा बदला पाए वह अपने को बुरा जाने (कि जैसा किया वैसा पाया)

हदीस के रावी सअ़ीद ने बयान किया कि इस हदीस को अबू इदरीस ख़ौलानी जब बयान करते तो अपने घुटनों के बल गिर पड़ते।

1829:— ज़ाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ सेरिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जुल्म से बचो, क्योंकि जुल्म क़ियामत के दिन अँधेरे के समान होगा। इसी प्रकार कंजूसी और बख़ीली से बचो, क्योंकि इस ने तुम से पहले के लोगों को तबाह कर डाला, बख़ीली की वजह से उन्होंने ख़ून ख़राबा किया और हराम को हलाल ठहरा लिया।

1830:— इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का (रिश्ते में इस्लामी) भाई है, इसलिये अपने भाई पर न तो कोई अत्याचार करे और न ही उसे तबाही में डाले। जो व्यक्ति अपने भाई की ज़रुरत को पूरी करने में लगा रहेगा अल्लाह पाक भी उस की आवश्यक्ता को पूरी कर देगा। और जो व्यक्ति अपने किसी मुसलमान भाई की मुसीबत को दूर करेगा, अल्लाह पाक भी क़ियामत के दिन उस की मुसीबतों में से एक मुसीबत को दूर करेगा। और जो व्यक्ति अपने किसी मुसलमान भाई के अ़ैब छुपायेगा तो अल्लाह पाक भी क़ियामत के दिन उस के अ़ैबों को छुपा लेगा।

बाब {ज़ालिम को थोड़ी सी ढील दी जाती है।}

1831:— अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक ज़ालिम को थोड़ी सी ढील देता है (ताकि खूब अत्याचार कर ले) लेकिन जब उसे पकड़ता है तो फिर उस को नहीं छोड़ता। इस के बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह आयत तिलावत फ़रमायीः "अल्लाह पाक जब किसी ज़ालिम बस्ती को पकड़ता है तो इसी तरह पकड़ता है, और उस की पकड़ बड़ी सख़्त और दुःख दाई होती है।" (सूरःहुद-102)

फ़ाइदाः— कुछ ज़ालिम अल्लाह की तरफ़ से ढील को यह समझते हैं कि वह मुझ से खुश है और जुल्म पर जुल्म किये चले जाते हैं। बुराई की सज़ा अल्लाह पाक दो प्रकार से देता है (1) एक तो दुनिया में देता है। अगर दुनिया में सज़ा मिल गयी तो आख़िरत में बच जायेगा। (2) कभी दुनिया में सज़ा नहीं देता है और आख़िरत के लिये टाल देता है। इसी से ज़ालिम यह समझता है कि दुनिया में अल्लाह हमारे कामों से खुश है, हालाँकि उस के लिये सज़ा आख़िरत में है।

बाब {अपने भाई की हर हाल में मदद करो, चाहे वह ज़ालिम हो या मज़लूम।}

1832:— जाबिर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि दो नौजवान लड़के आपस में भिड़ गये। उन में का एक मुहाजिर में से था और दूसरा अन्सारी। मुहाजिर लड़के ने अपने मुहाजिर भाई, या मुहाजिर भाइयों को (मदद के लिये) पुकारा। इसी प्रकार अन्सारी नौजवान ने भी पुकार लगायीः ऐ अन्सार के लोगों! (दौड़ो, मेरी मदद करो) यह आवाज़ सुन कर आप बाहर निकले और फ़रमायाः यह तो कुफ़्र और शिर्क के ज़माना की पुकार

है। सहाबा ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! ऐसी कोई बात नहीं, दो लड़के आपस में लड़ पड़े थे, उन में से एक ने दूसरे के चूतड़ पर लात मार दिया था। आप ने फ़रमायाः कोई बात नहीं, अपने भाई की (हर हाल में) मदद करो चाहे वह ज़ालिम हो या मज़लूम। अगर वह ज़ालिम है तो उसे जुल्म करने से रोको (यही रोकना ही उस की मदद करना है) और अगर मज़लूम है तो उस की मदद करो (उस की तरफ़ से बचाव करो, उस को ज़ालिम के पंजे से छोड़ाओ)

फ़ाइदाः– अपने ज़ालिम भाई की मदद करना यह है कि उसे जुल्म करने से रोको। और मज़लूम की मदद करना यह है कि उस को ज़ालिम के पंजे से बचाओ। आज इस्लामी मुल्कों का मामला इस हदीस के बिल्कुल उलट है अपने मज़लूम फ़लस्तीनी, अफ़ग़ानी, इराक़ी, चेचन मुसलमान भाइयों की सहायता करने और उन्हें दुश्मन अमरीका के पंजों से बचाने के बजाए अपनी ज़मीनें और हवाई अड्डे उन पर बमबारी के लिये दे रहे हैं।

बाब {जो लोगों को तक्लीफ़ पहुँचाते हैं उन के बारे में बयान।}

1833:– उर्वा बिन जुबैर, हिशाम बिन हकीम बिन हिज़ाम से रिवायत है कि हिशाम ने बयान कियाः मैं मुल्क शाम में कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रा जिन्हें धूप में खड़ा कर दिया गया था और उन के सरों पर तेल डाला गया था। मैं ने पूछाः यह क्या मामला है? लोगों ने बताया कि टेक्स न देने की वजह से इन्हें दन्ड दिया गया है। मैं ने कहाः मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि अल्लाह तआ़ला उन लोगों को भी अ़ज़ाब देगा जो दुनिया में लोगों को (नाहक़) अ़ज़ाब देते हैं।

फ़ाइदाः– चोरी, ज़िनाकरी, क़त्ल आदि के जुर्म में अगर हाकिम सज़ा दे तो यह अ़ज़ाब के हुक्म में नहीं दाख़िल है। बल्कि इस प्रकार की सज़ा ज़रुरी है ताकि लोग उसे देख कर नसीहत हासिल करें और समाज में बुराइयाँ कम हों।

बाब {जिन लोगों ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया जब उन की ज़मीन (क्षेत्र) के ऊपर से गुज़रो तो राते हुये गुज़रो।}

1834:– इब्ने शिहाब जो समूद क़ौम के (टूटे-फूटे) मकानों (जिस का नाम 'हजर' है) का ज़िक्र कर रहे थे, उन्होंने बयान किया कि सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमायाः हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ 'हजर' के स्थान से होकर गुज़रे तो आप ने फ़रमायाः ज़ालिमों के घरों में रोते हुये दाख़िल हो, इस डर से कि कहीं तुम भी उस अ़ज़ाब में न पड़ जाओ जो उन पर आया था। फिर आप ने अपनी सवारी को (तेज़ चलाने के लिये) डाँटा और "हजर" को पार कर गये।

1835:– इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि सहाबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ समूद क़ौम की आबादी वाली ज़मीन 'हजर' पर ठहरे और वहाँ के कुएँ से पानी

लेकर आटा गूँधने लगे, तो आप ने उस का पानी प्रयोग करने से मना कर दिया और उसे फेंक देने का हुक्म दिया, और आटा जानवरों को खिला देने को कहा। आप ने फ़रमायाः पानी उस कुँए से लो जिस पर सालेह अ़लै॰ की ऊँटनी पानी पीने के लिये आती थी।

बाब {एक मज़लूम को अगर दुनियाँ में बदला या उस का हक़ नहीं मिला है तो क़ियामत के दिन दिलवाया जायेगा।}

1836:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क्या तुम जानते हो कि मुफ़लिस कौन है? लोगों ने कहाः हम में मुफ़लिस वह है जिस के पास रुपया-पैसा और खाने-पीने की कोई चीज़ न हो। आप ने फ़रमायाः मेरी उम्मत का मुफ़लिस (फ़कीर) क़ियामत के दिन वह होगा जिस के पास क़ियामत के दिन पैसा होगा और ज़कात भी होगी। लेकिन उस ने दुनिया में किसी को गाली दी होगी, किसी पर झूठा आरोप लगाया होगा, किसी का माल खाया होगा, किसी की हत्या की होगी और किसी के साथ मार-पीट की होगी। चुनान्चे उन लोगों को (जिन पर इस ने जुल्म किया होगा उन को बदले में) इस की सारी नेकियाँ दिला दी जायेंगी। और अगर इस की तमाम नेकियाँ (बदला पूरा होने से पूर्व ही) समाप्त हो जायेंगी तो उन की बुराइयाँ इस के खाते में डाल दी जायेंगी, फिर उसे जहन्नम में डाल दिया जायेगा।

फ़ाइदाः– हदीस का अर्थ स्पष्ट है। बदला मिलेगा, अगर दुनिया में नहीं मिला तो आख़िरत में मिलेगा। ज़ालिम की नेकियाँ मज़लूम को दिलवाई जायेंगी अगर नेकियाँ नहीं होंगी तो मज़लूम की बुराइयाँ ज़ालिम के खाते में डाल दी जायेंगी।

1837:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवातय है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम्हें क़ियमात के दिन हक़दारों का हक़ अदा करना होगा, यहाँ तक कि बेसींग वाली बक्री का बदला सींग वाली बक्री से दिलाया जायेगा।

फ़ाइदाः– जानवरों के लिये इन्सानों की तरह जाइज़-नाजाइज़, और अ़ज़ाब व सवाब का हुक्म नहीं है। इसलिये कि उन पर शरीअ़त का हुक्म नहीं लागू है। लेकिन फिर भी बदला (क़िसास) दिलवाया जायेगा। फिर उन से कहा जायेगा कि मिट्टी हो जाओ चुनान्चे जानवर मिट्टी हो जायेंगे।

❀ ❀ ❀

किताबुल् क़द्रि
(तक़दीर में लिखे का बयान)

नोटः– तक़्दीर पर ईमान लाना यह ईमान का एक हिस्सा है। तक़्दीर को समझने के लिये केवल कुरआन व हदीस का सहारा लेना चाहिये। इस में क़ियास और अक़्ल का कोई दख़ल नहीं। किताब व सुन्नत की रोशनी से हट कर जो इसे समझने और जाँचने की कोशिश करेगा वह गुमराह हो जायेगा। इसी प्रकार गुमराह होकर बहुत से फ़िर्क़े पैदा हुये। किसी ने कहा कि हम तक़्दीर में लिखा होने के नाते वह काम करेन पर मजबूर हैं। किसी ने सिरे से तक़्दीर का ही इन्कार कर दिया।

तक़्दीर पर ईमान लाना फ़र्ज़ है, यानी इस बात पर ईमान लाना कि जो कुछ अच्छा-बुरा दुनिया में क़ियामत तक होने वाला था उन सब का ज्ञान अल्लाह पाक को पहले ही से था, और उसी के मुताबिक़ ज़ाहिर होगा। अल्लाह पाक ने बन्दे को अच्छा-बुरा करने का इख़्तियार दिया है, इसलिये बन्दा न बिल्कुल मजबूर है और न ही आज़ाद। तक़्दीर का अ़िल्म ऐसा है जिस का ज्ञान अल्लाह पाक ने न किसी नबी को दिया है और न फ़रिश्ते को।

बाब {अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः "हम ने हर चीज़ को अनुमान और अन्दाज़ा लगा कर पैदा किया है" (यूँ ही ऊँट-पटाँग नहीं बना दिया है)}

1838:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मक्का के मुश्रिक लोग तक़्दीर के मस्अला में बहस करते हुये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये, तब अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमायीः "क़ियामत के दिन (मुश्रिक लोग) मुँह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिये जायेंगे, फिर उन से कहा जायेगाः लो अब उस अ़ज़ाब का मज़ा (स्वाद) चखो (जिस का दुनिया में इन्कार करते थे) और हम ने हर चीज़ को नाप-तौल कर ठीक ढन्ग से पैदा किया है।

फ़ाइदाः– 'अन्दाज़ा लगा कर पैदा किया है" कि हाथ की लंबाई में उंगली की लंबाई कितनी हो? नाखून कितने लंबे हों? उंगलियों के पोर कितने छोटे-बड़े हों, आँख, कान, नाक की कितनी लंबाई हो कि बुरा न लगे आदि। इब्ने हजर रह॰ लिखते हैं कि तक़्दीर से यह मुराद है कि अल्लाह पाक इन तमाम चीज़ों की संख्या, मात्रा और ज़माना को उन

के पैदा करेन से भी पहले से जानता है, फिर जैसा कि पहले उस के अ़िल्म में होता है कि यह वस्तु इस प्रकार मौजूद होगी, उसी प्रकार उस को वजूद में लाता है। इसलिये हर पैदा होने वाली वस्तु अल्लाह पाक के ज्ञान उस की कुदरत और इरादे से पैदा होती है।

बाब {हर चीज़ तक़्दीर में लिख दी गयी है, यहाँ तक कि कमज़ोरी और दानाई (बुद्धिमानी) भी।}

1839:– इमाम ताऊस ने बयान किया कि मैं ने बहुत से सहाबा को यह बयान करते सुना कि हर चीज़ लिखी हुयी है। और मैं ने इब्ने उमर रज़ि॰ से सुना है वह बयान करते थे कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि हर चीज़ तक़्दीर (भाग्य) में लिख दी गयी है यहाँ तक कि दानाई और कमज़ोरी (बुद्धिमानी और मूर्खता) भी (लिख दी गयी है)

फ़ाइदा:– "लिख दी गयी है" ठीक है, चूँकि अल्लाह पाक भविष्य की बातों को जानने वाला है इसलिये पहले ही लिख दी है। क्या लिख दिया है? यह लिख दिया है कि "बन्दा भविष्य में यह काम करेगा" न यह कि "बन्दा भविष्य में यह काम करे" इसलिये बन्दा तक़्दीर में लिख देने की वजह से नहीं करता है। ऊपर की मिसाल में "करेगा" और "करे" दोनों में कितना अन्तर है आप स्वँय समझ सकते हैं।

बाब {अपनी ताक़त को दिखाओ और अपने को कमज़ोर न साबित करो।}

1840:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः (ईमान के साथ) ताक़तवर मोमिन अल्लाह के नज़दीक कमज़ोर मोमिन के मुक़ाबले में अधिक पसन्दीदा है। और हर उस काम को करने की कोशिश करो जो तुम्हारे लिये (आख़िरत में) लाभदायक हो और उस के लिये अल्लाह से मदद भी माँगो और हिम्मत मत हारो। और अगर कोई मुसीबत आ जाये तो यह न कहो कि "अगर ऐसा-ऐसा करता तो यह मुसीबत न आती" बल्कि यूँ कहोः "अल्लाह की तक़्दीर में ऐसा ही लिखा हुआ था इसलिये उस ने जो चाहा वह हुआ" अगर-मगर करना शैतान के लिये राह खेलना है।

फ़ाइदा:– इस हदीस में इस बात की तरफ़ इशारा है कि जो चीज़ इन्सान के फ़ाइदे की है उस की ख़ाहिश करे, अल्लाह से मदद तलब करे और कमज़ोर बन कर न बैठा रहे, बल्कि उसे हासिल करने के लिये दौड़-धूप और कोशिश में लगा रहे। और अगर कोई मुसीबत आन पड़े तो यह नहीं कहना चाहिये कि अगर मैं ऐसा करता तो ऐसा होता, बल्कि यह कहना चाहिये कि यह अल्लाह की तक़्दीर में है, वह जो चाहता है करता है, क्योंकि अगर-मगर से शैतान को काम करने का मौक़ा मिल जाता है। यही वजह है कि नबी भी दुश्मन से बचने के लिये अपने तौर पर कोशिश करते थे, फिर हार के बाद उन कारणों पर ग़ौर करते थे कि पराजय का मुँह क्यों देखना पडा, फिर भविष्य में उन कमज़ोरियों

को दूर करते थे, जैसा कि उहुद की जन्ग में हुआ।

बाब {पैदाइश से पहले ही उस का भाग्य लिख दिया गया है।}

1841:– अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः अल्लाह पाक ने तमाम मख़्लूक़ की तक़्दीर को आकाश व ज़मीन के पैदा करने से पाँच हज़ार वर्ष पूर्व ही लिख दिया था, उस समय उस का अर्श पानी पर था।

फ़ाइदाः– चूँकि अल्लाह पाक भविष्य की बातों को जानने वाला है इसलिये पाँच हज़ार वर्ष पूर्व लिख दिया। इसलिये उस के लिख देने से बन्दा वह काम करने पर मजबूर नहीं हुआ, बल्कि भविष्य में उस के करने की वजह से अल्लाह ने पहले लिख दिया। इस फ़र्क़ को अच्छी तरह समझ लेने की ज़रुरत है कि अल्लाह तआ़ला ने उस के भविष्य में करने की वजह से लिखा, न कि उस के लिखने की वजह से आज बन्दा कर रहा है।

बाब {तक़्दीर का सबूत, और आदम व मूसा अ़लै॰ की आपस में बहस का बयान।}

1842:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि आदम व मूसा ने अपने रब के पास बहस की और आ़दम अ़लै॰, मूसा पर ग़ालिब आ गये (यानी बहस को जीत लिया) मूसा ने कहाः आप वही आदम हैं जिन्हें अल्लाह पाक ने अपने हाथ से बनाया और अपनी रुह आप में डाल दी और फ़रिश्तों से सज्दा कराया, फिर जन्नत में रहने के लिये जगह दी, फिर आप ने अपनी ग़लती की वजह से लोगों को ज़मीन पर उतार दिया।

इस के जवाब में आदम अ़लै॰ ने मूसा से कहाः तुम वही मूसा हो जिन को अल्लाह पाक ने अपना रसूल बनाने और कलाम करने के लिये चुन लिया, फिर तौरात की पलेटें दीं जिसमें हर मस्अले को खोल-खोल कर बयान कर दिया गया है, तुम से बात-चीत करेन के लिये अपने से क़रीब किया। आप को कुछ मालूम भी है कि तौरेत को मेरे पैदा करने से कितना समय पहले लिखा है? मूसा ने कहाः चालीस साल पहले। आदम ने कहाः क्या तौरेत में यह नहीं लिखा है कि "आदम ने अपने रब के हुक्म की अवज्ञा की इसलिये वह भटक गया" मूसा ने कहाः हाँ, मैं ने पढ़ा है (तौरेत में यह लिखा है) आदम ने कहाः फिर तुम मुझे उस काम के करने पर क्यों मलामत करते हो जिस को अल्लाह ने मेरी तक़्दीर में मेरे पैदा होने से चालीस साल पहले ही लिख दिया है (कि तुम अवज्ञा करोगे) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः इस बहस में आदम मूसा पर ग़ालिब आ गये।

फ़ाइदाः– यह हदीस बहुत ही मुश्किल हदीसों में से एक है। इस हदीस से बिल्कुल स्पष्ट है कि आदम ने जो कुछ किया तक़्दीर में लिखा होने के नाते किया, इस लिये आदम का कोई दोष नहीं। इस का यह अर्थ निकला कि दुनिया में इन्सान जो कुछ

अच्छाइयाँ–बुराइयाँ करते हैं वह तक़्दीर में लिखा होने के नाते करते हैं, वह मजबूर हैं और निर्दोष हैं। हालाँकि यह तो "जबरिया फ़िर्क़ा" का अक़ीदा है जो कि बातिल है। फिर इस हदीस का क्या अर्थ है?

इस हदीस का यह अर्थ है कि आदम अ़लै॰ जानते थे कि अल्लाह ने पैदा करेन के बाद फल ख़ाने से मना कर दिया और बता दिया कि शैतान के बहकावे में न आना, फिर शैतान के बहकावे में आ कर खाया (न कि तक़्दीर में लिखे की वजह से) और अल्लाह ने पूछाः "क्या मैंने यह नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है उस के बहकावे में न आना?" दोनों मियाँ–बीवी ने कहाः ऐ अल्लाह! हम दोनों से गलती हो गयी. .... (सूरः आराफ़ 23) अगर आदम का यह अक़ीदा था कि तक़्दीर में लिखे होने के नाते. मजबूर होकर मैं ने किया तो अल्लाह के पूछने पर "ऐ अल्लाह! मुझ से ग़लती हो गयी" कहने की क्या ज़रुरत थी? सीधा जवाब था कि तक़्दीर में लिखा होने के नाते किया। यह हदीस बहुत संक्षिप्त में है; पूरी बहस का तफ़सील से ज़िक्र नहीं है, इसलिये हम सब को समझने में दुश्वारी हो रही है।

बाब {जो कुछ तक़्दीर में पहले लिख दिया गया उस का बयान। और अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः "जान की क़सम'........}

1843:— अबू अस्वद दुवैली से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अ़िम्रान बिन हुसैन रज़ि॰ ने मुझ से पूछाः क्या तुम्हें मालूम है कि आज जो कुछ लोग कर रहे हैं और उस सिलसिले में जोभाग–दौड़ कर रहे हैं, या भविष्य में जो कुछ करेंगे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अहादीस की रोशनी में इन कामों के करने का फ़ैसला बहुत पहले हो चुका है और तक़्दीर में कब का लिखा जा चुका है? मैं ने उत्तर दियाः जी हाँ, इस पर तो बहुत पहले फ़ैसला हो चुका है। इस पर अ़िम्रान ने कहाः फिर तो नाइन्साफ़ी (अन्याय) होगा (कि मेरे लिये जहन्नम लिख दिया गया है इसलिये बुरा अ़मल करेन पर मजबूर हूँ) अबू अस्वद ने कहा कि यह सुन कर मैं तो सख़्त परेशान हो गया और फिर कहा कि यह ज़ुल्म और नाइन्साफ़ी नहीं है, क्योंकि अल्लाह ही ने हर चीज़ को पैदा किया है, सब उसी के क़ब्ज़े में हैं, वह जो कुछ करता है उस के बारे में उस से पूछने का किसी को हक़ नहीं है, अल्बत्ता वह अल्लाह बन्दों से पूछ सकता है। यह उत्तर सुन कर अ़िम्रान ने कहाः अल्लाह तुम पर रहम करे, मैं ने तो तुम से इसलिये पूछा था कि तुम्हारी बुद्धि की परीक्षा लूँ। (सुनो!) क़बीला मुज़ैना के दो व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये और कहने लगेः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! आज लोग जो कुछ (अच्छा–बुरा) काम कर रहे हैं और उस के लिये जो भाग–दौड़ कर रहे हैं, या भविष्य में जो कुछ भी करेंगे, क्या इन सब का फ़ैसला पहले ही नहीं हो चुका है? और क्या यह पहले ही से तक़्दीर में नहीं लिख दिया गया है? क्या इस बात को पैंगबर लेकर नहीं आये हैं? और क्या उन पर हुज्जत तमाम नहीं हो चुकी है? आप ने फ़रमायाः हाँ, इस बात का फ़ैसला हो चुका है (कि कौन क्या करेगा), और इस बात की तस्दीक़ अल्लाह

की किताब से भी होती है (जिस में फ़रमाया है कि "क़सम है जान की और उस को दुरुस्त करने की, फिर उस को भलाई और बुराई की समझ दी।" (पार: 30 सूर:शम्स)

बाब {तक़्दीर का बयान, बदबख़्ती और नेक बख़्ती का बयान।}

1844:– अ़ली रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग बक़ीअ़ के क़ब्रस्तान में एक जनाज़ा में शामिल थे कि इसी बीच नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी आ कर बैठ गये, चुनान्चे हम लोग भी आप के चारों तरफ़ बैठ गये। उस समय आप के हाथ में एक लक्ड़ी थी। आप सर झुका कर उस लक्ड़ी से ज़मीन पर लकीरें बनाने लगे, फिर फ़रमाया: तुम में से कोई ऐसा नहीं है और कोई जान ऐसी नहीं है जिस का ठिकाना अल्लाह पाक ने जन्नत या जहन्नम में न लिख दिया हो, या उस का नेकबख़्त या बदबख़्त होना न लिख दिया हो। यह सुन कर एक व्यक्ति ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! फिर क्यों न हम अ़मल करना छोड़ दें और लिखे हुये पर भरोसा कर के बैठे रहें? आप ने फ़रमाया: जो नेक बख़्त है वह नेकी के काम की तरफ़ बढ़ेगा और जो बदबख़्त है वह बुराई के काम की तरफ़ लपकेगा। फिर फ़रमाया: अ़मल करो, इसलिये कि अ़मल करने की छूट दी गयी है। नेकों के लिये नेक लोगों का काम आसान बना दिया गया है और बुरे लोगों के लिये बुरे लोगों का काम। फिर आप ने यह आयत पढ़ी: "जिस ने अल्लाह की राह में सदक़ा ख़ैरात किया, अपने रब से डरा और नेक बात की तस्दीक़ की तो हम भी उस के लिये नेकी की राह आसान कर देंगे। लेकिन जिस ने बख़ीली की, और लार्पवाही की, और नेक बातों को झुठलाया तो हम भी उस के कुफ़्र के सख़्त रास्ते को आसान कर देंगे।" (पार:30, सूर: लैल 5-10)

बाब {मरने से पहले अन्तिम काम का बयान।}

1845:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: एक व्यक्ति लंबे समय तक जन्नती लोगों के से काम करता है, लेकिन उस के काम का समापन जहन्नमी लोगों के से काम पर होता है। इसी प्रकार एक व्यक्ति जहन्न्मी लोगों के से काम लंबे समय तक करता रहता है, लेकिन उस के काम का समापन जन्नती लोगों के काम पर होता है।

फ़ाइदा:– इस हदीस में अल्लाह पाक केवल यह बताना चाहता है कि किस का अन्त अच्छा होगा और किस का बुरा, इस का ज्ञान अल्लाह पाक को पेशगी से है। चूँकि अल्लाह पाक भविष्य की बातों को जानने वाला है इसलिये पहले ही लिख दिया है। इसलिये बन्दा पहले से लिखे की बुनियाद पर अच्छा-बुरा अ़मल नहीं करता है, बल्कि अपनी इच्छा और मर्ज़ी से करता है।

बाब {मौत की घड़ी लिख दी जा चुकी है और रोज़ी बाँट दी जा चुकी है।}

1846:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी उम्मे हबीबा रज़ि॰ ने कहाः ऐ मेरे मौला! तू मेरे पति अल्लाह के रसूल, मेरे पिता अबू सुफ़यान और मेरे भाई मुआ़विया से मुझ को लाभ उठाने दे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम ने अल्लाह से उन बातों के लिये कहा जिस की समय सीमा तै हो चुकी है, उन के क़दम की एक-एक चाल लिखी हुयी है, उन की रोज़ी बाँटी जा चुकी है, इसलिये इन में से किसी को भी अल्लाह पाक उस के समय से पहले, या समय के बाद नहीं करेगा (इसलिये ऐसी चीज़ों के बारे में अल्लाह से दुआ़ करना बेकार है)

इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ ने बयान किया कि इसी दर्मियान एक व्यक्ति ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! क्या बन्दर और सुअर उन कौमों में से हैं जिन के चेहरों को बिगाड़ दिया गया था? आप ने फ़रमायाः अल्लाह पाक ने जिन क़ौमों को तबाह कर दिया या उन पर अ़ज़ाब नाज़िल किया उन की नस्ल को बाक़ी नहीं रखा। और यह बन्दर और सुअर तो उन लोगों से पहले मौजूद थे।

फ़ाइदाः- बन्दर और सुअर अलग मख़्लूक़ हैं, यह बनी इस्राईल के उन लोगों में से नहीं है जिन का चेहरा बिगाड़ कर सुअ़र और बन्दर बना दिया गया था। अल्लाह पाक कानियम है कि ऐसे लोगों की नस्ल को दुनिया से समाप्त कर देता है। कुछ लोगों का चूहों के बारे में भी यही ख़याल था। ऊपर हदीस न॰ 1504 का फ़ाइदा अवश्य पढ़ें।

बाब {अल्लाह पाक इन्सान को किस प्रकार पैदा करता है। और नेक बख़्ती व बदबख़्ती का बयान।}

1847:- अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है कि मुझ से सादिक़-मस्दूक़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में से हर एक अपनी माँ के पेट में चालीस दिन तक मनी की बूँद की शक्ल में रहता है, फिर उतने ही दिन जमे हुये ख़ून की शक्ल में रहता है, फिर उतने ही दिन लोथड़े की शक्ल में रहता है। फिर उसके पास अल्लाह तआ़ला एक फ़रिश्ता भेजता है जिस को चार बातें लिखने का हुक्म देता है (1) उस की रोज़ी (2) उस की आयु (3) उस का अ़मल (4) और उस का नेकबख़्त या बदबख़्त होना। उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की जान है तुम में से एक व्यक्ति जन्नत वालों के से काम करता रहता है, यहाँ तक कि उस के और जन्नत के दर्मियान केवल एक हाथ की दूरी रह जाती है कि उस पर तक़्दीर का लिखा ग़ालिब आ जाता है और वह जहन्नमी लोगों का सा काम करने लगता है और अन्ततः वह जहन्नम में चला जाता है।

इसी प्रकार एक व्यक्ति जहन्नमी लोगों का सा कार्य करता रहता है यहाँ तक कि उस के और जहन्नम के दर्मियान केवल एक हाथ का फ़ासला रह जाता है कि तक़्दीर का लिखा उस पर ग़ालिब आ जाता है और वह जन्नती लोगों का कार्य करने लगता है और आख़िर कार जन्नत में दाख़िल हो जाता है।

1848:– हुज़ैफ़ा बिन उसैद रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब मनी का पानी बच्चा दानी में ठहर जाता है तो ठहरने के चालीस–पैंतालिस दिन के बाद फ़रिश्ता उस के पास जाता है और पूछता हैः ऐ मेरे मौला! बदबख़्त लिखूँ या नेक बख़्त? फिर (जो अल्लाह हुक्म देता है) लिख दिया जाता है। फिर पूछता हैः नर लिखूँ या मादा? फिर जो अल्लाह हुक्म देता है लिख दिया जाता है। इसी प्रकार उस का अ़मल, आयु और रोज़ी लिख दी जाती है, फिर उस के कर्मपत्र को लपेट दिया जाता है, इस के बाद न उस में कोई कमी होती है और न ज़्यादती।

फ़ाइदाः– इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ की रिवायत में है कि चार माह दस दिन के बाद रुह फूँकी जाती है। लेकिन उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि 120 दिन के बाद रुह फूँकी जाती है। लेकिन आज के डाक्टरों का दावा है कि चार माह से पहले ही रुह पड़ जाती है। जब हदीस और डाक्टरों की रिर्पोट में इख़्तिलाफ़ हो जाये तो हम हदीस को मानेंगे और डाक्टरों के दावा को नहीं स्वीकार करेंगे। यह संभव है कि जानवरों के नुतफ़े में रुह जल्दी पड़ती हो, लेकिन इन्सान के नुत्फ़े में 120 दिन से पहले हर्गिज़ नहीं। (वहीदी)

1849:– आ़मिर बिन वासिला से रिवायत है कि मैं ने अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ को बयान करते सुनाः बदबख़्त वह है जो अपनी माँ के पेट ही से बदबख़्त पैदा हो, और नेक बख़्त वह है जो दूसरों से न हासिल कर के नेकबख़्त बने।

आ़मिर ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ की इन बातों को सुन कर मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के एक सहाबी हुज़ैफ़ा बिन उसैद ग़िफ़ारी के पास आया और उन से इब्ने मस्ऊद की हदीस बयान कर के पूछाः बिना अ़मल के आदमी कैसे (माँ के पेट में) बदबख़्त हो जायेगा? यह सुन कर हुज़ैफ़ा बोलेः क्या तुम्हें इस पर तअ़ज्जुब है? मैं ने भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि (माँ के बच्चा दानी में) जब मनी पर 42 रातें बीत जाती हैं तो अल्लाह पाक उस के पास एक फ़रिश्ता भेजता है जो उस की सूरत बनाता है, उस के आँख, कान, नाक, खाल, गोश्त और हड्डी को ठीक–ठाक करता है। फिर पूछता हैः ऐ मेरे मौला! इसे मर्द बनाऊँ या महिला? चुनान्चे अल्लाह जो हुक्म देता है उसे लिख लेता है। फिर पूछता हैः मेरे मौला! इस की आयु? (कितनी लिखूँ) चुनान्चे अल्लाह जो हुक्म देता है उतनी लिख लेता है। फिर पूछता हैः ऐ मेरे मौला! उस की रोज़ी? (कितनी लिखूँ) चुनान्चे अल्लाह जो हुक्म देता है उतनी लिख देता है। फिर फ़रिश्ता उस रजिस्टर को लेकर बाहर आ जाता है, अब उस में न तो किसी प्रकार की कमी हो सकती है और न ज़्यादती।

एक दूसरी रिवायत में इतना और इज़ाफ़ा है कि फ़रिश्ता पूछता हैः ऐ मेरे मौला! तन्दुरुस्त हाथ–पैर वाला हो, या ऐबदार (बनाऊँ)? चुनान्चे अल्लाह पाक उस को तन्दुरुस्त या ऐबदार बना देता है।

बाब {आदम की औलाद कितनी बार ज़िना क[illegible]गा, यह उस की क़िस्मत में लिख दिया गया है।}

1850:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः आदमी की औलाद कितनी बार ज़िना करेगा, यह उस के भाग्य में लिख दिया गया है, इसलिय हर हाल में उतनी बार ज़िना करेगा। आँख से ज़िना करना, देखना है। कान से ज़िना करना, सुनना है। ज़बान से ज़िना करना, बात करना है। हाथ से ज़िना करना, पकड़ना है। पाँव से ज़िना करना, चलना है। दिल का ज़िना करना, ख़ाहिश करना है। और शर्मगाह इस को सच या झूठ साबित करती है।

फ़ाइदाः– बहुत से कम पढ़े लिखे लोग इस हदीस को दलील बना कर यह कहते हैं कि तक़्दीर में जो लिख दिया गया है बन्दा उसे करने पर मजबूर है। हालाँकि इस हदीस से यह मत्लब नहीं निकलता है। इस हदीस से केवल यह मतलब निकलता है कि चूँकि अल्लाह ग़ैब और भविष्य की बातों का जानने वाला है इसलिये वह जानता है कि फ़लाँ बन्दा पैदा होने के बाद अच्छाई करेगा या बुराई, इसलिये उस ने पहले ही माँ के पेट में लिख दिया है। अब अल्लाह ने जो कुछ लिखा है इस बुनियाद पर कि बन्दा भविष्य में करेगा, न कि बन्दा लिखने की वजह से करने पर मजबूर है। इस फ़र्क़ को समझ लेना बहुत ज़रुरी है। अल्लाह पाक के पहले ही से जान लेने का तअ़ल्लुक़ इस बात से नहीं है कि बन्दे नेकी या बदी के काम करेन पर मजबूर कर दिये गये हैं, बल्कि बन्दे अपने लिये नेकी और बदी के काम करने के लिये आज़ाद हैं। अल्लाह पाक ने स्पष्ट शब्दों में बयान कर दिया हैः "जो नेक कार्य करेगा वह अपने लिये करेगा और जो बुराई करेगा उस का वबाल उस पर होगा। और तुम्हारा पर्वरदिगार अपने बन्दों पर तनिक भर भी अत्याचार नहीं करेगा" (पार:24. सूरः हामीम सज्दा–46)

इस से मालूम हुआ कि इन्सान को अच्छा–बुरा अ़मल करने की संपूर्ण रुप से स्वतंत्रता प्राप्त है, अब वह जैसा अ़मल करेगा वैसा ही उस को बदला भी दिया जायेगा। कोई यह कह कर जान नहीं छोड़ा सकता कि मेरे भाग्य में पहले ही से बुराई करना लिखा था इसलिये मैं बुराई करने पर मजबूर था।

बाब {अल्लाह पाक जिस प्रकार चाहता है दिलों को उलटता–पलटता है।}

1851:– अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः आदम की औलाद के दिल अल्लाह की उँगलियों में से दो उगँलियों के दर्मियान एक दिल की तरह रखे हुये हैं, वह उन्हें जिस प्रकार चाहता है घुमाता और नचाता है। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह दुआ़ फ़रमायीः

या मु–सर्रि–फ़ल् कुलूबि सर्रिफ़् कुलू–बना अ़ला ता–अ़ति–क
(ऐ दिलों के फेरने वाले मौला! हमारे दिलों को अपनी इताअ़त पर फेरे दे)

बाब {हर बच्चा इस्लामी फ़ितरत पर पैदा होता है।}

1852:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है वह बयान किया करते थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हर बच्चा दीन इस्लाम पर पैदा होता है, यह तो उन के माता-पिता उस को (अपने धर्म के अनुसार) उसे यहूदी, नस्रानी और मजूसी (आग की पूजा करने वाला) बना देते हैं (इस की मिसाल बिल्कुल ऐसे है कि) चौपाया हमेशा सालिम बच्चा जनता है, क्या किसी को कनकटा पैदा हुआ देखा है? (इस हदीस के बयान करने के बाद) अबू हुरैरा रज़ि॰ कहते कि तुम्हारा दिल चाहे तो इस आयत को पढ़ लोः "अल्लाह तआ़ला ने सभी को अपनी फ़ितरत (यानी दीन इस्लाम) पर पैदा किया है, और अल्लाह की इस तख़्लीक़ (बनावट) में कोई तब्दीली संभव नहीं।" (पारः 21, सूरःरुम, आयत 30)

बाब {मुश्रिकों की औलाद के बारे में हुक्म।}

1853:– इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मुश्रिकों के बच्चों के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमायाः अल्लाह ही सब से बेहतर जानता है कि वह (बड़े होकर) क्या करते।

फ़ाइदाः– काफ़िरों की औलाद जो छोटपने ही में मर जायें, इन के बारे में बड़ा इख़्तिलाफ़ है। कुछ उलमा का कहना है कि इन के बारे में कुछ न कहना ही बेहतर है और इन का मामला अल्लाह के हवाले है, क्योंकि उस ने कह दिया है "वह अधिक जानता था कि यह (बड़े होकर) क्या काम करेंगे।" कुछ उलमा ने कहा कि अपने माता-पिता के साथ होंगे। यानी अगर माँ-बाप जन्नती हैं तो जन्नत में जायेंगे, और अगर जहन्नमी हैं तो जहन्नम में जायेंगे। इमाम बुख़ारी रह॰ भी इस हदीस को अपनी पुस्तक में लायें हैं (1383-इब्ने अ़ब्बास, 1384- अबू हुरैरा, 6579) इमाम साहब का ख़याल यह है कि जन्नती हैं। मेरा भी दिल यही गवाही देता है क उन मासूमों को जन्नती मान लेने में कोई हरज नहीं। और मुसलमानों की नाबालिग़ औलाद निःसंदेह जन्नती है, इस में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं।

बाब {उस लड़के के बारे में बयान जिसे ख़ज़िर ने क़त्ल कर दिया था।}

1854:– उबय्यि बिन कअ़ब रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः वह लड़का जिसे ख़ज़िर ने क़त्ल कर दिया था काफ़िर पैदा हुआ था, और अगर जीवित रहता जो अपने माँ-बाप को कुफ़्र और नाफ़र्मानी में फँसा देता।

फ़ाइदाः– इस का विस्तार से बयान पारः 15, सूरः कहफ़ की आयत न॰ 74 में आ चुका है, किसी हिन्दी की तफ़सीर में वहाँ अवश्य देखें। यहाँ विस्तार की गुन्जाइश नहीं।

बाब {वह बच्चे जो छोटपने ही में मर गये उन का बयान। और उन जहन्नमी लोगों की पैदाइश का

बयान, जो अभी अपने बापों की पुश्त में थे।}

1855:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक अन्सारी बच्चा के जनाज़ा के लिये बुलाया गया। मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! इस बच्चा को मुबारक हो (बधाई हो) यह तो जन्नत के परिन्दों में से एक परिन्दा है, इस ने तो न ही बुराई की और न ही यह जाना है किबुराई क्या होती है। आप ने फ़रमायाः ऐ आइशा! और भी कुछ कहना है? अल्लाह पाक ने कुछ लोगों को उसी समय जन्नत के लिये बना दिया जबकि अभी वह अपने बापों की पुश्त में थे। इसी प्रकार कुछ लोगों को उसी समय जहन्नम के लिये बना दिया है जबकि वह अभी अपने बापों की पुश्त में थे।

फ़ाइदाः– छोटपने में मरने वाले बच्चे दो प्रकार के हैं (1) काफ़िरों के (2) मुसलमानों के। काफ़िरों के बच्चों के बारे में क्या हुक्म है? देखें ऊपर हदीस न॰ 1853 का फ़ाइदा। और मुसलमानों के बच्चों के जन्नती होने में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं। इसी हदीस को दलील में पेश कर के इमाम बुख़ारी रह॰ का कहना है कि मुश्रिकों के बच्चे भी जन्नती हैं। (बुख़ारी शरीफ़-1383-इब्ने अब्बास, 1384-अबू हुरैरा रज़ि॰)

❀ ❀ ❀

किताबुल् अ़िल्मि
(अ़िल्म (ज्ञान) का बयान)

बाब {अ़िल्म के उठ जाने और जिहालत के फैल जाने का बयान।}

1856:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि क्या मैं तुम्हें वह हदीस न बयान करूँ जिसे मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुनी है? इस हदीस को और भी जिस ने सुनी है मेरे बाद और कोई न बयान करेगा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत की निशनियों में से एक निशानी यह है कि अ़िल्म उठ जायेगा और जिहालत फैल जायेगी, ज़िनाकरी खुल्लम-खुल्ला होने लगेगी, शराब का पीना आ़म हो जायेगा, मर्दों की संख्या कम हो जायेगी, यहाँ तक कि पचास महिलाओं के लिये एक मर्द होगा जो उन की देख-भाल करेगा।

फ़ाइदा:– पुरुषों की संख्या लड़ाई-झगड़े, दंगे-फ़साद में हलाक होने से कम हो जायेगी।

बाब {अ़िलम उठा लिया जायेगा।}

1857:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ज़माना क़रीब हो जायेगा और अ़िल्म उठा लिया जायेगा, चारों तरफ़ फ़साद फैल जायेगा, लोग कंजूस होजायेंगे (और ज़कात-ख़ैरात न निकलेंगे) 'हर्ज' बहुत अधिक होगा। लोगों ने पूछाः 'हर्ज' किसे कहते हैं? आप ने फ़रमायाः हत्या और नाजाइज़ क़त्ल व फ़साद।

बाब {उलमा के उठा लिये जाने से अ़िल्म समाप्त हो जायेगा।}

1858:– अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ि॰ से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः अल्लाह पाक लोगों के दिलों से अ़िल्म को छीन कर उसे नहीं उठायेगा, बल्कि उलमा को उठा लेगा जिस से स्वैंय अ़िल्म उठ जायेगा। फिर कोई आ़लिम जब न बचेगा तो लोग जाहिलों को अपना सर्दार बना लेंगे, वह बिना जाने समझें फ़तवा देंगे, स्वैंय गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे।

बाब {जब कोई व्यक्ति दीन इस्लाम में कोई अच्छा या बुरा तरीक़ा जारी करे।}

1859:– जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि कुछ देहाती नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये, वह कंबल पहने हुये थे। आप ने

उन का बुरा हाल देख कर लोगों को सदक़ा-ख़ैरात की तरफ़ तवज्जोह दिलाई, लेकिन लोगों ने इस मामले में देरी की, चुनान्चे आप के चेहरे पर रन्ज ज़ाहिर हो गया। इतने में एक अन्सारी रुपयों की एक थैली लेकर आये, फिर दूसरे आये यहाँ तक कि सदक़ा करने वालों का ताँता बँध गया। चुनान्चे आप का चेहरा मारे खुशी के चमकने लगा। फिर आप ने फ़रमायाः अगर कोई दीन इस्लाम में किसी अच्छी सुन्नत को जारी करता है (जिस का सबूत कुरआन-हदीस में मौजूद हो) और लोग उस पर अ़मल करने लगें तो उस को उन सब लोगों के अ़मल करने जितना सवाब मिलेगा और अ़मल करने वालों के सवाब में कोई कमी-कटौती नहीं की जायेगी। इसी प्रकार अगर किसी ने दीन इस्लाम में कोई बुरा तरीक़ा जारी कर दिया और लोगों ने उस पर अ़मल करना आरंभ कर दिया तो उस को उन तमाम अ़मल करने वालों के बराबर गुनाह मिलेगा और उन के गुनाह में कोई कमी नहीं होगी।

बाब {जो व्यक्ति हिदायत या गुमराही की तरफ़ लोगों को बुलाए।}

1860:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो व्यक्ति किसी को हिदायत (नेक राह) पर चलने की तरफ़ बुलायेगा, तो उस को उन तमाम चलने वालों के बराबर सवाब मिलेगा, लेकिन चलने वालों के सवाब में कोई कमी नहीं होगी। इसी प्रकार जो कोई लोगों को बुरे काम की तरफ़ बुलायेगा तो उस को उन तमाम बुरे काम करने वालों के बराबर गुनाह मिलेगा, लेकिन चलने वालों के गुनाह में कोई कमी नहीं होगी।

फ़ाइदाः– चुनान्चे हदीस शरीफ़ में आया है कि दुनिया में जितनी भी हत्यायें होती हैं उन का एक-एक गुनाह हाबील को मिलता है, क्योंकि उस ने हत्या की बुनियाद डाली।

बाब {कुरआन पाक के अ़लावा कुछ न लिखने का बयान। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर झूठ बोलने से बचने का हुक्म।}

1861:– अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी बातों को मत नोट करो और जिस ने मेरी बातों को सुन कर नोट कर लिया है उसे मिटा दे लेकिन जो कुरआन लिखा है उसे ने मिटाए। हाँ, मेरी हदीसों को बयान करो इस में कोई गुनाह नहीं है। और जो व्यक्ति मेरी ओर से झूठी हदीसें बयान करेगा वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

1862:– मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि॰ से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः मेरे ऊपर झूठ बाँधना आम लोगों पर झूठ बाँधने की तरह नहीं है। जिस ने जान बूझ कर मेरे ऊपर झूठ बाँधा तो वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

1863:– समुरा बिन जुन्दुब और मोग़ीरा बिन शोबा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो व्यक्ति मेरी कोई हदीस बयान करे हालाँकि वह जानता है कि यह झूठी हदीस है, तो वह भी झूठों में से है।

फ़ाइदाः– हदीस का अर्थ स्पष्ट है, झूठी हदीस बयान करना महापाप है। अव्वल यह कि वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर झूठी हदीस मन्सूब कर रहा है। दूसरे यह कि दीन इस्लाम में अपनी तरफ़ से गढ़ कर एक हुक्म डाल रहा है। एक दूसरी हदीस में है कि ऐसे व्यक्ति को क़ियामत के दिन आग का लगाम पहनाया जायेगा।

❀ ❀ ❀

किताबुद्दुआइ
(दुआ की फ़ज़ीलत का बयान)

बाब {अल्लह के नामों का बयान, और उसके बारे में बयान जिस ने उन नामों को याद किया।}

1864:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक के 99 नाम हैं, जो इन नामों को याद कर लेगा वह जन्नत में दाख़िल होगा। अल्लाह पाक ताक़ है और ताक़ को पसन्द करता है।

फ़ाइदा:– उन 99 नामों की तफ़सील तिर्मिज़ी शरीफ़ में मौजूद है। आ़म तौर पर कुरआन मजीद की जिल्द के अस्तर पर छपा हुआ मिलेगा। "जो उसे याद कर ले" का यह अर्थ है कि उन नामों का जो अर्थ है उस पर पूरा अ़क़ीदा हो। जैसे 'रज़्ज़ाकु' रोज़ी देने वाला, तो अल्लाह ही को रोज़ी देने वाला जाने, उस के अ़लावा और किसी को रोज़ी देने वाला न समझे और केवल उसी ही से रोज़ी माँगे................आदि। अगर कोई "या रज़्ज़ाकु की रट लगाता है, लेकिन उस का अर्थ नहीं जानता और न ही उस पर अ़क़ीदा और ईमान व अ़मल है, तो फिर कोई फ़ाइदा नहीं।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुआ का बयान।}

1865:– फ़रवा बिन नौफ़ल अश्जअ़ी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने आ़इशा सिद्दीका रज़ि॰ से पूछाः अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क्या दुआ माँगते थे? उन्होंने बताया कि यह दुआ माँगते थे।

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि–क मिन् शर्रि मा अ़मिल्तु
वमिन् शर्रि मा लम् आ–मल्
(ऐ अल्लाह! मैं उस बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ जिसे मैं
ने किया और उस बुराई से जिसे मैं ने नहीं किया।)

1866:– इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यह दुआ माँगा करते थे:

अल्लाहुम्म ल-क अस्-लम्तु वबि-क आ-मन्तु, व-अ़लै-क त-वक्कल्तु वइलै-क अनब्तु वबि-क ख़ा-सम्तु+अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिइज़्ज़ति-क ला इला-ह इल्ला अन्-त अन् तुज़िल्लनी, अन्-तल् हय्युल्लज़ी ला यमूतु वल्जिन्नु वल्इन्सु यमूतू-न

(ऐ मेरे मौला! में तेरा आज्ञाकारी बन्दा हूँ, तुझ पर ईमान लाया, तुझ पर भरोसा किया, तेरी तरफ़ रुजुअ़ किया और तेरी सहायता से दुश्मनों से लड़ाई की। ऐ मेरे मौला! मैं तेरी अ़िज़्ज़त की पनाह माँगता हूँ, तेरे अ़लावा और कोई माबूद नहीं, तू ज़िन्दा है जिस को मौत नहीं। और जिन्न और इन्सान को मरना है)

1867:— अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब सफ़र में होते और सफ़र ही में सुब्ह हो जाती तो यह दुआ़ पढ़ते:

समि-अ़ सामिऊन् बि-हम्दिल्लाहि वहुस्नि बलाइही अ़लैना रब्बना साहिब्ना व-अफ़ज़िल् अ़लैना आ़इ-ज़न् बिल्लाहि मि-नन्नारि

(सुन लिया सुनने वाले ने अल्लाह की तारीफ़ और उस की अच्छी आज़माइश को। ऐ मेरे मौला! हमारा साथी बन जा, हम पर अपनी मेहरबानी फ़रमा, मैं जहन्नम से तेरी पनाह माँगता हूँ।)

1868:— अबू मूसा अश्-अ़री रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यह दुआ़ माँगा करते थे:

अल्लाहुम्मग़् फ़िर्ली ख़ती-अती व-जह्ली वइस्राफ़ी फ़ी अम्री वमा अन्-त आ-लमु बिही मिन्नी+अल्लाहुम्मग़् फ़िर् ली जद्दी व-हज़्ली व-ख़त्इ व-अ़-मदी वकुल्लु ज़ालि-क अ़िन्दी+ अल्लाहुम्मग़् फ़िर्ली मा क़द्दम्तु वमा अख़्ख़र्तु वमा अस्-रर्तु वमा आ-लन्तु वमा अन्-त आ-लमु बिही मिन्नी+अन्-तल् मु-क़द्दिमु व-अन्-तल् मु-अख़्ख़िरु व-अन्-त अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर

(ऐ मेरे मौला! जो कुछ मुझ से चूक हुयी हो, मुझ से नादानी हुयी हो और मुझ से ज़्यादती हुयी हो, उसे माफ़ कर दे, और उसे भी माफ़ कर दे जो तू मूझ से अधिक जानता है। ऐ मेरे मौला! उन गुनाहों को भी माफ़ कर दे जिसे मैं ने इरादा

के साथ किया, और उन को भी माफ़ कर दे जिन्हें मैंने हँसी-मज़ाक में किया, और उन को भी जिन्हें भूल कर किया। यह सब मैं ने अपनी तरफ़ से किया है। ऐ मेरे मौला! मेरे अगले-पिछले और ज़ाहिरी गुनाहों को माफ़ कर दे, और जिस को तू अधिक जानता है (उन्हें भी माफ़ कर दे) ऐ मेरे मौला! तू ही आगे करने वाला और पीछे करने वाला है और तू ही हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है)

1869:— अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाया करते थेः

अल्लाहुम्म अस्लिह् ली दीनी अल्लज़ी हु-व अ़िस्-मतु अम्री व-अस्लिह् ली दुन्या-यल्लती फ़ीहा मआ़शी, व-अस्लिह् ली आख़ि-रतिल्लती फ़ीहा मआ़दी, वज्-अ़लिल् हया-त ज़िया-द-तन् ली फ़ी कुल्लि ख़ैरिन् वज्-अ़लिल् मौ-त रा-ह-तन्ली मिन् कुल्लि शर्रिन्

1870:— अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाया करते थेः

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-कल् हुदा वत्तुक़ा वल् अ़फ़ा-फ़ वल् ग़िना

(ऐ मेरे मौला! मैं तुझ से हिदायत, प्रहेज़गारी, पाकदामनी और दिल की मालदारी माँगता हूँ।)

1871:— ज़ैद बिन अर्क़म रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने कहा कि मैं तुम से वही बयान करूँगा जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे। आप फ़रमाते थेः

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् कस्लि वल् जुब्नि वल् बुख़्लि वल्-हर्मि व-अ़ज़ाबिल् क़ब्रि+ अल्लाहुम्म आति नफ़्सी तक़्वाहा व-ज़क्काहा, अन्-त ख़ैरु मन् ज़क्काहा, अन्-त वलिय्युहा वमौलाहा+ अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् अ़िल्मिन् ला यन्फ़ा वमिन् क़ल्बिन् ला यख़्शा वमिन् नफ़्सिन् ला तश्बा वमिन् दा-वतिन् ला युस्-तजाबु लहा

(ऐ मेरे मौला! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ, सुस्ती, काहिली और बुज़दिली से। इसी प्रकार बुढ़ापे से, बख़ीली से और क़ब्र के दन्ड से। ऐ मेरे मौला! मेरे नफ़्स को प्रहेज़गारी दे दे, उस को पवित्र कर दे, तू ही उसे बेहतर पाक करने वाला है।

तू ही उस का आक़ा और मौला है। ऐ मेरे मौला! मैं तुझ
से पनाह माँगता हूँ उस अ़िल्म से जो लाभ न पहुँचाए, और
उस दिल से जो तेरे सामने न झुके, और उस नफ़्स से जो
कभी न मरे, और उस दुआ़ से जो क़ुबूल न हो)

1872:— अबू मालिक अश्-जअ़ी अपने पिता के हवाले से रिवायत करते हैं कि एक व्यक्ति ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर अनुरोध किया: ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! जब मैं अपने रब से मागूँ तो क्या मागूँ? आप ने फ़रमाा: तुम यह दुआ़ माँगो:

अल्लाहुम्मग् फ़िर् ली वर्-हम्नी व-आफ़िनी वर्ज़ुक़्नी
(ऐ मेरे मौला! तू मुझे माफ़ कर दे, मुझ पर रहम फ़रमा,
मुझे गुनाहों से बचा और मुझे हलाल रोज़ी दे)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दुआ़ के इन वाक्यों (जुम्लों) को पढ़ते जाते और एक-एक उगँली बन्द करते जाते, जब सब उंगलियाँ बन्द हो गयीं और केवल अंगूठा बाक़ी बचा तो फ़रमाया: यह दुआ़ तेरे लिये दुनिया और आख़िरत के तमाम फ़ाइदे इकट्ठा कर देगी।

1873:— अ़ब्दुल् अ़ज़ीज़ (इब्ने सुहैब) ने बयान किया कि इमाम क़तादा ने अनस बिन मालिक रज़ि॰ से पूछा: नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कौन सी दुआ़ बहुत अधिक पढ़ा करते थे? उन्होंने कहा: आप अक्सर यह दुआ़ पढ़ा करते थे:

(अल्लाहुम्म) आतिना फ़िद्दुनिया ह-स-न-तव्वफ़िल्
आख़ि-रति ह-स-न-तव्वाक़िना अ़ज़ा-बन्नारि
(ऐ मेरे मौला) हमें दुनिया में भलाई दे और आख़िरत में भी
भलाई दे और जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा ले)

और अनस बिन मालिक रज़ि॰ भी जब दुआ़ माँगते, तो यही दुआ़ माँगते थे। और जब कोई दूसरी दुआ़ माँगते तो उस में भी इस दुआ़ को मिला लिया करते थे।

बाब {हिदायत पाने और सीधी राह पर रहने के लिये दुआ़।}

1874:— अ़ली बिन अबू तालिब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया: तुम यह दुआ़ पढ़ो:

अल्लाहुम्मह् दिनी व-सद्दिद्नी
(ऐ मेरे मौला! मुझे हिदायत दे और मुझे सीधा कर दे)

आप ने फ़रमाया: दुआ़ माँगते समय "हिदायत" से मुराद, दीन इस्लाम की रहनुमाई हो, और "सीधा कर दे" पढ़ते समय तीर की सीधाई पर ध्यान रखो (कि अल्लाह पाक तीर की सीधाई की तरह मुझे सीधा कर दे)

बाब {वह नेक काम, जिस के वसीले से अल्लाह पाक से दुआ करनी चाहिये।}

1875:– अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तीन व्यक्ति एक साथ कहीं जा रहे थे कि इसी दर्मियान वर्षा होने लगी, चुनान्चे वह तीनों पहाड़ के एक खोह में जा कर छुप गये। इतने में ऊपर से एक चट्टान खिसक कर नीचे गिर पड़ा और उस खोह का मुँह बन्द हो गया। अब उन लोगों ने आपस में मश्वरा किया कि हम लोगों ने जो अल्लाह के लिये कभी नेक काम किये हैं उन्हें याद कर के उन के वसीला से अल्लाह पाक से नजात के लिये दुआ माँगनी चाहिये, हो सकता है इन दुआओं के वसीले से अल्लाह पाक इस चट्टान को हटा दे। चुनान्चे उन में से एक ने दुआ कीः ऐ मेरे मौला! मेरे माता-पिता बहुत बूढ़े थे, घर में मेरी पत्नी और छोटे-छोटे बच्चे थे, उन के पालन-पोषण के लिये मैं बकरियाँ चराता था। जब शाम को चरा कर लौटता तो उन का दूध दूहता तो अपने बच्चों से पहले अपने माता-पिता को पिलाता। एक दिन चारा की तलाश में बकरियों को दूर ले जाना पड़ा, चुनान्चे शाम को घर लौटने में देरी हो गयी। जब घर आया तो क्या देखा कि माता-पिता सो रहे हैं। चुनान्चे मैं ने अपने नियम के अनुसार दूध दूहा और ला कर माँ-बाप के सर के पास खड़ा हो गया। मैं ने उन्हें नींद से जगाना उचित न समझा और यह भी पसन्द नहीं था कि उन्हें पिलाने से पहले अपने बच्चों को पिला दूँ। इधर बच्चों का यह हाल था कि मेरे पैर पकड़ कर मारे भूख के रो पीट रहे थे। बहरहाल सुब्ह होने तक यही मामला रहा (कि मैं उन के सर के पास दूध लिये खड़ा रहा और बच्चे रोते-चिल्लाते रहे) ऐ मेरे मौला! अगर तू जानता है कि यह सब कुछ तेरी रज़ामन्दी के लिये किया है तो तू इस पत्थर को इतना हटा दे कि जिस से मैं आसमान को देख लूँ। चुनान्चे अल्लाह पाक ने उस पत्थर को थोड़ा सा सरका दिया और उन्हें आसमान नज़र आने लगा।

फिर दूसरे ने दुआ कीः ऐ मेरे मौला! मेरे चचा की एक बेटी थी जिस से मैं प्रेम करता था जैसे एक मर्द किसी महिला से करता है। मैं ने उस को अपनी तरफ़ झुकाना चाहा, लेकिन उस ने कहा कि जब तक तुम मुझे 100 अशर्फ़ियाँ नहीं देते मैं इस काम के लिये राज़ी नहीं हूँ। चुनान्चे मैं ने मेहनत कर के कमाई की और उस के पास लेकर गया। जब उस के ऊपर ससवार हुआ तो वह कहने लगीः ऐ अल्लाह के बन्दे! अल्लाह का ख़ौफ़ खाओ और नाजाइज़ तरीक़े से मेरे कुवाँरेपन को मत तोड़ो। यह सुन कर मैं उस के ऊपर से उतर गया। ऐ मेरे मौला! अगर तू जानता है कि यह काम मैं तुझे खुश करने के लिये किया है तो इस राह को थोड़ा सा और कुशादा कर दे। चुनान्चे अल्लाह पाक ने थोड़ा सा और खोल दिया।

फिर तीसरे ने दुआ कीः ऐ मेरे मौला! मैं ने एक व्यक्ति को एक फ़र्क़ चावल के बदले मज़दूर रखा, जब वह काम कर चुका तो उस ने अपनी मज़दूरी माँगी। मैं ने एक फ़र्क़ चावल उसे दिया लेकिन उस ने लेने से इन्कार कर दिया और यूँ ही चला गया।

मैं ने उन चावलों को बो दिया (और उस की बर्कत से) मैं ने गाय-बैल और उन को चराने के लिये गुलाम ख़रीद लिया। फिर (काफ़ी समय के बाद) एक दिन वह मज़दूर आया और कहने लगाः अल्लाह से डर और मेरी मज़दूरी को मत हड़प। मैं ने कहाः जाओ, और जाकर उन गाय-बैलों और उन के चराने वालों को ले लो। उस ने कहाः अल्लाह से डर और मुझ से मज़ाक़ मत कर। मैं ने कहाः मैं मज़ाक नहीं कर रहा, जा कर गाय-बैलों और उन के चराने वालों को ले लो। चुनान्चे उस ने ले लिया। ऐ मेरे मौला! अगर तू जानता हैं कि यह काम मैं ने तुझे खुश रखने के लिये किया है, तो पूरा रास्ता खोल दे। चुनान्चे अल्लाह पाक ने पूरा रास्ता खोल दिया (और वह खोह से निकल कर अल्लाह का शुक्र अदा करते हुये अपने घरों को रवाना हो गये)

फ़ाइदाः— इस हदीस से मालूम हुआ कि अपने नेक अ़मल को वसीला बनाना और उस के हवाले से अल्लाह से दुआ़ करना दुरुस्त है। इस प्रकार की दुआ़ओं को अल्लाह पाक कुबूल करता है।

बाब {मुश्किल के समय की दुआ़।}

1876:— अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सख़्ती और कठिनाई के मौक़ा पर यह दुआ़ किया करते थेः

लाइला-ह इल्लल्लाहुल् अ़ज़ीमुल् हलीमु, लाइला-ह इल्लल्लाहु रब्बुल् अ़र्शिल् अ़ज़ीमि, लाइला-ह, इल्लल्लाहु रब्बुस्समा वाति व-रब्बुल् अर्ज़ि व-रब्बुल् अ़र्शिल् करीमि
(अल्लाह के अ़लावा और कोई माबूद नहीं, वह बड़ाई वाला और हौसले वाला है। अल्लाह के अ़लावा और कोई माबूद नहीं, जो बड़े अ़र्श का मालिक है। अल्लाह के अ़लावा और कोई माबूद नहीं, जो आसमान व ज़मीन और करीम अ़र्श का रब है।)

बाब {दुआ़ कुबूल होने केलिये बन्दे को जल्दबाज़ी नहीं मचानी चाहिये।}

1877:— अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बन्दे की तमाम दुआ़यें कुबूल होती हैं। हाँ वह दुआ़यें नहीं कुबूल होती हैं जिन में किसी गुनाह के करने या रिश्ता-नाता तोड़ने की दुआ़ की जाये। और दुआ़ में जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिये कि (ऐ अल्लाह! जल्दी कुबूल कर ले) आप से पूछा गयाः ऐ अल्लाह के रसूल! जल्दबाज़ी का क्या अर्थ है? आप ने फ़रमायाः (दुआ़ माँगने के बाद) इस प्रकार कहने लगना कि "मैं ने दुआ़ माँगी है लेकिन क्या मालूम, कुबूल हो या न हो," इस प्रकार निराश होकर दुआ़ ही माँगनी छोड़ दे।

फ़ाइदाः— दुआ़ माँगने के बाद कुबूल होने के बारे में अल्लाह पर शक करेगा तो उसे

तक्लीफ़ होगी और कुबूल नहीं करेगा है। इसलिये मुकम्मल भरोसा रखे कि कुबूल होगी अगर्चे देर से सही।

बाब {दुआ करते समय पूरा भरोसा होना चाहिये। और दुआ में इस प्रकार नहीं कहना चाहिये "ऐ अल्लाह अगर तू चाहे"।}

1878:— अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायंत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम में से कोई यूँ दुआ न करे "ऐ मेरे मौला! अगर तू चाहे तो मुझे बख़्श दे। ऐ मेरे मौला! अगर तू चाहे तो मुझ पर रहम फ़रमा" बल्कि स्पष्ट शब्दों में और बिला शर्त माँगे, इसलिये कि अल्लाह पाक वही करता है जो चाहता है और उस पर कोई दबाव नहीं डाल सकता (इसलिये अगर-मगर लगाने से कोई फ़ाइदा नहीं)

बाब {रात में एक समय ऐसा आता है जिस में दुआ कुबूल होती है।}

1879:— जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना: रात में एक समय ऐसा भी आता है कि उस समय में अगर कोई मुसलमान दुनिया व आख़िरत की जो भी भलाई माँगे, अल्लाह पाक उसे कुबूल करता है। यह समय हर रात में आता है।

फ़ाइदा:— यह समय रात का पिछला पहर है जब दुनिया सोती है और तहज्जुद पढ़ने वाले उठ कर अल्लाह को याद करते हैं। जैसा कि नीचे की हदीस से स्पष्ट है।

बाब {रात के अन्तिम पहर में अल्लाह को याद करना और दुआ करनी चाहिये, क्योंकि उस समय दुआ कुबूल होती है।}

1880:— अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह पाक रात के अन्तिम पहर में सब से निचले आसमान पर आ कर पुकारता है: कोई है जो मुझ से दुआ करे और मैं उस की दुआ कुबूल करूँ? कोई है जो मुझ से माँगे और मैं उसे दूँ? कोई है जो मुझ से माफ़ी माँगे और मैं उसे माफ़ कर दूँ?

बाब {मुर्ग़ के बाँग देने के समय की दुआ।}

1881:— अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब तुम मुर्ग़ की आवाज़ सुनो तो अल्लाह से उस का फ़ज़्ल माँगो, क्योंकि उस ने फ़रिश्ते को देखा है (तब आवाज़ लगाई है) और जब तुम गधे की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह माँगो, क्योंकि उस ने शैतान को देखा है (तब आवाज़ लगाई है।)

फ़ाइदा:— अल्लाह से पनाह माँगो यानी "अऊज़ु बिल्लाहि मि-नश्शैतना निर्रजीम" पढ़ो।

बाब {किसी मुसलमान भाई के लिये उस के पीठ पीछे दुआ करना।}

1882:— सफ़वान से रिवायत है (यह इब्ने अब्दुल्लाह बिन सफ़वान हैं, जिन के निकाह में उम्मे दर्दा थीं) उन्होंने बयान किया कि मैं मुल्क शाम गया तो अबू दर्दा के घर भी गया, लेकिन वह नहीं मिले, अल्बत्ता उन की पत्नी उम्मे दर्दा से मुलाक़ात हुयी तो उन्होंने पूछा: क्या आप इस वर्ष हज्ज का इरादा रखते हैं? मैं ने कहा: हाँ इरादा तो है। उन्होंने

कहाः फिर आप वहाँ मेरे लिये दुआ कर दीजियेगा, क्योंकि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः एक मुसलमान भाई के लिये उस के पीठ पीछे दुआ करने से वह दुआ कुबूल होती है। उस के पास एक फ़रिश्ता खड़ा रहता है, जब वह अपने भाई के लिये दुआ करता है तो फ़रिश्ता आमीन कहता है। फिर मैं बाज़ार में गया तो वहाँ अबू दर्दा से भी मुलाक़ात हो गयी तो उन्होंने भी यह हदीस बयान की।

बाब {दुनिया ही में जल्दी सज़ा मिलने के लिये दुआ करना दुरुस्त नहीं।}

1883:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक मुसलमान की अ़यादत (बीमार पुर्सी) के लिये गये जो बीमारी से कमज़ोर होकर चूज़े की तरह हो गया था। आप ने उस से पूछाः क्या तू अल्लाह से कुछ दुआ करता था? या कुछ माँगता था? उस ने कहाः जी हाँ। मैं यह दुआ करता थाः

अल्लाहुम्म मा कुन्तु मुआ़क़िबी बिही फ़िल् आख़ि-रति
फ़-अ़ज्जिलहु फ़िद्दुनिया
(ऐ मेरे मौला! अगर तू मुझे आख़िरत में दन्ड देने वाला
है तो दुनिया ही में दे दे)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सुब्हानल्लाह! तेरे अन्दर इतनी ताक़त कहाँ है कि तू दुनिया में अल्लाह का अ़ज़ाब सह सके, तू ने यूँ क्यों नहीं दुआ कीः

(अल्लाहुम्म) आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-न-तव्वाफ़िल् आख़ि-रति
ह-स-न-तव्वाक़िना अ़ज़ा-बन्नारि

फिर आप ने उस के लिये यह दुआ फ़रमायी तो वह चंगा हो गया।

बाब {किसी परेशानी की वजह से मौत की दुआ करना नाजाइज़ है।}

1884:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम पर कोई आफ़त आ जाये तो उस की वजह से मौत की तमन्ना न करो। और अगर तमन्ना ही करनी हो तो यूँ कहोः

अल्लाहुम्म अह्यिनी मा का-नतिल् हयातु ख़ै-रन् ली
व-त-वफ़्फ़नी इज़ा का-नतिल् ह-यातु ख़ै-रन! ली
(ऐ मेरे मौला! मुझे उस समय तलक जीवित रख जब तलक
मेरा जीना मेरे लिये बेहतर हो, और उस समय मुझे मौत दे
जब मेरा मर जाना बेहतर हो)

1885:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में से कोई मौत की इच्छा न करे और न मौत के आने से पहले मौत की इच्छा करे, क्योंकि जब वह मर जाता है तो उस का नेक अ़मल समाप्त हो जाता है, और मोमिन की आयु लंबी होने से उस की नेकियाँ भी अधिक होगीं।

❀ ❀ ❀

बाबुज़्ज़िक्रि
(अल्लाह को याद करने का बयान)

बाब {अल्लाह की याद की तरफ़ उभारना चाहिये। हमेशा अल्लाह को याद कर के उस से नज़दीकी हासिल करनी चाहिये।}

1886:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि मैं बन्दे के गुमान के मुताबिक़ उस से क़रीब रहता हूँ। जब बन्दा मुझे याद करता है तो मैं उस के साथ रहता हूँ। अगर वह दिल ही दिल में याद करता है तो मैं भी दिल ही दिल में उसे याद करता हूँ। अगर वह मुझे सभा में याद करता है तो मैं भी उसे (फ़रिश्तों की) सभा में याद करता हूँ, ऐसी सभा में जो उस की सभा से बेहतर होती है (यानी फ़रिश्तों की सभा में) और जब बन्दा एक बालिश्त मेरी तरफ़ बढ़ता है तो मैं एक हाथ उस की तरफ़ बढ़ता हूँ। और जब वह एक हाथ मुझ से नज़दीक होता है तो मैं एक गज़ उस से नज़दीक हो जाता हूँ। जब वह मेरे पास चल कर आता है तो मैं उस के पास दौड़ कर जाता हूँ।

फ़ाइदाः– इस हदीस में अल्लाह के लिये चलना और दौड़ कर आना जैसे शब्द आये हैं, इन्हें अपने ज़ाहिरी माना में ले लेने में कोई हरज नहीं। इस में तावील करेन की कोई ज़रुरत नहीं। अल्लाह के पास हाथ-पाँव, आँख-नाक सब कुछ है। किस तरह है? जिस प्रकार उस के लाइक़ हैं, हम उन्हें अपने ख़याल में नहीं ला सकते, हमारे लिये केवल ईमान लाना अनिवार्य है। अल्लाह पाक बन्दे के पास दौड़ कर आता है, जिस प्रकार दुनिया में एक मित्र अपने मित्र के पास उस के बुलाने पर दौड़ कर जाता है।

हदीस से मालूम हुआ कि अल्लाह पाक से निकटता (नज़दीकी) बनाने के लिये उस को सोते-जागते, उठते-बैठते याद करना ज़रुरी है।

बाब {अल्लाह को याद करो तो बराबर याद करो, दर्मियान में ज़िक्र छूट जाये तो कोई हरज नहीं।}

1887:– अबू सुफ़यान नहदी हन्ज़ला उसैदी रज़ि॰ से (जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कातिबों में से थे) बयान करते हैं कि अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ मुझ से मिले और पूछने लगेः ऐ हन्ज़ला! तुम्हारा क्या हाल है? मैं ने कहाः हन्ज़ला तो मुनाफ़िक़ हो

गया। अबू बक्र ने कहाः बड़े अफ़सोस की बात है, तुम यह क्या कह रहे हो? मैं ने कहाः जब हम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास होते हैं तो आप हमें जन्त-जहन्म की याद दिलाते रहते हैं, उस समय गोया हम अपनी आँखों से देख रहे होते हैं। लेकिन जब आप के पास से उठ कर बीवी-बच्चों और कारोबार में लग जाते हैं तो बहुत सी बातों को भूल जाते हैं। अबू बक्र ने कहाः अल्लाह की क़सम! हमारा भी तो यही हाल हो जाता है। फिर मैं और अबू बक्र नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुँचे। मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! हन्ज़ला तो मुनाफ़िक़ हो गया? आप ने फ़रमायाः इस से तुम्हारा क्या मतलब है? मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! जब हम आप के पास होते हैं और आप हमें जन्नत-जहन्म की याद दिलाते हैं तो गोया उन्हें हम अपनी आँखों से देख रहे होते हैं, लेकिन जब आप के पास से उठ कर चले जाते और बीवी-बच्चों और कारोबार में लग जाते हैं तो बहुत सी बातों से ग़ाफ़िल हो जाते हैं। यह सुन कर आप ने फ़रमायाः उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है, अगर तुम हमेशा उसी हाल में रहो जिस हाल में मेरे पास रहते हो और उसी प्रकार अल्लाह की याद में लगे रहो तो फ़रिश्ते तुम्हारे बिस्तरों और तुम्हारे रास्तों में तुम से हाथ मिलाते फिरें। ऐ हन्ज़ाल! कुछ समय दुनिया के कारोबार में लगाओ और कुछ समय अल्लाह की याद में बिताओ। इस वाक्य को आप ने तीन मर्तबा दोहराया।

फ़ाइदाः– मालूम हुआ कि बीवी-बच्चों और कारोबार में लगना यह निफ़ाक़ नहीं है, बल्कि जीने का साधन है, इसलिये यह दुनियादारी के काम भी ज़रुरी हैं। सूरः जुमु-अः में अल्लाह ने फ़रमा दिया हैः "जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाओ तो ज़मीन में फैल जाओ और रोज़ी-रोटी तलाश करो" फिर उस की याद में लग जाओ।

बाब {एक स्थान पर एकत्र होकर कुरआन पाक की तिलावत की फ़ज़ीलत का बयान।}

1888:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो व्यक्ति अपने किसी मोमिन भाई के ऊपर से किसी परेशानी को दूर कर देता है तो अल्लाह पाक उस के ऊपर से आख़िरत की सख़्तियों में से एक सख़्ती को दूर कर देगा। अगर कोई किसी ग़रीब को मोहलत देता है (और वसूली तक़ाज़ा में सख़्ती नहीं करता है) तो अल्लाह पाक भी दुनिया और आख़िरत में उस पर आसानी करेगा। अगर कोई दुनियाँ में किसी मुसलमान भाई का अ़ैब छुपायेगा तो अल्लाह पाक भी दुनिया और आख़िरत में उस के अ़ैब को छुपाएगा। और अल्लाह पाक उस समय तक अपने बन्दे की सहायता में रहता है जब तलक बन्दा अपने भाई की सहायता में रहता है। और जो बन्दा दीन इस्लाम का ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से सफ़र करता है तो अल्लाह पाक उसके लिये जन्नत की राह को आसान बना देता है। और जब लोग अल्लाह के घरों में से किसी घर में जमा होकर अल्लाह की किताब पढ़ते-पढ़ाते हैं तो उन पर अल्लाह पाक की रुहानियत नाज़िल होती है और रहमत उन्हें ढाँप लेती है और फ़रिश्ते उन्हें अपने

घेरे में ले लेते हैं, अल्लह पाक अपने पास रहने वालों की मज्लिस में उन का ज़िक्र करता है। और जो नेकी करने में सुस्त हो तो उस का ख़ान्दान उसे कुछ फ़ाइदा नहीं पहुँचा सकता है।

फ़ाइदाः– यानी ऊँचे ख़ान्दान का या ऊँची ज़ात-पात का होना कुछ लाभदायक नहीं। अ़ल्लामा जामी ने बहुत खूब कहा है

बन्दए इश्क़ शुदी तर्क नसब कुन जामी
+कि दरीं राह फुलाँ इब्ने फ़लाँ चीज़े नीस्त।

बाब {जो व्यक्ति बैठ कर अल्लाह को याद करता है और उस की हम्द-सना बयान करता है, तो अल्लाह पाक फ़रिश्तों के सामने उस पर फ़ख़्र करता है।}

1889:– अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा मुआ़विया रज़ि॰ ने लोगों को एक साथ बैठ हुये देखा तो पूछाः आप लोग यहाँ किस लिये बैठे हुये हैं? उन्होंने कहाः हम लोग अल्लाह को याद करने के लिये बैठे हुये हैं। उन्होंने कहाः अल्लाह की क़सम! आप लोग इसी लिये बैठे हैं या और भी कोई मक़सद है? उन्होंने कहाः अल्लाह की क़सम! हम लोग अल्लाह की याद करने के लिये बैठे हुये हैं। मुआ़विया ने कहाः मेरे क़सम देने का मक़सद यह नहीं है कि मैं तुम्हें झूठा सूझ रहा हूँ। (बात यह है कि) एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एकत्र बैठे हुये सहाबा के पास से गुज़रे तो पूछा कि तुम लोग यहाँ क्यों बैठे हुये हो? उन्होंने कहाः हम लोग यहाँबैठ कर अल्लाह की प्रशंसा और उस का शुक्र अदा कर रहे हैं, क्योंकि उस का हम पर यह एहसान है कि उस ने हमें दीन इस्लाम की राह दिखाई और एहसान फ़रमाया है। आप ने पूछाः अल्लाह की क़सम, बस इसीलिये बैठे हो या किसी और काम के लिये? उन्होंने कहाः अल्लाह की क़सम, हम लोग इसीलिये बैठे हुये हैं। आप ने फ़रमायाः मैं ने जो तुम्हें क़सम दी है इसलिये नहीं कि तुम्हें झूठा समझता हूँ, बल्कि बात यह है कि जिब्रील अ़लै॰ ने मेरे पास आ कर कहा कि अल्लाह पाक फ़रिश्तों के सामने तुमहारी बड़ाई बयान कर रहा है।

फ़ाइदाः– इस से बड़ी बात और क्या होगी कि अल्लाह पाक उन की फ़ज़ीलत बयान कर रहा है। और इस से बड़ी फ़ज़ीलत और क्या होगी कि अल्लाह पाक उन से प्रसन्न है। इस हदीस की रोशनी में दीनी जल्सों और समारोहों में सामूहिक रुप से बैठ कर उलमा की तक़रीरों और उनके उपदेशों को सुनना भी शामिल है।

बाब {अल्लाह को याद करने की मज्लिसें आयोजित करना और उस से दुआ़यें करना और माफ़ी माँगना फ़ज़ीलत का काम है।}

1890:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक के कुछ फ़रिश्ते ऐसे भी हैं जो केवल चलते-फिरते रहते हैं, उन

के ज़िम्मा कोई काम नहीं होता है, वह अल्लाह को याद करने की मज्लिसों को तलाश करते हैं। फिर जब उन्हें अल्लाह को याद करने की कोई मज्लिस मिल जाती है तो वहाँ बैठ जाते हैं और एक-दूसरे को अपने परों से ढाँक लेते हैं, यहाँ तक कि उन से ज़मीन-आसमान की तमाम जगह भर जाती है। फिर जब इन की मज्लिस बर्ख़ास्त हो जाती है तो यह भी वहाँ से निकल कर आसमान पर चढ़ जाते हैं। वहाँ अल्लाह पाक उन से पूछता है (हालाँकि वह खुद ही जानता है) तुम कहाँ से आ रहे हो? वह कहते हैं कि मैं ज़मीन से तेरे बन्दों के पास से होकर आ रहा हूँ, वह बन्दे तेरी पाकी और बड़ाई बयान कर रहे हैं, लाइला-ह इल्लल्लाह पढ़ रहे हैं और तेरी तस्बीह बयान कर रहे हैं (यानी सुब्हानल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, लाइला-ह इल्लल्लाहु, अल्लाहु अक्बर पढ़ रहे हैं) और तुझ से कुछ सवाल कर रहे हैं। अल्लाह पाक पूछता है: वह मुझ से क्या माँग रहे हैं। वह उत्तर देते हैं: तुझ से जन्नत माँग रहे हैं। अल्लाह पूछता है: क्या उन्होंने मेरी जन्नत को देखा भी है? फ़रिश्ते कहते हैं: मेरे मौला! उन्होंने देखा तो नहीं है। अल्लाह फ़रमाता है' अगर वह इसे देख लेते तब उन का क्या हाल होता। फ़रिश्ते कहते हैं कि वह तेरी पनाह भी माँग रहे हैं। अल्लाह पूछता है: किस चीज़ से तेरी पनाह माँगते हैं? फ़रिश्ते बताते हैं: ऐ मेरे मौला! तेरी आग से। वह पूछता है: क्या उन्होंने मेरी आग को देखा है? फ़रिश्ते कहते हैं: नहीं। अल्लाह फ़रमाता है: अगर वह मेरी आग को देख लेते तो उन का क्या हाल होता। फिर फ़रिश्ते कहते हैं: ऐ मेरे मौला! वह तुम से तेरी कृपा भी माँग रहे हैं। इस पर अल्लाह फ़रमाता है: जाओ, मैं ने उन्हें बख़्श दिया, जो माँगते हैं उसे दे दिया, और जिस से पनाह माँगते हैं मैं ने उसे पनाह भी दे दी।

फिर फ़रिश्ते कहते हैं: उन में से एक पापी बन्दा भी था जो उधर से जा रहा था लेकिन उन की मज्लिस में बैठ गया था। अल्लाह फ़रमाता है: मैं ने उसे भी बख़्श दिया, वह ऐसे (नेक) लोग हैं जिन के साथ रहने वाला भी बदनसीब (अभागा) नहीं होता।

बाब {अल्लाह को याद करने वाले (ज़िक्र करने वाले) मर्दों और औरतों का बयान।}

1891:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का के किसी रास्ते पर जा रहे थे कि जमदान नामक एक पर्वत के पास से गुज़रे तो फ़रमायाः आगे चलो, यह जमदान है, मु-फ़र्रिद लोग आगे निकल गये। सहाबा ने पूछाः यह कौन लोग हैं ऐ अल्लाह के रसूल! आप ने फ़रमायाः जो मर्द और औ़रतें अल्लाह को बहुत याद करती हैं (उन्हें मु-फ़र्रिद कहते हैं)

बाब {लाइला-ह इल्लल्लाह (तहलील) की फ़ज़ीलत का बयान।}

1892:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस दुआ़ को बहुत अधिक पढ़ा करते थे:

लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू अ-अ़ज़्ज़ जुन्-दहू व-न-स-र
अ़ब्-दहू व-ग़-ल-बल् अह्ज़ा-ब वह्-दहू फ़ला शै-अ

बा–दहू

(अल्लाह पाक केअलावा और कोई सच्चा माबूद नहीं, वह अकेला है, उस ने अपने लश्कर को अिज़्ज़त दी, अपने बन्दे की सहायता की और अकेले ही काफ़िरों के लश्कर को पछाड़ दिया, अल्लाह के बाद और कोई चीज़ नहीं)

बाब {ऊँची आवाज़ के साथ अल्लाह को याद करने का बयान।}

1893:– अबू मूसा अश्–अ़री रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ एक सफ़र में थे कि इतने में लोग बुलन्द आवाज़ से तक्बीर पुकारने लगे। यह सुन कर आप ने फ़रमायाः ऐ लोगो! अपनी जानों पर नर्मी करो (आहिस्ता पुकारो) क्योंकि तुम किसी बहरे या ग़ाइब को नहीं पुकार रहे हो, तुम तो उस को पुकार रहे हो जो तुम से निकट से और धीमी आवाज़ को भी सुन लेता है और जो तुम्हारे साथ हैं। अबू मूसा रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं आप के पीछे था और "लाहौ–ल वला कुव्व–त इल्ला बिल्लाहि" पढ़ता जा रहा था कि आप ने फ़रमायाः ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन कैस! मैं तुम्हें जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना न बताऊँ? मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! हाँ ज़रुर बताइये। आप ने फ़रमायाः कहोः

लाइला–ह इल्लल्लाहु

बाब {शाम के समय पढ़ने की दुआ का बयान।}

1894:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब शाम हो जाती तो आप यह दुआ पढ़तेः

अम्सैना व–अम्–सल् मुल्कु लिल्लाहि, वल्हम्दु लिल्लाहि, लाइला–ह इल्लल्लाहु वह्–दहू ला शरी–क लहू+ अल्लाहुम्म इन्नी अस्–अलु–क मिन् ख़ैरि हाज़िहिल्लै–लति वख़ैरि मा फ़ीहा, व–अऊज़ुबि–क मिन् शर्रिहा व–शर्रि मा फ़ीहा+अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि–क मि–नल् कस्लि वल् ह–रमि वसूइल् कि–बरि वफ़ित्–नतिद्दुन्या व–अ़ज़ा–बल् क़ब्रि

हदीस के रावी हसन बिन उबैदुल्लाह ने बयान किया कि ज़ुबैद–इब्राहीम–अ़ब्दुर्रहमान बिन यज़ीद–अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद के वास्ते से दुआ में इतना और इज़ाफ़ा है

लाइला–ह इल्लल्लाहु वह्–दहू ला शरी–क लहू लहुल् मुल्कु व–लहुल् हम्दु वहु–व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+

एक दूसरी रिवायत में है कि जब सुब्ह होती तो आप यह दुआ पढ़तेः

अस्–बह्ना व–अस्–ब–हल् मुल्कु लिल्लाहि.....

(शुरु में यह दुआ और बाक़ी ऊपर की पूरी दुआ)

फ़ाइदाः– सुब्ह-शाम की दुआयें एक ही हैं। शुरु में "अस्-ब-ह्ना" (मैं ने सुब्ह की) और "अमसैना" (मैं ने शाम की) का शब्द बदल दीजिये। यानी सुब्ह को "अस्-बह्ना के साथ और शाम को "अम्सैना" के साथ पूरी दुआ पढ़ें।

बाब {नींद और बिस्तर पर लेटते समय यह दुआ पढ़ें।}

1895:– अ़ली बिन अबू तालिब रज़ि॰ से रिवायत है कि फ़ातिमा रज़ि॰ ने चक्की पीसने की तक्लीफ़ की शिकायत की। उस समय नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास कुछ बन्दी लाये गये थे। चुनान्चे वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास गयीं लेकिन आप से भेंट न हो सकी, तो आ़इशा रज़ि॰ से मिल कर अपनी पूरी बात बयानकी। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वापस आये तो आ़इशा ने फ़ातिमा के आने का हाल बयान किया। यह सुन कर आप फ़ातिमा के पास मिलने आये, उस समय हम लोग बिछौने पर लेट चुके थे। चुनान्चे (आप को देखकर) हम खड़े होने लगे लेकिन आप ने फ़रमायाः जहाँ हो वही रहो। फ़िर आप हम दोनों के बीच बैठ गये और फ़रमायाः क्या मैं एक ऐसी चीज़ न बताऊँ जो उस चीज़ से बेहतर है जो तुम ने माँगा है (वह यह है कि) जब तुम अपने बिस्तर पर लेटने चलो तो 34 मतर्बा "अल्लाहु अक्बर" 33 मतर्बा "सुब्हानल्लाह" और 33 मतर्बा "अल्हम्दु लिल्लाह" पढ़ लिया करो। इतना पढ़ लेना यह तुम्हारे लिये एक गुलाम से बेहतर है।

1896:– बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब तुम सोने की तय्यारी करो तो नमाज़ के लिये वज़ू करने की तरह वज़ू करो, फिर दाहिनी कर्वट पर लेट कर यह दुआ पढ़ोः

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-लम्तु वज्ही इलै-क व-फ़व्वज़्तु
अम्री इलै-क, व-अल्जातु ज़ह्री इलै-क रग़-ब-तन् व
रह्-ब-तन् इलै-क, ला मल्-ज-अ वला मन्-ज-अ
मिन्-क इल्ला इलै-क, आ-मन्तु बिकिताबि-कल्लज़ी
अन्-ज़ल्-त वबि-नबिय्यि-कल्लज़ी अर्-सल्-त

आख़िरी बात यही दुआ हो (इस के बाद कोई बात न करे) तो अगर उस रात को देहान्त कर जाये तो इस्लाम पर मरेगा। बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ ने बयान किया कि इस दुआ को याद करने के लिये मैं ने दोबारा पढ़ना शुरु किया तो "बि-नबिय्यि-क" की जगह "बि-रसूलि-क" पढ़ दिया तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "बि-नबिय्यि-क" ही पढ़ो।

फ़ाइदाः– मालूम हुआ कि जो शब्द आप ने बताया है उसे ही पढ़ना चाहिये। हालाँकि नबी और रसूल में कोई विशेष अन्तर नहीं है। यही कारण है कि आजकल भिन्न-भिन्न प्रकार के दरुद और मनघड़त दुआओं पर आधारित पुस्तकें बाज़ारों में मिल रही हैं, इन

सब का पढ़ना गुनाह है। इन पुस्तकों को ख़रीदने और उन्हें पढ़ने से बचना चाहिये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुआओं को इसीलिये हम हिन्दी लिपि में भी लिख दे रहे हैं ताकि आसानी से याद कर सकें। यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी आ चुकी है।

1897:— बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब (सोने के लिये) लेटते तो यह दुआ़ पढ़ते:

अल्लाहुम्म बिस्मि-क अह्या वबिस्मि-क अमूतु

(मेरे मौला! तेरे नाम से जीता और तेरे नाम से मरता हूँ)

और जब नींद से जागते तो यह दुआ पढ़ते:

अल्-हम्दु लिल्ला हिल्लज़ी अह्याना बा-द मा अमा-तना वइलैहिन्नुशूरु

(उस अल्लाह की कृपा है जिस ने मुझे मरने के बाद जीवित कर दिया, और उसी की तरफ़ (मरने के बाद) जी उठ कर जाना है)

1898:— अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने एक व्यक्ति को सोते समय यह दुआ़ पढ़ लेने को कहा:

अल्लाहुम्म ख़-लक़्-त नफ़्सी व-अन्-त त-वफ़्फ़ाहा ल-क ममातुहा व-मह्याहा इन् अह्यै-तहा फ़ह्-फ़ज़्हा वइन् अ-मत्तहा फ़ग़्फ़िर् लहा+अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-कल् आ़फ़ि-य-त

यह दुआ़ सुन कर उस ने मुझ से पूछा: क्या आप ने इसे (अपने पिता) उमर रज़ि॰ को बयान करते सुना है? मैं ने कहा: नहीं, जो उन से भी बेहतर थे उन की ज़बान से सुना है (यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से)

1899:— सुहैल से रिवायत है कि हम में से कोई सोना चाहता तो अबू सालेह कहते: दाहिनी कर्वट पर सोया करो और यह दुआ़ पढ़ कर सोया करो:

अल्लाहुम्म रब्बस्समावाति व-रब्बल् अर्ज़ि, व-रब्बल् अ़र्शिल् अ़ज़ीमि, रब्बना व-रब्ब कुल्लि शैइन्, फ़ालिक़िल् हब्बि वन्नवा, मुन्ज़ि-लत्तौराति वल् इन्जीलि वल् फ़ुर्क़ानि, अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि कुल्लि शैइन् अन्-त आख़िज़ुन् बिनासि-यतिही+अल्लाहुम्म अन्-तल् अव्वलु फ़लै-स क़ब्-ल-क शैउन व-अन्-तल् आख़िरु फ़लै-स बा-द-क शैउन्, व-अन्-तज़्ज़ाहिरु फ़लै-स फ़ौ-क़-क शैउन्, व-अन्-तल् बातिनु फ़लै-स दू-न-क शैउन्, इक़्ज़ि अन्नद्दै-न व-अग़्निना मि-नल् फ़क़्रि+

1900:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब तुम में से कोई (सोने के लिये) अपने बिस्तर पर जाये तो अपने तहबन्द के अन्दरुनी कनारा को पकड़ कर उस से अपने बिस्तर को झाड़ ले और "बिस्मिल्लाह" पढ़े, क्योंकि उसे नहीं मालूम कि इस के बाद उस के बिस्तर पर कौन सी चीज़ आ जाये। और जब लेटे तो दाहिनी कर्वट पर लेटे और यह दुआ़ पढ़ेः

> **सुब्हा-न-कल्लाहुम्म रब्बी बि-क व-ज़ातु जम्बी वबि-क अर्फ़उहू इन् अम्-सक्-त नफ़्सी फग़्फ़िर् लहा वइन् अर्-सल्-तहा फ़ह्-फ़ज़्हा बिमा तह्-फ़ज़ु बिही अ़िबा-द-कस्सालिही-न**
>
> (ऐ मेरे मौला! तू पाक है, तेरा नाम लेकर अपनी कर्वट को ज़मीन पर रख रहा हूँ और तेरे ही नाम से उठाऊँगा भी, अगर तू मेरी जान को (सोते में) रोक ले तो उसे माफ़ कर देना, और अगर जान को (बदन में) छोड़ दे तो उस की सुरक्षा फ़रमा, जिस प्रकार अपने नेक बन्दों की सुरक्षा करता है।)

1901:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने बिस्तर पर जाते तो फ़रमातेः

> **अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्-अ़-मना व-सक़ाना व-कफ़ाना वआवाना फ-कम् मिम्मन् ला काफ़ि-य लहू वला मूवि-य**

बाब {फ़ज्र की नमाज़ के बाद तस्बीह पढ़ने का बयान।}

1902:– नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी जुवैरिया रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़ज्र की नमाज़ के लिये सुब्ह को मेरे पास से उठ कर (मस्जिद में) चले गये तो मैं भी अपने नमाज़ पढ़ने की जगह पर चली गयी। जब आप चाश्त (सूरज चढ़े) के समय (मस्जिद में) वापस आये तो देखा कि मैं अपनी नमाज़ की जगह ही पर बैठी हुयी हूँ। आप ने फ़रमायाः मेरे जाने के बाद से तुम यहीं बैठी हुयी हो? जुवैरिया रज़ि॰ ने कहाः हाँ। आप ने फ़रमायाः तुम्हारे पास से जाने के बाद मैं ने चार ऐसे कलिमे पढ़े हैं कि अगर उन कलिमों को तुम्हारे अब तक बैठ कर पढ़े गये कलिमों के साथ तौला जाये, तो वह चार कलिमे भरी पड़ेंगे। वह कलिमे यह हैंः

> **सुब्हा-नल्लहि वबि-हम्दिही अ़-द-द ख़ल्क़िही वरिज़ा नफ़्सिही, सुब्हा-नल्लाहि ज़ि-न-त अ़र्शिही, सुब्हा-नल्लाहि मिदा-द कलिमातिही**

एक दूसरी रिवायत में दुआ़ के शब्द इस प्रकार हैः

> **सुब्हा-नल्लाहि अ़-द-द ख़ल्क़िही सुब्हा-नल्लाहि रिज़ा**

नफ़सिही, सुब्हा-नल्लाहि ज़ि-न-त अ़र्शिही, सुब्हा-नल्लाहि मिदा-द कलिमातिही

1903:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो व्यक्ति सुब्ह-शाम **"सुब्हा-नल्लाहि वबि-हम्दिही"** 100 मर्तबा पढ़ लिया करे तो क़ियामत के दिन इस दुआ़ से बढ़कर और कोई नेक अ़मल न लेकर आयेगा। हाँ, जो कोई दूसरा 100 ही मतर्बा या इस से अधिक बार पढ़ेगा (तो उस का अ़मल ज़्यादा होगा)

बाब {तस्बीह पढ़ने की फ़ज़ीलत का बयान।}

1904:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दो कलिमे ऐसे हैं जो ज़बान पर (पढ़ने में)तो बड़े हल्के हैं मगर (क़ियामत के दिन) तराज़ू में भारी होंगे। अल्लाह को यह दोनों कलिमे बहुत ही महबूब हैं:

सुब्हा-नल्लाहि वबि-हम्दिही सुब्हा-नल्लाहिल् अ़ज़ीमि

1905:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यह दुआ़यें पढ़ना उन तमाम चीज़ों से ज़्यादा पसन्द है जिन पर सूरज निकलता है (यानी पूरी कायनात से ज़्यादा पसन्द है) यह दुआ़ यह हैं

सुब्हा-नल्लाहि, वल्-हम्दु लिल्लाहि, वलाइला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्-बरु

बाब {तहलील, तहमीद और तक्बीर का बयान।}

1906:- मुस्अ़ब बिन सअ़द से रिवायत है कि मेरे पिता (स-अ़द) ने बयान किया कि एक दीहाती नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगाः मुझे कोई ऐसी दुआ़ बता दीजिये जिसे मैं पढ़ा करुँ। आप ने फ़रमायाः यह दुआ़ पढ़ा करोः

लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू लाशरी-क लहू अल्लाहु अक्बरु कबी-रन्, वल्-हम्दु लिल्लाहि कसी-रन्, सुब्हा-नल्लाहि रब्बिल् आ़-लमी-न्, लाहौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल् हकीमि

उस देहाती ने कहाः इन कलिमों में तो मेरे मालिक की तारीफ़ है, मेरे अपने लिये कुछ बताइये। आप ने फ़रमायाः यह दुआ़ पढ़ा करोः

अल्लहुम्मग़् फ़िर्ली वर्-हम्नी वह्दिनी वर्-ज़ुक़्नी

हदीस के रावी मूसा ने बयान किया कि दुआ़ में "आ़फ़िनी" का शब्द है या नहीं है, इस बारे में मुझे शुब्हा है।

1907:- अबू ज़र रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें वह कलाम न बताऊँ जो अल्लाह को सब से अधिक पसन्द है?

मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! जो कलाम अल्लाह पाक को अधिक पसन्द है उसे मुझे भी बताइये। आप ने फ़रमायाः अल्लाह पाक को यह कलाम सब से अधिक पसन्द है:

सुब्हा-नल्लाहि वबि-हम्दिही

1908:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो व्यक्ति दिन में 100 मर्तबा इन कलिमात को पढ़ लिया करे तो उसे दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलेगा, उस के लिये 100 नेकियाँ लिख दी जायेंगी और 100 बुराइयाँ मिटा दी जायेंगी, और सुब्ह से शाम तलक शैतान से सुरक्षित रहेगा। और क़ियामत के दिन कोई भी इस से बेहतर अमल न पेश कर सकेगा, मगर जो इसी को उस से अधिक पढ़े। दुआ यह है:

लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू लाशरी-क लहू लहुल्
मुल्कु व-लहुल् हम्दु वहु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर+

और जो व्यक्ति दिन में 100 मर्तबा **"सुब्हा-नल्लाहि वबि-हम्दिही"** पढ़ लिया करे उस के गुनाह अर्गचे समुद्र के झाग के बराबर हूँ लेकिन वह सब माफ़ कर दिये जायेंगे।

1909:- सअ़द बिन अबू वक़्क़ास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुये थे कि उसी दौरान आप ने फ़रमायाः क्या तुम में से कोई पूरे दिन में एक हज़ार नेकियाँ कर सकता है? हम ने कहाः एक हज़ार नेकियाँ कोई कैसे कर सकता है? आप ने फ़रमायाः (सुनो) जो कोई 100 मर्तबा **"सुब्हा-नल्लाहि"** पढ़ लिया करे तो उस के लिये 1000 नेकियाँ लिख दी जाती हैं और एक हज़ार गुनाह भी माफ़ कर दिये जाते हैं।

आज दिनांक 30 अप्रैल 2006, रविवार के दिन ऊँची मस्जिद अहले हदीस मोरी गेट में इस बाब की अहादीस का तर्जुमा संपन्न हुआ-ख़ालिद

किताबुत्त-अ़व्वुज़ि
(शैतान से पनाह माँगने की दुआ़यें)

बाब {बुराइयों से पनाह माँगने की दुआ।}

1910:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इन दुआ़ओं को पढ़ा करते थे

> **अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् फ़ित् ऩतिन्नारि व-अ़ज़ाबिन्नारि वफ़ित्-नतिल् क़ब्रि व-अ़ज़ाबिल् क़ब्रि वमिन् शर्रि फ़ित्-नतिल् ग़िना, वमिन् शर्रि फ़ित्-नतिल फ़क़्रि, व-अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि फ़ित्-नतिल मसीहिद्दज्जलि, अल्लाहुम्मग़सिल् ख़ताया-य कमा नक़्कै-तस्सौ-बल् अब्-य-ज़ मि-नद्द-नसि, वबाअ़िद बैनी व-बै-न ख़ताया-य कमा बा-अ़त्त बै-नल् मश्रिक़ि वल् मग़रिबि, अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् कस्लि वल्-ह-रमि वल् मासिमि वल्-मग़-रमि**
>
> (ऐ अल्लाह! मैं जहन्नम के फ़ितना से.........)

1911:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे:

> **अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् अ़ज्ज़ि वल्-कस्लि वल् जुब्नि वल् ह-रमि वल् बुख़्लि व-अऊज़ुबि-क मिन् अ़ज़ाबिल् क़ब्रि वमिन् फ़ित्-नतिल् महया वल्-ममाति**
>
> (ऐ मेरे मौला! मैं सुस्ती से, काहिली से, नामर्दी से, बुढ़ापे से तेरी पनाह माँगता हूँ। और कंजूसी से, क़ब्र के दन्ड से और ज़िन्दगी और मौत के फ़ितने से तेरी पनाह माँगता हूँ)

1912:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बुरी क़ज़ा (मौत) से, बदबख़्ती से, दुश्मनों से, लानत-मलामत से, सख़्त मुसीबत में गिरफ़तार होने से अल्लाह की पनाह माँगा करते थे। हदीस के रावी अबू सुफ़यान ने कहा कि मुझे

शुब्हा है कि इन चारों जुम्लों में किसी एक का मैं ने इज़ाफ़ा कर दिया है (वह जुम्ला कौन है? मुझे नहीं मालूम)

बाब {नेमत के ख़त्म होने से अल्लाह की पनाह माँगने का बयान।}

1913:– अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुआ़ यह थी:

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् ज़वालि ने-मति-क व-त-हव्वुलि आ़फ़ि-यति-क वफ़ुजा-अति निक़्-मति-क व-जमिअ़ि स-ख़ति-क

(ऐ मेरे मौला! मैं तेरी दी हुयी नेमत के ख़त्म होने से, तेरे अचानक अ़ज़ाब से और तेरे हर प्रकार के ग़ज़ब से तेरी पनाह माँगता हूँ)

बाब {छींकने वाला जब "अल्हम्दु लिल्लाहि" कहे उस का जवाब देना चाहिये।}

1914:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने दो आदमियों ने छींका, तो आप ने उन में से एक को जवाब दिया और दूसरे को नहीं दिया। जिस को आप ने जवाब नहीं दिया वह बोला: फ़लाँ ने छींका तो आप ने जवाब दिया और मैं ने छींका तो आप ने कोई उत्तर नहीं दिया? आप ने फ़रमाया: उस ने छींकने के बाद "अल्हम्दु लिल्लाह" कहा और तू ने नहीं कहा था (इसलिये तुम्हें जवाब नहीं दिया)

1915:– अयास बिन सलमा से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मेरे पिता (सलमा बिन अक्वा) ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना: आप के पास एक आदमी ने छींका तो आप ने फ़रमाया: "यर्-हमु-कल्लाहु" फिर जब दोबारा छींका तो आप ने फ़रमाया: इसे सर्दी हो गयी है (इसलिये इस की छींक पर कौन कितनी बार जवाब देगा)

❀ ❀ ❀

किताबुत्तौ-बति वकुबूलिहा
(तौबा और उस के कुबूल होने का बयान)

बाब {अल्लाह से तौबा करने का हुक्म।}

1916:- अबू बुर्दा रज़ि॰ से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के एक सहाबी अग़र से सुना वह बयान करते थे कि उमर रज़ि॰ के पुत्र अ़ब्दुल्लाह ने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ लोगों! अल्लाह से तौबा करो, मैं दिन में 100 बार तौबा करता हूँ।

बाब {तौबा के लिये शौक़ दिलाने का बयान।}

1917:- हारिस बिन सुवैद ने बयान किया कि जिन दिनों अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ बीमार चल रहे थे, मैं उन की ख़ैरियत मालूम करने के लिये गया तो उन्होंने मुझ से दो हदीसें बयान कीं। एक अपनी तरफ़ से और एक नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हवाले से। उन्होंने बयान किया मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि बन्दा जब अल्लाह से तौबा करता है तो वह उस व्यक्ति से भी अधिक प्रसन्न होता है जो व्यक्ति किसी चटियल मैदान में खाना-पानी लदे अपने ऊँट के साथ सो जाये, लेकिन जब उस की आँख खुले तो उसे न पाये, फिर उसे तलाश करने के लिये निकल पड़े, लेकिन जब प्यासा हो जाये तो वह सोचने लगे कि अपने स्थान पर लौट जाऊँ, फिर अपना सर अपने बाज़ू पर रख कर मरने के लिये सो जाये, लेकिन जब आँख खुले तो खाना-पानी से लदे ऊँट को अपने पास पाए। तो अल्लाह पाक बन्दे की तौबा से उस बन्दे से भी अधिक प्रसन्न होता है जो बन्दा खाना-पानी के साथ अपने ऊँट को पाने पर प्रसन्न होता है।

बाब {सच्चे दिल से तौबा करने का बयान।}

1918:- इब्ने शिहाब ज़हरी रह॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तबूक की जन्ग लड़ी। इस से आप का उद्देश्य रुम और अ़रब में रहने वाले ईसाइयों पर अपना रोब जमाना और धमकाना था।

इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझ से अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया और उन्होंने ने अपने पिता अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब से सुना जो कअ़ब रज़ि॰ को नाबीना होने के नाते सहारा देकर

चलाया-फिराया करते थे। अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब ने बयान किया कि मेरे पिता जी कअ़ब बिन मालिक तबूक की लड़ाई में पीछ रह जाने की अपनी दास्तान सुनाया करते थे। उन्होंने कहा कि तबूक की जन्ग को छोड़ कर मैं कभी किसी जिहाद में पीछे नहीं रहा। हाँ, बद्र की लड़ाई में भी पीछे रह गया था, लेकिन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बद्र में पीछे रह जाने वालों पर नाराज़ नहीं हुये थे। और फिर यह कि बद्र में तो आप केवल कुरैश के तिजारती क़ाफ़िला को पकड़ने के लिये निकले थे, लेकिन अल्लाह पाक ने (अचानक) बिना तै शुदा प्रोग्राम के ही लड़ा दिया। मैं आप के साथ अ़क़बा की घाटी वाली रात में भी था। हालाँकि बद्र की जन्ग लोगों में उस घाटी वाली रात से अधिक प्रसिद्ध है, लेकिन मुझे पसन्द नहीं कि उस रात में न शरीक होकर बद्र की जन्ग में शरीक होता (यानी इन के निकट घाटी की रात की शिकत, बद्र की जन्ग में शिर्कत से अधिक अहम थी)

तबूक से पीछे रह जलाने का मेरा मामला यह है कि जब यह जन्ग हुयी उस समय (अल्लाह के फ़ज़्ल से) मैं सबसे अधिक ताक़त वाला और धन-माल वाला भी था। और अल्लाह की क़सम, इस से पहले मेरे पास दो ऊँटनियाँ कभी नहीं थीं, लेकिन इस जन्ग के समय (अल्लह के फ़ज़्ल से) मेरे पास दो-दो ऊँटनियाँ थीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह जन्ग सख़्त गर्मी में लड़ी। इस में लंबा सफ़र था, वीरान क्षेत्र था और दुश्मन की संख्या बहुत अधिक थी, इसलिये आप ने मुसलमानों से स्पष्ट रुप से बता दिया (कि तबूक की जन्ग में चलना है) ताकि वह भी अपनी ओर से जम कर तय्यारी कर लें। इसी नाते आप ने लड़ाई का स्थान भी बता दिया (जबकि आप आ़म तौर पर नहीं बताते थे) उस समय आप के साथ मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या थी, लेकिन कोई हाज़िरी रजिस्टर न था जिस में उन सब का नाम दर्ज हो। कअ़ब रज़ि॰ ने बयान किया कि उस समय ऐसे बहुत कम लोग थे जो जिहाद से भागना चाहते थे और जानते थे कि उन के ग़ाइब रहने का राज़ भी पोशीदा रहेगा जब तक वह्यि न नाज़िल हो। यह लड़ाई भी आप ने ऐसे समय लड़ी जब खजूर के फल पक कर बिल्कुल तय्यार थे और पेड़ सायादार हो गये थे, मुझे यह चीज़ें बहुत अधिक पसन्द भी थीं।

बहरहाल नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जन्ग की तय्यारी शुरु कर दी और सहाबा भी आप के साथ तय्यारी में जुट गये। मैं सुब्ह को इस इरादे से निकलता कि मुसलमानों के साथ तय्यारी करुँगा, लेकिन हर रोज़ निकलता और शाम को घर वापस लौट आता और कोई फ़ैसला नहीं कर पाता, और दिल में यही ख़याल गुज़रता कि (जल्दी क्या है) जब चाहूँगा साथ चला जाऊँगा (मेरे पास तो सामान मौजूद ही है) मैं रोज़ यही करता रहा और उधर मुसलमान अपनी तय्यारियों में जुटे रहे।

फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सुब्ह के समय जिहाद के लिये रवाना हुये और सहाबा भी आप के साथ रवाना हुये। मैं भी सुब्ह को निकला तो शाम को घर लौट आया और कोई फ़ैसला न कर सका। मैं इसी तरद्दुद और आगे-पीछे में रह गया,

उधर सहाबा ने जल्दी-जल्दी तैयारी कर के आगे निकल गये। उस समय मैं ने सोचा कि लाओ में निकल पड़ूँ और उन लोगों का जा कर साथ ले लूँ। ऐ काश मैं ऐसा ही करता, लेकिन ऐसा मेरे भाग्य में न था। इधर आप के चले जाने के बाद जब मैं मदीना शहर में निकलता तो देख कर बड़ी तक्लीफ़ होती, क्योंकि मुझे वही व्यक्ति नज़र आता जो मुनाफ़िक़ होता, या कोई मजबूरी होती, या बीमार और कमज़ोर होता। उधर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी सफ़र के दौरान मुझे याद नहीं किया और तबूक भी पहुँच गये।

तबूक पहुँच कर आप लोगों के दर्मियान बैठे हुये थे कि इसी बीच आप ने पूछा लियाः कअ़ब बिन मालिक कहाँ हैं? क़बीला बनी सलमा क एक व्यक्ति ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! उस को उस के धन-दौलत और मौज-मस्ती ने जिहाद में शरीक होने से रोक दिया। यह सुन कर मआज़ बिन जबल रज़ि॰ ने कहाः तुम ने उन के बारे में बुरी बात कह दी है, अल्लाह की क़सम! ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! हम तो उन्हें नेक जानते हैं। आप यह बातें सुन कर ख़ामोश रहे (और कोई जवाब न दिया)

इसी दर्मियान आप ने देखा कि एक व्यक्ति सफ़ेद कपड़े पहने हुये रेत उड़ाता हुआ आ रहा है। आप ने फ़रमायाः वह अबू ख़ैसमा आ रहा है, चुनान्चे वह अबू ख़ैसमा ही ठहरे। अबू ख़ैसमा वह व्यक्ति थे जिन्होंने (जन्ग में मदद के तौर पर) एक किलो खजूर सदक़ा किया था, इस पर मुनाफ़िक़ों ने उन का मज़ाक़ भी उड़ाया था।

कअ़ब बिन मालिक ने बयान किया कि जब मुझे सूचना मिली कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वापस मदीना के लिये लौट रहे हैं तो मेरी तक्लीफ़ बढ़ गयी। अब मैं ने झूठी बातें सोचनी शुरु कर दीं कि कोई ऐसी-वैसी बात कह दूँ जिस से आप का गुस्सा ठन्डा पड़ जायेगा। बहरहाल इस मामले में मैं ने एक बुद्धिमान व्यक्ति से और अपने घर वालों से राय-मश्वरा लिया। जब लोगों ने बताया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम निकट आ पहुँचे हैं तो उस समय मैं अपनी झूठी पकाई हुयी खिचड़ी को भूल गया और यह सोच लिया कि झूठ बोल कर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से नहीं बचा जा सकता, इसलिये मैं ने बिल्कुल सच-सच बताने का मन बना लिया।

इधर सुब्ह को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वापस लौट कर मदीना पहुँच गये। आप जब सफ़र से वापस आते तो पहले मस्जिद में दाख़िल होकर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ते, फिर लोगों से बैठ कर मुलाकातें फ़रमाते। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हो गये तो जो लोग जिहाद से पीछे रह गये थे उन्होंने पहुँच कर अपनी मजबूरी बयान करनी और क़समें खानी शुरु कर दीं। इस प्रकार के लोगों की संख्या 80 से कुछ ऊपर थी। आप ने भी उन की बातों को मान लिया, उन से बैअ़त की और उन के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ भी की और उन की निय्यतों को अल्लाह के हवाले कर दिया। फिर मैं हाज़िर हुआ और सलाम किया तो आप मुझे देख कर मुस्कराने लगे, लेकिन आप का मुस्कुराना गुस्से की हालत में मुस्कुराने की तरह था। आप ने फ़रमायाः इधर आओ। चुनान्चे मैं जा कर

आप के सामने बैठ गया। आप ने पूछाः तुम क्यों पीछे रह गये? तुम ने सवारी भी ख़रीद ली थी। मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! अगर मैं इस समय आप के अ़लावा किसी और के सामने बैठा होता तो सोच भी सकता था कि कोई बहाना बना कर उस के गुस्सा से बच जाऊँगा और अल्लाह पाक ने मुझे बोलने की क्षमता भी दी है। लेकिन अल्लाह की क़सम! मैं जानता हूँ कि अगर मैं झूठ बात कह दूँ तो आप ख़ुश हो जायेंगे, लेकिन अल्लाह पाक आप को मेरे ऊपर नाराज़ कर देगा (वह्यि द्वारा बता देगा) और अगर मैं सच-सच कह दूगाँ तो बेशक आप नाराज़ हो जोयंगे, लेकिन मुझे उम्मीद है कि अल्लाह पाक इस सच का अन्त अच्छा करेगा। अल्लाह की क़सम! मेरे लिये कोई मजबूरी न थी। अल्लाह की क़सम! मैं कभी इतना ताक़तवर और मालदार न था जितना उस समय था जब आप से पीछे रह गया। यह सुन कर आप ने फ़रमायाः तुम ने सच कहा। फिर फ़रमायाः जाओ और अल्लाह के फ़ैसले का इन्तिज़ार करो। चुनान्चे मैं खड़ा हो गया।

इधर क़बीला बनी सलमा के कुछ लोग मेरे पीछे दौड़े हुये आये और कहने लगेः अल्लाह की क़सम! हमें नहीं मालूम कि इस से पूर्व भी तुम ने कोई गुनाह किया है, तो आख़िर तुम क्यों डर गये और आप के सामने कोई मजबूरी क्यों न बयान कर दी, जिस प्रकार और दूसरे पीछे रह जाने वालों ने बयान कर दी, और (इस झूठ बोलने पर) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इस्तिग़फ़ार तुम्हारे लिये काफ़ी होता। अल्लाह की क़सम! वह लोग मुझे इतनी लानत-मलामत करने लगे कि मैं ने सोचा कि वापस जा कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने झूठ बोल दूँ (और कोई मजबूरी बयान कर दूँ) फिर मैं ने उन लोगों से पूछाः जो हाल मेरा हुआ है, क्या किसी और का भी हुआ है? उन्होंने कहाः हाँ, दो और व्यक्ति हैं। उन्होंने भी वही कुछ कहा जो तुम ने कहा था, अल्लाह आप ने उन से भी वही फ़रमाया जो तुम से फ़रमाया है। मैं ने पूछाः वह दोनों कौन-कौन हैं? कहा कि (1) मुरारा बिन रबीअ़ और (2) हलाल बिन उमय्या। उन लोगों ने ऐसे दो व्यक्तियों के नाम गिनाए जो नेक लोग थे और बद्र की जन्ग में भी शामिल हुये थे। जब लोगों ने उन दो का नाम गिनाया तो मैं चला गया।

इधर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हम तीनों पीछे रह जाने वालों से बात-चीत करने से मना कर दिया तो उन लोगों ने भी हम से प्रहेज़ शुरु कर दिया और हमारे साथ उन का सुलूक और बर्ताव बदल गया, यहाँ तक कि हमारी ज़मीन ही बदल गयी और वह ज़मीन नहीं रही जिस को मैं पहचानता था। चुनान्चे पचास रात तक हमारा यही हाल रहा (कि किसी ने बात तक न की) मेरे दोनों साथी तो इतने परेशान होगये कि रो-धो कर अपने घरों में बैठ गये। लेकिन मैं उन से जवान और ताक़तवर था, चुनान्चे जा कर मस्जिद में नमाज़ पढ़ता और बाज़ारों में भी चलता-फिरता रहता, लेकिन कोई मुझ से बात न करता था। मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास भी जाता और सलाम करता, उस समय आप नमाज़ के बाद अपनी जगह पर बैठे हुये होते, तो मैं यह देखता कि आप ने सलाम के जवाब में अपने होंटों को हिलाया या नहीं। जब आप के

पास नमाज़ पढ़ता तो कंखियों से आप को देखता रहता। चुनान्चे जब मैं नमाज़ में होता तो उस समय आप मुझे देखते, और जब मैं आप को देखने लगता तो आप अपना मुँह फेर लेते।

इस प्रकार जब मुसलमानों की बन्दिश (बाइकाट) लंबी हो गयी तो एक दिन जा कर अबू क़तादा के बाग़ की दीवार पर चढ़ गया। अबू क़तादा मेरे चचा जाये भाई थे, मैं सब से अधिक उन से मुहब्बत करता था। जब उन को सलाम किया तो अल्लाह की क़सम! उन्होंने जवाब तक न दिया। मैं ने उन से कहा: ऐ अबू क़तादा! मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ, क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि मैं भी अल्लाह और उस के रसूल से मुहब्बत करता हूँ? लेकिन उन्होंने कोई उत्तर न दिया। फिर दोबारा क़सम दिला कर पूछा, फिर भी उत्तर न दिया, तो तीसरी मर्तबा उन्हें क़सम दिला कर कहा तो उन्होंने केवल इतना कहा: अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं (इस जुम्ले में भी कअ़ब को मुख़ातब नहीं किया) यह हालत देख कर मेरी आँखों से आँसू जारी हो गये और पीठ फेर कर वापस हुआ फिर दीवार पर चढ़ गया।

इसी दर्मियान कि मैं मदीना के किसी बाज़ार में जा रहा था कि शाम के किसानों में से एक किसान जो मदीना में अनाज बेचने के लिये आया हुआ था, कहने लगा: मुझे कोई कअ़ब बिन मालिक का घर बतला दे। इस पर लोगों ने मेरी तरफ़ इशारा कर दिया। उस ने आ कर ग़स्सान के बादशाह का एक पत्र मुझे दिया। चूँकि मैं मुन्शी था (पढ़ना जानता था) उस को पढ़ा तो उस में यह लिखा था:

> "अम्माबाद! कअ़ब को मालूम हो कि हमें सूचना मिली है कि तुम्हारे मालिक मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) तुम से नाराज़ चल रहे हैं। अल्लाह ने तुम्हें कोई ज़लील नहीं पैदा किया है कि तुम्हारा हक़ बर्बाद किया जाये। तुम अगर मेरे पास आ जाओ तो हम तुम्हारे साथ बेहतर से बेहतर सुलूक करेंगे।"

जब मैं पत्र को पढ़ चुका तो कहा कि यह एक और परीक्षा की घड़ी आ गयी (यक न शुद दो शुद) फिर उस को तन्नूर (चूल्हें) में झोंक दिया। जब पचास में से 40 दिन बीत गये और कोई वह्यि भी (हमारे बारे में) नाज़िल न हुयी कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का संदेश लाने वाला मेरे पास आया और कहने लगा: नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी पत्नी से अलग रहने का निर्देश दिया है। मैं ने पूछा: क्या उसे तलाक़ दे दूँ या क्या करुँ? उस ने कहा: तलाक़ देने की आवश्यक्ता नहीं, उस से अलग रहो और संभोग न करो। मेरे दोनों साथियों को भी यही संदेश मिला। मैं ने अपनी पत्नी से कहा कि तुम अपने रिश्तेदारों में से किसी के घर चली जाओ और वहीं उस समय तक रहो जब तक अल्लाह पाक कोई फ़ैसला न सुना दे। उधर हलाल बिन उमय्या की पत्नी ने जब सुना तो उन्होंने अल्लाह के रसूल के पास जा कर कहा:

ऐ अल्लाह के रसूल! हलाल बूढ़े आदमी हैं और उन के पास कोई नौकर-चाकर भी नहीं है तो अगर मैं उन की सेवा करूँ तो क्या आप पसन्द नहीं करेंगे? आप ने फ़रमायाः इस में कोई हरज नहीं है, केवल संभोग न करे। उन्होंने कहा कि वह संभोग के बारे में सोच भी नहीं सकते हैं (क्योंकि काफ़ी बढ़े हो गये हैं) ऐ अल्लाह के रसूल! वह उसी दिन से अब तक रो रहे हैं। कअ़ब बिन मालिक ने कहा कि मेरे घर वालों ने भी मुझ से कहा कि तुम भी जा कर अपनी पत्नी के पास रहने की अनुमति ले लो, क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हलाल बिन उमय्या की पत्नी को उन की सेवा करने की अनुमति दी है। मैं ने कहाः इस काम के लिये मैं हर्गिज़ आप के पास नहीं जाऊँगा, क्योंकि मैं जवान हूँ। चुनान्चे दस रातें इसी हाल में (बिना पत्नी के) काट दीं, इस प्रकार जब से आप ने लोगों को बात करने से मना कर दिया था अब तक पचास रातें पूरी हो गयीं।

पचासवीं रात की सुब्ह मैं ने घर की छत पर नमाज़ पढ़ी और जिस प्रकार अल्लाह ने (कुरआन में) हमारा बयान किया है कि ज़मीन कुशादा होने के बावजूद हम लोगों पर तन्ग हो गयी थीं, कि इतने में किसी पुकारने वाले की आवाज़ सुनी। वह सला नामक पहाड़ी पर चढ़ कर पुकार रहा थाः ऐ कअ़ब बिन मालिक! खुश हो जाओ! यह सुनते ही मैं सज्दे में गिर पड़ा और अब जाना कि खुशी किस को कहते हैं। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़ज्र की नमाज़ के बाद लोगों को बतलाया कि अल्लाह ने उन को माफ़ कर दिया। यह सुन कर सब लोग खुशखबरी देने के लिये दौड़ पड़े। कुछ लोग मेरे उन दो साथियों के पास दौड़े और एक व्यक्ति मेरे पास घोड़ा दौड़ाता हुआ आया। उधर क़बीला अस्लम के एक व्यक्ति ने पहाड़ी पर चढ़ कर आवाज़ लगायी, चुनान्चे उस की आवाज़ घुड़सवार के आने से पहले ही मुझ तक पहुँच गयी। चुनान्चे जब वह मेरे पास आया तो मारे खुशी के मैंने अपने दोनो कपड़ों को उतार कर उसे पहना दिया अल्लाह की क़सम! उस समय मेरे पास केवल वही दो कपड़े ही थे। चुनान्चे मैं ने दो कपड़े दूसरे से उधार लेकर पहना और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मुलाक़ात के लिये चल पड़ा। लोग रास्ते में गरोह-गरोह की शक्ल में मिलते जाते और माफ़ी पर मुझे शुभकामनाएँ देते जाते और कहतेः अल्लाह ने माफ़ कर दिया, तुम्हें मुबारक हो।

जब मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास पहुँचा उस समय आप मस्जिद में बैठे हुये थे और आप के पास सहाबा भी बैठे हुये थे। तल्हा बिन उबैदुल्लाह ने मुझे देख लिया तो वह दोड़ते हुये मेरे पास आये, मुसाफ़ा किया और मुबारक बाद दी। अल्लाह की क़सम! तल्हा के अ़लावा मुहाजिरों में से और कोई नहीं खड़ा हुआ, चुनान्चे कअ़ब उन के एहसान को कभी नहीं भूले। कअ़ब बिन मालिक ने बयान किया कि जब मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सुलाम किया उस समय आप

का चेहरा मारे खुशी के चमक रहा था। आप ने फ़रमायाः खुश हो जाओ, तुम्हारी माँ ने जिस दिन जना है, उस दिन से आज का दिन तुम्हारे लिये सब से बेहतर दिन है। मैं ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! यह खुशख़बरी आप की तरफ़ से है, या अल्लाह पाक की तरफ़ से? आप ने फ़रमायाः अल्लाह पाक की तरफ़ से है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब खुश होते तो आप का चेहरा चाँद के टुक्ड़े की तरह चमकने लगता था, चुनान्चे हम लोग उस खुशी को पहचान लेते थे। जब मैं आप के पास बैठा तो आप से अनुरोध कियाः ऐ अल्लाह के रसूल! मैं माफ़ी की खुशी में अपना तमाम माल अल्लाह और उस के रसूल के लिये सदक़ा कर दूँ? आप ने फ़रमायाः नहीं, थोड़ा–बहुत रोक लो। मैं ने कहाः ठीक है, अपना ख़ैबर का हिस्सा बचा लेता हूँ। मैं ने आप सेकहाः आख़िरकार मेरी सच्चाई ने मुझे बचा लिया, इसलिये मेरी तौबा में यह भी शामिल है कि जब तलक जीवित रहूँगा सच बोलूँगा।

कअ़ब बिन मालिक रज़ि॰ ने कहाः अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जानता कि अल्लाह पाक ने सच बोलने पर किसी मुसलमान पर इतना बड़ा एहसान किया हो (जितना उस ने मुझ पर किया है) अल्लाह की क़सम! जब से मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से वादा किया था, उस समय से आज तक मैं ने जानबूझ कर कभी झूठ नहीं बोला, और उम्मीद है कि पूरी ज़िन्दगी भी अल्लाह पाक मुझे झूठ से बचाये रहेगा। कअ़ब बिन मालिक रज़ि॰ ने कहाः कि अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी पर यह आयत (हमारे ही बारे में) नाज़िल फ़रमायी थी "अल्लाह ने नबी, मुहाजिरों और अन्सार की तौबा कुबूल की.....(सूरः तौबा–117, 118, 119) अल्लाह की क़सम! अल्लाह की तरफ़ से इस्लाम के लिये हिदायत के बाद, मेरी नज़र में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने इस सच बोलने से बढ़ कर अल्लाह का मुझ पर और कोई एहसान नहीं हुआ कि मैं नेझूठ नहीं बोला और इस तरह मुझे हलाक नहीं किया, जैसा कि झूठ बोलने वाले हलाक हो गये थे। वह्यि आने के ज़माना में झूठ बोलने वालों पर अल्लाह पाक ने इतनी सख़्त धमकी दी है, जितनी सख़्त किसी दूसरे के लिये नहीं दी है। चुनान्चे फ़रमायाः " जब तक जन्ग से लौट कर आओगे तो तुम्हारे सामने यह लोग आ–आ कर झूठी क़समें खायें गे. ...(सूरः तौबा–95, 96)

कअ़ब रज़ि॰ ने बयान किया कि हम तीन उन लोगों से अलग रहे जिन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने क़समें खाई थीं, और आप ने उन की बात मान कर उन से बैअ़त ले ली थी और उन के लिये माफ़ी की दुआ़ भी फ़रमायी थी। रहा हमारा मामला तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसे अल्लाह पर छोड़ दिया था और अल्लाह पाक ने स्वँय उस का फ़ैसला फ़रमाया था। चुनान्चे अल्लाह पाक ने फ़रमायाः "अल्लाह ने उन तीनों की तौबा कुबूल कर ली जो जन्ग से पीछे रह गये थे और जिन पर ज़मीन तन्ग हो गयी थी.....(सूरः तौबा–118) इस आयत में "खुल्लिफ़ू" से

यह मुराद नहीं कि हम जिहाद से पीछे रह गये, बल्कि यह मुराद है कि हमारा मुक़दमा पीछे हो गया और आप ने उसे मुल्तवी कर दिया। यह हर्गिज़ मुराद नहीं कि हम लोग जिहाद से पीछे रह गये, बल्कि यह मतलब है कि उन लोगों के पीछे रहे जिन्होंने क़समें खा कर अपनी मजबूरी बयान की और आप ने उन की मजबूरी क़ुबूल फ़रमा ली। (देखें बुख़ारी-2757, 4418-क़अब बिन मालिक)

बाब {जिस ने 1000 लोगों की हत्या की थी उस की तौबा क़ुबूल होने का बयान।}

1919:- अबू सअ़ीद ख़ुदरी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम से पहले एक व्यक्ति ने 99 हत्तियायें की थीं। उस ने पूछा कि इस ज़मीन पर सब से अधिक ज्ञानी कौन है? लोगों ने एक पादरी का नाम बताया तो वह उस के पास गया और पूछाः मैं ने 99 खून किये हैं, तो क्या मेरी तौबा क़ुबूल हो जायेगी या नहीं? पादरी ने उत्तर कदयाः तुमहारी तौबा क़ुबूल नहीं होगी। यह सुन कर उस ने पादरी की हत्या कर दी, इस प्रकार 100 हत्याओं की संचरी मुकम्मल कर डाली। फिर उस ने पूछाः इस ज़मीन पर सब से बड़ा ज्ञानी कौन है? लोगों ने एक ज्ञानी को बताया तो वह उस के पास गया और कहा कि मैं ने 100 हत्यायें की हैं, तो क्या मेरी तौबा क़ुबूल हो सकती है? उस ने कहाः हाँ, हो सकती है, तुम्हारी तौबा क़ुबूल होने में कोई चीज़ रुकावट नहीं है। ऐसा है, कि फ़लाँ मुल्क में कुछ लोग बैठ कर अल्लाह की इबादत करते हैं तुम भी वहीं जाकर अल्लाह की इबादत करो (और तौबा करो) अपने मुल्क में लौट कर मत जाओ, वह बहुत बुरा मुल्क है।

यह सुन कर वह हत्यारा उस मुल्क के लिये रवाना हुआ। जब आधा रास्ता तै कर लिया इसी दर्मियान उस की मृत्यु हो गयी। इधर उस के शव को लेकर अ़ज़ाब और रहमत के फ़रिश्तों में बहस हो गयी। रहमत के फ़रिश्तों का तर्क था कि यह बन्दा तौबा कर के आ रहा था। उधर अ़ज़ाब के फ़रिश्तों का यह तर्क था कि इस ने कोई नेकी ही नहीं की है (इसलिये यह जहन्नमी है) इसी बीच एक फ़रिश्ता आदमी की शक्ल में सामने आ गया तो उन्होंने उसे अपना जज बना लिया। उस ने कहा कि दोनों मुल्कों के दर्मियान की दूरी नाप लो। जिस मुल्क की दूरी निकट हो इस को उसी स्थान का मान लो। जब दूरी नापी गयी तो उस का शव उस मुल्क के निकट था जहाँ जाने का उस ने इरादा किया था। इस प्रकार रहमत के फ़रिश्तों ने उस को ले लिया।

हदीस के रावी इमाम क़तादा ने बयान किया कि मुझ से हसन रावी ने कहाः लोग बयान करते थे कि जब वह मरने लगा तो अपने सीना के बल आगे बढ़ने की कोशिश की (ताकि उस मुल्क से कुछ और क़रीब हो जाये)

फ़ाइदाः- इस हदीस से कई बातें मालूम हुयीं (1) तौबा क़ुबूल होने के लिये सच्ची तैबा करना शर्त है। सच्ची तौबा का यह अर्थ है कि वादा करे कि आइन्दा फिर वही ग़लत काम नहीं करेगा। (2) अपनी उस बुराई पर उसे शर्मिन्दगी हो। (3) अल्लाह पाक

से तौबा कुबूल होने की आशा रखे।

बाब {जिस ने पश्चिम की ओर से सूरज निकलने से पहले तौबा कर ली उस की तौबा अल्लाह पाक कुबूल फ़रमायेगा।}

1920:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस ने सूरज के पश्चिम की ओर से निकलने से पहले तौबा कर ली, अल्लाह पाक उस की तौबा को कुबूल कर लेगा।

फ़ाइदा:– क़ियामत के दिन सूरज पश्चिम से निकलेगा। इसी प्रकार मौत का फ़रिश्ता देख लेने के बाद भी तौबा नहीं कुबूल होगी।

बाब {दिन–रात बुराइयाँ करने वाले की तौबा का बयान।}

1921:– अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः रात में अल्लाह पाक अपना हाथ फैलाता है ताकि दिन का गुनहगार बन्दा तौबा कर ले। इसी प्रकार दिन को भी अपना हाथ फैलाता है, ताकि रात का पापी बन्दा तौबा कर ले। अल्लाह पाक का यह सिलसिला सूरज के पश्चिम की ओर से निकलने तक जारी रहेगा।

बाब {गुनाहों के माफ़ करने का बयान।}

1922:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उस ज़ात की क़सम, जिस के हाथ में मेरी जान है। अगर तुम लोग गुनाह न करो तो अल्लाह पाक तुम्हें हलाक कर के ऐसी क़ौम पैदा करेगा जो गुनाह भी करेगी और अल्लाह पाक से माफ़ी भी माँगेगी, और अल्लाह उसे माफ़ भी करेगा।

फ़ाइदा:– इस हदीस का यह मतलब हर्गिज़ नहीं कि अब दिन–रात चोरी–डकैती, लूट–मार और ज़िनाकारी–बदकारी में लग जाओ। और यह सब करते रहो और माफ़ी भी माँगते रहो।

बाब {अल्लाह की रहमत बहुत कुशादा है और उस की रहमत, उस के गुस्से पर ग़ालिब है।}

1923:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक जब तमाम मख़्लूक़ को पैदा कर चुका तो अपनी किताब में यह लिख कर उसे अपने पास रख लिया "मेरी रहमत, मेरे गुस्सा पर ग़ालिब है"

1924:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह के पास 99 रहमतों का ख़ज़ाना है, उन में से केवल एक ही रहमत जिन्नों, इन्सानों, चौपायों और कीड़ों–मकोड़ों पर नाज़िल की है। यह केवल एक रहमत का करिश्मा है कि जन्गली जानवर भी अपने बच्चे से प्रेम करता है। बाक़ी 99 रहमतों को

उस ने रख छोड़ा है, उन्हें क़ियामत के दिन अपने बन्दों पर नाज़िल करेगा।

फ़ाइदाः– मेरे मौला! क़ियामत के दिन मुझ पापी अनुवादक के ऊपर भी अपनी रहमत की चन्द बूँदें डाल दीजिये। तेरी रहमत से यही आशा है।

बाब {अल्लाह की रहमत और उस की सज़ा का बयान।}

1925:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह के पास जितना कुछ अ़ज़ाब है अगर उसके बारे में मोमिन को मालूम हो जाये तो हर कोई जन्नत में जाने की आशा ही छोड़ देगा (और निराश हो जायेगा) इसी प्रकार अ़ल्लाह के पास कितनी कुछ रहमत है, अगर काफ़िर को मालूम हो जाये तो वह जन्नत में जाने से कभी निराश न होगा।

बाब {एक माँ अपनी औलाद पर जितना रहम खाती है, उस से कहीं अधिक अल्लाह पाक अपने बन्दों पर रहम खाता है।}

1926:– उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि कुछ क़ैदी पकड़ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास लाये गये तो उन में से एक महिला बन्दी अपने बच्चे को तलाश करने लगी। जब उस को बच्चा मिल गया तो उसे उठा कर अपने पेट से चिमटा लिया और दूध पिलाने लगी। यह देख कर आप ने फ़रमायाः तुम्हारा क्या ख़याल है यह महिला अपने उस बच्चे को आग में डाल देना पसन्द करेगी? हम लोगों ने कहाः अल्लाह की क़सम! वह कभी डालना पसन्द न करेगी। आप ने फ़रमायाः (सुनो!) अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर इस से कहीं ज़्यादा मेहरबान है, जितनी यह महिला अपने बच्चे पर मेहरबान है।

बाब {केवल नेकी ही किसी को नजात नहीं दिला सकती।}

1927:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है वह बयान किया करती थीं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बीच की चाल चलो, (अगर न हो सके तो) बीच की चाल चलने की कोशिश करो, और ख़ुश रहो, क्योंकि किसी को उस का अ़म्ल जन्नत में नहीं ले जायेगा। लोगों ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! आप को भी नहीं? आप ने फ़रमायाः मुझ को भी नहीं, मगर यह कि अल्लाह पाक मुझे अपनी रहमत से ढाँप ले। और यह भी जान लो कि अल्लाह पाक को वही अ़मल पसन्द है जो हमेशा किया जाये अगर्चे थोड़ा ही हो।

फ़ाइदाः– कुछ लोग तहज्जुद पढ़ते हैं, फिर छोड़ देते है। फिर पढ़ते हैं और छोड़ देते हैं। अल्लाह को यह तरीक़ा पसन्द नहीं। चाहे दो रक्अ़त पढ़ो, लेकिन हमेशा पढ़ो। लगातार किसी काम के करने के बाद जा कर उस में तासीर पैदा होती है। रंग लाती है हिना पत्थर पर घिस जाने के बाद।

बाब {तक्लीफ़ पर अल्लाह से अधिक सब्र करने वाला कोई नहीं।}

1928:– अ़ब्दुल्लाह बिन कैस रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक से ज़्यादा उन तक्लीफ़ों पर सब्र करने वाला कोई नहीं जिसे वह अपने बन्दों की ज़बान से सुनता है। उस के साथ शरीक ठहराते हैं, उस के लिये बेटा बताते हैं (क्या इस से भी ज़्यादा कोई तक्लीफ़ की बात हो सकती है) फिर भी वह है कि उन्हें रोज़ी दिये जा रहा है, (तन्दुरुस्ती दिये जा रहा है और हर प्रकार की नेमतें दिये जा रहा है)

फ़ाइदा:– यह इतनी बुरी बात है कि अल्लाह ने फ़रमा दिया है मैं शिर्क को कभी नहीं माफ़ करुँगा और इस की सज़ा ज़रुर दूगाँ।

बाब {अल्लाह पाक से अधिक कोई ग़ैरत मन्द नहीं।}

1929:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा किसी को अपनी तारीफ़ कराना पसन्द नहीं (क्योंकि वह तारीफ़ किये जाने का हक़दार है) इसी वजह से उस ने अपनी तारीफ़ खुद की है। और अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा कोई ग़ैरतमन्द भी नहीं है और न ही उस से ज़्यादा किसी को उज़्र करना पसन्द है।

फ़ाइदा:– यानी अल्लाह को यह बहुत पसन्द है कि बन्दे गुनाह करने के बाद मेरे सामने मजबूरी पेश करें और माफ़ी माँगें, ताकि मैं माफ़ कर सकूँ।

1930:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला ग़ैरत करता है, इसी प्रकार मोमिन भी ग़ैरत करता है। और अल्लाह को इस बात से ग़ैरत आती है कि मोमिन वह काम करे जिसे अल्लाह ने हराम ठहराया है।

बाब {बन्दा का अपने गुनाहों का इक़रार करना और अल्लाह पाक से चुपके से माफ़ी माँगना।}

1931:– सफ़वान बिन मोहरिज़ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति ने इब्ने उमर रज़ि॰ से कहाः आप ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सरगोशी के बारे में क्या सुना है? उन्होंने कहाः मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना है कि क़ियामत के दिन एक मोमिन बन्दा अल्लाह के पास लाया जायेगा फिर अल्लाह पाक उस के ऊपर अपना बाज़ू रख देगा और उस से उस के गुनाहों का इक़रार कराएगा और पूछेगाः क्या तू अपने गुनाहों को पहचानता है? वह कहेगाः ऐ मेरे मौला! मैं पहचानता हूँ। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगाः दुनिया में इन गुनाहों को मैंने छुपा दिया था इसलिये आज मैं इन गुनाहों को भी माफ़ कर देता हूँ, फिर उसे नेकी का पर्वाना दे दिया जायेगा।

रहे काफ़िरऔर मुनाफ़िक़, तो इन के बारे में समस्त मख़्लूक़ के सामने एलान किया जायेगा कि यह वह लोग हैं जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बाँधा था।

बाब {काफ़िर और मुनाफ़िक़ भी क़ियामत के दिन अल्लाह की दी हुयी नेमतों का इक़रार करेंगे।}

1932:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि सहाबा ने पूछाः ऐअल्लाह क़े रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! क्या हम अल्लाह पाक को क़ियामत के दिन देखेंगे? आप ने फ़रमायाः ठीक दोपहर के समय जब बादल का नामोनिशान हो उस समय सूरज के देखने में शक करोगे? उन्होंने कहाः नहीं। आप ने फ़रमायाः जबकि बदली न हो तो क्या चौदहवीं रात के चाँद को भी देखने में दुश्वारी होगी? सहाबा ने कहाः नहीं। आप ने फ़रमायाः उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है जिस प्रकार तुम्हें चाँद और सूरज को देख़ने में कोई कठिनाई और शुब्हा नहीं होता है, इसी प्रकार अल्लाह को देखने में भी कोई दुश्वारी न होगी (और अपनी आँखों से देखोगे)

इस के पश्चात अल्लाह तआ़ला बन्दे से हिसाब लेगा और पूछेगा कि ऐ फ़लाँ! क्या मैंने तुम्हें अ़िज़्ज़त और मर्तबा नहीं दिया था? क्या मैं ने तुम्हें सर्दारी नहीं दी थी? और क्या घोड़ों और ऊँटों का तुम्हें मालिक नहीं बनाया था? तुझे क़ौम पर होकूमत की छूट दे दी थी, तो तू उन से चौथाई (लगान) वसूल करता था? इन सब के उत्तर में बन्दा कहेगाः सब कुछ सच है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला उस से पूछेगाः क्या तुझे आशा थी कि मुझ से मिलेगा? बन्दा कहेगाः नहीं। इस पर अल्लाह भी फ़रमायेगाः तो हम भी तुझे भूल जाते हैं, जैसे तू भुल गया है।

फिर अल्लाह पाक दूसरे बन्दे से हिसाब लेगा और उस से पूछेगाः ऐ फ़लाँ! क्या मैं ने दुनिया में तुझे अ़िज़्ज़त और मर्तबा नहीं दिया था? तुझे क़ौम का सर्दार नहीं बनाया था, तुझे तेरा जोड़ा नहीं दिया था, घोड़ों और ऊँटों का मालिक नहीं बनाया था? तुझे होकूमत करने की छूट नहीं दी थी? और क्या तू उन से चौथाई टेक्स नहीं वसूली करता था? बन्दा कहेगा कि ऐ मेरे मौला! सब कुछ सच है। अल्लाह पाक उस से फिर सवाल करेगा कि मुझ से मिलने की तुझे आशा थी? बन्दा उत्तर देगा कि नहीं। इस पर अल्लाह तआ़ला कहेगाः जिस प्रकार तू भूला हुआ था आज मैं तुझे भी भुला देता हूँ।

फिर तीसरे बन्दे से सवाल करेगा और उस से भी उसी प्रकार पूछेगा, इस पर बन्दा कहेगा कि ऐ मेरे मौला! मैं तुझ पर ईमान रखता था? तेरी किताब और तेरे रसूलों पर भी ईमान लाया था, मैं ने नमाज़ पढ़ी, रोज़ा रखा और सदक़ा–ख़ैरात भी किया, इस प्रकार बन्दा भरपूर अपनी प्रशंसा करेगा। इस पर अल्लाह फ़रमायेगाः देख, अभी तेरे झूठ की पोल खुल जायेगी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगाः हम तेरे ख़िलाफ़ गवाह लायेंगे। इस पर बन्दा अपने जी में सोचेगा कि भला कौन मेरे ख़िलाफ़ गवाही देगा। चुनान्चे उस के मुँह पर मोहर लगा दी जायेगी, और

उस की रान, माँस और हड्डियों से कहा जायेगा कि उस (ने जो ऊपर अपने नेक काम गिनाए हैं) के बारे में गवाही दें। चुनान्चे उस की रान, माँस और हड्डियाँ उस के ख़िलाफ़ गवाही देंगी और यह गवाही इसलिये दिलवाई जायेगी ताकि बन्दा की तरफ़ से किसी उज़्र की गुन्जाइश बाक़ी न रहे। वह व्यक्ति मुनाफ़िक़ होगा और उस पर अल्लाह पाक नाराज़ होगा।

फ़ाइदा:– हदीस का बाब से संबन्ध स्पष्ट है। ऐसे रियाकार और मुनाफ़िक़ का अ़मल अल्लाह के दर्बार में स्वीकार नहीं होता है। और अल्लाह पाक ऐसे लोगों को कठोर दन्ड देता है।

बाब {क़ियामत के दिन बन्दा के हाथ–पैर उस के ख़िलाफ़ गवाही देंगे।}

1933:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास बैठे हुये थे कि इसी दर्मियान आप हँसने लगे। फिर स्वँय ही पूछाः जानते हो मैं क्यों हँसा? हम ने कहाः अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं। आप ने फ़रमायाः मैं बन्दा के उस बात–चीत पर हँसने लगा जो वह (क़ियामत के दिन) अपने पर्वरदिगार से करेगा। बन्दा कहेगाः ऐ मेरे मौला! क्या तू मुझे अपने जुल्म से पनाह नहीं दे चुका है? (यानी तू ने वादा किया है कि मैं जुल्म नहीं करुँगा) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक कहेगाः हाँ, मैं ने वादा किया है। फिर बन्दा कहेगाः मैं अपने ऊपर अपनी ज़ात के अ़लावा और किसी की गवाही को स्वीकार नहीं करता। इस पर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगाः ठीक है, आज के दिन तेरी ज़ात से तेरे ख़िलाफ़ गवाही दिलवाई जायेगी, इस के अ़लावा किरामन् कातिबिन् की भी गवाही होगी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः फिर बन्दा के मुँह पर मोहर लगा दी जायेगी और उसके हाथ–पाँव से कहा जायेगा कि बोलो। चुनान्चे उस के तमाम (अच्छे–बुरे) आमाल के बारे में बोलेंगे। फिर बन्दा को भी उन से बात–चीत करने की अनुमति दी जायेगी, तो बन्दा अपने हाथ–पाँव से कहेगाः चलो, यहाँ से दूर हो जाओ, तुम्हारे लिये बर्बादी हो, मैं ने तुम्हारे ही लिये सारे पापड़ बेले थे।

फ़ाइदा:– अल्लाह ने कुरआन में फ़रमाया हैः "जिस दिन अल्लाह के दुश्मन जहन्नम के निकट पहुँच जायेंगे, तो उन के ख़िलाफ़ उन के कान, उन की आँखें और उन की चमड़ी गवाही देगी। चुनान्चे यह अपनी चमड़ी से पूछेंगेः तू ने हमारे ख़िलाफ़ क्यों गवाही दी? वह उत्तर देगीः आज हमें उस अल्लाह ने बोलने की ताक़त दे दी है जिस ने हर चीज़ को बोलने की ताक़त दी है.........(पारः24, सूरः हामीम सज्दा, 20–21)

बाब {अल्लाह से डरने और उस के अ़जाब से ख़ौफ़ खाने का बयान।}

1934:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

फ़रमायाः एक व्यक्ति ऐसा था कि उस ने कभी कोई नेकी ही नहीं की थी। जब उस के देहान्त का समय आया तो अपने घर वालों से कहाः जब मैं मर जाऊँ तो मुझे जला देना, फिर आधी राख जन्गल में उड़ा देना और आधी समुन्दर में डाल देना। क्योंकि अगर अल्लाह पाक मुझे पायेगा तो इतना कठोर दन्ड देगा कि उतना कठोर दन्ड किसी को नहीं देगा (क्योंकि में ने कोई नेकी नहीं की है) चुनान्चे जब उस का देहान्त हो गया तो उस के घर वालों ने जैसा उस ने कहा था वैसा ही किया। लेकिन अल्लाह पाक ने जन्गल को हुक्म दिया तो उस ने सारी राख एकत्र कर दी, इसी प्रकार समुन्दर को हुक्म दिया तो उस ने भी सारी एकत्र कर दी फिर (अल्लाह ने जब सब को इकट्ठा कर के) उस से पूछाः तू ने ऐसा क्यों किया? उस ने कहाः ऐ मेरे मौला! तेरे डर की वजह से ऐसा किया, और तू तो अच्छी तरह जानता है। इस पर अल्लाह ने उसे बख़्श दिया।

बाब {जिस ने गुनाह करने के बाद अपने रब से तौबा की, उस व्यक्ति के बारे में बयान।}

1935:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने रब के हवाले से बयान कियाः एक व्यक्ति ने गुनाह किया, फिर उस ने कहाः ऐ मेरे मौला! मुझे माफ़ कर दे। इस पर अल्लाह पाक फ़रमाएगाः मेरे बन्दे ने गुनाह किया, और वह यह भी जानता है उस का जो पर्वरदिगार है वह माफ़ भी कर देता है और सज़ा भी देता है। चुनान्चे फिर दोबारा उस ने गुनाह किया और फिर कहाः ऐ मेरे मौला! मुझे बख़्श दे। इस पर अल्लाह तआ़ला दोबारा कहता हैः मेरे बन्दे ने गुनाह किया, और वह यह भी जानता है कि उस का जो पर्वरदिगार है वह गुनाह को माफ़ भी करता है और सज़ा भी देता है। फिर उस ने (तीसरी मतर्बा) गुनाह किया और फिर कहाः ऐ मेरे मौला! मुझे माफ़ कर दे। इस पर अल्लाह तआ़ला फिर फ़रमायेगाः मेरे बन्दे ने फिर गुनाह किया, और वह यह जानता है कि जो मेरा पर्वरदिगार है वह माफ़ भी करने वाला है और सज़ा भी देने वाला है। ऐ बन्दे! अब तू जो चाहे कर, मैं ने तुझे बख़्श दिया। हदीस के रावी अ़ब्दुल आला ने कहा कि मुझे याद नहीं रहा कि तीसरी बार, या चौथी बार अल्लाह फ़रमायेगाः "अब तू जो चाहे कर, मैं ने तुझे बख़्श दिया।"

फ़ाइदाः- इस हदीस का यह अर्थ नहीं कि बन्दा जानबुझ कर गुनाह करता रहे और माफ़ी माँगता रहे, और अल्लाह पाक हर बार माफ़ करता चला जायेगा। गुनाह करना और माफ़ी माँगना, पेशा बना ले। यह हुक्म उस बन्दे के लिये है जो नेक काम करता है, बुराइयों से बचता है, अल्लाह से डरता है, फिर भी गाहे-बगाहे शैतान के बहकावे में आ कर गुनाह भी कर डालता है। वर्ना गुनाह करने में जो घाघ हैं उन्हें हर्गिज़ माफ़ नहीं करेगा।

बाब {जिस ने गुनाह किया, फिर तुरन्त वुज़ू कर के फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ी (और माफ़ी माँग ली)}

1936:- अबू उमामा बाहली रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मस्जिद में बैठे थे और हम लोग भी आप के पास बैठे हुये

थे कि इसी दर्मियान एक व्यक्ति आ कर कहने लगाः ऐ अल्लाह के रसूल! मैं ने हद जारी होने वाला काम कर डाला है इसलिये मुझ पर हद जारी कर दीजिये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस की बात सुन कर ख़ामोश रहे (और कोई उत्तर न दिया) तो उस ने फिर कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! मैं ने हद जारी करने वाला बुरा काम कर डाला है, इसलिये आप मुझ पर हद जारी कर दीजिये। इस पर भी आप खामोश रहे, तो उस ने तीसरी मर्तबा भी कहा। इतने में फ़र्ज़ नमाज़ की जमाअ़त खड़ी हो गयी। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ होकर मस्जिद से निकलने लगे तो वह आप के पीछे लग गया। चुनान्चे मैं भी आप के पीछे लग गया कि देखें आप उसे क्या उत्तर देते हैं? वह व्यक्ति फिर आप से मिला और कहने लगाः ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने हद जारी होने वाला काम कर डाला है इसलिये आप मुझ पर हद जारी फ़रमा दीजिये।

हदीस के रावी अबू उमामा रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसे जवाब दियाः क्या जब तू अपने घर से चला था तो अच्छी तरह वज़ू नहीं किया था? उस ने कहाः जी हाँ, ऐ अल्लाह के रसूल! (अच्छी तरह वज़ू कर के आया था) आप ने फ़रमायाः फिर तू ने मेरे साथ नमाज़ भी पढ़ी उस ने कहाः जी हाँ ऐ अल्लह के रसूल! आप ने उस से कहा कि (जाओ) अल्लाह ने तुम्हारे हद को, या तुम्हारे गुनाह को माफ़ कर दिया।

फ़ाइदाः– अल्लाह तआ़ला ने कुछ ख़ास बुरे कामों पर ख़ास सज़ायें तै कर दी हैं। जैसे ज़िना, करने की सज़ा कोड़ने मारना, या अगर विवाहित है तो रज्म करना। चोरी की सज़ा, हाथ काट लेना, शराब पीने की सज़ा कोड़े मारना। इन्हीं सज़ाओं को "हद" कहा जाता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसे देख कर अन्दाज़ा लगा लिया कि बन्दा मुत्तक़ी और नेक है, गुनाहों से बचता है। इत्तिफ़ाक़ से उस ने गुनाह कर डाला, इसलिये अ़ल्लाह ने भी नमाज़ पढ़ लेने और माफ़ी माँग लेने से आसानी से माफ़ कर दिया।

वर्ना कोई गुनाह करता जाये और नमाज़ पढ़ता जाये, गुनाह करता जाये और नमाज़ पढ़ता जाये, तो यह तो एक प्रकार का मज़ाक़ हो गया। इस प्रकार अल्लाह गुनाह माफ़ नहीं किया करता। अधिक जानकारी के लिये ऊपर का फ़ाइदा अवश्य पढ़ें।

बाब {हर मुसलमान के जहन्नम से नजात के लिये फ़िदया में काफ़िरों को दिया जायेगा।}

1937:– अबूमूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन अल्लाह पाक हर एक मुसलमान को यहूदी या ईसाई देगा और कहेगा यह तुम्हारे जहन्नम से छुटकारा के लिये फ़िदया केतौर पर है।

फ़ाइदाः– मुस्लिम ही की एक दूसरी रिवायत में है कि क़ियामत के दिन कुछ मुसलमानों के गुनाह पहाड़ों के बराबर होंगे, लेकिन उन को बख़्श दिया जायेगा और उन के गुनाहों को यहूद और नसारा के सर डाल दिया जायेगा। इस हदीस में यहूद-नसारा पर ज़ुल्म नहीं

है, इसलिये कि वह तो पहले ही से अपने बुरे आमाल की वजह से जहन्नमी हैं, मुसलमानों के गुनाह का बोझ उठाने के बाद भी जहन्नम ही में रहेंगे। हाँ मुसलमान का फ़ाइदा होगा कि उन के गुनाहों का बोझ समाप्त हो जायेगा और वह जन्नत में चले जायेंगे। जब पानी सर से ऊपर हो गया है तो चाहे एक बालिश्त ऊपर हो या एक गज़, क्या फ़र्क़ पड़ता है। यह हदीस "कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा" के ख़िलाफ़ नहीं है।

❀ ❀ ❀

किताबुल् मुनाफ़िक़ीन
(मुनाफ़िक़ों के बारे में बयान)

बाब {अल्लह तआला ने फरमायाः "जब यह मुनाफ़िक़ लोग तुम्हारे पास आते हैं और ....(सूरः मुनाफ़िकून, पारः28) का बयान।}

1938:– ज़ैद बिन अर्क़म रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ एक सफ़र में गये, जिस में लोगों को बड़ा कष्ट झेलना पड़ा। यह देख कर अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि मुनाफ़िक़ ने अपने साथियों से कहाः जो लोग रसूलुल्लाह के साथ हैं जब तक वह उन से अलग न हो जायें उन को कुछ मत दो। (ज़ुबैर कहते हैं कि यह उन की क़िरात है जिन्होंने "मिन्हौलिही" पढ़ा है) और अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि ने कहाः अगर हम मदीना को लौट गये तो अिज़्ज़त वाले मदीना से ज़लील लोगों को निकाल देंगे। ज़ैद बिन अर्क़म ने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इस बात की सूचना दी तो आप ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि को बुलवा कर उस से (इस बात के बारे) पूछा तो उस ने बड़ी पक्की क़सम खाई कि उस ने ऐसा कुछ नहीं कहा है और ज़ैद ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से झूठ बोला है। ज़ैद ने कहाः मुझे उस की इस बात से बड़ा रन्ज हुआ (कि उस ने मुझे झूठा बना दिया) आख़िर अल्लाह पाक ने मेरी तस्दीक़ में यह आयत नाज़िल फ़रमा दीः "जब आप के पास आते है.......यह झूठे हैं (आयत न॰1) फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने माफ़ी माँगने के लिये उन्हें बुलवाया तो (मज़ाक़ करते हुये) अपने सरों को मटकाया (और नहीं आये)

फ़ाइदा:– इस हदीस को समझने के लिये पारः28, सूर मुनाफ़िकून का तर्जुमा व तफ़सीर अवश्य पढ़ें। यहाँ विस्तार से लिखने की गुन्जाइश नहीं। यहाँ इतना लिख देना बेहतर है कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि क़बीला ख़ज़रज की एक शाख़ का सर्दार था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मदीना हिजरत करने से पहले मदीना का बादशाह बनने का सपना देखता था। बड़ा मक्कार था। तबूक की जन्ग में नहीं शरीक हुआ था। सन 9 हि॰ में मर गया तो आप ने उस के बेटे (जिस का नाम भी अ़ब्दुल्लाह ही था) को जो सच्चे मुसलमान थे खुश रखने के लिये उस के कफ़न में अपना कुर्ता दिया और उस की जनाज़ा की नमाज़ भी पढ़ाई।

बाब {मुनाफ़िक़ों का नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस्तिग़फ़ार न माँगने का बयान।}

1939:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मुराद की घाटी पर कौन चढ़ेगा? क्योंकि (उस पर चढ़ने से) उस के पाप इस प्रकार झड़ जायेंगे जिस प्रकार बनी इस्राईल के पाप झड़ गये थे। जाबिर रज़ि॰ ने कहा: सब से पहले उस घाटी पर हमारे, यानी क़बीला बनी ख़ज़रज के घोड़े चढ़े, फिर तो (चढ़ने के लिये) लोगों का ताँता बँध गया। यह देख कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: लाल ऊँट वाले को छोड़ कर तुम में से हर किसी की बख़्शिश हो जायेगी। चुनान्चे हम उस के पास गये और उस से कहा: चलो अल्लाह के रसूल तुम्हारे लिये माफ़ी की दुआ़ करेंगे। उस ने कहा: अल्लाह की क़सम! अगर मुझे मेरी खोई हुयी चीज़ मिल जाये तो वह चीज़ मुझे तुमहारे नबी की दुआ़ से अधिक महबूब है। वह व्यक्ति उस समय अपनी कोई गुम हुयी चीज़ ढूँढ रहा था।

फ़ाइदा:– 'मुरार' यह हुदैबिय्या के स्थान पर दो पहाड़ों के बीच की घाटी का नाम है। लाल ऊँट वाले मुनाफ़िक़ का नाम जद्द बिन क़ैस था। आप ने उस के बारे में जैसा फ़रमाया था वह वैसा ही निकला।

बाब {मुनाफ़िक़ों और उन की निशानियों का बयान।}

1940:– क़ैस बिन अ़ब्बाद ने बयान किया कि मैं ने अ़म्मार बिन यासिर रज़ि॰ से पूछा: यह बतायें कि आप ने अ़ली रज़ि॰ का जो साथ दिया (और मुआ़विया से जन्ग लड़ी) यह आप ने अपनी राय से किया या नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस बारे में आप से वादा लिया था (कि अ़ली का साथ देना) उन्होंने कहा: नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हम से कोई ऐसा वादा नहीं लिया था जिस का आप से तमाम सहाबा से न लिया हो। लेकिन हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि॰ ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से यह रिवायत बयान की है कि आप ने फ़रमाया: हमारे सहाबा में 12 मुनाफ़िक़ हैं, उन में से 8 जन्नत में नहीं जायेंगे, यहाँ तक कि ऊँट सूई के नाके में चला जाये (यानी कभी नहीं जायेंगे) और न ही जन्नत की खुश्बू पायेंगे। उन में से आठ को दुबैला (बड़ा फोड़ा) ही मार डालेगा। यानी उन के कन्धों में आग का एक चराग़ पैदा होगा जो उन के सीनों को तोड़ता हुआ निकल जायेगा।

फ़ाइदा:– एक दूसरी रिवायत में है कि हुज़ैफ़ा रज़ि॰ ने 4 मुनाफ़िक़ों के बारे में क्या कहा यह मैं भूल गया। (मुस्लिम)

बाब {घाटी वाली रात में मुनाफ़िक़ों और उन की संख्या का बयान।}

1941:– अबू तुफ़ैल ने बयान किया कि घाटी वालों में से एक व्यक्ति का हुज़ैफ़ा रज़ि॰ के साथ (किसी बात पर) टन्टा हो गया, जैसा कि आ़म तौर पर लोगों में होता रहता

है। उस ने कहाः मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूँ यह बताओ कि घाटी वाले कितने लोग थे? लोगों ने हुज़ैफ़ा से कहाः जब आप से पूछ रहा है तो उस को बता दीजिये। उन्होंने कहा कि हम को यह ख़बर दी गयी थी कि वह चौदह हैं। और अगर तुम भी उन में से हो तो फिर पन्द्ररह हैं। उन्होंने कहाः मैं अल्लाह को गवाह कर के कहता हूँ कि उन में से बारह तो वह हैं जो दुनियाँ में अल्लाह और उस के रसूल से जन्ग करने वाले हैं। उन में तीन आदमियों ने कहाः हम ने अल्लाह के रसूल के पुकारने वाले (एलान्ची) की कोई आवाज़ नहीं सुनी (कि घाटी के रास्ते से न आओ) और न ही हम को क़ौम के इरादा की कोई ख़बर है। उस समय आप हर्रा की पथरीली ज़मीन में चल रहे थे कि आप ने फ़रमायाः (अगले पड़ाव पर) पानी बहुत कम है, इसलिये मुझ से पहले कोई पानी पर न जाये। जब आप वहाँ पहुँचे तो क्या देखा कि कुछ (मुनाफ़िक़) पहले ही वहाँ पहुँच चुके हैं तो आप ने उन पर लानत फ़रमायी।

फ़ाइदाः— इस हदीस की तफ़सील है जिसे यहाँ लिखना ज़रुरी है। मुनाफ़िक़ों का एक गरोह था जो घाटी में छुपा हुआ था। जिन का इरादा था कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तबूक की लड़ाई से वापस हों और इस घाटी में गुजरें तो उन पर अचानक हमला कर दिया जाये। अल्लाह पाक ने आप को सूचना दे दी तो एक एलान्ची से एलान करवाया कि घाटी की राह से कोई न जाये, बल्कि "बतने वादी" से जायें। आप ने सब को उधर से भेज दिया, लेकिन स्वँय और अ़म्मार, हुज़ैफ़ा और हम्ज़ा बिन अ़म्र को साथ लेकर घाटी ही के रास्ते में आगे बढ़े। अ़म्मार आप के आगे-आगे थे और हुज़ैफ़ा आप के पीछे। लेकिन जो मुनाफ़िक़ थे और लश्कर में थे उन्होंने आप का हुक्म न माना और बतने वादी के रास्ते जाने के बजाए घाटी ही केरास्ते पर चले और आप के पास पहुँच गये। आप ने उन को पहचान लिया और अपनी सवारी को बतने वादी की तरफ़ मोड़ दिया। वह लोग डर गये। आपने उन मुनाफ़िक़ों और उन के बापों का नाम हुज़ैफ़ा को बता दिया। इस राज़ को हुज़ैफ़ा ने जीवन भर किसी को नही बताया। उन मुनाफ़िक़ों की कुल संख्या 14, 15 थी।

बाब {मुनाफ़िक की मिसाल उस बकरी की सी है जो दो रेवड़ों के दर्मियान भागती फिरती है।}

1942:— इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुनाफ़िक़ की मिसाल उस बकरी की सी है जो दो गल्लों के दर्मियान मारी-मारी फिरती है, कभी इस गल्ले में आ जाती है और कभी उस गल्ले में चली जाती है।

फ़ाइदाः— यानी मुनाफ़िक़ कभी मुसलमानों के गरोह में शामिल हो जाता है तो कभी काफ़िरों के साथ हो जाता है। कब किस का साथ दे दे कुछ नहीं कहा जा सकता-ला इला हाउलाइ वला इला हाउलाइ।

बाब {मुनाफ़िक़ के मरने पर तेज़ हवा चलती है।}

1943:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक सफ़र से वापस लौटे और जब मदीना के निकट पहुँचे तो इतनी ज़ोर की हवा चली कि एक सवार ज़मीन में दब जाये। इस पर आप ने फ़रमायाः यह हवा किसी मुनाफ़िक़के मरने पर चली है। चुनान्चे जब आप मदीना पहुँचे तो मुनाफ़िक़ों में का एक बड़ा मुनाफ़िक़ मर चुका था।

बाब {क़ियामत के दिन मुनाफ़िक़ों के लिये सख़्त अ़ज़ाब होगा।}

1944:– सल्मा बिन अक्वा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ एक ऐसे व्यक्ति की अ़यादत की जिस को बुख़ार चढ़ा हुआ था। मैं ने अपना हाथ उन के ऊपर रखा तो कहाः अल्लाह की क़सम! इस के शरीर जैसा गर्म शरीर आज तक मैं ने किसी का नहीं देखा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें उस व्यक्ति के बारे में न बताऊँ जिस का शरीर क़ियमात्त के दिन इस व्यक्ति के शरीर से भी ज्यादा गर्म होगा। फिर अपने साथ चलने वालों में से दो आदमियों की तरफ़ इशारा किया जो घोड़ों पर सवार थे और मुँह फेरे हुये खड़े थे।

बाब {ज़मीन, मुनाफिक और मुर्तद की लाश को बाहर फेंक देती है।}

1945:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने बयान किया कि हमारे क़बीला बनी नज्जार में एक व्यक्ति था जिस ने सूरः बक़रः और सूरः आले अिम्रान को पढ़ रखा था और वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिये लिखा करता था (यानी मुन्शी था) वह भाग कर यहूदियों से जा मिला, उन्होंने उसे हाथों हाथ लिया और कहने लगेः यह तो मुहम्मद का मुन्शी था और (उसे पा कर) वह लोग निहाल हो गये। कुछ दिनों के बाद अल्लाह पाक ने उस की गर्दन तोड़ दी (और उसे हलाक कर दिया) उन्होंने गड्ढा खोद कर दफ़न कर दिया, लेकिन सुबह को देखा तो उस का शव बाहर पड़ा है। चुनान्चे उन्होंने उसे दोबारा दफ़न कर दिया, लेकिन फिर सुब्ह को देखा कि उस का शव बाहर पड़ा हुआ है। चुनान्चे उन्होंने तीसरी मर्तबा गड्ढा खोद कर दफ़न कर दिया, लेकिन सुबह को फिर उस का शव बाहर पड़ा हुआ देखा। आख़िर उसे यूँ ही छोड़ दिया।

फ़ाइदा:– ऊपर की अहादीस में मुनाफ़िक़ों की कुछ निशानियाँ बताई गयी हैं, जिन्हें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बयान किया है। सहाबा में केवल हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि॰ थे जिन्हें मुनाफ़िक़ को परखने और पहचानने में महारत हासिल थी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने केवल इन्ही को मुनाफ़िक़ों का नाम बताया था। आजकल दावे के साथ किसी को मुनाफ़िक़ कहना बड़ा कठिन है।

किताबु सि-फ़तिल् क़िया-मति
(क़ियामत की निशानियों का बयान)

बाब {अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन ज़मीन को मुट्ठी में ले लेगा और आसमानों को अपने दोनों हाथ में लपेट लेगा।}

1946:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक क़ियामत के दिन आसमानों को लपेट कर अपने दायें हाथ में ले लेगा, फिर फ़रमायेगाः मैं बादशाह हूँ। कहाँ हैं, कुव्वत व ताक़त वाले लोग? कहाँ हैं तकब्बुर और गुरुर करने वालें लोग? फिर ज़मीन को भी अपने बायें हाथ में लपेट लेगा और फ़रमायेगाः मैं बादशाह हूँ, कहाँ हैं कुव्वत व ताक़त वाले लोग? कहाँ हैं, फ़ख्र और गुरुर करने वाले लोग?

फ़ाइदाः– इसी को अल्लाह पाक ने कुरआन में यूँ बयान फ़रमाया हैः 'जिस दिन सब लोग (क़ब्रो से निकल कर) ज़ाहिर हो जायेंगे और उन की कोई चीज़ अल्लाह से पोशीदा न होगी (फिर अल्लाह फ़रमायेगाः) आज किस की बादशही है? (फिर खुद ही जवाब देगा) केवल यक्का (अकेला) व तन्हा क़ह्हार की बादशाही है।" (पारः24, सूर–ग़ाफ़िर–16)

इस हदीस में अल्लाह के लिये दायें–बाँयें हाथ का ज़िक्र है। इस सिलसिले में कोई तावील करने की ज़रुरत नहीं है। अल्लाह के हाथ, पैर, आँख, कान, नाक सब कुछ हैं, उसी से वह पकड़ता, चलता, देखता, सुनता और सूँघता है। लेकिन हम इन्सानों की तरह नहीं है, बल्कि जैसा अल्लाह है वैसे ही उसी की शान के मुताबिक़ उस के हिस्से भी हैं, जिस के बारे में हम सोच भी नहीं सकते। बस केवल ईमान लाना आवश्यक है, और यही अहले हदीस का मज़हब है।

बाब {क़ियामत के दिन ज़मीन की हालत का बयान।}

1947:– सह्ल बिन सअ़द रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन लोग ऐसी ज़मीन पर इकट्ठा किये जायेंगे (हिसाब–किताब के लिये) जो सफ़ेद के साथ लाल भी होगी जैसे मैदा की रोटी उस में किसी कानिशान बाक़ी नहीं रहेगा।

फ़ाइदाः– एक दूसरी रिवायत में है कि यह ज़मीन रोटी की तरह हो जायेगी, अल्लाह पाक जन्नती लोगों की मेहमानी के लिये अपने हाथ से इस को उलट–पलट देगा जिस प्रकार तुम में का कोई शख़्स सफ़र में रोटी को उलट–पलट करता है (मुस्लिम–अबू सअ़ीद खुदरी) यानी ज़मीन को उलट–पलट कर बराबर कर देगा और घर–दर, पहाड़, नदी–नाले, समुन्दर आदि सब का निशान मिट जायेगा। क़ुरआन पाक में पहाड़ के बारे में फ़रमायाः "उन्हें मेरा रब टुक्ड़े–टुक्ड़े कर के उड़ा देगा, और ज़मीन को बिलकुल समतल बना देगा यकदम चटियल मैदान की तरह जिस में न तो कहीं मोड़ होगा और न ऊँच–नींच।" (पारः16, सूरःताहा–106, 107)

बाब {हर व्यक्ति उसी हालत में उठाया जायेगा जिस हालत में वह मरा था।}

1948:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः हर बन्दा उसी हालत में उठाया जायेगा जिस हालत में वह मरा था।

फ़ाइदाः– यानी ईमान, या कुफ़्र जिस हालत में मरा था उसी हालत में उठाया जायेगा। एक दूसरी हदीस में हैः "मरने से पूर्व जो अ़मल किया है उस का वही अन्तिम अ़मल देखा जायेगा।

बाब {क़ियामत के दिन लोग अपने–अपने अच्छे–बुरे कर्मों के अनुसार उठेंगे।}

1949:– अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बयान करते सुना आप फ़रमाते थेः जब अल्लाह किसी क़ौम पर अज़ाब भेजता है तो वह (अच्छे–बुरे) सब को पहुँचता है, लेकिन क़ियामत के दिन अपने–अपने आमाल के मुताबिक़ उठेंगे।

फ़ाइदाः– यानी मरने को भले ही अच्छे–बुरे एक साथ मर गये हों, लेकिन क़ियामत के दिन मरने की तरह एक ही साथ नहीं उठेंगे, अच्छे लोग बुरों के साथ नहीं होंगे।

बाब {क़ियामत के दिन लोग नंगे पैर, नन्गे बदन और बिना ख़तना किये उठाये जायेंगे।}

1950:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना आप फ़रमाते थेः क़ियामत के दिन लोग नन्गे पैर, नन्गे बदन बिना ख़तना किये हुये जमा किये जायेंगे। मैं ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! क्या महिला–पुरुष सब एक साथ होंगे? फिर तो एक–दूसरे को देखेंगे। आप ने फ़रमायाः ऐ आ़इशा! उस समय मामला इतना गंभीर होगा कि किसी को एक–दूसरे को देखने का ख़याल तक न होगा।

फ़ाइदाः– आसमान सवा नेज़े पर होगा, ज़मीन तवे की तरह गर्म होगी, लोग गले–गले तक पसीने में डूबे होंगे, उस समय नफ़सी–नफ़सी की स्थिति होगी, सब को अपनी–अपनी

पड़ी होगी, इन परिस्थितियों में किस को ख़बर होगी कि कौन किस हालत में है।

बाब {क़ियामत के दिन लोग तीन समूह में उठाये जायेंगे।}

1951:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहिं वसल्लम ने फ़रमायाः लोग तीन समूह में एकत्र किये जायेंगे। कुछ लोग प्रसन्न होंगे, कुछ लोग डरे हुये होंगे। दो एक ऊँट पर होंगे, तीन एक ऊँट पर होंगे, चार एक ऊँट पर होंगे, दस एक ऊँट पर होंगे। बाक़ी लोगों को एक आग एकत्र करेगी। जहाँ जहाँ रात बिताएँगे आग भी वहीं ठहर जायेगी। यह लोग जहाँ दिन में ठहरेंगे, आग भी वहीं ठहर जायेगी। जहाँ यह सुब्ह करेंगे, आग भी इन के साथ सुब्ह करेगी। जहाँ यह शाम करेंगे, आग भी इन के साथ शाम करेगी (यानी इन का पीछा न छोड़ेगी)

फ़ाइदाः– यह मामला क़ियामत से पहले दुनिया में पेश आयेगा, कि दुनियाँ में भी इन्हें एकत्र किया जायेगा। मुस्लिम की एक दूसरी रिवायत में इन की तफ़सील यूँ है कि क़ियामत आने से पहले मुल्क अ़दन के एक गड्ढे से एक आग निकलेगी जो लोगों को इकट्ठा करते हुये मुल्क शाम तक ले जायेगी। सब अपनी-अपनी सवारियों पर दो-दो, चार-चार के समूह में बैठ कर भागेंगे।

बाब {क़ियामत के दिन काफ़िर मुँह के बल उठाया जायेगा।}

1952:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! काफ़िर क़ियामत के दिन मुँह के बल किस प्रकार उठेगा? आप ने फ़रमायाः जिस अल्लाह ने उसे दुनिया में दोनों पाँव के बल चलाया, वह इस बात की भी ताक़त रखता है कि उसे क़ियामत के दिन मुँह के बल चलाये। अबू क़तादा ने इस हदीस को सुन कर कहाः ऐ मेरे मौला! बेशक तू ताक़त रखता है।

बाब {क़ियामत के दिन सूरज तमाम मख़लूक़ के निकट आ जायेगा।}

1953:– सुलैम बिन आ़मिर ने बयान किया कि मुझ से मिक़दाद बिन अस्वद ने कहाः मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः क़ियामत के दिन सूरज को मख़्लूक़ के निकट कर दिया जायेगा और वह एक मील की दूरी पर आजायेगा। सुलैम ने कहा कि मील से क्या मुराद है? मुझे नहीं मालूम। ज़मीन की लंबाई को नापने वाला मील मुराद है, या इस से सुर्मा लगाने की सलाई मुराद है। इस के बाद जिस का जैसा (अच्छा-बुरा) अ़मल होगा उसी हिसाब से पसीने में डूब जायेगा। इसलिये कोई टख़्नों तक डूबा होगा, तो कोई घुटनों और कमर तक। और किसी को पसीना की लगाम लगी होगी, फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने हाथ से अपने मुँह की तरफ़ इशारा कर के फ़रमाया (यानी मुँह तक पसीना से डूबा होगा)

फ़ाइदाः– 'मील' यह बहुत प्रसिद्व पैमाना है, जो "किलोमीटर" से पहले चलता था। यह

8 फ़र्लांग का होता था। और इस का दूसरा अर्थ है "सुर्मादानी की सलाई" यानी सुर्मादानी की सलाई जितनी बड़ी होती है, उतनी दूरी पर सूरज आ कर टिक जायेगा। बहरहाल हदीस का यह अर्थ है कि सूरज बहुत ही निकट आ जायेगा।

बाब {क़ियामत के दिन कितनी मात्रा में पसीना छूटेगा, इस का बयान।}

1954:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन सत्तर गज़ की लंबाई तक पसीना निकल कर फैल जायेगा और कुछ लोगों के मुँह या कानों तक होगा। हदीस के रावी को शक है कि आप ने मुँह कहा या कान।

फ़ाइदा:– हदीस में "बाअ़" का शब्द आया है। दोनों हाथों को फैला दें, उस लंबाई को 'बाअ़' कहा जाता है, इस की लंबाई कम से कम ढाई गज़ होती होगी। आप स्वँय अपना हाथ फैला कर नाप लें।

बाब {क़ियामत के दिन छुटकारा के लिये काफ़िर से फ़िदया (हर्जाना) माँगा जायेगा।}

1955:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जहन्नम में जिस को सब से कम अ़ज़ाब होगा उस से अल्लह तआ़ला पूछेगाः अगर आज तुम्हारे पास दुनिया और उस के अन्दर की तमाम चीज़ें होतीं, तो क्या उन सब को देकर तुम अपने आप को आज़ाद कराने की कोशिश करते? वह कहेगाः हाँ। इस पर अल्लाह तआ़ला उस से कहेगा कि मैंने तो (जहन्नम से बचने के लिये) इस से भी आसान बात कही थी और उस समय कही थी जब तू अभी आदम की पीठ ही में था कि अगर तुम शिर्क नहीं करोगे तो मैं जहन्नम में नहीं दाख़िल करुँगा। लेकिन तुम ने मेरी बात नहीं मानी और शिर्क करते रहे।

फ़ाइदा:– इस का ज़िक्र अल्लाह तआ़ला ने यूँ किया है "जिन्होंने कुफ़्र किया अगर उन के लिये वह सब कुछ हो जो सारी ज़मीन में है, बल्कि उतना ही और भी हो और वह उन सब को क़ियामत के दिन अ़ज़ाब के बदले में हर्जाना में देना चाहे तो भी नामुमकिन है कि उन का हर्जाना कुबूल कर लिया जाये, उन के लिये तो दर्दनाक अ़ज़ाब है" (पारः6, सूरः माइदा-36) हर्जाना देने से संबन्धित और भी आयतें हैं जैसे, सूरःराद-18, सूरःजुमर-47, सूरःमआ़रिज-11।

❀ ❀ ❀

किताबु सि–फ़तिल् जन्नति
(जन्नत की नेमतों का बयान)

बाब {उस गरोह का बयान जो सर्वप्रथम जन्नत में होगा।}

1956:– मुहम्मद से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि लोगों ने एक दूसरे पर इस बारे में फ़ख्र किया, या आपस में बयान किया कि क्या जन्नत में मर्द ज़्यादा होंगे या महिलायें? इस पर अबू हुरैरा रज़ि॰ ने फ़रमायाः क्या अबुल क़ासिम (यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने यह नही फ़रमाया है कि जन्नत में जो पहला गरोह दाख़िल होगा उस की सूरत चौदहवीं रात की चाँद की तरह होंगी। फिर इस के बाद जो दूसरा गरोह जायेगा उस की सूरत आसमान में जगमगाते सितारे की तरह होगी। हर जन्नती व्यक्ति के लिये दो बीवियाँ होंगी जिन की पिंडलियों का गूदा गोश्त केअन्दर से दिखाई देगा और जन्नत में कोई भी शख़्स बिना बीवी के नहीं होगा।

1957:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सर्वप्रथम गरोह जो जन्नत में दाख़िल होगा उस की सूरत चौदहवीं रात के चाँद की तरह होगी। फिर उस के बाद जो गरोह दाख़िल होगा उस की सूरत आसमान के सब से अधिक चमकने वाले सितारे की तरह होगी। न वह पेशाब करेंगे और न शौच करेंगे, न नाक पोंछेगे और न थूकेंगे। उन की कंघियाँ सोने की होंगी और पसीना मुश्क होगा। उन की अंगेठियों में ऊद (यानी खुश्बूदार लक्ड़ी) सुलगेगी, उन की बीवियों की बड़ी–बड़ी आँखें होगी, उन सब का आचरण (अख़्लाक़) एक जैसा होगा, वह अपने बाप आदम की सूरत पर होंगे, उन का क़द (डील–डोल) अपने बाप आदम के क़द के मुताबिक़ साठ गज़ होगा। इब्ने अबी शैबा की रिवायत में है कि सब का अख़्लाक़ एक जैसा होगा। और अबू कुरैब की रिवायत में है कि सब की शारीरिक बनावट एक जैसी होगी। इब्ने अबी शैबा ने कहाः वह अपने बाप (आदम) की सूरत पर होंगे।

फ़ाइदा:– हदीस से मालूम हुआ कि जन्नत में महिलायें मर्दों से ज़्यादा होंगी, क्योंकि एक मर्द के पास कम से कम दो बीवियाँ होंगी, हूरें इन के अ़लावा होंगी। मालूम हुआ महिलाओं की संख्या कम से कम दो गुनी अधिक होगी, हूरों को छोड़ कर। और जहन्नम में भी इन्हीं की संख्या अधिक होगी, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

मुझे जहन्नम में सब से अधिक् तुम्हीं को दिखाया गया, क्योंकि शौहरों की नाशुक्री करती हो......। आदम अ़लै॰ 60 गज़ के थे। यह गज़, या हाथ दुनिया का है या आख़िरत का कोई माप है, अल्लाह बेहतर जाने। (बुख़ारी शरीफ़-3245, 3246-अबू हुरैरा+3327-अबू हुरैरा)

बाब {जो भी जन्नत में दाख़िल होगा आदम की सूरत पर होगा।}

1958:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक ने आदम को अपनी सूरत पर बनाया, उन का क़द साठ गज़ लंबा था। जब उन्हें बना चुका तो कहाः जाओ उस जमाअ़त को सलाम करो, वह फ़रिश्तों की जमाअ़त है जो बैठे हुये हैं। फिर सुनो कि वह तुम्हारे सलाम का क्या जवाब देते हैं? जो वह जवाब देंगे वही तुम्हारा और तुम्हारी औलाद का सलाम होगा। चुनान्चे आदम गये और कहाः अस्सलामु अ़लैकुम। फ़रिश्तों ने कहाः अस्सलामु अ़लै-क व-रह् मतुल्लाहि। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः फ़रिश्तों ने "व-रह्-मतुल्लाह" का शब्द ज़्यादा किया। आप ने फ़रमायाः हर वह शख़्स जो जन्नत में दाख़िल होगा वह आदम की सूरत पर होगा, उस का क़द 60 गज़ होगा। फिर लोगों का क़द धीरे-धीरे छोटा होता रहा, यहाँ तक कि इस क़द को पहुँचे।

फ़ाइदा:- आदम साठ हाथ के थे, फिर लोगों के क़द घटते गये। यानी आदम केबाद जितना ज़माना दूर होता गया लोगों के क़द भी घटते गये। जन्नत में सब बराबर हो जायेंगे। आज साठ हाथ का क़द भला नहीं लगता, क्योंकि इस समय हमारे क़द छोटे हैं, लेकिन जन्नत में भले लगेंगे, इस वास्ते कि सब बराबर हो जायेंगे (वहीदी)

बाब {कुछ लोग जन्नत में इस प्रकार जायेंगे कि उन के दिल परिन्दों के दिल जैसे होंगे।}

1959:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जन्नत में कुछ ऐसे लोग दाख़िल होंगे जिन के दिल परिन्दों के मनिन्द (समान) होंगे।

फ़ाइदा:- चिड़िया का दिल नर्म होता है, हर दम डरा-सहमा रहता है, हर समय अल्लाह पर भरोसा रखता है। इसी प्रकार इन लोगों का भी दिल नर्म होगा, अल्लाह से हर समय ख़ौफ़ खाने, उस पर भरोसा रखने वाले होंगे। यह तमाम विशेषतायें एक पक्के-सच्चे मोमिन की पहचान हैं। चिड़िया के पास रोज़ी-रोटी का कोई इन्तिज़ाम नहीं, लेकिन उसे पूरा विश्वास होता है कि जिस ने पैदा किया है वह देगा, यही हाल इन जन्नती लोगों के दिलों का भी है।

बाब {जन्नती लोगों पर अल्लाह की प्रसन्नता (रज़ामन्दी) नाज़िल होने का बयान।}

1960:- अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक जन्नती लोगों से फ़रमायेगाः ऐ जन्नतियों! वह उत्तर

देंगे: ऐ मेरे मौला! हम हाज़िर हैं और तेरी आज्ञा पालन के लिये तय्यार हैं, हर प्रकार की भलाई तेरे हाथ में है। अल्लाह फ़रमायेगा: क्या तुम लोग राज़ी हो? वह कहेंगे: ऐ मेरे मौला! हम राज़ी क्यों नहीं होंगे, क्योंकि तू ने हमें इतना कुछ दिया है जितना किसी को नहीं दिया। अल्लाह फ़रमायेगा: क्या मैं तुम्हें इस से भी अच्छी चीज़ न दे दूँ? वह कहेंगे: ऐ मेरे मौला! इस से अच्छी चीज़ और क्या है? अल्लाह फ़रमायेगा: आज मैं तुम पर अपनी ख़ुश्नूदी (रज़ामन्दी-प्रसन्नता) नाज़िल कर रहा हूँ, आज के बाद मैं तुम पर कभी नाराज़ न हूँगा।

फ़ाइदा:– रज़ामन्दी सब से प्रथम है। इसी आधार पर कोई किसी को देता-लेता है। और यह चीज़ मिल गयी तो समझो हर चाहत और ख़ाहिश की पूर्ति अपने हाथ में है जब चाहो माँग लो।

बाब {जन्नती लोग बला ख़ाना (ऊपर के महल) में रहने वालों का देखेंगे।}

1961:– अबू सअ़ीद ख़ुदरी रज़ि॰ से रिवायत है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जन्नती लोग अपने ऊपर बाला ख़ाना में रहने वालों को इस तरह देखेंगे जिस प्रकार तुम आसमान में पूरब या पश्चिम की तरफ़ दूर चकमते हुये सितारे को देखते हो, क्योंकि कुछ जन्नती लोगों के दर्जे बाज़ से बुलन्द होंगे (इसलिये उन को ऊपर के तल में स्थान दिया जायेगा) सहाबा ने पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल! फिर तो वह संदेष्टाओं का दर्जा होगा? जिन तक और कोई नहीं पहुँच सकता। आप ने फ़रमाया: हाँ, उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है, यह उन लोगों का दर्जा है जो अल्लाह पर ईमान लाये और नबिय्यों को सच्चा जाना-माना। (नबी लोगों का दर्जा इन से भी बुलन्द होगा)

बाब {जन्नती लोगों के खाने का बयान।}

1962:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:जन्नत में रहने वाले खाना खायेंगे, पानी पियेंगे, लेकिन न तो थूकेंगे और न ही पेशाब-पाख़ाना करेंगे और न ही नाक झाड़ेंगे। लोगों ने पूछा: फिर खाना किधर जायेगा? आप ने फ़रमाया: एक डकार लेंगे। (फिर सब कुछ हज़म हो जायेगा) और ऐसा पसीना आयेगा जिस में मुश्क की ख़ुश्बू होगी (इस से पानी निकल जायेगा) वह तस्बीह (यानी सुब्हानल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, अल्लाहु अक्बर) इस प्रकार पढ़ेंगे, जिस प्रकार साँस आती जाती है। (यानी हर समय पढ़ते ही रहेंगे)

बाब {जन्नती लोगों के लिये उपहार।}

1963:– नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के आज़ाद किये हुये ग़ुलाम सौबान रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास खड़ा था कि इतने में यहूद के आ़लिमों में से एक आ़लिम आया और कहा: "अस्सलामु अ़लैकुम या मुहम्मद"

यह सुन कर मैं ने इतने ज़ोर का उसे धक्का दिया कि गिरते-गिरते बचा। उस ने कहाः तुम ने मुझे धक्का क्यों दिया? मैं ने कहाः तू रसूलुल्लाह क्यों नहीं कहता (केवल नाम ही क्यों लेता है) उस ने कहाः जो उन के घर वालों ने नाम रखा है हम उन्हें उस नाम से पुकारते हैं। फिर उस ने कहाः मैं आप से कुछ पूछने आया हूँ। आप ने फ़रमायाः मेरे बताने से तुझे कुछ फ़ाइदा भी पहुँचेगा? उस ने कहाः मैं बड़े ध्यान-ज्ञान से सुनूँगा। फिर आप के हाथ में छड़ी थी उस से आप लकीर खींचने लगे और फ़रमायाः ठीक है पूछो। उस ने पूछाः जिस समय यह ज़मीन-आसमान बदल कर दूसरे ज़मीन आसमान हो जायेंगे, उस समय हम लोग कहाँ होंगे? आप ने फ़रमायाः उस समय अँधेरे में पुल सिरात के पास खड़े होंगे। उस ने पूछाः कौन लोग पहले उस पुल पर से पार होंगे? आप ने फ़रमायाः मुहाजिर लोगों में से जो ग़रीब-मुहताज़ हैं। उस ने पूछाः जब लोग जन्नत में जोयंगे तो उन का पहला खाना क्या होगा? आप ने फ़रमायाः मछली के जिगर का टुक्ड़ा। उस ने पूछाः सुबह का खाना क्या होगा? फ़रमायाः उन के लिये बैल ज़ब्ह किया जायेगा। उस ने पूछाः खाने के बाद वह क्या पियेंगे? आप ने फ़रमायाः 'सल्सबील' नाम के चश्मे का पानी पियेंगे। इन प्रश्नों के उत्तर सुनने के बाद उस ने कहाः अब मैं एक प्रश्न करने जा रहा हूँ जिसे नबी के अलावा दुनिया में और कोई नहीं जानता, या हो सकता है एक-आध लोग भी जानते हों। आप ने फ़रमायाः अगर मैं बता भी दूँ तो इस से कोई लाभ भी है? उस ने कहाः मैं उसे बड़े ध्यान-ज्ञान से सुनूँगा। फिर उस ने पूछाः मैं बच्चे के (नर-मादा पैदा होने के) बारे में पूछना चाहता हूँ। आप ने फ़रमायाः मर्द की मनी का पानी सफ़ेद होता है और महिला का पीला। जब यह पानी आपस में मिलते हैं और मर्द का पानी महिला के पानी पर ग़ालिब आ जाता है तो अल्लाह के हुक्म से लड़का (नर) पैदा होता है और जब महिला का पानी ग़ालिब होता है तो अल्लाह के हुक्म से लड़की (मादा) पैदा होती है। यह सुन कर यहूदी ने कहा कि आप ने बिल्कुल सत्य फ़रमाया और आप निःसंदेह सन्देष्टा हैं, फिर वह पीठ फेर कर चला गया। आप ने फ़रमायाः इस यहूदी ने जिन चीज़ों के बारे में मुझ से प्रश्न किया था उन के बारे में मुझे भी कोई जानकारी नहीं थी, लेकिन अल्लाह ने मुझे उन के बारे में बता दिया।

फ़ाइदाः- बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि यहूदी ने स्वँय नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बताया कि जन्नत में पहला खाना बैल और मछली होगी, जिस की कलेजी के साथ लगी हुयी चर्बी को सत्तर हज़ार लोग खायेंगे (6520-अबू सअ़ीद खुदरी) आज के नये शोध से भी यही साबित है कि महिला और पुरुष में से जिस का वीर्य शक्तिशाली होता है वही जिन्स पैदा होता है।

बाब {जन्नती लोगों को मिलने वाली नेमतें हमेशा-हमेशा के लिये होंगी।}

1964:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो बन्दा जन्नत में जायेगा वह सदा आराम व चैन से रहेगा, उसे किसी प्रकार

का कोई ग़म न होगा, न उस के वस्त्र पुराने होंगे और न ही उस की जवानी ढलेगी। (यानी वह हमेशा जवान बना रहेगा)

बाब {जन्नत में एक ऐसा पेड़ है कि उसके छाँव तले अगर कोई सवार 100 साल तक चलता रहे फिर भी उस के साया को न पार कर सकेगा।}

1965:- सहल बिन सअ़द से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जन्नत में एक ऐसा पेड़ है कि अगर उस के छाँव के नीच एक सवार 100 वर्ष तक चलता रहे तो भी उसे पार न करे सकेगा।

अबू हाज़िम ने बयान किया कि मैं यह हदीस नोमान बिन अबू अ़य्याश जुरक़ी से बयान की तो उन्होंने कहा कि मुझ से अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जन्नत में एक ऐसा भी पेड़ है कि अगर उसके साया के नीचे एक सवार तेज़ दौड़ने वाले घोड़े पर सवार होकर 100 वर्ष तक चलता रहे फिर भी उसे न पार कर सकेगा।

फ़ाइदाः- यानी वह पैड़ कितना भारी होगा, उस की डालियाँ कितनी लंबी होंगी, इस का अनुमान इस हदीस से लगा सकते हैं। जन्नत के पेड़ों की दुनिया के पेड़ों से तुलना न करें।

बाब {जन्नत में लगाये गये खे़मों (टेन्टों) का बयान।}

1966:- अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जन्नत में जो खे़मा लगाया जायेगा वह ख़ोलदार मोती का बना होगा जिस की चौड़ाई साठ मील होगी, उस के अन्दर एक कोने में रहने वाले, दूसरे कोने में रहने वालों को न देख सकेंगे।

बाब {जन्नत के बाज़ार का बयान।}

1967:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जन्नत के अन्दर एक बाज़ार लगेगा जिस में हर जुमा को जन्नती लोग जमा हुआ करेंगे। इसी बीच उत्तर की ओर से एक हवा चलेगी जिस से वहाँ की धूल और मिट्टी उड़ कर उन के चेहरों और कपड़ों पर पड़ेगी जिस से उन की खुबसूरती में इज़ाफ़ा हो जायेगा। फिर जब वह अपने घरों को लौट कर जायेंगे तो वह क्या देखेंगे कि तुम्हारी खूबसूरती में इज़ाफ़ा हो गया है। इस पर घर वाले उन से पूछेंगे कि तुम्हारी सुन्दरता तो बहुत बढ़ गयी है? इस पर वह लोग भी कहेंगे कि अल्लाह की क़सम! हमारे बाज़ार जाने के बाद तुम्हारी सुन्दरता भी बहुत बढ़ गयी है।

फ़ाइदाः- धूल-मिट्टी जो उड़ कर उन के चेहरों पर पड़ेगी वह मुश्क और केसर की होगी, उस के लगने से उन के चेहरे की सुन्दरता और अधिक बढ़ जायेगी।

बाब {जन्नत की नहरों में से कुछ एक नहरें दुनियां में भी जारी हैं।}

1968:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सैहान, जैहान और नील व फुरात नदियाँ, जन्नत की नहरों में से हैं।

फ़ाइदा:– यह नहरें जन्नत की नहरों में से निकली हैं, इस का दो अर्थ है। प्रथम यह कि वहाँ से इस्लाम फैलेगा और उन नहरों के पानी से जो शरीर बनेगा वह जन्नत में जायेगा। दूसरा यह अर्थ है कि इन नहरों में जन्नत की नहरों का पानी मिला हुआ है। और इस में कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि जन्नत में नहरें बनाई जा चुकी हैं और वहाँ बह रही हैं। चुनान्चे दूसरी हदीस में है कि नील और फुरात नदियाँ जन्नत से निकली हैं। और बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि इन नदियों की जड़ सिद-रतुल् मुन्तहा के अन्दर है। जन्नत की नदी का पानी इन नदियों में कैसे आया? इस का उत्तर यह है कि अल्लाह पाक ने यह सब कुछ किया है और वह हर चीज़ कर सकने पर कुदरत रखने वाला है। उस की महिमा अपरंपार है। इन बातों पर केवल ईमान लाने की आवश्यक्ता है।

बाब {जन्नत को नापसंदीदा कामों के साथ घेर दिया गया है।}

1969:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जन्नत उन कामों से घेर दी गयी है जो नफ़्स और ख़ाहिश के प्रतिकूल हैं और जहन्नम को नफ़्स के अनुकूल ख़ाहिश से घेर दिया गया है।

फ़ाइदा:– यानी जन्नत हासिल करने के लिये ऐसे कार्य करने पड़ेंगे जो नफ़्स की ख़ाहिश के ख़िलाफ़ होंगे। यानी नफ़्स बुराई की तरफ़ उभारेगा और जन्नत में जाने के लिये उस के ख़िलाफ़ नेकी के कार्य करने होंगे।

बाब {महिलाओं की संख्या जन्नत में कम होगी।}

1970:– अबू तैय्याह ने बयान किया कि मुर्तरिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह के पास दो बीवियाँ थीं। चुनान्चे वह अपनी एक बीवी के पास से होकर आये तो दूसरी कहने लगीः तुम फ़लानी के पास से होकर आ रहे हो। उन्होंने कहाः मैं अ़िम्रान बिन हुसैन के पास से आ रहा हूँ उन्होंने हम से एक हदीस बयान की है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जन्नत में रहने वालों में महिलाओं की संख्या बहुत कम होगी।

बाब {जन्नती और जहन्नमी लोगों का बयान। और दुनिया में उन की पहचान।}

1971:– हारिसा बिन वहब से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना आप ने फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें जन्नती लोगों के बारे में न बतलाऊँ? सहाबा ने कहाः आप अवश्य बतलायें। आप ने फ़रमायाः जो कमज़ोर होता है और लोगों की निगाह में ज़लील होता है, लेकिन अगर अल्लह पर भरोसा

कर के क़सम खा लेता है तो अल्लाह पाक उस की क़सम पूरी फ़रमा देता है (यह जन्नती की पहचान है) आप ने फिर फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें जहन्नमी लोगों के बारे में बताऊँ? सहाबा ने कहाः आप अवश्य बतायें। आप ने फ़रमायाः हर झगड़ालू, बड़े पेट वाला, अभिमान करने वाला (यह जहन्नमी की पहचान है)

1972:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कितने ही लोग ऐसे हैं जो धूल-मिट्टी से अटे रहते हैं, परेशान हाल होते हैं, लोगों के दर्वाज़े के धक्के खाते हैं लेकिन अगर अल्लाह की क़सम खा बैठें तो वह उन की क़सम पूरी कर देता है।

1973:– अ़याज़ बिन हिमार मुजाशअ़ी रज़ि॰ ने बयान किया कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने खुत्बा में फ़रमायाः सुनो! मेरे रब ने मुझे यह हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें उन चीज़ों के बारे में बतलाऊँ जो तुम को नहीं मालूम, और आज अल्लाह पाक ने मुझे उन चीज़ों का ज्ञान दिया है (उस ने बताया है कि) मैं ने अपने बन्दे को जो कुछ माल दिया है वह हलाल है, मैं ने अपने तमाम बन्दों को इस हाल में पैदा किया है कि वह बातिल से दूर रहने वाले थे। लेकिन उन के पास शैतानों ने आ कर उन को दीन से फेर दिया, और जो चीज़ें मैं ने उन पर हलाल की थीं, वह उन्होंने उन पर हराम कर दीं, और उन को मेरे साथ शिर्क करेन का हुक्म दिया जबकि मैं ने उस शिर्क पर कोई दलील नहीं नाज़िल की। फिर अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन वालों की तरफ़ देखा तो अहले किताब के चन्द लोगों को छोड़ कर तमाम अ़रब व अ़जम के लोगों से नाराज़ हुआ (क्योंकि सभी लोग शिर्क कर रहे थे) अल्लाह पाक ने फ़रमायाः मैं ने तुम्हें दुनिया में आज़माने के लिये भेजा है और तुम्हारे सबब से (दूसरों की) आज़माइश के लिये। मैं ने तुम पर ऐसी किताब नाज़िल की है जिस को पानी नहीं धो सकता (क्योंकि वह सीनों में जमा है) तुम उसे सोते-जागते हर समय पढ़ते हो। अल्लाह पाक ने मुझे कुरैश के लोगों को जला देने का हुक्म दिया (यानी उन्हें क़त्ल कर देने का) तो मैं ने कहाः ऐ मेरे मौला! वह तो मेरा सर फाड़ देंगे और उस के टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। इस पर अल्लाह ने फ़रमायाः उन को इस तरह निकाल दो जिस तरह उन्होंने तुम को निकाला है। तुम उन के ख़िलाफ़ जिहाद करो, हम तुम्हारी सहायता करेंगे। तुम उन के ख़िलाफ़ एक लश्कर भेजो, हम उस से पाँच गुना अधिक लश्कर भेजेंगे। अपने आज्ञाकारी लोगों को लेकर अपने अवज्ञा कारी (नाफ़रमान) बन्दों के साथ जन्ग करो। फिर अल्लाह पाक ने फ़रमायाः तीन प्रकार के लोग जन्नती हैं (1) न्याय पसन्द बादशाह, जिसे नेकी करने की तौफ़ीक़ मिली है औ जो सदक़ा-ख़ैरात करता है। (2) जो रहम दिल हो, अपने तमाम रिश्तेदारों और आ़म मुसलमानों के लिये उस के दिल में नर्मी हो। (3) जो पाक दामन हो और बाल-बच्चों वाला होने के बावजूद माँगने से प्रहेज़ करता हो। और पाँच क़िस्म के लोग जहन्नमी हैं (1) वह कमज़ोर लोग जिन के पास (बुरी बातों से) बचने

के लिये तमीज़ नहीं है, जो तुम्हारे अधीन हैं, जो अपने बाल-बच्चों और धन-माल के सिलसिले में कोई पर्वाह नहीं करते हैं। (2) वह चोर जो हद दर्जा लालची हो और मामूली से मामूली चीज़ पर भी हाथ साफ़ कर दे। (3) वह धोखे बाज़ जो सुब्ह शाम तुम्हारे साथ और तुम्हारे बाल-बच्चों के साथ धोखा-धड़ी करता फिरे। इन के अ़लावा अल्लाह तआ़ला ने बख़ील, झूठें, गाली बकने वाले और बेहूदा बातें करने वाले का भी ज़िक्र किया (कि यह लोग भी जहन्नमी हैं)

बाब {जन्नती और जहन्मी जहाँ भी होंगे, सदा वहीं रहेंगे।}

1974:- अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब जन्नती लोग जन्नत में और जहन्नमी लोग जहन्नम में (अपने-अपने ठिकानों में) चले जायेंगे तो मौत को ला कर जन्नत और जहन्नम के बीच रख कर ज़ब्ह कर दिया जायेगा। फिर एक पुकारने वाला पुकार कर कहेगाः ऐ जन्नत वालो! अब मौत न ही आनी है, ऐ जहन्नम वालों! अब मौत नहीं आनी है। यह सुन कर जन्नती लोग खुश हो जायेंगे और जहन्नमी लोग रन्जीदा हो जायेंगे।

फ़ाइदा:- अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि मौत को जन्नत और जहन्नम के बीच में सफ़ेद मेंढे की शक्ल में ला कर ज़ब्ह कर दिया जायेगा, फिर कहा जायेगा कि अब किसी को मौत नहीं आयेगी (मुस्लिम-अबू सअ़ीद खुदरी) मौत-हयात, यह मख़्लूक़ हैं, अल्लाह पाक इन्हें ज़ब्ह कर डालेगा। अल्लाह पाक सब कुछ कर सकने पर कुदरत रखने वाला है। इस पर तअ़ज्जुब करने की कोई बात ही नहीं।

❀ ❀ ❀

किताबु सि–फ़तिन्नारि
(जहन्नम के अज़ाब का बयान)

बाब {जहन्नम के लगामों का बयान।}

1975:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन जहन्नम इस हाल में लाई जायेगी कि उस के (मुँह में) सत्तर हज़ार लगाम होंगे, और हर लगाम को सत्तर हज़ार फ़रिश्ते खींचे हुये होंगे।

फ़ाइदा:– यानी क़ियामत के दिन जहन्नम इतनी जोश मार रही होगी और इतनी बेक़ाबू हो रही होगी कि उसे चार अरब नव्वे करोड़ फ़रिश्ते थामे हुये होंगे।

बाब {जहन्म की गर्मी की तेज़ी का बयान।}

1976:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यह आग जिसे तुम (दुनिया में अपने घरों में) जलाते हो यह जहन्नम की आग के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा (तेज़) है। यह सुन कर सहाबा ने कहाः अल्लाह की क़सम ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! यही आग ही जलाने को काफ़ी है। आप ने फ़रमायाः जहन्नम की आग तो इस से 69 गुना अधिक गर्म है और हर हिस्सा 69 गुना गर्म है।

बाब {जहन्म की गहराई का बयान।}

1977:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास बैठे हुये थे कि इतने में धमाके की आवाज़ सुनाई दी तो आप ने फ़रमायाः क्या तुम जानते हो यह कैसी आवाज़ है? हम ने कहाः अल्लाह और उस के सन्देष्टा बेहतर जानते हैं। आप ने फ़रमायाः यह एक पत्थर (की आवाज़) है जिसे आज से सत्तर वर्ष पूर्व जहन्नम में फेंका गया था, वह अब जहन्नम की तह में जा कर पहुँचा है।

फ़ाइदा:– अल्लाह की पनाह! जहन्नम इतनी गहरी है कि उस की तह तक पहुँचने में सत्तर वर्ष लग गये।

बाब जहन्नमी लोगों में सब से हल्का दन्ड किसे होगा?}

1978:– नोमान बिन बशीर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जहन्नमी लोगों में सब से हल्का दन्ड उसे दिया जायेगा जिस के पैरों में आग की दो जूतियाँ और आग के दो तस्मे होंगे। जिस से उस का भेजा इस प्रकार उबाल खाएगा जिस प्रकार हाँडी उबाल खाती है। वह समझेगा कि मुझ से अधिक अ़ज़ाब किसी को नहीं हो रहा है, हालाँकि उस को सब से हल्का अ़ज़ाब होगा।

फ़ाइदा:– यही दन्ड आप के चचा अबू तालिब को दिया जायेगा। (बुख़ारी)

बाब {दन्ड पाने वालों को अ़ज़ाब कहाँ–कहाँ तक पहुँचेगा।}

1979:– समुरा बिन जुन्दुब रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कुछ लोगों को जहन्नम की आग टख़्नों तक पहुँचेगी, कुछ को घुटनों तक, कुछ को कमर तक और कुछ को गर्दन के निचले हिस्से तक पहुँचेगी।

बाब {ज़हन्न्म में अभिमान करने वाले दाख़िल होंगे और जन्नत में कमज़ोर लोग।}

1980:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जन्नत और जहन्नम के दर्मियान बहस छिड़ गयी तो जहन्नम नेकहाः हमारे पास तकब्बुर करने वाले और अपनी शान–शौकत दिखाने वाले आयेंगे। इस पर जन्नत नेकहाः हमारे पास तो लोगों में जो सब से अधिक कमज़ोर, गिरे–पड़े और मरियल थे वह आयेंगे।इस पर अल्लाह ने फ़रमायाः तू मेरी रहमत है और मैं तेरे साथ अपने बन्दों में से जिस पर चाहता हूँ रहम करता हूँ। और जहन्नम से फ़रमायाः तू मेरा अ़ज़ाब है, मैं तेरे साथ अपने बन्दों में से हर एक को भरना है, लेकिन जहन्नम नहीं भरेगी, फिर भर जायेगी और उस के बाज़ हिस्से बाज़ से सिमट जायेंगे। और अल्लाह पाक अपनी मख़्लूक़ में से किसी पर जुल्म नहीं करेगा। और जन्नत के लिये दूसरी मख़्लूक़ पैदा फ़रमाएगा।

बाब {जिस ने ग़ैरुल्लाह के नाम पर ऊँटनियों को छोड़ा उनके दन्ड का बयान।}

1981:– इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मैं ने सओ़द बिन मुसय्यिब रह॰ को बयान करते सुनाः 'बहीरा' उस ऊँटनी को कहा जाता था जिस का दूध बुतों के नाम पर छोड़ दिया जाता था इसलिये कोई भी उस के दूध को नहीं दूह सकता था। 'साइबा' उस ऊँटनी को कहा जाता था जिस को (मुश्रिक लोग) अपने बुतों के नाम पर छोड़ देते थे और उस पर कोई बोझ नहीं लादते थे।

इब्ने मुसय्यिब ने कहा कि अबू हुरैरा रज़ि॰ ने बयान कियाः नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं ने अम्र बिन आ़मिर ख़ज़ाओ़ी को इस हाल में देखा कि वह जहन्नम में अपनी आँतें खींच रहा था। इसी ने सब से पहले बुतों के नाम पर जानवर को आज़ाद छोड़ा।

फ़ाइदा:– कुरआन पाक में इस प्रकार के चार जानवरों का ज़िक्र है (1) बहीरा (2)

साइबा (3) वसीला (4) हाम। 'वसीला' उस ऊँटनी को कहते थे जिस से पहली मर्तबा मादा पैदा होती, फिर दोबारा भी मादा ही पैदा होती। ऐसी ऊँटनी को भी बुतों के नाम पर छोड़ देते थे। 'हाम' उस ऊँट को कहते थे जिस से जोड़ा खाने के बाद बहुत सारे बच्चे हो चुके होते और नस्ल काफ़ी बढ़ जाती। ऐसे ऊँट को भी बुतों के नाम पर छोड़ देते थे। बुतों के नाम जानवरों को छोड़ने वाला प्रथम व्यक्ति आ़मिर था। (सूरः माइदा 103, पारः7)

बाब {जहन्नम के अन्दर काफ़िर की दाढ़ कितनी बड़ी होगी?}

1982:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः काफ़िर के दाँत, या दाढ़ उहुद पहाड़ के बराबर होंगे, और उस की खाल की मोटाई तीन दिन के रास्ते के बराबर होगी।

फ़ाइदाः– हदीस में 'ग़लीज़' का शब्द आया है जिस का अर्थ है "मोटाई" और "बदबू"। यानी चमड़ी की मोटाई इतनी होगी जितना तीन दिन में सफ़र किया जाये। और अगर बदबू मुराद लेते हैं तो यह अर्थ होगा कि उस की बदबू तीन दिन तक चलने की दूरी तक पहुँचेगी।

1983:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः काफ़िर के दोनों कन्धों की दूरी घोड़सवार के तीन दिन के सफ़र के बराबर होगी।

बाब {जो दुनिया में लोगों को यातनाएँ देते थे उन के अ़ज़ाब का बयान।}

1984:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जहन्नमी लोगों में से दो प्रकार के लोगों को मैं ने नहीं देखा है। उन में से एक तो वह लोग होंगे जिन के पास बैल की दुम की तरह कोड़े होंगे जिन से वह लोगों को मारेंगे। दूसरे वह महिलायें जो वस्त्र पहनने के बावजूद भी नन्गी होंगी, जो स्वँय लोगों की तरफ़ झुकेंगी और लोगों को अपनी ओर (बुराई के लिये) झुकायेंगी, उन के सर बख़्ती ऊँट की कोहान की तरह झुके हुये होंगे, वह जन्नत में नहीं जा पायेंगी, बल्कि जन्नत की खुश्बू तक न मिलेगी, हालाँकि जन्नत की खुश्बू इतनी-इतनी दूरी से आयेगी।

फ़ाइदाः– एक रिवायत में है किजन्नत की खुश्बू चालीस कोस की दूरी से सूँघी जा सकेगी। यह दोनों बातें आजकल आ़म हैं, जिन्हें दिल्ली नगर की सड़कों पर खुले आ़म देख सकते है। सर के बालों को ऊपर की ओर लपेट लेती हैं, जो ऊँट के कोहान की तरह हो जाता है।

1985:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना, आप ने फ़रमायाः (ऐ अबू हुरैरा!) अगर तुम लंबे समय तक (जीवित) रहे तो ऐसे लोगों को देखोगे जिन के हाथों में बैल की दुम की तरह कोड़े होंगे, यह लोग

अल्लाह के गुस्से में सुब्ह करेंगे और अल्लाह के गुस्सा में शाम करेंगे।

फ़ाइदाः– मौलाना वहीदुज़्ज़माँ ने लिखा है "शायद इस से मुराद पुलिस वाले हों।"

बाब {.........}

1986:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दुनिया वालों में सब से अधिक ऐश व आराम करने वालों में से एक को पकड़ कर जहन्नम में एक बार डुबो कर उस से पूछा जायेगा कि ऐ आदम की औलाद! क्या तू ने दुनिया में कभी आराम देखा था? क्या कभी तुम्हें चैन नसीब हुआ था? वह कहेगाः अल्लाह की क़सम! कभी नहीं, ऐ मेरे मौला! फिर जन्नती लोगों में से एक ऐसे व्यक्ति को लाया जायेगा जिस ने दुनिया में बड़ी तक्लीफ़ की जिन्दगी गुज़ारी, फिर उसे जन्नत में डाल कर पूछा जायेगाः ऐ आदम की औलाद! तू ने कभी कष्ट और तक्लीफ़ भी देखी है? वह कहेगाः ऐ मेरे मौला, अल्लाह की क़सम! मुझ को तो कभी कोई तक्लीफ़ नहीं पहुँची और न ही मैं ने कभी कोई सख़्ती झेली।

❀ ❀ ❀

किताबुल् फ़ि-तनि
(फ़ितने-फ़साद का बयान)

बाब {जब दुनियाँ में बुराइयाँ बढ़ जायेंगी तो तबाही–बर्बादी बढ़ जायेगी और फ़ितने क़रीब आने लगेंगे।}

1987:– ज़ैनब बिन्त जहश (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी) से रिवायत है कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नींद से जागे तो फ़रमायाः लाइला-ह इल्लल्लाह, अ़रब के लोग उस अ़ज़ाब की वजह से तबाही के कगार पर पहुँच गये हैं जो अब बिल्कुल क़रीब आ पहुँचा है, आज याजूज-माजूज की दीवार इतनी खुल गयी है, फिर रावी सुफ़यान ने हाथ के अगूँठे को शहादत की उगँली से मिला कर दस कर हिन्दिसा बनाया। मैं ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम लोग हलाक हो जायेंगे जबकि हम में नेक लोग मौजूद हैं? आप ने फ़रमायाः हाँ, जब बुराई अधिक बढ़ जायेगी (तो तबाह हो जाओगे)

1988:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः आज याजूज-माजूज की दीवार इतनी और अधिक खुल गयी है, फिर हदीस के रावी वुहैब ने अपनी उगँलियों से 90 का हिंदिसा बनाया।

फ़ाइदाः– अंगूठे को शहादत की उँगली पर रखें तो एक मोटा सूराख़ बन जाता है। यानी इतना मोटा सूराख़ उस दीवार में हो गया है जो याजूज-माजूम को बाहर निकलने से रोके हुये है। याजू-माजूज कौन हैं? इस पर मौलाना आज़ाद रह॰ ने अपनी तफ़्सीर "तर्जुमानुल् कुरआन" में बड़े विस्तार से लिखा है, देखें पारः 16, सूरः कहफ़, आयत 93 में जुल् क़रनैन का बयान। (बुख़ारी-3346, 3598-अबू हुरैरा)

बाब {क़ियामत के निकट फ़ितने ऐसे बरसेंगे जैसे बारिश में पानी की बूँदे गिरती हैं।}

1989:– उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना के कोठों में से एक कोठे पर चढ़े और फ़रमायाः जो मैं देख रहा हूँ क्या तुम लोग भी देख रहे हो? मैं तुम्हारे घरों में फ़ितनों के गिरने की जगहों को इस प्रकार देख रहा हूँ जिस प्रकार वर्षा की बूँदों के गिरने की जगहों को देख रहा हूँ।

फ़ाइदाः— फ़ितना, से मुराद लड़ाई-झगड़ा, लूट-मार, क़त्ल-हत्या, चोरी-डाका, मुसलमानों का आपसी इख़्तिलाफ़ और दीगर प्रकार की बुराइयाँ आदि।

बाब {..........}

1990:— हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ के पास बैठे हुये थे कि उन्होंने पूछाः तुम लोगों में से किस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़ितनों वाली हदीस बयान करते सुना है? इस पर कुछ लोगों ने कहा कि हाँ, हम ने सुना है। उमर रज़ि॰ ने कहाः शायद तुम लोग फ़ितनों से मुराद वह फ़ितना लेते हो जिस में एक आदमी अपने घरबार, धनमाल और पड़ोसियों की वजह से मुब्तिला होता है। उन्होंने कहाः हाँ, हम यही मुराद लेते हैं। उमर ने कहा कि फ़ितनों का कफ़्फ़ारा तो नमाज़, रोज़ा और ज़कात से हो जाता है। उन फ़ितनों के बारे में किस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना है जो समुन्दर की लहरों की तरह उमड आयेंगे? हुज़ैफ़ा ने कहा कि यह सुन कर सभी लोग ख़ामोश हो गये तो मैं ने कहाः हाँ मैं ने सुना है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः फ़ितने दिलों के ऊपर यके बाद दीगरे ऐसे बरसेंगे जैसे चटाई की तीलियाँ यके बाद दीगरे बँधी होती हैं। तो जिस दिल में समा जायेगा उस के अन्दर एक काला धब्बा पड़ जायेगा। और जो दिल उस फ़ितने को नहीं कुबूल करेगा उस के ऊपर एक सफ़ेद नूरानी निशान बन जायेगा। इस प्रकार दिल दो प्रकार के हो जायेंगे। एक दिल तो सफ़ेद चिकने पत्थर की तरह होगा जिस को कोई भी फ़ितना जब तक ज़मीन-आसमान बाक़ी है, हानि नहीं पहुँचा सकेगा। दूसरा दिल काले पत्थर या उल्टे प्याले की तरह होगा, जिसे अच्छे-बुरे की कोई तमीज़ न होगी, बस उस के दिल में जो बैठ जाये वही मान लेगा।

हुज़ैफ़ा रज़ि॰ ने कहा कि फिर मैं ने उमर रज़ि॰ से कहा कि तुम्हारे और उस फ़ितने के दर्मियान एक दर्वाज़ा बन्द है जो बहुत जल्द टूट जायेगा। इस पर उमर ने पूछाः क्या तोड़ दिया जोयगा? अगर खुल जाता तो बन्द भी हो सकता था। मैं ने कहाः हाँ, वह तोड़ दिया जायेगा। फिर मैं ने कहाः दर्वाज़ा से मुराद एक व्यक्ति है जो मार डाला जायेगा या मर जायेगा। और यह हदीस मैं ने अपनी तरफ़ से गढ़ कर नहीं बनाई थी।

फ़ाइदाः— एक दूसरी रिवायत में है कि दर्वाज़ा से मुराद उमर थे। दर्वाज़ा टूटने से मुराद उन की शहादत है। उमर रज़ि॰ की शहादत के बाद ही से फ़ितनों का समय आरंभ हुआ। तीसरे ख़लीफ़ा शहीद किये गये, ख़िलाफ़त को लेकर झगड़ा हुआ, सिफ़्फ़ीन और जमल की लड़ाई हुयी, सहाबा ने सहाबा को क़त्ल किया और यह सिलसिला आज तक जारी है।

बाब {शैतान अपने लश्कर को भेज कर लोगों को फ़ितनों में डालेगा।}

1991:– जाबिर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः इबलीस अपना तख़्त पानी पर बिछाता है फिर अपने लश्कर को दुनियाँ में फ़साद फैलाने के लिये भेजता है। उस से सब से निकट वह होता है जो सब से बड़ा फ़साद कराने में कामियाब हो।

एक शैतान आ कर उस से कहता है कि मैं ने आज फ़लाँ-फ़लाँ काम किया (यानी किसी से चोरी कराई, किसी को शराब पिलाई आदि) यह सुन कर शैतान कहता है कि तू ने कुछ नहीं किया। फिर एक दूसरा शैतान आ कर कहता है कि मैं फ़लाँ व्यक्ति से उस समय तक चिमटा रहा जब तक उस के और उस के पत्नी के दर्मियान जुदाई न डाल दी। यह सुन कर इबलीस उसे अपने निकट कर लेता है कि तू ने बहुत बड़ा काम कर डाला। हदीस के रावी आमश ने कहा कि "शैतान उसे गले लगा लेता है।"

बाब {फ़ितनों और उन की कैफ़ियत का बयान।}

1992:– अबू इदरीस ख़ौलानी ने बयान किया कि हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि॰ बयान करते थे कि अल्लाह की क़सम! मैं आज से लेकर क़ियामत तक होने वाले फ़ितनों के बारे में तमाम लोगों से अधिक जानने वाला हूँ। और जानने की वजह यह नहीं है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कोई बात छुपा कर मुझ से विशेष रुप से बयान की हो और दूसरों से न बयान की हो, बात केवल इतनी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जिन मज्लिसों में फ़ितनों का ज़िक्र किया था उन मे मैं मौजूद था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़ितनों को गिनते हुये फ़रमायाः तीन प्रकार के फ़ितने ऐसे हैं जो किसी भी चीज़ को न छोड़ेंगे। उन में से कुछ तो गर्मियों की आँधियों की तरह हैं, कुछ फ़ितने छोटे हैं और कुछ बड़े हैं।

हुज़ैफ़ा रज़ि॰ ने बयान किया कि (जिस मज्लिस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इन फ़ितनों का ज़िक्र किया था) उस मज्लिस में शरीक सहाबा में से अब कोई जीवित नहीं है। (इसीलिये अब मुझ से अधिक जानने वाला कोई नहीं है।)

1993:– हुज़ैफ़ा रज़ि॰ ने बयान किया कि एक मतर्बा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमारे दर्मियान खड़े हुये और इस समय से लेकर क़ियामत तक होने वाली तमाम चीज़ों को बयान कर दिया, तो कुछ ने उन्हें याद रखा। और कुछ ने उन्हें भुला दिया। उन चीज़ों को मेरे यह सहाबा भी जानते हैं। कुछ बातों को मैं भूल गया था, लेकिन वह जब सामने आती हैं तो वह याद आ जाती हैं, बिल्कुल ऐसे ही जिस तरह कोई शख़्स किसी का चेहरा देख कर भूल जाता है, लेकिन जब वह सामने आता है तो उसे पहचान लेता है।

1994:– हुज़ैफ़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि क़ियामत तक जो कुछ होने वाला था उसे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे बता दिया था, और

हर चीज़ के बारे में मैं ने आप से पूछ भी लिया था। अल्बत्ता मैं ने आप से इस बारे में नहीं पूछा कि मदीना वालों को मदीना से कौन चीज़ निकाल देगी।

1995:- अबू ज़ैद (यानी अ़म्र बिन अख़्तब) रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मतर्बा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई, फिर मिंबर पर चढ़ कर खुत्बा दिया यहाँ तक कि जुह् का समय हो गया। फिर उतर कर जुह् की नमाज़ पढ़ाई और मिंबर पर चढ़ कर खुत्बा दिया, यहाँ तक कि अ़स्र का समय हो गया। फिर उतर कर अ़स्र की नमाज़ पढ़ाई और फिर मिंबर पर चढ़ कर खुत्बा दिया, यहाँ तक कि सूरज डूब गया। इस खुत्बा में जो घटनायें घट चुकी हैं, या जो घटने वाली हैं उन सब के बारे में हमें जानकारी दी। अब जिस ने उन तमाम बातों को याद रखा वही सब से अधिक जानने वाला है।

बाब {फ़ितनों और उन से सुरक्षित रहने का बयान।}

1996:- जुन्दुब ने बयान किया कि जिस दिन जरआ़ की जन्ग होने वाली थी मैं उस स्थान पर आया तो वहाँ एक व्यक्ति बैठा हुआ मिला। मैं ने उस से कहाः आज इस स्थान पर लड़ाई होगी। उस ने कहाः अल्लाह की क़सम! हर्गिज़ नहीं होगी। मैं ने कहाः अल्लाह की क़सम, होगी। उस ने कहाः अल्लाह की क़सम! हर्गिज़ नहीं होगी। मैं ने कहाः अल्लाह की क़सम आज जन्ग होकर कर रहेगी। उस ने कहाः अल्लाह की क़सम! जन्ग नहीं होगी, क्योंकि मेरे पास नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीस है जो आप ने मुझ से बयान फ़रमाई थी। मैं ने कहाः आज तक मेरे पास जितने उठने-बैठने वाले हैं उन में तुम सब से बुरे हो। क्योंकि मैं तेरी बातों की मुख़ालिफ़त कर रहा हूँ और तेरे पास हदीस है लेकिन फिर भी मुझे मना नहीं रहा है। फिर मैं ने सोचा कि अब गुस्सा करने से कोई फ़ाइदा तो है नहीं, इसलिये उस व्यक्ति की तरफ़ मुँह कर के उस हदीस के बारे में पूछने लगा तो क्या देखा कि वह हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि॰ हैं।

फ़ाइदा:- 'जरआ़' कूफ़ा में एक स्थान का नाम है। उस्मान रज़ि॰ ने अपने शासनकाल में सअ़ीद बिन आ़स को कूफ़ा का हाकिम बना कर भेजा तो कूफ़ा वाले इसी स्थान पर उन से लड़ने के लिये जमा हो गये थे और उन्हें हाकिम मानने से इन्कार कर दिया था। जुन्दुब इसलिये नाराज़ हुये थे कि हुज़ैफ़ा रज़ि॰ को शुरु ही में हदीस का हवाला दे देना चाहिये था ताकि हदीस को सुन कर वह बात आगे न बढ़ाते। सहाबी के एहतियात का अनुमान लगायें। और आज जो हदीस के होते हुये खुल्लम-खुल्ला उस के ख़िलाफ़ इमामों के क़ौल और फ़तवों पर अ़मल कर रहे हैं उन का क्या हाल होगा। अल्लाह पाक भूल चूक से भी हदीस की मुख़ालिफ़त से सुरक्षित रखे।

बाब {फ़ितने पूरब की ओर से उठेंगे।}

1997:- सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है वह कहते थेः ऐ इराक़

वालो! मैं तुम से यह नहीं मालूम करना चाहता कि तुम से छोटे-मोटे गुनाह किस ने कराये और बड़े-बड़े गुनाह के करने पर किस ने आमादा किया। मैं ने तो अपने पिता अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ को फ़रमाते सुना वह बयान करते थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः फ़ितना यहाँ से ज़ाहिर होगा, फिर आप ने अपने हाथ से पूरब की तरफ़ इशारा किया जहाँ से शैतान के दो सींग निकलेंगे। और तुम्हारा हाल यह है कि एक-दूसरे की गर्दने मारते हो (हालाँकि मोमिन को क़त्ल करना महापाप है) और मूसा अ़लै॰ ने जो फ़िर्औ़न के ख़ान्दान के एक व्यक्ति को मार डाला था वह ग़लती से मारा था (उसे मार डालने की नियत से घूसाँ नहीं मारा था) इस पर अल्लाह पाक ने उन से कहा थाः "तुम ने एक व्यक्ति की हत्या की, फिर भी हम ने तुम्हें मुसीबत से नजात दे दी और तुम को हर प्रकार से आज़माया" (सूरः ताहा-40)

फ़ाइदाः- यानी मूसा अ़लै॰ के अन्जाने में हत्या कर देने पर इतनी डाँट-फटकार, तो फिर जो तुम दिन-दहाड़े जान बूझ कर मुसलमानों की हत्यायें कर रहे हो, इस का क्या अन्जाम होगा। इराक़ी आरंभ से ही बेकाबू ऊँट की तरह थे, चुनान्चे हर ज़माना में मुसीबत की चक्की में पिसते रहे। चुनान्चे आज दिनांक 10 मई सन 2006 को जबकि यह फ़ाइदा लिख रहा हूँ समस्त इराक़ी अमरीकी फ़ौजों की गोलियों का निशाना बन रहे हैं। बुख़ारी की रिवायत में है कि नज्द में फ़ितने उठेंगे (7094-इब्ने उमर) 'नज्द' से मुराद मुल्क इराक़ की बुलन्दी वाला हिस्सा है जिस में कूफ़ा और बाबुल आदि शमिल हैं। कुछ लोगों ने इस से सऊदी अरब मुल्क मुराद लिया है और इसी निस्बत से अहले हदीसों को नज्दी कहते हैं, यह सरासर जिहालत है। (राज़)

बाब {क़ैसर और किस्रा (बादशाहों) के ख़ज़ाने अल्लाह की राह में ख़र्च किये जायेंगे।}

1998:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः (ईरान का बादशाह) क़ैसर के मर जाने के बाद अब कोई क़ैसर न पैदा होगा और जब (रुम का बादशाह) किस्रा मर जायेगा तो फिर किस्रा न पैदा होगा (क्योंकि इन दोनों मुल्कों पर मुसलमान क़ब्ज़ा कर लेंगे) उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है उन के ख़ज़ाने अल्लाह की राह में ख़र्च किये जायेंगे।

फ़ाइदाः- 'क़ैसर' और 'किस्रा' नाम नहीं है, यह टाइटल है, जो भी वहाँ का बादशाह बनता था उसे यही टाइटल दिया जाता था। जैसे हमारे मुल्क में "प्रधान मन्त्री" का पद है, जो भी इस मद पर होगा "प्रधान मंत्री" कहलायेगा। ईरान का बादशाह किस्रा तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बद्दुआ़ से बर्बाद हो गया और उस का नाम निशान मिट गया। और क़ैसर पराजित होकर शाम से दूसरे मुल्क में भाग गया। उमर फ़ारुक़ रज़ि॰ के शासन काल में इस मुल्क पर इस्लामी झन्डा लहराया गया और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की भविष्य वाणी के अनुसार सुराक़ा बिन जोशम के हाथों में क़ैसर का कंगन पहनाया गया। और उस के ख़ज़ाना को बैतुल माल में जमा कर दिया गया। फौज

के कमान्डर सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ि॰ थे।

1999:– जाबिर बिन समुरा रज़ि॰ से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना, आप ने फ़रमायाः मुसलमानों या मोमिनों की एक ज़माअ़त किसरा के ख़ज़ाना को खोलेगी जो सफ़ेद महल में है। कुतैबा की रिवायत में बिना शक के (मोमिनों के बजाये) मुसलमानों की जमाअ़त का शब्द है।

बाब {इस उम्मत की तबाही स्वँय एक–दूसरे के हाथों होगी।}

2000:– सौबान रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला ने मेरे लिये पूरी ज़मीन को समेट दिया, चुनान्चे मैं ने उस के पूर्वी और पश्चिमी छोर को देखा। और मेरी हुकूमत वहाँ तक पहुँचेगी जहाँ तक की ज़मीन मुझे दिखाई गयी है। और मुझे लाल और सफ़ेद दो ख़ज़ाने दिये गये हैं। और मैं ने अपने रब से यह दुआ़ की कि मेरी उम्मत को सूखा काल से न हलाक करना, और किसी ऐसे दुश्मन को न ग़लबा देना जो उन की जड़ काट दे। इस पर अल्लाह पाक ने फ़रमायाः ऐ मुहम्मद! जब मैं कोई फ़ैसला कर लेता हूँ तो उसे नहीं बदलता। मैं ने तुम्हारी दुआ़यें कुबूल कर ली हैं, सूखा काल भेज कर तुम्हारी उम्मत को नहीं हलाक करुँगा, इसी प्रकार उन पर किसी ऐसे दुश्मन को ग़लबा नहीं दूगाँ जो उन की जड़ काट दे। अर्गचे समस्त संसार के लोग एक जुट हो जायें (फिर भी मुसलमानों को समाप्त न कर सकेंगे) लेकिन स्वँय मुसलमान ही एक दूसरे को हलाक करेंगे और बन्दी बनायेंगे।

फ़ाइदाः– हदीस की रोशनी में आप देख सकते हैं कि अफ़ग़ानिस्तान, इराक़, फ़लस्तीन, सूमालिया, सूडान आदि इस्लामिक देशों पर आक्रमण कर के अमरीका ने क़ब्ज़ा करने की बड़ी चेष्टा की लेकिन आजतक सफल न हो सका, बल्कि उसे हर स्थान पर मुँह की खानी पड़ी। आज भी मुल्ला उमर और उसामा बिन लादेन जीवित हैं और भूमिगत रह कर अल्क़ाइदा का कन्ट्रोल अपने हाथ में लिये हुये हैं।

2001:– आ़मिर बिन सअ़द अपने पिता के हवाले से बयान करते हैं कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (मदीना से बाहर के एक गाँव) आ़लिया से वापस (मदीना) ओय और बनी मुआ़विया की मस्जिद के पास से गुज़रे और वहाँ जा कर दो रकअ़त नमाज़ अदा फ़रमायी तो हम लोगों ने भी आप के साथ नमाज़ अदा की, फिर आप ने बड़ी देर तक अल्लाह पाक से दुआ़ माँगी और हम लोगों को मुख़ातब कर के फ़रमायाः आज मैंने अपने रब से तीन दुआ़यें माँगी, जिन में से दो को कुबूल फ़रमा लिया और एक को नहीं कुबूल किया। मैं ने अल्लाह पाक से यह दुआ़ माँगी थी कि मेरी उम्मत को सूखा काल (भुखमरी) से न हलाक करना, तो इस दुआ़ को कुबूल फ़रमा लिया। दूसरी यह दुआ़ माँगी थी कि मेरी उम्मत को पानी में डुबो कर न हलाक करना, तो इसे भी स्वीकार कर लिया। तीसरी यह दुआ़ माँगी थी कि मेरी उम्मत के लोग परस्पर एक–दूसरे से न लड़ें, तो इसे कुबूल नहीं किया।

फ़ाइदा:– आज आप अपने घर, शहर, मुल्क, इस्लामी राष्ट्र और संसार के मुसलमानों को देख लीजिये, हर मुसलमान एक-दूसरे के खून का प्यासा है। सब एक-दूसरे के खून के प्यासे हैं। सब एक दूसरे से गुत्थम गुत्था हैं।

बाब {मेरी उम्मत के लोग पहली की उम्मतों की राहों पर चलेंगे।}

2002:– अबू सओ़द खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम लोग अगली उम्मतों के चाल-चलन की हू-बहू पैरवी करोगे, यहाँ तक कि अगर वह गोह (जानवर) के बिल में घुसे होंगे तो तुम भी घुस जाओगे। हम ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! क्या अगली उम्मतों से मुराद यहूद व नसारा हैं? आप ने फ़रमायाः फिर और कौन मुराद हैं।

2003:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी उम्मत को कुरैश का यह क़बीला हलाल कर देगा। सहाबा ने पूछाः फिर आप हमें क्या हुक्म देते हैं? आप ने फ़रमायाः लोग उन से दूर ही रहें तो वह बेहतर है।

फ़ाइदा:– अ़ल्लामा वहीदुज़्ज़माँ ने इस से बनी उमय्या का खान्दान मुराद लिया है।

बाब {फ़ितना-फ़साद के मौक़ा पर बैठा रहने वाला, खड़ा रहने वाले से बेहतर होगा।}

2004:– अबू बक्रा रज़ि॰ से रिवातय है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कई प्रकार के फ़ितने प्रकट होंगे, कई प्रकार के फ़ितने प्रकट होंगे। ऐसे समय बैठा रहने वाला चलने वाले से बेहतर होगा। और चलने वाला, भाग-दौड़ करने वाले से बेहतर होगा। कान खोल कर सुन लो! जब फ़ितना ज़ाहिर हो जाये तो जिस के पास ऊँट के रेवड़ हों वह अपने रेवड़ में चला जाये, जिस के पास बकरियाँ हों वह उन में चला जाये, जिस के पास खेती की ज़मीन हो वह अपनी ज़मीन में चला जाये (ताकि फ़ितना से दूर रहे) यह सुन कर एक व्यक्ति ने प्रश्न किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! जिस के पास न ऊँट हों और न बकरियाँ, और न ही ज़मीन हो, वह क्या करे? आप नेफ़रमायाः वह व्यक्ति अपनी तल्वार लेकर उस की धार को पत्थर से तोड़ डाले (ताकि लड़ाई का सामान न रहे) (फिर आप ने फ़रमायाः) मेरे मौला! मैं ने तेरा हुक्म पहुँचा दिया, मेरे मौला! मैं ने तेरा संदेश पहुँचा दिया, मेरे मौला! मैं ने तेरा आदेश पहुँचा दिया। यह सुन कर एक व्यक्ति ने पूछाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! अगर लोग मेरे साथ ज़बर्दस्ती करें और दोनों गरोह वालों में से कोई घसीट कर अपने साथ शामिल कर ले, फिर वहाँ मुझ पर तीर या तल्वार से हम्ला कर दें, या मुझे क़त्ल करने की कोशिश करें (ऐसे समय मैं क्या करुँ) आप ने फ़रमायाः वह अपने साथ तुम्हारा भी गुनाह समेट लेगा और सीधे जहन्नम में जायेगा।

बाब {जब दो मुसलमान अपनी—अपनी तल्वारें लेकर आमने—सामने खड़े हो जायें तो दो के दोनों ही जहन्नमी हैं।}

2005:– अहनफ़ बिन क़ैस ने बयान किया कि (जन्ग सिफ़्फ़ीन के मौक़ा पर) मैं इस इरादा से चला कि फ़लाँ का साथ दूगाँ। इतने में अबू बक्रा रज़ि॰ से मुलाक़ात हो गयी तो वह पूछने लगेः ऐ अहनफ़! कहाँ जा रहे हो? मैं ने कहाः नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चचा के लड़के (अ़ली) की सहायता के लिये जा रहा हूँ। इस पर उन्होंने कहाः ऐ अहनफ़! वापस चले जाओ, क्योंकि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है आप ने फ़रमायाः जब दो मुसलमान तल्वार लेकर परस्पर लड़ाई करें तो मारने वाला और मरने वाला दोनों ही जहन्नमी हैं। यह सुन कर मैं ने या किसी और ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! मारने वाला (क़ातिल) तो जहन्नम में जायेगा (यह बात तो समझ में आती है) लेकिन मरने वाला क्यों जायेगा? आप ने फ़रमायाः क्योंकि वह भी अपने (क़ातिल) साथी को क़त्ल करने का इरादा रखता था।

बाब {अ़म्मार बिन यासिर को बाग़ी गरोह क़त्ल करेगा।}

2006:– नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी उम्मे सलमा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अ़म्मार को बाग़ी गरोह क़त्ल करेगा।

फ़ाइदाः– ख़न्दक़ की लड़ाई के मौक़ा पर जब अ़म्मार ख़न्दक़ खोद रहे थे तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन के सर पर हाथ फेर कर फ़रमायाः ऐ सुमय्या के बेटे! तुम को एक बाग़ी गरोह क़त्ल करेगा (मुस्लिम–अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰) अमीर मुआ़विया और अ़ली रज़ि॰ के दर्मियान लड़ाई में अ़म्मार बिन यासिर रज़ि॰ ने अ़ली रज़ि॰ का साथ दिया था और उसी जन्ग में मारे गये थे।

बाब {क़ियामत उस समय तक न आयेगी जब तक मुसलमानों के दो बड़े गरोह आपस में न भिड़ जायें। और उस मौक़े पर दोनों ही गरोह का दावा एक होगा (कि हम हक़ पर हैं)}

2007:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत उस समय तक न आयेगी जब तक मुसलमानों के दो गरोहों के दर्मियान घमासान की जन्ग न हो जाये, और दोनों का दावा एक होगा (कि हम हक़ पर हैं)

फ़ाइदाः– इस से मुराद अ़ली और मुआ़विया रज़ि॰ के दर्मियान की जन्ग है, जिसे "सिफ़्फ़ीन" और "ज–मल" की लड़ाई के नाम से जाना जाता है।

बाब {क़ियामत उस समय तक न आयेगी यहाँ तक कि एक व्यक्ति किसी क़ब्र के पास से गुज़रेगा और

कहेगाः काश, इस क़ब्र में मैं दफ़न होता।}

2008:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उस ज़ात की क़सम, जिस केहाथ में मेरी जान है दुनिया उस समय तक फ़ना न होगी यहाँ तक कि एक व्यक्ति किसी क़ब्र के पास से गुज़रेगा तो उस पर लेट जायेगा और कहेगाः काश, इस में मैं दफ़न होता। उस समय उस व्यक्ति के लिये दीन एक मुसीबत बन जायेगी।

फ़ाइदा:– यानी उस के लिये फ़ैसला करना कठिन हो जायेगा कि लड़ने वाले दोनों गरोहों में कौन दीन इस्लाम पर है और कौन नहीं है। फिर यही फ़ैसला करेगा कि इन हालात में मेरा मर जाना ही बेहतर था।

बाब {क़ियामत उस समय तक न आयेगी जब तक मार-काट और लड़ाई, दंगा फ़साद आ़म न हो जाये।}

2009:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत उस समय तक न आयेगी जब तक "ह-रज" आ़म न हो जाये। सहाबा ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! 'ह-रज' किसे कहते हैं? आप ने फ़रमायाः हत्या, हत्या।

फ़ाइदा:– यानी चारों तरफ़ नाहक़ ख़ून बहेगा, हत्या आ़म हो जायेगी, फ़ितना, फ़साद, उपद्रव, लड़ाई, दन्गा, फ़साद और मार-काट चारों तरफ़ फैल जोयगा। इस हदीस की रोशनी में आज का ज़माना ही फ़िट होता है।

बाब {क़ियामत के निकट स्वँय हत्यारा (क़ातिल) ही नहीं जान पायेगा कि मैं ने फलाँ को किस लिये क़त्ल किया।}

2010:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है, दुनियाँ उस समय तक समाप्त न होगी यहाँ तक कि हत्या करने वाला यही नहीं जानेगा कि उस ने क्यों हत्या की और मरने वाला भी नहीं जान पायेगा कि मुझे क्यों मारा गया। इस पर लोगों ने पूछाः यह सब कैसे संभव है? आप ने फ़रमायाः मार-काट और हत्या आ़म हो जायेगी। ऐसे मौक़ा पर क़ातिल और मक़्तूल दोनों ही जहन्नमी हैं।

फ़ाइदा:– कहीं भी फ़साद होता है तो एक-दूसरे की देखा-देखी घरों को आग लगाना शुरु कर देते हैं, राह चलते लोगों पर गोलियाँ चला देते हैं, गली-कूचों में छुरा घोंप देते हैं। यह कोई नहीं देखता कि किस का घर जला रहा है, किस पर गोली चला रहा है और क्यों चला रहा है। बस उस समय ऐसा माहौल ही बन जाता है।

बाब {क़ियामत के निकट हिजाज़ की ज़मीन से एक आग निकलेगी।}

2011:– अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत उस समय तक न आयेगी यहाँ तक कि मुल्क हिजाज़ से एक आग निकलेगी जो बुस्रा के स्थान पर रहने वाले ऊँटों की गर्दनों को रोशन कर देगी (यानी वहाँ के ऊँट दिखाई देने लगेंगे)

फ़ाइदा:– 'बुस्रा' शाम के एक नगर का नाम है। 'हिजाज़' से मुराद सऊदी अ़रब की ज़मीन में मक्का और मदीना है। यानी उस की रोशनी इतनी तेज़ होगी कि दूर से दूर की हर चीज़ नज़र आ जायेगी। इमाम नववी रह० ने लिखा है कि यह आग क़ियामत की निशानी थी जो सन 654 हि० में मदीना के पूर्बी छोर पर ज़ाहिर हुयी थी। इस की सूचना मुझे उन लोगों ने दी जो उस समय मौजूद थे। कई दिनों तक लगातार मदीना मेंभूँचाल आता रहा, फिर यकायक ज़मीन फट गयीऔर आग निकलने लगी। यह सिलसिला चालीस दिन तक जारी रहा। अ़ब्बासी ख़िलाफ़त के अन्तिम समय में यह घटना घटी थी। (वहीदी)

बाब {क़ियामत उस समय तक न आयेगी यहाँ तक कि क़बीला दौस के लोग ज़िल् ख़िल्सा (नामक बुत) की पूजा न करने लगें।}

2012:– अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत उस समय तक न आयेगी जब तक क़बीला दौस की महिलायें ज़िल् ख़िल्सा बुत के चारों तरफ़ अपने चूतड़ न हिलायें। यह एक बुत था जिस की क़बीला दौस के लोग कुफ़्र के ज़माने में पूजा किया करते थे।

फ़ाइदा:– 'ज़ुल् ख़िल्सा' क़बीला दौस के एक खान्दान "ख़स्अ़म" का बुत था जिस का दूसरा नाम "काबा यमानी" भी था। इसे काबा शरीफ़ के मुकाबला मेंबनाया गया था। विस्तार से जानकारी के लिये देखें हदीस न० 1718 का फ़ाइदा।

बाब {क़ियामत के निकट लात और उ़ज़्ज़ा की पुनः पूजा की जायेगी।}

2013:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि० से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः रात और दिन उस समय तक फ़ना न होंगे जब तक कि लात और उ़ज़्ज़ा बुतों की दोबारा पूजा न होने लगेगी। यह सुन कर मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह तआ़ला ने जबकि यह आयत नाज़िल कर दीः "अल्लाह वह है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चा दीन देकर भेजा है ताकि उसे समस्त दीनों पर ग़ालिब कर दे, अर्गचे मुश्रिकों को कितना ही बुरा क्यों न लगे" (सूरः तौबा–33) तो अब दीन इस्लाम ग़ालिब आ गया (और अब बुतों की पूजा नही होगी) यह सुन कर आप ने फ़रमायाः जब अल्लाह पाक को यह मन्ज़ूर होगा तो एक पाक–साफ़ हवा भेजेगा जिस से हर वह मुसलमान जिस के दिल में राई के दाना के बराबर भी ईमान है वह मर जायेगा। अब इन के बाद वही लोग बचेंगे जिन के दिलों में ईमान नहीं होगा, चुनान्चे यह लोग

फिर अपने मुश्रिक बाप-दादों के दीन की तरफ़ लौट जायेंगे (और बुतों की पूजा करने लगेंगे)

बाब {क़ियामत उस समय तक न आयेगी जब तलक ऐसे नगर में जन्ग न हो जाये जिस के एक तरफ़ समुन्दर है और दूसरी तरफ़ ख़ुश्की।}

2014:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क्या तुम ऐसे शहर के बारे में जानते हो जिस के एक तरफ़ ख़ुश्की है और दुसरी तरफ़ समुन्दर है? सहाबा ने कहाः हाँ, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हम जानते हैं (उस का नाम कुस्तुन्तुनिया है) आप ने फ़रमायाः उस समय तक क़ियामत नहीं आयेगी जब तक उस नगर में सत्तर हज़ार बनी इस्हाक़ की औलाद में से जिहाद न कर लें। जब वह लोग उस नगर में दाख़िल होंगे तो न तो तल्वार से लड़ेंगे और न ही तीर से, बल्कि केवल लाइला-ह इल्लल्लाह का नारा पुकारेंगे। इस से नगर का एक कनारा टूट कर गिर जायेगा। इमाम सौर ने कहा कि मेरे ख़याल से इस से मुराद समुन्दर का कनारा है। फिर जब दूसरी बार लाइला-ह इल्लल्लाह का नारा पुकोंगे तो उस का दूसरा कनारा भी टूट कर गिर जायेगा। फिर जब तीसरी मर्तबा लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर का नारा पुकारेंगे तो उन के लिये हर तरफ़ से रास्ता खोल दिया जायेगा, फिर जिस राह से चाहेंगे वह दाख़िल होकर माले ग़नीमत हासिल करेंगे। और जब उसे तक़्सीम कर रहे होंगे कि इसी बीच एक चिल्लाने वाला चिल्ला-चिल्ला कर कहेगा कि दज्जाल निकल आया। यह सुन कर सब कुछ छोड़-छाड़ मुसलमान लोग लौट आयेंगे।

फ़ाइदा:– शहर को सुरक्षा के लिये चारों तरफ़ से चारदीवारी से घेर दिया जाता है। उस समय नगर कुस्तुन्तुनिया भी चारदीवारी से घिरा होगा। पहली तक्बीर में एक तरफ़ की चारदीवारी गिरेगी, दूसरी तक्बीर में दूसरी तरफ़ वाली ढह जायेगी। और अन्दर जाने का रास्ता खुल जायेगा। अमीर मुआ़विया रज़ि॰ के शासन काल में यज़ीद की कमान्डरी में इस मुल्क पर हम्ला किया गया था। उस समय यह शहर रुम की राजधानी था। इसी जन्ग में अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि॰ शहीद किये गये थे और उन की क़ब्र भी वहीं है। फिर उस्मानी ख़िलाफ़त के दौरे में मुहम्मद फ़ातेह ने दूसरी मर्तबा हम्ला कर इस मुल्क को फ़त्ह कर लिया और इस्लामी झन्डा लहराया। आजकल यह नगर एटली में है।

बाब {क़ियामत के निकट फुरात नदी से सोने का पर्वत ज़ाहिर होगा।}

2015:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत उस समय तक न आयेगी यहाँ तक कि फुरात नदी से सोने का एक पहाड़ निकलेगा जिस के लिये लोग जन्ग करेंगे और हर सौ में से 99 को मार डाला जायेगा। उस समय हर व्यक्ति यही सोचेगा कि मैं बच जाऊँ (और इस को हासिल कर लूँ)

2016:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अ़नक़रीब फुरात नदी से सोने का एक ख़ज़ाना निकलेगा, सो जो भी उस समय वहाँ मौजूद हो उस में से कुछ भी न लेगा।

फ़ाइदाः– यह सोने का पहाड़ या ख़ज़ाना अभी तक तो नहीं ज़ाहिर हुआ है।

बाब {क़ियामत के निकट तुम ऐसी क़ौम से जन्ग करोगे जिन के चेहरे ढाल की तरह होंगे।}

2017:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम लोग क़ियामत के निकट ऐसे लोगों से जन्ग करोगे जिन के जूते बालों के होंगे, उन के मुँह ढाल की तरह चौड़े-चकले होंगे, उन के मुँह लाल और आँखे छोटी होंगी।

फ़ाइदाः– इस से मुराद तातार के तुर्क लोग हैं जो मुल्क चीन के निकट के रहने वाले थे और चीनी लोगों के हमशक्ल थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की यह भविष्यवाणी भी पूरी हुयी और मुसलमानों ने उन से जिहाद किया। दूसरी रिवायत में है कि उन की नाक चिपटी होगी, बालों के जूते पहनेंगे।
मुस्लिम की दूसरी रिवायत में स्पष्ट तौर पर "तुर्क" का शब्द आया है (मुस्लिम-अबू हुरैरा)

बाब {क़ियामत के निकट क़बीला क़हतान से एक व्यक्ति ज़ाहिर होगा।}

2018:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत उस समय तक न आयेगी यहाँ तक कि क़बीला क़हतान का एक व्यक्ति निकलेगा जो अपनी लाठी से लोगों को हाँकेगा।

2019:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दिन और रात के समाप्त होने से पहले एक बादशाह पैदा होगा जिसे लोग 'जहजाह' कहेंगे।

2020:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब तक अल्लाह, अल्लाह, ज़मीन पर कहने वाले होंगे उस समय तक क़ियामत न आयेगी।

2021:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला (क़ियामत के निकट) रेशम से भी अधिक नर्म हवा भेजेगा, जो उन तक को न छोड़ेगी जिन के दिल में राई के दाना के बरारब ईमान होगा।

2022:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियमात सब से बुरे लोगों पर क़ाइम होगी।

2023:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

ने फ़रमायाः क़ियामत उस समय तक न क़ाइम होगी जब तक कि तीस के निकट दज्जाल न पैदा होंगे, और हर एक यही कहेगा कि मैं अल्लाह के सन्देष्टा हूँ।

2024:– जाबिर बिन समुरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना, आप ने फ़रमायाः क़ियामत आने से पहले झूठे लोग पैदा होंगे। एक दूसरी रिवायत में है कि (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया) उन से बच कर रहना।

बाब {क़ियामत के निकट यहूदियों से मुसलमानों की जन्ग होगी।}

2025:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत उस समय तक न आयेगी जब तक मुसलमान यहूदियों से लड़ाई न कर लेंगे। फिर मुसलमान उन्हें क़त्ल कर डालेंगे। यहाँ तक कि अगर कोई यहूदी किसी पत्थर या पेड़ की आड़ में छुपने की कोशिश करेगा तो वह पत्थर, या पेड़ बोलेगा कि ऐ मुसलमानों! ऐ अल्लाह के बन्दो! यह देखो मेरे पीछे एक यहूदी छुपा हुआ है, इसे आ कर क़तल कर डालो। मगर 'ग़रक़द' का पेड़ न बोलेगा, क्योंकि यह यहूद का पेड़ है।

फ़ाइदा:– 'ग़क़द' एक काँटेदार पेड़ का नाम है जो बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ बहुत अधिक होता है।

बाब {क़ियामत उस समय आयेगी जब रुमियों (यानी अ़ीसाइयों) की संख्या सब से अधिक होगी।}

2026:– मूसा बिन अ़ली अपने पिता से रिवायत करते हैं कि मुस्तैरिद क़रशी ने अ़म्र बिन अ़ास रज़ि॰ के सामने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत उस समय आयेगी जब अ़ीसाइयों की संख्या (हिन्दुओं, मुसलमानों) सभी लोगों से अधिक होगी। यह सुन कर अ़म्र बिन अ़ास ने कहाः ज़रा सोच लो कि तुम क्या कह रहे हो। इस पर मुस्तैरिद ने कहाः मैं वहीं बयान कर रहा हूँ जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है। इस पर अ़म्र बिन अ़ास ने कहाः तुम सच बयान करते हो, क्योंकि नसारा के अन्दर चार विशेष्तायें हैं (1) परेशानी के समय वह घबराते नहीं हैं (2) परेशानी आने के बाद वह बहुत जल्दी होशियार हो जाते हैं (3) लड़ाई में पीठ फेर कर भागने के बाद दोबारा लौट कर आक्रमण कर देते हैं (4) ग़रीबों, यतीमों और कमज़ोरों के लिये सब से अच्छे हैं (यानी उन की सहायता करते हैं) और एक पाँचवीं विशेष्ता भी है कि वह बादशाहों के अत्याचार को रोकते हैं।

2027:– युसैर बिन जाबिर से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मतर्बा कूफ़ा में लाल आँधी आयी तो एक व्यक्ति जिस की यह कहने की आ़दत थी "ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद क़ियामत आ गयी" यह सुन कर अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ जो टेक लगा कर बैठे हुये थे उठ कर बैठ गये और कहने लगेः क़ियामत उस समय तक न आयेगी

जब तक मीरास (तर्का) न बँटेगा और न माले-ग़नीमत को देख कर कोई ख़ुशी होगी। (यानी कोई वारिस ही जीवित न होगा जो तर्का बाँटे, और कोई जीवित ही न बचेगा जो माले-ग़नीमत को देख कर ख़ुश हो) फिर मुल्क शाम की तरफ़ इशारा कर के फ़रमायाः वहाँ मुसलमानों के दुश्मन एकत्र होंगे। मैं ने पूछाः इस से आप की मुराद ईसाई हैं? उन्होंने कहाः हाँ। यह लड़ाई इतनी भीषण होगी कि लोग भाग खड़े होंगे। फिर मुसलमान एक ऐसा लश्कर भेजेंगे जो मर जाना पसन्द करेंगे लेकिन जीत के बिना वापस नहीं लौटेंगे। फिर मुसलमान जम कर मुक़ाबला करेंगे यहाँ तक कि रात हो जायेगी। फिर यह और वह दोनों फ़रीक़ लौट आयेंगे और उन में से किसी को जीत न हासिल होगी। फिर वह पहला मुसलमानों का पहला लश्कर हलाक हो जायेगा तो मुसलमान दूसरा लश्कर भेजेंगे जो बिना जीत के वापस लौटना पसन्द न करेगा, चाहे मर जाये। फिर यह लश्कर भी जन्ग करेगा यहाँ तक कि रात हो जायेगी और यह दस्ता भी हलाक हो जायेगा और कामियाबी नहीं मिलेगी। फिर मुसलमान तीसरा दस्ता भेजेंगे जो बिना जीत के वापस लौटना पसन्द नहीं करेगा चाहे जान ही क्यों न चली जाये। लेकिन फिर यह और वह दोनों लौट आयेंगे और किसी को जीत न हासिल होगी।मैं ने पूछाः इस से आप की मुराद ईसाई हैं? उन्होंने कहाः हाँ। यह लड़ाई इतनी भीषण होगी कि लोग भाग खड़े होंगे। फिर मुसलमान एक ऐसा लश्कर भेजेंगे जो मर जाना पसन्द करेंगे लेकिन जीत के बिना वापस नहीं लौटेंगे। फिर मुसलमान जम कर मुक़ाबला करेंगे यहाँ तक कि रात हो जायेगी। फिर यह और वह दोनों फ़रीक़ लौट आयेंगे और उन में से किसी को जीत न हासिल होगी। फिर वह पहला मुसलमानों का लश्कर हलाक हो जायेगा तो मुसलमान दूसरा लश्कर भेजेंगे जो बिना जीत के वापस लौटना पसन्द न करेगा, चाहे मर जाये। फिर यह लश्कर भी जन्ग करेगा यहाँ तक कि रात हो जायेगी और यह दस्ता भी हलाक हो जायेगा और कामियाबी नहीं मिलेगी। फिर मुसलमान तीसरा दस्ता भेजेंगे जो बिना जीत के वापस लौटना पसन्द नहीं करेगा चाहे जान ही क्यों न चली जाये। लेकिन फिर यह और वह दोनों लौट आयेंगे और किसी को जीत न हासिल होगी।

फिर चौथे दिन तमाम मुसलमान मिल कर उन पर आक्रमण कर देंगे, अल्लाह पाक काफ़िरों को पराजित कर देगा। यह जन्ग ऐसी होगी कि वैसी जन्ग कभी नहीं लड़ी गयी होगी। यहाँ तक कि परिन्दे भी अगर उन के पास से गुज़रेंगे तो आगे न बढ़ सकेंगे और गिर कर मर जायेंगे। एक बाप की सौ औलाद होगी, उन में से एक को छोड़ बाक़ी सब मर जायेंगे। ऐसी सूरत में माले ग़नीमत हासिल होने पर क्या ख़ुशी होगी और कैसे तर्का तक़सीम होगा (जब वही अकेला ही बचा है) अभी मुसलमान इसी हालत में होंगे कि इसी बीच एक और आफ़त आ पड़ेगी। एक चीख़ सुनाई देगी कि मुसलमानों के पीछे उन के बाल बच्चों में दज्जाल आ चुका है। चुनान्चे उन के हाथों में जो कुछ होगा उसे छोड़-छाड़ कर उस की तरफ़ मुड़ जायेंगे और (उस से मुक़ाबला के लिये) दस घोड़ सवारों का दस्ता भेजेंगे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं उन सवारों के नाम, उन

के बाप-दादों का नाम और उन के घोड़ों के रन्ग तक को पहचानता हूँ। वह दुनिया के जाने-माने सवारों में से होंगे।

बाब {दज्जाल के आने से पहले मुसलमानों को जीत हासिल होगी।}

2028:– उत्बा के बेटे नाफ़े रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ एक जिहाद में शरीक थे कि इसी दर्मियान पश्चिम से कुछ लोग आप से मिलने के लिये आये, वह लोग ऊन के कपड़े पहने हुये थे, उस समय आप बैठे हुये थे। इसी बीच मेरे दिल में ख़याल आया कि मैं जा कर आप के और उन के बीच में खड़ा हो जाऊँ, क्योंकि ऐसा न हो कि वह लोग धोखे से आप पर हम्ला कर दें। फिर ख़याल आया कि हो सकता है आप उन से कुछ राज़ की बातें कर रहे हों (और मेरा जाना बुरा लगे) लेकिन फिर भी मैं जा कर उन के और आप के बीच में खड़ा हो गया। उस समय आप ने मेरे हाथ पर चार बातें गिनायीं जिन्हें मैं ने याद कर लिया। आप ने फ़रमायाः पहले तो अ़रब दीप में तुम जिहाद करोगे जिस में अल्लाह पाक तुम्हें फ़तह नसीब करेगा। फिर फ़ारस वालों से जिहाद करोगे, उस में भी अल्लाह पाक फ़त्ह नसीब करेगा। फिर अ़ीसाइयों से लड़ोगे उस में अल्लाह पाक तुम्हें रुम वालों पर फ़त्ह देगा। फिर दज्जाल से लड़ोगे, उस में भी अल्लाह पाक तुम्हें फ़त्ह देगा।

इमाम नाफ़े ने कहाः ऐ जाबिर! मेरे ख़याल से जब रुम फ़तह हो जायेगा उस के बाद दज्जाल निकलेगा।

बाब {कुस्तुन् तुनिया की फ़तह का बयान।}

2029:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत उस समय तक क़ाइम न होगी जब तक रुमी लोग "आमाक़" या "वाबिक़" तक न पहुँच जायें। उन से लड़ने के लिये मदीना से एक फ़ौजी दस्ता रवाना होगा वह उस समय दुनिया के सब से नेक लोगों में से होगा। जब दोनों लश्कर आमने-सामने होंगे तो रुमी लश्कर के लोग मुसलमानों से कहेंगे कि तुम लोग हमारे और इन के दर्मियान न आओ जिन्होंने हमोर कुछ लोगों को बन्दी बना लिया है। इस पर मुसलमान कहेंगे कि अल्लाह की क़सम! हम तुम्हें अपने भाइयों से लड़ने के लिये आज़ाद नहीं छोड़ देंगे। फिर वह उन से जिहाद करेंगे, लेकिन एक तिहाई मुसलमान भागा जायेंगे, इन की तौबा अल्लाह पाक कुबूल नहीं करेगा। उन में से एक तिहाई क़त्ल कर दिये जायेंगे, यह लोग अल्लाह के नज़दीक़ सब से बुलन्द मतर्बा के शहीदों में होंगे। बाक़ी एक तिहाई फ़त्ह हासिल कर लेंगे। वह कुसतुन्तुनिया को फ़त्ह कर लेंगे। और जिस समय माले ग़नीमत को तक़्सीम कर लगेंगे, अपनी तल्वारों को ज़ैतून के पेड़ों पर लटका देंगे। इतने में शैतान चीख़ मार कर कहेगाः तुम्हारे पीछे तुम्हारे घर वालों में दज्जाल पहुँच गया है, यह सुन कर मुसलमान वहाँ से चल पड़ेंगे, हालाँकि यह सूचना झूठी होगी। जब वह लोग मुल्क शाम पहुँच जायेंगे तब दज्जाल निकलेगा। जब लड़ाई के लिये सफ़ें दुरुस्त की जायेंगी

और नमाज़ की तय्यारी कर रहे होंगे उस समय अ़ीसा अ़लै॰ नाज़िल होंगे और वह इमामत करायेंगे। दज्जाल उन को देख कर इस तरह गल जायेगा जिस प्रकार नमक पानी में गल जाता है। अगर अ़ीसा अ़लै॰ उसे कुछ न कहते फिर भी वह गल जाता, लेकिन अल्लाह पाक उसे उन्ही के हाथों क़त्ल कराएगा और उन की बर्छी पर लोगों को उस का खून दिखायेगा।

बाब {जो लश्कर बैतुल्लाह को गिराने के इरादे से आयेगा वह धँसा दिया जायेगा।}

2030:– उबैदुल्लाह बिन क़िबतिय्या से रिवायत है कि हारिस बिन रबीआ़ और अ़ब्दुल्लाह बिन सफ़वान दोनों (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पत्नी) उम्मे समला रज़ि॰ के पास गये, उस समय मैं भी उन के साथ था। यह उस समय की बात है जब अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि॰ मक्का के हाकिम थे। उन लोगों ने उम्मे सलमा रज़ि॰ से उस लश्कर के बारे में पूछा जो धँसा दिया जायेगा। इस पर उन्होंने बताया कि जो व्यक्ति काबा के अन्दर जा कर पनाह लेगा तो उस की तरफ़ एक लश्कर भेजा जायेगा जब वह एक मैदान में पहुँचेगा तो धँसा दिया जायेगा। उम्मे सलमा ने कहा कि मैं ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! जो शख़्स उस लश्कर में ज़र्बदस्ती शामिल किया गया हो (और शामिल होने को दिल से बुरा जानता हो) आप ने फ़रमायाः वह भी धँसा दिया जायेगा, लेकिन क़ियामत के दिन अपनी निय्यत के अनुसार उठाया जायेगा। अबू जाफ़र ने कहा कि मैदान से मुराद मदीना का मैदान है। (और जो पनाह लेगा वह इमाम महदी होंगे)

2031:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः (क़ियामत के निकट) मदीना की आबादी फैल कर "इहाब" या "यहाब" तक पहुँच जायेगी। जुहैर ने कहा कि मैं ने सुहैल से पूछाः 'इहाब' मदीना से कितनी दूरी पर है? उन्होंने कहा कि इतनी दूरी पर है (यानी काफ़ी दूरी है)

2032:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः काबा को हब्शा का छोटी पिंडलियों वाला एक व्यक्ति बर्बाद करेगा।

फ़ाइदाः– इस से मुराद अबी सैना के काफ़िर हैं जो नसारा हैं। या फिर हब्शा के बुतों की पूजा करने वाले काफ़िर लोग मुराद हैं, जिन की हुकूमत होगी, उस समय मुसलमान दुनिया से उठ जायेंगे, और उसे बर्बाद करने का मौक़ा हाथ लग जायेगा।

2033:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुल्क इराक़ अपने क़फ़ीज़ और दिर्हम को रोक लेगा, और मुल्क शाम अपने मुदी और दीनार को रोक लेगा। इसी प्रकार मुल्क मिस्र अपने इरदब व दीनार को रोक लेगा। और तुम पहले जैसे थे वैसे रह जाओगे, और तुम जैसे पहले थे वैसे हो जाओगे, और तुम जैसे पहले थे वैसे हो जाओ। यह हदीस बयान कर के अबू हुरैरा रज़ि॰ ने कहा कि इस पर अबू हुरैरा का खून और माँस गवाही देता है (कि इस हदीस में कोई शक

नहीं है)

फ़ाइदाः– क़फ़ीज़, मुदी, इरदब, दिर्हम, दीनार यह सब उन मुल्कों के नाप-तौल के पैमाने और सिक्के हैं। "जैसे थे वैसे हो जाओगे" का यह अर्थ है कि काफ़िरों का ग़लबा होगा, मुसलमानों की हुकूमत समाप्त हो जायेगी और जिस प्रकार मुसलमान इस्लाम के आरंभ में कमज़ोर और बेसहारा थे, उसी हालत में हो जायेंगे। काफ़िर लोग कुछ भी मुसलमानों को न देंगे, सब कुछ रोक लेंगे।

2034:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सूखा काल यह नहीं है कि वर्षा न हो, बल्कि इस का नाम है कि वर्षा हो और खूब हो लेकिन भूमि से कुछ न उपजे।

बाब {क़ियामत के निकट अमानत और ईमान दिलों से उठा लिया जायेगा।}

2035:– हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दो हदीसें बयान फ़रमायी थीं, उन में से एक को तो मैं देख चुका और दूसरी के देखने का इन्तिज़ार कर रहा हूँ। (पहली हदीस यह है कि) आप ने हम से बयान फ़रमाया कि अमानत लोगों के दिलों की जड़ पर उतरी है, फिर उन्होंने कुरआन को हासिल किया और हदीस को हासिल किया। फिर आप ने (दूसरी) हदीस बयान फ़रमायी कि अमानत उठ जायेगी। एक व्यक्ति थोड़ी देर के लिये सोएगा कि उसी दौरान उस के दिल से अमानत उठा ली जायेगी और उस का एक हल्का सा निशान बाक़ी रह जायेगा। फिर सोयेगा तो अमानत (यानी जो निशान बचा है) वह भी उठ जायेगा और केवल उस की जगह एक छाला रह जायेगा, जिस तरह कोई अपने पाँव पर आग डाल ले तो चमड़ी फूल जायेगी और एक छाला निकल आयेगा और उस के अन्दर कुछ नहीं होगा। फिर आप ने एक कंकरी ले कर अपने पाँव पर डाली और फ़रमायाः लोग लेन-देन करेंगे लेकिन उन में से कोई अमानत को अदा करने वाला न होगा। लोग कहेंगे कि फ़लाँ क़ौम में केवल एक अमानत अदा करने वाला बचा है। इसी प्रकार लोग कहेंगे कि एक व्यक्ति और है जो बड़ा होशियार और बुद्विमान है, लेकिन उस के दिल में राई के दाना के बराबर भी ईमान न होगा।

हुज़ैफ़ा रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने वह ज़माना भी देखा है जब मैं बिना किसी डर के लोगों से लेन-देन करता था। क्योंकि अगर वह मुसलमान होता तो उस का हाकिम उसे बेईमानी करने से रोकता था। और अगर वह यहूदी या ईसाई होता तो उसे भी उस का हाकिम बेईमानी से रोकता था। लेकिन अब तो मैं फ़ँला-फ़लाँ को छोड़ कर और किसी से लेन-देन न करूँगा।

बाब {क़ियामत के निकट एक ख़लीफ़ा (यानी इमाम महदी) पैदा होगा जो लोगों को लपें भर-भर कर माल देगा।}

2036:- अबू नज़रा से रिवातय है उन्होंने बयान किया कि हम सब जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ के पास बैठे हुये थे कि उन्होंने कहाः इराक़ वालों के क़फ़ीज़ और दिंहम आना बन्द हो जायेंगे। हम ने पूछाः किस कारण से? उन्होंने कहाः अ़जम के रहने वाले लोग उसे रोक लेंगे। फिर कहा कि क़रीब है कि मुल्क शाम और रुम के लोग उसे रोक लेंगे। फिर इस के बाद वह थोड़ी देर ख़ामोश रहे इस के बाद कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी आख़िरी उम्मत में एक ख़लीफ़ा होगा जो मुट्ठी भर-भर कर लोगों को माल देगा और उसे गिनेगा नहीं। इस पर जरीर ने कहा कि मैं ने अबू नज़रा और अबू उला से पूछाः आप का क्या ख़याल है वह उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ होंगे? उन्होंने कहाः नहीं।

फ़ाइदाः- शाम और इराक़ के लोग ज़कात आदि क्यों नहीं देंगे? देखें हदीस न॰ 2033 का फ़ाइदा। माल देने वाले इमाम महदी होंगे जो क़ियामत के निकट ओयंगे और ख़िलाफ़त करेंगे।

बाब {वह निशानियाँ जो क़ियामत से पूर्व प्रकट होंगीं।}

2037:- हुज़ैफ़ा बिन उसैद ग़िफ़ारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमारे पास तशरीफ़ लाये उस समय हम लोग आपस में बातें कर रहे थे। आप ने पूछाः किस विषय पर बातें कर रहे हो? हम लोगों ने कहाः क़ियामत के बारे में ज़िक्र कर रहे थे। आप ने फ़रमायाः क़ियामत उस समय तक न आयेगी जब तक दस निशानियाँ न देख लोगे। फिर आप ने धुवाँ, दज्जाल, ज़मीन के जानवर, सूरज के पश्चिम से निकलने, अ़ीसा अ़लै॰ के आकाश से उतरने, याजूज-माजूज के निकलने, तीन स्थान पर ज़मीन के धंसने, एक पूरब में दूसरे पश्चिम में और तीसरे अ़रब महदीप में। आप ने इन सब निशानियों का ज़िक्र किया फिर फ़रमायाः इन के बाद एक आग पैदा होगी जो लोगों को यमन से निकालेगी और हाँकती हुयी (मुल्क शाम की ज़मीन) महशर की तरफ़ ले जायेगी।

फ़ाइदाः- 'महशर' मुल्क शाम में एक क्षेत्र का नाम है। 'ज़मीन का जानवर' इस का ज़िक्र सूरः नम्ल आयत 82 में भी आया है। अहादीस में आया है कि यह जानवर लोगों से बात-चीत करेगा, लोगों को जन्नत-जहन्नम की सूचनायें देगा। यह जानवर मक्का के निकट के एक स्थान से निकलेगा।

बाब {अँधेरी रात की तरह काले फ़ितनों के आने से पहले नेक कार्य करने में जल्दी कर लो।}

2038:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अँधेरी रात की तरह तारीक फितनों के आने से पहले-पहले जल्दी-जल्दी नेक

काम कर डालो। (एक समय ऐसा आयेगा कि) सुब्ह को एक व्यक्ति ईमानदार होगा और शाम को काफ़िर हो जायेगा। इसी प्रकार शाम को ईमानदार होगा और सुब्ह होते-होते काफ़िर हो जायेगा और अपने दीन को दुनिया के मामूली माल के बदले बेच डालेगा।

बाब {छः चीज़ों के आने से पहले जल्दी-जल्दी नेक कार्य कर डालो।}

2039:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः छः चीज़ों से पहले नेक कार्यों के करने में जल्दी करो (1) दज्जाल (2) धुवाँ (3) ज़मीन का जानवर (4) सूरज का मग़रिब से निकलना (5) क़ियामत (6) मौत।

फ़ाइदा:- जब यह छः चीज़ें प्रकट हो जायेंगी तो लोगों को नेक अ़मल करेन की तौफ़ीक़ नहीं मिलेगी और अगर कोई नेक अ़मल भी करेगा तो उस पर नेकी नहीं मिलेगी।

बाब {फ़ितना-फ़साद के ज़माना में इबादत करने का बयान।}

2040:- माक़िल बिन यसार रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः फ़ितना-फ़साद के ज़माना में इबादत करने का इतना सवाब है, जैसे मेरे पास हिजरत करने का।

बाब {इब्ने सय्याद के क़िस्सा का बयान।}

2041:- अबू सओ़द खुदरी रज़ि॰ से रिवातय है उन्होंने बयान किया कि कि हम लोग हज्ज या उम्रा करने के इरादा से (मदीना से) निकले तो हमारे साथ इब्ने साइद भी था। हम लोगों ने एक स्थान पर पड़ाव डाला तो लोग इधर-उधर फैल गये और मैं उस के साथ रह गया। चूंकि उस के बारे में तरह-तरह की बातें कही जा चुकी थीं इसलिये मुझे उस से घबराहट होने लगी। इसी बीच उस ने अपना सामान भी ला कर मेरे सामान के साथ रख दिया। इस पर मैं ने उस से कहाः चूँकि गर्मी बहुत अधिक है इसलिये अगर तुम अपना सामान उस पेड़ के नीचे रख देते तो अच्छा होता। चुनान्चे उस ने वैसा ही किया। इसी बीच हमें कुछ बकरियाँ दिखाई पड़ीं तो वह उन का दूध निकालने चला गया और दूध का एक पियाला भर कर ले आया और कहने लगाः ऐ अबू सओ़द! लो पीलो। मैं ने कहाः गर्मी अधिक है और दूध भी गर्म होता है (इसलिये मैं न पियूँगा) हालाँकि बात इतनी थी कि मैं उस के हाथ से दूध लेना पसन्द नहीं करता था, या उस के हाथ से पीना नहीं पसन्द करता था। वह कहने लगाः ऐ अबू सओ़द! लोग मेरे बारे में जो बातें करते हैं उन की वजह से मेरा दिल चाहता है कि एक रस्सी किसी पेड़ पर लटका कर उस से अपना गला घूँट लूँ। ऐ अबू सओ़द! जिन लोगों को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीस नहीं मालूम है (उन को जाने दीजिये) लेकिन ऐ अन्सार के लोगों! तुम से तो हदीस पोशीदा नहीं है, क्या तुम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीस को सब से अधिक जानने वाले नहीं हो? क्या नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह नहीं फ़रमाया है कि वह (दज्जाल) काफ़िर है और मैं मुसलमान हूँ। क्या

आप ने यह नहीं फ़रमाया है कि वह लावलद होगा और मैं अपनी औलाद को मदीना में छोड़ कर आया हूँ। क्या आप ने यह नहीं फ़रमाया था कि दज्जाल मक्का और मदीना में नहीं दाख़िल हो सकेगा? और मैं मदीना से आया हूँ और मक्का जा रहा हूँ। उस की बातों को सुन कर अबू सओद ने कहा कि मैं उसे हक़ पर समझ लेता, लेकिन उस ने कह दिया कि अल्लाह की क़सम! मैं दज्जाल को पहचानता हूँ, और यह भी जानता हूँ कि वह कहाँ पैदा हुआ है और इस समय कहाँ है। इस पर मैं ने कहा कि तेरे लिये सारा दिन तबाही और बर्बादी में बीते।

फ़ाइदा:– यानी आख़िर की बातें कह कर उस ने शुब्हा में डाल दिया कि उस का कुछ न कुछ संबन्ध दज्जाल से ज़रुर है जभी तो वह उस को और उस के स्थान को जानता है। जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह और उमर रज़ि॰ क़सम खा कर कहते थे कि वह (यानी इब्ने साइद) दज्जाल है (मुस्लिम-जाबिर नीचे की हदीस न॰ 2043) लेकिन इतना तो तै है कि वह दज्जालों में से एक दज्जाल था। बहरहाल इब्ने साइद या इब्ने सय्याद उस का नाम था, इस पर शैतान सवार था, यहूदी बालक था, अभी नाबालिग़ था, कमज़ोर दिमाग़ का था, पागलों की सी बातें करता था, इस ने नबुव्वत का भी दावा किया था। (देखें नीचे की हदीस न॰ 2044)

2042:– अबू सओद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इब्ने सय्याद से पूछा: जन्नत की मिट्टी कैसी है? उस ने कहा: सफ़ेद है और मुश्क की तरह खुश्बूदार है।

2043:– मुहम्मद बिन मुन्कदीर ने बयान किया कि मैं ने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ को क़सम खा कर कहते सुना कि इब्ने साइद दज्जाल है। इस पर मैं ने कहा: तुम अल्लाह की क़सम खा कर कहते हो? उन्होंने कहा कि उमर रज़ि॰ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने क़सम खा कर कहते थे (कि वह दज्जाल है) लेकिन आप ने इन्कार नहीं फ़रमाया।

2044:– अ़ब्दुल्लह बिन अ़ब्बास रज़ि॰ ने बयान किया कि उमर रज़ि॰ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और चन्द लोगों के साथ इब्ने सय्याद के पास गये, वह उस समय क़बीला बनी मुग़ाला के क़िले के पास चन्द लड़कों के साथ खेल रहा था, वह उन दिनों जवान होने के क़रीब था। उस को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के आने की ख़बर न हुयी, चुनान्चे आप ने जा कर उस की पीठ पर अपना हाथ मारा और पूछा: क्या तू इस बात की गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? उस ने आप की तरफ़ देख कर कहा: मैं गवाही देता हूँ कि तुम उम्मी (अनपढ़) लोगों के रसूल हो। फिर उस ने आप से पूछा: क्या तुम भी इस बात की गवाही देते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? आप ने उस की बात का कोई उत्तर न दिया और फ़रमाया: मैं अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाता हूँ। फिर आप ने उस से पूछा: तुझे क्या दिखाई देता है? उस ने

कहाः मेरे पास कभी सच्चा आता है और कभी झूठा। आप ने फ़रमायाः तुझ पर मामला गड़बर हो गया है (यानी हक़ व बातिल मुश्तबह हो गया है) फिर आप ने फ़रमायाः मैं ने तुझ से पूछने के लिये एक बात दिल में छुपाई है (वह कौन सी बात है?) उस ने कहाः वह "दुख़" है। आप ने फ़रमायाः तेरा नास जाये, तू अपनी सीमा से आगे नही बढ़ सकेगा। यह सुन कर उमर बिन बिन ख़त्ताब रज़ि० ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे अनुमति दें ताकि मैं इस की गर्दन मार दूँ। आप ने फ़रमायाः अगर यह वही (यानी हक़ीक़ी दज्जाल) है तो तुम इस का कुछ न बिगाड़ सकोगे, लेकिन अगर वह नहीं है तो इस के मार डालने से कोई फ़ाइदा नहीं।

सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि कि मैं ने अपने पिता अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० को बयान करते सुना कि एक मतर्बा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उबय्यि बिन कअ़ब अन्सारी खजूरों के उस बाग़ में गये जिस में इब्ने सय्याद रहता था। बाग़ में दाख़िल होने के बाद आप खजूर के पेड़ों की आड़ में छुपने लगे। आप यह चाहते थे कि इस से पूर्व कि वह मुझे देखे में चुपके से उस की कुछ बातें सुन सकूँ। आप ने देखा कि वह बिस्तर पर चादर ओढ़े हुये लेटा हुआ है और कुछ बड़बड़ा रहा है। उस की माँ ने आप को खजूर की आड़ में छुपते देख लिया तो उस ने कहाः ऐ साफ़! (यह उस का नाम था) वह मुहम्मद आ रहे हैं। यह सुनते ही वह जल्दी से उठ बैठा। आप ने फ़रमायाः काश वह उस को उसी हालत में रहने देती तो उस के बारे में मालूम हो जाता (कि वह पागल है या जादूगर)

सालिम ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने कहाः इस के बाद आप ने अल्लाह पाक की हम्द-सना बयान की जिस के वह पात्र हैं, फिर दज्जाल का ज़िक्र किया और फ़रमायाः मैं तुम को इस से आगाह कर रहा हूँ और हर नबी ने अपनी क़ौम को आगाह किया है, यहाँ तक कि नूह अ़लै० ने भी अपनी उम्मत को दज्जाल से आगाह किया है। लेकिन मैं तुम्हें दज्जाल के बारे में कुछ ऐसी बातें बताऊँगा जो किसी ने नहीं बताई हैं। सुनो! वह काना होगा, और अल्लाह पाक काना नहीं है।

इब्ने शिहाब ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के कुछ सहाबा ने मुझ से बयान किया कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दज्जाल का ज़िक्र करते हुये फ़रमायाः उस की दोनों आँखों के दर्मियान काफ़िर लिखा होगा (यानी या तो वास्तव में लिखा होगा, या उस के चहरे से स्पष्ट होगा कि वह काफ़िर है) तो जो कोई उस के कामों को बुरा जानेगा, या हर मोमिन व्यक्ति उस को पढ़ लेगा। फिर आप ने फ़रमायाः यह भी जान लो कि तुम में से कोई मरने से पहले अपने रब को न देख सकेगा।

फ़ाइदाः- ज़ाहिर है कि मरने के बाद ही हश्र के मैदान में देख सकेगा।

2045:- इब्ने उमर रज़ि० ने बयान किया कि मैं इब्ने सय्याद से दो बार मिल चुका हूँ।

पहली बार मिला तो मैं ने लोगों से पूछाः क्या तुम लोग इसे दज्जाल समझते हो? उन्होंने कहाः अल्लाह की क़सम नहीं। इस पर मैं ने कहाः तुम लोगों ने तो मुझे झूठा बना दिया, अल्लाह की क़सम! तुम में से ही कुछ लोगों का कहना है कि वह उस समय तक नहीं मरेगा जब तक वह तुम सब से अधिक मालदार और बाल-बच्चों वाला न हो जायें, तो वह आज़कल ऐसा ही है। इस के बाद इब्ने सय्याद ने मुझ से बातें कीं और मैं उस से अलग हो गया।

फिर जब उस से दूसरी बार मिला उस समय उस की आँख फूली हुयी थी। मैं ने पूछाः तेरी आँख में क्या हुआ? उस ने कहाः मुझे नहीं मालूम। मैं ने कहाः आँख तुम्हारे सर में है और तुम्ही को नहीं मालूम? उस ने कहाः अगर अल्लाह चाहेगा तो तेरी इस लाठी में आँख पैदा कर देगा। यह कह कर गधे की आवाज़ निकाल कर इतने ज़ोर से चिल्लाया कि उतनी ज़ोर की आवाज़ मैं ने नहीं सुनी थी। मेरे बाज़ साथियों का ख़याल है कि मैं ने उस को अपनी लाठी मारी तो वह टूट गयी, हालाँकि अल्लाह की क़सम! मुझे इस का पता ही नहीं चला। इस के बाद इब्ने उमर रज़ि० अपनी बहन हफ़सा के पास गये और उन से पूरी कहानी सुनाई तो उन्होंने कहाः तुम्हें उस से क्या लेना-देना था? क्या तुम्हें नहीं मालूम कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया हैः जो चीज़ लोगों के पास दज्जाल को भेजेगी वह उस का गुस्सा होगा जो उस को किसी पर आयेगा।

2046:- हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि दज्जाल के साथ क्या क्या चीज़ें होंगी। उस के साथ बहती हुयी दो नहरें होंगी। एक देखने में सफ़ेद पानी मालूम होगी और दूसरी देखने में भड़कती हुयी आग मालूम होगी। तो जिस को मौक़ा मिले वह उस नहर में जाये जो देखने में आग मालूम होती है, फिर आँख मूँद कर और सर झुका कर उस का पानी पी ले, उस का पानी ठन्डा होगा। दज्जाल की एक आँख कानी होगी, उस पर एक मोटी फली होगी, उस की दोनों आँखों के दर्मियान काफ़िर लिखा हुआ होगा, उस को हर मोमिन बन्दा पढ़ लेगा चाहे उस को लिखना-पढ़ना आता हो या न आता हो।

2047:- हुज़ैफ़ा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दज्जाल बायीं आँख का काना होगा, उस के बाल घने होंगे, उस के साथ एक बाग़ होगा और आग भी होगी। उस की आग बाग़ है और उस का बाग़ आग है।

फ़ाइदा:- यानी जो भी चीज़ उस के पास होगी वह उल्टी नज़र आयेगी। पानी, आग दिखाई देगी और आग, पानी।

2048:- नवास बिन सम्आ़न रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक दिन सुब्ह-सुब्ह दज्जाल का ज़िक्र किया। आप ने उस के फ़ितना को कभी मुख़्तसर और कभी तफ़सील से बयान किया, यहाँ तक कि हमें शुब्हा हो गया कि वह खजूरों के झुन्ड में आ पहुँचा। फिर जब हम शाम को आप के पास

दोबारा गये तो आपने हमारे चेहरों को देख कर (सुब्ह को दज्जाल के फ़ित्ना के डर को) भाँप लिया, चुनान्चे फ़रमायाः तुम लोगों का क्या हाल है? हम ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! आप ने सुब्ह को दज्जाल का ज़िक्र किया था, उस में उस के ज़िक्र को कभी संक्षिप्त में और कभी विस्तार से बयान किया तो हम लोगों ने शुब्हा किया कि संभवतः वह खजूर के झुन्ड में आ पहुँचा है। आप ने फ़रमायाः (दज्जाल को जाने दो) उस के अ़लावा दूसरे फ़ितनों से मुझे अधिक डर है। अगर मेरी ज़िन्दगी में दज्जाल निकला तो मैं उस का मुक़ाबला करूँगा, लेकिन अगर मेरे बाद निकला तो हर व्यक्ति स्वँय मुक़ाबला करेगा और हर व्यक्ति का अल्लाह ख़लीफ़ा और निगराँ है। वह नौजवान होगा, उस के बाल घोंघराले होंगे, उस की आँखें फूली हुयी होंगी, मैं समझता हूँ कि वह अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन क़ुत्न के मुशाबह होगा, तुम में से जो भी उस को देखे तो उस के सामने सूरः कहफ़ की आयतें पढ़े। वह शाम और इराक़ के बीच से निकलेगा और चारों तरफ़ फ़साद फैलायेगा। उस समय ऐ अल्लाह के बन्दो! अपने ईमान पर क़ाइम रहना। हम ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! वह ज़मीन में कब तक रहेगा? आप ने फ़रमायाः चालीस दिन तक। लेकिन उस समय का पहला दिन एक वर्ष के बराबर होगा, दूसरा दिन एक माह के बराबर और तीसरा एक सप्ताह के बराबर और बाक़ी दिन आ़म दिन के बराबर होंगे। हम ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! जो दिन एक वर्ष केबराबर होगा उस में हमें एक दिन की नमाज़ पढ़ना काफ़ी होगा? आप ने फ़रमायाः नहीं, बल्कि उस के लिये एक वर्ष की नमाज़ों का अन्दाज़ा कर लेना (यानी आ़म दिनों में जितनी देर के बाद नमाज़ें पढ़ते हो, उतनी देर के बाद नमाज़ें पढ़ते रहना) सहाबा ने पूछाः ऐअल्लाह के रसूल! वह जमीन में किस प्रकार चलेगा? आप ने फ़रमायाः उस वर्षा की तरह जिस को पीछे से हवा ढकेल रही हो। वह एक क़ौम के पास जा कर उन्हें ईमान की दावत देगा तो वह लोग उस पर ईमान ले आयेंगे और उस की दावत को क़ुबूल कर लेंगे। वह आसमान से पानी बरसने का हुक्म देगा तो वर्षा होने लगेगी, उस के हुक्म से ज़मीन घास और हरियाली उगायेगी। उस घास को चर कर जब जानवर शाम को अपने घरों को वापस आयेंगे तो उनके कोहान पहले से लंबे, थन बड़े और कोखें तनी हुयी होंगी।

फिर वह दूसरी क़ौम के पास जा कर दावत देगा तो वह लोग उस की दावत को ठुकरा देंगे, चुनान्चे वह उन के पास से वापस लौट जायेगा, उन पर सूखा काल और तन्गी आयेगी, उन के पास जो कुछ भी माल होगा वह सब समाप्त हो जायेगा। वह एक बंजर ज़मीन के पास से गुज़रेगा तो उस से कहेगाः अपने ख़ज़ाने उगल दे, चुनान्चे वह उगल देगी, और वह ख़जाने उन लोगों के पास इस प्रकार आयेंगे जैसे शहद की मक्खिया अपनी रानी के पास जमा रहती हैं। फिर वह एक जवान मर्द को बुलाएगा और तल्वार से उस के दो टुक्ड़े कर देगा, जैसे निशाना दो टूक हो जाता है। फिर वह उसे बुलायेगा तो वह (ज़िन्दा होकर) चमकते-दमकते चेहरे के साथ हँसता हुआ आयेगा। इसी दौरान अल्लाह पाक ओ़सा मसीह को भेज देगा, वह दमिश्क शहर के पूरब से सफ़ेद मीनार के पास दो पीले

रन्ग के जोड़े पहने, दो फ़रिश्तों के कन्धों पर हाथ रखे हुये उतरेंगे। वह अपना सर झुकायेंगे तो उन के सर से पसीने की बूँदे गिरने लगेंगी। और जब सर उठायेंगे तो मोती की तरह टपकने लगेंगी, जिस काफ़िर तक उन की खुश्बू (साँस) पहुँचेगी वह मर जायेगा, उन के साँस लेने का प्रभाव वहाँ तक पड़ेगा जहाँ तक उन की नज़र पहुँचेगी। फिर वह दज्जाल को तलाश करेंगे तो उसे लुद्द (नामक पहाड़) के दर्वाज़े के पास पायेंगे और वहीं उसे क़त्ल कर देंगे। फिर वह उन लोगों के पास जायेंगे जिन को अल्लाह पाक ने दज्जाल के फ़ितने से सुरक्षित रखा था। वहाँ जा कर उन के चेहरों पर मेहरबानी का हाथ फेरेंगे और उन्हें जन्नत की बशारत देंगे।

इसी दर्मियान अल्लाह पाक उन पर वह्यि भेजेगा कि मैं ने अपने उन बन्दों को निकाला है जिन से लड़ने की किसी के अन्दर ताक़त नहीं है, तुम मेरे उन बन्दों को तूर पहाड़ पर लेकर इकट्ठा कर दो। फिर अल्लाह पाक याजूज-माजूज को भेजेगा, वह हर ऊँचान से तेज़ी के साथ निकल पड़ेंगे, उन की पहली जमाअ़त तबरिस्तान के दरिया से गुज़रेगी तो उस दरिया का सारा पानी पी लेगी (यानी उन की संख्यिा बहुत अधिक होगी) फिर जब उन की दूसरी जमाअ़त गुज़रेगी तो वह कहेगीः यहाँ किसी समय पानी था (लेकिन कब सूख गया है) (इस के बाद क्या होगा? दूसरी रिवायतों में विस्तार से ज़िक्र है) फिर अल्लाह के सन्देष्टा अ़ीसा और उन के साथी बन्द हो जायेंगे, यहाँ तक कि उन के नज़दीक एक बैल का सर सौ अर्शफ़ी से भी अफ़ज़ल होगा। फिर अल्लाह के सन्देष्टा अ़ीसा अ़लै॰ और उन के साथी दुआ़ करेंगे, तब अल्लाह पाक याजूज-माजूज की गर्दनों में एक कीड़ा पैदा कर देगा जिस से सुब्ह होते-होते सभी मर जायेंगे। फिर अ़ीसा अ़लै॰ और उन के साथी ज़मीन पर उतरेंगे, मगर ज़मीन पर एक हाथ बराबर जगह भी उन की गन्दगी और बद्बू से ख़ाली नहीं होगी। इस पर अ़ीसा और उन के मानने वाले फिर अल्लाह पाक से दुआ़ करेंगे तो अल्लाह पाक बड़ी कोहान वाले ऊँटों की गर्दनों की तरह के परिन्दे भेज देगा जो उन के शवों को उठा कर जहाँ अल्लाह पाक चाहेगा वहाँ फेंक देंगे। फिर अल्लाह पाक वर्षा भेजेगा जिस से ज़मीन धुल जायेगी, और हर घर चाहे वह मिट्टी का हो या चमड़े का तंबू हो, वह शीशा की तरह साफ़ चमकने लगेगा। ज़मीन से कहा जायेगा कि अपने फल उगाओ और अपनी बर्कतें लौटाओ। चुनान्चे (इतनी बर्कत होगी कि) एक जमाअ़त के लोग मिल कर एक अनार से सैर हो जायेंगे, और एक दूध देने वाली गाय का दूध पूरे एक क़बीला के लोगों के लिये काफ़ी होगा, और दूध देने वाली बक्री का दूध पूरे घर वालों के लिये काफ़ी होगा। इसी बीच अल्लाह पाक पाक-साफ़ हवा भेजेगा जो उन के बग़ल के नीचे लगेगी और तमाम मुसलमान और मोमिन की जान को निकाल लेगी, केवल बुरे लोग बाक़ी रह जायेंगे जो गधों की तरह खुल्लम खुल्ला ज़िना करेंगे। इन्हीं लोगों पर क़ियामत आयेगी।

2049:- अबू सईद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मतर्बा नबी

करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दज्जाल के बारे में विस्तार से बयान किया। उस में आप ने यह भी बयान फ़रमाया उस पर मदीना की घाटी में घुसना हराम है। हाँ, वह मदीना के निकट एक पथरीली ज़मीन के पास तक आयेगा, तो लोगों में सब से अधिक नेक व्यक्ति उस के पास जा कर कहेगा कि मैं गवाही देता हूँ कि तू दज्जाल है जिस का ज़िक्र नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने संबोधन में किया है। इस पर दज्जाल लोगों से कहेगाः अगर में इसे मार डालूँ और दोबारा ज़िन्दा कर दूँ तो इस में भला शक-शुब्हा करोगे? वह लोग कहेंगे कि नहीं। चुनान्चे दज्जाल उस की हत्या कर के पुनः उसे जीवित कर देगा। वह व्यक्ति जीवित होकर कहेगाः अल्लाह की क़सम! मुझे अब पहले से भी अधिक यक़ीन हो गया है (कि तू वास्तव में दज्जाल है) फिर दज्जाल उसे दोबारा क़त्ल करने की कोशिश करेगा लेकिन वह न कर सकेगा। अबू इस्हाक़ नेकहा कि वह व्यक्ति ख़ज़िर अ़लै॰ होंगे।

फ़ाइदाः– मदीना और मक्का शरीफ़ में दज्जाल का घुसना हराम है। हदीस का अन्तिम टुकड़ा जिस में ख़ज़िर का बयान है यह अबू इस्हाक़ का अपना ख़याल है जो ग़लत है। ख़ज़िर कब के दुनिया से जा चुके हैं। पहले यह हदीस गुज़र चुकी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः आज से 100 वर्ष के बाद इस समय की कोई जीवधारी मख़्लूक़ ज़िन्दा नहीं रहेगी। इस हुक्म में ज़ाहिर है ख़ज़िर भी शामिल हैं, क्योंकि वह इन्सान हैं। इमाम बुख़ारी रह॰ ने इस हदीस को लाकर यही साबित किया है।

2050:– अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दज्जाल जब निकल आयेगा तो एक मोमिन व्यक्ति उस से मिलने के लिये जायेगा तो राह में दज्जाल के हथियार बन्द लोग उसे मिलेंगे और पूछेंगेः तुम कहाँ जा रहे हो? वह कहेगा कि मैं उसी के पास जा रहा हूँ जो ज़ाहिर हुआ है। वह कहेंगे कि क्या तू उस पर ईमान नहीं लाया। वह कहेगा कि हमारा ईमान हमारे रब पर पोशिदा नहीं है। यह सुन कर वह लोग कहेंगे कि इसे मार डालो। फिर परस्पर कहेंगे कि हमारे मालिक ने तो किसी को मारने से मना किया है, इसलिये मालिक के पास इसे ले जाना चाहिये। चुनान्चे उसे पकड़ कर मालिक (दज्जाल) के पास ले जायेंगे। जब वह मोमिन व्यक्ति उस को देखेगा तो कहेगाः ऐ लोगों! यह तो वही दज्जाल है जिस की सूचना नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमें दी थी। यह सुन कर उस के आदेश से उस का सर फोड़ दिया जायेगा। वह कहेगा कि इसे पकड़ कर इस का सर फोड़ दो, चुनान्चे उस के पेट और पीठ पर भी मार लगेगी। इस के बाद दज्जाल उस से पूछेगाः क्या अब भी मेरे ऊपर ईमान नहीं लायेगा? वह कहेगा कि तू तो झूठा मसीह है। यह सुन कर दज्जाल उसे हुक्म देगा तो उस को सर से पाँव तक आरे से चीर दिया जायेगा और दो टुकड़ों में हो जायेगा। फिर दज्जाल दोनों टुकड़ों के बीच में जा कर कहेगाः उठ खड़ा हो। चुनान्चे वह (जीवित होकर) उठ खड़ा हो जायेगा। तो फिर उस से पूछे गाः अब तो मेरे

ऊपर ईमान लायेगा? इस पर वह कहेगाः अब तो मुझे और ज़्यादा यक़ीन हो गया कि तू दज्जाल है, फिर लोगों से कहेगा कि ऐ लोगों! अब दज्जाल मेरे बाद और किसी को ज़िन्दा न कर सकेगा। फिर दज्जाल जब उस को ज़ब्ह करने के लिये पकड़ेगा तो गले से हँसुली तक उस का शरीर ताँबे का बन जायेगा और वह उसे ज़ब्ह न कर सकेगा। फिर उस को पकड़ कर आग में फेंक देगा, तो लोग यह समझेंगे कि उसे आग में फेंक दिया, हालाँकि उसे जन्नत में फेंका गया होगा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक के निकट तमाम लोगों में यह व्यक्ति सब से बड़े दर्जे का शहीद होगा।

2051:— मोग़ीरा बिन शोबा रज़ि॰ ने बयान किया कि जितना मैं ने दज्जाल केबारे में पूछा, उतना शायद ही किसी ने पूछा हो। इस पर आप ने फ़रमायाः तुम इस के बारे में इतना क्यों फ़िकरमन्द हो, वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा। मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! लोगों का कहना है कि उस के साथ खाना होगा और नहरें भी होंगी। आप ने फ़रमायाः (हाँ, होगा) लेकिन अल्लाह पाक के लिये यह तो उस से भी आसान है।

फ़ाइदा:— यानी अल्लाह पाक के लिये कोई मुश्किल नहीं है, वह चाहे तो इस से भी अधिक इख़्तियार दज्जाल को दे दे। लेकिन मोमिन बन्दा धोखे में नहीं आयेगा और उस पर ईमान नहीं लायेगा।

2052:— अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मेरे पास एक व्यक्ति आया और कहने लगाः वह कौन सी हदीस है जो आप बयान करते हैं कि क़ियामत इतने समय में आयेगी? इस पर उन्होंने (तअ़ज्जुब से कहा) सुब्हानल्लाह! या लाइला-ह इल्लल्लाह, या इसी प्रकार का कोई जुम्ला कहा और फिर कहा कि अब मैं ने सोच लिया है कि किसी से कोई हदीस नहीं बयान करूँगा (क्योंकि लोग सुन कर कुछ का कुछ बयान कर देते हैं) मैं ने तो बयान किया था कि तुम बहुत जल्द एक बहुत बड़ी घटना घटते हुये देखोगे जो घरों को जला देगी, और यह घटना घट कर रहेगी, घट कर रहेगी। फिर कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दज्जाल मेरी उम्मत में पैदा होगा और वह चालीस तक रहेगा। मुझे यह नहीं मालूम कि आप ने चालीस दिन कहा, या चालीस माह, या चालीस वर्ष। फिर इस के बाद अल्लाह पाक ओ़ीसा बिन म्रयम को भेजेगा जिन की सूरत उर्वा बिन मस्ऊद की सूरत से मिलती-जुलती होगी। चुनान्चे वह दज्जाल को तलाश कर के मार डालेंगे। फिर सात वर्ष तक लोग इस प्रकार आपस में रहेंगे कि दो आदमियों के दर्मियान किसी प्रकार की कोई दुश्मनी न होगी। फिर अल्लाह पाक शाम की ओर से एक ठन्डी हवा भेजेगा, चुनान्चे जिस के दिल में राई के दाना के बराबर भी अगर ईमान होगा तो वह हवा उस की जान निकाल लेगी। यहाँ तक कि अगर कोई किसी पहाड़ के कलेजा (खोह) में भी घुस जाये तो वहाँ भी हवा पहुँच कर उस

की जान निकाल लेगी।

फिर इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बयान करते सुना कि अब इस के बाद केवल बुरे लोग ही दुनिया में रह जायेंगे। जिन के अख़्लाक़ व आचरण मूर्खों या दरिन्दों या जल्दबाज़ चिड़ियों की तरह के होंगे। जो न अच्छी बात को अच्छा समझेंगे और न बुरी बात को बुरा समझेंगे। फिर शैतान उन के पास एक सूरत बना कर आयेगा और कहेगाः क्या तुम लोग शर्म नहीं करते? वह कहेंगेः तुम हमें किस बात का हुक्म देते हो? वह कहेगा कि बुतों की पूजा करो। चुनान्चे वह लोग उस की पूजा करना आरंभ कर देंगे, फिर भी उन की रोज़ी तन्ग न होगी और बड़े मज़े की ज़िन्दगी गुज़ारेंगे। फिर सूर में फूँक मारी जायेगी तो सब बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे। इस सूर की आवाज़ को सब से पहले वह सुनेगा जो अपने ऊटों के पानी के हौज़ को लीप रहा होगा, चुनान्चे वह भी बेहोश हो जायेगा और दूसरे लोग भी बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे।

इस के बाद अल्लाह पाक वर्षा करेगा तो वह वर्षा मनी (वीर्य) की तरह होगी, जिस से लोगों के बदन में जान पड़ जायेगी, फिर सूर फूँका जायेगा तो सब खड़े होकर एक दूसरे को देख रहे होंगे। फिर पुकारा जायेगा कि ऐ लोगों! अपने मालिक की तरफ़ दौड़ कर पहुँचो "इन्हें खड़ा कर दो, इन से प्रश्न किया जायेगा" (सूरः साफ़्फ़ात 24) फिर कहा जायेगा कि एक गरोह को जहन्नम से निकल लो। फिर आप ने फ़रमायाः यही वह दिन होगा जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा, और यही दिन होगा जब पिडंली खुलेगी।

फ़ाइदाः– यानी अल्लह पाक पिंडली खोल कर जलाल में अर्श पर बैठेगा और लोगों को सज्दा करेन का आदेश देगा। चुनान्चे नेक लोग तुरन्त सज्दे में चले जायेंगे और काफ़िर लोगों की पीठ तख़्त की तरह हो जायेगी (सूरः मआ़रिज)

बाब {क़ियामत की निशानियों में से पहली निशानी यह है कि सूरज पश्चिम की तरफ़ से निकलेगा।}

2053:– अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि मैं ने एक हदीस नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुन कर याद की है जिसे मैं कभी नहीं भूला। मैं ने आप को फ़रमाते सुना कि क़ियामत की सब से पहली निशानी यह होगी कि सूरज पश्चिम से निकलेगा और चाश्त के समय ज़मीन का जानवर निकलेगा। इन दोनों में से जो भी निशानी पहले ज़ाहिर होगी, उस के तुरन्त बाद दूसरी भी ज़ाहिर होगी।

बाब {दज्जाल के बारे में, और उस के ज़ाहिर होने के बारे में बयान। और जस्सासा की हदीस का बयान।}

2054:– आ़मिर बिन शुराहील शोबी ने बयान किया कि मैं ने ज़हहाक बिन क़ैस की बहन फ़ातिमा बिन्त क़ैस से जो उन महिलाओं में से थीं जिन्होंने सब से पहले हिजरत की थी, कहा कि आप मुझ से कोई ऐसी हदीस बयान फ़रमाइये जिसे आप ने नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से स्वँय सुनी हो और उस में किसी का वास्ता न हो। उन्होंने कहा कि अगर आप की इच्छा है तो मैं बयान कर देती हूँ। मैं ने कहाः आप ज़रुर बयान करें। फ़ातिमा रज़ि० ने कहा कि मैं ने इब्ने मुग़ीरा से निकाह किया जो कुरैश के बड़े अच्छे जवानों में से थे। वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ पहले ही जिहाद में शहीद हो गये तो मैं विधुवा हो गयी। इस के बाद अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ और कई दीगर सहाबा ने भी निकाह का सन्देश भेजा, साथ ही नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी अपने आज़ाद किये हुये गुलाम उसामा बिन ज़ैद के लिये भी पैग़ाम भेजा। इस से पहले मैं यह हदीस सुन चुकी थी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स मुझ से मोहब्बत करता हो उसे चाहिये कि उसामा से भी मुहब्बत करे। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने निकाह के बारे में मुझ से बात की तो मैं ने कहाः मैं इस मामले में आप को इख़्तियार देती हूँ आप जिस से भी चाहें मेरा निकाह कर दें। इस पर आप ने फ़रमायाः तुम उम्मे शुरैक के घर चली जाओ। (और वहीं अ़िद्दत गुज़ारो) उम्मे शुरैक क़बीला अन्सार की बड़ी धनवान महिला थीं, अल्लाह की राह में बहुत ख़र्च करती थीं, उन के पास बहुत अधिक मेहमान आते-जाते थे। मैं ने कहाः ठीक है, मैं उन के घर चली जाती हूँ। लेकिन फिर आप ने फ़रमायाः उन के पास मत जाओ क्योंकि उन के पास मेहमानों का अधिक आना-जाना लगा रहता है, और मुझे यह पसन्द नहीं कि तुम्हारी ओढ़नी सर से सरक जाये, या तुम्हारी पिंडली खुल जाये और लोग तुम्हारे उस हिस्से को देखें तो तुम्हें बुरा लगे। ऐसा है तुम अपने चचा के बेटे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन उम्मे मक्तूम के घर चली जाओ। यह सहाबी क़बीला बनी फ़हर में से थे। फ़हर, यह क़बीला कुरैश ही की एक शाखा (ब्रान्च) है जिस से फ़ातिमा रज़ि० भी थीं। फ़ातिमा बिन्त क़ैस ने कहा कि फिर मैं उन के घर चली गयी। जब मेरी अ़िद्दत (4 माह दस दिन) पूरी हो गयी तो किसी पुकारने वाले की आवाज़ सुनी। वह पुकारने वाला नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का एलान्ची था जो आवाज़ लगा रहा थाः "नमाज़ के लिये एकत्र हो जाओ" चुनान्चे मैं भी मस्जिद में गयी और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ नमाज़ अदा की। मैं उस सफ़ में थी जिस में महिलायें मर्दों के पीछे थीं (यानी महिलाओं की पहली सफ़ में) जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुये तो मिंबर पर तशरीफ़ ले गये उस समय आप हँस रहे थे। फिर आप ने फ़रमायाः जिस ने जहाँ नमाज़ पढ़ी है वहीं बैठा रहे। फिर फ़रमायाः जानते हो मैंने क्यों एकत्र किया है? सहाबा ने कहाः अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं। आप ने फ़रमायाः मैं ने डराने या खुशख़बरी सुनाने के लिये नहीं एकत्र किया है। जमा करने का उद्देश्य यह है कि एक अ़ीसाई तमीम दारी ने आ कर बैअ़त की और इस्लाम ले आया, फिर उस ने (अ़ीसाई मज़हब की किताब से) एक हदीस बयान की जो बिल्कुल उस हदीस की तरह है जो मैं ने दज्जाल के बारे में तुम लोगों से बयान किया था।

उस ने बयान किया कि मैं उन तीस आदमियों के साथ जो क़बीला लख़्म और

जुज़ाम में से थे एक समुद्री जहाज़ पर सवार हुआ। वह जहाज़ एक महीना तक समुद्रकी लहरों में फँसा रहा (और तट पर नहीं पहुँच सका) अन्ततः वह जहाज़ डूबते सूरज की तरफ़ एक जज़ीरा से जा लगा। फिर वह लोग उस जहाज़ से उतर कर एक छोटी कश्ती मैं बैठे और जज़ीरा में दाख़िल हो गये। वहाँ उन्हें एक जानवर मिला जिस की पूँछ बहुत भारी थी, उस के इतने बाल थे कि उस का चेहरा उन बालों की वजह से पहचान में नहीं आ रहा था। लोगों ने उस से पूछाः तेरा नास जाये, तू कौन है? उस ने कहाः मैं जासूस हूँ। लोगों ने पूछाः यह जासूस क्या होता है? उस ने कहाः वहाँ उस दैर में चलो जहाँ एक व्यक्ति रहता है और तुम लोगों के बारे में बहुत उत्सुक है।

तमीम दारी ने कहा कि जब उस ने उस व्यक्ति का नाम लिया तो मैं उस से डरा कि कहीं यह जानवर शैतान तो नहीं है। तमीम ने कहा कि फिर भी हम लोग बड़ी तेज़ी के साथ चल कर उस दैर में पहुँच गये। वहाँ यह देखा कि लंबे-चौड़े क़द-काठी का एक आदमी है। हम ने वैसा आदमी और इतनी बुरी तरह जकड़ा हुआ कभी नहीं देखा। उस के दोनों हाथ गर्दन के साथ दोनों घुटनों के दर्मियान टख़्नों तक लोहे की ज़ंजीर में ज़कड़े हुये हैं। हम ने उस से पूछाः तेरा नास जाये, तू कौन है? उस ने कहाः अभी तुम्हें मेरे बारे मेंमालूम हो जायेगा, तुम लोग अपने बारे में बताओ कि कौन हो? हम लोगों ने कहाः हम लोग अ़रब के रहने वाले हैं, हम लोग एक समुद्री जहाज़ पर सवार हुये, इसी दर्मियान समुद्र में तूफ़ान आ गया, चुनान्चे एक महीना तक समुद्र की लहरों में खेलते रहे, अन्ततः इस जज़ीरे के तट पर आ लगे। फिर एक छोटी कश्ती में बैठ कर जज़ीरा में दाख़िल हुये। वहाँ हमें एक जानवर मिला जिस की पूँछ बड़ी भारी थी, उस के शरीर पर इतने बाल थे कि उन की वजह से उस का चेहरा पहचानने में नहीं आ रहा था। हम ने उस से पूछाः तेरा नास जाये तू कौन है? उस ने कहाः मैं जासूस हूँ। हम ने पूछाः जासूस किसे कहते हैं? उस ने कहा कि उस आदमी के पास चलो जो उस दैर में रहता है और तुम लोगों के बारे में जानने को बेताब है। चुनान्चे हम लोग तुम्हारे पास तेज़ क़दम चल कर आये, लेकिन हम इस बात से डरे कि कहीं कोई भूत प्रेत न हो।

उस ने कहाः मुझे "बेसान" के नख़लिस्तान (खजूरों के बाग़) के बारे में बतलाओ। हम ने पूछाः उस के बारे में क्या बताऊँ? उस ने कहा कि मैं यह मालूम करना चाहता हूँ कि क्या वह फल देता है? हम ने कहाः हाँ, वह फल देता है। उसने कहाः सुनो, अब वह फल नहीं देगा। फिर उस ने कहाः मुझे "तबरिस्तान" के दरिया के बारे में बतलाओ। हम ने कहाः उस के बारे में क्या जानना चाहते हो? उस ने पूछाः क्या उस में पानी है? हम ने कहा कि उस में बहुत पानी है और वहाँ के लोग उस के पानी से खेती करते हैं। उस ने कहाः मुझे अ़रब के सन्देष्टा के बारे में बतलाओ। हम ने कहा कि वह मक्का से निकल कर मदीना में आ गये हैं। उस ने पूछाः क्या अ़रब के लोगों ने उन से लड़ाई लड़ी है? हम ने कहाः हाँ। उस ने पूछाः उन्होंने फिर क्या किया? हम ने कहाः वह अपने चारों तरफ़ के लोगों पर ग़ालिब आ गये और उन सब ने उन की इताअ़त क़ुबूल कर

ली। उस ने पूछाः यह सब कुछ हो चुका? हम ने कहाः हाँ। उस ने कहाः सुनो! ऐसा करना उन के हक़ में बेहतर है। और अब मैं तुम्हें अपने बारे में बताता हूँ कि मैं मसीह हूँ यानी दज्जाल, जो तमाम दुनिया में घूमने-फिरने वाला। वह ज़माना बहुत क़रीब आ चुका है जब मुझे यहाँ से निकलने की इजाज़त होगी। फिर मैं निकल कर चारों तरफ़ चलूँ-फिरुँगा कोई आबादी ऐसी न बचेगी जहाँ चालीस रात के अन्दर न पहुँच जाऊँ। हाँ, मक्का-मदीना नहीं जा सकूँगा कि वहाँ जाना मेरे ऊपर हराम है। जब मैं उन में से किसी एक नगर में घुसने की कोशिश करुँगा तो तुरन्त एक फ़रिश्ता तल्वार लेकर मेरे सामने आ खड़ा होगा और मुझे अन्दर जाने से रोक देगा। उस नगर के तमाम नाकों पर फ़रिश्ते पहरादारी करेंगे।

इस के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी छड़ी से मिंबर पर मारा और मार कर फ़रमायाः तय्यिबा यही है, तय्यिबा यही है, तय्यिबा यही है। यानी तय्यिब से मुराद मदीना है। फिर आप ने फ़रमायाः क्या में ने तुम लोगों को इस बारे में जानकारी दे दी? सहाबा ने कहाः जी हाँ। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुझे तेमीमदारी की यह बात अच्छी लगी, क्योंकि मैं मक्का-मदीमा और दज्जाल के बारे में जो कुछ बयान कर चुका हूँ, बिल्कुल उस के अनुकूल है। सुनो! वह दज्जाल शाम या यमन के दरिया में है? नहीं, नहीं, बल्कि वह तो पूरब की तरफ़ है, वह पूरब की तरफ़ है, वह पूरब की तरफ़ है (पूरब की तरफ हिन्द महासागर है इसलिये संभव है कि वह दज्जाल यहीं कहीं किसी दीप में हो) फिर आप ने पूरब की तरफ़ अपने हाथ से इशारा कर के फ़रमाया। फ़ातिमा बिन्त क़ैस ने बयान किया कि इस हदीस को मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़बानी सुन कर याद कर ली है।

फ़ाइदाः- उस जानवर का नाम "जस्सासा" इसलिये पड़ा कि वह दज्जाल के लिये जासूसी करता था। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दज्जाल का स्थान पूरब की तरफ़ के समुन्दर को बताया है और तीन मतर्बा ताकीद के साथ फ़रमाया है। अ़रब के पूरब तरफ़ हिन्द महासागर है। तो हो सकता है दज्जाल इसी समुन्दर के किसी दीप (जज़ीरा) में बन्द हो और क़ियामत के दिन अल्लाह के हुक्म से बाहर निकले। दुनिया ने भले ही पूरे समुद्र को छान मारा हो, लेकिन हो सकता है अल्लाह पाक ने उस दीप को उन की नज़रों में पोशीदा रख दिया हो। और क़ियामत के मौक़े पर ज़ाहिर हो। 'बैसान' और 'ज़अ़र' मुल्क शाम के दो शहरों के नाम हैं। 'तबरिस्तान' यह मुल्क शाम के निकट एक क्षेत्र का नाम है। एक ख़ास बात की तरफ़ इशारा ज़रुरी है कि फ़ातिमा के पति ने तीन तलाक़ दे दी थी जिस की अ़िद्दत गुज़ार रही थीं, न कि शहीद हुये थे। तफ़सील का यहाँ मौक़ा नहीं। देखें इसी पुस्तक की हदीस न॰ 860, 861, 862।

2055:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मक्का और मदीना को छोड़ कर कोई नगर ऐसा नहीं होगा जहाँ

दज्जाल न जाये। और मक्का और मदीना के हर नाका पर फ़रिश्ते सफ़ बाँध कर उस की पहरेदारी करेंगे। लेकिन जब दज्जाल मदीना के निकट की ज़मीन पर उतरेगा तो उस से मदीना शहर तीन मतबां थर्रा उठेगा, फिर मदीना में जो मुनाफ़िक़ और काफ़िर होगा वह दज्जाल के पास चला जायेगा।

बाब {अस्फ़हान शहर के सत्तर हज़ार यहूदी दज्जाल की पैरवी करेंगे।}

2056:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अस्फ़हान के सत्तर हज़ार यहूदी काले रन्ग की चादरें ओढ़ कर दज्जाल के साथ हो जायेंगे।

2057:– उम्मे शुरैक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि लोग दज्जाल के डर से भाग कर पहाड़ों में पनाह लेंगे। उम्मे शुरेक ने पूछाः ऐ अल्लाह केर सूल! अ़ाब के लोग उस दिन कहाँ होंगे (कि उस से जन्ग नहीं करेंगे) आप ने फ़रमायाः उन की संख्या कम होगी (और दज्जाल की करोड़ों में होगी, इसलिये उन का मुक़ाबला न कर सकेंगे।)

2058:– हुमैद बिन हिलाल ने अबू दहमा और अबू क़तादा आदि से रिवायत कियाः उन्होंने बयान किया कि हम लोग हिशाम बिन आ़मिर रज़ि॰ की मौजूदगी में अि़म्रान बिन हुसैन रज़ि॰ के पास (मस्अले पूछने के लिये) जाया करते थे।

चुनान्चे एक दिन उन्होंने कहाः तुम लोग ऐसे लोगों के पास जाते हो जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास मुझ से अधिक नहीं हाज़िर रहते थे और न ही नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीस को मुझ से अधिक जानते हैं। मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि आदम से लेकर क़ियामत तक की कोई मख़्लूक़ (फ़साद और बुराई में) दज्जाल से बड़ी नहीं है।

फ़ाइदाः– यानी फ़ितना-फ़साद और बुराइयाँ फैलाने में दज्जाल से बढ़ कर कोई नहीं।

बाब {अ़ीसा अ़लै॰ नाज़िल होकर सलीब को तोड़ डालेंगे और सुअर को मार डालेंगे।}

2059:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह की क़सम! म्रयम के बेटे (अ़ीसा अ़लै॰) हाकिम और अ़ादिल (न्याय कर्ता) बन कर (आकाश से) उतरेंगे और सलीब को तोड़ डालेंगे और सुअरों को मार डालेंगे, लगान और टेक्स को माफ़ कर देंगे, जवान ऊँट को आज़ाद छोड़ देंगे फिर कोई उस से मेहनत का काम 'न लेगा, लोगों के दिलों से कीना-कपट और हसद व दुश्मनी समाप्त हो जायेगी, वह लोगों को माल देने के लिये बुलायेंगे लेकिन कोई लेने को तय्यार न होगा (क्योंकि सभी लोगों के पास माल होगा, मुहताजी नहीं रहेगी)

2060:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

फ़रमायाः तुम्हारा क्या हाल होगा जब म्रयम के बेटे (ओ़सा आसमान से) उतरेंगे, फिर भी तुम ही में से तुम्हारी इमामत करने वाले होंगे। हदीस के रावी वलीद बिन मुस्लिम ने कहा कि इब्ने अबू जुऐब-औज़ाओ़-ज़हरी-नाफ़े-अबू हुरैरा की हदीस में यह है कि तुम्हारा इमाम तुम ही में से होगा। इब्ने जुऐब ने कहाः "तुम्हारी इमामत तुम्हीं में से करेंगे" इस का अर्थ क्या है तुम जानते हो? मैं ने कहाः आप ही बता दीजिये। उन्होंने कहा कि (इस का अर्थ है कि) ओ़सा अ़लै॰ तुम्हारे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत और अल्लाह पाक की किताब के मुताबिक तुम्हारी इमामत करेंगे।

फ़ाइदाः- कहने का अर्थ यह है कि उन की हैसिय्यत नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के उम्मती की होगी और उन्हें भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शरीअ़त पर अ़मल करना होगा। आसमान पर उठाये जाने से पहले जो हैसिय्यत थी वह अब न रहेगी। फिर जब हमारे उम्मती हो गये तो एक उम्मती होकर एक ही शरीअ़त के अनुसार नमाज़ की इमात करने में क्या हर्ज है।

2061:- जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बयान करते सुनाः क़ियामत तक मेरी उम्मत का एक गरोह हक़ की ख़ातिर लड़ता रहेगा और वही ग़ालिब रहेगा। फिर जब ओ़सा बिन म्रयम उतरेंगे तो उस गरोह का इमाम उन से कहेगाः आइये आप नमाज़ पढ़ा दीजिये, तो वह कहेंगे कि नहीं, तुम में से एक दूसरे पर हाकिम हैं, यह वह मतर्बा है जो अल्लाह पाक ने इस उम्मत को अ़ता फ़रमाया है।

2062:- हस्ल बिन सअ़द रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अन्गूठे और बीच वाली उंगली से इशारा कर के फ़रमाते हुये सुना कि मैं और क़ियामत इस तरह (नज़दीक) भेजा गया हूँ।

फ़ाइदाः- यानी मेरे और क़ियामत के दर्मियान और कोई दूसरा नबी नहीं आयेगा और न ही कोई दूसरी शरीअ़त और दूसरी उम्मत होगी। मैं ही अन्तिम नबी हूँ और मेरी शरीअ़त अन्तिम शरीअ़त है, फिर इस के बाद क़ियामत है।

2063:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति ने प्रश्न किया क़ियामत कब आयेगी? आप थोड़ी देर ख़ामोश रहे, फिर शनूआ के क़बीला इज़्द के एक बच्चा की तरफ़ देखा जो आप के सामने ही बैठा था और फ़रमायाः अगर इस बच्चा की लंबी उम्र हुयी तो इस के बूढ़ा होने से पहले ही क़ियामत आ जायेगी। अनस रज़ि॰ ने बयान किया कि वह बच्चा उन दिनों मेरी उम्र का था।

2064:- आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब दीहाती लोग आप से मिलने आते तो अक्सर क़ियामत के बारे में पूछते तो आप उन में जो सब से कम आयु का होता उसे देख कर फ़रमातेः अगर यह जीवित रहा तो इस के बूढ़ा होने

से पहले ही क़ियामत आ जायेगी।

फ़ाइदा:- 'क़ियामत आ जायेगी' यही कि तुम मर जाओगे, क़ब्रों में हिसाब-किताब का सिलसिला शुरु हो जायेगा और उसी के अनुसार जन्नत-जहन्नम की खिड़की खुल जायेगी, अ़ज़ाब और सवाब का सिलसिला जारी हो जायेगा, इसी का नाम क़ियामत है।

बाब {एक व्यक्ति दूध दूह रहा होगा और अभी वह दूध उस के मुँह तक नहीं पहुँचेगा कि क़ियामत आ जायेगी (यानी मर जायेगा)}

2065:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: एक आदमी अपनी ऊँटनी का दूध दूह रहा होगा और अभी बर्तन उस के मुँह तक न पहुँचेगा कि (उस के लिये) क़ियामत आ जायेगी (यानी मर जायेगा) इस प्रकार दो आदमी कपड़ों का लेन-देन कर रहें होंगे और सौदा तै नहीं होगा कि क़ियामत आ जायेगी (दोनों मर जायेंगे) एक आदमी (जानवरों को पानी पिलाने का) हौज़ ठीक कर रहा होगा और अभी दुरुस्त कर के वापस नहीं हुआ होगा कि क़ियामत आ जायेगी (यानी मर जायेगा)

फ़ाइदा:- आदमी मर जायेगा, क़ब्र में हिसाब होगा और अ़ज़ाब-सवाब मिले गा, यह भी क़ियामत ही है।

बाब {सूर के दोनों फूँकों के दर्मियान चालीस का फ़ासला होगा।}

2066:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सूर के दोनों फूँकों के दर्मियान चालीस का फ़ासला होगा। लोगों ने पूछा: ऐ अबू हुरैरा! चालीस दिन का? इस पर उन्होंने कहा: मुझे नहीं मालूम। फिर लोगों ने पूछा: चालीस महीने का? इस पर भी उन्होंने कहा: मुझे नहीं मालूम। फिर पूछा: चालीस साल का? इस पर भी कहा कि मैं नहीं जानता। फिर आसमान से वर्षा होगी जिस से लोग ऐसे पैदा हो जायेंगे जैसे हरियाली उग आती है। उन्होंने कहा: इन्सानों के शरीर का सब कुछ हिस्सा गल जायेगा मगर रीढ़ की हड्डी न गलेगी, उसी हड्डी से लोग क़ियामत के दिन पैदा होंगे।

फ़ाइदा:- एक दूसरी रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: शरीर में एक हड्डी है जिसे मिट्टी नहीं खा सकेगी। सहाबा ने पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल! वह कौन सी हड्डी है? आप ने फ़रमाया: वह दुम की हड्डी का सिरा है। वह हड्डी कैसे बाक़ी रह जाती है, यह अल्लाह ही बेहतर जानता है और वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। काफ़िरों को जला दिया जाता है, लेकिन वह हड्डी नहीं जलती होगी। याद रहे कि नबी का शरीर इस हदीस के हुक्म से अलग है, क्योंकि उन का शरीर नहीं गलता है और न ही मिट्टी खाती है, इसी तरह शहीदों के शरीर का हुक्म है।

हदीस में अबू हुरैरा रज़ि॰ ने चालीस के बारे में नही बताया। इसी प्रकार अ़ब्दुल्लाह

बिन अ़म्र बिन आ़स ने भी कहा कि मैं नहीं जानता। देखें हदीस न॰ 2952।

बाब {मर्दों के लिये सब से बड़ा फ़ितना महिलायें हैं।}

2067:– उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ बिन हारिसा और सअ़ीद बिन ज़ैद रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं ने अपने बाद मर्दों को सब से अधिक हानि पहुँचाने वाला महिला से बड़ा कोई फ़ितना नहीं छोड़ा।

2068:– अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दुनिया मीठी और हरी-भरी है, और अल्लाह ने जो तुम्हें दुनिया का हाकिम बनाया है इसलिये कि देखे तुम कैसे दुनिया चलाते हो(क्या अ़मल करते हो) इसलिये दुनिया से होशियार रहना और महिलाओं से भी बच केरहना, क्योंकि बनी इस्राईल का प्रथम फ़ितना महिलाओं से आरंभ हुआ था।

फ़ाइदाः– 'दुनिया से बचो' यानी ऐसी दुनिया से जो दीन से ग़ाफ़िल कर दे। वर्ना बिना दुनिया से जुड़े इन्सान ज़िन्दा ही नहीं रह सकता। महिला दुनिया में सब से बड़ी फ़ितना है। इस के जाल और मक्र में फँस कर आदमी तबाह-बर्बाद हो जाता है। महिला के नाते आदमी अपने माँ-बाप, भाई-बहन और दूसरे रिश्तेदारों से अलग हो जाता है। इस के माया जाल में फंस कर दीन को भुला बैठता है, इसलिये इस से बहुत होशियार रहने की ज़रुरत है।

❀ ❀ ❀

किताबुज़्ज़ुहदि वर्रिक़ाइक़ि

(दुनिया से बेरग़बती और बेफ़िक्री का बयान)

2069:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह दुआ़ फ़रमायी: ऐ मेरे मौला! मुहम्मद के बाल-बच्चों की रोज़ी ज़रुरत के मुताबिक़ बनाना।

2070:– उर्वा बयान करते हैं कि आ़इशा रज़ि॰ कहा करती थीं: ऐ मेरे भान्जे! अल्लाह की क़सम! हम चाँद देखते, फिर दूसरे माह चाँद देखते, फिर तीसरे माह का चाँद देखते और इन दो महीनों में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के घरों में आग नहीं जलती थी। मैं ने पूछा: ऐ ख़ाला जान! फिर आप लोग क्या खाती-पीती थीं? उन्होंने कहा: खजूर और पानी। अल्बत्ता नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के कुछ अन्सारी पड़ोसी थे जिन के पास दूध देने वाले जानवर थे, वह आप को दूध भेज दिया करते तो आप उस में से हमें भी पिला दिया करते थे।

फ़ाइदा:– एक दूसरी रिवायत में है कि हम पानी और खजूर को भी पेट भर कर नहीं खाते-पीते थे (मुस्लिम-आ़इशा)

2071:– आ़इशा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का देहान्त हो गया लेकिन आप ने कभी एक दिन में दोबार रोटी और ज़ैतून के तेल को पेट भर कर नहीं खाया।

2072:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बाल-बच्चों ने कभी दो दिन गेहूँ की रोटी पेट भर कर नहीं खाई, मगर एक दिन सिर्फ़ खजूर खाई।

2073:– अबू हाज़िम ने बयान किया कि मैं ने देखा कि अबू हुरैरा रज़ि॰ उँगलियों से बार-बार इशारा कर के कहते थे कि उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में अबू हुरैरा की जान है, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आप के घर वालों ने कभी तीन दिन लगातार गेहूँ की रोटी नहीं खाई, यहाँ तक कि आप दुनिया से चले गये।

2074:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

का जब देहान्त हुआ उस समय मेरे बर्तन में किसी जानदार के खाने के लिये केवल थोड़ा सा जौ था जिस में से मैं बहुत दिनों तक खाती रही। लेकिन एक दिन मैं ने उसे माप लिया (तो उसकी बर्कत ख़त्म होगयी) और वह ख़त्म हो गया।

फ़ाइदा:– बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है "अपने ग़ल्ले को नाप लिया करो इस में तुम्हें बर्कत होगी" (2128–मिक़दाम) मालूम हुआ कि नाप कर रखो, लेकिन खाने के लिये निकालते समय न तौलो। अनुमान और अन्दाज़े से निकाल लिया करो। आपने दस किलो तौल कर रख दिया, फिर उस में से रोज़ाना आधा किलो अन्दाज़ा से (तौल कर नहीं) निकाल कर खाते रहो। तो कभी आधा किलो से कम निकाला और कभी ज़्यादा, इस तरह बीस दिन के बाद भी कुछ न कुछ बच जायेगा, यही बर्कत है।

2075:– सिमाक बिन हर्ब ने बयान किया कि मैं ने नोमान बिन बशीर को खुत्बा में बयान करते सुना कि उमर रज़ि॰ ने कहाः लोगों ने किस क़दर दुनिया हासिल कर ली है, और मैं ने देखा है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सारा दिन भूखे रहते थे आप को पेट भरने के लिये खजूर तक न मिलती थी।

2076:– अबू अ़ब्दुर्रहमान हुबला से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स से सुना उन से किसी ने पूछाः क्या हम मुहाजिर लोग फ़क़ीर हैं? उन्होंने कहाः तुम्हारे पास बीवी है? जिस के पास तू उठता-बैठना है? उस ने कहाः हाँ। उन्होंने पूछाः तुम्हारे पास घर है जिस में तुम रहते हो? उस ने कहाः हाँ। इस पर अ़ब्दुल्लाह ने कहाः फिर तो तुम मालदारों में से हो। उस ने कहाः मेरे पास तो एक नौकर भी है। उन्होंने कहाः फिर तो तुम बादशाहों में से हो।

अबू अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया कि तीन आदमी अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ि॰ के पास आये उस समय मैं भी उन के पास मौजूद था, वह कहने लगेः ऐ अबू मुहम्मद! अल्लाह की क़सम! हमारे पास कुछ नहीं है, न ख़र्चा-पानी है, न सवारी है और न ही सफ़र ख़र्च आदि है। यह सुन कर अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ ने कहाः तुम जो कहो मैं करने को राज़ी हूँ। तुम हमारे पास आना चाहते हो तो आ जाओ, तुम्हारे भाग्य में जो लिखा होगा वह हम तुम्हें देंगे। और अगर चाहते हो तो मैं तुम लोगों के बारे में बादशाह (ख़लीफ़ा) को सूचित कर दूँ। और अगर चाहो तो सब्र से काम लो, क्योंकि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है, आप फ़रमाते थेः ग़रीब और मुहताज हिजरत करने वाले लोग, मालदारों से चालीस साल पहले जन्नत में जायेंगे। यह सुन कर उन लोगों ने कहाः ठीक है, हम सब्र से काम लेते हैं और कोई मुतालबा नहीं करते हैं।

बाब {जन्नत में अधिकांश लोग ग़रीब होंगे।}

2077:– उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि

वसल्लम ने फ़रमायाः मैं जन्नत के दर्वाज़े पर खड़ा हुआ तो क्या देखा कि उस के अन्दर अधिकांश ऐसे लोग हैं जो मुहताज हैं, और मालदारों को (हिसाब-किताब के लिये) रोक दिया गया है। और जहन्नमी लोगों को जहन्नम में जाने का हुक्म हो चुका है। फिर मैं ने जहन्नम के दर्वाज़े पर खड़े होकर देखा तो उस के अन्दर ज़्यादातर महिलायें थीं।

बाब {दुनिया से दिल न लगाओ, यह अल्लाह के नज़दीक ज़लील और हक़ीर है।}

2078:– जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक मतर्बा मदीना के आस-पास के किसी गाँव से वापस होते हुये बाज़ार में दाख़िल हुये, उस समय आप के दोनों तरफ़ लोग मौजूद थे। आप ने छोटे कान का एक भेड़ का मरा हुआ बच्चा देखा तो उस का कान पकड़ कर फ़रमायाः तुम में से कौन इसे एक दिंहम में ख़रीदता है? लोगों ने कहाः कोई भी इसे एक दिंहम में लेना नहीं चाहेगा, हम उसे लेकर क्या करेंगे? आप ने फ़रमायाः इसे मुफ़्त में लेना चाहोगे? लोगों ने कहाः अल्लाह की क़सम! अगर यह ज़िन्दा भी होता तब भी इस में अ़ैब था कि इस के कान छोटे थे, फिर यह मुर्दा भी है इसलिये इसे कोई न लेगा। आप ने फ़रमायाः अल्लाह की क़सम! जिस प्रकार यह तुम्हारे निकट ज़लील है, अल्लाह के निकट दुनिया इस से भी अधिक ज़लील है।

2079:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दुनिया मोमिन के लिये जेलख़ाना है और काफ़िर के लिये जन्नत है।

2080:– अ़म्र बिन औ़फ़ रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अबू उबैदा बिन जर्राह को टेक्स और लगान की वसूली के लिये बहरैन भेजा, उस समय आप ने बहरैन वालों से (लगान की शर्त पर) समझौता कर लिया था और अ़ला बिन हज़रमी को वहाँ का गवर्नर बना दिया था। चुनान्चे अबू उबैदा वहाँ से टेक्स लेकर आये। जब अन्सारी लोगों को इस की सूचना मिली तो उन्होंने फ़ज्र की नमाज़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ पढ़ी। जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो अन्सारी लोग आप के सामने हाज़िर हुये, तो आप उन को देख कर मुस्कुराए और फ़रमायाः मेरे ख़याल से तुम लोगों ने यह सुना है कि अबू उबैदा बहरैन से मांल लेकर आये हैं (इसीलिये आप लोग एकत्र हैं कि उस में से कुछ मिलेगा) उन्होंने कहाः हाँ, ऐ अल्लाह के रसूल! (इसी निय्यत से हम लोग जमा हुये हैं) आप ने फ़रमायाः तो फिर ख़ुश हो जाओ (तुम को माल मिलेगा) लेकिन अल्लाह की क़सम! मुझे तुम्हारे बारे में मुहताजी का डर नहीं है, बल्कि इस बात से डर है कि कहीं दुनिया तुम लोगों पर कुशादा न हो जाये जैसे तुम से पहले के लोगों पर कुशादा हो गयी थी। और एक-दूसरे से बढ़-चढ़ कर रग़बत करने लगे जिस प्रकार पहले के लोगों ने किया था, फिर वह यह दुनिया की तलब तुम्हें हलाक न कर डाले जिस प्रकार तुम में से पहले के लोगों को हलाक किया है।

बाब {दुनिया का माल हाथ में आ जाने के बाद और अधिक हासिल करने की इच्छा और हसद की बीमारी पैदा हो जाती है।}

2081:– अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अ़ास रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब फ़ारस और रुम फ़तह हो जायेंगे तो उस समय तुम क्या करोगे? इस पर अ़ब्दुरहमान बिन औ़फ़ रज़ि॰ ने कहाः जिस का अल्लाह पाक ने हमें हुक्म दिया है (यानी उस का शुक्र अदा करेंगे) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कुछ नहीं कहोगे। केवल हसद और हिंस करोगे, एक–दूसरे से बिगाड़ करोगे और दुश्मनी करोगे, या इसी प्रकार का कोई वाक्य फ़रमाया, फिर मुहाजिरों के पास जा कर एक को दूसरे पर हाकिम बनाओगे।

बाब {दुनिया की हैसियत आख़िरत के मुक़ाबले में ऐसी है जैसे नदी में उगंली डुबो दी जाये।}

2082:– मुस्तौरिद से रिवातय है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह की क़सम! आख़िरत के सामने दुनिया की हक़ीक़त बिल्कुल ऐसे है जैस तुम में से कोई अपनी इस उँगली को दरिया में डाल दे (फिर यहया नेअपनी शहादत की उंगली की तरफ़ इशारा किया) फिर वह देखे कितना पानी उस उंगली में लगा है।

फ़ाइदाः– यानी दरिया आख़िरत है और जितना पानी उंगली में लगा है वह दुनिया की पूँजी है।

बाब {दुनिया के माल को देकर आज़माइश होगी। इन्सान दुनिया में कैसे अ़मल करे।}

2083:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बनी इस्राईल में तीन आदमी थे। एक कोढ़ी था, दूसरा गन्जा और तीसरा अन्धा। अल्लाह पाक ने उन्हें आज़माया इसलिये एक फ़रिश्ता उन में से कोढ़ी के पास भेजा। उस ने पूछाः तुम्हें कौन सी चीज़ पसन्द है? उस ने कहाः हमारा रन्ग अच्छा हो जाये, हमारी खाल दुरुस्त हो जाये और मुझ से यह बीमारी भाग जाये जिस की वजह से लोग मुझ से दूर भागते हैं। आप ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते ने उसके ऊपर हाथ फेरा तो उस की बदसूरती दूर हो गयी और उस को अच्छा रन्ग और अच्छी खाल दे दी गयी। फिर फ़रिश्ता ने पूछाः तुम्हें कौन सा माल बहुत पसन्द है? उस ने कहाः ऊँट या गाय (इस में रावी इस्हाक़ को शक है) मगर यह कि कोढ़ी और गन्जे में से एक ने ऊँट और दूसरे ने गाय कहा था। चुनान्चे उसे दस माह की गाभिन ऊँटनी दे दी और अल्लाह से दुआ़ की कि तुम्हें ऊँटों में अधिक से अधिक बर्कत हो।

फिर फ़रिश्ता गन्जे के पास गया और पूछाः तुम्हें कौन सी चीज़ सब से अधिक पसंद है? उस ने कहा कि खूबसूरत बाल और यह कि अल्लाह पाक मेरे इस गन्जेपन को दूर कर दे जिस की वजह से लोग मुझ से नफ़रत करते हैं। चुनान्चे फ़रिश्ता ने उस

पर हाथ फेरा और गन्जापन दूर हो गया और उस को खूबसूरत बाल दे दिया। फिर उस ने पूछा कि तुम्हें कौन सा माल बहुत पसन्द है? उस ने कहा, गाय। चुनान्चे उसे एक गाभिन गाय दे दी और दुआ की कि अल्लाह पाक तुम्हारी गाय में बर्कत दे।

फिर फ़रिश्ता अन्धे के पास गया और उस से पूछाः तुम्हें कौन सी चीज़ सब से अधिक पसन्द है? उस ने कहाः यह कि अल्लाह पाक मेरी आँखों की रोशनी लौटा दे ताकि मैं लोगों को देख सकूँ। चुनान्चे फ़रिश्ते ने उस पर अपना हाथ फेरा और अल्लाह पाक ने उस की रोशनी लौटा दी। फिर फ़रिश्ते ने पूछाः तुम्हें कौन सा माल अधिक पसन्द है? उस ने कहाः बकरी। चुनान्चे उसे भी एक दूध देने वाली बकरी दे दी गयी। फिर सभी ने बच्चा जना और देखेते-देखते कोढ़ी के लिये एक जन्गल भर कर ऊँट हो गये, गन्जे के लिये एक जन्गल भर कर गाय और अन्धे के लिये एक जन्गल भर कर बकरियाँ हो गयीं।

फिर कुछ समय के बाद ही फ़रिश्ता कोढ़ी के पास उस की पहली सूरत में बन कर गया और कहने लगाः मैं एक ग़रीब आदमी हूँ, सफ़र में मेरा माल समाप्त हो गया, इस समय अल्लाह पाक और तुम्हारी सहायता के बिना मैं अपने घर नहीं पहुँच सकता, इसलिये मैं तुझ से उस अल्लाह के नाम पर सवाल करता हूँ जिस ने तुम्हें साफ़-सुथरा रन्ग और अच्छी चमड़ी दी और माल-दौलत में ऊँट दिया। मैं उसी के नाम से एक ऊँट का सवाल करता हूँ जो सफ़र में मेरे काम आये। उस ने कहाः मुझ पर लोगों के बहुत हक़ हैं। (जिन्हें अदा करना है) फ़रिश्ता ने कहाः मैं तुम्हें खूब अच्छी तरह पहचानता हूँ। क्या तुम कोढ़ी नहीं थे और तुम से लोग नफ़रत करते थे, फिर अल्लाह पाक ने तुम्हें यह माल-दौलत दिया? उस ने कहाः कि मैं ने यह माल-दौलत तो अपने बाप-दादों से पुश्त-दर पुश्त पाया है। फ़रिश्ता ने कहाः अगर तुम झूठे हो तो अल्लाह पाक तुम्हें पहली शक्ल-सूरत की तरफ़ लौटा दे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः फिर वह फ़रिश्ता गंजे के पास उस की पहली शक्ल-सूरत में बन कर गया और उस से भी वही कहा जैसा कोढ़ी से कहा था। उस ने भी वही उत्तर दिया जो कोढ़ी ने दिया। इस पर फ़रिश्ता ने भी कहा कि अगर तू झूठा है तो अल्लाह पाक तुझे पहली शक्ल-सूरत में कर दे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः फ़रिश्ता अन्धे के पास उस की पहली शक्ल-सूरत में गया और कहने लगाः मैं मुहताज आदमी हूँ, सफ़र में मेरा माल समाप्त हो गया है, अपने घर बिना अल्लाह की सहायता और तुम्हारी मदद के नहीं पहुँच सकता, इसीलिये उस अल्लाह के नाम पर एक बक्री माँगता हूँ जिस ने तुम्हें आँखें दीं ताकि वह बक्री मेरे काम आये। यह सुन कर उस ने कहा बेशक मैं अन्धा था, अल्लाह पाक ने मुझे आँखें दीं, इन बकरियों में से तुम जितनी चाहो ले लो और जितनी चाहो छोड़ दो। अल्लाह की क़सम! आज तुम अल्लाह की राह में जितना भी ले लोगे मैं तुम्हारा हाथ नहीं पकड़ूगाँ।

यह सुन कर फ़रिश्ता ने कहाः तुम अपना माल अपने पास रहने दो। तुम तीनों को आज़माया गया, लेकिन केवल अल्लाह पाक तुम से राज़ी हुआ और तुम्हारे दो साथियों से नाराज़ हुआ।

बाब {अगर दुनिया में माल–दौलत कम मिले, उस पर सब्र करने का बयान।}

2084:– सअ़द बिन अबू वक़्क़ास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! मैं वह पहला शख़्स हूँ जिस ने अल्लाह की राह में तीर चलाया। हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ अल्लाह की राह में जिहाद करते थे और हमारे पास अन्गूर की बेल के पत्तों और बबूल के पत्तों के सिवा खाने को कुछ नहीं होता था। इन्हें खाने के बाद हर आदमी बक्री की तरह मेंगनी करता था। और आज हाल यह है कि बनी असद के लोग हमें दीन सिखा रहे हैं। अगर ऐसा हुआ तो मैं तो घाटे में रहा और मेहनत ही अकारत हो गयी।

फ़ाइदाः– सन एक हि॰ में 80 सहाबा पर आधारित एक लश्कर मक्का की तरफ़ भेजा गया। मक्का के निकट "बतने राबिग़" के स्थान पर दोनों तरफ़ से तीर चलाये गये। इसी मौक़े पर पहला तीर चलाया था (पैंगबरे–इस्लाम–मौलाना अ़ब्दुल मोबीन मन्ज़र)

2085:– ख़ालिद बिन उमैर अ़दवी ने बयान किया कि उत्बा बिन ग़ज़वान (बसरा के गवर्नर) ने हमें खुत्बा दिया तो हम्द–सना के बाद "अम्मा बाद" कहा और कहाः दुनिया ने अपने ख़त्म होने की ख़बर दे दी है और बहुत जल्द पीठ मोड़ लेने वाली है। अब दुनिया बस उतनी रह गयी है जितना बर्तन में कुछ बचा हुआ पानी रह जाता है। इस के बाद तुम लोग उस दुनिया की तरफ़ जाने वाले हो जो कभी फ़ना होने वाली नहीं, इसीलिये अपने साथ अच्छा सफ़र ख़र्च लेकर ज़ाओ। क्योंकि हम से बयान किया गया है कि एक पत्थर को जहन्नम के कनारे से गिराया जायेगा जो सत्तर वर्ष तक उस की गहराई में गिरता रहेगा, फिर भी उस की तह को नहीं पा सकेगा। अल्लाह की क़सम! जहन्नम भर जायेगी। और क्या तुम्हें इस बात में कोई शक है? हम से बयान किया गया है कि जन्नत के दर्वाज़े के एक पट से लेकर दूसरे पट तक चालीस वर्ष की दूरी है। और एक समय ऐसा आयेगा कि जब वह लोगों से खचाखच भरी हुयी होगी। और तुम्हें मालूम होना चाहिये कि मैं उन सात सहाबा में से सात्वाँ था जो आप के साथ थे। उस समय हम लोगों के पास पेड़ के पत्तों के अ़लावा और कोई चीज़ खाने की न थी, चुनान्चे हम लोगों के जबड़े घायल हो गये। मुझे एक चादर मिली तो अपने और सअ़द बिन मालिक के लिये उसे फाड़ कर उसके दो टुक्ड़े कर लिये। आधे टुक्ड़े का उन्होंने तहबन्द बनाया और आधे का मैं ने। और आज हाल यह है कि हम में का हर व्यक्ति किसी न किसी शहर का हाकिम है। मैं इस बात से अल्लाह की पनाह मागताँ हूँ कि अपने को बड़ा समझूँ, जबकि अल्लाह के नज़दीक छोटा हूँ। किसी सन्देष्टा की नबुव्वत हमेशा नही रही, और

आख़िर में हर ख़िलाफ़त, बादशाहत से बदल गयी। तुम लोग हमारे बाद आने वाले हाकिमों का भी हाल देख लोगे तो अन्दाज़ा हो जायेगा।

बाब {मुर्दा के पास से उस के बीवी–बच्चे और धन–माल वापस आ जाते हैं, केवल उस का अ़मल उस के साथ जाता है।}

2086:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुर्दे के साथ तीन चीज़ें (क़ब्रस्तान) जाती हैं, उन में से दो तो लौट आती हैं और एक उसी के साथ रह जाती है। उस के शव के साथ उस के घर वाले और माल जाते हैं, तो दोनों ही लौट आते हैं, केवल उस का अ़मल उस के साथ रह जाता है।

बाब {हमेशा अपने से कमज़ोर लोगों को देखो।}

2087:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हमेशा उसे देखो जो तुम से (धन–माल और सम्मान में) कमज़ोर है और उस की ओर मत देखो जो तुम से (धन–माल में) ऊपर है। अगर ऐसा करोगे तो अल्लाह पाक की नेमत को हक़ीर न समझोगे।

बाब {अल्लाह पाक उस बन्दे को पसन्द करता है जो प्रहेज़गार हो, मालदार हो और एक कोने में रहने वाला हो।}

2088:– आ़मिर बिन सअ़्द से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि सअ़्द बिन अबू वक़्क़ास रज़ि॰ अपने ऊँटों के रेवड़ में थे कि इसी बीच उन का लड़का उमर भी आ गया। सअ़्द ने उसे देख कर कहाः मैं इस सवार की बुराई से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ। उस ने अपने घोड़े से उतर कर कहाः आप अपने ऊँट और बकरियों में देख भाल में लगे हैं और लोगों को छोड़ दिया है वह बादशाहत के लिये लड़ रहे हैं। यह सुन कर उन्होंने उस के सीना पर मार कर कहाः चुप रह। मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि अल्लाह उस बन्दे को दोस्त रखता है जो प्रहेज़गार है, मालदार भी है और एक कोने में छुपा बैठा रहता है (राजनीति के बखेड़े में नहीं पड़ता है)

फ़ाइदा:– अ़म्र बिन सअ़्द ने इमाम हुसैन रज़ि॰ के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ी थी।

बाब {जिस ने अपने अ़मल में अल्लाह के साथ किसी और को शरीक किया।}

2089:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह पाक ने फ़रमाया हैः "मैं शिर्क करने वाले से बेनियाज़ हूँ। जिस ने मेरे लिये कोई नेकी और उस में मेरे ग़ैर को भी शरीक किया तो मैं उस की नेकी से बेज़ार हूँ। यह नेकी उस के खाते में जायेगी जिस के लिये शिर्क किया गया है।

फ़ाइदा:– यानी जो इबादत और नेकी दिखाने और शोहरत हासिल करने के लिये हो अल्लाह पाक उस को कुबूल नहीं करता है। और जो ख़ालिस अल्लाह के लिये हो केवल उसी को कुबूल करता है।

बाब {जो व्यक्ति दिखावे और शोंहरत के लिये कोई कार्य करे।}

2090:– इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स लोगों को सुनाने के लिये कोई नेक काम करता है तो अल्लाह पाक क़ियामत के दिन उस की ज़िल्लत को लोगों को सुनायेगा। और जो दिखावे के लिये करता है उस को अल्लाह पाक भी केवल (नेकियाँ) दिखायेगा (लेकिन मिलेगा कुछ नहीं)

बाब {कुफ़्र का एक शब्द भी जहन्नम में दाख़िल होने का सबब बन जाता है।}

2091:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बन्दा कभी ऐसी बात कह बैठता है जिस की वजह से जहन्नम में इतनी गहराई में चला जाता है जैसे पूरब से पश्चिम की तरफ़।

बाब {मोमिन का हर काम भलाई होता है।}

2092:– सुहैब रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मोमिन का भी क्या ही अच्छा हाल है कि उस का सवाब कहीं नहीं जाता है। और यह ख़ूबी मोमिन के अ़लावा और किसी को प्राप्त नहीं। अगर उसे खुशी हासिल होती है जिस पर अ़ल्लाह का शुक्र अदा करता है तो इस पर भी सवाब मिलता है। और अगर नुक़सान पहुँचने पर सब्र करता है उस पर भी सवाब मिलता है।

बाब {दीन के काम में सब्र करने का बयान। और खाई वालों का क़िस्सा।}

2093:– सुहैब रुमी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम से पहले के लोगों में एक बादशाह था उस के पास एक जादूगर था। जब वह जादूगर बूढ़ा हो गया तो उस ने बादशाह से कहाः अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ, अगर मेरे पास कोई लड़का भेज दीजिये ताकि मैं उसे जादू सिखा दूँ। बादशाह ने उस के पास एक लड़का भेज दिया। वह लड़का जब उस के पास जादू सीखने ज़ाता तो राह में एक राहिब (पादरी) का घर पड़ता तो वहाँ भी बैठ कर उस की बातें सुनता और उस की बातों को पसन्द करता। फिर जब वह जादूगर के पास जाता तो वह उसे (लेट आने की वजह से) मारता। उस लड़के ने जब राहिब से शिकायत की तो उस ने कहाः जब जादूगर से डरना तो कह देना कि घर वालों ने मुझे रोक लिया था और जब घर वालों से डरना तो कह देना कि जादूगर ने मुझे रोक लिया था। यह सिलसिला यूँ ही चलता रहा कि इसी दर्मियान एक किसी बड़े दरिन्दे ने लोगों का रास्ता बन्द कर दिया। लड़के ने सोचा कि आज में परीक्षा लूगाँ कि जादूगर अफ़ज़ल है या राहिब। चुनान्चे उस ने एक पत्थर

उठाया और कहाः ऐ अल्लाह! अगर तुझे राहिब का तरीक़ा जादूगर के तरीक़े से ज़्यादा पसन्द है तो इस जानवर को क़त्ल कर दे ताकि लोग आ-जा सकें। फिर उस ने पत्थर मार कर उस जानवर को क़त्ल कर दिया और लोग आने-जाने लगे। फिर उस ने राहिब के पास जा कर पूरी घटना की सूचना दी। राहिब ने उस से कहाः ऐ बेटे! तुम मुझ से बुर्ज़ुग हो गये हो, तुम्हारा मतर्बा इतना बुलन्द हो गया है जिसे मैं जानता हूँ। तुम बहुत जल्द मुसीबत में गिरफ़्तार होने वाले हो। जब ऐसी नौबत आयेगी तो किसी को भी मेरा पता न बताना। यह लड़का अब पैदाइशी अन्धों और कोढ़ियों को ठीक कर देता था, लोगों की समस्त बीमारियों का उपचार करने लगा। बादशाह का एक दर्बारी भी अन्धा था, उस ने जब यह ख़बर सुनी तो उस के पास ढेर सारे उपहार लेकर गया और कहाः अगर तुम ने मुझे ठीक कर दिया तो यह सारी चीज़ें तुम्हें दे दूँगा। यह सुन कर लड़के ने कहाः मैं किसी को ठीक नहीं करता, ठीक तो अल्लाह करता है। अगर तुम उस पर ईमान ले आओ तो मैं अल्लाह पाक से दुआ करुगाँ और वह तुम्हें शिफ़ा देगा। चुनान्चे वह ईमान ले आया तो अल्लाह पाक ने उसे शिफ़ा दे दी। अब वह बादशाह के पास गया और पहले की तरह उस के पास बैठा तो बादशाह ने उस से पूछाः तुम्हारी आँख की रोशनी किस ने लौटा दी? उस ने कहाः मेरे रब ने। बादशाह ने कहाः मेरे अलावा भी कोई रब है? उस ने कहाः मेरा और तुम्हारा रब अल्लाह है। इस पर बादशाह ने उसे पकड़ लिया और उस समय तक सज़ायें देता रहा जब तलक उस ने लड़के का पता नहीं बता दिया। फिर उस लड़के को हाज़िर किया गया। बादशाह ने उस से कहाः ऐ लड़के! तुम्हारा जादू यहाँ तक पहुँच गया कि अब तुम पैदाइशी अन्धों को भी ठीक करने लगे? कोढ़ियों का उपचार करने लगे? और भी बहुत कुछ करने लगे? उस ने कहाः मैं किसी को भी ठीक नहीं करता, शिफ़ा तो अल्लाह पाक देता है। यह सुन कर बादशाह ने उसे पकड़ लिया और उस समय तक उसे सज़ायें देता रहा जब तलक उस ने राहिब (ईसाई आलिम) का पता न बता दिया। फिर उसे भी पकड़ कर लाया गया और कहा गया कि अपने दीन से फिर जाओ। लेकिन राहिब ने इन्कार किया तो आरा मगँवाया गया और उस के सर के बीच में रख कर उसे चीर कर दो टुक्ड़े कर दिया गया। फिर अपने दर्बारी को बुलाया और उसे भी दीन से फिर जाने को कहा, तो उस ने भी इन्कार किया, तो उस के भी सर पर आरा रख कर दो टुक्ड़े कर दिये गये। फिर उस लड़के को बुलाया और उससे भी कहा कि अपने दीन से फिर जाओ। लेकिन उस ने भी इन्कार किया तो बादशाह ने उसे अपने दर्बारियों को सौंप दिया और कहा कि इसे फ़लाँ-फ़लाँ पहाड़ की चोटी पर ले जाओ, अगर यह अपने दीन से पलट जोय तो ठीक, वर्ना इसे उस चोटी से ढकेल दो। चुनान्चे वह लोग लड़के को लेकर चोटी पर चढ़ गये तो लड़के ने दुआ कीः ऐ अल्लाह! तू जिस प्रकार भी संभव हो मुझे इस से बचा ले। चुनान्चे उसी समय भूचाल आया और वह सब पहाड़ से चीने गिर गये, और लड़का बादशाह के पास वापस जा पहुँचा। बादशाह ने पूछाः तुम्हारे साथ वाले कहाँ गये? उस ने कहाः अल्लाह पाक ने मुझे उन की बुराई

से बचा लिया। बादशाह ने फिर उसे अपने चन्द दर्बारियों के हवाले कर के कहा: इसे एक नाव में सवार कर दो, जब नाव बीच दरिया में पहुँच जाये तो यह अगर अपने दीन से फिर जाये तो ठीक, वर्ना इसे दरिया में फेंक देना। चुनान्चे लोग इसे ले गये तो लड़के ने दुआ की: ऐ अल्लाह! तू जिस तरह चाहे मुझे इन से बचा ले। चुनान्चे कश्ती उलट गयी और सब के सब डूब गये और लड़का बादशाह के पास जा पहुँचा। बादशाह ने उस से पूछा: तुम्हारे साथ वाले कहाँ गये? उस ने कहा: अल्लाह पाक ने मुझे उन से बचा लिया। फिर उस ने बादशाह से कहा: तुम उस समय तक मुझे क़त्ल न कर सकोगे जब तक मेरे कहने के अनुसार काम न करो। उस ने पूछा: वह कौन सा काम है? लड़के ने कहा कि तमाम लोगों को एक मैदान में एकत्र करो और मुझे किसी पेड़ पर लटका दो, फिर मेरे तर्कश से एक तीर निकालो और उसे कमान पर रख कर कहो: "उस अल्लाह के नाम से जो इस लड़के का रब है" फिर मुझ पर तीर चला दो। जब तुम ऐसा करोगे तो उस तीर से मैं मर जाऊँगा। चुनान्चे बादशाह ने तमाम लोगों को एक मैदान में जमा किया और उसे एक पेड़ पर लटका दिया, फिर उस के तर्कश से तीर निकाल कर कमान के चिल्ला पर चढ़ाया और कहा: **"उस अल्लाह के नाम से जो इस लड़के का रब है"** वह तीर उस लड़के की कंपटी में घुस गया। उस ने तीर की जगह कंपटी पर हाथ रखा और मर गया। यह देख कर तमाम लोगों ने कहा कि अब हम लोग भी उस लड़के के रब पर ईमान लाते हैं, हम उस लड़के के रब पर ईमान लाते हैं, हम उस लड़के के रब पर ईमान लाते हैं। यह सूचना जब बादशाह तक पहुँची और उस को बताया गया कि तुम जिस से डरते थे अल्लाह ने वही तुम्हारे साथ कर दिया, तमाम लोग ईमान ले आये। इस पर बादशाह ने गली-कूचों के नाकों पर गढ़े खोदने का हुक्म दिया। जब गढ़े खुद गये तो उन में आग दहकाई गयी और हुक्म दिया कि जो अपने दीन से न फिरे उसे इन गढ़ों में डाल दो, चुनान्चे लोग आग के गढ़ों में कूद पड़ें। अन्त में एक महिला आयी उस की गोद में एक बच्चा था, वह कूदने से झिझकने लगी तो बच्चे ने कहा: ऐ माँ, सब्र से काम लो, तुम सच्चे दीन पर हो।

फ़ाइदा:- अल्लाह पाक ने सूर: रुम में इसी तरफ़ इशारा किया है "क्या मुसलमानों ने बस इतना सोच रखा है कि उन के ईमान ले आने के बाद उन्हें यूँ ही छोड़ देंगे और वह आज़माए नहीं जायेंगे? हम ने इन से पहले के लोगों को भी आज़माइश की भट्टी में तपाया है" (सूर: रुम-2, 3)

❀ ❀ ❀

किताबु फ़ज़ाइलिल् कुरआनि
(कुरआन पाक की फ़ज़ीलत का बयान)

बाब {सूरः फ़ातिहा के बारे में बयान।}

2094:– इब्ने अब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि एक दिन जिब्रील नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुये थे, इतने में किसी चीज़ के खुलने की आवाज़ सुनी तो ऊपर सर उठा कर देखा और कहाः आसमान का एक दर्वाज़ा है जो आज खुला है, इस से पहले कभी नहीं खुला था, फिर उस से एक फ़रिश्ता उतरा है। जिब्रील ने कहा कि यह फ़रिश्ता प्रथम बार उतरा है इस से पहले कभी भी ज़मीन पर नहीं उतरा था। उस ने आ कर सलाम किया और कहा कि आप को उन दो नूर की बशारत हो जो आप को दिये गये हैं और आप के अलावा और किसी नबी को नहीं दिये गये हैं। उन में एक "सूरः फ़ातिहा" और दूसरा "सूरः बक़र" है।

बाब {कुरआन पाक और सूरः बक़रः व आले अिम्रान पढ़ने का बयान।}

2095:– अबू उसामा बाहली रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कुरआन को पढ़ों, क्योंकि वह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों की सिफ़ारिश करेगा। और चमकती हुयी दो सूरतों "सूरः बक़रह" और "आले अिम्रान" को भी पढ़ों, क्योंकि क़ियामत के दिन दो बादल, या दो टेन्ट या परिन्दों या दो टोलियों की तरह आयेंगी और पढ़ने वालों की तरफ़ से हुज्जत पेश करेंगी। और सूरः बक़रः भी पढ़ो, क्योंकि उस का लेना बर्कत है और उसे को छोड़ देना नाकामी है, और गुमराह लोग इस का मुक़ाबला नहीं कर सकते। मुआविया ने कहा कि इस से (यानी गुमराह से) मुराद जादूगर लोग हैं।

बाब {आयुतल कुर्सी की फ़ज़ीलत का बयान।}

2096:– उबय्यि बिन कअ़ब रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछाः ऐ अबू मुन्ज़िर! अल्लाह की किताब में तुम्हारे नज़दीक कौन सी आयत सब से अहम है? उन्होंने कहाः अल्लाह और उस के रसूल ही बेहतर जानते हैं। आप ने फिर पूछाः ऐ अबू मुन्ज़िर! कौन सी आयत अल्लाह की किताब में तुम्हारे नज़दीक

बड़ी है? उन्होंने कहाः अल्लाहु लाइला-ह इल्ला हु-वल् हय्युल् क्य्यूम (यानी आयतुल कुर्सी) यह सुन कर आप ने (खुश होकर) मेरे सीना पर हाथ मारा और फ़रमायाः ऐ अबू मुन्ज़िर! तुम्हें अिल्म मुबारक हो।

बाब {सूरः बक़रः की अन्तिम आयतों के बारे में बयान।}

2097:- अबू मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो व्यक्ति सूरः बक़रः की इन अन्तिम आयतों को रात में पढ़ेगा तो यह आयतें उस की किफ़ालत करेंगी (यानी उस की तमाम ज़रुरतें पूरी करेंगी)

बाब {सूरः "कहफ़" की फज़ीलत का बयान।}

2098:- अबू दर्दा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो व्यक्ति सूरः "कहफ़" की शुरु की दस आयतों को याद कर ले (और उसे पढ़ता रहे) तो वह दज्जाल के फ़ितना से सुरक्षित रहेगा।

फ़ाइदाः- एक दूसरी रिवायत में है कि अगर अन्तिम आयत को पढ़े।

बाब {सूरः "इख़्लास" पढ़ने की फ़ज़ीलत का बयान।}

2099:- अबू दर्दा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क्या तुम में से कोई हर रात एक तिहाई कुरआन नहीं पढ़ सकता? सहाबा ने कहाः कोई एक तिहाई कुरआन कैसे पढ़ सकता है? आप ने फ़रमायाः "कुल् हु-वल्लाहु अ-हद्" (यानी सूरः इख़्लास) एक तिहाई कुरआन के बराबर है।

फ़ाइदाः- यानी एक बार इस सूरः को पढ़ लेने से एक तिहाई कुरआन पढ़ने का सवाब मिलेगा।

2100:- आइशा सिद्दीका रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक व्यक्ति को फौज का कमान्डर बना कर भेजा तो जब वह अपनी फ़ौज को नमाज़ पढ़ाते तो जो भी कुरआन पढ़ते उस के अन्त में सूरः इख़्लास पढ़ते। जब फौजी दस्ता वापस लौट कर आया तो उस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस बारे में बयान किया तो आप ने फ़रमायाः जा कर उन से पूछा कि वह ऐसा क्यों करते हैं? लोगों ने उन से पूछो तो उन्होंने बतायाः चूँकि वह सूरः अल्लाह रहमान की खूबियों पर आधारित है इसलिये इस का पढ़ना मुझे बहुत पसन्द है। आप ने फ़रमायाः उन से कह दो कि अल्लाह पाक भी उन्हें दोस्त रखता है।

फ़ाइदाः- यह सहाबी संभवतः अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ हैं। हर रकअ़त में सूरः फ़ातिहा के बाद जो भी कुरआन में से पढ़ते हैं, रुकूअ में ज़ाने से पहले इस सूरः को हमेशा पढ़ लिया करते फिर रुकूअ़ में जाते थे।

बाब {सूरः "फ़लक़" और सूरः "नास" की फ़ज़ीलत का बयान।}

2101:– उक़्बा बिन आमिर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः देखो! आज की रात ऐसी आयतें उतारी गयी हैं कि उन जैसी आयतें कभी नहीं देखी गयीं, और वह सूरः "फ़लक़" और सूरः "नास" है।

फ़ाइदाः– नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोते समय इन दोनों सूरतों को पढ़ कर अपने हाथ पर दम करते, फिर हाथ को पूरे शरीर पर मल लेते थे। आप रोज़ाना ऐसे ही करते थे।

बाब {कुरआन की वजह से मर्तबा बुलन्द होता है।}

2102:– आमिर बिन वासला से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नाफ़े बिन हारिस ने उमर रज़ि॰ से अस्फ़हान के स्थान पर मुलाक़ात की। उमर ने उन्हें मक्का का हाकिम बना दिया था। उमर ने पूछाः तुम ने दीहातियों पर किस को तहसीलदार बनाया है? उन्होंने कहाः इब्ने अब्ज़ा को? पूछाः यह इब्ने अबज़ा कौन है? उन्होंने कहाः हमारे आज़ाद किये हुये गुलामों में से एक गुलाम है। उमर ने कहाः तुम ने एक गुलाम को तहसीलदार बना दिया? नाफ़े ने कहाः वह कुरआन पाक के क़ारी हैं और तर्का (मीरास) के मसाइल पर उनकी बड़ी गहरी नज़र है। यह सुन कर उमर रज़ि॰ ने कहाः नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हैः अल्लाह पाक इस किताब के सबब से कुछ लोगों को बुलन्द स्थान अता करता है और कुछ लोगों को गिरा देता है।

फ़ाइदाः– जो कुरआन को पढ़ते, उसे याद करते और उस के आदेशानुसार अमल करते हैं उन्हें बुलन्दी अता करता है। और जो नहीं पढ़ता, नही याद करता और न ही उस के आदेशानुसार अमल करता है, उसे ज़लील कर देता है।

बाब {कुरआन पाक सीखने की फ़ज़ीलत का बयान।}

2103:– उक़्बा बिन आमिर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग सुफ़्फ़ा में थे कि आप (अपने हुजरे से) निकले और फ़रमायाः तुम में से किस को यह बात पसन्द है कि रोज़ाना सुब्ह को "बुतहान" या "अक़ीक़" (के बाज़ारों में) जाये और बिना कोई गुनाह किये, या अपने किसी रिश्तेदार के साथ नाइन्साफ़ी किये वहाँ से बड़े-बड़े कोहान वाली दो ऊँटनियाँ लाये? हम ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! हम सब इसे पसन्द करते हैं। आप ने फ़रमायाः फिर तुम में का हर एक सुबह-सुबह मस्जिद में क्यों नहीं जाता और अल्लाह की किताब में से दो आयतें क्यों नहीं सीखता-पढ़ता? जबकि यह दो आयतें उस के लिये दो ऊँटनियों से बेहतर है। इसी प्रकार जितनी आयतें हैं वह उतनी ऊँटनियों से बेहतर हैं।

फ़ाइदाः– 'बुतहान' और 'अक़ीफ़' यह दो बाज़ारों के नाम थे जहाँ जानवर बिकते थे।

हदीस से मालूम हुआ कि कुरआन पाक का पढ़ना-पढ़ाना, सीखना-सिखाना बहुत बड़ी फ़ज़ीलत का काम है। चाहे रोज़ाना दो ही आयतें पढ़ें, उस के माना-मतलब को समझ कर पढ़ें, यह बड़े सवाब का काम है। अ़रब में उस समय ऊँटनियों की बड़ी क़ीमत थी, इसलिये उन्हीं की मिसाल दी। याद रहे कि पढ़ने से मुराद माना-मतलब समझ कर पढ़ना है।

बाब {जो कुरआन को पढ़ता है उस की मिसाल, और जो नहीं पढ़ता उस की मिसाल।}

2104:– अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो मोमिन् बन्दा कुरआन पाक को पढ़ता है उस की मिसाल तरन्ज की सी है जिस की खुश्बू भी अच्छी होती है और मज़ा (स्वाद) भी अच्छा होता है। और जो नहीं पढ़ता उस की मिसाल खजूर की सी है जिस में अगर्चे खुश्बू नहीं होती मगर उस का स्वाद मीठा होता है। और उस मुनाफ़िक़ की मिसाल जो कुरआन पढ़ता है फूल की तरह है कि उस की महक अच्छी होती है, लेकिन स्वाद कड़ुवा होता है। उस मुनाफ़िक़ की मिसाल जो कुरआन नहीं पढ़ता, इन्दराइन की सी है कि उस भी नहीं होती है और स्वाद भी कड़ुवा होता है।

ो कुरआन पढ़ने में माहिर हो और जिस के लिये पढ़ना कठिन हो, उन दोनों के बयान।}

2105:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कुरआन का माहिर (हाफ़िज़, रवानी से पढ़ने वाला, उस पर अ़मल करने वाला क़ियामत के दिन) उन बुजुर्ग मर्तबों वाले फ़रिश्तों के साथ होगा जो लौहे-महफ़ूज़ के पास लिखते-पढ़ते हैं। और जो कुरआन को अटक-अटक कर पढ़ता है और पढ़ने में उसे दुश्वारी होती है (हुरुफ़ की अदायगी में) तो उस को दोहरा सवाब मिलेगा।

फ़ाइदा:– एक तो पढ़ने का, दूसरे सहीह ढन्ग से न पढ़ पाने के बावजूद, पढ़ने की कोशिश करने का। मख़रज न अदा कर पाने के बावजूद अदा करने की कोशिश करने का।

बाब {कुरआन पढ़ने से सुकून नाज़िल होता है।}

2106:– बरा बिन आ़ज़िब रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक व्यक्ति अपने घर में सूरः कहफ़ पढ़ने लगा तो उस के घर में बँधा हुआ घोड़ा उछल-कूद करने (बिदकने) लगा। उस ने ऊपर नज़र उठाई तो क्या देखा कि एक बदली उस के निकट आ कर उस के चारों तरफ़ घूम रही है। उन्होंने जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस घटना का ज़िक्र किया तो आप ने फ़रमायाः वह "सकीना" थी जो तिलावत करते समय नाज़िल हो रही थी।

2107:– अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि उसैद बिन हुज़ैर

रज़ि॰ अपने खजूर सुखाने के खलियान में एक रात कुरआन पाक की तिलावत कर रहे थे कि उन का घोड़ा इधर-उधर कूदने लगा (यह देख कर उन्होंने पढ़ना बन्द कर दिया) फिर पढ़ने लगे तो वह फिर कूदने लगा, चुनान्चे (फिर पढ़ना बन्द कर दिया। फिर जब तीसरी मतर्बा) पढ़ा तो कूदने लगा। यह देख कर वह डर गये कि कहीं (मेरे बेटे) यहया को कुचल न डाले, इसलिये मैं जा कर उस के पास खड़ा हो गया, तो क्या देखा कि एक साया मेरे ऊपर है जिस में चराग़ की तरह रोशनी है और वह रोशनी ऊपर चढ़ती चली जा रही है, फिर (वह ग़ाइब हो गयी) मैं ने नहीं देखा। फिर सुब्ह को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास हाज़िर हुआ और कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! रात को मैं अपने खलियान में कुरआन पढ़ रहा था कि अचानक मेरा घोड़ा कूदने (बिदकने) लगा। आप ने फ़रमायाः तुम अपनी पढ़ाई जारी रखते ऐ इब्ने हुज़ैर! उन्होंने कहाः मैं ने फिर पढ़ा तो वह पुनः कूदने लगा। आप ने फ़रमायाः तुम्हें पढ़ाई जारी रखनी चाहिये। उन्होंने कहाः मैं ने फिर पढ़ना शुरु किया तो वह फिर कूदने लगा, और मैंने पीछे मुड़ कर देखा तो (मेरा बेटा) यहया उस के क़रीब बैठा हुआ था इसलिये डरा कि कहीं घोड़ा उसे कुचल न डाले, तो क्या देखा कि बदली की तरह कोई चीज़ है जिस में चराग़ की तरह की रोशनी है जो इतनी ऊपर चढ़ गयी कि मेरी नज़रों से ओझल हो गया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः वह फ़रिश्ते थे जो तुम्हारी क़िरात सुन रहे थे। अगर तुम पढ़ते-पढ़ते सुब्ह करते तो लोग सुब्ह को उन्हें देखते और वह आँखों से ओझल न रहते।

फ़ाइदाः– देखें (बुख़ारी शरीफ़ 5018-उसैद बिन हुज़ैर रज़ि॰)

बाब {दो चीज़ों के अ़लावा किसी और में हसद (रश्क) जाइज़ नहीं।}

2108:– सालिम अपने पिता अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि॰ के हवाले से रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दो आदमियों के अ़लावा और किसी पर हसद (रश्क) जाइज़ नहीं। एक वह जिसे अल्लाह पाक ने कुरआन दिया है जिसे वह दिन-रात नमाज़ में पढ़ता हो और उस पर अ़मल भी करता हो। दूसरे वह व्यक्ति जिसे अल्लाह पाक ने धन-माल दिया है और वह दिन-रात उस में से सदक़ा-ख़ैरात करता रहता है।

फ़ाइदाः– 'रश्क' और 'हसद' में फ़र्क़ है। 'रश्क' कहते हैं कि आदमी यह इच्छा करे कि मैं भी उस की तरह बन जाऊँ और वह भी उसी तरह बना रहें और काम करता रहे। बुख़ारी की रिवायत में है कि उस का पड़ोसी सुन कर कह उठे कि काश मुझे भी उस जैसा कुरआन का ज्ञान होता और मैं भी उस की तरह अ़मल करता। और दूसरा यह कह उठे कि काश मेरे पास भी उस के जितना माल होता तो मैं भी उसी की तरह ख़र्च करता (5026-अबू हुरैरा) इस के उलट 'हसद' कहते हैं कि आदमी दूसरे को देख

कर यह इच्छा करे कि काश उस को माल समाप्त हो जाये और मुझे मिल जाये।

बाब {क़ुरआन को जितना पढ़ोगे उतना ही याद रहेगा।}

2109:– अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ुरआन को याद रखने वाले की मिसाल पैर बँधे हुये ऊँट की सी है। अगर मालिक ने बाँधने का खयाल रखा तो ऊँट मौजूद रहा और अगर यूँ ही छोड़ दिया तो नौ दो ग्यारह हो गया। (यानी भाग गया)

फ़ाइदाः– इसी प्रकार जब तक क़ुरआन पढ़ने का सिलसिला जारी रहेगा वह याद रहेगा, लेकिन जैसे पढ़ना बन्द कर दिया वह दिल से निकल जायेगा। और सब भूल जायेगा।

2110:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में बुरा वह व्यक्ति है जो यह कहता है कि मैं यह-यह आयतें भूल गया, बल्कि यूँ कहना चाहिये कि "भुला दिया गया"। क़ुरआन को पढ़ते रहा करो क्योंकि जिस प्रकार ऊँट रस्सी तोड़ कर भाग जाता है इसी प्रकार क़ुरआन भी (न पढ़ने से दिल से निकल कर) भाग जाता है।

फ़ाइदाः– देखें (बुख़ारी–5032, 5039–अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰)

बाब {अच्छी आवाज़ में क़ुरआन पढ़ना चाहिये।}

2111:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः अल्लाह पाक ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बुलन्द आवाज़ से क़ुरआन पढ़ते समय अच्छी आवाज़ के साथ पढ़ने पर जितना ज़ोर दिया है, उतना किसी और काम पर नहीं दिया है।

फ़ाइदाः– चुनान्चे अबू मूसा के बारे में आप ने फ़रमायाः तुम्हें दावूद अ़लै॰ जैसी सुरेली आवाज़ अ़ता की गयी है (बुख़ारी शरीफ़–5048–अबू मूसा)

2112:– अबू बुर्दा रज़ि॰ से रिवायत है कि अबू मूसा अश्अ़री रज़ि॰ नेबयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कल रात मैं तुम्हारी क़ुरआन की क़िरात सुन रहा था (और खुश हो रहा था) उस समय अगर तुम मुझे देखते (तो तुम खुश हो जाते) तुम्हें तो दावूद अ़लै॰ की आवाज़ों में से बेहतरीन आवाज़ दी गयी है।

बाब {क़ुरआन की तिलावत के समय लहजे में उतार–चढ़ाव लाना चाहिये।}

2113:– अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सफ़र में अपनी सवारी वर सवार थे और सूरः फ़तह की तिलावत कर रहे थे और अपनी आवाज़ में उतार चढ़ाव लाते थे। अबू मूआ़विया रज़ि॰ ने कहा कि अगर मुझे यह डर न होता कि लोग मुझे घेर लेंगे तो मैं आप के पढ़ने की तरह पढ़ कर सुनाता।

फ़ाइदाः– आवाज़ को हल्का-भारी कर के पढ़ने में बड़ा भला मालूम होता है। एक ही सुर में पढ़ते चले जाने में वह मज़ेदारी नहीं। बुख़ारी की रिवायत में है कि अपने हल्क़ में आवाज़ को घुमाते (5047-अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल) यानी जैसे क़ारी लोग क़िरात के साथ पढ़ते हैं।

बाब {रात को ऊँची आवाज़ से क़िरात करना और ग़ौर व तव्वजोह से सुनने का बयान।}

2114:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक व्यक्ति को रात में कुरआन पढ़ते सुना तो फ़रमायाः अल्लाह पाक उस पर अपनी रहमत नाज़िल करे, उस ने मुझे वह फ़लाँ-फ़लाँ आयतें याद दिला दीं जिन्हें मैं ने फ़लाँ-फ़लाँ सूरत में पढ़ना छोड़ दिया था।

बाब {कुरआन सात हर्फ़ों (क़िरातों) में नाज़िल किया गया है।}

2115:– उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ ने बयान किया कि मैंने हिशाम बिन हकीम बिन हिज़ाम को सूरः फ़ुर्क़ान (नमाज़ में) पढ़ते सुना। वह उस तरीक़ा के ख़िलाफ़ पढ़ रहे थे जिस तरीक़ा पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे सिखाया था। चुनान्चे मैं ने इरादा किया कि उहें तुरन्त पकड़ लूँ, लेकिन मैं ने थोड़ी सी मोहलत दी। फिर जब वह नमाज़ पढ़ चुके तो उन की गर्दन में चादर डाल कर खींचता हुआ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास लाया और कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! मैं ने उन्हें उस तरीक़ा के ख़िलाफ़ सूरः फ़ुर्क़ान को पढ़ते सुना है जिस तरीक़े पर आप ने मुझे सिखाया था। आप ने फ़रमायाः उन्हें छोड़ दो। और उन से फ़रमायाः कि अच्छाः पढ़ कर सुनाओ। चुनान्चे उन्होंने वैसे ही पढ़ा जैसे कि मैं ने पहले सुना था। आप ने फ़रमायाः (ठीक तो पढ़ रहे हैं) यह सूरः इसी प्रकार नाज़िल हुयी है। फिर आप ने मुझ से कहाः पढ़ो, चुनान्चे मैं ने भी पढ़ा तो आप ने फ़रमायाः (ठीक तो है) यह सूरः इसी प्रकार उतरी है, फिर फ़रमायाः कुरआन सात हर्फ़ों (पढ़ने के तरीक़ों) पर उतरा है, उन में जो तुम्हें पढ़ने में आसान लगे उस तरीक़े से पढ़ो।

फ़ाइदाः– कुरआन पाक की सात क़िरात बहुत मश्हूर है। उस में से एक क़िरात "हफ़्स" भी है जिस क़िरात में हिन्दुस्तानी क़ारी और हाफ़िज़ पढ़ते हैं।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का दूसरे को पढ़ कर सुनाने का बयान।}

2116:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायल है उन्होंने बयान किया कि अनस बिन मालिक रज़ि॰ ने उबय्यि बिन कअ़ब से फ़रमायाः अ़िज़्ज़त और बुर्जुगी वाले अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें सूरः "लम् यकुन्" पढ़ कर सुनाऊँ। उन्होंने पूछाः क्या अल्लाह पाक ने मेरा नाम लेकर कहा है? आप ने फ़रमायाः हाँ। यह सुन कर वह (मारे खुशी के) रोने लगे।

फ़ाइदा:– अल्लाह पाक का किसी का नाम ले लेना यह अपने आप में बड़े मर्तबे और फ़ज़ीलत की बात है। आप देखें कि कुरआन पाक मैं अल्लाह ने किसी सहाबी का नाम नहीं लिया मगर ज़ैद बिन हारिसा का। चुनान्चे यह उन की बुज़ुर्गी, बड़ाई और नेकी के लिये बहुत काफ़ी है (देखें सूरः अहज़ाब 37 पार 21) फिर एक नबी, उम्मती को सुनाये, उम्मती के लिये यह कितनी बड़ी फ़ज़ीलत की बात है।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का जिन्नों को कुरआन पढ़ कर सुनाने का बयान।}

2117:– आ़मिर, जिन्हें शोबी भी कहा जाता है ने बयान किया कि मैं ने अ़ल्क़मा से पूछाः क्या जिन्नों वाली रात को इब्ने मस्ऊद भी अल्लाह के नबी के साथ थे? उन्होंने कहा कि इस बारे में मैं ने स्वँय उन से पूछा कि जिन्नों वाली रात में तुम में से कोई नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ था? (यानी जिस रात आपने जिन्नों से मुलाक़ात की थी) उन्होंने कहाः नहीं। लेकिन एक रात हम आप के साथ ही थे कि आप कहीं गुम हो गये तो हम ने आप को पहाड़ की चूटियों और घाटियों में तलाश किया लेकिन आप न मिल सके, तो समझा कि आप को जिन्न उठा ले गये, या चुपके से किसी ने मार डाला है। चुनान्चे इसी रन्ज में हम ने रात बड़ी बेचैनी में बिताई। फिर जब सुब्ह हुयी तो क्या देखा कि आप हिरा पहाड़ की तरफ़ से चले आ रहे हैं। हम लोगों ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! रात को आप न मिले तो हम लोगों ने आप को बहुत ढूँडा, जब आप न मिले तो रात बड़ी बेचैनी में गुज़ारी। आप ने फ़रमायाः (बात यह है कि) जिन्नों की तरफ़ से एक बुलाने वाला आ गया तो मैं उस के साथ चला गया। फिर आप ने हमें ले जा कर उन के रहने के निशान और उन की आग के निशान दिखाये (जहाँ खाना पकाते थे) फिर जिन्नों ने आप से खाना माँगा तो आप ने फ़रमायाः उस जानवर की हर हड्डी जो अल्लाह के नाम पर ज़ब्ह किया जाये तुम्हारी ख़ूराक है, वह हड्डी तुम्हारा हाथ लगते ही गोश्त से भर जायेगी। और हर ऊँट की मेंगनी तुम्हारे जानवरों की ख़ूराक है। चुनान्चे आप ने फ़रमायाः हड्डी और गौबर से इस्तिंजा न किया करो, क्योंकि यह सब चीज़ें तुम्हारे भाई जिन्नों और उनके जानवरों की ख़ूराक हैं।

2118:– म-अ़न ने बयान किया कि मैं ने अपने पिता से सुना उन्होंने कहा कि मैं ने मस्रुक़ से पूछाः जिस रात जिन्नों ने आ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कुरआन सुना तो इस की सूचना नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को किस ने दी? उन्होंने कहा कि तुम्हारे पिता जी (इब्ने मस्ऊद) ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को जिन्नों के आने की सूचना एक पेड़ ने दी।

बाब {नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का दूसरे की ज़बानी कुरआन पढ़वा कर सुनना।}

2119:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवातय है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमायाः तुम मेरे सामने कुरआन पढ़ो। मैं ने कहाः मैं आप के सामने पढ़ूँ, हालाँकि आप ही पर नाज़िल हुआ है। आप ने फ़रमायाः मैं चाहता हूँ कि दूसरे की ज़बान से भी सुनूँ। चुनान्चे मैं ने सूरः निसा की तिलावत शुरु की। जब इस आयत "फ़कै-फ़ इज़ा जेना (आयत 41)" पर पहुँचा और अपना सर उठा कर देखा, या किसी के चुटकी लेने पर मैंने अपना सर उठाया तो क्या देखा कि आप के आसूँ बह रहे हैं।

फ़ाइदाः— देखें (बुख़ारी-4582-इब्ने मस्ऊद रज़ि॰)

2120:— अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं हिम्स नगर में था तो लोगों ने मुझ से कहा कि हमें कुरआन पढ़ कर सुनाओ। चुनान्चे मैं ने सूरः यूसुफ़ की तिलावत शुरु की तो एक व्यक्ति कहने लगाः अल्लाह की क़सम! यह आयत तो इस प्रकार नहीं नाज़िल हुयी है? मैं ने कहाः तेरा नास जाये, मैं ने तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने भी इसी प्रकार पढ़ी तो आप ने फ़रमायाः बहुत अच्छा पढ़ा। अभी मैं उस से बातें ही कर रहा था कि उस के मुँह से शराब की बू आयी तो मैं ने कहाः तू शराब पीता है और अल्लाह की किताब को झुठलाता है ठहर जा! मैं तुझे कोड़े मारुँगा, चुनान्चे मैं ने उस को कोड़े मारे।

बाब {कुरआन को लेकर झगड़ना मना है।}

2121:— अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अ़ास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक दिन दोपहर को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास गया तो क्या देखा कि दो आदमी किसी आयत के बारे में तकरार कर रहे हैं। यह सुन कर आप बाहर निकले। उस समय आप के चेहरे से गुस्सा ज़ाहिर हो रहा था, फिर फ़रमायाः तुम में पहले के लोग अल्लाह की किताब में तकरार करेन की वजह से हलाक हुये थे।

फ़ाइदाः— अगर तहक़ीक़ और पढ़ने-पढ़ाने और समझने-समझाने की निय्यत से सवाल-जवाब हो तो यह अच्छी बात है, इस से मना नहीं किया गया है, लेकिन बिला वजह फ़साद की निय्यत से हो तो यह मना है।

2122:— जुन्दुब बिन अ़ब्दुल्लाह बोजली रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कुरआन मजीद उस समयतक पढ़ो जब तक उस में दिल लगे, जब जी उचाट होने लगे तो पढ़ना बन्द कर दो।

फ़ाइदाः— बुख़ारी शरीफ़-5060-अ़ब्दुल्लाह बोजली) मौलाना दावूद रज़ि॰ लिखते हैं "इस का यह भी तजुर्मा किया गया है कि "कुरआन उसी समय तक पढ़ो जब तलक तुम्हारे दिल मिले-जुले हों, इख़्तिलाफ़ और फ़साद की निय्यत न हो। फिर जब तुम में इख़्तिलाफ़ बढ़ जाये और झगड़े की नौबत आ जाये तो उठ खड़े हो और कुरआन पढ़ना बन्द कर दो।"

❀ ❀ ❀

किताबुत्तफ़सीरि
(कुरआन पाक की सूरतों की तफ़सीर)
(सूरः बक़रः)

बाब {अल्लाह तआला ने फ़रमायाः "दर्वाज़े में झुक कर जाओ" (सूरः बक़रः 58) की तफ़्सीर।}

2123:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बनी इस्राईल से यह कहा गया था कि "दर्वाज़े में सज्दा करते हुये दाख़िल होना और 'हित्ततुन' कहना, हम तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देंगे। लेकिन उन्होंने हुक्म के ख़िलाफ़ किया और चूतड़ों के बल घिसटते हुये दाख़िल हुयेऔर (हित्ततुन' के स्थान पर) 'हब्बतुन' कहा।

फ़ाइदाः– यह हुक्म अल्लाह ने बनी इस्राईल को दिया था। 'हित्ततुन' का अर्थ है "ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को माफ़ कर दे" लेकिन मज़ाक़ उड़ाते हुये कहा "हब्बतुन" यानी ऐ अल्लाह! हमें गेहूँ दे।" अल्लाह पाक ने बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल होते समय सज्दा करते हुये दाख़िल होने का हुक्म दिया था। आयत सूरः बक़रः की आयत न॰ 58 है।

बाब {अल्लाह के फ़र्मान "और नेकी यह नहीं है...... (सूरः बक़रः 189) की तफ़्सीर।}

2124:– अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि मैं ने बरा बिन आज़िब रज़ि॰ को बयान करते सुना कि अन्सार के लोग जब हज्ज कर के लौटते तो घर में पिछवाड़े के रास्ते से दाख़िल होते । उन्होंने कहा कि एक अन्सारी (हज्ज से वापस आये और) सामने के दर्वाज़े से घर में दाख़िल हुये तो लोग इस पर एतराज़ करने लगे, इस मौक़ा पर यह आयत उतरी "नेकी यह नहीं है कि तु अपने घरों में पिछवाड़े से दाख़िाल हो, बल्कि नेकी इस का नाम है कि तुम बुराइयों से बचो और घरों के अन्दर सामने के दर्वाज़े से दाख़िल हो (सूरः बक़रः 189)।

फ़ाइदाः– जाहिलिय्यत के ज़माना में लोग हज्ज या उम्रा का एहराम बाँध लेते और किसी ख़ास जरुरत से राह से घर वापस आने की ज़रुरत पड़ जाती तो दर्वाज़े से आने के बजाए पीछे से दीवार फाँद कर अन्दर घर में दाख़िल होते, और इसे नेकी का काम समझते थे। अल्लाह पाक ने इस से मना फ़रमा दिया।

बाब {अल्लाह के फ़र्मान (आयत न॰ 260) की तफ़्सीर।}

नोटः– इस बारे में हदीस पीछे "किताबुल् फ़ज़ाइल" में बयान हो चुकी है, देखें हदीस न॰ 2608।

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 284) की तफ़्सीर।}

2125:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि जब सूरः बक़रः की आयत 284 नाज़िल हुयी तो सहाबा को बड़ी बेचैनी हो गयी और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर घुटनों के बल बैठ कर अनुरोध कियाः ऐ अल्लाह के सन्देष्टा! पहले तो हमें उन्ही कामों के करने का हुक्म दिया गया था, जिन्हें हम कर सकते थे, जैसे नमाज़, जिहाद और सदक़ा–ख़ैरात। लेकिन इस आयत में जो हुक्म दिंया गया है (कि दिल में आने वाले बुरे ख़यालों पर भी पकड़ होगी) तो उसे हम नहीं कर सकते। यह सुन कर आप ने फ़रमायाः तुम लोग भी वही कहना चाहते हो जो तुम से पहले यहूद–नसारा कह चुके हैं (यानी उन्होंने वादा किया था) कि हम आप की बात मानेंगे, लेकिन नाफ़र्मानी की। तुम लोगों को यूँ क़हना चाहिये कि "हम ने आप का आदेश सुन लिया और मान भी लिया, ऐ मेरे मौला! हम तुझ से (अपनी ख़ताओं की) माफ़ी चाहते हैं, और तेरी ही तरफ़ लौट कर जाना भी है।" यह सुन कर सहाबा बोल उठेः "हम ने सुना और मान लिया, ऐ अल्लाह! हम तुझ से (अपनी ख़ताओं की) माफ़ी माँगते हैं और तेरी ही तरफ़ लौट कर जाना भी है।"

जब सहाबा ने इस आयत को पढ़ना शुरु किया और उन की ज़बानों को सहूलत हो गयी तब अल्लाह पाक ने "आ–म–नर्रसूलु......नाज़िल फ़रमायी। फिर जब सहाबा ने इस आयत पर भी अ़मल करना शुरु कर दिया तो (पहली आयत) व–इन् तुब्दू माफ़ी अन्फ़ुसिकुम्.... को मन्सूख़ कर दिया और (उस की जगह पर) ला यु–कल्लिफ़ुल्लाहु... नाज़िल फ़रमायी।

(सूरः आले अ़िम्रान)

बाब {अल्लाह के फ़र्मान (आयत न॰ 7) की तफ़्सीर।}

2126:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह आयत तिलावत की और फ़रमायाः जब तुम मुतशाबेह आयतों को ढूँढने वालों को देखो तो उन से बचो, क्योंकि यह वही लोग हैं जिन का अल्लह पाक ने कुरआन में नाम लिया है।

बाब {अल्लाह तआला के (आयत 188) में फ़रमान की तफ़्सीर।}

2127:– अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि

वसल्लम के ज़माना में कुछ मुनाफ़िक़ ऐसे थे कि जब आप लड़ाई पर जाते तो वह पीछे रह जाते (और जन्ग में न शरीक होते) और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पीछे रह कर अपने घरों में बैठे रहने पर खुश रहते, फिर जब आप वापस लौट कर आते तो आप के सामने बहाने बनाते और क़समें खाते, और आप से यह उम्मीद भी रखते कि उन्होंने जो कार्य नहीं किये हैं उन पर भी वह उन की प्रशंसा करें, तब अल्लाह ने यह आयत उतारीः "जो लोग अपने बुरे कामों पर खुश होते हैं और जो (नेक काम) नहीं किये हैं उन के लिये चाहते हैं कि उन की प्रशंसा की जाये, उन के बारे में कोई ख़याल न लाओ कि यह लोग अ़ज़ाब से बच निकलेंगे। इन लोगों को तो दुःख दाई अ़ज़ाब होगा।"(आले इ़म्रान 188)

2128:– हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मतबा अपने दर्बान राफ़े से कहाः इब्ने अ़ब्बास के पास जा कर पूछो कि हम में से हर शख़्स अपने किये हुए पर खुश होता है और जो कुछ नहीं किया है उस के बारे में भी चाहता है कि उस की प्रशंसा की जाये, तो फिर तो हम लोगों को भी अ़ज़ाब होगा (क्योंकि हम लोगों में भी तो यह कमी मौजूद है जो मुनाफ़िक़ों के अन्दर पाई जाती थी) इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने कहा कि इस आयत से तुम्हारा क्या संबन्ध है? यह आयत तो अहले-किताब वालों के बारे में नाज़िल हुयी है। फिर उन्होंने यह आयत तिलावत की "जब अल्लाह ने उन लोगों को जिन्हें किताब दी थी इक़रार (वादा) लिया कि (जो कुछ उन की किताब में लिखा है) उसे साफ़-साफ़ बयान करेंगे और उस में कोई बात न छुपाएँगे, लेकिन उन्होने इस हुक्म को अपने पीठ पीछे डाल दिया और उसके बदले थोड़ा सा फ़ाइदा हासिल किया। यह जो कुछ कमाई कर रहे हैं बुरा है। और जो अपने बुरे कामों से खुश होते हैं .. .. (आयत 187, 188) इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अहले-किताब से कोई बात पूछी तो उन्होंने उसे छुपा लिया और उस के स्थान पर ग़लत बात बता दी, फिर चले गये और यह कह दिया कि जो आप ने पूछा था उसे हम ने सच-सच बता दिया, और इस के बदले अपनी प्रशंसा कराने की इच्छा करने लगे और (जो झूठ बताया था) उस पर अन्दर ही अन्दर खुश हो रहे थे (इन्हीं लोगों के बारे में यह आयत नाज़िल हुयी)

(सूरः निसा)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत न॰ 3) की तफ़सीर।}

2129:– उर्वा बिन जुबैर रज़ि॰ ने बयान किया कि में ने (अपनी ख़ाला) आ़इशा रज़ि॰ से इस आयत के बारे में पूछाः "अगर तुम्हें इस बात का डर हो कि यतीमों के साथ न्याय न कर सकोगे, तो उन महिलाओं में दो-दो चा-चार से निकाह कर लो जो तुम्हें पसन्द आयें.......(सूरः निसा 3) आ़इशा रज़ि॰ ने कहाः ऐ मेरे भतीजे! इस आयत का

मतलब यह है कि एक यतीम लड़की अपने वली की पर्वरिश में है (जैसे चचा की लड़की भतीजे के पास) और अपने भतीजे के माल में वह शरीक हो, उस का वली (भतीजा) उस की खुबसूरती और सुन्दरता को देख कर उस से निकाह करना चाहे और उतनी मोहर न देना चाहे जितनी और लोग देनी चाहते हैं, तो अल्लाह पाक ने ऐसे व्यक्ति को उस से निकाह करने से मना फ़रमा दिया है। हाँ, अगर इन्साफ़ से काम ले और पूरी महर देने पर राज़ी हो तो उस को अनुमति है। वर्ना उन्हें हुक्म है कि उन के अ़लावा जो दूसरी महिलायें पसन्द हों उन से निकाह कर लें।

आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ ने बयान किया कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद जब लोगों ने उन लड़कियों के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा तब अल्लाह पाक ने यह आयत उतारीः "आप से लोग (यतीम) महिलाओं के बारे में पूछते हैं, तो आप उन से कह दें कि अल्लाह तुम को उन के (साथ निकाह करने के) मामले में अनुमति देता है। और जो हुक्म इस किताब में पहले दिया गया है वह उन यतीम महिलाओं के बारे में है जिन को तुम उन का हक़ तो देते ही नहीं और इच्छा करते हो कि उन के साथ निकाह कर लो....." (आयत 127) आ़इशा रज़ि॰ ने कहा कि "और जो हुक्म इस किताब में पहले दिया गया है" से मुराद पहली आयत है, और यह आयत उन यतीम बच्चों के बारे में है जो हुस्न और माल में कम हो तो उन को इस यतीम लड़की से निकाह करने से मना किया गया है।

बाब {अल्लाह पाक ने फ़रमायाः "जो ग़रीब है वह जाइज़ तरीक़े से यतीम का माल खा सकता है।}

2130:– आ़इशा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने इस आयतः "जो फ़क़ीर है वह जाइज़ तौर पर खा सकता है" के बारे में बयान किया कि यह आयत उस के बारे में उतरी है जो यतीम के माल की देख-रेख कर रहा हो और उस के माल को बनाने की कोशिश में लगा हो, अगर वह वली ग़रीब है तो दस्तूर के मुताबिक़ उस में से खा-पी सकता है (लेकिन अगर मालदार है तो खाने से प्रहेज़ करे)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 88) की तफ़्सीर।}

2131:– ज़ैद बिन साबित रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब उहुद की जन्ग के लिये निकले तो जो आप के साथ निकले थे उन में से कुछ वापस लौट आये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबा इन के बारे में दो गुरुप में बँट गये। एक गुरुप ने कहा कि हम उन्हें क़त्ल कर देंगे और दूसरे ने कहा कि हम क़त्ल नहीं करेंगे। इसी मौक़े पर अल्लाह पाक ने यह आयत नाज़िल फ़रमायीः "तुम मुनाफ़िक़ों को लेकर दो गरोह में बटे हुये हो, ऐसा क्यों है? अल्लह पाक ने तो उन की इस बुरी हर्कत पर उन्हें औंधा कर दिया है........(निसा 88)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 93) की तफ़्सीर।}

2132:– सओद बिन जुबैर रज़ि॰ ने बयान किया कि मैं ने इब्ने अब्बास रज़ि॰ से पूछाः अगर कोई किसी मोमिन को जान–बूझ कर क़त्ल कर दे तो क्या उस की तौबा कुबूल हो सकती है? इब्ने अब्बास ने कहाः नहीं। जब मैं ने उन्हें (सूरः फ़ुर्क़ान की) यह आयत सुनाईः "जो लोग किसी को नाहक़ क़त्ल नहीं करते और न ज़िना करते हैं, जो ऐसा करेगा वह सख़्त गुनाह करेगा....मगर जिस ने तौबा की और ईमान लाया (फ़ुर्क़ान 70) (इस में क़त्ल के बाद तौबा कुबूल करने की बात कही गयी है) इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने कहाः यह आयत मक्का में नाज़िल हुयी है और इस आयत को (सूरः निसा की आयत 93 ने) जो मदीना में नाज़िल हुयी है, मन्सूख़ कर दिया है।

फ़ाइदा:– सूरः फ़ुर्क़ान की आयत से स्पष्ट हैं कि क़त्ल कर देने और ज़िना कर लेने के बाद तौबा करने से गुनाह माफ़ हो जाते हैं। लेकिन सूरः निसा की आयत 93 में है कि नहीं माफ़ होंगे, चुनान्चे फ़रमायाः "अगर किसी ने किसी मोमिन को जानबूझ कर क़त्ल कर दिया तो उस का ठिकाना जहन्नम है जिस में हमेशा वह रहेगा।" (आयत–93)

उलमा का कहना है कि ख़ालिस तौबा से हर गुनाह माफ़ हो सकता है। क़त्ल की जो जहन्नम सज़ा बनाई गयी है यह उस के लिये है जिस ने बाद में ख़ालिस तौबा न की हो। फिर हमेशा हमेशा केवल काफ़िर और मुश्रिक जहन्नम में रहेंगे और क़ातिल मोमिन है, इसलिये हमेशा नहीं रहेगा। यहाँ जो सज़ा में "हमेशा" का ज़िक्र है इस का अर्थ "लंबी मुद्दत तक" लिया जायगा (हाफ़िज़ सलाहुद्दीन युसूफ़ ने "फ़त्हुल क़दीर" पुस्तक के हवाले से यही लिखा है। (विस्तार से जानकारी के लिये देखें तफ़्सीर "अहसनुल बयान")

बाब {अल्लाह के फ़र्मान (आयत 94) की तफ़्सीर।}

2133:– इब्ने अब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि कुछ मुसलमानों ने एक व्यक्ति को अपनी चन्द बकरियों के दर्मियान पाया, उस ने इन लोगों को देख कर सलाम किया, लेकिन इन लोगों ने उसे पकड़ कर क़त्ल कर दिया और बकरियों को अपने क़ब्ज़े में ले लिया। इसी मौक़े पर यह आयत नाज़िल हुयीः "जो कोई तुम से सलाम करे उस से यह न कहो (अपनी मर्ज़ी से) कि तू मोमिन नहीं है, और ऐसा कह कर दुनिया कमाने के चक्कर में न पड़ो। अल्लाह के पास बहुत से माले ग़नीमत हैं। तुम भी तो पहले ऐसे ही थे, फिर अल्लाह ने तुम पर एहसान किया, तो (आइन्दा) तहक़ीक़ कर लिया करो" (सूरः निसा 94) इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने इस आयत में "सलाम" पढ़ा है और कुछ लोगों ने "स–लम" पढ़ा है।

फ़ाइदा:– अगर 'स–लम' पढ़ा जायेगा तो तर्जुमा यह होगा "वह तुम्हारे सामने सुलह–समझौते की बात करे"

फ़ाइदा:– सहाबा ने यह समझा कि शायद वह जान बचाने के लिये सलाम कर के अपने आप को मुसलमान ज़ाहिर कर रहा है, इसलिये बिला छान–बीन किये उस को मार डाला और बकरियों को माले ग़नीमत के तौर पर लेकर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन से यह भी फ़रमाया था कि मक्का में तुम भी पहले उस चर्वाहे की तरह ईमान छुपाने पर मजबूर थे (बुख़ारी–किताबुद्दियात) मालूम हुआ कि इन हालात में बिना छान–बीन और तहक़ीक़ के क़त्ल करना जाइज़ नहीं है।

बाब {(सूरः निसा की) आयत 128 में अल्लाह के फ़र्मान की तफ़्सीर।}

2134:– आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ ने बयान किया कि यह आयत उस महिला के बारे में नाज़िल हुयी है जो किसी के निकाह में हो और वह उसे रखना न चाहे, उस का पति उस से संभोग भी कर चुका हो और उस से औलाद भी हो, और उसे छोड़ना भी बुरा जाने। आयत का तर्जुमा यह हैः "अगर किसी महिला को अपने पति की तरफ़ से ज़्यादती या बेपर्वाही की शंका हो, तो इस हालत में पति–पत्नी पर कोई गुनाह नहीं कि आपस में किसी क़रारदाद पर समझौता कर लें, और समझौता ही अच्छी चीज़ है.....(सूरः निसा 128)

फ़ाइदा:– पति अगर किसी वजह से अपनी पत्नी को नापसन्द करे, उस से दूर रहे और लार्पवाही, बेपर्वाही और बेतवज्जोही करे। या एक से ज़्यादा पतनियाँ होने की सूरत में किसी काली पत्नी से नफ़रत करे ,तो पत्नी अपना कुछ हक़ छोड़ कर (महर से, या खाना–ख़र्चा से, या बारी से) पति से समझौता कर ले तो इस समझौता में पति–पत्नी पर कोई गुनाह नहीं है। जैसे पत्नी कहे कि मेरी बारी के दिन मेरे पास न आओ, मैं माफ़ करती हूँ, लेकिन मुझे तलाक़ न दो। या यह है कि मैं अपना महर माफ़ कर देती हूँ, मुझे अपने पास ही रखो। सौदा रज़ि॰ ने अपनी पारी आ़इशा को दे दी थी, जिसे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुबूल फ़रमा लिया था।

(सूरः माइदा)

बाब {अल्लाह के फ़र्मान (सूरः माइदा की आयत 3) की तफ़सीर।}

2135:– तारिक़ बिन शिहाब से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक यहूदी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगाः ऐ ख़लीफ़ा! तुम्हारी किताब में एक ऐसी आयत है जिसे आप लोग पढ़ते हैं, अगर हम यहूदियों पर नाज़िल होती तो उस दिन को हम अ़ीद (ख़ुशी) का दिन बना लेते। उमर रज़ि॰ ने पूछाः वह कौन सी आयत है? उस ने कहाः "अल् यौ–म अक्–मल्तु.....उमर रज़ि॰ ने कहाः मुझे उस दिन का पता है जिस दिन यह आयत उतरी थी। यह आयत अ़रफ़ात के मैदान में जुम्अ़ः के दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर नाज़िज हुयी थी।

फ़ाइदा:– जुम्अ़ः के दिन उतरी और यह दिन मुसलमानों के लिये अ़ीद का दिन है, इस दिन तमाम दीनी इदारों, मदरसों आदि में छुट्टी होती है।

(सूरः अन्आम)

बाब {अल्लाह पाक के फर्मान (आयत 82) की तफ़्सीर।}

2136:– अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब यह आयत "जो लोग ईमान लाये और अपने ईमान को जुल्म के साथ मख़्लूत (मिक्चर) नहीं किया, उन के लिये अम्न व सलामती है, और वही हिदायत पाने वाले हैं" (अन्आम 82) तो सहाबा घबरा गये और कहने लगेः हम में कोई ऐसा नहीं है जिस ने अपने ऊपर जुल्म न किया हो। यह सुन कर आप ने फ़रमायाः इस का वह अर्थ नहीं है जो उन्होंने समझा है, इस का वह अर्थ है जो लुक़्मान ने अपने पुत्र से कहा थाः "ऐ मेरे प्यारे बेटे! अल्लाह के साथ शरीक न ठहराना, क्योंकि शिर्क बहुत बड़ा जुल्म है" (सूरः लुक़्मान 13)

फ़ाइदाः– कहने का यह अर्थ है कि यहाँ "जुल्म" से मुराद शिर्क है। यानी जिन्होंने अपने ईमान को जुल्म (यानी शिर्क) के साथ नहीं मख़्लूत (मोलव्वस) किया।

बाब {अल्लाह के फ़र्मान (आयत 158) की तफ़्सीर।}

2137:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवातय है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब तीन चीज़ें ज़ाहिर हो जायेंगी उस समय "किसी का ईमान लाना उस को कोई फ़ाइदा न देगा जो पहले ईमान न लाया हो, या नेक काम न किया हो" जब सूरज पश्चिम से निकल आयेगा, जब दज्जाल ज़ाहिर हो जायेगा, जब ज़मीन का जानवर निकल आयेगा।

फ़ाइदाः– इस प्रकार और भी हैं जैसे जब जान नख़रे तक पहुँच जाये तो उस समय भी ईमान लाना कोई फ़ाइदा न पहुँचायेगा। ऊपर की तीनों निशानियाँ क़ियामत के क़रीब ज़ाहिर होंगी। इस की तफ़सील पहले फ़ितना दज्जाल के बाब में गुज़र चुकी है, पीछे अवश्य देख लें। ज़मीन का जानवर के लिये हदीस पीछे देखें।

2138:– अबू ज़र रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक दिन पूछाः तुम्हें पता है यह सूरज कहाँ चला जाता है? सहाबा ने कहाः अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं। आप ने फ़रमायाः यह सूरज अ़र्श के नीचे अपने ठहरने के स्थान पर चला जाता है और वह सज्दा में गिर जाता है और उसी हाल में पड़ा रहता है, फिर हुक्म होता है कि ऊपर उठ जा और जहाँ से आया था वहाँ लौट जा। चुनान्चे वापस लौट कर उसी अपने निकलने के स्थान से फिर निकलता है। फिर (दिन भर) चलता रहता है फिर अर्श के नीचे ठहरने के स्थान पर जा कर ठहर जाता है और सज्दा में गिर जाता है, और इसी हालत में पड़ा रहता है यहाँ तक कि हुक्म होता है कि ऊपर उठ जा और जहाँ से आया है उस स्थान पर लौट जा। चुनान्चे वह अपने निकलने के स्थान पर लौट जाता है और वहाँ से दोबारा निकलता है और इसी प्रकार चलता रहता है और लोगों को उस की चाल में कोई फ़र्क़ नहीं महसूस होता है, यहाँ तक कि फिर अ़र्श के नीचे अपने ठहरने की जगह पर ठहर जाता है (फिर क़ियामत के निकट) उसे

हुक्म होगा कि उठ जा और पश्चिम की तरफ़ से निकल जिधर तू डूबता था, तो वह पश्चिम से निकलेगा। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जानते हो ऐसा कब होगा? (यानी सूरज पश्चिम से कब निकलेगा) यह उस समय होगा जब किसी का ईमान लाना उस को कुछ भी फ़ाइदा न देगा, मगर यह कि जो इस से पूर्व ईमान ले आयेगा, या नेक काम कर के अपने ईमान में इज़ाफ़ा कर लिया होगा।

फ़ाइदा:— सूरज किस तरह सज्दा करेगा? इस में बहुत अधिक सर खपाने की आवश्यक्ता नहीं है। जिस प्रकार अल्लाह सज्दा करने का हुक्म देगा उस प्रकार वह करेगा। आज के साइंसदानों का कहना है कि सूरज चलता नहीं है और न ही निकलता-डूबता है, यह केवल ज़मीन के उस के चारों तरफ़ घूमने का नतीजा है। इस हदीस की रोशनी में उन की तहकीक़ ग़लत है और हमें इस हदीस के मुताबिक़ यक़ीन करना चाहिये।

(सूरः आराफ़)

बाब {अल्लाह के फ़र्मान (आयत न॰ 31) की तफ़सीर।}

2139:— इब्ने अब्बास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि (कुफ़्र व शिर्क के समय काल में) महिलायें काबा का तवाफ़ नग्गी होकर किया करती थीं, फिर कहती थीं: मुझे कौन (पहनने के लिये) कपड़ा देगा ताकि मैं उसे अपनी शर्मगाह पर डाल लूँ। और यह छन्द पढ़ती थीं

अल् यौ-म यब्दू बाजुहू औ कुल्लुहू फ़मा बदा मिन्हु फ़ला उहिल्लुहू
(आज पूरी शर्मगाह खुल जायेगी, या आधी खुलेगी। बहरहाल,
जितनी भी खुलेगी उसे मैं कभी हलाल न करूँगी)

इस मौक़े पर यह आयत नाज़िल हुयी: "ऐ आदम की औलाद! तुम मस्जिद की हर हाज़िरी के समय अपना लिबास पहन लिया करो" (सूरः आराफ़ 31)

फ़ाइदा:— मुश्रिकों का अक़ीदा था कि हम माँ के पेट से नंगे पैदा हुये हैं, इसलिये नंगे ही तवाफ़ करना चाहिये। आज भी हमारे मुल्क में जैन धर्म के गुरु मादरज़ाद नंगे रहते है। जाड़ा, गर्मी, बरसात, कहीं भी आते-जाते और किसी भी समय कुछ भी नहीं पहनते हैं। शर्म की बात यह है कि महिलायें उन्हें उसी हालत में फूल-मालायें चढ़ाती हैं। हदीस की रोशनी में शर्मगाह घुटनों से लेकर नाफ़ तक के हिस्से को कहा जाता है। इस हिस्से का हर समय ढका रहना अनिवार्य है।

बाब {अल्लह पाक के फ़र्मान (आयत 43) की तफ़सीर।}

2140:— अबू सईद खुदरी और अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: एक पुकारने वाला (जन्नत में) पुकारेगा कि तुम्हारे

लिये यह फ़ैसला हो चुका है कि हमेशा तन्दुरुस्त रहोगे और कभी बीमार न होगे, हमेशा जीवित रहोगे, कभी भी मौत न आयेगी, हमेशा जवान रहोगे, कभी बूढ़े न होगे, हमेशा ऐश में रहोगे, कभी रन्ज न होगा। और यही बातें अल्लाह के इस क़ौल में है "उन से पुकार कर कहा जायेगा, कि अपने नेक आमाल के बदले तुम इस जन्नत के हक़दार बनाये गये हो" (सूरः आराफ़-43)

(सूरः अन्फ़ाल)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 33) की तफ़सीर}

2141:- अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है कि अबू जेहल ने कहाः "ऐ अल्लाह! अगर यह कुरआन तेरी जानिब से सच है, तो हम पर आसमान से नत्थरों की वर्षा कर दे (ताकि हलाक हो जायें) या किसी दर्दनाक अज़ाब में हमें गिरफ़्तार कर दें" इस के उत्तर में अल्लाह पाक ने यह आयत नाज़िल फ़रमायीः "ऐ सन्देष्टा! जब तक तुम उन के दर्मियान उपस्थित हो अल्लाह उन्हें अज़ाब नहीं देगा, और जब तक वह तौबा करते रहेंगे उन्हें अज़ाब नहीं देगा। और उन के ऐसे क्या सुर्ख़ाब के पर लगे हैं कि उन्हें अल्लाह अज़ाब नहीं देगा, हालाँकि वह मस्जिदे-हराम में जाने से लोगों को रोकते हैं.........(सूरः अन्फ़ाल-33, 34)

फ़ाइदाः- सन्देष्टा की उपस्थित में उस की क़ौम पर अज़ाब नहीं आता, इसलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौजूदगी उन के लिये बचाव और ढाल थी। यानी भविष्य में ईमान ला कर अल्लाह मे माफ़ी माँगेगे।

(सूरः तौबा)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 84) की तफ़सीर।}

नोटः- **इस बाब से संबन्धित हदीस इस से पहले गुज़र चुकी है। देखें हदीस न॰ 1636।**

बाब {सूरः तौबा, सूरः अन्फ़ाल और सूरः हश्र का बयान।}

2142:- सअ़ीद बिन जुबैर ने बयान किया कि मैं ने इब्ने अब्बास रज़ि॰ से कहाः सूरः तौबः ? उन्होंने कहाः (हाँ) सूरः तौबः। उन्होंने कहा (यह केवल सूरः तौबः ही नहीं है) बल्कि ज़लील करने वाली और बुराई बयान करने वाली है। इस सूरः में "उन में से कुछ लोग" "उन में से कुछ लोग" का शब्द लगातार इतनी मतबा नाज़िल हुआ है कि लोगों ने यह सोच लिया कि कोई ऐसा नहीं बचेगा कि जिस का ज़िक्र इस सूरः में न किया गया हो। मैं ने पूछाः सूरः अन्फ़ाल? उन्होंने कहाः यह सूरः तो सूरः बद्र है (जिस में बद्रकी लड़ाई का बयान है) मैं ने पूछाः सूरः हश्र? उन्होंने कहाः यह सूरः तो बनी

नज़ीर के बारे में नाज़िल हुयी है

फ़ाइदा:— इस सूरः में "व-मिन्हुम" (उन में से कुछ लोग) का वाक्य बहुत अधिक मर्तबा आया है।

(सूरः हूद)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 114) की तफ़्सीर।}

2143:— अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल! मैं ने मदीना के कनारे एक महिला से खूब मज़े लूटे और संभोग के अ़लावा बाक़ी सब कुछ कर डाला। अब मैं आप के साम्ने हाज़िर हूँ आप जो चाहें मेरे बारे में आदेश फ़रमायें। इस पर उमर ने उस से कहा: अल्लाह ने तेरा गुनाह छुपा दिया था, अगर तू भी छुपा लेता तो अच्छा होता। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसे कोई उत्तर न दिया। इतने में वह उठ कर चलता बना तो आप ने तुरन्त उस के पीछे एक आदमी भेज कर उसे बुलवाया और यह आयत पढ़ी: "दिन के दोनों सिरों में नमाज़ अदा कर, इसी प्रकार रात के कुछ हिस्सों में भी। नेकियाँ, बुराइयों को दूर कर देती हैं, यह नसीहत है नसीहत पकड़ने वालों के लिये।" (सूरः हूद114) यह सुन कर क़ौम के किसी व्यक्ति ने पूछा: ऐ अल्लाह के नबी! क्या यह हुक्म केवल उसी के लिये है (कि नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं) आप ने फ़रमाया: नहीं (ऐसी बात नहीं है) बल्कि सब के लिये है।

फ़ाइदा:— यानी पाबन्दी से नमाज़ पढ़ा करो और नेकी के काम किया करो, इस से तुम्हारे गुनाह धुल जायेंगे। इस के लिये और कोई दन्ड नहीं है।

(सूरः इस्रा)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 85) का बयान।}

2144:— अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ जा रहा था कि आप एक खेत में लकड़ी का सहारा लेकर चल रहे थे, इतने में चन्द यहूदी उधर से गुज़रे। उन में से एक ने अपने दूसरे सवार से कहा: इन से रुह (जान) के बारे में पूछो। इस पर तीसरे ने कहा: क्या तुम्हें उस के बारे में शुब्हा है जो पूछना चाहते हो? ऐसा न हो कि वह (उत्तर में) कोई ऐसी बात कह दें जिस से तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचे। लेकिन और लोगों ने कहा (नहीं, नहीं) उन से पूछो। फिर उन में से कुछ लोग उठ कर आप के पास आये और रुह के बारे में पूछा तो आप ख़ामोश रहे (और कोई उत्तर न दिया) मैं तो समझ गया कि आप पर वह्यि नाज़िल हो रही है। चुनान्चे मैं वहीं खड़ा रहा, और जब वह्यि के नाज़िल होने का

सिलसिला बन्द हो गया तो यह आयत पढ़ीः "तुम से रुह के बारे में यह लोग पूछ रहे हैं तो कह दो कि रुह (जान) मेरे रब का एक हुक्म है, और इस बारे में तुम्हें बहुत ही थोड़ा ज्ञान दिया गया है।" (सूरः इस्रा-85)

फ़ाइदा:- यानी रुह के बारे में इतना जानो कि यह मेरे रब का हुक्म है, या मेरे रब की शान में से है, जिस की हक़ीक़त केवल अल्लाह ही जानता है। इस का ज्ञान अल्लाह ने नबी तक को नहीं दिया है। (बुख़ारी-4721-अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 57) की तफ़्सीर।}

2145:- अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है कि यह आयत उस समय नाज़िल हुयी जब कि कुछ लोग कुछ जिन्नों की पूजा करते थे। बाद में जिन्नों का वह गरोह (जिस की पूजा करते थे) ईमान ले आया, लेकिन फिर भी लोग उन की पूजा करते रहे तब यह आयत नाज़िल हुयीः "जिन को लोग पुकारते हैं (उन का यह हाल है कि) स्वँय अल्लाह से नज़दीकी हासिल करने की फ़िक्र में रहते हैं कि उन में से कौन ज़्यादा अल्लाह से नज़दीक हो जाये। वह स्वँय उस की रहमत के उम्मीद वार हैं और उस के अ़ज़ाब से डरते हैं......(सूरः इस्रा-57) (बुख़ारी-4715-इब्ने मस्ऊद)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 110) की तफ़्सीर।}

2146:- इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने इस आयत "अपनी नमाज़ में न तो बहुत ऊँची आवाज़ से पढ़ो और न ही आहिस्ता, बल्कि इस के बीच का तरीक़ा इख़्तियार करो" (सूरः इस्रा 110) के बारे कहा कि यह आयत मक्का में उस समय नाज़िल हुयी जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक घर में छुपे हुये थे। आप जब अपने सहाबा के साथ नमाज़ पढ़ते तो कुरआन बुलन्द आवाज़ से पढ़ते, मुश्रिक लोग जब सुनते तो कुरआन पाक को, उस के नाज़िल करने वाले (अल्लाह पाक) को, और उस के लाने वाले (नबी) को गालियाँ देते। इसलिये अल्लाह पाक ने आप से कहाः आप नमाज़ में बहुत पुकार कर क़िरात न करें कि मुश्रिक लोग सुन कर गालियाँ दें और न बिल्कुल आहिस्ता ही पढ़ें कि आप के साथी सुन न सकें, बल्कि बीच की आवाज़ में पढ़ा करें।

2147:- आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि यह आयत "आप नमाज़ में न तो बहुत ऊँची आवाज़ से कुरआन पढ़ो......" यह आयत दुआ़ के बारे में नाज़िल हुयी है।

फ़ाइदा:- तबरी की एक रिवायत मैं है कि तशह्हुद में जो दुआ़ पढ़ी जाती है यह आयत उस के बारे में नाज़िल हुयी है। तो ऐसा संभव है कि यह आयत दो बार नाज़िल हुयी हो (1) नमाज़ में कुरआन पढ़ने के बारे में (2) दुआ़ के बारे में। मालूम हुआ कि हर काम में बीच की शैली अपनानी चाहिये चाहे नमाज़ हो, यह दुआ़, या कोई और काम। (बुख़ारी-4733-इब्ने अ़ब्बास+4723-आ़इशा)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 105) की तफ़्सीर।}

2148:– अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन एक बहुत मोटा–ताज़ा आदमी आयेगा जिस की हैसियत अल्लाह के नज़दीक मच्छर के पर के बराबर तक न होगी, फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यह आयत पढ़ोः "क़ियामत के दिन हम उन के लिये कोई वज़न न रखेंगे" (सूरः कहफ़–105)

फ़ाइदाः– अर्थात क़ियामत के दिन किसी का मोटापा और धन–माल काम न आयेगा, अगर कुछ काम आयेगा तो उस का अ़मल, चाहे वह कितना ही दुबला पतला (मामूली) क्यों न हो।

(सूरः मर्यम)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 39) की तफ़्सीर।}

2149:– अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन मौत एक सफ़ेद रन्ग के मेंढे की शक्ल में लाई जायेगी और उस को जन्नत और जहन्नम के दर्मियान ला खड़ा किया जायेगा, फिर कहा जायेगाः ऐ जन्नतियों! क्या तुम इसे पहचानते हो? वह सर उठा कर उसे देख कर कहेंगेः हाँ, हम उसे पहचानते हैं, यह मौत है। फिर इसी प्रकार जहन्नमी लोगों से भी पूछा जोयगाः ऐ जहन्नम के लोगोंः क्या तुम इसे पहचानते हो? वह भी सर उठा कर देख कर कहेंगेः हाँ, हम इसे पहचानते हैं, यह मौत है। फिर उसे ज़ब्ह करने का हुक्म होगा और वह ज़ब्ह कर दिया जायेगा। फिर कहा जायेगाः ऐ जन्नत वालों! अब तुम्हें हमेशा ज़िन्दा रहना है कभी मौत न आयेगी। और ऐ जहन्नम वालों! तुम्हें भी हमेशा ज़िन्दा रहना है और तुम्हें भी कभी मौत न आयेगी। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह आयत तिलावत फ़रमायीः "उन लोगों को उस नामुरादी के दिन से आगाह कर दो जिस दिन अन्तिम फ़ैसला कर दिया जायेगा, और इन का हाल यह है कि ग़फ़लत में पड़े हुये हैं और ईमान लाने का नाम ही नहीं लेते हैं" (सूरः मरयमः–39) फिर आप ने अपने हाथ से दुनिया की तरफ़ इशारा फ़रमाया।

फ़ाइदाः– देखें (बुख़ारी शरीफ़–4730–अबू सअ़ीद खुदरी रज़ि॰)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 77) की तफ़्सीर।}

2150:– ख़ब्बाब बिन अर्त रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि अ़ास बिन वाइल सहमी के ऊपर मेरा क़र्ज़ था, मैं उस के पास अपना क़र्ज़ माँगने गया तो कहने लगाः जब तक तुम मुहम्मद का इन्कार न करोगे तुम्हें मज़दूरी नहीं मिलेगी। मैं ने कहाः

मैं तो मुहम्मद का कभी इन्कार नहीं करने का, यहाँ तक कि अल्लाह तुझे मार दे और फिर ज़िन्दा कर दे। उस ने कहाः (ठीक है) जब मरने के बाद दोबारा ज़िनदा उठूँगा तो तुम्हारा क़र्ज़ अदा कर दूगाँ, उस समय मुझे मेरा माल और मेरी औलद सब कुछ मिलेगा। इस मौक़ा पर यह आयत नाज़िल हुयीः "क्या तुम देखते नहीं जिस ने मेरी आयतों का इन्कार किया और कहता है कि मरने के बाद भी मुझे माल और औलाद दिया जायेगा" (सूरः म्रयम-77)

फ़ाइदाः- ख़ब्बाब रज़ि॰ सर्वप्रथम ईमान लाने वालों में से हैं। कूफ़ा में सन 37 हि॰ में 73 साल की आयु में देहान्त किया। यह लोहारी का काम करते थे। ईमान लाने से पहले आ़स बिन वाइल के लिये ढाल बनाया था जिंस की मज़दूरी उस के ज़िम्मा बाक़ी थी, इस दर्मियान यह ईमान ले आये। इमाम बुख़ारी रह॰ ने इस हदीस को ला कर लोहारी के पेशा को जाइज़ साबित किया है (बुख़ारी-291, 4734-ख़ब्बाब)

(सूरः अम्बिया)

बाब {अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान (आयत 104) की तफ़्सीर।}

2151:- इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमारे दर्मियान खुत्बा दिया और फ़रमायाः ऐ लोगो! तुम लोग (क़ियामत के दिन) अल्लाह के सामने नंगे पाँव, नंगे बदन और बिना ख़त्ना किये हुये एकत्र किये जाओगे "जैसे कि हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया वैसा ही दोबारा पैदा करेंगे, यह हमारा वादा है" (सूरः अम्बिया-104) सुनो! क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ में इब्राहीम अ़लै॰ को सर्वप्रथम वस्त्र पहनाया जायेगा। सुनो! मेरी उम्मत के कुछ लोग लाये जायेंगे तो फ़रिश्ते उन को पकड़ कर बायें तरफ़ वाले जहन्नमी लोगों में ले जायेंगे। इस पर मैं कहूँगाः ऐ मेरे मौला! यह तो मेरे साथ वाले हैं। इस पर कहा जायेगाः तुम्हें नहीं मालूम, इन्होंने तुम्हारे मरने के बाद क्या-क्या नई खुराफ़ात ईजाद की हैं। उस समय मैं वही कहूँगा जो अल्लाह के नेक बन्दे ईसा अ़लै॰ ने कहा थाः "जब तक मैं उन के दर्मियान रहा उन की निग्रानी करता रहा, और जब तुम ने मुझे उठा लिया तो तू उन का निग्राँ था और तू हर चीज़ पर गवाह है। अब अगर तू उन को दन्ड देता है तो यह मेरे बन्दे हैं (और दन्ड के हक़दार हैं) और अगर माफ़ कर देता है तो तू ग़लबे वाला और हिक्मत वाला है" (सूरः माइदा-117, 118) फिर मुझ से कहा जायेगा कि जब तुम इन से जुदा हुये तो यह एड़ियों के बल इस्लाम से फिर गये थे।

फ़ाइदाः- देखें (बुख़ारी शरीफ़-3349-इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰)

(सूरः हज्ज)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 19) की तफ़सीर।}

2152:– क़ैस बिन अ़ब्बाद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं ने अबू ज़र से सुना वह क़सम खा कर कहते थे कि आयत "यह दो फ़रीक़ हैं जिन्होंने अपने रब से झगड़ा किया" (सूरः हज्ज–19) यह आयत हम्ज़ा, अ़ली, उबैदा रज़ि॰ (मुसलमानों की तरफ़ से) और रबीआ़ के बेटे उत्बा, शैबा और वलीद बिन उत्बा (मुश्रिकों की तरफ़ से) के बारे में नाज़िल हुयी।

फ़ाइदा:– बद्र की लड़ाई के दिन भी दो गरोह थे। पहला गरोह मुसलमानों का था जिस में तीन सहाबा थे। दूसरा गरोह काफ़िरों का था जिस में तीन काफ़िर थे। इन्ही दोनों का इस आयत में ज़िक्र है (बुख़ारी–4743–अबू ज़र)

(सूर नूर)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 11) की तफ़सीर।}

2153:– इमाम ज़हरी ने बयान किया कि मुझ से सअ़ीद बिन मुसय्यिब, उर्वा बिन ज़ुबैर, अल्क़मा बिन वक़्क़ास और उबैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उत्बा बिन मस्ऊद ने आ़इशा पर तोहमत लगाई जाने वाली हदीस बयान की। ज़हरी ने कहा कि उन सब ने हदीस की एक–एक घटना बयान की। उन में से कुछ रावी दूसरे के मुक़ाबला में अधिक जानकारी रखते थे और उन्हें हदीस अच्छी तरह याद थी और अच्छे ढन्ग से रिवायत भी की। चुनान्चे मैं ने सभी रावियों से सुन कर याद कर लिया (और नीचे बयान कर रहा हूँ)

उन लोगों ने रिवायत किया कि आ़इशा रज़ि॰ ने बयान किया: नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सफ़र का इरादा करते तो अपनी बीवियों के दर्मियान गोटी डालते, फिर जिस के नाम गोटी निकलती उसे अपने साथ सफ़र में ले जाते। उन्हों ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक सफ़र के लिये गोटी डाली तो मेरा नाम निकल आया, चुनान्चे मैं आप के साथ सफ़र पर गयी। यह उस समय की बात है जब पर्दा का हुक्म नाज़िल हो चुका था। मैं अपने हौदज में सवार होती और राह में जब उतरती भी तो फिर उसी में सवार हो जाती।

जब आप जिहाद से फ़ारिग़ होकर लौटे और मदीना के निकट पहुँचे (तो वहाँ ठहर गये) फिर रात को कूच करने का हुक्म दिया। जब लोगों ने सफ़र की सूचना दी तो मैं (अपनी ज़रुरत पूरी करने के लिये) लश्कर से हट कर एक तरफ़ चली गयी। जब मैं ने अपनी आवश्यक्ता पूरी कर ली तो अपने हौदज के पास वापस आ गयी। इसी बीच जब मैंने अपने सीना पर हाथ रखा तो मालूम हुआ कि मेरा अज़फ़ार के नगीनों का हार गुम हो गया है। चुनान्चे मैं (आवश्यक्ता पूरी करने के स्थान पर) लौट गयी और हार

को खोजने लगी और इस में देरी हो गयी उधर मेरा हौदज ऊँट पर रखने वाले आये और उसे उठा कर उस ऊँट पर रख दिया जिस पर मैं सवार होती थी। उन्होंने यही समझा होगा कि मैं कजावें में बैठी हूँ।

उस ज़माना में महिलायें हल्की-फुल्की होती थीं, मोटी-ताज़ी नहीं होती थीं, क्योंकि खूराक बहुत मामूली होती थी। यही कारण है कि हौदज उठा कर लादने वालों को हौदज हल्का न मालूम हुआ। उस समय मेरी आयु भी बहुत कम थी (12, 13 वर्ष) बहरहाल उन्होंने हौदज को ऊँट पर लादा और रवाना हो गये। इधर मैं ने अपना हार उस समय पाया जब लश्कर रवाना हो गया। जब मैं अपने डेरे पर वापस लौट कर आयी तो क्या देखा कि वहाँ सन्नाटा है, कोई आवाज़ सुनने वाला तक नहीं। चुनान्चे मैं ने फ़ैसला किया कि जहाँ मैं पहले उतरी थी वहीं बैठ जाऊँ। मैं ने सोचा कि जब लोग मुझे नहीं पोयंगे तो यहीं लौट कर आयेंगे। चुनान्चे मैं वहीं बैठ गयी और आँख लगने की वजह से सो गयी।

उधर सफ़वान बिन मुअत्तल सलमी ज़कवानी लश्कर के पीछे-पीछे आ रहे थे (ताकि अगर लश्कर वालों से कोई चीज़ छूट जाये तो उसे उठा लें। सफ़र में यह नियम था) रात का अन्तिम पहर था। मेरे स्थान पर जब पहुँचे उस समय सुब्ह हो चुकी थी। उन्होंने (दूर से) मानव का एक साया देखा कि पड़ा हुआ है वह मेरे निकट आये तो मुझे देखते ही पहचान गये, क्योंकि पर्दे का हुक्म नाज़िल होने से पहले वह मुझे देख चुके थे। जब वह मुझे पहचान गये तो इन्ना लिल्लाहि पढ़ने लगे। मैं उन की आवाज़ सुन कर जाग गयी और अपना मुँह चादर से छुपा लिया। अल्लाह की क़सम! इस के बाद उन्होंने मुझ से एक शब्द भी कुछ नहीं पूछा और न ही मैं ने इन्ना लिल्लाहि के अलावा उन की ज़बान से कोई और शब्द सुना। फिर उन्होंने अपना ऊँट बैठाया तो मैं उस पर सवार हो गयी और वह (पैदल) ऊट की महार पकड़ कर आगे-आगे चल पड़े। हम लश्कर से उस समय मिले जब वह भी दोपहर में (धूप से बचने के लिये) पड़ाव डाले हुये थे। इस के बाद जिसे तबाह-बर्बाद होना था वह तबाह-बर्बाद हुआ। इस मौके पर इल्ज़ाम लगाने वालों में अब्दुल्लाह बिन उबय्यि बिन सलूल आगे-आगे था। मदीना पहुँच कर मैं बीमार पड़ गयी और एक महीना तक बीमार रही। इस दर्मियान लोगों में इल्ज़ाम लगाने वाले लोगों की बातों का चर्चा रहा, लेकिन मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी। हाँ, केवल एक मामला से मुझे शुब्हा सा होता था कि मैं अपनी बीमारी में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से वह मुहब्बत और हमर्ददी का बर्ताव नहीं देखती थी जो पहली बीमारियों में देख चुकी थी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्दर आते और सलाम कर के केवल इतना पूछ लेते कि क्या हाल है? और फिर वापस चले जाते। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस बर्ताव से मुझे शुब्हा होता था, लेकिन किस कारण आप ऐसा कर रहे थे इस का मुझे ज्ञान नहीं था।

एक दिन जब (कुछ बीमारी में फ़ाइका हुआ और) कमज़ोरी बाक़ी थी तो मैं

(आवश्यक्ता पूरी करने के लिये) बाहर निकली, उस समय मेरे साथ उम्मे मिस्तह भी थीं। हम लोग आवश्यक्ता पूरी करने के स्थान पर गये। आवश्यक्ता पूरी करने के लिये उसी स्थान पर जाया क़रते थे, और इस के लिये रात ही को जाया करते थे। यह इस से पहले की बात है जब हमारे घरों के पास शौचालय नहीं बने थे। उस समय तक हम लोग अ़रब के पुराने दस्तूर के मुताबिक़ शौच के लिये आबादी से दूर जाया करते थे। और हम लोग शौचालय घरों के क़रीब बनाये जाने के हक़ में नहीं थे कि इस से बदबू फैलती थी। बहरहाल, मैं और उम्मे मिस्तह रवाना हुयीं उम्मे मिस्तह अबू रहम बिन अ़ब्दे मुनाफ़ की बेटी थीं, और उन की माता जी सख़ बिन आ़मिर की बेटी थीं। इस प्रकार वह अबू बक्र की ख़ाला होती थीं। और इन के लड़के मिस्तह बिन उसासा हैं।

जब हम वहाँ से फ़ारिग़ होकर घर वापस लौटने लगे तो उम्मे मिस्तह का पाँव उन्ही की चादर में उलझ कर फिसल गया। इस पर उन्होंने कहाः "मिस्तह बर्बाद हो जाये।" यह सुन कर मैं ने कहाः तुम ने बड़ी बुरी बात कह डाली। तुम ने ऐसे व्यक्ति को बुरा कहा है जो बद्र की लड़ाई में शरीक रहा है। इस पर उन्होंने कहाः उस की बातें तो आप ने सुनी ही नहीं। मैं ने पूछाः उन्होंने क्या कहा है? इस पर उन्होंने इल्ज़ाम लगाने वालों की बातें बतायीं। मैं पहले से बीमार चल हीं रही थीं, इन बातों को सुन कर मेरी बीमारी और बढ़ गयी। फिर जब घर पहुँची और आप ने अन्दर आ कर सलाम किया और हाल–चाल पूछा तो मैं ने कहाः क्या आप मुझे मेरे माँ–बाप के घर जाने की अनुमति देंगे? मैं केवल इसलिये उन के पास जाना चाहती थी ताकि घर वालों से उस की हक़ीक़त पूरी तरह मालूम हो जाये। चुनान्चे आप ने अनुमति दे दी और मैं अपने माँ–बाप के घर चली गयी। मैं ने जा कर माता जी से पूछाः लोग किस प्रकार की बातें कर रहे हैं? इस पर उन्होंने कहाः मेरी बेटी, सब्र करो। ऐसा बहुत कम देखने में आया है कि तुम जैसी कोई सुन्दर लड़की किसी ऐसे मर्द के निकाह में होगी जो उस से मुहब्बत करता हो, और उस की सौकनें भी हों और वह उस को नीचा दिखाने की कोशिश न करें।

आ़इशा रज़ि॰ ने कहा कि मैं ने कहाः सुब्हानल्लाह! क्या इस प्रकार का चर्चा लोगों ने भी कर दिया? उन्होंने कहा कि हाँ, यह सुन कर मैं रोने लगी और रात भर रोती रही, सुब्ह हो गयी लेकिन न तो मेरे आसूँ थमने का नाम लेते थे और न ही नींद का दूर–दूर तक कहीं नामो–निशान था। सुब्ह हो गयी और मैं थी कि रोए चली जा रही थी। इसी दर्मियान नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अ़ली बिन अबू तालिब और उसामा बिन ज़ैद को बुलाया, क्योंकि इस मामले में अभी आप पर कोई वह्यि नहीं नाज़िल हुयी थी। आप उन से मेरे छोड़ देने के बारे में मश्वरा लेना चाहते थे, क्योंकि वह्यि के नाज़िल होने में देरी हो गयी थी।

आ़इशा रज़ि॰ ने बयान किया कि उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ ने तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उसी के मुताबिक़ मश्वरा दिया जिस की उन्हें जानकारी थी, यानी यह कि आप की पत्नी इस इल्ज़ाम से बरी हैं। इस के अ़लावा वह यह भी

जानते थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को आ़इशा से कितनी मोहब्बत है। उहोंने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! आप की पत्नी के बारे में ख़ैर और भलाई के सिवा मैं और कुछ नहीं जानता। और अ़ली रज़ि॰ ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह पाक ने आप पर कोई तन्गी नहीं की है, इन के अ़लावा और भी बहुत सी महिलायें हैं, उन की लौंडी बरीरा से भी उन के बारे में मालूम कर लें। आ़इशा रज़ि॰ ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बरीरा को बुलाया और पूछाः ऐ बरीरा! क्या तुम ने आ़इशा के अन्दर कोई ऐसी चीज़ देखी है जिस से तुम को शुब्हा हुआ हो? बरीरा ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! उस ज़ात की क़सम, जिस ने आप को हक़ के साथ भेजा है, मैं ने उन के अन्दर कोई ऐसी बात नहीं देखी जिस की वजह से मैं उन पर आरोप लगा सकूँ। लेकिन इतनी बात ज़रुर है कि वह अभी कम आयु की हैं, आटा गूँधने में भी सो जाती हैं और इतने में कोई बकरी या चिड़िया आदि वहाँ पहुँच कर गूँधा हुआ आटा खा जाती है।

इस के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम खड़े हुये और उस दिन आप ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि बिन सलूल की शिकायत की। आ़इशा ने बयान किया कि आप ने मिंबर पर खड़े होकर फ़रमायाः ऐ मुसलमानों! उस शख़्स के बारे में कौन मेरी मदद करता है जिस के तक्लीफ़ पहुँचाने का सिलसिला अब मेरे घर तक पहुँच गया है। अल्लाह की क़सम! मैं अपनी बीवी को पाक दामन होने के सिवा कुछ नहीं जानता। और यह लोग जिस मर्द का नाम ले रहे हैं उस के बारे में भी ख़ैर के सिवा और कुछ नही जानता। वह जब भी मेरे घर में आये तो मेरे साथ ही दाख़िल हुये हैं। यह सुन कर सअ़द बिन मआ़ज़ अन्सारी रज़ि॰ ने उठ कर कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आप की मदद करुँगा। अगर वह मेरे क़बीले औस से संबन्ध रखता है तो मैं उस की गर्दन मारने को तय्यार हूँ, और अगर हमारे भाइयों यानी क़बीला ख़ज़रज का कोई व्यक्ति है तो आप हमें जो भी हुक्म देंगे हम उसे बजा लाने में कोताही नहीं करेंगे। रावी ने बयान किया कि (सअ़द बिन मआज़ की बातें सुन कर) सअ़द बिन उबादा रज़ि॰ भी खड़े हो गये। वह क़बीला ख़ज़रज के सर्दार थे। इस से पूर्व वह बड़े अच्छे और नेक थे, लेकिन आज उन पर ख़ान्दान की ग़ैरत ग़ालिब आ गयी (अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्यि मुनाफ़िक़ इसी ख़ान्दान से था) उन्होंने उठ कर सअ़द बिन मआ़ज़ से कहाः अल्लाह की क़सम! तुम झूठ बोल रहे हो तुम उसे नहीं क़त्ल कर सकते, तुम्हारे अन्दर उस के क़त्ल करने की ताक़त ही नहीं है। यह सुन कर सअ़द बिन मआ़ज़ के चचेरे भाई उसैद बिन हुज़ैर खड़े हो गये, उन्होंने सअ़द बिन उबादा से कहाः अल्लाह की क़सम! तुम झूठ बोल रहे हो, हम उसे ज़रुर क़त्ल कर देंगे, क्या तुम भी मुनाफ़िक़ हो गये हो जो मुनाफ़िक़ों की तरफ़दारी करते हो? इतने में दोनों क़बीलों, (औस और ख़ज़रज) के लोग खड़े हो गये और आपस ही में लड़ने-मरने पर आमादा हो गये।

इधर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मिंबर पर खड़े होकर लोगों को

ख़ामोश करने में लग गये। आख़िर सब लोग चुप हो गये और आप भी ख़ामोश हो गये। आइशा रज़ि॰ ने बयान किया कि उस दिन भी मैं बराबर रोती रही, न तो मेरे आसूँ थमने का नाम लेते थे और न ही नींद आती थी। उन्होंने बयान किया जब दूसरी सुब्ह हुयी तो मेरे माता-पिता जी मेंरे पास ही मौजूद थें दो रातें और एक दिन लगातार मुझे रोते हो गया था, न मुझे नींद आती थी और न ही आसूँ थमने का नाम लेते थे। मेरे माता-पिता डरते थे कि कहीं रोते-रोते मेरा दिल न फट जाये। उन्होंने बयान किया कि अभी वह मेरे पास बैठे ही हुये थे और मैं रोए जा रही थी कि अन्सार ख़ान्दान की एक महिला ने अन्दर आने की इजाज़त माँगी, मैं ने उसे इजाज़त दे दी तो वह मेरे साथ बैठ कर रोने लगीं। हम लोग इसी हाल में थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अन्दर तश्रीफ़ लाये और बैठ गये। आइशा ने कहाः जब से मुझ पर इल्ज़ाम लगाया गया था उस समय से अब तक नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मेरे पास नहीं बैठे थे। आप ने एक महीना तक इस मामला में इन्तिज़ार किया और इस दर्मियान आप पर कोई वह्यि भी नाज़िल नहीं हुयी। उन्होंने ने बयान किया कि आप ने बैठने के बाद खुत्बा पढ़ा और फ़रमायाः अम्मा बाद! ऐ आइशा! तुम्हारे बारे में मुझे इस प्रकार की सूचनायें पहुँची हैं, इसलिये अगर तुम बरी हो तो अल्लाह पाक तुम्हें स्वँय ही बरी कर देगा, लेकिन अगर (अल्लाह न करे) तुम से कोई ग़लती या गुनाह हो गया है तो अल्लाह से माफ़ी माँगो और तौबा करो, क्योंकि बन्दा जब अपने गुनाह का इक़रार कर लेता है तो अल्लाह पाक उस की तौबा को कुबूल कर लेता है।

आइशा रज़ि॰ ने कहाः जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लाहि वसल्लम अपनी बात समाप्त कर चुके तो मेरी आँखों के आसूँ अचानक सूख गये, जैसे एक बूँद आँसू न बचा हो। फिर मैं ने अपने पिता जी से कहाः आप मेरी तरफ़ से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को जवाब दीजिये। उन्होंने कहाः अल्लाह की क़सम! मैं नहीं समझता कि मुझे इस बारे में उन से कुछ कहना है। फिर में ने अपनी माता जी से कहाः आप मेरी तरफ़ से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को जवाब दें। उन्होंने भी कहा कि अल्लाह की क़सम! मुझे नहीं मालूम कि मैं तुम्हें क्या उत्तर दूँ। आइशा रज़ि॰ ने बयान किया कि फिर खुद ही बोली। मैं उस समय नई उम्र की लड़की थी, मैं ने बहुत अधिक कुरआन भी नहीं पढ़ा था (मैं ने कहा कि) अल्लाह की क़सम! मैं तो यह जानती हूँ कि उन अफ़वाहों के बारे में जो कुछ आप ने लोगों से सुना है, वह आप लोगों के दिल में बस गया है और आप लोग उसे सहीह समझने लगे हैं। इस सूरत में अगर मैं यह कहती हूँ कि मैं बरी हूँ और अल्लाह पाक अच्छी तरह जानता है कि में बरी हूँ, तो आप लोग मेरी बातों पर यक़ीन नहीं करेंगे। और अगर मैं इल्ज़ाम का इक़रार कर लूँ, (हालाँकि अल्लाह खूब जानता है कि मैं बरी हूँ) तो आप लोग मेरी बात पर यक़ीन कर लेंगे। अल्लाह की क़सम! इन हालात में मेरे पास आप लोगों के लिये कोई मिसाल नहीं है सिवा यूसुफ़ अ़लै॰ के वालिद के इस क़ौल के जो उन्होंने कहा था "सब्र ही बेहतर है, और

जो कुछ बयान करते हो उस पर अल्लाह ही मेरी मदद करेगा"

आइशा रज़ि॰ ने बयान किया कि यह कह कर में ने अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेर लिया और बिस्तर पर लेट गयी। मुझे पूरा यक़ीन था कि मैं बरी हूँ इसलिये अल्लाह पाक ज़रुर मुझे बरी कर देगा। लेकिन अल्लाह की क़सम! मैं सोच भी नहीं सकती थी कि अल्लाह पाक इस बारे में कोई वह्यि नाज़िल फ़रमायेगा जिस की तिलावत की जायेगी। मैं अपनी औक़ात को इस से कम समझती थी कि अल्लाह पाक मेरे बारे में (क़ुरआन की आयत) नाज़िल फ़रमाये। हाँ, मुझे इस बात की आशा थी कि आप इस बारे में कोई सपना देख लेंगे और उस के ज़रीआ अल्लाह मुझे बरी कर देगा। उन्होंने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अभी अपनी उसी मज्लिस में बैठे ही हुये थे, घर वालों में से कोई बाहर भी नहीं गया था कि इसी दर्मियान आप पर वह्यि आने का सिलसिला आरंभ हो गया और आप की वही हालत हो गयी जो वह्यि नाज़िल होने के वक़्त होती थी। यानी आप पसीना-पसीना हो गये और आप का पसीना मोतियों की तरह आप के बदन पर ढलकने लगा, हालाँकि मौसम सर्दी का था। यह हालत आप पर वह्यि नाज़िल होने की वजह से हो जाती थी। आइशा रज़ि॰ ने बयान किया कि जब आप पर से वह्यि के आने का सिलसिला बन्द हो गया तो आप हँसने लगे और सब से पहला जुम्ला जो आप की ज़बान से निकला यह थाः ऐ आइशा! अल्लाह पाक ने तुम्हें बरी कर दिया है। मेरी माता जी ने कहाः नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने (आप का शुक्र अदा करने के लिये) खड़ी हो जाओ। लेकिन मैं ने कहाः अल्लाह की क़सम! मैं तो हर्गिज़ आप के सामने नहीं खड़ी होने की, और अल्लाह पाक के अ़लावा और किसी की प्रशंसा नही करने की। अल्लाह तआ़ला ने जो आयत नाज़िल फ़रमायी थी वह यह थीः "जिन लोगों ने तोहमत लगायी थी वह तुम में का एक गराहे है......(आयत 11 ता 20)

जब अल्लाह पाक ने यह आयतें मुझे बरी करेन के लिये नाज़िल कर दीं तो अबू बक्र जो मिस्तह बिन उसासा का ख़र्चा, उन से नज़दीकी और मुहताजी की वजह से खुद उठाते थे, उन्होंने कहाः अल्लाह की क़सम! अब मैं मिस्तह पर कभी कुछ न ख़र्च करुँगा, (मेरी बेटी) आइशा पर कैसी-कैसी तोहमत लगायी है। इस पर अल्लाह पाक ने यह आयत नाज़िल फ़रमायीः "जो लोग तुम में बुज़ुर्गी और कुशादगी वाले हैं, वह नज़दीक के रिश्तेदारों, फ़क़ीरों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों की सहायता न करने की क़सम न खा बैठें, बल्कि उन की गलतियों को माफ़ कर दें और नज़र अन्दाज़ कर दें। बेशक अल्लाह पाक बहुत माफ़ करने वाला और रहमत वाला है" (सूरः नूर 22)

अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने कहाः हाँ अल्लाह की क़सम! मेरी तो यही ख़ाहिश है कि अल्लाह पाक मुझे माफ़ फ़रमा दे। चुनान्चे मिस्तह को फिर वह तमाम ख़र्च देने लगे जो उन्हें पहले दिया करते थे, और फ़रमायाः अल्लाह की क़सम! अब मैं उन का खाना-खर्चा कभी न बन्द करुगाँ। आइशा ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि

वसल्लम ने मेरे मामला में ज़ैनब बिन्त जहश (अपनी पत्नी) से भी पूछा था कि ऐ ज़ैनब! तुम ने भी उस के अन्दर कभी कोई कमी देखी है? उन्होंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे कान और आँखों को अल्लाह पाक सुरक्षित रखे, मैं ने उन के अन्दर भलाई के अलावा और कोई चीज़ नहीं देखी है। आइशा ने बयान किया कि आप की पत्नियों में वही एक ऐसी थीं जो मुझ से भी ऊपर रहना चाहती थीं, लेकिन अल्लाह पाक ने उन की प्रहेज़गारी की वजह से उन्हें इल्ज़ाम लगाने से सुरक्षित रखा। लेकिन उन की बहन हमना उन के लिये लड़ीं और इल्ज़ाम लगाने वालों के साथ वह भी तबाह हो गयी।

फ़ाइदा देखें (बुख़ारी शरीफ़–4750–आइशा)

2154:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक व्यक्ति पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मे वलद लौंडी के साथ इल्ज़ाम था। आप ने अली रज़ि॰ से फ़रमाया: जा कर उस की गर्दन मार दो। चुनान्चे अली रज़ि॰ गये तो क्या देखा कि वह ठन्डक हासिल करने के लिये एक कुँए में स्नान कर रहा है। अली॰ ने उस से कहा: निकल (बाहर आ, तांकि मैं तेरी गर्दन मारुँ) उस ने अपना हाथ उन के हाथ में दे दिया तो उन्होंने खींच कर उसे बाहर निकाला तो क्या देखा कि उस का लिन्ग ही कटा हुआ है, इसलिये अली ने उसे नहीं क़त्ल किया, फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आ कर कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल! उस का तो लिन्ग ही कटा हुआ है, उस के तो लिन्ग ही नहीं है।

फ़ाइदा:– ज़ाहिर है कि जब लोगों को मालूम हो गया कि वह लिंग कटा हुआ है और ज़िना नहीं कर सकता तो उन का आरोप झूठा हो गया और लोगों ने जान लिया कि वह झूठा आरोप लगा रहा है। मारिया क़िबतिया रज़ि॰ यह उम्मे वलद थीं, इन से इब्राहीम पैदा हुये थे, जो छोटपने में देहान्त कर गये। इन्हें मिस्र के बादशाह मक़ूक़स ने लौंडी के तौर पर आप को उपहार में दिया था। 'उम्मे वलद' उस लौंडी को कहते हैं जिस से बच्चा पैदा हो जाये।

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 33) की तफ़सीर।}

2155:– जाबिर रज़ि॰ से रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन उबय्यि बिन सलूल के पास दो लौंड़िया थीं, उन में एक का नाम "मुसैका" और दूसरी का "उमैमा" था। वह उन दोनों को ज़िना करने पर मजबूर करता था। उन दोनों ने इस बात की नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शिकायत की तब अल्लाह पाक ने यह आयत नाज़िल फ़रमायी: "तुम्हारी लौंडियाँ जो पाक दामन रहना चाहती हैं उन्हें दुनियाँ की ज़िन्दगी के फ़ाइदे की ग़रज़ से बदकारी पर मजबूर न करो..... (सूर: नूर 33, पार:18)

फ़ाइदा:– जाहिलिय्यत के ज़माना में लोग अपनी लौंडियों से पेशा कराते थे और उन की कमाई खाते थे। अल्लाह पाक ने सख़्ती के साथ इस से मना कर दिया, और उस

कमाई को सरासर हराम क़रार दे दिया। उस ज़माना में जाहिल लोग ऐसा काम करते थे और आजकल पापी लोगों ने इस का अड्डा ही खोल रखा है।

(सूरः फ़ुर्क़ान)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 68) की तफ़्सीर।}

2156:- इब्ने अब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि मुशिरकों में से कुछ लोगों ने (शिर्क और कुफ़्र की हालत में) बहुत अधिक ख़ून ख़राबा और ज़िना किया था। उन लोगों ने आप की सेवा में हाज़िर हो कर कहाः आप यह कहते हैं कि मैं जिस रास्ते की तरफ़ बुला रहा हूँ वह अच्छा रास्ता है, तो आप हमें बतायें कि हमारे पापों का कोई कफ़्फ़ारा भी है? अगर है तभी हम इस्लाम लायेंगे (वर्ना नहीं) इस मौक़े पर अल्लाह पाक ने यह आयतें उतारीं: "जो लोग अल्लाह के साथ किसी और को नहीं पुकारते हैं......(सूरः फ़ुर्क़ान 68 ता 77) और यह आयत भी नाज़िल फ़रमायीः "ऐ सन्देष्टा! आप कह दें कि ऐ मेरे बन्दों! जिन्होंने अपने ऊपर गुनाह किया है, अल्लाह की रहमत से निराशा न हो............(सूरः ज़ोमर-53)

फ़ाइदा:- मालूम हुआ कि दुनिया में ख़ालिस तौबा से हर गुनाह माफ़ हो सकता है, चाहे वह कितना बड़ा क्यों न हो। सूरः निसा की आयत 93 में जो मोमिन के क़त्ल की सज़ा जहन्नम बताई गयी है, तो वह उस सूरत में होगी जब हत्यारे ने तौबा न की हो को और बिना तौबा के ही मर गया हो। वर्ना हदीस में है कि 100 आदमियों के हत्यारे ने भी ख़ालिस तौबा की तो अल्लाह ने उसे माफ़ कर दिया। (देखें अहसनुल बयान)

(सूरः अलिफ़ लाम्मीम सज्दा)

बाब {अल्लाह तआला के फ़र्मान (आयत 17) की तफ़्सीर।}

2157:- अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह फ़रमाता है कि मैंने अपने बन्दों के लिये वह चीज़ें तय्यार कर रखी हैं, जिन्हें न तो किसी आँख ने देखा होगा, न किसी कान से सुना होगा और न किसी ने दिल में सोचा होगा। और उन नेमतों का तो शुमार ही नहीं जिन्हें अल्लाह ने तुम्हें बतला दिया है। फिर आप ने यह आयत तिलावत फ़रमायीः "यह बात कोई नहीं जानता कि अल्लाह पाक ने उस की आँखों की ठन्डक के लिये जन्नत में क्या-क्या चीज़ें पोशीदा रख छोड़ी हैं" (सूरः अलिफ़ लाम्मीम सज्दा-17)

बाब {अल्लाह तआला के फ़र्मान (आयत 21) की तफ़्सीर।}

2158:- उबय्यि बिन क-अब रज़ि॰ अल्लाह पाक के इस फ़र्मान "हम उन्हें बड़े

अ़ज़ाब से पहले, छोटे अ़ज़ाब का मज़ा चखायेंगे" के बारे में फ़रमाते हैं कि इस छोटे अ़ज़ाब से मुराद दुनिया की मुसीबतें, रुम (की पराजय) या धुवाँ और पकड़ मुराद है।

फ़ाइदा:– तफ़सीर अहसनुल् बयान के हाशिया में लिखा है कि इस से दुनिया का अ़ज़ाब या दुनिया की मुसीबतें और बीमारियाँ आदि मुराद हैं। 'दुख़ान' से मुराद वह सूखा काल है जो मक्का वालों पर भेजा गया था, जिस की वजह से उन्हें चारों तरफ़ धुवाँ ही धुवाँ दिखाई देता था। रुम वालों का फ़ारस (ईरान) को शिकस्त देना, यह भी काफ़िरों के लिये बड़ा अ़ज़ाब था, क्योंकि मक्का के मुश्रिक लोग ईरान के हिमायती थे (देखें सूरः रुम की तफ़सीर) 'पकड़' से मुराद बद्र में काफ़िरों की पराजय और उन के सत्तर आदमियों का क़त्ल और उतने ही को बन्दी बनाना मुराद है। यह जन्ग काफ़िरों के लिये बहुत बड़ा अ़ज़ाब साबित हुआ।

(सूरः अहज़ाब)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 10) की तफ़सीर।}

2159:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि अल्लाह पाक के इस फ़र्मानः "जब उन्होंने तुम्हारे ऊपर–नीचे से, आक्रमण कर दिया और जब आँखें फटी की फटी रह गयीं और दिल गले तक आ गये......(अहज़ाब 10) के बारे में कहा कि यह आयत ख़न्दक़ क़े दिन नाज़िल हुयी।

फ़ाइदा:– अहज़ाब की लड़ाई, या ख़न्दक़ की लड़ाई यह सन 5 हि॰ में हुयी थी। मदीना को चारों तरफ़ से दुश्मनों ने घेर लिया था। मुसलमान इस से घबराए हुये थे, कुछ की तो उल्टी साँसें चलनें लगीं थीं। इसी ओर इस आयत में इशारा है।

(सूरः यासीन)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 38) की तफ़सीर।}

2160:– अबू ज़र रज़ि॰ से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से "सूरज अपने ठहरने की जगह पर चला जाता है" के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमायाः उस के ठहरने की जगह अर्श के नीचे का स्थान है।

फ़ाइदा:– इस हदीस को समझने के लिये पीछे हदीस न॰ 2138 और उस का फ़ाइदा पढ़ें– ख़ालिद।

(सूरः ज़ु–मर)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 67) की तफ़सीर।}

2161:– अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि एक यहूदी ज्ञानी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगाः ऐ मुहम्मद! (या ऐ अबुल् क़ासिम!) अल्लाह पाक क़ियामत के दिन आसमानों को एक उगँली पर उठा लेगा, इसी प्रकार ज़मीनों को एक उंगली पर, पहाड़ों और पेड़-पौधों को एक उगँली पर, पानी और कीचड़ को एक उंगली पर और समस्त मख़्लूक़ को एक उगँली पर उठा लेगा और फिर उन्हें नचायेगा और कहेगाः मैं शासक हूँ, मैं शासक हूँ। उस की बातों को सुन कर आप हँसने लगे, और उस की बातों की तस्दीक़ करते हुये यह आयत पढ़ीः और अल्लाह पाक की जैसी क़द्र करनी चाहिये उन लोगों ने नहीं की। क़ियामत के दिन पूरी ज़मीन उस की मुट्ठी में होगी और समस्त आकाश उस के दाहिने हाथ में लिपटे हुये होंगे. ....(सूरः ज़ु-मर-67)

फ़ाइदाः– बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि उस यहूदी ने कहाः हमारे तौरात में लिखा हुआ है। मौलाना दावूद रज़ि० ने यूँ तर्जुमा किया है "आप हँस पड़े और आप का हँसनाउस यहूदी ज्ञानी की तस्दीक़ में था, फिर यह आयत पढ़ी।" (बुख़ारी-4811-इब्ने मस्ऊद) इस हदीस में अल्लाह के लिये हाथ का ज़िक्र है। बेशक अल्लाह के हाथ है और हाथ वैसा है जैसी अल्लाह की ज़ात है। इस में तावील करने की कोई ज़रुरत नहीं है।

(सूरः हामीम सज्दा)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 22) की तफ़सीर।}

2162:– इब्ने मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि बैतुलमुक़द्दस के पास तीन आदमी एकत्र हुये, उन में दो कुरैशी थे और एक क़बीला सक़ीफ़ का। या दो क़बीला सक़ीफ़ के थे और एक कुरैश का था। वह लोग मोटे ज़्यादा थे और बुद्धिमानी कम थी। उन में से एक ने कहाः तुम लोगों का क्या ख़याल है, जो हम बोलते हैं क्या उसे अल्लाह सुन लेता है? इस पर दूसरे ने कहाः अगर हम ज़ोर से बोलेंगे तो सुन लेगा और चुपके से बात करेंगे तो नही सुन पायेगा। इस पर तीसरे ने कहाः अगर वह हमारी ऊँची आवाज़ को सुन सकता है तो फिर अगर हम आहिस्ता बोलेंगे तो उसे भी सुन लेगा। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमायीः "और तुम (अपनी बुराइयों को) इस वजह से नहीं छुपाते थे कि तुम्हारे ख़िलाफ़ तुम्हारे कान, तुम्हारी आँखें और तुम्हारी चमड़ी गवाही नहीं देंगे, और तुम यह समझते थे कि अल्लाह को तुम्हारे बहुत से कामों के बारे में ख़बर ही नहीं है" (हामीम सज्दा-22)

फ़ाइदाः– देखें (बुख़ारी शरीफ़-4816-इब्ने मस्ऊद रज़ि०)

(सूरः दुख़ान)

बाब {अल्लाह तआला के फ़र्मान (आयत 10) की तफ़सीर।}

2163:– इमाम मस्रूक़ ने बयान किया कि हम लोग अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ के पास बैठे हुये थे और वह हमारे दर्मियान लेटे हुये थे कि इसी बीच एक व्यक्ति आया और कहने लगाः ऐ अबू अ़र्ब्दुरहमान! एक व्यक्ति कन्दा के दर्वाज़ों पर बयान करते हुये कहता है कि क़ुरआन में जिस धुएँ का ज़िक्र है वह आने वाला है, वह काफ़िरों की साँसों को रोक देगा और मुसलमानों को उस से केवल जुकाम होगा। यह सुन कर अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ मारे गुस्सा के उठ कर बैठ गये और कहने लगेः ऐ लोगों! अल्लाह से डरो और वही बयान करो जो जानते हो, और जिस के बारे में नहीं जानते, उसे यूँ कहो कि "अल्लाह ही बेहतर जानता है" अल्लाह ने अपने सन्देष्टा से कह दिया है कि "ऐ मुहम्मद! तुम उन से कह दो कि मैं इस पर तुम से कोई मज़दूरी नहीं माँगता और न मैं तकल्लुफ़ करने वालों में से हूँ" (सूरः स्वाद–76) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब यह भाँप लिया कि यह लोग (यानी मक्का के मुश्रिक) समझाने–बुझाने से भी मानने वाले नहीं हैं तो फ़रमायाः ऐ अल्लाह! इन मक्का के काफ़िरों पर सात वर्ष तक क़हत नाज़िल फ़रमा जिस प्रकार युसूफ़ अ़लै॰ के समय में सात वर्ष तक क़हत पड़ा था। चुनान्चे क़ुरैश मक्का पर ऐसा क़हत् (अकाल) पड़ा कि उस ने तमाम चीज़ों को खा लिया चुनान्चे वह लोग मारे भूख के चमड़ा और मुर्दार खाने पर मजबूर हो गये। जो भी आसमान की तरफ़ देखता तो धुवाँ की तरह दिखाई देता। अन्ततः अबू सुफ़यान नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आ कर विनिती करने लगा कि ऐ मुहम्मद! आप अल्लाह की आज्ञा पालन करने और रिश्ता–नाता जोड़ने का हुक्म देते हैं और यहाँ हाल यह है कि आप की क़ौम तबाही के दहाने पर पहुँच गयी है, इसलिये आप अल्लाह से दुआ़ कर दीजिये। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः "उस दिन का इन्तिज़ार करो जब आसमान खुल्लम खुल्ला धुवाँ लायेगा जो लोगों को अपने घेरे में ले लेगा, ... (सूरः दुख़ान–10 ,11) इब्ने मस्ऊद ने कहा कि अगर इस अ़ज़ाब से आख़िरत का अ़ज़ाब मुराद है तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः "जिस दिन हम बड़ी पकड़ पकड़ेंगे" तो इस से मुराद बद्र के दिन की पकड़ है। और इस से पहले धुवाँ की निशानी, सख़्त पकड़, बद्र के दिन की तबाही और रुम वालों के ग़लबा की निशानियाँ गुज़र चुकी हैं।

2164:– अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि पाँच निशानियाँ बीत चुकी हैं (1) दुख़ान (2) लिज़ाम (3) रुम (4) बत्शा (5) क़मर।

फ़ाइदाः– (1) दुख़ान (धुवाँ) यह धुवाँ सूखा काल की वजह से नज़र आता था। (2) लिज़ाम (चिमटना) इस से मुराद बद्र की लड़ाई है जिस में मुश्रिकों के 70 मारे गये और 70 ही बन्दी बनाए गये थे, इस ने उन की कमर तोड़ कर रख दी थी। (3) रुम (मुल्क

रुम) उस ज़माना में दो बड़ी हुकूमतें थीं, एक रुम और दूसरी ईरान। ईरानी आग की पूजा करते थे और रुम वाले अहले किताब थे। मुसलमान रुम वालों के समर्थक थे और मक्का वाले ईरान के। रुम वालों ने जन्ग में ईरानियों को पराजित कर दिया तो इस से काफ़िरों की जान निकल गयी, उन्हें बड़ा दुःख हुआ (4) बत्शा (पकड़) इस से मुराद जन्ग ब में काफ़िरों की हलाकत और मौत है। (5) क़मर (चाँद) दो टुक्ड़ें हो गया था, यह भी एक निशानी थी। देखें (बुख़ारी–4824, 4825–इब्ने मस्ऊद रज़ि॰)

(सूरः फ़तह)

बाब {अल्लाह तआला के फ़र्मान (आयत 24) की तफ़सीर।}

2165:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मक्का के अस्सी आदमी तन्ओम के पहाड़ से मुसल्लह (हथियार बन्द) होकर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास उतरे, वह चाहते थे कि आप और आप के सहाबा को धोखा से क़त्ल कर दें, लेकिन आप ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया और फिर बाद में छोड़ दिया, तब अल्लाह पाक ने यह आयत नाज़िल फ़रमायीः "वही अल्लाह है जिस ने ख़ास मक्का में काफ़िरों के हाथों को तुम से, और तुम्हारे हाथों को उन से रोक लिया......(सूर फ़त्ह–24)

फ़ाइदाः– नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा हुदैबिय्या के स्थान पर ठहरे हुये थे कि काफ़िरों ने 80 जवानों को जो हथियारों से लैस थे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या के लिये भेजा। यह लोग तन्ओम से नीचे उतर कर हुदैबिय्या में आये तो मुसलमानों ने देख लिया और उन्हें पकड़ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास लाये, लेकिन आप ने उन्हें छोड़ दिया, इस मौक़ा पर यह आयत नाज़िल हुयी। यह सन नौ हि॰ की घटना है।

(सूरः हुजुरात)

बाब {अल्लाह तआला के फ़र्मान (आयत 1) की तफ़्सीर।}

2166:– अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि जब यह आयत नाज़िल हुयीः "ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आवाज से मत बुलन्द करो....... (सूरः हुजुरात–1) तो साबित बिन क़ैस बिन शिमास अपने घर में बैठ गये (बाहर निकलना बन्द कर दिया) और कहने लगे कि मैं तो जहन्नमी हो गया। आप ने सअद बिन मआज़ से पूछाः ऐ अबू अम्र! साबित का क्या हाल है, क्या वह बीमार हैं? उन्होंने कहाः वह मेरे पड़ोसी हैं, लेकिन मुझे नहीं मालूम कि वह बीमार हैं? फिर सअद उन के घर गये और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुफ़्तगू को उन से बयान किया। साबित ने कहा कि (सूरः हुजुरात की) यह

आयत नाज़िल हुयी है और आप जानते हैं कि मेरी आवाज़ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आवाज़ से ऊँची है, इसलिये मैं जहन्नमी हो गया। सअ़द ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से यह घटना बयान की तो आप ने फ़रमायाः ऐसी कोई बात नहीं, वह जन्नती हैं।

फ़ाइदाः– साबित बिन क़ैस रज़ि॰ अन्सार के ख़तीब थे, इन की आवाज़ बड़ी भारी और ऊँची थी। जब यह आयत नाज़िल हुयी तो घबरा गये और इतने ग़मगीन हुये कि घर से निकलना बन्द कर दिया। जब आप ने उन्हें नहीं देखा तो उनके बारे में उन के पड़ोसी सअ़द से पूछा।

आवाज़ बुलन्द होने पर सहाबा अपने को जहन्नमी समझते थे, और आज जो लोग नबी के फ़र्मान की अवज्ञा करते और धड़ल्ले से ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते हैं, उन का क्या हाल होगा। जो रसूल के फ़र्मान को छोड़ कर इमामों के फ़र्मान पर अ़मल करते हैं, ऐसे लोगों का अल्लाह ही मालिक है। अल्लाह पाक हमें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आज्ञाकारी बनाये–आमीन।

(सूरः क़ाफ़)

बाब {अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान (आयत 20) की तफ़सीर।}

2167:– अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ता ने अल्लाह तआ़ला के इस क़ौल "जिस दिन हम जहन्नम से पूछेंगे क्या तू भर गयी? वह कहेगीः क्या अभी और भी बाक़ी है?" के बारे में बयान किया कि मुझ से सओ़द ने, उन से क़तादा ने और उन से अनस बिन मालिक ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जहन्नम में लगातार लोग डाले जाते रहेंगे और वह यही कहती रहेगीः "क्या अभी और भी बाक़ी है?" यहाँ तक कि अल्लाह पाक उस में अपना क़दम रख देगा जिस से उस का बाज़ हिस्सा बाज़ से सिमट जायेगा और कहने लगेगीः बस, बस, तेरी अ़िज़्ज़त की क़सम! (अब मैं भर गयी) और जन्नत हमेशा ख़ाली ही रहेगी (यानी उस में रखने की गुन्जाइश बाक़ी रहेगी) यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला उस के लिये एक मख़्लूक़ को पैदा कर के उस में रख देगा।

फ़ाइदाः– अल्लाह का प्रश्न करना और जहन्नम का उत्तर देना यह अल्लाह की कुदरत से कोई मुश्किल नहीं है। अल्लाह पाक जिस को चाहे बोलने की ताक़त दे दे। इसी प्रकार अल्लाह पाक के लिये उस में क़दम रखना भी है (बुख़ारी–4848, 4849, 4850–अनस बिन मालिक, अबू हुरैरा रज़ि॰)

(सूरः क़मर)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान "फ़-हल् मिम् मुद्दकिर्" की तफ़सीर।}

2168:– अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि मैं ने एक व्यक्ति को अस्वद बिन सओद से पूछते हुये देखा, वह उस समय मस्जिद में कुरआन पढ़ा रहे थे कि आप "मुद्-दकिर" में "दाल" पढ़ते हैं, या "ज़ाल"। उन्होंने कहा कि मैं ने तो इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ से "दाल" पढ़ते सुना है, और वह कहते थे कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से "दाल" सुना है।

फ़ाइदाः– देखें (बुख़ारी शरीफ़–4871, 4872–अस्वद) 'दाल' और 'ज़ाल' "मुद्-दकिर" और "मु-ज़क्किर" दोनों का एक ही अर्थ है। कुरआन पाक अरब की सात क़िरात में उतारा गया है, उन में 'दाल' और 'ज़ाल' दोनों ही तरीक़े हैं। यह कोई इख़्तिलाफ़ का मस्अला नहीं है।

(सूरः रह्मान)

बाब {अल्लाह तआला के फ़र्मान (आयत 15) की तफ़सीर।}

2169:– आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः फ़रिश्ते नूर से बनाये गये हैं और जिन्न आग की लपट से पैदा किये गये हैं, और आदम अलै॰ उस से पैदा किये गये हैं जो कुरआन में बयान हुआ है (यानी मिट्टी से)

(सूरः हदीद)

बाब {अल्लाह तआला के फ़र्मान (आयत 16) की तफ़सीर।}

2170:– इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ ने बयान किया कि हमारे इस्लाम लाने और जिस आयत में अल्लाह पाक ने हमें डाँट-फटकार लगायी है उस के नाज़िल होने के दर्मियान चार वर्ष का वक़्फ़ा है। (आयत का तर्जुमा यह है) "क्या अब तक ईमान लाने वालों के लिये समय नहीं आया कि उन के दिल अल्लाह की याद से और जो हक़ उतर चुका है, उस से नर्म पड़ जायें" (सूरः हदीद–16)

(सूरः हश्र)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 10) की तफ़सीर।}

2171:– उर्वा ने बयान किया कि मुझ से आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ ने बयान कियाः ऐ मेरे भान्जे! लोगों को हुक्म दिया गया था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के

कान की लौ तक पसीना में डूबा होगा। (बुख़ारी शरीफ़-4938, 6531-इब्ने उमर रज़ि॰)

(सूरः इन्शिक़ाक़)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान "उस दिन आसान हिसाब लिया जायेगा" की तफ़्सीर।}

2175:- आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियमात के दिन जिस का हिसाब-किताब लिया गया वह अज़ाब से न बच सकेगा। इस पर मैं ने पूछाः क्या अल्लाह तआला ने यह नहीं फ़रमाया हैः "उस का आसान हिसाब लिया जायेगा और वह अपने घर वालों की तरफ़ खुश-खुश लौटेगा" (सूरः इन्शिक़ाक़-8, 9) आप ने फ़रमायाः इस आयत में हिसाब का ज़िक्र नहीं है, यह तो उस के आमाल की केवल पेशी होगी। (फिर सरसरी जाँच के बाद छोड़ दिया जायेगा) जिस किसी का भी क़ियामत के दिन खोद-कुरेद कर हिसाब लिया गया वह (हर हाल में) अज़ाब से दोचार होगा।

फ़ाइदाः- यह दुनिया का भी नियम है कि अगर गहन जाँच-पड़ताल और छान-बीन की जाये तो कोई भी पाक-साफ़ बच कर नहीं निकल पाता है। इसी प्रकार अल्लाह पाक भी खोद-कुरेद कर आना से पाई तक हिसाब लेने पर आमादा होगा तो बन्दों के लिये पाक-साफ़ होकर बच निकलना असंभव होगा। अल्लाह पाक हम गुनाहगारों से आसान हिसाब फ़रमाये-आमीन। देखें (बुख़ारी-4939-आइशा रज़ि॰)

(सूरः वल्लैल)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान "वज़्ज़-करि वल् उन्सा" (आयत 3) की तफ़्सीर।}

2176:- अल्क़मा रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हम लोग मुल्क शाम गये तो अबू दर्दा रज़ि॰ हमारे पास आये और कहाः तुम में से कौन अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद की क़िरात के मुताबिक़ क़िरात कर सकता है? मैं ने कहाः हाँ, मैं कर सकता हूँ। उन्होंने पूछाः तुम ने इब्ने मस्ऊद को इस आयत "वल्लैलि इज़ा यग़शा...." को किस प्रकार पढ़ते सुना है? मैं ने कहाः वह इस प्रकार पढ़ते थेः "वल्लैलि इज़ा यग़शा वज़्ज़-करि वल् उन्सा।" इस पर उन्होंने कहाः अल्लाह की क़सम! मैं ने भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसी प्रकार पढ़ते सुना है, लेकिन वहाँ (यानी मुल्क शाम) के लोग चाहते हैं कि मैं इस प्रकार पढ़ूँ "वमा ख़-ल-क़ज़्ज़-क-र वल् उन्सा"। मैं तो इन की बात नहीं मानूँगा।

फ़ाइदाः- अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ पर जहाँ और कई बातें पोशीदा रह गयीं और उन की जानकारी नहीं हो सकी, उन में इस आयत की क़िरात भी थी। पहले इब्ने मस्ऊद के क़िरात की तरह ही इस आयत की क़िरात होती थी, लेकिन बाद में सहाबा का शाम

वालों की क़िरात की तरह पढ़ने पर इत्तिफ़ाक़ हो गया (यानी "वमा ख़-ल-क़ज़्ज़-क-र वल् उन्सा") और इसी प्रकार आज कल कुरआन में लिखा भी है, और इसी प्रकार पढ़ना दुरुस्त है। इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ और अबू दर्दा रज़ि॰ की क़िरात मन्सूख़ है।

(सूरः वज़्ज़ुहा)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान "तुम्हारे रब ने तुम्हें नहीं छोड़ा है" (आयत 3) की तफ़्सीर।}

2177:– अस्वद बिन कैस ने बयान किया कि मैं ने जुन्दुब बिन अबू सुफ़यान को कहते सुना कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बीमार पड़ गये और दो या तीन रातों को (तहज्जुद के लिये) नहीं उठ सके। फिर एक महिला (यानी अबू लहब की पत्नी औ़रा) आयी और कहने लगीं: ऐ मुहम्मद! मेरे ख़याल से तुम्हारे शैतान ने तुम्हें छोड़ दिया है (क्योंकि) मैं दो-तीन दिन से देख रही हूँ कि तुम्हारे पास वह नहीं आया, इस पर अल्लाह पाक ने यह आयत नाज़िल फ़रमायीः "क़सम है दिन चढ़े की और रात की जब वह तारीक हो जाये, आप के रब ने आप को न तो छोड़ा है और न ही वह नाराज़ है" (सूरः जुहा-1,2,3,4)

फ़ाइदा:– इस हदीस के लिये देखें (बुख़ारी-4950-जुन्दुब बिन सुफ़यान) बुख़ारी ही की एक दूसरी रिवायत में इस आयत का शाने-नुज़ूल यह है कि एक महिला (यानी आप की पत्नी ख़दीजा) ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! मैं देखती हूँ कि आप के मित्र (जिब्रील) आप के पास वह्यि लाने में देर करते हैं, इस पर यह आयत नाज़िल हुयी......" (बुख़ारी-4951-जुन्दुब बुजली रज़ि॰)

(सूरः तकासुर)

बाब {अल्लह पाक के फ़र्मानः "तुम्हें माल अधिक बटोरने की लालच ने ग़ाफ़िल कर दिया" (आयत1) की तफ़्सीर।}

2178:– अ़ब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ उस समय आप "अल्हाकुमुत्ताकासुरु" तिलावत फ़रमा रहे थे। आप ने फ़रमायाः आदमी कहता है कि (यह) मेरा माल है, मेरा माल है। हालाँकि ऐ आदम की औलाद! तेरा माल तो उतना है जो तूने खा लिया और ख़त्म कर दिया, या पहन कर पुराना कर दिया, या सदक़ा कर के आगे के लिये भेज दिया।

फ़ाइदा:– 'तुम को बहुत अधिक जमा करने की ख़ाहिश ने (अल्लाह की याद से) ग़ाफ़िल कर दिया। यह ख़ाहिश आ़म है। इस से माल-दौलत, क़बीला-ख़ान्दान, पद और

सहाबा के लिये मग़्फ़िरत की दुआ माँगें, लेकिन (उल्टा) उन्हें बुरा-भला कहने लगे।

(आयत का तर्जुमा यह है: "और उन के लिये जो उन के बाद आयेंगे, जो कहेंगे: ऐ मेरे मौला! हमें बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को भी जो हम से पहले ईमान ला चुके हैं, और ईमानदारों की तरफ़ से हमारे दिल में कीना न डाल (सूरः हश्र-10)

(सूरः जिन्न)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 1) की तफ़्सीर।}

2172:- इब्ने अब्बास रज़ि॰ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिन्नों को क़ुरआन पढ़ कर नहीं सुनाया और न ही उन्हें देखा है। मामला यह है कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने सहाबा के साथ उकाज़ (जो मक्का और ताइफ़ के दर्मियान एक बाज़ार का नाम है) गये। उस समय शैतान के लिये आसमान से ख़बरें चुराने में रुकावट डाल दी गयी थी और उन पर आसमान से आग के अन्गारे छोड़े जाते थे। चुनान्चे शैतान की एक टोली अपनी क़ौम वालों के पास लौट कर गयी तो उन लोगों ने पूछा: क्या बात हुयी? उन्होंने कहा: आसमान की ख़बरों और हमारे दर्मियान रुकावट डाल दी गयी है और हम पर आग के अन्गारे छोड़े जा रहे हैं। उन्होंने कहा: इस की वजह यह है कि ज़रुर कोई नई बात पेश आयी है, इसलिये ज़मीन में पूरब और पश्चिम की तरफ़ चक्कर मार कर देखो कि आख़िर क्यों हमारे और ख़बरों के दर्मियान रुकावट डाली गयी है? चुनान्चे वह लोग ज़मीन में पूरब और पश्चिम मैं फैल गये। उन में का एक गरोह खोज लगाने के लिये तहामा की वादी की ओर जा पहुँचा जहाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उकाज़ के बाज़ार के लिये जाते हुये खजूर के एक बाग़ में ठहरे हुये थे और उस समय सहाबा के साथ फ़ज्र की नमाज़ अदा कर रहे थे। जब शैतानों ने क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ सुनी तो उसे ग़ौर से सुनने लगे। फिर कहा कि यही वह चीज़ है जिस की वजह से हमारे और आसमान की ख़बरों के दर्मियान रुकावट पैदा हुयी है। फिर वह अपनी क़ौम वालों के पास लौट कर गये और कहा कि ऐ क़ौम के लोगो! "हम ने एक अजीब क़ुरआन सुना है जो सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है, तो हम उस पर ईमान ले आये हैं और अब हम कभी भी अल्लाह के साथ शरीक नहीं ठहरायेंगे" (सूरः जिन्न 1) फिर अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह आयत नाज़िल फ़रमायी: "आप कह दीजिये कि मेरी तरफ़ वह्यि की गयी है कि जिन्नों की एक जमाअत ने क़ुरआन को सुना तो उन्होंने कहा: हम ने एक अजीब क़ुरआन सुना है...... (सूरः जिन्न 1, पारः 29)

फ़ाइदा:- यह रिवायत बुख़ारी शरीफ़ में भी है लेकिन पहला जुम्ला "नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिन्नों को क़ुरआन नहीं सुनाया और न ही उन्हें देखा" यह नहीं है (बुख़ारी शरीफ़-4921-इब्ने अब्बास रज़ि॰) और अधिक जानकारी के लिये पारः 29, सूरः जिन्न की तफ़सीर पढ़ें।

(सूरः क़िया-मः)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान (आयत 16) की तफ़सीर।}

2173:– इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने कुरआन की आयत "अपनी ज़बान को जल्दी से याद कर लेने के लिये न हिलाइये" के बारे के बारे में बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कुरआन पाक के उतरते वक़्त तन्गी महसूस करते थे इसीलिये ज़बान को हिलाने लगते थे। हदीस के रावी ने (यह बयान कर के) कहा कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने मुझ से कहाः (देखों!) मैं तुम्हारे सामने ज़बान हिला रहा हूँ जिस प्रकार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हिलाते थे। सअ़ीद ने कहाः जिस प्रकार इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ अपनी ज़बान (मुझे बताने के लिये) हिलाते थे, उसी प्रकार मैं भी (तुम्हें बताने के लिये) हिलाता हूँ। इस मौक़ा पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमायीः "आप उसे जल्दी-जल्दी याद कर लेने के लिये ज़बान को न हिलायें, उस का (आप के दिल में) जमा कर देना और पढ़ाना हमारे ज़िम्मा है......(सूरः कियामा-16) इब्ने अ़ब्बास रजि॰ ने कहा कि (मतलब यह है कि) उस का आप के सीने में जमा कर देना और याद कराना (अल्लाह के ज़िम्मा है) इसीलिये "जब हम उसे पढ़ें तो आप भी पीछे-पीछे पढ़ते जायें" (जल्द बाज़ी की कोई ज़रुरत नहीं है) इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने कहा कि (इस का यह अर्थ है) आप ग़ौर से सुनिये और ख़ामोश रहिये, उस का पढ़ाना अल्लाह के ज़िम्मा है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने कहा कि इस के बाद जब जिब्रील अ़लै॰ वह्यि ले कर आते तो आप उसे ध्यान से सुन लेते और जब वह चले जाते तो उसी को पढ़ देते जिस प्रकार उन्होंने पढ़ा था।

फ़ाइदाः– यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ में भी आयी है (4927, 4928, 4929-इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰) जिब्रील अ़लै॰ जब वह्यि लेकर आते तो आप जल्दी-जल्दी पढने लगते कि कहीं कोई शब्द भूल न जायें, इसलिये ऐसा करने से मना कर दिया और कहा कि आप के सीने में जमा कर देना और आप की ज़बान पर जारी कर देना हमारा काम है ताकि कोई हिस्सा आप न भूलें और आप के दिल से कुछ निकल न जाये। अधिक जानकारी के लिये कुरआन में इस आयत की तफ़सीर पढ़ें।

(सूरः मु-तफ़्फ़िफ़ीन)

बाब {अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान (आयत 6) की तफ़सीर।}

2174:– इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने "जिस दिन लोग सारे जहान के पर्वरदिगार के सामने खड़े होंगे" के बारे में फ़रमायाः उस दिन कानों के लौ तक लोग पसीना में खड़े होंगे।

फ़ाइदाः– लोग अपने आमाल के अनुसार कोई घुटने तक, कोई कमर तक और कोई

मर्तबा आदि सब मुराद है। इन्सान इन सब को हासिल करने के लिये दिन-रात एक कर देता है यहाँ तक कि मौत आ जाती है और क़ब्र में जा पहुँचता है। और जो कुछ हासिल करता है दुनिया ही में धरा रह जाता है मगर......

(सूरः फ़त्ह)

बाब {अल्लाह पाक के फ़र्मान "जब अल्लाह की मदद और फ़त्ह आ गयी (आयत 1,2) की तफ़सीर।}

2179:– उबैदुल्लाह बिन उत्बा ने बयान किया कि मुझ से अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि॰ ने पूछा "क्या तुम जानते हो कि कुरआन की वह अन्तिम सूरत जो एक ही बार में नाज़िल हुयी है, कौन सी है? मैं ने कहाः जी हाँ, (मैं जानता हूँ) वह "इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि........है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ ने कहाः तुम ने सच कहा।

फ़ाइदाः– कुरआन की सूरतों में पूरी सूरत यकबारगी नाज़िल होने के एतबार से यह सूरः सब से अन्तिम सूरत है। और कुरआन की सब से अन्तिम आयत जो नाज़िल हुयी वह सूरः बक़रः की आयत 281 है। इस के नाज़िल होने के बाद आप केवल 9 रातें जीवित रहे। जब यह सूरः नाज़िल हुयी तो आप ने फ़रमायाः अब इसी वर्ष मेरा देहान्त हो जायेगा, मुझे मेरे देहान्त की सूचना दे दी गयी है (मुस्नद अहमद) जब यह सूरः नाज़िल हुयी तो आप ने इस की तिलावत की और फ़रमायाः लोग एक कनारा हैं, और मैं और मेरे सहाबा एक कनारा हैं। सुनों! मक्का फ़त्ह हो जाने के बाद हिजरत नहीं रही, अल्बत्ता जिहाद और निय्यत बाक़ी है।

अल्हम्दु लिल्लाह! आज दिनांक 20 मई सन 2006, सनीचर के दिन 6 बजे फ़ज्र की नमाज़ के बाद, ऊँची मस्जिद अहले हदीस मोरी गेट में इस किताब का हिन्दी अनुवाद और संक्षिप्त तशरीह अल्लाह पाक की सहायता, उस की मदद और सहयोग से संपन्न हुयी

वआ ख़िरु दावाना अनिल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़-लमीन्+व-सल्लल्लाहु अ़ला मु-हम्मदिन् व-अ़ला आलिही व-सह्बिही अज्-मअ़ीन+ आमीन, या रब्बल् आ़-लमीन्

ख़ताकार, गुनाहगार
ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी
ऊँची मस्जिद अहले हदीस, मोरी गेट
दिल्ली-(सुब्ह 6 बजे)
20-05-2006

तम्मत बिल्ख़ैरि

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

Tye Setting by Sanam Aziz at The Byte Publishing Systems, 799, Haveli Azam Khan, Jama Masjid, Delhi-110006. Tel.: 9868864247.